

3-2

बृहज्जातक















विषयः

पृष्ठांकः

|  |    |
|--|----|
| अधिकांगमूकचिरलब्धगिरांसंभवयोगाः .....          | ५० |
| सदंतकुब्जजडजन्मयोगाः .....                     | ५१ |
| वाननहीनांगयोगौ .....                           | ५१ |
| विकलजन्मज्ञानम् .....                          | ५२ |
| प्रश्नाधानकाले योगवशात्प्रसवकालज्ञानम् .....   | ५३ |
| धृतस्य गर्भस्य वर्षत्रयवर्षद्वादशज्ञानम् ..... | ५४ |

### जन्मविधिनामाध्यायः ५.

|  |    |
|--|----|
| पितुः संनिधावसंनिधौ वा जात इति ज्ञानम् ..... | ५५ |
| तत्रान्येऽपि योगाः.....                      | ५५ |
| संप्रज्ञानं सर्पवेष्टितज्ञानं च .....        | ५५ |
| एकजरायुवेष्टितयोर्जन्मज्ञानम् .....          | ५६ |
| नालवेष्टितजन्मज्ञानम् .....                  | ५६ |
| जारजातज्ञानम् .....                          | ५६ |
| जातस्थ पितृबंधनयोगज्ञानम् .....              | ५७ |
| पोतगताप्रसवज्ञानम् .....                     | ५७ |
| उदकमध्यप्रसवज्ञानम् .....                    | ५८ |
| बंधनागारावटयोः प्रसवज्ञानम् .....            | ५८ |
| क्रीडागृहादिप्रदेशेषु प्रसवज्ञानम् .....     | ५९ |
| शमशानादिप्रदेशेषु प्रसवज्ञानम् .....         | ५९ |
| प्रसवदेशज्ञानम् .....                        | ६० |

यद्योगे जातो मात्रा त्यज्यते यद्योगे च त्यक्तोऽपि दीर्घायुः सुखी च भवति तद्योग-

|   |    |
|---|----|
| द्वयम् .....                                      | ६० |
| यद्योगे जातो मात्रा त्यक्तो विनश्यति स योगः ..... | ६० |
| प्रसवगृहज्ञानम्.....                              | ६१ |
| दीपसंभवासंभवभूप्रदेशप्रसवादिज्ञानम् .....         | ६२ |
| दीपगृहद्वारज्ञानम् .....                          | ६३ |
| सूतिकागृहस्वरूपज्ञानम् .....                      | ६४ |
| समस्तवास्तुनि क्व सूतिकागृहमिति तद्विज्ञानम्..... | ६४ |
| सूतिकागृहे क्व शयनमिति तज्ज्ञानम् .....           | ६५ |
| उपसूतिकासंख्या .....                              | ६५ |
| जातस्य स्वरूपादिज्ञानम् .....                     | ६६ |
| शिरःप्रभृत्यंगविभागानां राशिविभागः .....          | ६७ |
| अंगज्ञानप्रयोजनम् .....                           | ६८ |
| जातस्य व्रणज्ञानम् .....                          | ६९ |

### अरिष्टाध्यायः ६.

|                       |    |
|-----------------------|----|
| अरिष्टद्वयम्....      | ६९ |
| अन्येऽरिष्टयोगाः..... | ७० |



विषयः

पृष्ठांकः

|  |    |
|--|----|
| अरिष्टांतराणि .....                              | ७१ |
| अनुक्तमरणकालानामरिष्टयोगानां कालपरिज्ञानम् ..... | ७५ |

## आयुर्दायाध्यायः ७.

|  |    |
|--|----|
| मययवनादिमतेन ग्रहस्य परमायुष्प्रमाणम् .....                      | ७६ |
| परमनीचावस्थितानामायुर्दायज्ञानम् .....                           | ७६ |
| ग्रहाणां स्वायुषश्चक्रपातेनापहानिः .....                         | ७९ |
| लग्नस्थः पापश्चक्रपातवदायुषोऽंशमपहरति तस्यांशप्रमाणज्ञानम् ..... | ७९ |
| पुरुषादीनां परमायुष्प्रमाणज्ञानम् .....                          | ८१ |
| यद्योगे जातस्य परमायुर्भवति यद्योगज्ञानम् .....                  | ८१ |
| परमतायुर्दायस्य दूषणम् .....                                     | ८३ |
| परमतायुर्दायस्य अन्याचार्यमतेन दूषणांतरम् .....                  | ८४ |
| जीवशर्मसत्याचार्ययोर्मतेनायुर्दायः .....                         | ८८ |
| सत्याचार्यमतेन ग्रहाणामायुर्दायानयनम् .....                      | ९० |
| सत्याचार्यमतेनागतस्यायुर्दायस्य कर्मविशेषः .....                 | ९१ |
| सत्याचार्यमतेन लग्नायुर्दायकरणम् .....                           | ९१ |
| मयादिमतमुपन्यस्य सत्यमतस्यैवांगीकरणम् .....                      | ९२ |
| यद्योगे जातस्य आयुष्प्रमाणं न ज्ञायते स योगः .....               | ९३ |

## दशांतर्दशाध्यायः ८.

|   |     |
|---|-----|
| पुरुषस्य जीवितमध्ये स्थितयोः सुखदुःखयोः परिच्छेदार्थं ग्रहाणां दशाक्रमज्ञानम् ..... | ९४  |
| दशाकालप्रमाणं केन्द्रस्थानानामपि दशाक्रमज्ञानं च .....                              | ९५  |
| अंतर्दशापाकग्रहज्ञानम् .....  | ९६  |
| दशापरिकल्पनाज्ञानम् .....   | ९७  |
| शुभाशुभज्ञानार्थं दशादेः स्वफलानुरूपाः संज्ञाः .....                                | १०३ |
| लग्नदशायां शुभाशुभज्ञानम् .....   | १०५ |
| नैसर्गिकाणां ग्रहाणां दशाकालः .....   | १०६ |
| दशांतर्दशाशुभाशुभज्ञानम् .....  | १०८ |
| अंतर्दशाकाले चंद्रक्रांतराशिवशेन शुभज्ञानम् .....                                   | ११० |
| अर्कदशायां शुभाशुभफलप्रदर्शनम् .....  | १११ |
| चंद्रदशायां शुभाशुभफलम् .....   | १११ |
| भौमदशायां शुभाशुभफलम् .....   | ११२ |
| बुधदशायां शुभाशुभफलम् .....   | ११२ |
| जीवदशायां शुभाशुभफलम् .....   | ११३ |
| शुक्रदशायां शुभाशुभफलम् .....   | ११४ |
| शनैश्चरदशायां शुभाशुभफलम् .....   | ११४ |
| दशासूक्तानां शुभाशुभफलानां विषयविभागो लग्नदशाफलं च .....                            | ११५ |
| अन्येषामपि फलानां दशास्वतिदेशः .....  | ११५ |



विषयः

पृष्ठांकः

|   |     |
|---|-----|
| अगणितजातकस्यापि शरीरच्छायां दृष्ट्वा ग्रहदशाज्ञानम् .....                                 | ११६ |
| शुभाशुभफलकदशाज्ञानार्थमंतरात्मनाः स्वरूपम् .....  | ११७ |
| एकग्रहदत्तसदृशफलयोर्नाशो भवति भिन्नदत्तानां बहुनामपि पक्तिरेव भवतीत्येतत्क-<br>थनम् ..... | ११८ |

अष्टकवर्गाध्यायः ९.

|                           |     |
|---------------------------|-----|
| अर्काष्टकवर्गः .....      | ११९ |
| चंद्राष्टकवर्गः .....     | १२० |
| भौमाष्टकवर्गः .....       | १२१ |
| बुधस्याष्टकवर्गः .....    | १२२ |
| जीवस्याष्टकवर्गः .. ..    | १२३ |
| शुक्रस्याष्टकवर्गः .. ..  | १२५ |
| सौरस्याष्टकवर्गः .. ..    | १२६ |
| अष्टकवर्गफलनिरूपणम् .. .. | १२७ |

कर्माजीवाध्यायः १०.

|  |     |
|--|-----|
| प्रकारद्वयेन ग्रहाणां धनदातृत्वकथनम् .. .. | १३१ |
| वृत्तिकथनम् .. ..                          | १३२ |
| जीवांशे धनप्रापकहेतवः .. ..                | १३३ |
| धनागमज्ञानम् .. ..                         | १३३ |

राजयोगाध्यायः ११.

|  |     |
|--|-----|
| तत्रादौ यवनानां जीवशर्मेणश्च मतम् .. ..                              | १३४ |
| द्वात्रिंशद्राजयोगाः .. ..   | १३४ |
| चतुश्चत्वारिंशद्राजयोगाः .. ..                                       | १३५ |
| पंचयोगाः .....   | १३६ |
| अन्ये राजयोगाः .....   | १३७ |
| एतेष्वराजवंशजोऽपि राजा भवतीत्येतत्कथनम् .....                        | १४० |
| राजयोगे जातस्य कस्मिन्काले राज्यावाप्तिर्भविष्यतीति तज्ज्ञानम् ..... | १४३ |
| ओगिनां शबरदस्युस्वामिनां च जन्मज्ञानम् .....                         | १४३ |

नाभसयोगाध्यायः १२.

|   |     |
|---|-----|
| द्वित्रिचतुर्विकल्पजानां योगानां संख्याज्ञानम् .....              | १४४ |
| आश्रययोगत्रयं दलयोगद्वयं च .....                                  | १४५ |
| अन्यैराचार्यैराश्रययोगत्रयं दलयोगद्वयं च नाख्यातं तत्कारणम् ..... | १४६ |
| गदाद्याख्याः पंचाकृतियोगाः .....                                  | १४७ |
| वज्रादिसंज्ञं योगचतुष्टयम् .....                                  | १४७ |
| वज्रादयः पूर्वशास्त्रानुसारेण कृता इत्येतत्कथनम् .....            | १४८ |
| यूपेषु शक्तिदंडाख्यं योगचतुष्टयम् .....                           | १४८ |
| नौकूटच्छत्रचापार्धचंद्राख्यं योगपंचकम् .....                      | १४९ |



## विषयः

## पृष्ठांकः

|  |     |
|--|-----|
| समुद्राख्यौ द्वौ योगौ ... ..   | १४९ |
| संख्यायोगसप्तकम् ... ..  | १४९ |
| आश्रययोगत्रयदलयोगद्वयजातानां फलम् ... ..                                 | १५० |
| अन्यस्मिन्योग आश्रययोगश्चेत्तदाश्रययोगस्य निराकरणम् ... ..               | १५० |
| गदाद्याख्येषु योगेषु जातानां स्वरूपम् ... ..                             | १५१ |
| वज्राद्याख्येषु योगेषु जातानां स्वरूपम् ... ..                           | १५१ |
| यूपादियोगचतुष्टये जातानां स्वरूपम् ... ..                                | १५२ |
| नौकटादियोगेषु जातानां स्वरूपम् ... ..                                    | १५२ |
| अर्धचन्द्रादियोगेषु जातानां स्वरूपम् ... ..                              | १५३ |
| दामिनीपाशकेदारशूलजातानां स्वरूपम् ... ..                                 | १५३ |
| युगगोलयोजातस्य स्वरूपं सर्वेषां च नाभसयोगानां समस्तदशास्वपि फलप्रदर्शनम् | १५४ |

## चंद्रयोगाध्यायः १३.

|   |     |
|---|-----|
| अर्कात्केन्द्रपणफरापोक्लिमस्थे चंद्रे जातस्य स्वरूपम् ... ..                | १५८ |
| सफलोऽधियोगाख्यो योगः ... ..   | १५८ |
| सुनफादियोगचतुष्टयम् ... ..  | १५९ |
| सुनफानफादुरुधराख्यप्रकारज्ञानम् ... ..                                      | १६० |
| सुनफानफायोगजातस्य स्वरूपविज्ञानम् ... ..                                    | १६४ |
| दुरुधराकेमद्रुमयोगजातस्य स्वरूपम् ... ..                                    | १६४ |
| ग्रहवशाद्विशेषफलम् ... ..   | १६५ |
| शनैश्चरे योगकर्तारि पुरुषस्य चंद्रमसि च दृश्यादृश्ये जातस्य स्वरूपम् ... .. | १६५ |
| लग्नाच्चंद्राद्वा यस्योपचये सौम्यग्रहा भवन्ति तस्य फलम् ... ..              | १६६ |

## द्विग्रहयोगाध्यायः १४.

|  |     |
|--|-----|
| आदित्ये चंद्रादियुक्ते जातस्य स्वरूपम् ... ..                  | १६६ |
| भौमादियुक्ते चंद्रे जातस्य स्वरूपम् ... ..                     | १६७ |
| अंगारके बुधादियुक्ते जातस्य स्वरूपम् ... ..                    | १६७ |
| बुधे जीवादियुक्ते जीवे च शुक्रादियुक्ते जातस्य स्वरूपम् ... .. | १६८ |
| शुक्रशनैश्चरयुक्ते जातस्य स्वरूपं त्रिग्रहयोगफलं च ... ..      | १६८ |

## प्रत्रज्यायोगाध्यायः १५.

|  |     |
|--|-----|
| चतुरादिभिरेकस्थैर्ग्रहैर्जातस्य प्रत्रज्यायोगः ... ..            | १६९ |
| अस्तमितान्यजितान्यदृष्टानां ग्रहाणामपवादः ... ..                 | १७१ |
| चतुरादिभिरेकस्थैर्विना प्रत्रज्यायोगः ... ..                     | १७२ |
| यद्योगे जातः शास्त्रकरो राजापि दीक्षितो भवति तद्योगद्वयम् ... .. | १७२ |

## ऋक्षशीलाध्यायः १६.

|  |     |
|--|-----|
| चंद्रभुज्यमाननक्षत्रशीलं तत्राश्विनीभरण्योर्जातस्य शीलविज्ञानम् ... .. | १७३ |
| कृत्तिकारोहिण्योर्जातस्य स्वरूपम् ... ..                               | १७३ |
| मृगशीर्षार्द्रयोर्जातस्य स्वरूपम् ... ..                               | १७४ |



विषयः

पृष्ठांकः

|  |     |
|--|-----|
| पुनर्वसौ जातस्य स्वरूपम् .....               | १७५ |
| पुष्याश्लेषयोजातस्य स्वरूपम् .....           | १७५ |
| मघापूर्वाफाल्गुन्योजातस्य स्वरूपम् .....     | १७५ |
| उत्तराषाढाश्रवणयोर्जातस्य स्वरूपम् .....     | १७५ |
| चित्रास्वात्योर्जातस्य स्वरूपम् .....        | १७५ |
| विशाखानुराधयोर्जातस्य स्वरूपम् .....         | १७५ |
| ज्येष्ठाश्लेषयोर्जातस्य स्वरूपम् .....       | १७५ |
| पूर्वोत्तराषाढयोर्जातस्य स्वरूपम् .....      | १७५ |
| श्रवणधनिष्ठयोर्जातस्य स्वरूपम् .....         | १७५ |
| शतभिषकपूर्वाभाद्रपदयोर्जातस्य स्वरूपम् ..... | १७५ |
| उत्तराभाद्रपदश्रवणयोर्जातस्य स्वरूपम् .....  | १७५ |

१ राशिशीलाध्यायः १७.

|   |     |
|---|-----|
| मेषस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....     | १७७ |
| वृषस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....     | १७७ |
| मिथुनस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....   | १७८ |
| कर्कटस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....   | १७८ |
| सिंहस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....    | १७९ |
| कन्यास्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....   | १७९ |
| तुलास्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....    | १८० |
| वृश्चिकस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् ..... | १८० |
| धनुस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....     | १८१ |
| मकरस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....     | १८१ |
| कुम्भस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....   | १८२ |
| मीनस्थे चन्द्रे जातस्य स्वरूपम् .....     | १८२ |
| उक्तराशिस्वरूपमपवादश्च .....              | १८३ |

२ राशिशीलाध्यायः १८.

|   |     |
|---|-----|
| मेषवृषगतेऽर्के जातस्य स्वरूपम् .....                  | १८३ |
| मिथुनकर्कसिंहकन्यास्थे सूर्ये जातस्य स्वरूपम् .....   | १८४ |
| तुलावृश्चिकधनिष्मकरस्थेऽर्के जातस्य स्वरूपम् .....    | १८४ |
| कुम्भमीनगतेऽर्के जातस्य स्वरूपम् .....                | १८५ |
| मेषवृश्चिकवृषतुलास्थे कुजे जातस्य स्वरूपम् ..         | १८५ |
| मिथुनकन्याकर्कटस्थे भौमे जातस्य स्वरूपम् .....        | १८६ |
| सिंहधनिष्मिमीनकुम्भमकरस्थे भौमे जातस्य स्वरूपम् ..... | १८६ |
| मेषवृश्चिकतुलावृषगते बुधे जातस्य स्वरूपम् .....       | १८७ |
| मिथुनकर्कटस्थे बुधे जातस्य स्वरूपम् .....             | १८७ |
| सिंहकन्यागते बुधे जातस्य स्वरूपम् .....               | १८७ |
| मकरधनिष्मिमीनगते बुधे जातस्य स्वरूपम् .....           | १८८ |



## विषयः

## पृष्ठांकः

|   |      |      |      |      |     |
|---|------|------|------|------|-----|
| मेषवृश्चिकवृषतुलामिथुनकन्यागते जीवे जातस्य स्वरूपम् | .... | .... | .... | .... | १८८ |
| कर्कटसिंहधन्विमीनकुंभमकरस्थे जीवे जातस्य स्वरूपम्   | .... | .... | .... | .... | १८९ |
| मेषवृश्चिकवृषतुलागते शुक्रे जातस्य स्वरूपम्         | ...  | .... | .... | .... | १८९ |
| मिथुनकन्यामकरकुंभस्थे शुक्रे जातस्य स्वरूपम्        | .... | .... | .... | .... | १९० |
| कर्कटसिंहधन्विमीनस्थे शुक्रे जातस्य स्वरूपम्        | ...  | .... | .... | .... | १९० |
| मेषवृश्चिकमिथुनकन्यागते सौरे जातस्य स्वरूपम्        | .... | .... | .... | .... | १९० |
| वृषतुलाकर्कटसिंहस्थे सौरे जातस्य स्वरूपम्           | .... | .... | .... | .... | १९१ |
| धन्विमीनमकरकुंभगते सौरे जातस्य स्वरूपम्             | .... | .... | .... | .... | १९१ |
| मेषादिषु लग्नेषु चंद्राक्रांतराशुक्तस्वरूपातिदेशः   | .... | .... | .... | .... | १९२ |

## दृष्टिफलाध्यायः १९.

|  |      |      |      |      |     |
|--|------|------|------|------|-----|
| मेषवृषमिथुनकर्कटस्थे चंद्रे भौमादिग्रहैर्दृश्यमाने जातस्य स्वरूपम् | .... | .... | .... | .... | १९४ |
| सिंहकन्यातुलावृश्चिकस्थे चंद्रे बुधादिदृष्टे जातस्य स्वरूपम्       | .... | .... | .... | .... | १९५ |
| धन्विमकरकुंभमीनस्थे चंद्रमसि बुधादिदृष्टे जातस्य स्वरूपम्          | .... | .... | .... | .... | १९५ |
| होराद्रेष्काणव्यवस्थितस्य चंद्रस्य ग्रहदृष्टिफलम्                  | .... | .... | .... | .... | १९६ |
| मेषवृश्चिकवृषतुलांशकस्थे चंद्रे सूर्यादिदृष्टे फलम्                | .... | .... | .... | .... | १९७ |
| मिथुनकन्याकर्कटनवांशकस्थे चंद्रेऽर्कादिदृष्टे फलम्                 | .... | .... | .... | .... | १९७ |
| सिंहधन्विमीननवांशस्थे चंद्रे सूर्यादिदृष्टे फलम्                   | .... | .... | .... | .... | १९८ |
| मकरनवांशकस्थे कुंभनवांशकस्थे वा चंद्रे सूर्यादिदृष्टे जातस्य फलम्  | .... | .... | .... | .... | १९८ |
| अस्यैव नवांशकदृष्टिफलस्य विशेषः                                    | .... | .... | .... | .... | १९९ |

## भावाध्यायः २०.

|   |      |      |      |      |     |
|---|------|------|------|------|-----|
| आदित्यस्य लग्नगतस्य द्वितीयस्थस्य च फलम्          | .... | .... | .... | .... | २०० |
| लग्नात्तृतीयचतुर्थपंचमषष्ठस्थानस्थार्कफलम्        | .... | .... | .... | .... | २०० |
| लग्नात्सप्तमादि भावस्थेऽर्के जातस्य स्वरूपम्      | .... | .... | .... | .... | २०१ |
| लग्नादिषष्ठांतभावस्थे चंद्रे जातस्य स्वरूपम्      | .... | .... | .... | .... | २०१ |
| लग्नात्सप्तमादिभावस्थे चंद्रे जातस्य स्वरूपम्     | .... | .... | .... | .... | २०२ |
| लग्नादिस्थयोर्भौमबुधयोर्जातस्य स्वरूपम्           | .... | .... | .... | .... | २०२ |
| लग्नादिस्थस्य जीवस्य फलम्                         | .... | .... | .... | .... | २०३ |
| लग्नादिस्थस्य शुक्रस्य फलम्                       | .... | .... | .... | .... | २०३ |
| लग्नादिस्थस्य सौरस्य फलम्                         | .... | .... | .... | .... | २०३ |
| लग्नादिभावेषु व्यवस्थितानां सर्वग्रहाणां फलविशेषः | .... | .... | .... | .... | २०४ |
| ग्रहकुंडलिकाफलम्                                  | .... | .... | .... | .... | २०५ |

## आश्रययोगाध्यायः २१.

|  |      |      |      |      |     |
|--|------|------|------|------|-----|
| एकादिसंख्योत्तरवृद्ध्या स्वग्रहगतानां ग्रहाणां मित्रक्षेत्रगतानां फलम् | .... | .... | .... | .... | २०६ |
| उच्चगतस्यैकस्यापि मित्रदृष्टस्यैकोत्तरवृद्ध्या नीचशत्रुस्थानां च फलम्  | .... | .... | .... | .... | २०७ |
| कुंभलग्नजातस्याशुभं फलम्   | .... | .... | .... | .... | २०७ |
| होरास्थानां ग्रहाणां फलम्  | .... | .... | .... | .... | २०  |



विषयः

पृष्ठांकः

|  |     |
|--|-----|
| द्रेष्काणावस्थानाच्चंद्रस्य फलम् .....   | २०९ |
| मेषादिनवांशकजातस्य स्वरूपम् .....  | २०९ |
| स्वत्रिंशांशकस्थयोर्भौमसौरयोः फलम् .....                                       | २१० |
| स्वद्विंशांशकस्थयोजीवबुधयोजितस्यफलम् .....                                     | २१७ |
| स्वत्रिंशांशकस्थस्य भौमादित्रिंशांशकस्थयोश्चंद्रार्कयोश्च जातस्य स्वरूपम्..... | २११ |

### प्रकीर्णकाध्यायः २२.

|   |     |
|---|-----|
| प्रकीर्णके ग्रहाणां परस्परं कारकसंज्ञा .....          | २१२ |
| अस्यैवोदाहरणम् .....                                  | २१२ |
| पुनरपि अन्यत्कारकम् .....                             | २१२ |
| कारकसंज्ञाप्रयोजनम् .....                             | २१३ |
| यद्योगे जातो यौवने सुखी भवति स दशापतिः फलपाकश्च ..... | २१३ |
| अष्टकवर्गफलस्य कालः .....                             | २१४ |

### अनिष्टाध्यायः २३.

|                                    |     |
|------------------------------------|-----|
| दारसुतहीनजन्मज्ञानम् .....         | २१४ |
| जीवत एव भार्यामरणयोगत्रयम् .....   | २१६ |
| विकलनयनदारजन्मयोगज्ञानम् .....     | २१६ |
| सुतकलत्रबंध्यापतिजन्मज्ञानम् ..... | २१७ |
| परयुवतिजन्मज्ञानम् ... ..          | २१७ |
| अन्येऽप्यनिष्टयोगाः .....          | २१८ |

### स्त्रीजातकाध्यायः २४.

|   |     |
|---|-----|
| यदुक्तं वपुस्तु लग्नेदुगं तत्प्रदर्शनम्... ..   | २२४ |
| भौमर्क्षे लग्नगे चंद्रगे वा भौमादित्रिंशांशकजातायाः स्वरूपम् .....  | २२४ |
| बुधशुक्रक्षेत्रयोरन्यतमे लग्नगे चंद्रगे वा भौमादित्रिंशांशकजातायाः स्वरूपम् .....                                 | २२५ |
| चंद्राद्यन्यतमे लग्नगे चंद्रगे वा भौमादि त्रिंशांशकजातायाः स्वरूपम् .....   | २२५ |
| एतदंशकैरिति यदुक्तं तदर्थः .....  | २२६ |
| यद्योगे जाता पुरुषाकारसंस्थस्त्रीभिः सह मदनं शमयति तद्योगद्वयज्ञानम् .....  | २२६ |
| अस्तमये पतिश्चेति यदुक्तं तद्विज्ञानम् .....  | २२७ |
| सप्तमस्थाने चंद्रस्य फलदर्शनाभावाज्जाता कीदृशी भविष्यतीति तद्विज्ञानम् .....                                      | २२८ |
| यद्योगे जाता मात्रा सह बंधकी भवतीत्यादि योगत्रयम्. ....   | २२८ |
| यस्याः सप्तमं स्थानं शून्यं भवति तस्याः शनेश्चरांगारकशुक्रक्षेत्रे तदंशे वा सप्तमे यादृशी भवति तद्विज्ञानम् ..... | २२९ |
| चंद्रराशौ सप्तमे तन्नवांशे जीवराशौ वादित्यराशौ च तन्नवांशके वा तद्विज्ञानम् .....                                 | २२९ |
| चंद्रशुक्रबुधानां द्वौ त्रयो वा लग्नगता यस्या भवन्ति तस्याः स्वरूपम् .. ..  | २२९ |
| पूर्वं तासां भर्तृमरणमिति यदुक्तं तद्विज्ञानम् .....  | २३० |
| यद्योगे जाता पुरुषिणी ब्रह्मवादिनी च भवति तद्योगद्वयम् .. ..  | २३० |
| यद्योगे जाता प्रव्रजति तद्योगविज्ञानम् .. ..  | २३१ |



विषयः

पृष्ठसंक्रः

## नैर्याणिकाध्यायः २५.

|  |     |
|--|-----|
| अष्टमस्थाने ग्रहदृष्टे विद्युक्ते युक्ते वा यथा म्रियते तद्विज्ञानम् .. .. .                                 | २३१ |
| शैलाग्राभिधातेषु यैर्योगैर्म्रियते ते योगाः .... .   | २३२ |
| अन्येऽपि मृत्युयोगाः .... .  | २३३ |
| यस्य जन्मकाले पूर्वोक्ता योगा न संति, अष्टमस्थाने च कश्चिद्ग्रहो नास्ति तत्र पश्यति च तन्मृत्युकारणम् .... . | २३६ |
| यादृग्भूमौ म्रियते तद्विज्ञानम् .... .   | २४७ |
| मृतस्य शरीरपरिणामज्ञानम् .... .  | २३८ |
| योऽयं जातो जंतुः स कस्माल्लोकादागत इति तद्विज्ञानम् .... .   | २३८ |
| मृतस्य का गतिर्भविष्यति तद्विज्ञानम् .... .  | २३९ |

## नष्टजातकाध्यायः २६.

|   |     |
|---|-----|
| प्रसूतिकालज्ञानम् .... .  | २४० |
| वर्षतुल्यज्ञानम् ... ..   | २४० |
| अयने विलोमे ग्रहपरिज्ञानादतुपरिज्ञानं मासपरिज्ञानं च .... .                   | २४२ |
| चंद्रमानतिथिज्ञानोपायः .... .   | २४२ |
| अर्थांतरेण मासज्ञानम् .... .  | २४३ |
| प्रकारांतरेण जन्मेशराशिज्ञानम् .... .   | २४५ |
| जन्मराशौ ज्ञाते लग्नज्ञानम् .... .  | २४५ |
| प्रकारांतरेण लग्नानयनम् .... .  | २४५ |
| प्रश्नकाले तात्कालिकं लग्नं कृत्वा लिप्तार्पिंडीकृतस्य गुणकारविज्ञानम् .... . | २४६ |
| नक्षत्रानयनम् .... .  | २४७ |
| वर्षाद्यानयनम् .... .   | २४७ |
| कस्माद्देशः कस्यानयनं कार्यमिति कथनम् ... ..                                  | २४८ |
| दिवा वा रात्रौ वा जातइति विज्ञानम् ... ..                                     | २४८ |
| प्रकारांतरेण नक्षत्रानयनम् .... .   | २४९ |
| नष्टजातकोपसंहारः .... .   | २५० |

## द्रेष्काणाध्यायः २७.

|                                      |     |
|--------------------------------------|-----|
| मेषद्रेष्काणस्य स्वरूपज्ञानम् .... . | २५० |
| वृषद्रेष्काणजातस्य स्वरूपम् .... .   | २५१ |
| मिथुनद्रेष्काणस्य स्वरूपम् .... .    | २५२ |
| कर्कटस्वरूपम् .... .                 | २५३ |
| सिंहद्रेष्काणस्य स्वरूपम् .... .     | २५३ |
| कन्याद्रेष्काणस्वरूपम् .... .        | २५४ |
| तुलाद्रेष्काण स्वरूपम् .... .        | २५५ |
| वृश्चिकद्रेष्काणस्वरूपम् .... .      | २५६ |
| धनिद्रेष्काणस्वरूपम् .... .          | २५७ |



| विषयः                  | पृष्ठांकः |
|------------------------|-----------|
| मकरद्वेष्काणस्वरूपम्   | २५८       |
| कुम्भद्वेष्काणस्वरूपम् | २५९       |
| मीनद्वेष्काणस्वरूपम्   | २५९       |

उपसंहाराध्यायः २८.

[illegible]

इति श्रीबृहज्जातकानुक्रमणिका केशवाचार्यशालग्रामकृता संपूर्णा ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेंकटेश्वर ” छापाखाना, खेतवाड़ी-(मुंबई)



जाहिरात.

वाल्मीकीयरामायण ( भाषाटीकासहित )

और केवल भाषावार्तिक ।

श्रीवाल्मीकीय रामायण २४००० ग्रंथका सरल सुबोध ब्रजभाषाटीका बनवाया है जिसके बीचमें मूल और नीचे ऊपर भाषाटीका और एक वाल्मीकीयरामायणका भाषावार्तिक. ऐसे दोनोंतरहके ग्रन्थ छापके तैयार हैं. जिसमें मूलके अनुसार यथावत् भाषाटीका करके मूल श्लोकोंके अंकभी लगा दियेगये हैं. रामायणकी कथा पढ़ने वालोंको पुराण बाँचनेमें बहुत उप योगी होगा. जिनमहाशयोंको लेना होवे २३ रु० भेज देनेसे भाषाटीकासहित इस पुस्तकको अपनेस्थानपर पासकेंगे और भाषावार्तिकको १० रु० भेजनेसे पासकेंगे. पश्चात् मूल्य बढ़ाया जायगा. और डाकमहसूलभी अलग पड़ेगा. इसवास्ते महाशयों इस अलभ्य लाभको शीघ्रता करिये.

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतसटीकरामायण ।

श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादकृतसंजीविनीटीका ॥

लीजिये महाशय! कविशिरोमणि तुलसीदासजीकी अपूर्व कविताका अक्षरार्थ भाषामृतभी लीजिये, सम्पूर्ण क्षेपकोंसहित और श्रुतिस्मृति पुराणोंके अद्भुतदृष्टांतोंसहित जिसमें सम्पूर्ण शंका समाधानका विवरण है, तुलसीदासजीका समग्र जीवनचरित्र, माहात्म्यचतुर्दश वर्ष रामवनवासकातिथिपत्र और अष्टम रामाश्वमेध लवकुशकाण्डभी अक्षरार्थसहित सम्मिलित है, गृद्धार्थ, अक्षौहिणीकी संख्या, प्रश्नावली, भजनमाला प्रभाती आदिके सिवाय परम मनोहर फोटोग्राफके विचित्र चित्र, और सूर्यवंशका वृक्ष और हनुमान्जीकी चित्रित प्रतिमा है इन सबके सिवाय कठिन २ शब्दोंका बड़ा कोश भी लगाया गया है. ऐसी रामायण आज-पर्यन्त अन्यत्र कहीं नहीं छपी देखते ही तन मन प्रसन्नहोजायगा मूल्य ८ रु० हैं जिल्द चित्रित सुनहरी परममनोहर है तथा उपरोक्त सर्वालंकारों समेत बारीक अक्षर ग्लेज की० ५ रु० और रफ ४ रु० ॥

महाभारत सभापर्व ( आल्हा )

एक पंथ दो काम-महाभारतका पाठ और आल्हाका आनन्द दोनोंही हैं । इसमें राजा युधिष्ठिरका राजसूययज्ञ, जरासन्ध वध, द्यूतकर्म, महारानी द्रौपदीका चीरहरण इत्यादि कथायें वर्णित हैं क्याही करखा छंद वीररस के बनाये हैं, की. ॥ = यह ग्रंथ उन्हीं पं० बालमुकुंदजीका बनाया है जिनका आपलोगोंने "रामायण छंकाकाण्ड आल्हा" अवलोकन किया है



# श्रीमद्बाल्मीकीय रामायण भाषाटीका

श्रीपं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषानुवाद।

भक्तगणो! अति उत्तम टीका सरल पदोंमें हरेक देशोंके समझने योग्य कराई गई है और रुचिर स्थलोंमें मधुर दृष्टान्तों और उदाहरणोंसे अर्थ पुष्ट किया है किन्तु गूढ़ाशयोंका अर्थ तो विशेषही दर्शाया है, विशेष प्रलापसे क्या? शीघ्रता करो पीछे मूल्यबढ़ाया जावेगा. यह पुस्तक कथा बांचनेमें परमोपयोगीहै. मूल्य केवल २१ ही रु० भेजनेपर यह पुस्तक घरबैठे पहुंच जावेगी ॥

---

## श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण सटीक—पं० ज्वालाप्रसादजीकृतसंजीवनी टीका।

लीजिये रामायण सटीक ( बारीक अक्षर ) भी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईं जीकी लिपिके अनुसार व संपूर्ण क्षेपकों सहित जिसमें शंका समाधान आद्यपर्यंत विस्तारपूर्वक लिखेहैं. तुलसीदासका जीवनचरित्र, माहात्म्य, राम चतुर्दश वर्ष वनवासका तिथिपत्र और अष्टम रामाश्वमेध, लवकुशकाण्ड तथा कोष और सुंदर फोटोग्राफके चित्रभी संयुक्त हैं. इसके टीकाकी रचना बहुत उत्तम और अपूर्व मनभावन सुख उपजावन रामयश पावनहै. देशाटन करनेवाले तथा सर्व सामान्यकी सुगमताके लिये सुंदर नवीन छोटे अक्षरोंमें छपकर तयारहै की० ग्लेज ५ रु० रफ ४ रु०.

---



## सामुद्रिक शास्त्र बड़ा ।

यह पुस्तक प्राणियों के शरीरवयव तथा हस्तरेखाओं के फल-फल कथन में परमोपयोगी है इसके द्वारा आयुज्ञान, संतानादि, धनी निर्धनी, पंडित, मूर्ख, कामी, चोर, साधु और असाधुका ज्ञान केवल पठनमात्र से सर्वसाधारण मनुष्य जिसको कुछभी समझ होगी कहनेमें समर्थ होसکتा है इसकी भाषा परम मनोहर और सरल है विशेष रोचकता इस में यह है कि प्रत्येक मूलके इल्लोकोंका सान्वय सरल हिन्दीभाषा में टीका कियागया है, जिससे भारीसे भारी पंडित और छोटेसे छोटे अल्पज्ञ अपने नेत्रोंसे अवलोकन कर इसका स्वाद पासकते हैं, विलायती कपड़ेकी जिल्द बँधी है. मूल्य केवल १। ५० है ॥

## लीलावती सान्वय भाषाटीका ।

यह सद्गणितकी परिपाटी श्रीमान् भास्कराचार्यजीने निर्माण की है. इसमें गणित प्रकरणके अनेकानेक स्पष्ट नियम बांधे हैं और प्रत्येक नियमके स्पष्टी करणार्थ बहुत बहुत उदाहरण दिये हैं संस्कृत ग्रंथका सर्व साधारणोंको ज्ञान लाभहोनेके वास्ते हमने सरल सुबोध स्पष्ट उदाहरणों समेत और अन्वयके साथ हिंदीमें भाषा-टीका करवायकै निज " श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखानेमें चिकने पुष्ट कागजपर छापकै प्रसिद्ध करी है. यह पुस्तक सर्व गणिताभ्यासी छात्रोंको बहुत उपयोगी और अलभ्य है ऐसी सविस्तर भाषा टीका अन्वयसहित कहींभी नहीं छपी. सबके सुगमार्थ मूल्य बहुतही स्वल्प केवल १॥ ५० रक्खाहै.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

त्रैमराज श्रीकृष्णदास,

" श्रीवेङ्कटेश्वर " छापाखाना ( मुंबई. )



# जाहिरात.

|  |      |
|--|------|
| लीलावती सान्वय भाषाटीका अत्युत्तम.....                       | १-८  |
| बृहज्जातकभाषाटीका अत्युत्तम .....                            | १-८  |
| वर्षदीपकपत्रीमार्ग वर्षजन्मपत्र बनानेका .....                | ०-४  |
| मुहूर्तचिंतामणि प्रमिताक्षरा रफ् रु. १ ग्लेज् .....          | १-८  |
| मुहूर्तचिंतामणि पीयूषधाराटीका .....                          | ३-०  |
| ताजिकनीलकण्ठी सटीक तंत्रत्रयात्मक.....                       | १-४  |
| ताजिकनीलकण्ठी महीधरकृत भा० टीका अत्युत्तम टैपकी छपी .....    | १-८  |
| ज्योतिषसार भाषाटीकासहित .....                                | १-०  |
| मुहूर्तचिंतामणि भाषाटीका महीधरकृत .....                      | १-०  |
| मानसागरीपद्धति .....   | १-०  |
| वालवोधज्योतिष .....  | ०-२  |
| चमत्कारचिंतामणि भाषाटीका .....                               | ०-४  |
| जातकालंकार भाषाटीका.....                                     | ०-६  |
| जातकालंकार सटीक.....   | ०-६  |
| जातकाभरण .....   | ०-१२ |
| प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका .....                                | ०-१२ |
| लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित .....                          | ०-३  |
| मुहूर्तमार्तण्ड संस्कृतटीका-भाषाटीकासमेत .....               | १-४  |
| शीघ्रबोध भाषाटीका .....                                      | ०-६  |
| संकेतनिधि सटीक पं० रामदत्तजीकृत यह ग्रंथ देखने योग्य है..... | १-४  |
| षट्पंचाशिका भाषाटीका .....                                   | ०-४  |
| भुवनदीपक सटीक .....  | ४-०  |
| जैमिनिसूत्र सटीक चार अध्यायका .....                          | ०-७  |
| रमलनवरत्न .....  | ०-८  |
| रमलनवरत्न भाषाटीका .....                                     | ०-१२ |
| सर्वार्थचिंतामणि .....                                       | ०-१२ |
| लघुजातक सटीक .....   | ०-६  |
| सामुद्रिक भाषाटीका .....                                     | ०-४  |
| सामुद्रिक शास्त्र बड़ा सान्वय भाषाटीका.....                  | १-४  |
| यवनजातक.....   | ०-२  |
| भावकुतूहल भाषाटीका .....                                     | १-०  |
| अमरकोश भाषाटीका शब्दानुक्रमसहित रफ् १॥ ग्लेज् .....          | २-०  |
| पंचांग १० वर्षका छपके तयार है.....                           | १-८  |
| ह्यायनरत्न .....   | १-८  |

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेमराज श्रीण्णदास,

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापखाना बंबई.



जाहिरात ।

## श्रीमद्भागवत संस्कृत तथा भाषाटीका सहित ।

श्रीवेदव्यासप्रणीत श्रीमद्भागवत सबसे कठिन है और इसका प्रचार भरतखण्डमें सबसे अधिक है यह ग्रंथ छिष्टताके कारण सर्व साधारण लोगोंको टीका होनेपर भी अच्छी रीतिसे समझना कठिन था कोई २ स्थलोंमें बड़े २ पण्डितोंकी भी बुद्धि चक्रमें पड़जाती थी इसलिये विना संस्कृत पढ़े सर्व साधारण पण्डित व स्वल्प विद्या जाननेवाले भगवद्भक्तोंके लाभार्थ संस्कृत मूल व अतिप्रिय ब्रजभाषा टीकासहित जो कि हिन्दी भाषाओंमें शिरोमणि और माननीय है, उसी भाषामें टीका बनवाकर प्रथमावृत्ति छपायाथा वह बहुतही जल्दी हाथोंहाथ विकगई, फिर द्वितीयावृत्तिभी विकगई अब इसकी तृतीयावृत्ति द्वितीयावृत्तिकी अपेक्षा अच्छीतरह शुद्ध करवाके मोटे अक्षरमें छपाया है और भक्ति ज्ञानमार्गी ५०० अतीव मनोहर दृष्टान्तभी दिये हैं कागज विलायती बढ़िया लगाया है, माहात्म्य षष्ठाध्यायी भाषाटीका सहित इसके साथही है, प्रथमावृत्तिमें मूल्य १५ रुपया इस आवृत्तिमें केवल १२ वाराही रुपया रक्खा है.

## तुलसीकृत रामायण सटीक

लवकुशकांड सहित ।

प्रत्येक दोहा चौपाईका अर्थ पंडित ज्वाला प्रसादजी कृत भाषा टीका अतिउत्तम संपूर्ण क्षेपकोंके अर्थ और माहात्म्य तुलसीदासजीका जीवनचरित्र व गूढार्थ व रामवनवास तिथिपत्र कोष और हनुमानजीका चित्र तथा सूर्यवंशका वृक्ष सहित विलायती सोहने री नाम चित्रित जिल्दकी की. ८ रुपये.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेंकटेश्वर” छापाखाना.

खेतवाड़ी—ब्यांकरोड—मुंबई.

श्रीः ।

अथ

बृहज्जातकं वराहमिहिराचार्यप्रणीतम् ।

उत्पलकृतसंस्कृतटीकासमेतं

प्रारभ्यते ।

श्रीगणेशाय नमः ।

ब्रह्माजशंकररवीन्दुकुजज्ञजीवशुकार्कपुत्रगणनाथगुरुप्रणम्य ॥ यःसंग्रहोर्कवर-  
लाभविशुद्धबुद्धेरावतंकस्यतमहंविबृणोमिकृत्स्नम् ॥ १ ॥ यच्छास्त्रंसविताचका-  
रविपुलैःस्कंधैस्त्रिभिर्ज्योतिषांतस्योच्छित्तिभयात्पुनःकलियुगेसंमृत्ययोभूतलम् ॥  
भूयःस्वल्बतरं वराहमिहिरव्याजेनसर्वव्यधादित्थंयंप्रवदंतिमोक्षकुशलास्तस्मै नमो  
भास्वते ॥ २ ॥ वराहमिहिरोदधौसुबहुभेदतोयाकुलेग्रहर्क्षगणयादसिप्रचुरयो  
गरन्नोज्ज्वले ॥ भ्रमंतिपरितोयतोलघुधियोर्थलुब्धास्ततःकरोमिविवृतिप्लवंनिज-  
धियाहमत्रोत्पलः ॥ ३ ॥ इहशास्त्रेकानिसंबंधाभिधेयप्रयोजनानिभवंतीत्यु-  
च्यन्ते । वाच्यवाचकलक्षणः संबंधः वाच्योऽर्थोवाचकः शब्दः अथवोपायोपेयल-  
क्षणः संबंधः उपायस्त्विदंशास्त्रमुपेयोयद्विज्ञानम् अथवा आब्रह्मादिविनिः  
मृतमिदंवेदांगमिति संबंधः राशिस्वरूपहोरादिष्काणनवांशकद्वादशभा-  
गत्रिंशद्भागपरिज्ञानग्रहस्वरूपग्रहराशिबलाबलवियोनिजन्माधानपरिज्ञानजन्म-  
कालविस्मापनप्रभावकथनारिष्टायुर्दायदशांतर्दशाष्टकवर्गकर्माजीवराजयोगस-  
नाभयोगचंद्रयोगद्विग्रहादियोगप्रव्रज्याराशिशीलदृष्टिफलभावफलाश्रयप्रकी-  
र्णानिष्टयोगस्त्रीजातकनिर्याणनष्टजातकद्रेष्काणगुणरूपमभिधेयम् लोकानां  
प्राक्कर्मविपाकव्यंजकत्वं प्रयोजनम् सत्पात्रशुभाशुभकथनादिहलोकपरलोक-  
सिद्धिरितिप्रयोजनम् । किमेभिरुक्तैरित्यत्रोच्यते यस्मान्गुणां श्रोतॄणांसंबंधाभिधे-  
यप्रयोजनकथनाच्छास्त्रविषये श्रद्धा जायत इति । तथाचोक्तमत्रार्थ-सिद्धिः श्रोतृ-  
प्रवृत्तीनांसंबंधकथनाद्यतः । तस्मात्सर्वेषुशास्त्रेषुसंबंधःपूर्वमुच्यते ॥ किमेवात्रा-  
भिधेयस्यादितिपृष्टस्तुकेनचित् । यदिनप्रोच्यते तस्मै फलशून्यंतुतद्भवेत् ॥ सर्वस्यै-  
वदिशास्त्रस्यकर्मणोवापिकस्यचित् । यावत्प्रयोजनंनोक्तंतावत्तत्केनगृह्यते ॥ इति ॥  
कस्यास्मिच्छास्त्रेऽधिकारइत्यत्रोच्यते । द्विजस्यैव । यतस्तेनषडंगोवेदोध्येतव्यो  
ज्ञातव्यश्च । कान्यंगानीत्युच्यन्ते । शिक्षाकल्पोव्याकरणनिरुक्तंज्योतिषांगतिः ।  
छंदसालक्षणंचैवषडंगोवेदउच्यतइति ॥ तथाचोक्तमंगे । वेदाहियज्ञार्थम-  
भिप्रवृत्ताःकालानुपूर्वाविहिताश्चयज्ञाः । यस्मादिदंकालविधानशास्त्रंयोज्योति-



षंवेदसवेदयज्ञानिति । ज्योतिःशास्त्रंवेदांगमेव । ननुकुतोऽज्योतिःशास्त्रस्यवेदांगत्वमुक्तम् । तदुच्यते ॥ चंद्रसूर्योपरागसंक्रांतिव्यतीपातवैधृतगजच्छायैकादश्यमावास्यादिपुण्यकालकथनात् यज्ञानांकालव्यंजकत्वात् । अन्येषांश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तानांकर्मणांकालकथनाच्चास्यवेदांगत्वमेव ॥ तथाचभास्करसिद्धांते ॥ वेदास्तावद्यज्ञकर्मप्रवृत्तायज्ञाः प्रोक्तास्तेतुकालाश्रयेण ॥ शास्त्रादस्माद्बालबोधोयतः स्याद्वेदांगत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात् ॥ १ ॥ शब्दशास्त्रंमुखंज्योतिषंक्षुषी श्रोत्रमुक्तंनिरुक्तंचकल्पः करौ ॥ यातुशिक्षास्यवेदस्यसानासिकापादपद्मद्वयं छंदआद्यैर्बुधैः ॥ २ ॥ वेदचक्षुः किलेदंस्मृतं ज्योतिषंमुख्यताचांगमध्येस्यतेनोच्यते ॥ संयुतोपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषांगेनहीनोनकिंचित्तरः ॥ ३ ॥ तस्माद्विजैरध्ययनीयमेतत्पुण्यंरहस्यंपरमंचतत्त्वम् ॥ योज्योतिषंवेत्तिनरःससम्यग्धर्मार्थमोक्षांल्लभतेयशश्च ॥ ४ ॥ सतामयमाचारोयच्छास्त्रप्रारंभेष्वभिमतदेवतायाः प्रसादात्तन्नमस्कारेणतस्तुत्यातद्भक्तिविशेषेणचाभिप्रेतार्थसिद्धिंवांच्छति । तदयमप्यावंतिकाचार्यः श्रीवराहमिहिरनामाद्रिजोऽर्काल्बधवरप्रसादो ज्योतिःशास्त्रसंग्रहकृद्भगितस्कंधादनंतरंहोरास्कंधंचिकीर्षुरशेषविघ्नोपशान्त्यर्थंभगवतः सूर्यादात्मगामिनींवाक्सिद्धिशार्दूलविक्रीडितेनाह—

श्रीगणेशायनमः ॥ मूर्तिंत्वेपरिकल्पितः शशभृतोवर्त्मान्पुनर्जन्मनामात्मेत्यात्मविदांक्रतुश्चयजतांभर्तामरज्योतिषाम् ॥ लोकानांप्रलयोद्भवस्थितिबिभुश्चानेकधायः श्रुतौवाचनः सददात्त्वेनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपोरविः ॥ १ ॥

मूर्तिंत्वेइति । सरविर्भगवानादित्योनोऽस्मभ्यंवाचंगिरंददातुप्रयच्छतु । कीदृशोरविः अनेककिरणः । नएकः किरणोयस्यासावनेककिरणः प्रभूतरश्मिः सहस्ररश्मिरित्यर्थः । पुनः किंभूतः त्रैलोक्यदीपः त्रयोलोकास्त्रैलोक्यं भूर्भुवः स्वराख्यं तत्रदीपः प्रकाश्यसाधर्म्यात् । तथामूर्तिंत्वेपरिकल्पितः शशभृतः शशंप्राणिविशेषंविभर्तिधारयतीतिशशभृच्चंद्रमास्तस्यमूर्तिंत्वेशरीरत्वेपरिकल्पितः शशिनोमूर्तिरादित्य इति पर्यवस्थापितः यतोऽजलमयश्चंद्रः प्रकाशशून्यः प्रोक्तः तस्मिंस्तरणिकिरणप्रतिफलनादितरस्य ज्योत्स्नाप्रसरविस्तरः ॥ यस्मादुक्तमाचार्येणैवबृहत्संहितायाम् । नित्यमधःस्थस्येदोर्भाभिर्भानोः सितंभवत्यर्धम् ॥ स्वच्छाययान्यदसितंकुंभस्येवातपस्थस्य ॥ १ ॥ त्यजतोर्कतलंशशिनः पश्चादवलंबतेयथाशौक्यम् ॥ दिनकरवशात्तथेदोः प्रकाशतेतः प्रभृत्युदयः ॥ २ ॥ सलिलमये शशिनिरिवेदीधितयोमूर्छितास्तमोनैशम् ॥ क्षपयंतिदर्पणोदरनिहिताइवमंदिरस्यांतरिति ॥ तथाच

भास्करसिद्धांते ॥ तरणिकिरणसंगादेषपीयूषपिण्डोदिनकरदिशिचंद्रश्चंद्रिकाभि-  
 श्रकास्ति । तदितरदिशिवालाकुंतलश्यामलश्रीर्घटइवानिजमूर्तिच्छाययैवातप-  
 स्थः ॥ इति । तथाचवेदे सुपुन्नः सूर्यरश्मिश्चंद्रमाइति । अथवाशशिभृतइतिपाठः ।  
 शशिभृतोमहादेवस्यमूर्तित्वेपरिकल्पितः । यतोसौ भगवानष्टमूर्तिः क्षिति-  
 जलपवनहुताशनयजमानाकाशसोमसूर्याख्याइत्यष्टमूर्तयस्तस्य महादेवस्यातो  
 माहेश्वरीमूर्तिरादित्यइति । शशिभृतइति साधुपाठः । तथा वर्त्माऽपुनर्जन्मनां न-  
 पुनर्जन्मविद्यतेयेषांतेऽपुनर्जन्मानोमुक्तास्तेषांवर्त्ममार्गः मोक्षद्वारमित्यर्थः । यतो-  
 द्विविधोमार्गः देवयानाख्यः पितृयाणाख्यश्च । तत्रपितृयाणमार्गद्वारभूतश्चंद्रमाः  
 येनस्वर्गगामिनः स्वर्गं गच्छति । मोक्षद्वारं सूर्यः । यतः सूर्यमंडलं भित्त्वा मोक्षभाजो  
 भवंति मोक्षद्वारं गच्छन्तीति । तथाच श्रीभारते भगवान्यासः । स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मो-  
 क्षद्वारं त्रिविष्टपमिति । आत्मेत्यात्मविदाम् आत्मानं विदंति जानंतीत्यात्मवि-  
 दो योगिनस्तेषां स एवात्मा चित्तत्वम् । तेजोरूपी प्राणरूपेण हृदयांतरस्थितः ।  
 तथाच श्रुतिः सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति । जगतोजंगमस्य तस्थुषः स्थावरस्य  
 सूर्य एवात्मा ॥ क्रतुश्च यजताम् । यजमानानां स एव क्रतुर्यज्ञः । यत उक्तं मनुना ॥  
 अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते । आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजा  
 इति । अर्तामरज्योतिषाम् अमरा देवाः ज्योतींषि ग्रहनक्षत्रादीनि ते तेषां भर्ता प्रभुः  
 प्रधान इत्यर्थः । यतः सर्वे एव देवयो न यस्तस्योपस्थानं कुर्वति ग्रहनक्षत्राणां च केवलं  
 तद्वशेन नित्योदयास्तमयाः । यत उक्तम् । तेजसांगोलकः सूर्यो ग्रहर्क्षार्ण्यं बुगो-  
 लकाः । प्रभावं तो हि दृश्यं ते सूर्यरश्मिप्रदीपिता इति ॥ एवं गुणाधिक्यादमरज्यो-  
 तिषां प्रभुः लोकानां प्रलयोद्भवस्थिति विभुरिति । लोकाः भूलोकादयस्तेषां  
 प्रलये विनाशे उद्भवे उत्पत्तौ स्थितौ पालने । विभुर्विष्णुः भगवतोऽतीतवर्तमानभा-  
 विकालत्रयपरिच्छेदचिद्भूतत्वात् । चशब्दोत्रावधारणे । अनेकधायः श्रुतौ श्रुतौ  
 वेदेयोऽनेकधानेकप्रकारैः पठ्यते । तथाच श्रुतिः इदं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः  
 ससुपर्णो गरुत्मान् । एकं स द्विप्रबहुधा वदंत्यग्निममातरि श्वानमाहुरिति ॥ १ ॥

भूयोभिः पटुबुद्धिभिः पटुधियां होराफलज्ञतये शब्दन्यायसम-  
 न्वितेषु बहुशः शास्त्रेषु दृष्टेष्वपि ॥ होरातंत्रमहार्णवप्रतरणे भग्नो  
 द्यमानामहंस्वल्पंवृत्तविचित्रमर्थबहुलं शास्त्रं प्रारभे ॥ २ ॥

अधुनास्य शास्त्रस्य परप्रणीतत्वादानर्थक्यं परिजिहीर्षुरन्यशास्त्रेभ्योस्य गुणव-  
 त्वं प्रदर्शयच्छादूलविक्रीडितेनाह ॥ भूयोभिरिति । होरायास्तंत्रं होरातंत्रम् अथ  
 वा होरा एव तंत्रं होरातंत्रं तदेव महार्णवो दुष्पारत्वात् तं पठ्यते तार्यते तेनार्थस्तत्तंत्रम् ।



अहंहोरातंत्रमहार्णवप्रतरणेभ्योद्यमानांशास्त्रप्लवंप्रारभे । होरातंत्रमेवमहार्णवो  
 महासमुदस्तत्प्रतरणेप्रतरणविषयेभ्योद्यमानांभ्योत्साहानांशास्त्रप्लवंप्रारभेकरो-  
 मि । शास्त्रमेवप्लवःशास्त्रप्लवस्तंशास्त्रप्लवम् । यथाप्लवस्तितीर्षूणांपरपारगमन-  
 माशुसंपादयति । तथेदमपिहोरातंत्रमहार्णवप्रतरणेभ्योद्यमानामित्यस्यप्लवेनसा-  
 धर्म्यम् । केनकृतेहोरातंत्रमहार्णवप्रतरणेभ्योद्यमानामित्यतआह।भूयोभिरिति ।  
 भूयोभिर्बहुतरैः । किंभूतैः पटुबुद्धिभिः पटुःपट्वीबुद्धिर्द्वेषांतेपटुबुद्धयःप्रचुराः  
 प्रज्ञास्तैः । शास्त्रेषुदृष्टेषुचिरंविचारितेषुसत्त्वपि । किंभूतेषु । शब्दन्याय-  
 समन्वितेषु । शब्दानांन्यायःशब्दन्यायः मीमांसा । तदुक्तम् ॥ शब्दानामे-  
 वसाशक्तिस्तर्कोयःपुरुषाश्रयइति । अथवाशब्दाश्चन्यायाश्चशब्दन्यायाः शब्दो-  
 र्थवान्यायोमीमांसातैःसमन्वितेषुसंयुक्तेषु ॥ किमेकवारंदृष्टेपुनेत्याह बहुशइति।  
 बहुशःबह्वन्वारान्व्याससमासैर्बहुप्रकारैरचितेष्वित्यर्थः । किमर्थं दृष्टेपु ॥पटुधियां  
 होराफलज्ञप्तये चतुरबुद्धीनांहोराफलावबोधनाय।प्राक्तनकर्मविपाकोहोरा होरा-  
 याःफलंहोराफलंतस्यज्ञप्तिस्तत्फलंशभाशुभंतज्ज्ञानाय।किंभूतंशास्त्रप्लवम् स्वल्पं  
 लघुग्रंथम्।पुनःकिंभूतम् वृत्तविचित्रम्।वृत्तैः शार्दूलविक्रीडितप्रभृतिभिर्विचित्रंर-  
 म्यं तस्मात्स्वल्पतयैवास्यगुणवत्त्वम् । यतस्तेषामत्राप्युद्यमभंगोभवति स्वल्प-  
 मित्यनेनग्रहणधारणसुखतांप्रदर्शयति । तथाच हस्तिवैद्यकरोवीरसेनः॥समासो-  
 क्तस्यशास्त्रस्यसुखंग्रहणधारणे ॥ वृत्तविचित्रमित्यनेनसूक्ततांप्रदर्शयति । ननु  
 स्वल्पशास्त्रस्यस्वल्पार्थतैवभविष्यतीत्याह । अर्थबहुलं बद्धाभिधेयम्।अतएवपूर्व-  
 विरचितशास्त्रेभ्योस्यगौरवम् । अन्यथाहिशास्त्रसंभवात्पुनरुक्ततादोषः स्यात् ।  
 एतदुक्तं भवति । प्रागभिहितशास्त्राण्यतिविस्तृतान्यतस्तेषुभ्योद्यमास्तदर्थ-  
 महंशास्त्रप्लवंप्रारभे । ननुकदाचिदल्पप्रज्ञतयातेभ्योद्यमास्तत्कुतोलब्धम् ।  
 यथापूर्वशास्त्राणामहत्त्वाद्भ्योद्यमास्तदर्थमिदमल्पमित्यतइदमाह । पटुधियामि-  
 त्यनेनैतत्प्रतिपादितंभवति नहितेबुद्धिहीनत्वात्तेषुशास्त्रेषुभ्योद्यमाः किंतिहि शा-  
 स्त्रदोषादन्यथाऽत्रापितेषामुद्यमभंगःस्यात् ॥ प्लवमपिस्वल्पंचलघुवृत्तमदीर्घवृत्तं  
 विचित्रंरम्यमर्थबहुलंवित्तपरिपूर्णमेवंविधंतितीर्षूणामतिसुखावहंभवतीति ॥२॥

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेकेवाच्छंतिपूर्वापरवर्णलोपात् ॥

कर्माजितंपूर्वभवेसदादित्यतस्यपक्तिसमभिव्यनक्ति ॥ ३ ॥

अधुना होराशास्त्रस्यपुराकृतकर्मविपाकव्यंजकत्वं वर्णद्वयपरिहारेण शब्दव्यु-  
 त्पत्तिंप्रदर्शयन्निद्वयञ्चयाह ॥ होरेति । होरार्थंशास्त्रंहोरातामहोरात्रविकल्पमेकेवा-  
 छंति।अहश्चरात्रिश्चाहोरात्रंहोराशब्देनोच्यते।तस्यविकल्पोविकल्पना । एके अन्ये  
 होरावांच्छंतीत्यर्थः । कथमुच्यते।पूर्वापरवर्णलोपात्।अहोरात्रशब्दस्यपूर्वोवर्णोऽ-

कारोऽपरवर्णश्चक्रकारस्तयोर्लोपमदर्शनंकृत्वाहोराशब्दोवाशिष्यते । किमर्थं पुनरहोरात्रशब्दाद्धोराशब्दोव्युत्पाद्यतेइति अत्रोच्यते । मेषादयोद्वादशलग्नराशयोहोरात्रांतर्भूताः लग्नस्यचकालवशाज्ज्ञानम् लग्नवशाच्छुभाशुभज्ञानम् । अतोहोरात्राश्रयत्वात्ततएवहोराशब्दोव्युत्पाद्यते । एतदेवाचार्यस्याप्यभिप्रेतम् यतः परमतमप्रतिषिद्धमनुमतमिति । तथाचसारावल्याम् । आद्यंतवर्णलोपाद्धोरास्माकं भवत्यहोरात्रात् । तत्प्रतिषिद्धः सर्वोग्रहभगणाश्चित्यतैयस्मात् । किमस्यप्रयोजनमित्याह ॥ कर्मार्जितमिति । पूर्वभवेप्राग्जन्मनियत्सदादिशुभमशुभंमिश्रंचकर्मार्जितं तस्यपक्तिपाकंसम्यक्अभिव्यनक्तिप्रकटीकरोति । तथाचलघुजातके यदुपचितमन्यजन्मनिशुभाशुभंतस्यकर्मणः पक्तिम् । व्यंजयतिशास्त्रमेतत्तमासिद्रव्याणिदीपइवेति । ननुशुभस्याशुभस्यवावश्यभाविनः किंव्यनक्ति । उच्यते । द्विविधंशुभाशुभं दृढकर्मोपार्जितमदृढकर्मोपार्जितंच । तत्रदृढकर्मोपार्जितस्यदशाफलंपाकक्रमेण व्यनक्तिअशुभंदशाफलंज्ञात्वायात्रादेः परिहारः कर्तव्यः । शुभंज्ञात्वायात्रादेरतिशयेनदानम् । अदृढकर्मोपार्जितस्याष्टकवर्गेणफलव्यक्तिः । तच्चाशुभंज्ञात्वाशांत्यादिभिरुपशमनयेत् । तथाचयवनेश्वरः । यद्यद्विधानंनियतंप्रजानांग्रहर्क्षयोगप्रभवंप्रसूतौ । भाग्यानितानीत्यभिशब्दयंतिवार्तानियोगेतिदशानराणाम् ॥ तदप्यभिज्ञैर्द्विविधं निरुक्तंस्थिराख्यमौत्पातिकसंज्ञितंच । कालक्रमाज्जातकनिश्चितंयत्कर्मोपसर्पिःस्थिरमुच्यतेतत् ॥ सप्तग्रहाणांप्रथितानियानिस्थानानिजन्मप्रभवानिसद्भिः । तेभ्यःफलंचारग्रहक्रमस्थादशुर्यदौत्पातिकसंज्ञितंतत् । अनेनास्थिरस्यशांत्यादिभिरुपशमः प्रदर्शितोभवति । उक्तंच भगवताव्यासेन विहन्याद्बुर्बलंदैवं पुरुषेणाविपश्चितेति ॥ ३ ॥

कालांगानिवरांगमाननसुरोद्दृत्क्रोडवासोभृतोवस्तिर्व्यंजनमूरुजानुयुगुलेजंचेतोत्रिद्वयम् ॥ मेषाश्विप्रथमानवर्क्षचरणाश्चक्रस्थिताराशयोराशिक्षेत्रग्रहर्क्षभानिभवनंचैकार्थसंप्रत्ययाः ४।

अधुनाव्यवहारार्थंकालाख्यस्यपुरुषस्यमेषादिराशिपूर्वकंशिरःप्रभृत्यंगविभागंशाईलविक्रीडितेनाह ॥ कालांगानीति । कालस्यांगानिकालांगानितानिचमेषप्रभृतिराशयोनवर्क्षचरणानवभिर्ऋक्षचरणैर्नक्षत्रपादैःप्रमाणयेषांति । अश्विप्रथमाः अश्विनीतःप्रभृतिनवनवनक्षत्रपादाएकैकस्यप्रमाणम् । मेषप्रभृतिराशयोश्विप्रथमैर्नक्षत्रपादैर्युक्ताइत्यर्थः । तथाभूताराशयो धातुरवयवाः । तथाचयवनेश्वरः द्वेद्वेसपादेभवनंगतेइति । तथाचभगवान्गार्गिः अश्विनीभरणीमेषः कृत्तिकापादएवच । तत्पादत्रितयंब्राह्मंवृषः सौम्यदलंतथा ॥ सौम्यार्द्धमार्द्राभिथुनंतवादित्याश्च-



रणत्रयम् । तत्पादः पुण्यमाश्लेषाराशिः कर्कटकः स्मृतः ॥ पित्र्यं भाग्यमथार्यम्णः  
पादः सिंहः प्रकीर्तितः । तत्पादत्रितयं कन्याहस्तश्चित्रार्धमेव च । तुलाचित्रादलं स्वा-  
तिर्विशाखाचरणत्रयम् । तत्पादं मित्रदैवत्यं ज्येष्ठावृश्चिक उच्यते । मूलमाप्यं  
तथा धन्वीपादो विश्वेश्वरस्य च । तत्पादत्रितयं श्रोत्रं मकरो वासवं दलम् ॥  
तदलं वारुणं कुंभस्तथा जाच्चरणत्रयम् । तत्पाद एको मीनः स्यादहिर्बुध्न्यं च रे-  
वती ॥ चक्रे स्थिताश्चक्रस्थिताः चक्रस्थिताराशयः अथवा चक्रवस्थिताः अने-  
कसंस्थानमेषां प्रदर्शितं भवति । तत्र कालाख्यस्य वरांगं शिरोमेषः आननं मुखं  
तद्वृषः उरो वक्षो मिथुनं तद्दृढदयं कुलीरः कर्कटः क्रोडमुदरं सिंहः वासो भृतकटिः  
कन्या वस्तिर्नाभिव्यं जनयोरंतरं तुला व्यंजनं येन पुंस्त्वं व्यंज्यते लिंगं तद्वृश्चिकः  
ऊरुयुगलं धन्वी जानुयुगलं मकरः जंघे द्वे कुंभः अंग्रिद्वयं पादयुगलं मीन इति ।  
तथा च बादरायणः ॥ मेषः शिरोऽथ वदनं वृषभो विधातुर्वक्षो भवेन्नु मिथुनं हृदयं कुली-  
रः । सिंहस्तथोदरमथो युवतिः कटिश्च वस्तिस्तुला भृदथ मेहनमष्टमं स्यात् ।  
धन्वी चास्योरुयुगं मकरो जानुद्वयं भवति । जंघाद्वितयं कुंभः पादौ मत्स्यद्वयं चेति ॥  
अस्य प्रयोजनम् । जन्मकाले यो राशिः पापग्रहाक्रांतः सकालाख्यस्य पुरु-  
षस्य यस्मिन् ग्रंथे स्थितस्तत्रांगे जातस्योपघातो वक्तव्यः । यत्र सौम्यः स्थितस्तत्र पुष्टि-  
रिति । तथा च सारावल्याम् कालनरस्यावयवान् पुरुषाणां कल्पयेत्प्रसवकाले ।  
सदसद्ग्रहसंयोगात् पुष्टान्तसोपद्रवांश्चापीति ॥ राशिक्षेत्रमित्यादि । एषां च प्रत्ये-  
कस्य राशिरिति संज्ञा तस्यैव पर्यायनामानि क्षेत्रं गृहमृक्षं भं राशिश्च क्षेत्रं च गृहं च ऋक्षं  
च भं च तानि राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं च गृहत्वाद्भवनग्रहणे सिद्धे यत्पुनर्भवन-  
ग्रहणं कृतं तत्सर्वेषां गृहपर्यायाणां ग्रहणार्थम् । ऋक्षत्वादपि भग्रहणे सिद्धे यत्पुनर्भग्रहणं  
तैर्नैतद्दर्शयति । यत्र यत्र होराशास्त्रे भग्रहणमृक्षग्रहणं वा तत्र तत्र राशेरेव ग्रहणं स्यान्न  
तु नक्षत्रस्य । एतेराद्यादयः शब्दा एकार्थसंप्रत्यया एकार्थाभिधायका इत्यर्थः ॥ ४॥

मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं चापीनरोश्च जघनो मकरो भृ-  
गास्यः ॥ तौली सस्यदहनाप्लवगा च कन्या शेषाः स्वनामसदृ-  
शाः स्वचराश्च सर्वे ॥ ५ ॥

अधुना राशीनां स्वरूपविज्ञानं वसंततिलकेनाह ॥ मत्स्याविति । मीनो राशिर्म-  
त्स्यौ मत्स्यद्वयमन्योन्यं पुच्छाभिमुखम् । एतत्तु कुतोलभ्यते । उच्यते । तस्यै-  
वोभयोदयत्वात् । वक्ष्यति च लग्नसमेत्युभयतः पृथुरो मयुग्ममिति । घटी कुंभः  
स्कंधासक्त रिक्तघटधारी पुरुषः कुंभः । मिथुनो नृमिथुनराशिर्मिथुनं नृमिथुनं स्त्रीपु-  
मांसौ तन्मिथुनं सगदं सवीणं पुमान्सगदः स्त्रीसवीणा । चापीनरोश्च जघनः ध-

न्वीराशिश्चापीविद्यमानधन्वानरोऽश्वजघनः अश्वस्तुरगस्तस्येवजघनं पादा  
 यस्यसोऽश्वजघनः चतुष्पादित्यर्थः । मकरोमृगास्यः मकरोराशिर्मकरएवसच  
 मृगास्योमृगमुखः । तौलीत्यादि तुलाविद्यमानतुलःपुरुषः । कन्याकुमारीप्लव-  
 गानौकास्था ससस्यदहना सस्यंचदहनश्चतौसस्यदहनौताभ्यांसहवर्ततइतिस-  
 सस्यदहना । शेषाराशयोमेषवृषकर्कटसिंहवृश्चिकाः स्वनामसदृशाः स्वसंज्ञा-  
 विहिताकृतयः । तद्यथा मेषोमेषः वृषोवृषभः कर्कटः कुलीरोजलचरप्राणी सिंहः  
 केसरी वृश्चिको वृश्चिकःकीटजातिः । तथाचसत्यः ॥ छागोवृषभोवीणागदाधरं-  
 मिथुनमभसिकुलीरः । सिंहःशैलेकन्यानौसंस्थादीपसस्यकरा ॥ पुरुषस्तुलाध-  
 रोवृश्चिकोयधन्वीनरोहयांत्यार्थः । मकरार्थमृगपूर्वकुंभीपुरुषोद्गघोमीनः । स्वच-  
 राश्चसर्वे सर्वेद्वादशराशयः स्वचराः स्वेपुस्वेपुस्थानेषुचरन्ति यथादृष्टस्थान-  
 निवासिनइत्यर्थः । तद्यथा मेषवृषावारण्यौदिवा रात्रौ ग्राम्यौ मिथुनंग्राम्यः  
 कर्कटोऽनुचरः सिंह आरण्यः कन्यादर्शितदेशविभागा तुलापण्यवीथिस्थः वृ-  
 श्चिकःश्वभ्रचारी धन्वीग्राम्यः मकरस्य पूर्वभागआरण्योन्योजलचरः  
 कुंभोग्राम्यः मीनोजलचरइति । तथाचयवनेश्वरः ॥ आद्यःस्मृतोमेषसमानमूर्तिः  
 कालस्यमूर्द्धांगदितःपुराणैः ॥ सोजाविकासंचरकंदराद्रिस्तेनाग्निधात्वाकररत्न-  
 भूमिः ॥ १ ॥ वृषाकृतिस्तुप्रथितोद्वितीयःसवक्रकंठायतनंविधातुः ॥ वनाद्रिसानुद्वि-  
 पगोकुलानांकृषीवलानामधिवासभूमिः । २ ॥ वीणागदाभृन्मिथुनंतृतीयःप्रजापतेः  
 स्कंधभुजांसदशे ॥ प्रनर्तकोगायनशिल्पकस्त्रीक्रीडारतिर्द्युतविहारभूमिः ॥ ३ ॥ क-  
 र्कीकुलीराकृतिरंबुसंस्थोवक्षःप्रदेशेविहितश्चधातुः ॥ केदारवापीपुलिनानितस्यदे-  
 वांगनारम्यविहारभूमिः ॥ ४ ॥ सिंहश्चशैलेहृदयप्रदेशंप्रजापतेःपंचममाहुराद्याः ॥  
 तस्याटवीदुर्गगुहावनाद्रिव्याधावनीदुर्गवनप्रदेशाः ॥ ५ ॥ प्रदीपिकांगृह्यकरेणकन्या  
 नौस्थाजलेषष्ठमितिब्रुवन्ति ॥ कालार्थधीराजठरंविधातुः सशाङ्गलास्त्रीरिति  
 शिल्पभूमिः ॥ ६ ॥ वीथ्यांतुलापण्यधरोमनुष्यः स्थितः सनाभीकटिबस्ति-  
 देशे ॥ शुक्लार्थवीथ्यापणपट्टनाध्वसार्थाधिवासोन्नतसस्यभूमिः ॥ ७ ॥  
 श्वभ्रोष्टमोवृश्चिकविग्रहस्तुप्रोक्तःप्रभोमैद्रुगुदप्रदेशे । गुहाबिलश्वभ्रविषादमगुप्ति-  
 र्वल्मीककीटाजगराहिभूमिः ॥ ८ ॥ धन्वीमनुष्योहयपश्चिमार्धस्तमाहुरुरुभुव-  
 नप्रणेतुः ॥ समस्थितव्यस्तसमस्तवांसिसुरास्त्रभृद्यज्ञरथाश्वभूमिः ॥ ९ ॥ मृगार्द्धपू-  
 र्वोमकरोऽनुगार्धोऽजानुप्रदेशंतमुशंतिधातुः ॥ नदीवनारण्यसरोयनूपश्वभ्राधिवासोद-  
 शमःप्रदिष्टः ॥ १० ॥ स्कंधेतुरिक्तःपुरुषस्यकुंभोजघेतमेकादशमाहुरार्याः ॥ शुष्कोदका  
 धारकुशस्यपक्षीस्त्रीशौण्डिकोद्युतनिवासभूमिः ॥ ११ ॥ जलेतुमीनद्वयमंत्यराशिः  
 कालस्यपादौविहितौवरिष्ठौ ॥ सपुण्यदेवद्विजतीर्थभूमिर्नदीसमुद्रांबुचयाधिवासः  
 ॥ १२ ॥ प्रयोजनंहतनष्टादिषुद्रव्यस्थानपरिज्ञानम् । उक्तंच राशिभ्यःकाल-  
 दिग्देशाइति ॥ ५ ॥



क्षितिजसितज्ञचंद्रविसौम्यसितावनिजाःसुरगुरुमंदसौरिगुरव-  
श्चगृहांशकपाः॥अजमृगतौलिचंद्रभवनादिनवांशविधिर्भवन-  
समांशकाधिपतयःस्वगृहात्क्रमशः ॥ ६ ॥

अधुनाराशिनवमांशद्वादशांशाधिपांस्तोटेकेनाह।क्षितिजसितज्ञेति।क्षितिजाद-  
योग्रहाःगृहपा अंशकपाश्च गृहाणाराशीनांमेषादीनांपतयःस्वामिनोभवन्ति क्षि-  
तिजोंगारकःसमेषस्याधिपतिः । सितःशुक्रोवृषभस्य । ज्ञोबुधोमिथुनस्य । चंद्रः  
कर्कटकस्य । रविरादित्यःसिंहस्यासौम्योबुधः कन्यायाः । सितःशुक्रस्तुलायाः ।  
अवनिजोंगारकोवृश्चिकस्य । सुरगुरुर्बृहस्पतिर्धन्विनः । मंदःशनैश्चरोमकरस्य ।  
सौरिःशनैश्चरःकुंभस्य । गुरुर्बृहस्पतिर्मीनस्येति । प्रयोजनं होरास्वामिगुरुज्ञवी-  
क्षितयुताइत्यत्र एतएव नवांशकाधिपतयः न केवलंमेषस्यभौमोधिपतिः याव-  
द्यस्मिन्नाशौमेषनवांशकोदयोभवति तस्यापिभौमोधिपतिः । शेषाणामप्ये-  
वमेव । तेचनवांशकाःकथंभवन्तीत्याह । अजमृगतौलिचंद्रभवनादिनवांशविधि-  
रिति । अजोमेषःमृगोमकरःतौलीतुला । चंद्रभवनंकर्कटःआदिनवांशविधिरिति  
प्रत्येकमभिसंबध्यते । तत्रैवमभिसंबंधोभिजायते अजादिमृगादि । तौल्यादि ।  
चंद्रभवनादिनवांशविधिः सर्वराशीनांभवति । तत्राजादिनवांशविधिर्मेषस्य  
तेनमेषवृषमिथुनकर्कटसिंहकन्यातुलावृश्चिकधनुर्धराणांसंबंधिनोनवांशा मेष-  
स्यभवन्ति।मृगादिर्वृषस्य तेनमकरकुंभमीनमेषवृषमिथुनकर्कटासिंहकन्यासंबंधि-  
नोनवांशा वृषस्य । तुलादिमिथुनस्य तेनतुलावृश्चिकधनुर्मकरकुंभमीनमेषमि-  
थुनानांसंबंधिनोनवांशाःमिथुनस्य । कर्कटादि कर्कटस्य तेनकर्कटसिंहकन्या-  
तुलावृश्चिकधनुर्मकरकुंभमीनानांसंबंधिनोनवांशाःकर्कटस्य । एवंसिंहस्यमेषवत्।  
कन्याया वृषवत् । तुलाया मिथुनवत् । वृश्चिकस्यकर्कटवत् । पुनरपिधनुषो मे-  
षवत् । मकरस्यवृषवत्।कुंभस्यामिथुनवत् । मीनस्यकर्कटवत्।तदुक्तंग्रंथांतरे मेषके-  
सरिधन्विनांमेषाद्याअंशकाःस्मृताः । वृषकन्यामृगाणांचमकराद्यानवस्मृताः ॥  
तुलामिथुनकुंभानांतुलाद्यानवकीर्तिताः । कर्कटालिङ्गषाणांचकर्कटाद्यानवांशकाः  
इति ॥ प्रयोजनं स्तेनोभोक्तापंडिताद्याइत्यादि । भवनसमांशकाधिपतयःस्वगृ-  
हात्क्रमशइति भवनसमाअंशकाभवनांशकाः भवनानिद्वादशतत्समाअंशकाद्वा-  
दशांशकाइत्यर्थः।तेचप्रत्येकस्यराशेः स्वगृहादारभ्यगणनीयाः।तद्यथा मेषस्यमेष-  
वृषमिथुनकर्कटसिंहकन्यातुलावृश्चिकधन्विमकरकुंभमीनानांसंबंधिनोद्वादशभा-  
गाभवन्ति तेमेषाद्याधिपतयः।एवंवृषस्यवृषाद्यामेषांताः।मिथुनस्य मिथुनाद्यावृषां-  
ताः।कर्कटस्यकर्कटाद्यामिथुनांताः। सिंहस्यसिंहाद्याःकर्कांताः।कन्यायाःकन्याद्याः  
सिंहांताः । तुलायास्तुलाद्याःकन्यांताः।वृश्चिकस्यवृश्चिकाद्यास्तुलांताः । धन्विनो

धनुराद्यावृश्चिकांताः । मकरस्यमकराद्याधन्व्यन्ताः । कुंभस्यकुंभाद्या मकरांताः ।  
मीनस्यमीनाद्याः कुंभांता इति ॥ प्रयोजनं चैषांतात्कालिकैन्दुसहितोद्विरसांशको  
यइत्यादि ॥ ६ ॥

कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्पिजूकलेयाः ॥

अयुजियुजितुभेविपर्ययस्थाः शशिभवनालिङ्गषांतमृक्षसंधिः ॥ ७ ॥

अधुना त्रिंशांशकाधिपतीन्पुष्पिताग्रयाह ॥ कुजेति । कुजो भौमः रविजः शनिः गुरुर्वृ-  
हस्पतिः शोबुधः शुक्रो भार्गवः एवं कुजरविजगुरुज्ञशुक्राणां क्रमेण भागाः पवन-  
समीरणकौर्पिजूकलेयाः तद्यथा पवनावायवः पंच पंच एव भागाः कुजस्य । तत ऊर्ध्वं  
समीरणाः पंचैवरविजस्य एवं दश । अत ऊर्ध्वं कौर्पिसंज्ञा अष्टौ गुरोः कौर्प्याख्यो वृ-  
श्चिकः सच गणनयाष्टमः एवमष्टादश । ततः परं जूकसंज्ञाः सप्त भागा बुधस्य । जूकसं-  
ज्ञा तुलायाः सच गणनया सप्तमः एवं पंचविंशतिः । तत ऊर्ध्वं लेयसंज्ञाः पंच शुक्रस्य ले-  
यसंज्ञा सिंहस्य सच गणनया पंचमः एवं त्रिंशत् । किं सामान्येनेत्यत आह । अयुजियुजी-  
ति । अयुजि विषमराशौ कुजादयो ग्रहाः पवनादीनां भागानां यथाक्रमेणाधिपतयः त-  
त्र मेषमिथुनासिंहतुलाधनुः कुंभानां विषमराशीनामेषक्रमः । युजितुभेविपर्ययस्थाः  
युजिसमराशौ पवनादिभागाग्रहाश्च विपर्ययस्थाव्यत्ययेन तिष्ठन्ति । तद्यथा । तत्रादौ  
पंचशुक्रस्य ततः परं सप्तबुधस्य एवं द्वादश । ततः परमष्टौ जीवस्य एवं विंशतिः ।  
ततः परं पंचशनेः एवं पंचविंशतिः । ततः परं पंचभौमस्य एवं त्रिंशत् । तत्र वृषकर्कट-  
कन्यावृश्चिकमकरमीनाः समराशयः एवं त्रिंशद्भागाधिपतयः पंचताराग्रहाः । अ-  
त्र केचिदाहुयथा । विपर्ययस्था इत्यनेनानंतराणामेव पवनादिसंख्यानां भागानां  
विपर्ययेण भवितव्यं न व्यवहितानां कुजादीनां । तच्चायुक्तम् । यस्मात्तु शब्दोत्र प्रपद्यते  
सच कुजादिसमुच्चयार्थः । तथा च श्रुतकीर्तिः पंचाथ पंचचाष्टौ सप्तच पंचैव चौज भवने  
षु । धरणि सुतमंदसुरगुरुबुधशुक्राणां क्रमेणांशाः ॥ पंचैव सप्तचाष्टौ पंचच पंचाथ यु-  
ग्म भवनेषु । भागा भार्गवशशिसुतसुरेज्यशनिभूमिपुत्राणामिति ॥ प्रयोजनं कन्यै-  
व दुष्टाव्रजतीह दास्यंसाध्वीसमायाकुचरित्रयुक्ता । भूम्यात्मजक्षेत्रमशौंशकेषु वक्रा-  
किंजीवैन्दुजभार्गवाणामित्यादि । शशिभवनालिङ्गषांतमृक्षसंधिः अंतशब्दः प्रत्ये-  
कमभिसंबध्यते । शशिभवनांतमल्यंतं झषांतं च ऋक्षसंधिः शशिभवनं कर्कटः  
अलिर्वृश्चिकः झषो मीनः एतेषामंतं न वमनवांशकं यत्र नक्षत्रराशयोर्युगपदवसानं  
तदृक्षसंधिः यस्मादादलेषांतं कर्कटकांतः । ज्येष्ठांते वृश्चिकांतः रेवत्यंते मीनांत इति  
एतदेव लोके गंडांतमिति प्रसिद्धम् । उक्तं च अश्विनीपित्र्यमूलाद्यामेषां सिंहहयाद-  
यः ॥ विषमक्षांते वर्त्तते पादवृद्ध्या यथोत्तरमिति ॥ प्रयोजनं च संधौ पापैः शशि-  
निचजडः स्यान्नचेत्सौम्यदृष्टइति ॥ ७ ॥



क्रियतावुरिजितुमकुलीरलेयपार्थोनजूककौर्प्याख्याः ॥

तौक्षिकआकोकेरोहद्रोगश्चांत्यभंचेत्यम् ॥ ८ ॥

अधुनालोकव्यवहारार्थमेषादीनांसंज्ञाः पथ्यार्ययाह ॥ क्रियेति । इत्थमेवंप्रकार-  
नामानामेषाद्याराशयोज्ञेयाः । तद्यथा क्रियोमेषः तावुरिर्वृषः जितुमोमिथुनः  
कुलीरः कर्कटः लेयः सिंहः पार्थोनः कन्या जूकस्तुला कौर्प्याख्यो वृश्चिकः तौ-  
क्षिकोधन्वी आकोकेरोमकरः हृद्रोगः कुंभः अंत्यभंमीनइति । प्रयोजनंचगोसि-  
हौजितुमाष्टमौक्रियतुलेइत्यादि ॥ ८ ॥

द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशकद्वादशसंज्ञिताश्च ॥

क्षेत्रंचयद्यस्यसतस्यवर्गोहोरेतिलग्नंभवनस्यचार्द्धम् ॥ ९ ॥

अधुनाग्रहस्यक्षेत्रहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशभागत्रिंशद्वागानांवर्गसंज्ञाव्यवहा-  
रार्थमिदं वज्रयाह द्रेष्काणेति द्रेष्काणादयः षट्पदार्थाः स्वकीयग्रहस्यवर्गसंज्ञाः ॥  
तत्र द्रेष्काणोराशित्रिभागः होराराश्यर्द्धं नवभागोनवांशकः एषासंज्ञायेषांतेत-  
था ॥ त्रिंशांशकस्त्रिंशद्वागः द्वादशांशोद्वादशभागः एतत्संज्ञिताश्च एषासंज्ञा-  
ख्यायेषांतेतथा यद्यस्यग्रहस्यक्षेत्रंराशिः सतस्यवर्गः । वर्गशब्देनात्र षड्वर्गः । एतेसर्व-  
एवग्रहस्यात्मीयवर्गसंज्ञाः एवं षड्विकल्पोराशिः षट्स्वात्मीयेषु स्थितो वर्गस्थो भवति  
ननुग्रहवर्गस्य षड्विकल्पानसंभवन्ति । यतश्चंद्रार्कयोस्त्रिंशांशकाभावः भौमादीनां  
होराभावः तस्मात्पक्षेसंभवन्ति तेन पंचस्वात्मीयेषु स्थितो वर्गस्थः एतदप्युपलक्ष-  
णार्थम् । अतोयथासंभवंच्यादिविकल्पस्थोग्रहो वर्गस्थ उच्यते । यस्माद्भगवान्गार्गिः ।  
क्षेत्रं होराथ द्रेष्काणोनवांशोद्वादशांशकः । त्रिंशांशकश्च वर्गोयंसर्वस्यसमुदाहृतः ॥  
व्यादिष्वपि पदार्थेषु स्थितः स्वेषु स्ववर्गगः ॥ पंचवर्गगतोऽप्येवंग्रहो भवति नान्यथेति ।  
प्रयोजनम् एकोपि वर्गोपगतोनराणां शुभोऽशुभो वापि चतुष्टयस्थः । वर्गोपि वास्यो-  
दयगोविनाशंबहुप्रकारंकुरुते ध्वगानामित्यादि ॥ होरालग्नयोः सहार्थमाह होरेति ।  
लग्नं भवनस्य चार्द्धमिति होरेतिलग्नमुच्यते । प्रयोजनं च होरास्वामिगुरुज्ञवी-  
क्षितयुतेति । भवनस्य चराशेरर्द्धहोरा । प्रयोजनम् मार्तण्डेन्द्रोरयुजिसमभेचंद्रभा-  
न्वोश्च होरेति ॥ ९ ॥

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगानिशाख्याः पृष्ठोदयाविमिथुनाः

कथितास्त एव ॥ शीर्षोदयादिनबलाश्च भवन्ति शेषालग्नंसमेत्यु-

भयतः पृथुरोमयुग्मम् ॥ १० ॥

अधुनाराशीनां रात्रिदिनसंज्ञात्वं पृष्ठोदयशीर्षोदयत्वं च वसंततिलकेनाह ॥ गोजे-  
ति । गोजाश्विकर्कमिथुनाः । गोशब्देन वृष उच्यते अजोमेषः अश्वोस्यास्ती-  
त्यश्वीधन्वी कर्किकुलीरः । मिथुनः प्रसिद्धः एते गोजाश्विकर्कमिथुनाः समृगाः  
मृगेण मकरेण सहिताः षड्राशयो निशाख्या रात्रिबलसंज्ञाः पृष्ठोदयाविमिथुनाः त-  
एव रात्रिसंज्ञाविमिथुनाः मिथुनवर्जिताः पृष्ठोदयसंज्ञा भवन्ति पृष्ठेनोदयं यांतीत्यर्थः ।  
मिथुनः पुनः शीर्षोदयः । शीर्षोदया इति । उक्तेभ्यः शेषाः सिंहकन्यातुलावृश्चिक-  
कुंभाः शीर्षोदयाः शिरसोदयं यांति दिनबलाश्च भवन्ति । अत्र रात्रिदिनबलाख्या-  
स्तइति संज्ञामात्रम् । यतस्तेषामुत्तरत्रबलं वक्ष्यति द्विपदादयो ह्निनिश्चिप्रसिद्धसं-  
ध्यादय इति । एवं सत्याचार्यस्य स्ववचनविरोधः स्यात् तस्मात्संज्ञामात्रं बलग्रहणम् ।  
प्रयोजनम् रात्रिद्युसंज्ञेषु विलोमजन्मेत्यादि तथा पृष्ठोभयकोदयर्क्षगा इति ।  
यात्रायां वक्ष्यति च शीर्षोदये संमभिवाञ्छितकार्यसिद्धिः पृष्ठोदये विफलता बलविद्र-  
वश्चा तथा शस्तं दिवा दिनबले निशिनक्तवीर्यैरात्रौ विपर्ययबले गमनं न शस्तं । अन्यच्चै-  
भ्यो मीनस्य विशेषमाह ॥ लग्नसमेत्युभयतः पृथुरोमयुग्ममिति । पृथुरोमामस्य स्त-  
द्युग्मं मस्य द्वयं मीनो राशिः स उभयतः पृष्ठशीर्षाभ्यां लग्नसमेत्यागच्छति ॥ १० ॥

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनि ते ते च रागद्विदेहाः प्रागादीशाः क्रियवृषनृ-  
युक्कर्कटाः सत्रिकोणाः ॥ मार्तण्डेन्द्रोरयुजिसमभे चंद्रभान्वोश्च होरे  
द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रिकोणाधिपानाम् ॥ ११ ॥

अधुनाराशीनां क्रूरसौम्यविभागं स्त्रीपुरुषविभागं चरस्थिरद्विस्वभावविभागं  
दिगधिपत्वं होराद्रेष्काणपतीनां विभागं च मंदाक्रांतयाह ॥ क्रूरः सौम्य इति तेषा-  
दयो राशयो यथाक्रमं क्रूरसौम्यसंज्ञाः । तत्र मेषः क्रूरः । वृषः सौम्यः । मिथुनः  
क्रूरः । कर्कटः सौम्यः । एवं सर्वेषां योज्यमातेन विषमराशयः क्रूरसंज्ञाः समराशयः  
सौम्यसंज्ञाः । प्रयोजनं च क्रूरेषु जाताः क्रूरस्वभावाः सौम्येषु जाताः सौम्यस्व-  
भावा भवन्तीति । तथा चाचार्यः ओजाः पुरुषाज्ञेयाः सौम्याः स्त्रीसंज्ञकाः क्रमाद्यु-  
ग्मे ॥ उग्रेषूग्राः पुरुषाः सौम्यायुग्मेषु भवनेषु ॥ पुरुषवनि ते इति । त एव मेषाद-  
यो यथाक्रमं पुरुषवनिताख्याज्ञेयाः । तेन मेषः पुरुषोनरः । वृषो वनिता स्त्री  
एवं सर्वत्र तेन षड्विषमराशयः पुरुषसंज्ञाः षट्समराशयः स्त्रीसंज्ञाः । प्रयोज-  
नं च पुरुषराशिषु जातास्ते जस्विनः स्त्रीराशिषु जातामृदवो भवन्ति । ते च राग-  
द्विदेहा इति त एव मेषादयो राशयो यथाक्रमं यथासंख्यं च रागद्विदेहाख्या भवन्ति ।  
तत्र मेषश्चरः वृषोऽगः स्थिरः मिथुनो द्विदेहो द्विस्वभावः एवं कर्कटादिषु योज्यम् ।  
तेन मेषकर्कटतुलामकराश्चराः वृषसिंहवृश्चिककुंभाः स्थिराः मिथुनकन्याधनु-  
र्मीना द्विस्वभावाः । प्रयोजनं च चरराशिषु जाताश्चरस्वभावाः स्थिरेषु स्थिर-



स्वभावा द्विस्वभावेषुमिश्रस्वभावाभवन्ति । तथाचसत्यः चरसंज्ञाः स्थिरसं-  
 ज्ञादिप्रकृतिरितिराशयः क्रमशः ॥ राशिस्वभावतुल्याजायन्ते प्रकृतयः  
 प्रसूतानाम् ॥ प्रागादीशाइति । क्रियोमेषः वृषःप्रसिद्धः नृयुङ्मिथुनं कर्कटकः  
 कुलीरः एतेक्रियवृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाःत्रिकोणाभ्यांस्वपंचमनवमा-  
 भ्यांसहिताः प्रागादिषुपूर्वाद्यासुचतसृषुदिशासुईशाःस्वामिनोभवन्ति।मेषःस्वपं-  
 चमनवमाभ्यांसहपूर्वस्यांस्वामी । एवंवृषःस्वपंचमनवमाभ्यांसहदक्षि-  
 णस्याम् । मिथुनःस्वपंचमनवमाभ्यांपश्चिमायाम् । एवमेवकौंषि तेनमेष-  
 सिंहधन्विनः पूर्वस्याम् । वृषकन्यामकरादक्षिणस्याम् । मिथुनतुलाकुंभाःप-  
 श्चिमायाम् । कर्कटवृश्चिकमीनाउत्तरस्यामिति ॥ प्रयोजनम् हतनष्टादौचौरादे-  
 र्द्रव्यस्यवादिविज्ञानंमूतिकागृहद्वारज्ञानंच । तथाच यातव्यादिङ्मुखगतस्य  
 सुखेनसिद्धिर्व्यर्थश्रमोभवतिदिक्प्रतिलोमलग्नइति । मार्तेंडेंद्रोरिति।मार्तेंडःसूर्यः  
 इंदुश्चंद्रः अयुज्ययुग्मराशौविषमराशौ यथाक्रमंमार्तेंडेंद्रोहोरेभवतः प्रथमा-  
 होरामूर्यस्य द्वितीयाहोराचंद्रस्य होराशब्देनात्रराश्यर्द्धमुच्यते समभेचंद्रभा-  
 न्वोश्चेति समभेसमराशौचंद्रभान्वोहोरेभवतः । प्रथमाहोराचंद्रस्यशशिनः  
 द्वितीयाभानोः सूर्यस्य । प्रयोजनम् सूर्यहोरायांजातास्तेजस्विनश्चंद्रस्यहोरा-  
 यांमृदुस्वभावाभवन्ति । द्रेष्काणाःस्युरिति । द्रेष्काणोराशित्रिभागःस्वभवनसु-  
 तत्रित्रिकोणाधिपानांसंबन्धिनोद्रेष्काणाभवन्ति । प्रथमोद्रेष्काणःस्वभवनाधिपते-  
 रात्मीयभवनाधिपतेः ॥ द्वितीयःसुतभवनस्यपंचमस्थानाधिपतेः तृतीयस्त्रि-  
 त्रिकोणाधिपतेः नवमस्थानाधिपतेः । तेनमेषस्य प्रथमोद्रेष्काणःप्रथमस्य भौम-  
 स्य द्वितीयोपंचमस्थानसिंहाधिपतेरर्कस्य तृतीयोनवमस्थानधनुषोधिपतेर्गु-  
 रोरिति । वृषस्य प्रथमःशुक्रस्य द्वितीयोबुधस्य तृतीयः शनेः । मिथुनस्य प्र-  
 थमोबुधस्यद्वितीयःशुक्रस्य तृतीयःशनेः कर्कटस्यप्रथमश्चंद्रस्य द्वितीयोभौ-  
 मस्य तृतीयोजीवस्य । सिंहस्यप्रथमःसूर्यस्य द्वितीयोजीवस्य तृतीयोभौमस्य  
 कन्यायाःप्रथमोबुधस्य द्वितीयःशनेः तृतीयःशुक्रस्य । तुलायाःप्रथमःशुक्र-  
 स्य द्वितीयःसौरस्य तृतीयोबुधस्य । वृश्चिकस्यप्रथमोभौमस्य द्वितीयो  
 जीवस्य तृतीयश्चंद्रस्य । धन्विनःप्रथमोजीवस्य द्वितीयोभौमस्य तृतीयो  
 रवेः । मकरस्यप्रथमःशनेः द्वितीयःशुक्रस्य तृतीयोबुधस्य । कुंभस्यप्रथमःशनेः  
 द्वितीयोबुधस्य तृतीयःशुक्रस्य । मीनस्यप्रथमोजीवस्य द्वितीयश्चंद्रस्यतृतीयो  
 भौमस्येति । प्रयोजनम् दिरुत्तमास्वांशकभंत्रिभागगैरित्यादि ॥ ११ ॥

केचित्तुहोरांप्रथमांभपस्यवांच्छंतिलाभाधिपतेर्द्वितीयाम् ॥

द्रेष्काणसंज्ञामपिवर्णयन्तिस्वद्वादशैकादशराशिपानाम् ॥ १२ ॥

अधुनामतांतरेणहोराद्रेष्काणपतीनांलक्षणमिद्वचन्याह ॥ केचिदिति । केचि-  
द्यवनेश्वरादयःप्रथमांहोरांभपस्य राश्यधिपतेर्वाञ्छन्ति इच्छन्ति । द्वितीयांला-  
भाधिपतेरेकादशस्थानाधिपस्य । यथामेषस्यप्रथमहोराभौमस्य । द्वितीया  
होरैकादशकुंभपतेःसौरस्य । एवंसर्वेषामपियोज्यम् । द्रेष्काणसंज्ञामपीति  
स्वद्वादशैकादशराशिपानामपिद्रेष्काणसंज्ञावर्णयंतिकथयन्ति । प्रथमंस्वाधिपते-  
रात्मीयस्वामिनः । द्वितीयंद्वादशाधिपतेः तृतीयमेकादशराश्यधिपतेः ।  
यथा मेषस्यप्रथमोद्रेष्काणोभौमस्य द्वितीयोजीवस्य तृतीयःसौरस्य एवम-  
न्येषामपिज्ञातव्यम् । तथाचयवनेश्वरः॥आद्यातुहोराभवनस्यपत्युरैकादशक्षेत्रप-  
तेर्द्वितीया । स्वद्वादशैकादशराशिपानांद्रेष्काणसंज्ञाःक्रमशस्त्रयोत्र ॥ एवंयवने-  
श्वरमतेनसर्वग्रहाणांहोराधिपत्यमस्ति । एतदाचार्यस्यनाभिप्रेतंसत्यादीनामपि।  
तथाचसत्यः॥ओजेषुरवेहोराप्रथमायुग्मेषुचोत्तराशेषा । इंदोःक्रमशोज्ञेयाजन्मनि  
चेष्टैस्वहोरास्थौ ॥ राशिपतेर्द्रेष्काणस्तत्पंचमनवम १-५-९ भवनपतयःस्युः ॥  
तेषामधिपतयःस्वस्वद्रेष्काणग्रहाबलिनइति ॥ १२ ॥

अजवृषभमृगांगनाकुलीराश्लषवणिजौचदिवाकरादितुंगाः ॥  
दशशिखिमनुयुक्तिथींद्रियांशौस्त्रिनवकविंशतिभिश्चतेस्तनीचाः १३

अथग्रहाणामुच्चनीचविभागंपुष्पिताग्रयाह॥अजेति । अजादयोराशयोयथाक्र-  
मेणदिवाकरादीनांग्रहाणांतुंगाःउच्चसंज्ञाः । तद्यथा अजोमेष आदित्यस्योच्चं  
वृषभोवृषःसचंद्रस्य मृगोमकरःसभौमस्य अंगनाकन्याबुधस्य । कुलीरःकर्क-  
टोजीवस्य । श्लषोमीनःशुक्रस्य । वणिक्तुलाधरःसौरस्य एतएवराशयोदशा-  
दिषुभागेषुसूर्यादीनांपरमोच्चसंज्ञाभवन्ति । तत्रादित्यस्यमेषोदशमेभागेपरमोच्चः  
चंद्रस्यवृषःशिखिसंख्येतृतीयेभागे । भौमस्यमकरोमनुयुक्संख्येष्टाविंशेभागे  
परमउच्चः ॥ मनवश्चतुर्दशतेषांयुगे द्विगुणामनवइत्यर्थः । बुधस्यकन्यातिथिसं-  
ख्येपंचदशेभागे । जीवस्यकर्कटइंद्रियसंख्येपंचमेभागे । शुक्रस्यमीनस्त्रिनवक-  
संख्येसप्तविंशे । सौरस्यतुलाविंशे । ननुसर्वएवराशिर्रुच्चसंज्ञः सचत्रिंशदंशकः  
तत्रदशादीनांतदंतर्भूतानांसिद्धैर्बोच्चसंज्ञातत्किदशाद्युपादानम्।सत्यम् । किंतुप-  
रमोच्चत्वज्ञापनार्थंदशादीनांग्रहणम् । अन्यथासर्वएवराशयोमीउच्चसंज्ञाःतेनोक्त-  
राशिदशाद्यंशस्थाःकथिताग्रहाःपरमोच्चस्थाइत्युच्यन्ते । परमोच्चज्ञानेनचोच्चाद-  
व्यतिरिक्तंप्रयोजनमस्ति । तथाचभगवान्गार्गिः॥स्वोच्चगौरविशीतांशूजनयेतां  
नराधिपम्।उच्चस्थौधनिनंख्यातंस्वत्रिकोणगतावपि॥तथाचयवनेश्वरः॥स्वोच्चेषु  
सर्वान्परिगृह्यभागांस्तिष्ठत्सुसर्वेषुबलाधिकेषु । लभेशुभेपूर्णवपुष्मर्तादौत्रैलोक्य-  
राज्याधिपतिःप्रसूते ॥ अथेदृशाएवंविधाः सूर्यादयः परमोच्चस्थितादृष्टव्याः ।



अत्रवृत्तभंगभयात्पूरणप्रत्ययांतादशादय आचार्येणनोक्ताः । पूरणप्रत्ययांतत्वमे-  
षांयवनेश्वरवाक्याज्ज्ञायते । तथाचयवनेश्वरः॥सूर्यस्यभागेदशमेतृतीयेचंद्रस्य  
जीवस्यतुपंचमेशे । सौरस्यविंशेत्वधिसप्तकेतुविंशद्भृगोःपंचदशेबुधस्य ॥ भौ-  
मस्यविंशेऽष्टयुतेपरोच्चांविंशल्लवेसूर्यसुतस्यतृच्चम् ॥ तेस्तनीचाइति तआदित्याद-  
योग्रहाअस्तनीचाः अस्तेनीचंयेषांते अस्तःसप्तमः प्रकृतित्वात् स्वोच्चात्सप्तमः  
प्रत्येकस्यनीचसंज्ञा।तद्यथा आदित्यस्यस्वोच्चान्मेषात्सप्तमस्तुलासनीचसंज्ञः । ए-  
वंचंद्रस्यसप्तमोवृश्चिकः । भौमस्यसप्तमःकर्कटः । बुधस्यमीनः । गुरोर्मकरः ।  
शुक्रस्यकन्या । सौरस्यमेषइति । अत्रापिदशादिपुभागेपुपरमनीचस्थाद्रष्टव्याः।  
तथाचयवनेश्वरः॥स्वोच्चात्तुजाभिन्नमुशंतिनीचंत्रिंशल्लवोयच्चसमानसंख्या।अथे-  
दशाएवंविधारव्यादयःपरमनीचस्थाभवन्ति परमनीचस्थानामनिष्टंफलंभवती-  
तिगार्गिणाप्रदर्शितम् । तथाचगार्गिः ॥ अंधंदिगंबरंमूर्खपरापिंडोपजीविनम् ।  
कुर्यातामतिनीचस्थौपुरुषंशशिभास्कराविति ॥ १३ ॥

वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषुपूर्वमध्यपर्यंततःशुभफलानवभागसं-  
ज्ञाः ॥ सिंहोवृषःप्रथमषष्ठहयांगतौलिकुंभास्त्रिकोणभवना-  
निभवन्तिसूर्यात् ॥ १४ ॥

अधुनाग्रहाणांवर्गोत्तममूलत्रिकोणपरिज्ञानंवसंततिलकेनाह॥वर्गोत्तमाइति।च-  
रगृहादिषुचरस्थिरद्विस्वभावेपुराशिपुयथासंख्यंपूर्वमध्यपर्यंततआदिमध्यावसा-  
नतः । पूर्वमध्यपर्यंतगावापाठः । येनवभागास्तेवर्गोत्तमसंज्ञाभवन्तिवर्गांशकसमूहे  
उत्तमाःप्रधानावर्गोत्तमाः।तद्यथा चरेषुमेषकर्कितुलामकरेषुप्रथमोनवांशोवर्गोत्त-  
माख्योभवति । स्थिरेषुवृषसिंहवृश्चिककुंभेषुमध्यमःपंचमोनवांशकोवर्गोत्तमः ।  
द्विस्वभावेषुमिथुनकन्याधन्विमीनेषुपर्यंततः नवमोनवांशकोवर्गोत्तमः । एतदुक्तं  
भवति प्रत्येकस्मिन्राशौस्वनवमांशकोवर्गोत्तमाख्यइति । तथाचयवनेश्वरः ॥  
स्वस्वेगृहेषुस्वगृहांशकायेवर्गोत्तमास्तेयवनैर्निरुक्ताइति । शुभफलानवभागसंज्ञा  
इति । तेचवर्गोत्तमाख्यानवभागसंज्ञाजन्मनिशुभफलदाः शुभफलंददति । व-  
क्ष्यतिच शुभंवर्गोत्तमेजन्मेति । तथाचसत्यः चरभवनेष्वाद्यंशाःस्थिरेषुमध्यादि-  
मूर्तिपुतथांत्याः । वर्गोत्तमाःप्रदिष्टास्तेष्विहजाताःकुलेमुख्याः । प्रयोजनम्  
स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणंद्विरुत्तमस्वांशकभित्रिभागैरिति । सिंहोवृषइत्यादि ॥  
सिंहादयोराशयो यथापाठक्रमेणसूर्यादीनांग्रहाणांत्रिकोणभवनानिमूलत्रिकोण  
भवनानिभवन्ति।तद्यथा सिंहःसूर्यस्यादित्यस्यमूलत्रिकोणसंज्ञःवृषश्चंद्रस्य प्रथमो  
मेषोंगारकस्य षष्ठःकन्याबुधस्य हयांगोधन्वीबृहस्पतेःतौलीतुलाशुक्रस्यकुंभःसौ-  
रस्येति।प्रयोजनम् उच्चस्वत्रिकोणैर्बलस्थैर्याद्यैर्भूपतिवंशजानरेंद्राइत्यादि१४

होरादयस्तनुकुटुंबसहोत्थबंधुपुत्रारिपत्तिमरणानिशुभारूप-  
दायाः । रिःफाख्यमित्युपचयान्यरिकर्मलाभदुश्चिक्वसंज्ञित-  
गृहाणिननित्यमेके ॥ १५ ॥

अधुनालभादीनांद्वादशानांस्थानानांतन्वाद्याद्वादशसंज्ञास्तृतीयषष्ठदशमैका-  
दशानांचोपचयसंज्ञावसंततिलकेनाह होरादयइति । होरादयोलभादयस्तेषांयथा  
क्रमेणतन्वादीनिनामानि तत्रलग्नस्यतनुरित्याख्या द्वितीयस्यकुटुंबम् तृती-  
यस्यसहोत्थः सहोत्थोभ्राता । चतुर्थस्यबंधुः बंधुशब्दोज्ञातिवाची । पुत्रा-  
ख्यः पंचमः । अरिःशत्रुस्तदाख्यःषष्ठः । पत्न्याख्यःसप्तमः । मरणाख्योऽष्टमः ।  
शुभाख्योनवमः । आस्पदाख्योदशमः । आयाख्यएकादशः । रिःफाख्योद्वा-  
दशः । इतिशब्दःप्रकारार्थद्योतकः । तेनहोरादीनांतन्वादिपर्यायापिसंज्ञाभूता  
इत्यवगंतव्यम् । उपचयान्यरिकर्मलाभदुश्चिक्वसंज्ञितगृहाणीति । अरिःषष्ठं कर्म  
दशमम् लाभएकादशं दुश्चिक्वसंज्ञिततृतीयम् एतानिगृहाणिस्थानानिउपचय-  
संज्ञानीति । ननित्यमेकेइति एकेकेचिन्ननित्यमुपचयानीतिवर्णयंतिकथयंति । ते-  
षामयमभिप्रायः । यदिपापग्रहेणस्वस्वामिशत्रुणावादृष्टाभवंतितदानोपचया-  
स्ते । तत्रचगर्गादिवाक्यम् ॥ अथोपचयसंज्ञास्यात्रिलाभरिपुकर्मणाम् । नचैद्भवंति  
दृष्टास्तेपापस्वस्वामिशत्रुभिः । एतदाचार्यवराहमिहिरस्यनाभिप्रेतम् । यतो-  
सौसर्वदैवोपचयाख्यैस्तेर्व्यवहरति । सत्यादयोप्येवम् । तथाचसत्यः । दशमैकादश-  
षष्ठतृतीयसंज्ञानिजन्मलग्नाभ्याम् ॥ उपचयभवनानिस्थुःशेषाण्यृक्षाण्यपचया-  
ख्यानि । यवनेश्वरश्च षष्ठतृतीयंदशमंचराशिमेकादशंचोपचयर्क्षमाहुः ।  
होरागृहस्थानशशांकभेभ्यः शेषाणिचैभ्योपचयात्मकानि । प्रयोजनम् उपचय-  
गृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टंत्वपचयगृहनीचारातिगैर्नैष्टसंपदित्यादि ॥ १५ ॥

कल्पस्वविक्रमगृहप्रतिभाक्षतानिचित्तोत्थरंध्रगुरुमानभवव्ययानि ।  
लग्नाच्चतुर्थनिधनेचतुरस्रसंज्ञेद्यूनंचसप्तमगृहंदशमर्क्षमाज्ञा ॥ १६ ॥

पुनरपिहोरादीनांसंज्ञांतराणिवसंततिलकेनाह ॥ कल्पेति । एतेषामपिलभा-  
दीनांद्वादशानांयथाक्रमंकल्पाद्याः संज्ञाभवन्ति । तद्यथा लग्नंकल्पाख्यम् ॥ क-  
ल्पशब्दःशक्तिवाची । द्वितीयंस्वम् तृतीयंविक्रमम् । चतुर्थंगृहम् पंचमंप्रति-  
भा । षष्ठंक्षतम् । सप्तमंचित्तोत्थम् । अष्टमंरंध्रम् । नवमंगुरुम् । दशमंमानम् । एका-  
दशंभवम् । द्वादशंव्ययम् । लग्नाच्चतुर्थनिधनइति । लग्नाच्चतुर्थस्थानंनिधनमष्टमंच  
तेचतुरस्रसंज्ञेचतुरस्राख्ये लग्नात्सप्तमंगृहंद्यूनं दशमर्क्षंदशमराशिराज्ञाख्याएताः  
संज्ञाव्यवहारार्थंज्ञेयाः ॥ १६ ॥



कंटककेंद्रचतुष्टयसंज्ञाःसप्तमलग्नचतुर्थखभानाम् ॥

तेषुयथाभिहितेषुबलाढ्याःकीटनरांबुचराःपशवश्च ॥ १७ ॥

अथकेंद्राणां संज्ञास्तत्स्थराशिबिलंचदोधकेनाह॥कंटकेति । सप्तमलग्नचतुर्थानि प्रसिद्धानि । खभंदशमम् खआकाशमध्येतत्कालंयद्दंराशिर्वर्ततेतस्यखभे-  
तिसंज्ञा ॥ एतेषांसप्तमलग्नचतुर्थखभानाराशीनांप्रत्येकस्यकंटककेंद्रचतुष्टयाख्या-  
स्तिस्रःसंज्ञाःतेषुस्थानेषुयथाभिहितेषुयथानिर्दिष्टेषुकीटनरांबुचराःपशवश्चराशयो  
बलाढ्याभवन्ति । तद्यथा कीटोवृश्चिकःसप्तमेस्थानेबली नरःनृराशयो मिथु-  
नकन्यातुलाधन्विपूर्वार्धकुंभाः एतेलग्नेस्थिताबलिनः । अंबुचरा जलचरराशयः  
कर्कटमीनमकरपराद्धास्तेचतुर्थस्थानेबलिनः । पशवश्चतुष्पदाः मेषवृषसि-  
हधन्विपराद्धा मकरपूर्वार्द्धास्तेदशमस्थाबलिनः । तथाचभगवान्गार्गिः ।  
नृयुक्तुलाघटः कन्यापूर्वमर्द्धं चधन्विनः । लग्नस्थाबलिनोज्ञेयाएतेहिनरराशयः॥  
चतुर्थेकर्कटोमीनोमकरार्द्धं च पश्चिमम् । विज्ञेयाबलिनो नित्यमेतेहिजलराशयः ॥  
सप्तमेवृश्चिकःकीटोबलवान्परिकीर्तितः । धन्यंताद्धाजगोसिंहाबलिनः खे  
चतुष्पदाः ॥ अत्रार्द्धशब्देनमकरपूर्वार्द्धमपिगृह्यतइति ॥ १७ ॥

केंद्रात्परंपणफरंपरतश्चसर्वमापोक्लिमंहिबुकमंबुसुखंचवेश्म ॥

जामित्रमस्तभवनंसुतभंत्रिकोणंमेषूरणंदशममत्रचकर्मविद्यात् १८

अधुनापरिशिष्टस्थानानांसंज्ञांतराणिवसंततिलकेनाह॥केंद्रादिति । सर्वस्मा-  
त्केंद्राद्वितीयस्थानंपणफरम् तेनद्वितीयपंचमाष्टमैकादशस्थानानांपणफरसं-  
ज्ञापरतश्चसर्वमापोक्लिमम् सर्वस्मात्पणफरात्परंसर्वस्थानमापोक्लिमं तेनतृती-  
यषष्ठनवमद्वादशस्थानानामापोक्लिममिति संज्ञा । हिबुकमंबुसुखंचवेश्म वेश्मश-  
ब्दो गृहपर्यायः वेश्मेतिचतुर्थस्यप्राक्संज्ञाभिहितातस्यैवहिबुकसंज्ञा अंबुसंज्ञा  
सुखसंज्ञा च । जामित्रमस्तभवनम् । अस्तभवनंसप्तमस्थानम् । यतःसर्वेवग्रहाउ-  
दयरशेः सप्तमराशावस्तंयांति तदेवास्तभवनंजामित्रम् । सुतभंत्रिकोणम् सु-  
तभंपंचमस्थानं त्रिकोणसंज्ञम् मेषूरणंदशमं दशमस्थानंमेषूरणसंज्ञंच अत्रा-  
स्मिन्दशमेस्थानेकमेत्यपरांसंज्ञांविद्यात् जानीयात् ॥ १८ ॥

होरास्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुतानान्यैश्चवीर्योत्कटाकेंद्रस्थाद्विपदा-  
दयोह्निनिशिचप्राप्तेचसंध्याद्वये ॥पूर्वार्द्धेविषयादयःकृतगुणामानं  
प्रतीपंचतद्वृश्चिक्यंसहजंतपश्चनवमंत्र्याद्यंत्रिकोणंचतत् ॥१९ ॥

अथ होरादीनां राशीनां बलं व्यवहारार्थं प्रमाणं च शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ होरेति । होरालभ्यंतस्वामिना तत्पतिना वीक्षिता दृष्टा वीर्योत्कटा बलवती भवति । तथा तेनैव युता संयुता बलवती भवति । तथा गुरुणा जीवेन वीक्षिता युता च बलवती भवति । ज्ञेन बुधेन वीक्षिता युता च बलवती भवति । नान्यैश्चेति । अन्यैर्ग्रहैः स्वामि-  
गुरुज्ञवर्जितैः दृष्टायुता वा बलवती न भवति । अथ यद्युक्तानुक्तैर्मिश्रैर्युतदृष्टा भवति । तदामध्यबला अर्थादेव स्वामिगुरुज्ञवर्जमन्यैर्युतदृष्टा बलहीना भवति । तथा च बादरायणः । जीवस्वनाथशशिजैर्युतदृष्टा बलवती भवति होरा । शेषैर्बलहीना स्यादेवं मिश्रैस्तु मध्यबला ॥ बलहीनायदिसर्वैर्न वीक्षितानैव युक्ता वा ॥ केंद्र-  
स्था इति । वीर्योत्कटा इत्यनुवर्तते अत्रादिशब्दोल्लोको द्रष्टव्यः । केंद्रस्थाः सर्वे एव रा-  
शयो बलिनो भवन्ति पणफरस्थामध्यबलाः आपोक्लिमस्था हीनबलाः । अत्र केचित्  
केन्द्रपणफरापोक्लिमस्थानां द्विपदचतुष्पदकीटानां यथाक्रमं बलवत्त्वं व्याचक्षते ।  
तदयुक्तम् । यस्माद् बादरायणः केंद्रस्थातिबलाः स्युर्मध्यबलाः पणफराश्रिता ज्ञे-  
याः । आपोक्लिमगाः सर्वे हीनबलाराशयः कथिता इति । द्विपदादयो द्विनिशिच  
प्राते च संध्याद्वय इति । वीर्योत्कटा इत्यनुवर्तते द्विपदादयो द्विपदचतुष्पदकीटाः  
यथाक्रममद्विनिशिचप्राते च संध्याद्वये वीर्योत्कटा भवन्ति । अद्विदिने द्विपदावलिनः  
निशिरात्रौ चतुष्पदाः संध्याद्वये कीटाः अत्र न केवलं वृश्चिकः यावदाप्याः सर्वे  
कीटग्रहणेन ज्ञेयाः । अत्र च श्रीदेवकीर्तिः मिथुनतुलकुंभकन्यादिवात्रलाधन्विन-  
श्च पूर्वार्धम् । अजवृषसिंहारात्रौ मृगहययोः पूर्वपश्चाद्धै । वृश्चिकमीनकुलीरामकरां-  
त्यार्द्धं च संध्यायामिति । पूर्वार्द्धे विषयादयः कृतगुणा इति विषया इन्द्रियाणि ता  
नि पंच तदादयः पंचषट्सप्ताष्टनवदशयावत् एते सर्वे एव कृतगुणाश्चतुर्गुणिताः  
पूर्वार्द्धे मानम् । कस्य । प्रकृतत्वाद्भ्रमस्य पूर्वार्द्धे प्रथमराशिषट्के इत्यर्थः । प्रती-  
पंचतत् यदेव चक्रपूर्वार्द्धे मेषादीनां राशीनां षण्णां प्रमाणंतदेव प्रतीपं विपर्यस्तं  
तुलादिषु षट्सु मानम् । तद्यथा विषयादयः ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० एते चतुर्गुणिता  
जाताः २० । २४ । २८ । ३२ । ३६ । ४० एते प्रमाणं मेषादीनां व्यत्ययाच्च तुलादीनामिति ।  
तथा च सत्यः । चतुरुत्तरोत्तराः स्युर्विंशतिभागा भवन्ति मेषाद्ये । मानमिहार्द्धपूर्वमीना-  
द्ये चोत्क्रमाद्धै ॥ भागव्यवहारश्च क्षेत्रे भागेनैकेन काले दशचषका भवन्ति । यस्माद्या  
कलाक्षेत्रे सा काले प्राण इति । यस्माद् दृष्टब्रह्मगुप्तेनोक्तम् ॥ लंकासमपश्चिमगं प्राणे-  
न कलां भ्रमंडलं भ्रमतीति । एवमेते भागा दशगुणिताश्च षका भवन्ति । तत्रैतज्जातम्  
काले या घटिका सा षष्ट्यधिकेन शतत्रयेण गुणिता प्राणा भवन्ति क्षेत्रे च ता एव बलि  
तास्ता सां षष्ट्या भागमपहृत्य षड्भागाः क्षेत्रे भवन्ति । एवं मेषादीनां प्राणभागा दश-  
गुणिताश्च षका भवन्ति तेन च षकशतद्वयं मेषमीनयोः प्रमाणम् । एवं च त्वारिंशदधि-  
कं शतद्वयं वृषकुंभयोः ॥ शतद्वयमशीत्याधिकं मिथुनमकरयोः शतत्रयं विंशत्य-



धिकंकर्कटधनुषोः शतत्रयंपष्टयधिकंसिंहवृश्चिकयोः शतचतुष्टयंकन्यातुल्योः  
 एतएवचषकादशविभक्ताभागत्वेनपरिकल्पिताः यतःक्षेत्रेदशभिश्चषकैर्भागोभ-  
 वति । ननुचरदलवशात्प्रतिदेशमननुरूपेषुराशुदयेषुगणितस्कंधसिद्धेषुकिमर्थ-  
 मेकरूपंतदुदयप्रमाणंदर्शितमाचार्येण । अत्रोच्यते । नष्टचिंतादिष्वर्थपरिज्ञाना-  
 यपुरुषावयवानां ह्रस्वदीर्घत्वज्ञापनायोपयुज्यते । तथाचयवनेश्वरः । आद्यंतरा-  
 शेरुदयप्रमाणंदौद्रौमुहूर्तौनियतंप्रदिष्टौ । क्रमोत्क्रमाभ्यामाधिपंचमस्याच्चक्रार्द्धयो-  
 र्विद्वद्दुदयप्रमाणम् ॥ एवंप्रमाणानिगृहाणिवुद्ध्वाह्रस्वानिमध्यानितथायतानि । च-  
 क्रांगभेदैः सदृशीकृतानिभार्गप्रमाणानिविकल्पयीत । अंगविभागकल्पनंवक्ष्यति  
 कादिविलम्बाविभक्तभगात्रइति । तत्रयस्मिन्नंगेदीर्घराशिर्भवति दीर्घाधिपोवाग्रह-  
 स्तदंगंदीर्घंभवति मध्ययोर्मध्यं ह्रस्वयोर्ह्रस्वमिति । तथाचसारावल्याम् ह्रस्वा-  
 स्तिमिगोजघटामिथुनधनुःकर्किसृगमुखाश्चसमाः । वृश्चिककन्यामृगपतिवणि-  
 जोदीर्घाःसमाख्याताः । एभिर्लम्बादिगतैःशीर्षप्रभृतीनिसर्वजंतूनाम् । सदृशानिच  
 जायंतेगगनचरैश्चैवतुल्यानि ॥ तथाचसत्यः ॥ दीर्घाधिपतिर्दीर्घेगृहेस्थितोऽवयव-  
 दीर्घकृद्भवति । एवमादिष्वर्थेष्वेतैर्विकल्पनाकार्या लभोदयनिरूपणागणितस्कं-  
 धसिद्धेरेवकार्येति । दुश्चिक्यंसहजमिति । सहजस्यतृतीयस्थानस्यदुश्चिक्यसंज्ञा  
 तपश्चनवममिति नवमस्थानस्यतुतपःसंज्ञा त्र्याद्यंत्रिकोणंचतत् तदेवनवमं  
 स्थानं त्र्याद्यंत्रिकोणं त्रिशब्दआद्योयस्यतत्रिकोणमित्यर्थः । त्रिकोणंचतदेव  
 नवममिति ॥ १९ ॥

रक्तःश्वेतःशुकतनुनिभःपाटलोधूम्रपांडुश्चित्रःकृष्णःकनकस-  
 दृशःपिंगलःकर्बुरश्च॥बभ्रुःस्वच्छःप्रथमभवनाद्येषुवर्णाःप्लवत्वं  
 स्वाम्याशाख्यंदिनकरयुताद्वाद्वितीयंचवेशिः ॥ २० ॥

अधुनाराशिवर्णान्मंदाक्रांतयाह ॥ रक्तइति । प्रथमभवनंमेषस्तदाद्येषु ॥ मे-  
 षादिषुराशिषुयथाक्रममेतेवर्णाः । तत्रमेषोरक्तोलोहितवर्णः । वृषःश्वेतः शुक्लः ।  
 मिथुनःशुकतनुनिभः हरितइत्यर्थः । कर्कटःपाटलः पाटलापुष्पवर्णः ईषत्कृ-  
 ष्णरक्तइत्यर्थः । सिंहोधूम्रपांडुरीषच्छुक्लः । कन्याचित्रा नानावर्णेत्यर्थः । तुलाकृ-  
 ष्णः । वृश्चिकः कनकसदृशः सुवर्णवर्णः । धन्वीपिंगलः पीतवर्णः । मकरः  
 कर्बुरः शुक्लकपिलव्यामिश्रवर्णः । कुंभोबभ्रुः नकुलवर्णसदृशः । मीनःस्वव-  
 र्णोमत्स्यवर्णइत्यर्थइति । प्रयोजनम् वियोजनजन्मज्ञानेलम्बांशकादिवक्ष्यति प्लव-  
 त्वंस्वाम्याशाख्यमिति । स्वामिनआशास्वाम्याशा आशादिक् तत्रप्लवत्वं  
 प्लवस्यभावःप्लवत्वम् । सर्वस्यराशेःस्वाम्याशाख्यंस्थानंप्लवत्वंनिम्नतेत्यर्थः । यथा  
 मेषवृश्चिकयोर्भौमोधिपतिः तस्यदक्षिणादिक्तत्रतौप्लवसंज्ञौ वृषतुल्योः

शुक्रोधिपतिः तस्याग्नेयीदिक् तत्रतौप्लवसंज्ञौ मिथुनकन्ययोर्बुधोधिपति-  
 स्तस्योत्तरादिक् तत्रतौप्लवसंज्ञौ कर्कटस्यचंद्रोधिपतिस्तस्यवायवीदिक्  
 तत्रसप्लवसंज्ञः सिंहस्यादित्योधिपतिस्तस्यपूर्वादिक् तत्रसप्लवसंज्ञः ध-  
 न्विमीनयोर्जीवोधिपतिस्तस्यैशानीदिक् तत्रतौप्लवसंज्ञौ मकरकुंभयोः  
 सौरोधिपतिस्तस्यपश्चिमादिक् तत्रतौप्लवसंज्ञौ । एवंराशिस्वामिनोया-  
 दिक् तद्विकृष्टवोराशिर्ज्ञेयः । प्रयोजनम् हतनष्टादिषु तदिद्भुमुखं  
 चौरादेः । अन्यच्चयात्रायामुपयुज्यते । तथाचसारावल्याम् भवनाधि-  
 पतिग्रामप्लवइहयवनैः प्रबंधतः कथितः ॥ तत्प्लवगोविनिहन्यादचिरेणमहीप-  
 तिःशत्रूनि ॥ दिनकरयुताद्वाद्द्वितीयंचवेशिरिति । दिनकरःसूर्यस्तेनयुतोयोरा-  
 शिस्तस्माद्द्वितीयोवेशिसंज्ञः । प्रयोजनंयात्रायांवक्ष्यति । वेशिर्विलग्नोपगतोयियासो  
 रिति ॥ तथाच ॥ वेशिस्थानेचसद्ब्रह्मइत्यादि । अत्रसंज्ञाध्यायेयाःसंज्ञाउक्तास्ता  
 द्विप्रकाराः तत्रकाश्चित्संज्ञामात्रप्रयोजनाः ॥ काश्चित्फलनिर्देशप्रयोजनाः ॥  
 तत्रेमाःसंज्ञामात्रप्रयोजनाः । यथालग्नस्यहोरा । तृतीयस्यदुश्चिक्क्यम् । चतुर्थस्य  
 हिबुक्कम् । पंचमस्यत्रिकोणम् । सप्तमस्यदूनम् । नवमस्यत्रिकोणसंज्ञा । दशम-  
 स्यमेषूरणम् । द्वादशस्यरिःफम् । चतुर्थाष्टमयोश्चतुरस्रसंज्ञा । लग्नचतुर्थ-  
 सप्तमदशमानांकंटककेंद्रसंज्ञा चतुष्टयसंज्ञाच । तथाद्वितीयपंचमाष्टमैकादश-  
 स्थानानांपणफरसंज्ञा । तृतीयषष्ठनवमद्वादशानामापोक्लिमसंज्ञा । एताःसं-  
 ज्ञामात्रप्रयोजनाः इमाश्चफलनिर्देशप्रयोजनाः । तत्रलग्नस्यतनुसंज्ञाकल्पसंज्ञाच  
 तेनलग्नान्छरीरवृद्धयन्वेषणमारोग्यान्वेषणंचकार्यम् । द्वितीयस्यकुटुंबसंज्ञास्वसं-  
 ज्ञाच तेनतस्माज्ज्ञातिधनान्वेषणंचकार्यम् । तृतीयस्यसहजसंज्ञाविक्रमसं-  
 ज्ञाच तेनतस्माद्भ्रातृणांपुरुषार्थस्यचान्वेषणंचकार्यम् । चतुर्थस्यबंधुसंज्ञा  
 वेश्मसंज्ञासुखसंज्ञाच तेनतस्माद्बंधुसुखगृहाणांचान्वेषणंचकार्यम् । पं-  
 चमस्यबुद्धिसंज्ञापुत्रसंज्ञाच तेनतस्माद्बुद्धिपुत्रयोरन्वेषणंचकार्यम् । षष्ठस्या-  
 रिसंज्ञाक्षतसंज्ञाच अरिशब्दःशत्रुवाची क्षतशब्दोत्रणवाची तेनतस्मा-  
 दरातिव्रणान्वेषणंचकार्यम् । सप्तमस्यदारसंज्ञाचित्तोत्थसंज्ञाजामित्रसंज्ञाच दार-  
 शब्दोभार्यावाची चित्तोत्थशब्दः कामवाची जामित्रशब्दोविवाहवाची ते-  
 नतस्माद्द्वार्याकामविवाहान्वेषणंचकार्यम् । अष्टमस्यमरणरंध्रसंज्ञा मरणंमृत्युः  
 रंध्रशब्दःपापपर्यायः तेनतस्मान्मरणपापान्वेषणंचकार्यम् । नवमस्यशुभसंज्ञागु-  
 रुसंज्ञातपःसंज्ञाच शुभशब्देनात्रधर्मोज्ञेयः गुरुवोमातृपितृपूर्वकाः तपोव्रतादि  
 तेनतस्माद्धर्ममातृपितृपूर्वकाणांगुरूणांतपसांचान्वेषणंचकार्यम् । दशमस्यास्पद-  
 कर्मसंज्ञा आस्पदशब्दःकर्मवाचीस्थानवाचीवा । कर्मास्पदसंज्ञेसुप्रसिद्धे तेनतस्मा-  
 क्तियाभावान्वेषणंचकार्यम् । एकादशस्यमवायसंज्ञा । भावशब्दोत्रविद्यादिगु-



णसंपत्प्राप्तिवाची आयशब्दोर्थवाची तेनतस्मात्तयोरन्वेषणंकार्यम्।व्ययइति द्वा-  
दशस्याख्या तेनतस्माद्वयान्वेषणंकार्यम् ।तृतीयषष्ठदशमैकादशस्थानानामुप-  
चयसंज्ञा उपचयकरत्वात्।इदंचतेषामुपचयकरत्वं यदितत्रस्थाःपापाअपिशुभफ-  
लप्रदाभवन्ति । तथाहि । षष्ठस्थानंविनासौम्याःसर्वत्रभावविवृद्धिकराः।षष्ठस्थाः  
पुनररिहानिनकुर्वन्तिक्षतहानिंच ॥ पापास्तूपचयस्थाभावविवृद्धिकुर्वाणाअपिष-  
ष्ठमुपचयस्थानंप्राप्यतच्चित्यदुष्टभावयोररिक्षतयोरपिहानिंकुर्वन्ति ।यतस्तेषामुप-  
चयकराइत्यन्वर्थसंज्ञा । उपचयस्थास्तएवपापदाभावहानिंकुर्वाणाअपिअष्टमद्वा-  
दशस्थानविचित्यमनिष्टभावंभावस्यानिष्टत्वात्स्थानस्योपचयात्मकत्वाद्वाद्धिप्राप-  
यन्ति।तथाचश्रीदेवकीर्तिः।सौम्याः षष्ठेपापास्तन्वर्थसुखारिधर्मधीयुनगाः।कुर्युर्भा-  
वविपत्तिशेषोपगताश्चतदृद्धिमिति एतद्विशेषवचनंविनासर्वत्रोपतिष्ठतइति।२०॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौराशिप्रभेदोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कालात्मादिनकृन्मनस्तुहिनगुःसत्वंकुजोज्ञोवचोजीवोज्ञान-  
सुखेसितश्चमदनोदुःखंदिनेशात्मजः ॥राजानौरविशीतगूक्षि-  
तिसुतोनेताकुमारोबुधःसूरिर्दानवपूजितश्चसचिवौप्रेष्यःसह-  
स्रांशुजः ॥ १ ॥

अथातोग्रहयोनिप्रभेदाध्यायोव्याख्यायते । तत्रचराचरंजगद्ब्रह्मयमेवप्राक्का-  
लाख्यस्यपुरुषस्यकालांगानीत्येवंमेषादिनाराशिनक्षत्रमयोंगविभागःप्रदर्शितः  
तत्प्रदर्शनेनग्रहमयएवासौप्रदर्शितोभवति यतोराशिस्वामिनोग्रहाएव अधुना  
तस्यात्मादीन्भावान्ग्रहमयानेवजगत्पालकांस्तथाराजादीन्ग्रहमयानेवशार्दूलवि-  
क्रीडितेनाह॥कालात्मादिनकृदिति।कालस्यात्माकालात्मा दिनकृत्सूर्यः । तस्यै-  
वतुहिनगुश्चंद्रोमनः तुहिनेनहिमेनसदृशाःशीतलाः गावोरश्मयोयस्यसतुहि-  
नगुः । सत्वंकुजोभौमः ।सत्वास्यलक्षणम् अधिकारकरंसत्वंवासनान्युदयागमे ।  
सत्त्वशब्दोत्रशौर्यपर्यायः यच्चसिंहादीनामस्ति । तथाच एकाकिनिवनवासिन्य-  
राजलक्ष्मण्यनीतिशास्त्रज्ञे । सत्त्वश्रयान्मृगपतौराजेतिगिरःपरिणमन्ति ॥ उत्कृ-  
ष्टतरस्वभावेनेत्यर्थः । ज्ञोबुधोवचोगिरः । जीवोबृहस्पतिःज्ञानसुखे ज्ञानंचसुखं  
चज्ञानसुखे सितःशुक्रोमदनःकामः । दिनस्येशोदिनेशःसूर्यस्तस्यात्मजः  
पुत्रःशनैश्चरोदुःखम् । अत्रकालग्रहणंकालस्यसर्वगतत्वप्रदर्शनार्थम् । अत्रनके-  
वलंकालपुरुषस्यमेषाद्वाराशयःशिरः प्रभृत्यंगविभागेनस्थिताःयावदादित्यादय-  
श्चात्मविभागेनसर्वस्यजगतःस्थिताः । प्रयोजनम् पीडितेग्रहे देहवतोपितदंग-  
भावात्मगुणपीडनंवक्तव्यंपुष्टेपुष्टिरिति । नकेवलंयावज्जन्मनिबलवद्भिर्ग्रहैरेतएव

भावाआत्मादयःशुभाभवन्तिदुर्बलैर्दुर्बलाः किंतुसौरस्यविपरीतम् । तथाचसारा-  
वल्याम्॥आत्मादयोगगनगैर्बलिभिर्बलवत्तराः । दुर्बलैर्दुर्बलाज्ञेयाविपरीतंशनेः  
स्मृतमिति । राजानावित्यादिरविरादित्यःशीतगुश्चंद्रःएतौराजानौनृपौ क्षिति-  
भूमिरस्याःसुतःपुत्रोंगारकःसनेतासेनापतिः कुमारोबुधः कुमारोयुवराजः रा-  
जपुत्रइतिकेचित्।सूरिर्बृहस्पतिः दानवपूजितः शुक्रः एतौसचिवौमंदिणौ सह-  
स्रांशुःसूर्यस्तस्माज्जातःशनैश्चरः सप्रेष्योदासः । ननुजगत्पालनकरणेशनैश्चरः  
प्रेष्यः किमत्रोच्यते प्रेष्योपिस्वकर्मणां पालकएव । प्रयोजनं जन्मनिप्रभकाले  
वाबलवानुपचयस्थोयहोभवति तदुक्तोराजादिकस्तस्यकार्यसाधकोभवति अ-  
न्यथाहानिकरः ॥ १ ॥

हेलिःसूर्यश्चंद्रमाःशीतरश्मिर्हेम्नाविज्ञोबोधनश्चंदुपुत्रः ॥

आरोवक्रःक्रूरदृक्चावनेयःकोणोमंदःसूर्यपुत्रोसितश्च ॥ २ ॥

अधुनाव्यवहारार्थंसूर्यचंद्रबुधांगारकशनैश्चराणांसंज्ञाःशालिन्याह॥हेलिरिति।  
सूर्यआदित्योहेलिसंज्ञः चंद्रमाःशीतरश्मिसंज्ञः शीतारश्मयःकिरणायस्यसः ।  
इंदुपुत्रोबुधः सहेम्नाविज्ञोबोधनः एतास्तस्यसंज्ञाःअवनिर्भूस्तस्यापत्यमावनेयो  
भौमः सआरःवक्रःक्रूरदृक् एताःभौमस्यसंज्ञाः सूर्यपुत्रःसौरः कोणःमंदः असितः  
एताःशनैश्चरस्यसंज्ञाः ॥ २ ॥

जीवोंगिराःसुरगुरुर्वचसांपतीज्यःशुक्रोभृगुभृगुसुतःसितआ-  
रुफुजिच्च॥राहुस्तमोगुरसुरश्चशिखीतिकेतुःपर्यायमन्यमुपल-  
भ्यवदेच्चलोकात् ॥ ३ ॥

अधुनागुरुशुक्रराहुकेतूनांसंज्ञावसंततिलकेनाह ॥ जीवइति । जीवोबृहस्पतिः  
सएवांगिराः सुरगुरुः सुरादेवास्तेषांगुरुः वचसांपतिःतथाइज्यः पूज्यःदेवानाम्  
एताबृहस्पतेःसंज्ञाः । शुक्रोभार्गवः सएवभृगुः भृगुसुतः सितः आरुफुजित्  
चशब्दःसमुच्चयार्थः एताः शुक्रस्यसंज्ञाः । राहुः स्वर्भानुः सएवतमः अगुः  
नविद्यंतेगावोरश्मयोयस्यसः अरश्मिरित्यर्थः असुरोदैत्यः एताराहोःसंज्ञाः ॥  
शिखीतिकेतुः केतोःशिखीतिसंज्ञा शिखाविद्यतेयस्यसशिखी अन्यंपर्यायं  
लोकादन्यशास्त्रादुपलभ्यवदेत्तब्रूयात् । यथा । रविस्तीक्ष्णांशुर्दिवाकरोभा-  
स्वांस्तीक्ष्णरश्मिर्भानुर्विवस्वानित्यादिकाःमूर्यस्य । शशांकस्तुहिनगुर्मृगांकःश-  
शीनिशाकरोनक्षत्रपतिरित्याद्याश्चंद्रस्य । कुजोलोहितोभौमःक्षमातनयइत्याद्या  
भौमस्य । सौम्योरौहिणेयश्चाद्रिर्मृगांकतनयइंदुज इत्याद्याबुधस्य । सूरिःसुरे-



योवाक्पतिर्देवपुरोहितइंद्रमन्त्रीत्याद्यागुरोः । भार्गवउशनादैत्येज्योऽसुरगुरुःदै-  
त्यार्विगित्याद्याःशुक्रस्य । यमोरविजःपातंगिश्रयासुतइत्याद्याःसौरस्य । सै-  
हिकेयःस्वर्भानुर्दानवोमृतचौरोविधुंतदइत्याद्याराहोरिति ॥ ३ ॥

रक्तश्यामोभास्करोगौरइंदुर्नात्युच्चंगोरक्तगौरश्वक्रः ॥

दूर्वाश्यामोज्ञोगुरुगौरगात्रःश्यामःशुक्रोभास्करिःकृष्णदेहः ॥४॥

अधुनाग्रहवर्णाञ्छालिन्याह ॥ रक्तश्यामइति । रक्तश्चासौश्यामः पाटलपुष्प-  
वर्णइत्यर्थः । एवंविधोभास्करआदित्यः । इंदुश्चंद्रोगौरः श्वेतवर्णप्रायः । वक्रों-  
गारकःसनात्युच्चोनातिदीर्घोरक्तगौरःपद्मपत्राभः । ज्ञोबुधःसदूर्वाश्यामः शाद्वल-  
वर्णः । गुरुर्बृहस्पतिःसगौरगात्रोगौरशरीरः । शुक्रःश्यामवर्णोनातिगौरोनाति  
कृष्णः । भास्करिःसौरिःसकृष्णदेहोऽसितशरीरः।वर्णप्रयोजनं सर्वग्रहेषुयोबलवां-  
स्तद्वर्णस्तत्कालजातोभवति प्रश्नकालेचौरादेरपि ॥ ४ ॥

वर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरितव्यापीतचित्रासितावह्नयं च्वग्निजके-  
श्वेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथाःक्रमात्॥प्रागाद्यारविशुक्रलोहित-  
तमःसौरिंदुवित्सूरयःक्षीणेंद्वर्कमहीसुतार्कतनयाःपापाबुधस्तैर्युतः५

अधुनाग्रहाणांवर्णस्वाम्यग्रहदेवतास्वदिवस्वाम्यं सौम्यपापत्वंचशार्दूलविक्री-  
डितेनाह॥वर्णाइति । ताम्रादयोवर्णाःसूर्यादिग्रहनाथाः सूर्यादयोग्रहनाथाः स्वा-  
मिनोयेषांते ताम्रवर्णस्यादित्योनाथःस्वामी सितस्यश्वेतस्यचंद्रःअतिरक्तस्याति-  
लोहितस्यभौमः हरितस्यशुक्रवर्णस्यबुधः विशेषेणआसमंतात्पीतोव्यापीतस्तस्य  
हरिद्रासदृशस्यजीवः चित्रस्यनानावर्णस्यशुक्रः असितस्यकृष्णवर्णस्यसौरिः ।  
प्रयोजनम् हतनष्टादिद्रव्यवर्णज्ञानंजन्मनिप्रश्नकालेचोक्तद्रव्यलाभोन्यथाहानिः  
ग्रहपूजायांतद्वर्णकुसुमपूजा । तथाचयाज्ञवल्क्यः ॥ वर्णैर्मंडलकेषुचेति । वह्नी-  
त्यादि । सूर्यादिनाथाइत्यनुवर्तते । सूर्यादीनांनाथाः सूर्यादिनाथाः आदित्य-  
स्यवह्निरग्निर्नाथःस्वामी चंद्रमसोबुजलम् भौमस्याग्निजःकुमारः स्वामिका-  
र्तिकेयइत्यर्थः । बुधस्यकेशवोविष्णुः । गुरोरिंद्रःशतक्रतुः । शुक्रस्यश-  
चींद्राणी । सौरस्यकः प्रजापतिर्ब्रह्मेत्यर्थः । प्रयोजनम् ग्रहपूजायां ग्रहोक्तदे-  
वताः पूज्याः। तथाचयवनेश्वरःदेवाग्रहाणांजलवह्निविष्णुप्रजापतिस्कंदमहेंद्रदे-  
वी । चंद्रार्कचांद्रार्कजभौमजीवशुक्रांश्रयज्ञेपुयजेतशश्वत्।तथाचौरनामानयने  
बलवद्ग्रहोक्तदेवतापर्यायनाम।तथाचयात्रायांग्रहदेवतांसंपूज्यतदिशंयायात् । त-  
थाचसारावल्याम्॥ताम्रसितरक्तहरितकपीतविचित्रासिताइनादीनाम् । पावक-

जलगुहकेशवशक्रशचीवेधसःपतयः ॥ पूर्वादिग्रहदेवांस्तन्मंत्रैःसमभिपूज्यतामा-  
शाम् । कनकगजवाहनादीन्प्राप्नोतिनृपोरितः शीघ्रम् ॥ प्रागाद्याइतिप्रागाद्याः  
पूर्वप्रथमादिशस्तासांपूर्वादीनारव्यादयोनाथाः तत्रपूर्वस्यांदिशिरविरादित्योधि-  
पतिः पूर्वदक्षिणस्यांशुक्रः दक्षिणस्यांलोहितोंगारकः दक्षिणपश्चिमायांतमो  
राहुः पश्चिमायांसौरिःशनैश्चरः पश्चिमोत्तरस्यामिंदुश्चंद्रः उत्तरस्यांवित्बुधः  
उत्तरपूर्वस्यांसूरिर्वृहस्पतिः । प्रयोजनम् केंद्रस्थेग्रहेसूतिकागृहद्वारज्ञानंहतनष्टा-  
दिषुचौरादेर्गमनंच । क्षीणेंद्वर्केति । क्षीणश्चासाविंदुश्चक्षीणेंदुः कृष्णाष्टम्यर्द्धाच्छु-  
क्लाष्टम्यर्द्धयावत्क्षीणश्चंद्रःपरतःपूर्ण आयुर्दायविधौकृष्णपक्षत्रयोदश्यंतात्प्रभृति-  
यावदमावास्यांतिसूर्यमंडलान्नोद्गतस्तावत्क्षीणइति । यस्माद्यवनेश्वरश्चंद्रस्यपाप-  
त्वनंकदाचिदपीच्छतितद्वाक्यम् मासेतुशुक्लप्रतिपत्प्रवृत्तेराद्येशंशीमध्यवलोद-  
शाहे । श्रेष्ठोद्वितीयेल्पबलंस्तृतीयेसौम्यैस्तुष्टोबलवान्सदैव ॥ तथाच क्रूरग्रहोर्कः  
कुजसूर्यजौचपापौशुभाः शुक्रशशांकजीवाः । सौम्यस्तुसौम्योव्यतिमिश्रितो  
न्यैर्वर्गैस्तुतुल्यप्रकृतित्वमेतीति । तस्मादेतावत्क्षीणइति ॥ अर्क आदित्यःमहीसुतों-  
गारकः अर्कतनयःसौरिः एतेसदैवपापाः बुधस्तैर्द्युतस्तेषामेकतमेनयुक्तःपापएव  
सौम्याःशेषाः । शुक्लपक्षाष्टम्यर्द्धात्कृष्णपक्षाष्टम्यर्द्धयावत्चंद्रःसौम्यःबुधः पापवियु-  
तःसौम्यएव जीवशुक्रौसदैवसौम्याविति । प्रयोजनम् पापसौम्यग्रहवलाज्जातः  
पापात्मकःसौम्यस्वभावश्चभवति ॥ ५ ॥

बुधसूर्यसुतौनपुंसकारख्यौशशिशुक्रौयुवतीनराश्चशेषाः ॥

शिखिभूखपयोमरुद्गणानांवशिनोभूमिसुतादयःक्रमेण ॥ ६ ॥

अधुनाग्रहाणांप्रकृतिविभागंमहाभूताधिपत्यंचौपच्छंदसिकेनाह । बुधसूर्यसु-  
ताविति । बुधश्चाद्रिःसूर्यसुतः शनिः एतौनपुंसकारख्यौनपुंसकनामानौ शशी  
चंद्रः शुक्रोभार्गवएतौद्वौयुवतिसंज्ञौ । शेषारविजीवभौमानराःपुरुषसंज्ञाःपुरुष-  
नामानः । प्रयोजनं जन्मनिचितायांहतनष्टादिषुबलवंतः स्वपक्षमेवकुर्वति  
एषामुपतापेतदाश्रितानामुपतापः । शिखिभूखपयोमरुद्गणानामिति शिख्या-  
दीनांपंचानांमहाभूतानांपंचग्रहाभूमिसुतादयःक्रमेणवशिनः । तद्यथा शिखि-  
नोभेर्भूमिसुतोंगारकोवशीभौमोभेः स्वामीत्यर्थः । एवंभूमेर्बुधः । खस्याकाशस्य  
जीवः । पयसोंऽभसःशुक्रः । मरुतोवायोःशनैश्चरः । गणग्रहणमत्रवृत्तपूरणार्थं ।  
नन्वादित्यचंद्रयोःकस्मान्नोक्तमित्यत्रोच्यते । तयोः पूर्वमेवोक्तं वद्व्यंत्विति ता  
वेवप्रसिद्धौ । प्रयोजनम् स्वदशायांमहाभूतकृतांछायांव्यंजयंति । वक्ष्यतिच  
छायांमहाभूतकृतांचसर्वइति ॥ ६ ॥



विप्रादितःशुक्रगुरुकुजाकौशशीबुधश्चेत्यसितोऽत्यजानाम् ॥

चंद्रार्कजीवाज्ञसितौकुजाकीयथाक्रमं सत्वरजस्तमांसि ॥ ७ ॥

अधुनाग्रहाणांब्राह्मणादिवर्णाधिपत्यंगुणविभागंचोपजातिकयाह विप्रादित इति। विप्रादितो ब्राह्मणादेर्वर्णचतुष्टयस्य स्वामिनो ग्रहाधिपतयः शुक्रो भार्गवो गुरु-  
र्बृहस्पतिरैतौ द्वौ ब्राह्मणानामधिपती कुजो भौमोऽर्क आदित्यः एतौ द्वौ क्षत्रियाणां  
शशी चंद्रौ वैश्यानां शूद्राणां बुधः असितः शनैश्चरौऽत्यजानां वर्णप्रतिलोमभवानां  
चांडालभागधनिषादादीनाम् । प्रयोजनम् हतनष्टादिषु ग्रहबलाच्चौरादीनां ग्रहो-  
क्तवर्णप्रभावः एषामुपधाते तद्वर्णोपधातः । तथाच सत्यः ॥ गुरुशुक्रौ रविरर्कौ चंद्रः  
सौम्यः शनैश्चरश्चेति । विप्रक्षत्रियविदूशूद्रसंकराणां प्रभुत्वकराः । अजये जयेथ तु-  
ष्टावंप्रीतौ वित्तनाशनेलाभे । तेभ्यस्तेभ्यः कुर्युर्गुणांश्च दोषांश्च पक्षास्तान् । चंद्रा-  
र्कजीवा इत्यादि । चंद्रः शशी अर्क आदित्यः जीवो बृहस्पतिः एते सत्वसंज्ञाः । ज्ञो  
बुधः सितः शुक्रः एतौ द्वौ रजःसंज्ञौ । कुजोऽंगारकः आर्किः सौरः एतौ द्वौ  
तमःसंज्ञौ । एते यथाक्रमं सत्वादिगुणाधिपतयो ग्रहाः । प्रयोजनं सत्वरजस्तमो  
वार्त्रिंशं शेषस्य भास्करस्तादृगिति । अन्ये पुनर्ग्रहबलाद्वर्णयन्ति । तथाच श्रीदेवकी-  
र्तिः ॥ बलवद्विस्तद्गुणो भवेज्जात इति । अत्राचार्यस्य यवनेश्वरेण सहमतभेदः ते-  
न भौमः सात्विक उक्तः । तथाच तद्राक्यं सत्वाधिका भास्करभौमजीवा भृगवात्म-  
को राजसिकः शशीच । शनैश्चरस्तामसिको बुधस्तु संयोगतोऽस्माद्भवेति विशेषान् ॥  
आचार्यस्य सत्यवचनमभिमतम् । तथाच सत्यः ॥ तामसिकौ कुजसौरी राजसिको भा-  
र्गवः शशिसुतश्चाजीवशशिभास्कराः सात्विकाग्रहवत्प्रकृतयो नृणाम् ॥ एवं त्रयत्रा-  
चार्यस्य यवनेश्वरेण सहमतभेदस्तत्रांगीकृतं सत्यमतमपि । अथ पूर्वमभिहितं सत्वं  
कुजः । चंद्रार्कजीवाः पुनः किमित्युक्तम् । उच्यते । इह गुणवचनः सत्वशब्दस्तत्र  
शौर्यपर्यायः यः कार्याकार्यप्रवृत्तानां सिंहादीनामप्यस्ति येन एकाकिनोऽपि वनवा-  
सिनः । तथाच एकाकिनि वनवासिन्यराजलक्ष्मण्यनीतिशास्त्रज्ञे । सत्वस्थिते मृग-  
पतौ राजेति गिरः परिणमन्ति ॥ अथ गुणस्वरूपं यः सात्विकस्तस्य दयास्थिरत्वं स-  
त्याजर्वंब्राह्मणदेवभक्तिः । रजोधिकः काव्यकलाक्रतुस्त्रीसंसक्तचित्तः पुरुषो-  
त्तिशूरः । तमोधिको वंचयिता परेषां मूर्खोलसः क्रोधपरोतिनिद्र इति ॥ ७ ॥

मधुपिंगलदृक्चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविताल्पकचः ॥

तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशीमृदुवाक्छुभदृक् ॥ ८ ॥

अधुना चंद्रार्कयोः स्वरूपंतोऽटकेनाह ॥ मधुपिंगलदृगिति । मधुवर्त्पिंगलादृष्टि-  
र्यस्य सः ईषत्कातराक्षः चतुरस्रतनुः प्रसारितभुजद्वयप्रमाणसमोच्छ्रायः पित्त-

प्रकृतिः पित्ताधिकः अल्पकचोविरलकेशः एवंविधः सविताआदित्यः ।  
तनुवृत्ततनुरित्यादि । तन्वीचासौवृत्ताचतनुवृत्तातादृशीतनुर्यस्यसतनुवृत्ततनु ।  
कृशवर्तुलांगइत्यर्थः । बहुवातकफःप्रभूतमारुतश्लेष्मा प्राज्ञोमेधावी मृदुवाक्कोम-  
लभाषी शुभदृक् दर्शनीयाक्षः एवंविधःशशीचंद्रः ॥ ८ ॥

क्रूरदृक्तरुणमूर्तिरुदारःपैत्तिकःसुचपलःकृशमध्यः ॥

श्लिष्टवाक्सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥ ९ ॥

अथांगारकबुधयोः स्वरूपंस्वागतयाह ॥क्रूराइति।क्रूरादुष्टादृक्दृष्टिर्यस्यसक्रू-  
रदृगंगारकः सचतरुणमूर्तिः नित्यंयौवनोपेताकारविग्रहः । उदारोदाता पैत्ति-  
कः पित्तबहुलः सुचपलोतीवास्थिरचित्तः कृशमध्यस्तनूदरः एवंविधोऽंगारकः  
श्लिष्टवागित्यादि श्लिष्टवाग्गद्गदभाषी सततहास्यरुचिः नित्यंपरिहासशीलः  
पित्तमारुतकफप्रकृतिर्दोषत्रयोल्लेखणस्वभावः एवंविधोज्ञोबुधः ॥ ९ ॥

बृहत्तनुःपिंगलमूर्धजेषणोबृहस्पतिःश्रेष्ठमतिःकफात्मकः ॥

भृगुःसुखीकांतवपुःसुलोचनःकफानिलात्मासितवक्रमूर्द्धजः॥१०॥

अथजीवशुक्रयोः स्वरूपंवंशस्थेनाह ॥ बृहत्तनुरिति । बृहत्तनुःस्थूलशरीरःमूर्ध-  
जाःकेशाईक्षणे नयनेच पिंगलेकपिलेयस्य । कपिलकेशकातराक्षइत्यर्थः । श्रेष्ठम-  
तिर्धर्मानुगप्रज्ञः कफात्मकःश्लेष्मात्मा एवंविधो बृहस्पतिः । भृगुरित्यादि । सु-  
खीनित्यंसुखासक्तः । कांतवपुर्दर्शनीयशरीरः । सुलोचनःशोभनाक्षः । कफा-  
निलात्माश्लेष्ममारुतप्रकृतिः असितवक्रमूर्द्धजः असिताः कृष्णावक्राः कुटिला  
मूर्द्धजाः केशाःयस्य । कृष्णकुटिलकेशइत्यर्थः । एवंविधोभृगुःशुक्रः ॥ १० ॥

मंदोलसःकपिलदृक्कृशदीर्घगात्रःस्थूलद्विजःपरुषरोमकचोनि-  
लात्मा ॥ स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथशुक्रवसेचमज्जामंदार्कचंद्रबु-  
धशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ११ ॥

अधुनाशनैश्चरस्वरूपंस्नाय्वादिसारत्वंचग्रहाश्रयंवसंततिलकेनाह॥मंदोलसइति।  
अलसःक्रियास्वपटुःकपिलदृक्पिंगलाक्षः।कृशंदुर्बलं दीर्घमुच्चतरंगात्रयस्य गात्रा-  
णिवासः दुर्बलोर्ध्वदेहः स्थूलद्विजोबृहदंतः।परुषरोमकचःरूक्षतनूरुहकेशः अनि-  
लात्मा वातप्रकृतिः एवंविधोमंदःशनैश्चरः । स्नाय्वस्थीत्यादि॥मंदादीनांग्रहाणां  
स्नाय्वादिसारत्वं स्नाय्वस्थिनीप्रसिद्धार्थेदेहवतांशनैश्चरादित्यौ स्नाय्वस्थिसारौ  
शनैश्चरःस्नायुसारः आदित्योस्थिसारः । असृगुधिरंतचंद्रमाः । त्वक्चर्मतद्वुधः ।  
अथशब्दआनंतर्याथै।शुक्रंरेतः तच्छुक्रः।वसामेदस्तत्सुरेज्योगुरुः।मज्जाअस्थ्यंतर्ग-



तोधातुविशेषःसभौमः । ग्रहाणांस्वरूपज्ञानप्रयोजनम् लग्ननवांशपतुल्यतनुः  
स्यादित्यत्रोपयुज्यते । जन्मकालेयोग्रहोबलवांस्तत्पाठितस्वरूपस्तत्कालजातोभव  
ति तद्भातुसारश्च हतनष्टादिषुप्रश्नकालेष्येवंविधाधातुरूपाश्चौरादयः व्याधिप्र-  
श्रेयल्लभ्यंश्चलग्नेनवांशकोवर्ततेतत्स्वामिनोबलवशादभिहितदोषभवापीडा ॥ ११ ॥

देवांस्वग्निविहारकोशशयनक्षित्युत्करेशाःक्रमाद्रस्त्रूलमभु-  
क्तमग्निकहतंमध्यंढठंस्फाटितम् ॥ ताम्रंस्यान्मणिहेमयुक्तिरज-  
तान्यर्काच्चमुक्तायसीद्रेष्काणैःशिशिरादयःशशुरुचज्ञग्वादिषू-  
द्यत्सुवा ॥ १२ ॥

अधुनाग्रहाणांस्थानवस्त्रद्रव्यतुप्रभुत्वंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ देवांस्वग्रीति । अ-  
र्कात्प्रभृतितादादीनांग्रहाणांक्रमाद्देवादीनि स्थानानि तत्रदेवस्थानमादित्यस्य ।  
अंबुस्थानंचंद्रमसः । अग्निस्थानंभौमस्य । विहारस्थानंक्रीडास्थानंबुधस्य । कोशो  
भांडारागारंतत्स्थानंबृहस्पतेः । शयनस्थानंशुक्रस्य । क्षित्युत्करःअवकरराशिस्त-  
त्स्थानंशनैश्चरस्य । एषांस्थानानामेतर्द्देशाःस्वामिनः । प्रयोजनं बलवतिग्रहग्रहोक्त-  
स्थानेप्रसवज्ञानं हतनष्टादेश्वौरादेः स्थानंद्रव्यस्यच । वस्त्रमित्यादि अर्कादिति  
सर्वत्रानुवृत्तिः तत्रस्थूलतंतुकृतमादित्यस्यवस्त्रम् । अभुक्तंनवंचंद्रस्य । अग्निनाहत-  
मेकदेशदग्धंभौमस्यकिंनानुनाहतंक्लिन्नंबुधस्यामध्यंनानातिनवंनातिजीर्णंबृहस्पतेः ।  
ढठकालांतरस्थायिशुक्रस्य । स्फाटितंजीर्णशनैश्चरस्य । प्रयोजनं सूतिका-  
वस्त्रज्ञानेहतनष्टादिचिंतायांचबलवद्भवशाद्रस्त्रज्ञानम् । ताम्रंस्यादित्यादि । आ-  
दित्यस्यताम्रं चंद्रस्यमणयः भौमस्यहेमसुवर्णं बुधस्ययुक्तिः युज्यतइ-  
तियुक्तिः रीतिकांस्यादि रजतरौप्यंबृहस्पतेः स्वस्थानस्थस्यसुवर्णम-  
पि मुक्ताशुक्रस्य अयःकृष्णलोहंसीसत्रपुणीचशनैश्चरस्य । तथातेनैवसूक्ष्म-  
जातकेउक्तं अर्कादिताम्रमणिहेमयुक्तिरजतानिमौक्तिकंलोहम् । वक्तव्यंबलवद्भिः  
स्वस्थानेहेमजीवेपि । तथाचबादरायणः ॥ अर्कस्यताम्रंमणयोहिमांशोभौमस्यहे-  
मंदुसुतस्ययुक्तिः । जीवस्यरौप्यंस्वगृहेस्थितस्यतस्यैवहेमोशनसश्चमुक्ता ॥ तीक्ष्णां-  
शुदेहप्रभवस्यसीसंकृष्णायसंचप्रवदंतितज्ज्ञाः । प्रयोजनं सूतिकागृहेबलवद्भ-  
हेद्रव्यसत्ताहतनष्टादिचिंतायांद्रव्यनाशादिपरिज्ञानं तच्छुभदशायांतस्मिन्नुप-  
चयस्थेतदाप्तिः उक्तविपरीतेहानिः । द्रेष्काणैरित्यादि । अत्रशकारादिभिर्गुण्यतै-  
र्वर्णैःसंज्ञाद्यैः शनैश्चरप्रभृतीनांगुर्वतानांवृत्तानुरोधान्निर्देशःकृतः शनैश्चरशुक्ररु-  
धिरचंद्रबुधगुरुषूद्यत्सुलगतेषु शिशिरादयःषट्त्वज्ञेयाः तत्रशकारोपलक्षित-  
शनैश्चरःतस्मिन्नुदयतिलग्रस्थेशिशिरर्तुर्विज्ञेयःशुकारोपलक्षितःशुक्रः । तस्मिन्नुदय-  
तिवसंतः । रुकारोपलक्षितोरुधिरोभौमस्तास्मिन्ग्रीष्मः । चकारोपलक्षितश्चंद्रस्त-

स्मिन्वर्षा । ज्ञोबुधस्तास्मिञ्छरत् । शुकारोपलक्षितोगुरुस्तास्मिन्हेमंतः । आदि-  
त्येष्युदयतिग्रीष्मः । तथाचबादरायणः ॥ ग्रीष्ममथप्रवर्दंति कुजार्काविति । द्रेष्का-  
णैरित्यस्यवाइत्यनेनव्यवहितेनसंबंधः । द्रेष्काणैर्वोदयद्भिः शनैश्चरादिसंबंधिभिः  
शिशिरादयोज्ञेयाः । एतदुक्तं भवति । लग्नेग्रहाभावेशेनैश्वरेद्रेष्काणेलग्नगते शिशिरः  
एवंशुक्रद्रेष्काणेवसंतः भौमद्रेष्काणे ग्रीष्मः रविद्रेष्काणोग्रीष्मएव चंद्रद्रे-  
ष्काणेवर्षाः बुधद्रेष्काणेशरत् जीवद्रेष्काणेहेमंतः ॥ अत्रचमुख्योग्रहोदयेनर्तुनिर्दे-  
शस्तदभावेद्रेष्काणेनेतिज्ञातव्यम् । बहूनामुदयेपिद्रेष्काणेनैव केचिद्बहूना-  
मुदयेवलवद्गृहेणेतिव्याचक्षते । तथाचमणित्थः ॥ व्याघ्रैर्लभोपगतैर्योवलवांस्तद्गृह-  
र्तुनिर्देशइति । तत्रैतज्जातं लग्नेयोग्रहः स्थितस्तदुक्तऋतुर्वाच्यः बहुपुलग्नगतेपुयो  
वलवान् ग्रहाभावेद्रेष्काणपतेऋतुनिर्देशः । प्रयोजनं नष्टजातकेऋतुनिर्देशो  
हतनष्टादिचिंतायांचेति । अत्राचार्येणग्रहाणांशाखाधिपत्यंनोक्तम् । उक्तंचस्वल्प-  
जातके ॥ ऋगथर्वसामयजुषामधिपागुरुसौम्यभौमसिताः । ऋग्वेदाधिपतिर्गुरुः  
अथर्ववेदाधिपतिः सौम्योबुधः सामवेदाधिपतिः भौमः यजुर्वेदाधिपतिः शुक्रः ।  
प्रयोजनं बलवतिशाखाधिपेब्राह्मणोजातस्तच्छाखापाठकोभवति ब्राह्मणेचैरि-  
जातिशाखाविज्ञानम् अनिष्टस्थानस्थेग्रहेतन्मंत्रैः शांतिरिति ॥ १२ ॥

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयंतिचरणाभिवृद्धितः ॥

रविजामरेज्यरुधिराः परेचयेक्रमशोभवंतिकिलवीक्षणेधिकाः ॥ १३ ॥

अथग्रहाणां दृष्टिस्थानानि निसर्गदृष्टिफलानि चग्रहर्षिण्याह ॥ त्रिदशेति । य-  
स्मिन्स्थानेग्रहाः स्थितास्तस्मात्त्रिदशादीनिस्थानानिचरणाभिवृद्धितः पादवृद्ध्या  
ऽवलोकयंति ग्रहोयस्मिन्राशौस्थितस्तस्माद्यस्तृतीयोग्रहोदशमश्च तथातृतीयदश-  
मस्थौराशीयौतौपादेनचतुर्थभागदृष्ट्याऽवलोकयंति एवंत्रिकोणस्थानवपंचमस्था-  
नगतावर्धदृष्ट्या । चतुरस्रेऽष्टमचतुर्थेऽष्टमचतुर्थस्थानस्थौपादनदृष्ट्या । सप्तमं  
गृहंपरिपूर्णदृष्ट्या । चरणाभिवृद्धितइत्यत्राभिषब्दोवीप्सांघोतयति चरणवृद्ध्या  
पादवृद्धयेत्यर्थः । यावत्पाददृष्ट्यापश्यन्तितावत्फलंप्रयच्छंति । तथाचस्वल्पजात-  
के ॥ दशमतृतीयेनवमपंचमेचतुर्थाष्टमेकलत्रंच । पश्यंतिपादवृद्ध्याफलानिचैवंप्रय-  
च्छंति । अर्थादेवग्रहोक्तस्थानानि नपश्यतीति । तथाचसारावल्यां सव्यंपश्यंतिसदा  
ग्रहान्यहाश्चरणवृद्धितः सर्वे । त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमगताः क्रमेणैव । पूर्णंपश्यति  
रविजस्तृतीयदशमेत्रिकोणमपिजीवः । चतुरस्रंभूमिसुतः सितार्कबुधहिमकराः क-  
लत्रंच ॥ तथाचयवनेश्वरः । द्वौपश्चिमौषष्ठमथद्वितीयंसंस्थानराशेः परिहृत्यराशीन् ।  
शेषान्यहः पश्यति सर्वकालमिष्टेषुचैपांविहितादृगिष्टा ॥ जामित्रभेददृष्टिफलंसम-



ग्रंस्वपादहीनंचतुरस्रयोश्च । त्रिकोणयोर्दृष्टिफलार्धमाहुर्दुश्चिक्वसंज्ञेदशमेच  
पादम् ॥ रविजामरेज्यरुधिराइति । किलेत्यागमसूचने । चरणाभिवृद्धितइत्यनु-  
वर्तते । एतेरविजादयश्चरणाभिवृद्धितः पादोपचयाद्वीक्षणेदर्शनेकमशोधिक-  
फलप्रदाभवन्ति । रविजःसौरिःसुदर्शनेपादफलप्रदः अमरेज्योबृहस्पतिरर्धफलप्र-  
दः रुधिरौऽगारकः सपादहीनफलप्रदः अपरेर्कचंद्रबुधशुक्रास्तेवीक्षणेसमग्रफल-  
प्रदाः एतन्नैसर्गिकंग्रहाणांदृष्टिफलंस्थानवशादेतेषांयथास्वंदृष्टिफलमूह्यमेवमेके  
व्याचक्षते।अपरेत्वाहुः।स्थानफलमेतत्।तेनत्रिदशादिस्थानगतान्प्रहराशीन्पश्यंतो  
रविजादयोदर्शनेधिकफलप्रदाभवन्ति । तद्यथा तृतीयदशमस्थान्ग्रहान्राशीन्वा-  
शनैश्चरःपश्यन्नन्येभ्योग्रहेभ्योधिकफलप्रदोभवति परिपूर्णपश्यतीत्यर्थः । एवं  
त्रिकोणस्थाञ्जीवः चतुरस्रगान्भौमः सप्तमस्थानसूर्यचंद्रबुधशुक्राः । एतच्चबहु-  
तराणामाचार्याणामतम् । तथाचभगवान्गार्गिः॥दुश्चिक्वदशगान्सौरिस्त्रिकोण-  
स्थानबृहस्पतिः । चतुर्थाष्टमगान्भौमःशेषाःसप्तमसंस्थितान् । भवन्तिवीक्षणे  
नित्यमुक्ताधिकफलाग्रहाइति ॥ १३ ॥

अयनक्षणवासरतर्वोमासोर्द्धचसमाश्चभास्करात् ॥

कटुकलवणतिक्तमिश्रितामधुराम्लौचकषायइत्यपि ॥१४ ॥

अधुनाग्रहाणांकालनिर्देशरसनिर्देशंचवैतालीयेनाह॥अयनइति । भास्करादा-  
दित्यात्प्रभृत्ययनादिकालनिर्देशः तत्रायननिर्देशोभास्करात्सूर्यात् क्षणोमुहूर्त-  
स्तन्निर्देशश्चंद्रात् वासरोदिवसस्तन्निर्देशोभौमात् ऋतुर्मासद्वयात्मकस्तन्निर्देशो  
बुधात् मासनिर्देशोजीवात् मासार्द्धपक्षस्तन्निर्देशःशुक्रात् समाःसंवत्सरास्त-  
न्निर्देशःसौरात् । प्रयोजनम् प्रश्नलभ्येयस्यग्रहस्यनवांशकोदयःसग्रहस्तस्मान्नवांश-  
काद्यावत्संख्येनवांशकेभवतितावत्संख्योऽयनादिकोग्रहोपलक्षितकालशुभाशुभ-  
फलपक्तौवाच्यः । अन्येत्वेवंव्याचक्षते । लभ्येयावत्संख्योनवांशकउदितस्तावत्सं-  
ख्योऽयनादिकालोऽंशकपतिवशाद्वक्तव्यः । तथाचमणित्थः लभ्रांशकपतितुल्यः  
कालोलग्रोदितांशसमसंख्यः । वक्तव्योरिषुविजयेगर्भाधानेथकार्यसंयोगे ॥ क-  
टुकलवणेत्यादि । भास्करादादित्यात्कटुकादिरसनिर्देशः तत्रादित्यात्सूर्यात्कटु-  
कस्यरसस्यनिर्देशः कटुकंमरीचादि चंद्रात्लवणस्य भौमात्तिकस्य तिक्तंलि-  
वादि । बुधान्मिश्रस्यषड्रसस्य जीवान्मधुरस्यमिष्टस्य शुक्रादम्लस्य सौरा-  
त्कषायस्य । प्रयोजनम् आधानकालेयोबलवांस्तदुत्तरसदोहदोगर्भिण्याभवति ।  
तथाचसारावल्याम् । मासितृतीयेस्त्रीणांदोहदकोजायतेवश्यम् । सरसाधिपस्य  
भावैर्विलग्नयोगादिभिश्चित्यः ॥ भोजनाश्रयेचप्रश्नेग्रहोदयेतन्नवांशकोदयेवातदु-  
त्तरसान्वितभोजनज्ञानमिति ॥ १४ ॥

जीवोजीवबुधौसितेन्दुतनयौव्यर्काविभौमाः क्रमाद्विद्वर्काविकु-  
जेंद्रिनाश्चसुहृदः केषांचिदेवमतम् ॥ सत्योक्तेसुहृदस्त्रिकोणभव-  
नात्स्वात्स्वांत्यधीधर्मपाः स्वोच्चायुः सुखपाः स्वलक्षणविधेर्ना-  
न्यैर्विरोधादिति ॥ १५ ॥

अधुना मित्रा मित्रविधिं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ जीव इति । सूर्यादीनां ग्रहाणां क्रमा-  
जीवादयः सुहृदः तत्रादित्यस्य सूर्यस्य जीवो बृहस्पतिः सुहृन्मित्रं जीवबुधौ गुरु-  
सौम्यौ चंद्रस्य सितः शुक्रः इन्दुतनयो बुधः एतौ भौमस्य विगतोर्कः सूर्यो येभ्यो ग्रहे-  
भ्यस्ते सूर्यवर्जिताः सर्व एव बुधस्य विकुजा विगतो गारको येभ्यस्ते भौमराहिताः  
सर्व एव बृहस्पतेः वीं द्वर्का विगतौ चंद्रा कौं येभ्यस्ते सर्व एव शुक्रस्य विकुजेंद्रिनाः कु-  
जो भौम इन्दुश्चंद्रः इनः सूर्यः एते विकुजेंद्रिनाः सर्व एव सौरस्य शनैश्चरस्य । एवं केषां-  
चिन्मतं न वद्वनाम् । अत्र च तेषां शत्रुमित्रव्यवहार एवेष्टो नो दासीनव्यवहारस्तस्मा-  
न्मित्रेभ्यो न्येह्यमित्राणीतिकेचिद्यवनेश्वरादयः । तथा च यवनेश्वरः ॥ रवेर्गुरुमित्रम-  
तो न्यथान्ये गुरोस्तु भौमं परिहृत्य सर्वे । चांद्रेरनर्का भृगुनंदनस्य त्वर्केन्दुवर्जसुहृदः  
प्रदिष्टाः ॥ १ ॥ भौमस्य शुक्रश्च शिशिजश्च मित्रे इन्दोर्बुधं देवगुरुंच विद्यात् । सौरस्य  
मित्राण्यकुजेंदुसूर्याः शेषान् रिपून् विद्वि नृणां च तद्वत् ॥ २ ॥ सत्योक्त इति । सत्यो-  
क्ते होराशास्त्रे स्वत्रिकोणभवनादात्मीयमूलत्रिकोणराशेः स्वांत्यधीधर्मपाः स्वो-  
च्चायुः सुखपाश्च ते ग्रहस्य सुहृदो भवन्ति । तत्र त्रिकोणं मूलत्रिकोणं तस्मात्स्वपो द्विती-  
यराश्यधिपः तस्मादेवांत्यपोद्वादशस्थानाधिपः धीस्थानपः धीस्थानस्य पंच-  
मस्याधिपः धर्मपो नवमाधिपः स्वोच्चपो ग्रहोक्तस्योच्चस्य स्वामी आयुषोष्टम-  
स्थानस्याधिपतिः । सुखपश्चतुर्थस्थानाधिपतिः ग्रहो मित्रं भवति स्वलक्षणविधे-  
र्विरोधादन्यैरपठितस्थानाधिपतिभिर्ग्रहैः सह नायं मित्रा मित्रविभागः कल्पनीयः ।  
विरोधादसुहृद्वंस्वंच तल्लक्षणं स्वलक्षणं स्वलक्षणे विधिः स्वलक्षणविधिः तेन विरोध-  
स्तस्मात् । एतदुक्तं भवति । योयं स्वविधिर्मित्रलक्षणविभागः प्रदर्शितः अतो न्यस्था-  
नाधिपा ये ग्रहास्ते ग्रहस्य सुहृदो न भवन्ति । तथा च सत्यः ॥ सुहृदस्त्रिकोणभवनाद्ग्रहस्य  
सुतमेव्ययेथ धनं भवने । स्वजने निधने धर्मे स्वोच्चे च भवन्ति नो शेषाः । स्वजनसंज्ञं  
चतुर्थस्थानं ततो द्विराश्यधिपो मित्रसंज्ञः एकराश्यधिपो मध्यमः अनुत्तराश्य-  
धिपः शत्रुः । वक्ष्यति च द्व्येकानुक्तभपान्सुहृत्समरिपून्संचित्य नैसर्गिकानिति ।  
एकराश्यधिपो मध्यम इति यदुक्तं तथा चंद्रार्कावेकराश्यधिपावपि मित्रसंज्ञौ भवतः  
तयोर्हि राशिद्वयस्याधिपत्याभावात् राशिद्वयस्य योऽधिपतिर्ग्रहः स एवोच्चराश्य-  
धिपत्वात् त्रिभपत्वं प्राप्नोति तथापि द्विभप एव ज्ञातव्यः तस्य स्वराशिर्व्यतिरेकात्



एतन्मन्दबुद्धिव्युत्पादनार्थं स्पष्टतरं व्याख्यायते । तद्यथा आदित्यस्यासिंहस्त्रिकोणं तस्माद्वादशस्थानस्य कर्कटस्य चंद्रमा अधिपतिः । स एकराश्यधिपोऽपि सन् द्वितीयराशेराधिपत्याभावादादित्यस्य मित्रम् । सिंहाच्चतुर्थो वृश्चिकः नवमो मेषः तयोर्भौमोऽधिपतिः । आदित्यस्योच्चं मेषः तस्याधिपो भौमः । मेषस्यासिंहनवमत्वादादित्यस्य स्वोच्चत्वादेकराशित्वं मेषस्यैकत्वाद्वा वृश्चिकस्य द्वितीयत्वाद्भौमो द्विराश्यधिपो जातः । तेनादित्यस्य मित्रं सिंहात्पंचमाष्टमौ धन्विमीनौ तयोरधिपतिर्जीवः । स चोक्तस्थानद्वयस्याधिपतित्वादादित्यस्य मित्रं सिंहाद्वितीयैकादशौ कन्यामिथुनौ तयोर्बुधः स्वामी । तत्र द्वितीयस्थानस्योक्तत्वादेकादशस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाद्बुधो रवेर्मध्यमः । सिंहात्षष्ठसप्तमस्थाने मकरकुंभौ नोक्तौ तयोरधिपत्यादादित्यस्य शनैश्चरः शत्रुः । सिंहाद्दशमचतुर्थे वृषतु ३ तयोरनुक्तयोः स्थानयोराधिपत्याच्छुक्रादित्यस्य शत्रुः । एवं रवेः । अथ चंद्रस्य यथा चंद्रस्य वृषस्त्रिकोणं तस्माच्चतुर्थस्थानं सिंहस्तस्याधिपः । सूर्यः । स एकराश्यधिपो द्वितीयराशेराधिपत्याभावाच्चंद्रस्य मित्रं । वृषाद्वितीयो मिथुनः पंचमः कन्या तयोर्बुधोऽधिपतिः । स चोक्तस्थानद्वयस्याधिपत्याच्चंद्रस्य मित्रं । वृषात्सप्तमद्वादशौ वृश्चिकमेषौ तयोर्भौमः स्वामी । तत्रैकादशस्योक्तत्वात्सप्तमस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाद्भौमश्चंद्रस्य मध्यमः । वृषादष्टमैकादशौ धन्विमीनौ तयोर्बुधः स्वामी । तत्रैकादशस्योक्तत्वात् अष्टमस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाज्जीवश्चंद्रस्य मध्यस्थः । चंद्रस्य वृष उच्चः । वृषात्षष्ठस्तुला तयोः शुक्रोऽधिपतिस्तत्र वृषस्योच्चत्वेनोक्तत्वात्षष्ठस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाच्चंद्रस्य शुक्रो मध्यस्थः । वृषान्नवमदशमौ मकरकुंभौ तयोः स्वामी शनिः । तत्र नवमस्योक्तत्वाद्दशमस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात्सौरः चंद्रस्य मध्यस्थः । एवं चंद्रस्य । अथ भौमस्य तद्यथा भौमस्य मेषस्त्रिकोणं मेषाच्चतुर्थस्थानस्य कर्कटस्याधिपश्चंद्रः । स एकराश्यधिपोऽपि सन् द्वितीयराशेराधिपत्याभावाद्भौमस्य मित्रम् । मेषात्पंचमस्य सिंहस्याधिपः सूर्यः । स एकराश्यधिपोऽपि सन् द्वितीयराशेराधिपत्याभावाद्भौमस्य मित्रम् ॥ मेषान्नवमद्वादशौ धन्विमीनौ तयोर्जीवोऽधिपतिः । स चोक्तस्थानद्वयस्याधिपत्याद्भौमस्य मित्रम् ॥ मेषात्तृतीयषष्ठौ मिथुनकन्येनोक्ते । तयोर्बुधस्याधिपत्याद्भौमस्य बुधः शत्रुः । मेषाद्वितीयसप्तमौ वृषतुले तयोः शुक्रः स्वामी । तत्र द्वितीयस्योक्तत्वात्सप्तमस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाच्छुक्रो भौमस्य मध्यमः । मेषाद्दशमैकादशौ मकरकुंभौ तयोः सौरोऽधिपतिः । भौमस्य मकर उच्चः । तस्योक्तत्वादेकादशस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात्सौरो भौमस्य मध्यमः । एवं भौमस्य । अथ बुधस्य कन्यामूलत्रिकोणं तस्माद्वादशस्थानस्य सिंहस्याधिपतिः सूर्यः । स एकराश्यधिपोऽपि सन् द्वितीयराशेराधिपत्याभावाद्बुधस्य मित्रम् । क-

न्यायाः द्वितीयनवमौतुलवृषौतयोः शुक्रोधिपतिः सचोक्तस्थानद्वयस्याधि-  
पत्वाद्बुधस्यमित्रम् ॥ कन्याया एकादशस्थानस्यकर्कटस्याधिपतिश्चंद्रः त-  
स्यानुक्तत्वाद्बुधस्यशत्रुः । कन्यायाः तृतीयाष्टमौ वृश्चिकमेपौतयोर्भौमो-  
धिपतिः तत्राष्टमस्योक्तत्वात्तृतीयस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात् भौमोबु-  
धस्यमध्यमः । कन्यायाश्चतुर्थसप्तमौधन्विमीनौतयोर्जीवोधिपतिस्तत्र च-  
तुर्थस्योक्तत्वात्सप्तमस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वाज्जीवोबुधस्यमध्यमः । क-  
न्यायाः पंचमषष्ठौ मकरकुंभौतयोः सौरोधिपतिस्तत्रपंचमस्योक्तत्वात्षष्ठ-  
स्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात्सौरोबुधस्यमध्यमः एवंबुधस्य । अथगुरोः  
जीवस्यधन्वीत्रिकोणंतस्मादष्टमस्थानस्यकर्कटस्याधिपतिश्चंद्रः सएकराश्यधिपो  
पिसन्द्वितीयराशेराधिपत्याभावाज्जीवस्यमित्रं धनुषोनवमस्यसिंहस्याधिपतिः  
सूर्यः सएकराश्यधिपोपिसन्दितीयस्यराशेराधिपत्याभावाज्जीवस्यमित्रम् ॥  
धनुषः पंचमद्वादशौमेषवृश्चिकौतयोर्भौमोधिपतिः सचोक्तस्थानस्याधिपत्याज्जी-  
वस्यमित्रं धनुषोद्वितीयतृतीयौमकरकुंभौतयोःसौरोधिपतिस्तत्रद्वितीयस्यो-  
क्तत्वात्तृतीयस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात्सौरोजीवस्यमध्यस्थः । धनु-  
षःसप्तमदशमेमिथुनकन्येतयोर्बुधोधिपतिः सचानुक्तस्थानद्वयस्याधिपति-  
त्वाद्गुरोःशत्रुः । धनुषःषष्ठैकादशस्थानेवृषतुलैतयोःशुक्रोधिपतिःस्थान-  
द्वयस्यानुक्तत्वाच्छुक्रोगुरोःशत्रुः एवंजीवस्य । अथशुक्रस्य शुक्रस्यतुला  
त्रिकोणंतुलायाःनवमद्वादशस्थानेमिथुनकन्येतयोर्बुधोधिपतिः सचोक्तस्थान-  
द्वयस्याधिपतित्वाच्छुक्रस्यमित्रं तुलायाश्चतुर्थपंचमौमकरकुंभौतयोरधिप-  
तिःसौरः सचोक्तस्थानद्वयस्याधिपत्वाच्छुक्रस्यमित्रं तुलायाद्वितीयसप्तमौवृ-  
श्चिकमेपौतयोर्भौमोधिपतिः तत्रद्वितीयस्योक्तत्वात्सप्तमस्यानुक्तत्वात्पठितै-  
कराश्यधिपत्वाद्भौमःशुक्रस्यमध्यस्थःशुक्रस्यमीनउच्चं तुलायास्तृतीयषष्ठौधन्वि-  
मीनौतयोर्जीवोधिपतिः तत्रमीनस्योच्चादुक्तत्वाद्दन्विनोऽनुक्तत्वात्पठितैकरा-  
श्यधिपत्वाज्जीवःशुक्रस्यमध्यस्थः । तुलादेकादशःसिंहस्तस्याधिपःसूर्यःसएक-  
राश्यधिपोपिसन्द्वितीयराशेराधिपत्याभावाच्छुक्रस्यार्कःशत्रुः । तुलाकर्कट-  
स्यदशमस्थानस्याधिपश्चंद्रः सएकराश्यधिपोपिद्वितीयराश्याधिपत्याभावाच्छु-  
क्रस्यचंद्रःशत्रुः एवंशुक्रस्य । अथसौरस्य सौरस्य कुंभस्त्रिकोणं कुभात्पंचमाष्टमे  
मिथुनकन्येतयोर्बुधोधिपतिः सचोक्तस्थानद्वयस्याधिपतित्वात्सौरस्यमित्रं सौ-  
रस्योच्चस्तुला । कुंभाच्चतुर्थनवमौवृषतुलौतयोरधिपतिःशुक्रःसचोक्तस्थानद्वय-  
स्याधिपतित्वात्सौरस्यमित्रं । कुंभाद्वितीयैकादशौधन्विमीनौतयोर्जीवोधिपतिः  
तत्रद्वितीयस्योक्तत्वादेकादशस्यानुक्तत्वात्पठितैकराश्यधिपत्वात्सौरस्यजीवो  
मध्यस्थः । कुंभात्षष्ठः कर्कटस्तस्याधिपतिश्चंद्रस्तस्यानुक्तत्वात्सौरस्यचंद्रः



शत्रुः । कुंभात्सप्तमः सिंहस्तस्याधिपतिः सूर्यस्तस्यानुक्तत्वात्सौरस्यसूर्यः  
 शत्रुः । कुंभात्तृतीयदशमौमेषवृश्चिकौतयोर्भौमाधिपतिस्तयोरनुक्तत्वाद्भौमः  
 सौरस्यशत्रुरिति ॥ १५ ॥

शत्रूमंदसितौसमश्चशशिजोमित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुहिम-  
 रश्मिजश्चसुहृदौशेषाःसमाःशीतगोः ॥ जीवेंदूष्णकराःकुज-  
 स्यसुहृदोज्ञोरःसितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौबुधस्यहिमगुः  
 शत्रुःसमाश्चापरे॥१६॥ सूरःसौम्यसितावरीरविसुतोमध्योप-  
 रेतवन्यथासौम्यार्कीसुहृदौसमौकुजगुरुशुक्रस्यशेषावरी॥शु-  
 क्रज्ञौसुहृदौसमःसुरगुरुःसौरस्यचान्येरयोयेप्रोक्ताःस्वत्रिको-  
 णभादिषुपुनस्तेमीमयार्कीर्तिताः ॥ १७ ॥

अधुनासत्योक्तानेकद्वयेकानुक्तभपानग्रहस्यसुहन्मध्यस्थशत्रूच्छाईलविक्रीडि-  
 तद्वयेनाह॥शत्रूमंदसिताविति।रवेरादित्यस्यमंदः सौरःसितः शुक्रः एतौद्वौशत्रू-  
 रिपू शशिजोबुधःसमोमध्यस्थः नशत्रुर्नमित्रमुदासीनइत्यर्थः शेषाग्रहाश्चंद्रांगा-  
 रकगुरवोमित्राणीति । तीक्ष्णांशुरित्यादिशीतगोश्चंद्रमसः तीक्ष्णांशुःसूर्यः हिम-  
 रश्मिजोबुधः एतौद्वौसुहृदौमित्रे शेषाःसमाएवभौमजीवशुक्रसौराः समामध्य-  
 स्थाउदासीनाइत्यर्थः । जीवेंदूष्णकराइति । कुजस्यभौमस्यजीवोबृहस्पतिः इंदु-  
 श्चंद्रःउष्णकरःसूर्यःएतेसुहृदोमित्राणि ज्ञोबुधः अरिःशत्रुः सितार्कीशुक्रसौरौ  
 समौमध्यस्थाविति । मित्रेसूर्यसिताविति।सूर्योऽरविःसितः शुक्रः एतौद्वौबुधस्य  
 मित्रेसुहृदौ । हिमगुश्चंद्रमाः शत्रुररिः अपरेऽन्येभौमगुरुसौराः समामध्यस्था  
 इति।सूरैरित्यादि । सूरैर्बृहस्पतेः सौम्योबुधः सितःशुक्रः एतावरीशत्रू रविसुतः  
 सौरोमध्यस्थः अपरेअन्येरविचंद्रभौमाः अन्यथामित्राणीत्यर्थः।सौम्यार्कीत्यादि।  
 शुक्रस्यसौम्यार्कीबुधसौरौसुहृदौमित्रे कुजोभौमः गुरुर्जीवः एतौद्वौसमौमध्य-  
 स्थौ शेषावादित्यचंद्रावरीशत्रू।शुक्रज्ञावित्यादि । सौरस्यशनेःशुक्रज्ञौसितबुधौसु-  
 हृदौमित्रे सुरगुरुर्जीवःसमोमध्यस्थः अन्येऽपरेरविशशिभौमाःअरयःशत्रवः ।  
 येप्रोक्ताइत्यादि । येमयास्वत्रिकोणभादिषुपूर्वांत्रिकोणभवनात्स्वात्स्वांत्यधीधर्म-  
 पाइत्यादिनाग्रंथेनोक्तास्तएवेहप्रविभज्यपुनर्भूयः कीर्तिताः उदाहरणत्वेनप्रद-  
 शिताइति ॥ १६ ॥ १७ ॥

अन्योन्यस्य धनव्ययाय सहजव्यापारबन्धुस्थितास्तत्कालं सु-  
हृदः स्वतुंगभवनेऽप्येके रयस्त्वन्यथा ॥ द्व्येकानुक्तभपान्सुहृत्स-  
मरिपून्संचित्य नैसर्गिकांस्तत्काले च पुनस्तुतानधि सुहृन्मि-  
त्रादिभिः कल्पयेत् ॥ १८ ॥

एवं नैसर्गिकं मित्रमित्रमध्यस्थविभागमुक्त्वा धुना तात्कालिकं मित्रमित्रविभा-  
गं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ अन्योन्यस्येति । अन्योन्यस्य परस्परमेतेषु धनादिपुस्था-  
नेषु ग्रहस्य ग्रहाव्यवस्थितास्तत्काले जन्मनियात्रायां विवाहे प्रभेवा तत्समये सुहृदो  
मित्राणि भवन्ति । धनस्थानं द्वितीयं व्ययस्थानं द्वादशम् आयस्थानं एकादशं  
सहजस्थानं तृतीयं व्यापारस्थानं कर्माख्यं दशमम् बन्धुस्थानं चतुर्थम् एते-  
षु स्थानेषु यो ग्रहः स्थितः स यस्माद्ग्रहाद्व्यवस्थितस्तस्य सुहृन्मित्रं भवति स च त-  
स्यापि यत उक्तमन्योन्यस्येति स्वतुंगभवनेऽप्येक इति एकेऽन्ये पुनराचार्याः ग्रह-  
स्य यस्योच्चे यो ग्रहः स्थितः स तस्य स्वोच्चे स्थितं तत्कालं मित्रमिच्छन्ति ते च यवने श्वरा-  
दयः तथा च तद्वाक्यं । मूलत्रिकोणाद्ग्रहं धर्मबन्धुपुत्रव्यवस्थानगताग्रहं द्वाः । तत्काल-  
मेतेषु हृदो भवन्ति स्वोच्चे च यो यस्य विकृष्टवीर्य इति ॥ एतदप्याचार्यस्य नाभिप्रेतं य-  
स्मादनेनैव स्वल्पजातके उक्तं तत्काले च दशाय बन्धुसहजस्वांत्येषु मित्रं स्थिता इति ।  
अरयस्त्वन्यथेति । अन्यथा अन्येन प्रकारेण ग्रहस्य ग्रहाव्यवस्थितास्तत्कालेऽरयः  
शत्रवो भवन्ति । अन्योन्यमिति । तद्यथा एकराशिगतः पंचमषष्ठसप्तमाष्टमनवमस्था-  
नस्थश्च तत्कालं शत्रुर्ग्रहस्य ग्रहो भवति । द्व्येकानुक्तभपानिति । पूर्वमेव दर्शितं द्विती-  
यभपानेकभपाननुक्तभपांश्च मित्रमध्यस्थशत्रून् नैसर्गिकान् शत्रून् मंदसितावित्यादि-  
ना ग्रंथेनोक्तान्संचित्य विज्ञाय तत्काले जन्मादौ तानेवाधि सुहृन्मित्रादिभिरुपलक्षि-  
तान् कल्पयेत् । तत्र धनादीनि मित्रस्थानानि ते पुनैसर्गिकसुहृत्स्थितो धि मित्रं भवति ।  
मध्यस्थो मित्रम् । शत्रुर्मध्यस्थ इति । धनादि वर्जितेष्वन्येषु स्थितो निसर्गसुहृन्मध्य-  
स्थो भवति मध्यस्थः शत्रुः शत्रुरधिशत्रुरिति अमुना ग्रहाणां चतुर्विधं बलं भ-  
वति स्थानदिक्चेष्टाकालबलाख्यम् ॥ १८ ॥

स्वोच्चसुहृत्स्वत्रिकोणनवांशैः स्थानबलं स्वगृहोपगतैश्च ॥

दिक्षु बुधांगिरसौरविभौ मौसूर्यसुतः सितशीतकरौ च ॥ १९ ॥

तत्र तावत्स्थानदिग्बलं दोषकेनाह ॥ स्वोच्चसुहृदिति । स्वग्रहणं प्रत्येकमभिसं-  
ध्यते । तत्र स्वोच्चे स्थितो ग्रहो बलवान् भवति । तात्कालिकस्य सुहृदो मित्रस्य स्ने-  
त्रे स्थितो बलवानेव । स्वत्रिकोणे आत्मीये मूलत्रिकोणे स्थितः स्वनवांशे स्थितः  
स्वगृहे स्वराशावुपगतः प्राप्तो बलवानेव । एतेषामन्यतमे व्यवस्थितो ग्रहः स्थान-



बलयुक्तो भवति अत्रार्कस्यसिंहस्रिकोणं तदेवस्वगृहं चंद्रस्यवृषउच्चःसएव  
त्रिकोणम् । भौमस्यमेषस्रिकोणंतदेवस्वक्षेत्रम् । बुधस्यकन्याउच्चः सैवमूल-  
त्रिकोणंस्वक्षेत्रं च । गुरोर्धन्वीत्रिकोणंतदेवस्वक्षेत्रम् । शुक्रस्यतुलात्रिकोणंतदे-  
वस्वक्षेत्रम् एतेषामाचार्येणविशेषोक्तः।अस्माभिरन्यहोराशास्त्रादानीयशिष्य-  
हितायेहलिख्यते। तथाचसारावल्यांविंशतिरंशाःसिंहत्रिकोणमपरेस्वभवनमर्क-  
स्य । उच्चंभागतृतीयंवृषइंदोःस्यात्रिकोणमपरेशाः ॥ द्वादशभागामेषेत्रिकोण-  
मपरेस्वभंतुभौमस्य । उच्चफलंकन्यायांबुधस्यतिथ्यंशकैःसदाचिंत्यम् ॥ परत-



त्रिकोणजातंपंचभिरंशैःस्वराशिजंपरतः । दशभिर्भागै-  
र्जाविस्यत्रिकोणफलंस्वभंपरंचापे । शुक्रस्यतुत्रयोशास्त्रि-  
कोणमपरेधटेस्वराशिश्च । कुंभेत्रिकोणनिजभरविजस्यरवे-  
र्यथासिंहे ॥ एतदार्याचतुष्टयंसुबोधम् । दिक्षुबुधांगिरसा-  
वित्यादि प्राच्याद्यासुचतसृषुदिक्षुक्रमाद्बुधादयोबलिनो  
भवन्ति तत्रपूर्वस्यांबुधांगिरसौज्ञजीवौबलिनौभवतः ।

लग्नस्थावित्यर्थः । दक्षिणस्यांरविभौमौसूर्यांगारकौदशमस्थावित्यर्थः । पश्चिमा-  
यांसूर्यसुतःशनिः सप्तमस्थइत्यर्थः । उत्तरस्यांसितशीतकरौशुक्रचंद्रौ चतुर्थस्था-  
वित्यर्थः।योग्रहोयत्रबलीसतस्मात्सप्तमस्थानस्थोविवलोभवति मध्येनुपाततऊह्य-  
मितिसर्वत्रयंपरिभाषा। ग्रहाणामुच्चनीचविभागेराशीनांदिग्बलप्रविभागेपि।तथा  
चयवनेद्वरः गुर्विंदुजौपूर्वबिलग्रसंस्थौनभस्थलस्थौचदिवाकरारौ । सौरोस्तगः  
शुक्रनिशाकरौतुजलेस्थितावध्यबलौभवेतामिति । अध्यबलग्रहणादंतरेनुपात  
एवयुक्तः एतद्ग्रहाणांदिग्बलम् ॥ १९ ॥

उदगयनेरविशीतमयूखौवक्रसमागमगाःपरिशेषाः ॥

विपुलकरायुधिचोत्तरसंस्थाश्चेष्टितवीर्ययुताःपरिकल्प्याः ॥२०॥

अधुनाचेष्टावलंदोधकेनाह॥उदगयनेइति। मकरादिराशिषट्कमुत्तरमयनं कर्क-  
टादिराशिषट्कंदक्षिणमयनमिति उदगयनेउत्तरायणेरविशीतमयूखौसूर्याचंद्रमसौ  
बलिनौभवतः। परिशेषाः भौमबुधगुरुसितसौराः वक्रगाविपरीतगतयोबलिनो  
भवन्ति।तथा समागमगाश्चंद्रेणसहितावलिनएव चंद्रेणसहसंयोगोग्रहाणांसमाग-  
मशब्दवाच्यः।राविणासहास्तमयोभौमादीनांपरस्परंयुद्धं।उक्तंवाचार्यविष्णुचंद्रे-  
णादिवसकरेणास्तमयःसमागमःशीतरश्मिसहितानां ।कुसुतादीनांयुद्धंनिगद्यते-  
न्योन्ययुक्तानामिति।विपुलकराइति।विपुलाःकरायेषांतेविपुलकराः विस्तीर्णरश्म  
योबलिनोभवन्ति।शीघ्रकेंद्राद्वितीयपदस्थग्रहस्यविपुलकरत्वंप्रायः संभवति।वक्रास  
न्नत्वात्।युधिसंग्रामेचोत्तरसंस्थावलिनएव कुसुतादीनांयुद्धमित्युक्तं तत्रयःउत्तरादि

गभागस्थितः सजयीबलक्षवान् उत्तरसंस्थत्वमत्रोपलणार्थं यस्तेजयी स एव बलवान्  
तत्रैतज्जयिलक्षणं दक्षिणादिकस्थः पुरुषोवपथुरप्राप्य सन्निवृत्तोऽणुः । अधिरूढो वि-  
कृतो निष्प्रभो विवर्णश्च यः सजितः ॥ उक्तविपरीतलक्षणसंपन्नो जयगतो विनिर्दिष्टः ।  
विपुलः सिग्धो द्युतिमान् दक्षिणादिकस्थोऽपि जययुक्त इति एतच्छुक्रस्य प्रायः संभव-  
ति यस्मात्पुलिशाचार्यः सर्वे जयिन उदक्स्थादक्षिणादिकस्थो जयी शुक्र इति एत-  
च्चेष्टावलम् । एषामन्यतमेन संयुक्तश्चेष्टावल युक्तो भवति ॥ २० ॥

निशि शशिकुजसौराः सर्वदा ज्ञोहि चान्ये बहुलसितगताः स्युः  
क्रूरसौम्याः क्रमेण ॥ व्ययनदिवसहोरामासपैः कालवीर्यशरुबुगु-  
शुचसाद्यावृद्धितो वीर्यवंतः ॥ २१ ॥

अधुना ग्रहाणां कालबलं नैसर्गिकबलं च मालिन्याह ॥ निशीति । शशिकुजसौराश्च-  
द्रभौमशनयः निशिरात्रो वीर्यवंतो बलिनः । ज्ञोबुधः सर्वदा सर्वस्मिन्काले निशि  
दिने च बली । अन्येऽपरे रविगुरुसिता अन्हिदिने बलिनः । क्रूराः पापाः प्रागुक्ता ब-  
हुलपक्षे कृष्णपक्षे बलिनः । सौम्याः शुभग्रहाः सितगताः शुक्लपक्षे बलिनः । कृष्णपक्षे  
चंद्रमा अपि क्रूरो बलवान् भवति । यस्माद्यवनेश्वरः ॥ मासे तु शुक्ले प्रातिपत्यवृत्तेः पूर्वैश्च-  
शीमध्यवलोदशाहे । श्रेष्ठो द्वितीयेऽल्पबलस्तृतीये सौम्यैस्तु दृष्टो बलवान्सदैवेति ।  
व्ययनेति । व्ययनं प्रमाणं यस्य तत् व्ययनं वर्षं स्ववर्षं आत्मीयवर्षं यो ग्रहो यत्र वर्षं धि-  
पतिः स तत्र बलवान् । स्वदिवसे आत्मीयवासरे स्वहोरायां कालहोरायां तथा  
स्वमासे यस्मिन्मासे योऽधिपतिः स तत्र बली व्ययनदिवसहोरामासानां ये धिपत-  
यस्तैर्ग्रहैः कालबलमुपलक्षणीयं ते कालबलोपेता इत्यर्थः । केचिद्व्ययनदिवसहो-  
रामासपैरिति पठन्ति । अन्ये स्वदिवससमहोरामासगैरिति पठन्ति । एषसापराधः पा-  
ठः । एतेषु कालेषु सर्वे एव बलिनो भवन्ति एतत्ग्रहाणां कालवीर्यमेषामन्यतमेन संयुक्तः  
कालबलसंपन्नो भवति । शरुबुगुशुचसाद्या इति । शादयो वर्णाः येषां शकाराद्यस्ते  
शाद्याः । शकाराद्यः शनैश्चरः सर्वेभ्यो बलहीनः । रुकाराद्योरुधिरौ भौमः शनै-  
श्चरात् बलवान् । बुकाराद्यो बुधः स भौमाद्बलवान् गुकाराद्यो गुरुः स बुधाद्बली  
शुकाराद्यः शुक्रः स जीवाद्बली । चकाराद्यश्चंद्रः स शुक्राद्बली स काराद्यः स विता  
स चंद्राद्बलीति । एतद्ग्रहाणां नैसर्गिकबलम् । यस्मादनेनैव स्वल्पजातके उक्तं  
मंदारसौम्यवाक्पतिसितचंद्राकार्यथोत्तरं बलिनः । नैसर्गिकबलमेतद्बलसाम्ये-  
स्मादधिकंचितेति । यत्र ग्रहाणां ग्रहयोर्बाबलसाम्यम् । तत्रास्माद्बला-  
धिक्यमधिवीर्यता ज्ञेयेति । अत्राचार्येण चतुःप्रकारस्य ग्रहाणां बलस्य फलं नोक्तं तच्चा-  
स्माभिः शिष्यहितहेतवेऽवशास्त्राल्लिख्यते । तथा च सारावल्याम् ॥ उच्चबलेन समेतः



परांविभूतिग्रहःप्रसाधयति।स्वत्रिकोणबलःपुंसांसाचिव्यंबलपतित्वंच ॥ स्वर्क्षब-  
लेनचसहितःप्रमुदितधनधान्यसंपदाक्रांतम् । मित्रभवलसंयुक्तोजनयतिकीर्त्या-  
न्वितंपुरुषम् । तेजस्विनमतिसुखिनंसुस्थिरविभवंतृपाञ्चलब्धधनम् । स्वनवां-  
शकबलयुक्तःकरोतिपुरुषंप्रसिद्धंच सूक्ष्मजातकेउक्तम्।बलवान्मित्रस्वगृहोच्चनवां-  
शेष्वीक्षितःशुभैश्चापि । चंद्रसितौस्त्रीक्षेत्रेपुरुषक्षेत्रोपगाःशेषादिति । तत्रशुभदृ-  
ष्टस्यफलंतावत् शुभदर्शनबलसहितःपुरुषंकुर्याद्वनान्वितंख्यातम् । सुभगंप्रधान-  
मखिलंसुरूपदेहंचसौम्यंच ॥ पुंस्त्रीभवनबलेनचकरोतिजनपूजितंकलाकुशलम्॥  
पुरुषंप्रसन्नचित्तंकल्पंपरलोकभीरुंच ॥ आशाबलसमवेतोनयतिस्वादिशंरहेश्वरःपु-  
रुषम्।नीत्वावस्त्रविभूषणवाहनसौख्यान्वितंकुरुते।कचिद्राज्यंकचित्पूजांकचिद्द-  
व्यंकचिद्यशः ॥ ददातिविहगाश्चित्रंचेष्टावीर्यसमन्वितः।वक्रिणस्तुमहावीर्याः शु-  
भाराज्यप्रदाग्रहाः॥ पापाव्यसनदाः पुंसांकुर्वीतचवृथाटनम्।स्वस्थःशरीरसमाग-  
मसुखमाहवजयबलेनविदधाति॥शुभमतुलंविहगेंद्रोराज्यंचविनिर्जितारातिम्॥  
रात्रिदिवाबलपूर्णैर्भूजलाभेनशौर्यंपारिवृद्ध्या ॥ मलिनयतेत्रैपक्षंभुनक्तियोनरः  
प्रकटः । द्विगुणंद्विगुणंदद्युर्वर्षाधिपमासादिवसहोरेशाः ॥ कुर्युर्वृद्ध्यासौख्यंस्वद-  
शासुधनंचकीर्तंच । पक्षबलाद्रिपुनाशंरत्नांचरहस्ति संपदंदद्युः ॥ स्त्रीकनकभूमि-  
लाभंकीर्तंचशशांककरधवलाम् । सकलबलभारभरितानिर्मलकरजालभासुराः  
सततम्।राज्यंग्रहाविदद्युः सौख्यंचमनोरथातीतम् ।आचारसौख्यशुभशौचयुताः  
सुरूपास्तेजस्विनः कृतविदोद्विजदेवभक्ताः । सद्ब्रह्माल्यजनभूषणसंप्रियाश्च  
सौम्यैर्ग्रहैर्बलयुतैःपुरुषाभवन्ति ॥ लुब्धाः कुकर्मनिरतानिजकार्यानिष्ठाः पापा-  
न्विताःसकलहाश्चतमोभिभूताः । क्रूराः शठावधरतामलिनाः कृतघ्नाः पाप-  
ग्रहैर्बलयुतैः पुरुषाभवन्ति॥पुंराशिपुंग्रहेंद्रोराः संग्रामकांक्षिणोबलिनः । निःस्नेहाः  
सुकठोराःक्रूरामूर्खाश्चजायन्ते ॥ युवतिभवनस्थितेषुचमृदवःसंग्रामभीरवःपुरुषाः ।  
जलकुसुमवस्त्रनिरताः सौम्याःकलहाससंयुक्तादिति॥एतत्सर्वसुगमम् ॥ २१ ॥

इतिभटोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौग्रहयोनिभेदाध्यायोद्वितीयः ॥ २ ॥

**क्रूरग्रहैःसुबलिभिर्विवलैश्चसौम्यैःकृत्वेचतुष्टयगतेतद्वेक्षणाद्वा ॥**

**चंद्रोपगद्विरसभागसमानरूपंसत्वंवदेद्यादिभवेत्सवियोनिसंज्ञः॥१॥**

अथातोवियोनिजन्माध्यायोव्याख्यायते । कःपुनरर्थोवियोनिजन्मेत्युच्यते ।  
विविधवियोनिजन्मनातिर्यक्पक्षिस्थावरादीनामुत्पत्तिर्वियोनिजन्मेत्युच्यते । त-  
त्रप्रष्टुःसकाशाज्जातककालंप्रश्नकालंवाविज्ञाय वियोनिजन्मनिश्चयज्ञानंभवति  
तत्तुवसंतातिलकेनाह ॥ क्रूरग्रहैः सुबलिभिरिति । चंद्रोपगद्विरसभागसमानरूप-  
पमिति । चंद्रमाउपगतोव्यवस्थितोयस्मिन्द्विरसभागेद्वादशभागेतत्समानरूपं

तत्सदृशरूपं सत्त्वं प्राणिनं वियोनिजन्मानं वदेत् सचद्विरसभागो यदिवियोनि संज्ञो भवेत् सचंद्राक्रांतो द्वादशभागो यदिवियोनि संज्ञस्तदैवं वदेन्नान्यथेति । तत्र मेषद्वादशभागे व्यवस्थिते चंद्रमसि मेषाख्यस्य । एवं वृषद्वादशभागे व्यवस्थिते वृषाख्यस्य महिषादेश्च । कर्कटद्वादशभागे व्यवस्थिते कुलीरादेः । सिंहद्वादशभागे व्यवस्थिते सिंहद्वीपि मृगालमार्जारादिसत्वानां जन्म । वृश्चिकद्वादशभागे व्यवस्थिते सर्पकीटादेः । धनुर्धरद्वादशभागे द्वितीयार्धे व्यवस्थितेऽश्वगर्दभादिजन्म । मकरद्वादशभागे पूर्वार्धे व्यवस्थिते मृगजन्म । अपरे मंडूकादेर्जलचरप्राणिन इच्छंति मीने मीनस्यैव । किमेतावतैव वियोनिजन्म निश्चयेनेत्याह ॥ क्रूरग्रहैरित्यादि । क्रूरग्रहैरादित्यांगारकशनैश्चरैर्बुधेन च तदेकतमेन युक्तेन क्षीणेन चंद्रमसा एतैः सुबलिभिः बलयुक्तैः सौम्यैः शुभग्रहैः क्रूरपारिशिष्टैर्विबलैर्वीर्यगहितैः क्लृबेशनैश्चरैर्बुधे वाचतुष्टयगते केंद्रस्थे एको वियोनिजन्मयोगः । तद्वेक्षणाद्वा चंद्रमसि प्रदर्शितवियोनिजन्मद्वादशभागे व्यवस्थिते क्रूरैर्वलयुक्तैः सौम्यैर्हीनविबलैर्ब्रतत्रावस्थितेन बुधेन शनैश्चरेण बालग्रेष्टेष्टे वियोनिजन्मज्ञाने द्वितीयो योगः । अर्थादेव द्विपदद्वादशभागव्यवस्थिते चंद्रमसि पूर्वोक्तयोगाभावे द्विपदजन्म । तथा च सारावल्याम् ॥ क्रूरैः सुबलसमेतैर्विबलैः सौम्यैर्वियोनिभागगते । चंद्रे ज्ञानी केन्द्रे तदीक्षिते चोदये वियोनिः स्यात् ॥ मेषशशीतदंशे छागादिप्रसवमाहुराचार्याः । गोमहिषाणां गोंशे नररूपाणां तृतीयेंशे ॥ तत्र चतुर्थे भागे कूर्मादीनां भवेदुदकजानाम् । व्याघ्रादीनां परतः परतो ज्ञेयं नराणां च ॥ वणिगंशे नररूपा वृश्चिकभगितथा भुजंगाद्याः । खरतुरगाद्यानवमे मृगशिखिनां स्यात्तथा दशमे ॥ ज्ञेयाश्च तत्र विविधा वृक्षास्तृणजातयश्चित्राः । एकादशे च पुरुषा जलजानानां विधाश्चांत्ये ॥ श्वमार्जारमूषकादीनां संख्याज्ञानं श्वप्रभृतीनां प्रसवेयावंतो द्वादशांशकालग्रे तावन्ति वदेत्प्राज्ञः पुंस्त्रीसंज्ञान्यपत्यानि ॥ १ ॥

पापावलिनः स्वभागगाः पारक्ये विबलाश्च शोभनाः ॥

लग्नं च वियोनि संज्ञकं दृष्ट्वा त्रापि वियोनिमादिशेत् ॥ २ ॥

अथ वियोनिजन्मज्ञाने योगांतरं वैतालीयेनाह ॥ पापा इति । चंद्रोपगद्विरसभागसमानरूपमित्यनुवर्तते पापाः क्रूरग्रहाः प्रागुक्तावलिनः सबलाः न केवलं यावत्स्वभागगाः स्वनवांशस्थाः भागग्रहणेन हनवांशक एव ज्ञातव्यः । शोभनाः सौम्यग्रहाः प्रागुक्ताः पारक्ये परनवांशके विबला वीर्यरहिता व्यवस्थिताः लग्नं तात्कालिकं च यदिवियोनि संज्ञकं भवति तदा त्राप्यस्मिन्नपियोगे चंद्रोपगद्विरसभागसमानरूपं सत्त्वं जातमिति वदेत् ॥ २ ॥



क्रियःशिरोवक्रगलोवृषोन्येपादांसकंपृष्ठमुरोथपार्श्वे ॥

कुक्षिस्त्वपानांघ्र्यथमेद्रमुष्कौस्फिकपुच्छमित्याहचतुष्पदांगे ॥३॥

अथवियोनावपिचतुष्पदानांप्राधान्येनोपयोगित्वात्तदंगविभागंराश्यात्मक-  
मुपजातिकयाह ॥ क्रियइति । क्रियोमेषश्चतुष्पदानांक्षिरस्तदुपलक्षितमित्यर्थः । वृ-  
षोवक्रगलोवत्कंमुखंगलःकंबलंवृषः अन्येमिथुनादयोयथाक्रमंपादादि । मि-  
थुनः पादांसकंपादौपूर्वपादावंसौस्कंधौ । पृष्ठंकर्कटःउरोवक्षःसिंहः अथशब्द  
आनंतये । पार्श्वेपार्श्वद्वयंकन्या कुक्षिद्वयंतुला अपानंगुदोवृश्चिकः अंग्रीपश्चि-  
मपादौधन्वी अथशब्दःपादपूरणे मेद्रूःलिङ्गं मुष्कौवृषणौमकरः स्फिकौकुंभः  
पुच्छंलांगूलंमीनः । इतिशब्दःप्रकारे । केचिच्चतुष्पदांगेराशिविभागमाहुः आहे-  
तिब्रुवंत्याचार्याइतिवाक्याध्याहारः । चतुष्पदग्रहणमुपलक्षणार्थं पक्षिणामप्येवं  
तेषांपूर्वपादस्थानेपक्षपालीशेषंसामान्यं प्रयोजनम् । राशियुपलक्षितेंग्रेत्रणोप-  
घातादेर्विज्ञानमिति ॥ ३ ॥

लग्रांशकाद्ग्रहयोगेक्षणाद्वावर्णान्वदेद्वलयुक्ताद्वियोनौ ॥

दृष्ट्यासमानान्प्रवदेत्स्वसंख्ययारेखांवदेत्स्मरसंस्थैश्चपृष्ठे ॥४॥

अथवियोनिवर्णज्ञानंवैश्वदेव्याह ॥लग्रांशकादिति । लग्नेयेनग्रहेणयोगोयस्त-  
त्रव्यवस्थितस्ययोवर्णःप्रागुक्तःवर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरिताइत्याद्याः तद्वर्णवि-  
योनौसत्वजातेवदेत् हतनष्टादौवाइक्षणाद्वेति । अथलग्नेनकश्चिद्ग्रहोभवति तदा  
येनग्रहेणलग्नेमीक्ष्यतेदृश्यतेतस्ययोवर्णस्तंवावदेत् । अथलग्नेनकेनचिद्द्युतंदृष्टंभ-  
वति तदालग्रांशकात् लग्नेयद्राशिनवांशकोदयोभवतितद्राशिर्वर्णरक्तःश्वेतइ-  
त्यादिवावदेत् । दृष्ट्यासमानानिति । अथबहुभिर्ग्रहैर्लग्नयुतंदृष्टंचभवतितदाबहू-  
नेववर्णान्वदेत् तत्रापियोवीर्यवान्सबलस्तद्वर्णबाहुल्यम् । यदुक्तंवल्युक्तादिति ।  
अथस्वस्वामिनायुतदृष्टस्यराशेःसंबन्धिनवांशकोलग्नगतोभवति तदातद्वर्णमेव  
वदेत् तत्रचयोग्रहोवियोनौयस्मिन्नंगेव्यवस्थितस्तत्रात्मीयवर्णकरोति एतत्कुतो ल-  
ब्धं सप्तमस्थानगतैर्ग्रहैर्बलवद्ग्रहवर्णपृष्ठेवियोनौरेखांवदेत् । तथाचसारावल्याम्  
मेषादिभिरुदयस्थैरंशैर्वाग्रहयुतैश्चदृष्टैर्वा । स्वगृहांशकसंयोगाद्विद्याद्वर्णान् परां-  
शकेरूक्षान् ॥सप्तमसंस्थाःकुर्युःपृष्ठेरेखांस्ववर्णसमाम् । वीक्षंतेयावंतोवियोनिवर्णा-  
श्चतावंतः ॥ बलदीप्तोगगनचरःकरोतिवर्णवियोनीनाम् । पीतंकरोतिजीवः  
शशीसितंभार्गवोविचित्रंच ॥रक्तौदिनकररुधिरौरविजःकृष्णंबुधः शबलंस्वेराशौ  
परभागेपरराशौस्वेनवांशकेतिष्ठन् ॥पश्यन्ग्रहोविलग्नस्ववर्णवर्णतदाकुरुते ॥ ४ ॥

खगेदृकाणवलसंयुतेनवाग्रहेणयुक्तेचरभांशकोदये ॥

बुधांशकेवाविहगाःस्थलांबुजाःशनैश्चरेंद्रीक्षणयोगसंभवाः ॥ ५ ॥

अधुनापक्षिजन्मज्ञानंवंशस्थेनाह॥खगेति । खगेदृकाणःपक्षिदेष्काणस्तत्रपक्षि-  
देष्काणोमिथुनद्वितीयः सिंहप्रथमः तुलाद्वितीयः कुंभप्रथमः एषामन्यतम-  
देष्काणेउदयतिशनैश्चरेंद्रीक्षणयोगसंभवाःयथाक्रमंविहगाःपक्षिणःस्थलांबुजाभ-  
वंति।पक्षिदेष्काणेशनैश्चरेणयुतेदृष्टेवास्थलजपक्षिणांजन्मवक्तव्यम्।एवमिदुनायु-  
तेदृष्टेवाजलजानांपक्षिणांजन्मेति एकोयोगः । अत्रलग्नेप्रथमभागेनवांशकेयोग-  
हःस्थितःसप्रथमदेष्काणस्थः ततःपरमन्यस्मिन्नंशकेद्वितीयदेष्काणस्थः ततः  
परमन्यस्मिन्नंशकेतृतीयदेष्काणस्थइति एवंत्रयोभागाविंशतिःकलाश्चैकनवांश-  
कप्रमाणंपरिक्लप्यग्रहस्थितिंरन्वेष्ट्या । सर्वराशिष्वियंपरिभाषा बलसंयुते-  
नवाग्रहेणयुक्तेचरभांशकोदये यस्यतस्यलग्नस्यचरनवांशकोदयेबलसंयुतेनयेनग्र-  
हेणयुक्ते तथाभूतशनैश्चरयुतदृष्टेस्थलजानांचंद्रयुतदृष्टेजलजानामिति द्वितीयो  
योगः।बुधांशकेवेति बुधनवांशकेमिथुनकन्ययोरन्यतमेतात्कालिकस्थलग्नस्योदि-  
तेतस्मिंश्चबलवद्ग्रहसंयुक्तेशनैश्चरयुतदृष्टेस्थलजानां चंद्रयुतदृष्टेजलजानामिति  
तृतीयोयोगः।एतेशनैश्चरस्येंदोर्वायोगेनवीक्षणेनवासंभवतीति।तथाचसारावल्या-  
म्॥विहगोदितदृक्काणेग्रहेणबलिनायुतेथचरभांशे । बौधेंशेवाविहगाःस्थलांबुजाः  
शनिश्रीक्षणाद्योगात् ॥ ५ ॥

होरेंदुसूरिरविभिर्विवलैस्तारूणांतोयस्थलेतरुभवांशकृतः

प्रभेदः ॥ लग्नाद्ग्रहःस्थलजलक्षपतिस्तुयावांस्तावंतएवत-

रवःस्थलतोयजाताः ॥ ६ ॥

अधुनावृक्षजन्मज्ञानंवंसंततिलकेनाह ॥ होरेति । होरालग्नम् इंदुश्चंद्रः सूरि-  
जीवः रविरादित्यः एतैर्विवलैर्वीर्यरहितैः प्रष्टातरूणांवृक्षाणांजन्मपृच्छती-  
तिवक्तव्यम् । तत्रायंविशेषः तोयस्थलइति । तत्रतरुभवोवृक्षजन्मकिंतोयेज-  
लेस्थलेनिर्जलेदेशेवेतितत्प्रभेदस्तद्विकल्पोंशकृतोतनवांशकविहितः तत्रतोयरा-  
श्यंशकोदयेतोयसमीपजान्वृक्षाननूपजान् । तोयराशयः कर्कटमकरपश्चा-  
द्धमीनाः एतैरनूपजवृक्षजन्मज्ञानम् इतरराश्यंशकोदयेस्थलवृक्षजन्मज्ञानं त-  
त्रापिसंख्येयम् । लग्नाद्ग्रहइति उदितांशैः स्थलचारीजलचारीवाभवति तद-  
धिपतिर्यावत्संख्यराशौलग्नाद्ग्रहवस्थितस्तावंतएवतत्संख्यास्तरवोवृक्षाःस्थलजा  
जलजावावक्तव्याः । अत्राप्यंशकपतिवशाद्ग्रह्यमाणायुर्दायविधिनाद्वित्रिगुण-  
त्वंवाच्यम्।स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंयुणंद्विरुत्तमंस्वांशकभत्रिभागैरिति अत्रद्वित्रि-



गुणत्वेप्राप्तेयावंत्योगणनाभवन्तितावंतः कार्या इत्यागमविदः । तथाचसारावल्या-  
म् ॥ लग्नार्कजीवचंद्रैरबलैः शेषैश्चमूलयोनिः स्यात्स्थलजलभवनविभागावृक्षा-  
दीनांप्रभेदकराः । स्थलजलमहयोर्लग्नाद्यावतिराशौतुतेपितावंतः । द्वित्रि-  
गुणत्वंतेषामायुर्दायप्रकारोक्तम् ॥ ३ ॥

अंतःसाराजनयतिरविर्दुर्भगास्सूर्यस्सूनुःक्षीरोपेतांस्तुहिनकि-  
रणःकंटकाढ्यांश्चभौमः ॥ वागीशज्ञौसफलविफलान्पुष्पवृ-  
क्षांश्चशुक्रःस्निग्धानिदुःकटुकविटपान्भूमिपुत्रश्चभूयः ॥ ७ ॥

अधुनास्थलजलजांशस्वामिवशाद्वृक्षाणांविशेषज्ञानमंदाक्रान्तयाह॥अंतःसारा-  
नितिरविः सूर्योऽंशकपतिरंतःसारान्मध्यदृढान्शिशपादीन्वृक्षान्जनयतिउत्पा-  
दयति सूर्यस्सूरुराकिर्दुर्भगान्दृढमनसोरप्रियान्कुर्कुसप्रभृतीन्जनयति तुहि-  
नकिरणश्चंद्रःक्षीरोपेतान्सक्षीरानिन्धुप्रभृतीन्जनयति भौमःकुजःकंटकाढ्यान्कं-  
टकबहुलान्खदिरप्रभृतीन्जनयति।वागीशज्ञाविति । वागीशोबृहस्पतिःज्ञोबुधः  
एतौद्वौयथासंख्येनसफलविफलान्वृक्षान्जनयतः तत्रबृहस्पतिःसफलानाम्प्र-  
भृतीन् बुधोविफलान् येषांलोकेपुष्पमेवोपयुज्यतेनफलानितान्जनयति ।  
शुक्रःपुष्पवृक्षान् चंपकप्रभृतीन्जनयति इंदुश्चंद्रःभूयःपुनःस्निग्धान् साचिक्कणान्  
धवदेवदारुप्रभृतीञ्जनयति भूमिपुत्रोऽंगारकः कटुकविटपान्भल्लातकप्रभृती-  
न्जनयति । अत्रोभयजनितृत्वनिर्देशाच्चंद्रभौमयोर्विकल्पेनादेशः ॥ ७ ॥

शुभोशुभक्षैरुचिरंकुभूमिजं करोति वृक्षं विपरीतमन्यथा ॥

परांशकेयावतिविच्युतःस्वकाद्भवंतितुल्यास्तरवस्तथाविधाः॥८॥

अथभूतरुशुभाशुभज्ञानंसंख्यांचवंशस्थेनाह।शुभोशुभक्षइति॥सएवस्थलजलां-  
शपतिर्ग्रहःशुभस्तत्कालमशुभक्षेपापग्रहराशौव्यवस्थितोभवति तदाशुचिरंशोभ-  
नंवृक्षंकुभूमिजमशोभनभूमिजातंवदेत् अन्यथाविपर्ययेविपरीतंवृक्षं करोतिअंश-  
पतिरशुभस्तत्कालंशुभग्रहराशिस्थोभवति तदाअशोभनंवृक्षंशोभनभूमिजातंव-  
देत् अर्थादेवशुभग्रहेशुभक्षेत्रस्थेशुभंवृक्षंशोभनभूमिजातंवदेत् अशुभग्रहे अशुभक्षे-  
त्रस्थेअशोभनंवृक्षमशोभनभूमिजातंवदेत् परांशकेयावतीति । स्वस्थलजलांश-  
पतिर्ग्रहः स्वकादात्मीयादंशकाद्विच्युतश्चलितोयावत्संख्येपरनवांशकेव्यवस्थितः  
स्वमंशमतिक्रम्ययावत्संख्येपरनवांशकेवर्तते तत्तुल्यास्तत्संख्यास्तथाविधास्त-  
ज्जातयाश्चतरवोवृक्षाभवन्ति । तत्रपुनःसंख्याकरणाद्विकल्पेनादेशइति । तथाच  
सारावल्याम्॥स्वांशात्परांशगामिपुयावत्संख्याभवन्तितावंतः।स्थलजावाजलजा  
वातरवःप्राक्संख्ययाप्रवदेदिति ॥ ८ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौवियोनिजन्माध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

कुजेंदुहेतुप्रतिमासमार्तवंगतेतुपीडर्क्षमनुष्णदीधितौ ॥

अतोऽन्यथास्थेशुभपुंग्रहेक्षितेनरेणसंयोगमुपैतिकामिनी ॥ १ ॥

अथातोनिषेकाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावृतौसतिगर्भाधानमित्यत ऋतु-  
निरूपणमृतावपिस्त्रीपुरुषसंयोगज्ञानंवशस्थेनाह ॥ कुजेंदुहेत्विति । कुजोभौमः इंदु-  
श्रंद्रः तौहेतुः कारणं निमित्तं यस्य रजसः तत्कुजेंदुहेतु । प्रतिमासं मासं मासं प्रती-  
तिप्रतिमासम् । स्त्रीणां प्रतिमासमार्तवंकुजेंदुहेतु । प्रतिमासग्रहणेन प्रथमोद्भूतरजो-  
निवृत्तिर्दर्शयन् गर्भग्रहणक्षममार्तवंप्रदर्शयति । ऋतौ भवमार्तवम् । कथमित्याह । गते  
तुपीडर्क्षमनुष्णदीधिताविति । अनुष्णदीधितौ शीतमयूखे च द्वे पीडर्क्षगते । प्रकृतत्वा-  
त्स्त्रीणामनुपचयग्रहाश्रिते आर्तवकारणं भवति अर्थादेव यदि चंद्रः कुजसंदृष्टो भवति  
एतदुक्तं भवति स्त्रियोजन्मक्षादनुपचयस्थश्चंद्रमास्तत्रचयद्यंगारकेण दृश्यते तदा  
गर्भग्रहणक्षममार्तवहेतुर्भवति अन्यत्र बालवृद्धातुरवंध्याभ्यः । अत्र च वादरायणः ॥  
स्त्रीणां गतेनुपचयर्क्षमनुष्णराशिः संदृश्यते यदि धरातनयेन तासाम् । गर्भग्रहार्तव-  
मुशंति तदानवंध्यावृद्धातुराल्पवयसामपि चैतादिष्टम् ॥ १ ॥ तथा च सारावल्याम् ॥  
अनुपचयराशिसंस्थे कुमुदाकरबंधवेरुधिरदृष्टे । प्रतिमासं युवतीनां भवती हरजो  
ब्रुवंत्येके ॥ इंदुर्जलंकुजोभिर्जलमसंत्वाभिरेव पित्तं स्यात् । एवं रक्तेक्षुभिते  
पित्तेन रजः प्रवर्तते स्त्रीषु ॥ एवं यद्भवति रजोगर्भस्य निमित्तमेव कथितं तत् ।  
उपचयसंस्थे विफलं प्रतिमासं दर्शनं तस्य ॥ एवं गर्भग्रहणयोग्यमार्तवंप्रदर्श्य स्त्रीपुरु-  
षसंयोगसंभवासंभवौ प्रदर्शयति । अतोऽन्यथास्थइति । अतोऽन्यथोक्तप्रकारादन्यथा-  
स्थे विपर्ययस्थे चंद्रमसि तत्रोक्तविपर्ययस्थः पुरुषजन्मराशेरुपचयस्थश्चंद्रमायदि भ-  
वति तस्मिञ्छुभेन सौम्येन पुंग्रहेण गुरुणे क्षिते दृष्टे कामिनी स्त्रीनरेण पुरुषेण सह संयोगं  
मैथुनमुपैति गच्छतीति वक्तव्यम् । नन्वत्रातोऽन्यथास्थइति स्त्रिया उपचयस्थः कस्मा-  
न्न व्याख्यायते । अयुक्तमेतत् प्राधान्यात्पुरुषस्यैव । यस्माद्वादरायणः ॥ पुरुषोपच-  
यगृहस्थो गुरुणायदि दृश्यते हि मयूखः । स्त्रीपुरुषसंप्रयोगं तदा वदेदन्यथानैवेति ॥  
सारावलीकारेण सामान्येनोक्तम् । तद्यथा उपचय भवने शशभृदृष्टो गुरुणा सुहृद्विरथ  
वासौ । पुंसां करोति योगं विशेषतः शुक्रसंदृष्टः ॥ कस्मिन्कालेऽयं विचारः । उच्यते ।  
चतुर्थदिने स्नातायाम् । तथामणित्यः ॥ ऋतुविरमे स्नातायां यद्युपचयसंस्थितः शशी  
भवति । बलिना गुरुणा दृष्टो भर्त्रा सह संगमश्च तदा ॥ राजपुरुषेण रविणा विदेन भौमे-  
न वीक्षिते चंद्रे । सौम्येन च पलमतिना भृगुणा कांतेन रूपवता ॥ भृत्येन सूर्यपुत्रे-  
णायाति स्त्रीसंगमं हितदा । एकैकेन फलं स्याद्दृष्टेनान्यैः कुजादिभिः पापैः ॥ सर्वैः  
स्वगृहं त्यक्त्वा गच्छति वेश्यापदं युवतिः ॥ १ ॥



यथास्तराशिर्मिथुनंसमेतितथैववाच्योमिथुनप्रयोगः ॥

असद्ब्रह्मलोकितसंयुतेऽस्तेसरोपइष्टैःसविलासहासः ॥ २ ॥

अथमैथुनज्ञानप्रकारमिद्वज्रयाह ॥ यथास्तराशिरिति । आधानलगात्प्रभ-  
लगाद्वायोस्तराशिः सप्तमोस्तलग्रस्तत्संज्ञकोयोजंतुस्तन्मिथुनंस्त्रीपुत्रांसौयथा  
येनप्रकारेणसमेतिसंयोगंसुरतंयाति तथातेनैवप्रकारेणतस्यनरस्यमिथुनप्रयोगः  
संयोगोवाच्योवक्तव्यः।तस्मिन्नेवास्तेसप्तमेस्थानेअसद्ब्रह्मलोकितसंयुतेपापग्रहैर्द-  
ष्टेयुक्तेवासरोपःसकलहोमिथुनप्रयोगोवाच्यः । इष्टैः सौम्यैर्युतदृष्टेसविलासहा-  
सः।विलासोपहाससीत्कारादिसंयुक्तोमिथुनप्रयोगोवाच्यः अर्थादेवनकेनचिद्युत-  
दृष्टेनसरोपोनापिसविलासहासइति।मिश्रयुतदृष्टेसरोपःसविलासहासश्चेति । त-  
थाचसारावल्याम् । द्विपदादयोविलग्नस्तुरतंकुर्वतिसप्तमेयद्वातद्वयुरूपाणामपि  
गर्भाधानंसमादेश्यम् ॥ अस्तेशुभयुतदृष्टेसरोपकलहंभवेद्भाम्यम् । सौम्यैःसौम्यं  
सुरतंवात्स्यायनसंप्रयोगिकाख्यातम् ॥ २ ॥

रवीन्दुशुक्रावनिजैःस्वभागैर्गुरौत्रिकोणोदयसंस्थितेपिवा ॥

भवत्यपत्यंहिविवीजिनामिमैकराहिमांशोर्विदशामिवाफलाः॥३॥

अथगर्भसंभवासंभवज्ञानवंशस्थेनाह॥रवीति । रविः सूर्यः इन्दुश्चंद्रः शुक्रःसि-  
तः अवनिजोंगारकः एतैःस्वभागैर्यत्रकुत्रराशौस्वनवांशकस्थितैरपत्यंभवति  
गर्भसंभवोभवतीत्यर्थः । यदिचसर्वेस्वभागानस्युस्तदापुरुषोपचयर्क्षगाभ्यांसू-  
र्यसिताभ्यांस्वनवांशकगाभ्यामेवगर्भसंभवोवाच्यः । एवंभौमचंद्राभ्यांनार्युपच-  
यर्क्षगाभ्यांस्वनवांशकस्थाम्यामाधानकालेऽवश्यमेवापत्यंभवति गर्भसंभवोभव-  
तीत्यर्थः । यस्मादनेनैवस्वरूपजातकेउक्तम्॥बलयुक्तौस्वगृहांशेष्वर्कसिताबुपच-  
यर्क्षगौपुंसाम् । स्त्रीणांवाकुजचंद्रौयदातदागर्भसंभवोभवति । गुरौत्रिकोणोदयसं-  
स्थितेपिवेति । गुरौबृहस्पतौत्रिकोणयोर्नवमपंचमयोरुदयेलग्नपिवासंस्थितेएषा-  
मन्यतमस्थानस्थेपिभवत्यपत्यसंभवः ॥ विविवीजिनामिमैइति । हि  
यस्मादर्थे इमेहियोगाः विविवीजिनांपण्डानां विगतंबीजंवीर्येषांस्त्रीपुरुषाणांते-  
षामफला विद्यमानाअपिनसंभवन्ति । अत्रोदाहरणं कराहिमांशोर्विदशामि-  
वाफलाइति । यथाहिमांशोःशीतरश्मेः चंद्रस्यकरारश्मयोविद्यमाना अपिवि-  
दशामंधानामफलानिष्फला भवन्ति।विगतादृशोयेषांतेविदशस्तेषामिवेति ॥३॥

दिवाकरेन्द्रोःस्मरगौकुजार्कजौगदप्रदौपुंगलयोषितोस्तदा ॥

व्ययस्वगौभृत्युकरौयुतौतथातदेकदृष्ट्यामरणायकल्पितौ॥४॥

अधुनास्त्रीपुंसयोराधानकालवशादाप्रसवावधियावच्छुभाशुभज्ञानवंशस्थेनाह ॥  
 दिवाकरेति । दिवाकरात्सूर्यात्स्मरगौसप्तमस्थानस्थौकुजार्कजौ । कुजो-  
 गारकः अर्कजःसौरिः एतौ यदिभवतस्तदापुंगलस्यमनुप्यस्यगदप्रदौरोगप्र-  
 दौभवतः।एतदुक्तंभवति। आधानकालेयत्रार्कःस्थितस्तस्मात्सप्तमेस्थानेयदांगार-  
 कोभवतिसौरोवातदापुंसोरोगप्रदोभवतिस्वमासे । एवमिदोश्चंद्रात्सप्तमोभौमः  
 सौरोवाभवतितदायोपितःस्त्रियोरोगप्रदोभवतिस्वमासेएव । व्ययस्वगौमृत्युक-  
 राविति।तावेवकुजसौरौव्ययस्वगौद्वादशद्वितीयगौतयोर्दिवाकरेन्द्रोः सकाशादु-  
 भयत्रपाद्वस्थितौतदापुंगलयोपितोः स्त्रीपुरुषयोर्मृत्युकरोभवतः।एतदुक्तंभवति।  
 सूर्यादेकोद्वादशेद्वितीयोद्वितीये तदातयोर्मध्येयोबलवान्सस्वमासेमृत्युकरोन-  
 रस्यभवति चंद्रादप्येवंव्यवस्थितौ यथाचंद्रादेकोद्वादशेद्वितीयोद्वितीयेतदात-  
 योर्मध्येयोबलवान्सस्वमासेमृत्युकरःस्त्रियोभवति।युतौतथेति ।तदिति कुजसौर-  
 योःपरामर्शः।तयोःकुजसौरयोर्भयोर्मध्याद्यदैकेनादित्योयुतो भवत्यन्येनदृश्य-  
 तेतदानरस्यमरणायकल्पितोनिश्चितः एवंचंद्रमायद्येकेनयुक्तोभवत्यपरेणदृष्ट स्तः  
 दास्त्रियोमरणायकल्पितः द्वयोर्मध्येयोबलवांस्तस्यमासइति ॥ ४ ॥

दिवार्कशुक्रौपितृमातृसंज्ञितौशनैश्चरेंदूनिशितद्विपर्ययात् ॥

पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौचतावथौजयुग्मर्क्षगतौतयोःशुभौ ॥ ५ ॥

अथनिषिक्तस्यपितृमातृपितृव्यमातृस्वमृणांशुभाशुभज्ञानवंशस्थेनाह ॥ दिवा-  
 र्कशुक्राविति।दिवादिनेनिषिक्तस्यजातस्यवाजंतोर्यथाक्रमं पितृमातृसंज्ञितावर्क-  
 शुक्रौभवतः पितृसंज्ञकोकोमातृसंज्ञकः शुक्रः एवमेवनिशिरात्रौनिषिक्तस्यजात-  
 स्यवाशनैश्चरेंदूसौरचंद्रौयथाक्रमंपितृमातृसंज्ञितौभवतः । तत्रशनैश्चरःपितृसंज्ञ-  
 कः चंद्रोमातृसंज्ञकः।तद्विपर्ययादिति । तद्विपर्ययादिवारात्रिव्यत्ययात्तावेवपूर्वो-  
 क्तौग्रहौपितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौभवतः । तत्रदिवानिषिक्तस्यजातस्यवाशनैश्चरः  
 पितृव्यसंज्ञः चंद्रोमातृष्वसृसंज्ञः रात्रौनिषिक्तस्यजातस्यवार्कःपितृव्यसंज्ञः शुक्रो  
 मातृष्वसृसंज्ञः।तत्संज्ञयोः प्रयोजनं तावथौजयुग्मर्क्षगतौतयोः शुभाविति।तावे-  
 वयथोक्तौग्रहौतयोरोजयुग्मर्क्षगतौशुभौज्ञेयौ ओजाविषमराशयोयुग्माःसमरा-  
 शयः तत्रदिवाकोविषमर्क्षगोमेपामिथुनांसहतुलांधन्विकुंभानामन्यतमस्थः पितुः  
 शुभकृत् रात्रौपितृव्यस्य । तथादिवाशुक्रःसमर्क्षगोवृषकर्कटकन्यावृश्चिकमकर-  
 मीनानामन्यतमस्थोमातुःशुभकृत् रात्रौमातृष्वसृः ।शनैश्चरोरात्रौविषमर्क्षगतः  
 पितुःशुभकृत्दिवासमर्क्षगःपितृव्यस्य । तथाचंद्रोरात्रौसमर्क्षगोमातुःशुभकृत् ।  
 दिवामातृष्वसृः । सामर्थ्यादेवोक्तम्।विपर्ययस्थःसएवोक्तयोरशुभः यथादिवास-



मक्षेत्रगतोर्कःपितुरशुभोरात्रौपितृव्यस्य दिवाविषमर्क्षगतःशुक्रोमातुरशुभोरात्रौ मातृष्वसुः।रात्रौसमक्षेत्रगतः शनैश्चरःपितुरशुभोदिवापितृव्यस्य । रात्रौविषम-  
र्क्षगतश्चंद्रमामातुरशुभोदिवामातृष्वसुरिति ॥ ५ ॥

अभिलषद्भिरुदयर्क्षमसद्भिर्मरणमेतिशुभदृष्टिमयाते ॥

उदयराशिसहितेचयमेस्त्रीविगलितोडुपतिभूसुतदृष्टे ॥ ६ ॥

अथाधानप्रश्नमध्येआधानकालवशान्मातुर्मरणयोगद्वयंदुतपदेनाह॥अभिलष-  
द्भिरिति । उदयर्क्षमुदयलग्नमसाद्भिःपापग्रहैरभिलषद्भिः तत्रोदयलग्नाभिलापुकैःकै  
श्चिल्लमाद्वितीयस्थग्रहस्यव्याख्यातम् । तेषामभिमतंतथा उदयलग्नादनंतरंतदुद-  
यस्यप्रत्यासन्नतयाभिलषंत्युदयर्क्षमिति । अन्येपुनर्लग्नाद्वादशस्थानस्थस्यग्रहस्यो-  
दयर्क्षाभिलाषंकथयंति । यस्मात्तद्विहायोदयराशिगमनंग्रहः करोति एवंलग्नाद्वा-  
दशस्थैः पापैर्लग्नेयदिशुभदृष्टिंसौम्यग्रहदर्शनमयाते अप्राप्ते सौम्यग्रहैरदृश्यमाने-  
स्त्रीयोषिद्गर्भिणीमरणमेतिसृत्युंप्राप्नोति । अत्रचभगवान्गार्गिः॥अशुभैर्द्वादशर्क्ष-  
स्थैः शुभदृष्टिविवर्जितैः।आधानलग्नेमरणंयोषितःप्रवदेदुधइति ॥ योगांतरमाह ।  
उदयराशिसहितेचयमेइत्यादि । यमेशनैश्चरेउदयराशिसहितेलग्नस्थेतस्मिंश्च-  
विगलितेनोडुपतिनानक्षत्रस्वामिनाक्षीणचंद्रेणभूसुतेनांगारकेणचदृष्टेऽवलोकिते-  
स्त्रीगर्भिणीमरणमेति ॥ ६ ॥

पापद्वयमध्यसंस्थितौलग्नेदूनचसौम्यवीक्षितौ ॥

युगपत्पृथगेववावदेन्नारीगर्भयुताविपद्यते ॥ ७ ॥

अथयोगांतरंवैतालीयेनाह॥लग्नमुदयराशिःइंदुश्चंद्रएतौलग्नेदू पापद्वयमध्यसं  
स्थितौलग्नस्थेचंद्रमसियद्येकः पापग्रहोद्वादशस्थोभवति द्वितीयस्थोपरस्तदाल-  
ग्नैदूयुगपत्तुल्यकालंपापद्वयमध्यगावुच्येते॥अथलग्नेदूविप्रकृष्टांशकान्वितौभवत-  
स्तत्रचैकः पापस्तावप्राप्यस्थितोऽपरस्तावतिक्रम्यस्थितस्तदापि लग्नेदूपाप-  
द्वयमध्यगावुच्येते । अथवाद्वादशस्थानेएकः पापोऽपरोद्वितीयेतृतीयेचंद्रश्चतुर्थे  
चपापोभवति तदापि लग्नेदूपापद्वयमध्यगावुच्येते।एवंलग्नेदूयदियुगपत्पापद्वय-  
मध्यगतौनचसौम्यवीक्षितौशुभग्रहावलोकितौ नभवतस्तदानारीस्त्रीगर्भयुतावि-  
पद्यतेम्रियते । पृथगेवेति । अथवापृथक्स्थौलग्नेदूभवतस्तयोर्मध्यादेकतमोपि  
पापद्वयमध्यगतोभवति सौम्यग्रहादृष्टश्चतदानारीगर्भयुताविपद्यते । अथवा ल-  
ग्नात्तृतीयेचंद्रोद्वितीयचतुर्थद्वादशस्थाः पापास्तथापिलग्नैदूपापमध्यगौभवतः ।  
अथवालग्नादेकादशेचंद्रोद्वितीयतृतीयद्वादशगाः पापास्तथापिलग्नैदूपापद्वयम-

ध्यगौभवतः ॥ युगपद्ग्रहणं पादपूरणार्थं विस्पष्टार्थं वा । तदर्थस्य पृथगेव सामर्थ्या-  
ल्लवधत्वात् । अत्र योगकर्तृणां ग्रहाणां मध्याद्यो वली तन्मासि गर्भिणी मरणं भवती-  
तिसर्वत्र परिभाषा ॥ ७ ॥

क्रूरेशशिनश्चतुर्थगेलग्राद्वानिधनाश्रिते कुजे ॥

बंधंत्यगयोः कुजार्कयोः क्षीणे दौ निधनाय पूर्ववत् ॥ ८ ॥

अथान्ययोगांतराणि वैतालीयेनाह ॥ क्रूरइति । शशिनश्चंद्रात्क्रूरपापग्रहे चतुर्थ-  
स्थानस्थे निधनाश्रितेऽष्टमस्थानस्थे कुजे भौमे एको योगः । अथ वालग्राच्चतुर्थे पापे  
अष्टमे भौमे द्वितीयो योगः । बंधंत्यगयोः कुजार्कयोरिति । लग्राद्धुगे चतुर्थस्थे भौ-  
मेत्यगे द्वादशस्थानस्थेऽर्के सूर्ये यत्र तत्र स्थे क्षीणेन्दौ परिक्षीणे चंद्रे तृतीयो योगः । एषा-  
माधानकाले कतमस्य संभवे मरणाय पूर्ववन्नारी गर्भयुता विपद्यत इति ॥ ८ ॥

उदयास्तगयोः कुजार्कयोर्निधनं शस्त्रकृतं वदेत् तथा ॥

मासाधिपतौ निपीडिते तत्कालं स्रवणं समादिशेत् ॥ ९ ॥

अधुना मातुः शस्त्रनिमित्तं मरणयोगं गर्भसावंचाधानलग्नवशाद्वैतालीयेनाह ॥  
उदयास्तेति । निषेककाले कुजार्कयोर्भौमसूर्ययोर्यथा संख्यमुदयास्तगयोर्लग्नसप्त-  
मस्थयोर्लग्ने भौमे सप्तमस्थेऽर्के गर्भयुतायाः स्त्रियः शस्त्रकृतं शस्त्रहेतुकं मरणं निधनं व-  
देद्भूयात् । तथा तेनैव प्रकारेणेति । नारी गर्भयुता विपद्यत इत्यर्थः । मासाधिपता वि-  
ति । गर्भमासेषु मासाधिपान् वक्ष्यति कललघनेत्यादिना । तत्र निषेककाले योगग्रहो ये-  
न ग्रहेण युद्धे विजितो भवति केतुनावधूयित उल्कया चाभिहतः सोऽपि निपीडित  
इत्युच्यते तस्यापि निपीडितस्य ग्रहस्यो भवति मासो यस्मिन् मासे मासाधिपत्यं  
तस्य भवति तत्कालं तस्मिन्काले गर्भस्रवणं च्युतिं समादिशेद्देत् ॥ ९ ॥

शशांकलग्नोपगतैः शुभग्रहैस्त्रिकोणजायाऽर्थसुखास्पदस्थितैः ॥

तृतीयलाभर्क्षगतैश्च पापकैः सुखी तु गर्भौरविणानिरीक्षितः ॥ १० ॥

अधुना गर्भपुष्टिज्ञानं वंशस्थेनाह ॥ शशांकेति । यत्र राशौ शशांकश्चंद्रः स्थि-  
तस्तत्रैव शुभग्रहैर्व्यवस्थितैर्बुधगुरुसितैरित्यर्थः । अथ वालग्रस्थैः शुभग्रहैः  
लग्ने व्यवस्थितैः अथवा कैश्चिच्छशांकोपगतैः कैश्चिद्वलग्नोपगतैः एवं शशांको-  
पगतैः शुभग्रहैरुदयोपगतैर्वा अथवा तैरेव शुभग्रहैः त्रिकोणजायार्थसुखास्प-  
दस्थितैः । त्रिकोणं नवपंचमे जायास्थानं सप्तमम् अर्थस्थानं द्वितीयं सुखस्थानं  
चतुर्थम् आस्पदस्थानं दशमम् एतेषु त्रिकोणजायार्थसुखास्पदेषु यथा संभवं चंद्राल-



ग्राह्यादयोर्वासमवस्थितैस्तथापापकैःऋग्रहैश्चंद्राल्लग्राह्यादृतीयलाभक्षगतैः तृतीयैकादशस्थानस्थैर्यथासंभवंद्वयोर्वास्थितैरविणामूयेणयदिनिरीक्षितोदष्टः शशीलग्नंवाभवति यस्मादेवयोगः सचदृश्यतेतदागर्भस्थः सुखीपुष्टिमान्भवति । केचिद्गुरुणानिरीक्षितइतिपठन्ति । तदयुक्तम् । यस्मात्सारावल्यामुक्तम् ॥ होरेंदुयुतैः सौम्यैस्त्रिकोणजायासुखांवरार्थस्थैः । पापैस्त्रिलाभयातैः सुखीचगर्भानिरीक्षितोरविणा ॥ १० ॥

ओजर्क्षेपुरुषांशकेषुवलिभिर्लग्नार्कगुर्विंदुभिःपुंजन्मप्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषुतैर्योषितः ॥ गुर्वर्काविषमेनरंशशिसितौवक्रश्चयुग्मेस्त्रियंध्यंगस्थानुधवीक्षणाच्चयमलौकुर्वतिपक्षेस्वके । ११

अथनिषिक्तस्यनिषेककालाज्जातस्यजन्मकालादुभयोरपिप्रश्नकालाद्वापुंस्त्रीविभागज्ञानंशार्दूलविक्रीडितेनाह । ओजर्क्षेपुरुषांशकेष्विति । लग्नमुदयलग्नम् अर्क आदित्यः । गुरुर्जावः । इंदुश्चंद्रः । एतैर्लग्नार्कगुर्विंदुभिरोजर्क्षस्थैर्विषमराशिव्यवस्थितैर्नकेवलंयावद्विषमराशिव्यवस्थितैर्विषमनवांशगतैर्वलिभिश्चपुंसो जन्मवदेत् । नन्वत्रविषमनवांशग्रहणं नास्ति कथंव्याख्यातंविषमनवांशकगैरिति । उच्यते । पुरुषांशकेष्विति वचनात्पुरुषराशीनामंशकेष्वित्यर्थः । यतोयएवविषमराशयस्तएवपुरुषराशयः । समांशकगतैर्युग्मेष्विति । तैरेवल्लग्नार्कगुर्विंदुभिर्युग्मेषु समराशिषुव्यवस्थितैर्नकेवलंयावत्समांशकगतैर्युग्मराशिनवांशकस्थैर्वलिभिश्च योषितः स्त्रियोजन्मवदेत् । अथैषांयथाभिहितानांलग्नग्रहाणामुभयाविकल्पगानां बाहुल्यात्पुंस्त्रीनिर्देशः । साम्येवलाधिकत्वात् । गुर्वर्काविति । गुरुर्जावः अर्क आदित्यः एतावुभावपिविषमेविषमराशौगतौयत्रतत्रनवांशकस्थौनरंभनुप्यंकुरुतः । बलग्रहणमप्यत्रानुवर्तते । शशीचंद्रः सितः शुक्रः वक्रो गारकः एतेयदिसबलाः युग्मेसमराशौगतायत्रतत्रनवांशकस्थाः स्त्रियंजनयन्ति । ध्यंगस्था इति । एतएवग्रहा ध्यंगस्थायत्रतत्रराशौद्विशरीरनवांशकस्थाः बुधवीक्षणाच्चबुधदृष्ट्यायमलौद्रौ स्वपक्षेकुर्वति स्वपक्षेआत्मीयपक्षे पुरुषनवांशकेस्त्रीनवांशकेचेत्यर्थः । एतदुक्तं भवति । चत्वारोद्विस्वभावामिथुनकन्याधन्विमीनाः तत्रमिथुनधन्विनौपुरुषांशकौ । कन्यामीनौरुह्यंशकौ तेनयथासंभवंमिथुनधन्वंशगतावादित्यजीवौयदि बुधेनयत्रतत्रावस्थितेनदृश्येते तदायमलौद्रौपुरुषौवाच्यौ । एवंयथासंभवंकन्यामीनांशकगताः शशिशुक्रभौमाः यत्रतत्रावस्थितेनबुधेनदृश्यन्तेतदायमलेद्वेकन्येवाच्ये । अथद्वावेववर्गौयथादर्शितस्यौबुधः पश्यति तदैकःपुरुषोद्वितीयाच कन्या । नन्वत्रांशकग्रहणं नास्ति तत्कथंव्याख्यातं द्विशरीरनवांशकेस्थिता इति । अ-

नैनैवस्वल्पजातकेउक्तम् । बलिनौविषमेऽर्कगुरुनरंस्त्रियंसमग्रहेकुजेंदुसिताः । यम-  
लौद्विशरीरांशेष्विदुजदृष्ट्यास्वपक्षसमाविति । अन्यथापुनरुक्ततास्यात् औजर्क्षे  
पुरुषांशकेष्वित्यनेनैवगतार्थत्वात् । बलग्रहणमत्रानुवर्तनीयमिति ॥ ११ ॥

विहायलग्नंविषमर्क्षसंस्थःसौरोपिपुंजन्मकरोविलग्नात् ॥

प्रोक्तग्रहाणामवलोक्यवीर्यवाच्यःप्रसूतौपुरुषोऽंगनावा ॥ १२ ॥

अथपुंजन्मयोगांतरमुपेन्द्रवज्रयाह ॥ विहायलग्नमिति । उक्तयोगाभावस्यावसरे  
नान्यथा आधानलग्नं पृच्छाकालिकं बालमविहायत्यक्त्वा सौरः शनैश्चरोलगाद्विष-  
मर्क्षगतस्तृतीयपंचमसप्तमनवमैकादशस्थानानामन्यतमस्थः पुंजन्मकरः पुरुषज-  
न्मकरोभवति । प्रोक्तग्रहाणामिति । प्रोक्तग्रहाणां कथितयोगकर्तृणां ग्रहाणां वीर्यं बल-  
मवलोक्य विचार्य प्रसूतौ प्रसवकाले पुरुषोऽंगनास्त्रीवावक्तव्या । एतदुक्तं भवति ।  
यत्र पुरुषजन्मयोगसंभवस्तत्र पुरुषो वाच्यः । यदा योगद्वयसंभवो भवति । तदा यो  
योगो बलवद्ग्रहाभिनिर्मितस्तद्वशात् पुंस्त्रीजन्मवक्तव्यम् ॥ १२ ॥

अन्योन्यं यदि पश्यतः शशिरवीयद्यार्किसौम्यावपिवक्रोवासम-  
गं दिने शमसमे चंद्रोदयौ चेत्स्थितौ ॥ युग्मौ जर्क्षगतावपी दुःश-  
शिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ पुंभागे सितलग्नशीतकिरणाः स्युः क्ली-  
वयोगाश्च षट् ॥ १३ ॥

अथ क्लीवजन्मयोगाच्छादूलविक्रीडितेनाह ॥ अन्योन्यमिति । शशीचंद्रः रवि-  
रादित्यः एतौ शशिरवीयथाक्रमं युग्मौ जर्क्षगतौ समविषमराशिस्थावन्योन्यं पर-  
स्परं यदि पश्यतः समराशिस्थश्चंद्रो विषमराशिगतमर्कं पश्यत्यर्कश्च शशिनं पश्य-  
तितदा क्लीवजन्मयोग एकः । यद्यार्किसौम्यावपि आर्कः सौरः सौम्यो बुधः एता-  
वार्किसौम्यौ यथाक्रमं युग्मौ जर्क्षगतौ अन्योन्यं यदि पश्यतस्तदा द्वितीयो योगः ।  
वक्रोवासमगमिति । वक्रो गारको विषमर्क्षगः समगं समराशिस्थं दिने शं सूर्यं पश्य-  
ति सूर्यश्चांगारकं पश्यतितदा तृतीयो योगः । असमे चंद्रोदयौ चेदिति । चंद्रः श-  
शी । उदयो लग्नमेतावसमे विषमराशाववास्थितौ भूम्यात्मजेनांगारकेण सम-  
राशिगेनेक्षितौ दृष्टौ तदा चतुर्थो योगः । युग्मौ जर्क्षगतावपीति । इंदुश्चंद्रः शशिजौ  
बुधः एतौ यथासंख्यं युग्मौ जर्क्षगतौ समविषमराशिगौ भूम्यात्मजेन भौमेन यत्रात-  
त्रावस्थितेन वीक्षितौ दृष्टौ तदा पंचमो योगः । पुंभागे इति । सितः शुक्रः लग्नमुदय-  
लग्नं । शीतकिरणश्चंद्रः एते सितलग्नशीतकिरणाः यत्र तत्र राशौ पुंभागे विषमन-



वांशकेव्यवस्थिता भवन्ति तदा क्लीवजन्मयोगः षष्ठः । तथा च वादरायणः ॥ अन्योन्यं रविशशिनी विषमा विषमर्क्षगौ निरीक्ष्येते । इन्दुजरविपुत्रौ वा तथैव न पुंसकं कुरुतः ॥ वक्रौ विषमे मूर्यः समगश्चैव परस्परालोकात् । विषमर्क्षे लभेदू समराशिगतः कुजो वलोकयति ॥ बुधचन्द्रौ कुजदृष्टौ विषमर्क्षसमर्क्षगौ तथैवोक्तौ । ओजनवांशकसंस्थालभेदुसितास्तथैवोक्ता इति ॥ एते योगाः पूर्वयोगानामभावे वक्तव्याः । तेषां योगानामेतेषां च संभवे तेषां भवे बलवत्त्वम् ॥ १३ ॥

युग्मे चन्द्रसितौ तथौ जभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया लभेदू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ॥ कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्व्यंगांशकान् पश्यति स्वांशे ज्ञेत्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिश्रैः समम् ॥ १४ ॥

अधुना द्वित्रिगर्भसंभवयोगाञ्छादू लविक्रीडितेनाह ॥ युग्मे चन्द्रसिताविति । चन्द्रसितौ शशिशुकौ युग्मे समराशौ व्यवस्थितौ तथा तेनैव प्रकारेण ज्ञारजीवोदयाः ज्ञो बुधः आरोगारकः जीवो बृहस्पतिः उदयो लग्नम् एते सर्वे एवौ जभवने विषमराशौ स्युर्भवेयुः एवमेते मिथुनं कुर्युः दारिकां दारकश्च । लभेदू उदयचन्द्रौ समगौ युग्मराशिव्यवस्थितौ नृनिरीक्षितौ नरग्रहणयेन केनचित् दृष्टौ भवतस्तथापि मिथुनं गर्भस्थं वाच्यम् । युग्मेषु वा प्राणिनः । त एव पूर्वोक्ता ज्ञारजीवोदयाः सर्वे एव युग्मेषु समराशिपुस्थिताः प्राणिनो बलिनो भवन्ति तदापि मिथुनं कुर्युः । ग्रहोदयगतानित्यादि । ग्रहाः सर्वे एव द्व्यंगांशकेषु द्विस्वभावनवांशकेषु गताः प्राप्ताः उदयो लग्नचन्द्र्यंगांशकेषु गतः तान् ग्रहोदयगतान्द्व्यंगांशकान् स्वांशे स्वनवांशकस्थे ज्ञे बुधे पश्यति सति तदा त्रितयं वक्तव्यम् । तत्रायं विशेषः । ज्ञगांशकवशाद्युग्मं त्वमिति । ज्ञो बुधो गतो व्यवस्थितो यस्मिन्नवांशके तदशाद्युग्मम् । बुधो यस्मिन्नवांशके व्यवस्थितः स्याद्व्यंगांशकस्तद्व्यंगं तत्र गर्भे युग्मं वक्तव्यम् । एकस्तद्विपरीतः एतदुक्तं भवति । मिथुनांशकस्थो बुधो यदा ग्रहोदयगतान्द्व्यंगांशकान् पश्यति तदा गर्भे दारकद्वयं दारिकाचैका वक्तव्या । अथोक्त्या नवांशकस्थो बुधो द्व्यंगांशकव्यवस्थितान् ग्रहोदयान् पश्यति तदा गर्भे दारिकाद्वयमेको दारकश्च वक्तव्यम् । अमिश्रैः सममिति । तैर्ग्रहोदयबुधैरमिश्रस्थितैर्द्विस्वभावसमानलिङ्गस्थितैस्त्रितयं सममेकलिङ्गं वक्तव्यम् । एतदुक्तं भवति । मिथुननवांशकव्यवस्थितो बुधो मिथुनधन्यंशकव्यवस्थितान् ग्रहोदयान् पश्यति तदा गर्भे दारिकात्रितयं वक्तव्यम् । अथ कन्यांशकव्यवस्थितो बुधः कन्यामीनांशकव्यवस्थितान् ग्रहोदयान् पश्यति तदा गर्भे दारिकात्रितयं वाच्यमिति । तथा च सारावल्याम् ॥ समराशौ शशिसितयोर्विषमेषु रुक्

सौम्यलम्बेषु । योगेगर्भगततद्विद्विद्रिमिथुनंतुवक्तव्यम् ॥ लभेदूवासमगौपुंग्रहदृष्टौ  
चमिथुनजन्मकरौ ॥ उदयज्ञवक्रगुरवोवलिनःसमराशिगास्तथैवोक्ताः । द्वि-  
शरीरांशकयुक्तान्ग्रहान्विलम्बचपश्यतींदुसुते ॥ कन्यांकन्येशेद्वेपुरुषश्चैकोनि  
षिच्यतेगर्भे । मिथुनांशेकन्यैकाद्वौपुरुषौत्रितयमेवंस्यात् ॥ मिथुनधनराशिगता-  
न्ग्रहान्विलम्बचपश्यतींदुसुतः । मिथुनांशस्थश्चयदापुरुषत्रितयंतदागर्भे ॥  
कन्यामीनांशस्थान्विहगानुदयंचयुवतिभागगतः । पश्यतिशीतगुतनयःकन्या  
त्रितयंतदागर्भे ॥ १४ ॥

धनुर्धरस्यांत्यगतेविलम्बेग्रहैस्तदंशोपगतैर्वाल्लिष्टैः ॥

ज्ञेनार्किणावीर्ययुतेनदृष्टेसंतिप्रभूताअपिकोशसंस्थाः ॥ १५ ॥

अधुनात्र्यधिकगर्भसंभवयोगज्ञानमुपजातिकयाह ॥ धनुरितिधन्विलम्बेधनुर्ध-  
रांशकेवालम्बमुपगतेयत्रतत्रराशौव्यवस्थितैःसर्वग्रहैर्धन्व्यंशोपगतैःवाल्लिष्टैर्वीर्य-  
वद्विश्चज्ञेनबुधेनआर्किणाचशनैश्चरेणवीर्ययुतेनवलवतादृष्टेवलोकितेप्रभूतावहवः  
कोशसंस्थाजरायुवेष्टितविग्रहागर्भेसंतिभवन्तीति पंचसप्तदशयावत् ॥ १५ ॥

कललवनांकुरास्थिचर्मागजचेतनताःसितकुजजीवसूर्यचंद्रा-

र्किबुधाःपरतः ॥ उदयपचंद्रसूर्यनाथाःक्रमशोगदिताभवन्ति

शुभाशुभंचमासाधिपतेःसदृशम् ॥ १६ ॥

पूर्वमुक्तमासाधिपतौनिपीडितेतत्कालंश्रवणंसमादिशेदिति तदधुनागर्भस्य  
मासाधिपान्कुटकेनाह ॥ कललइति । सिताद्याग्रहागर्भस्यप्रथममासात्प्रभृतिकल-  
लादीनिभवन्ति वर्तयन्ति । तद्यथा । गर्भस्यप्रथमेमासिकललंभवति । शुक्रशो-  
णितेघनेसंमिश्रीभूतेतत्रगर्भस्यतस्मिन्मासेसितःशुक्रोधिपतिः । द्वितीयेघनता  
काठिन्यंभवति तत्रकुजोऽंगारकोधिपतिःतृतीयेंकुरोत्पत्तिर्हस्ताद्यवयवजन्मतत्र-  
जीवोबृहस्पतिरधिपतिः । चतुर्थेस्थिसंभवःतत्रसूर्योऽरविरधिपतिः । पंचमेचर्म-  
संभवस्तत्रचंद्रोधिपतिः । षष्ठेगजसंभवोलोमजन्मतत्रार्किःसौरोऽधिपतिः ।  
सप्तमेचेतनतासंभवतिचेतनतास्वभावःतत्रबुधोधिपतिः । बुधमासात्परतो  
येन्येषामासास्तेगर्भस्याशनोद्वेगप्रसवकरास्तेचोदयपतिचंद्रसूर्यानाथाःस्वा-  
मिनः क्रमशोगदिताः उक्ताः । तत्राष्टमेमासिगर्भस्थोजंतुरशनंकरोति मा-  
त्राशुक्तंपीतंरसादि तस्यनाभिलग्ननालेनसंक्रमते । तत्रगर्भाधानलयाधिप-  
तिर्योग्रहःसमासाधिपतिः । नवमेगर्भस्थस्योद्वेगोभवति तत्रचंद्रोधिपतिः



दशमेगर्भस्यप्रसवः प्रसूतिर्भवति तत्रसूर्यो रविरधिपतिः । तथाच स्वल्पजातके ॥ कललघनावयवास्थित्वग्रोमस्मृतिसमुद्भावाः क्रमशः । मासेषुशुक्रकुजजीवमूर्यचन्द्रार्किसौम्यानाम् ॥ अशनोद्वेगप्रसवाः परतोलग्नेशचंद्रमूर्याणामिति ॥ अत्रप्रथमद्वितीयमासाधिपयोर्यवनेश्वरेणसहमतभेदः । तथातद्वाक्यम् । कुजास्फुजिज्जीवरवीन्दुसौरशशांकलग्नेन्दुदिवाकराणाम् । मासाधिपत्यप्रभवोनचैषांजयोपधातैर्ग्रहवद्भवन्ति ॥ आद्येतुमासेकललंद्वितीयेपेशिस्तृतीयेपिभवन्तिशाखाः । अस्थीन्यथस्नायुशिराश्चतुर्थेमज्जात्रचर्माण्यपिपंचमेतु । षष्ठेत्वसृग्रोमनखैर्यकृच्चचेतस्वितासप्तममासिचित्या । तृष्णाशनास्वादनमष्टमेस्यात्स्पर्शोपरोधोनवमेरतिश्च । स्रोतोभिरुद्घाटितपूर्णदेहोगर्भोर्कमासेदशमेप्रसूते । आचार्यस्यबहुमतमासानामभिमतमितिभवति । शुभाशुभंचमासाधिपतैः सदृशम् । गर्भस्थस्यमासाधिपतिसदृशंशुभमशुभंफलंभवति । एतदुक्तंभवति । आधानकालेयोग्रहोनिपीडितोभवति तन्मासिगर्भस्यपतनम् । कलुषेमंदरश्मौ विवर्णेपीडनम् । निर्मलेशुजालसंपन्नेबलवतिपुष्टिरिति । तथाचमूक्ष्मजातके ॥ कलुषैः पीडापतनंनिपीडितैर्निर्मलैःपुष्टिरिति ॥ अथचान्यैः शास्त्रकारैर्विशेषउक्तः । तत्किंचित्प्रदृश्यते । तथाच सारावल्याम् ॥ तत्रशुभाशुभमिश्रैः कर्मभिरधिवासिताविषयवृत्तिः । गर्भावासे निपततिसंयोगेशुक्रशोणितयोः । मिथुनस्यमनोभावोयादृक्मदलालस्यतोभवति । श्लेष्मादिभिश्चदोषैस्तत्तुल्यगुणोनिषिक्तस्य ॥ यादृक्पश्यति सौम्यस्तत्तुल्यगुणं सुतंसमाधत्ते ॥ पितृजननीसादृश्यंरवेःशशांकस्यबलयोगात् ॥ सुबोधमेतत् ॥ १६ ॥

त्रिकोणगेज्ञेविवलैस्ततोपरैर्मुखांघ्रिहस्तद्विगुणस्तदाभवेत् ॥

अवाग्गर्वादावशुभैर्भसंधिगैःशुभैक्षितैश्चेत्कुरुतेगिरंचिरात् ॥ १७ ॥

अधुनाधिकांगमूकचिरलब्धगिरांसंभवयोगान्वंशस्थेनाह ॥ त्रिकोणगेति । ज्ञेबुधे त्रिकोणगे लग्नान्नवमस्थे पंचमस्थे वा ततः तस्माद्बुधादपरैरन्यैः सर्वैर्ग्रहैर्यत्र तत्रावस्थितैर्विवर्णैर्वीर्यरहितैर्मुखांघ्रिहस्तद्विगुणो गर्भस्थो वाच्यः द्विशिराश्चतुष्पाच्चतुर्भुज इत्यर्थः । त्रिकोणगे ज्ञे इत्यत्र केचिन्मूलत्रिकोणगे बुधे कन्यागत इत्याहुः । तच्चायुक्तम् । यस्माद्भगवान्गार्गिः ॥ बलहीनैर्ग्रहैः सर्वैर्नवपंचमगे बुधे । द्विगुणांघ्रिशिरोहस्तोभवत्येकोदरस्तथा ॥ अवागिति । गविवृषे स्थिते इदौ चंद्रे शुभैः पापैर्भसंधिगैः कर्कटवृश्चिकमीनानामंत्यनवांशकस्थैर्यथासंभवं सर्वैरेवांत्यनवांशकस्थैः अवाङ्मूको गर्भस्थो वाच्यः । शुभैक्षित इति । चेच्छब्दोयद्यर्थे एवंविधे योगे यदि शुभैक्षितः सौम्यग्रहदृष्टश्चंद्रो भवति तदा जातस्य चिराद्बुधना कालेन

गिरंवाचंकुरुते अर्थादेव पापवीक्षितेवाग्धीनइति । एवंयोगेमिश्रग्रहवीक्षितोयदा सौम्याबलिनस्तदाचिरेणकालेनलब्धवाग्भवतियदापापाबलिनस्तदानेवैति । अत्रचभगवान्गार्गिः । कुलीरालिक्षणांतस्थैः पापैश्चंद्रे वृषोपगे । मूकः पापेक्षितैः सौम्यैश्चिरेणलभतेगिरम् ॥ मिश्रदृष्टैर्हैर्हीनैर्मूकोवालब्धवाक्चिरादिति ॥ १७ ॥

सौम्यर्क्षांशोरविजरुधिरौचेत्सदंतोत्रजातःकुब्जःस्वर्क्षेःशशिनि  
तनुगेमंदमाहेयदृष्टे ॥ पंगुमीनेयमशशिकुजैर्वीक्षितेलग्रसंस्थे  
संधौपापेशशिनिचजडःस्यान्नचेत्सौम्यदृष्टः ॥ १८ ॥

अधुनासदन्तकुब्जजडजन्मयोगान्मंदाक्रांतयाह ॥ सौम्येति । रविजः शनैश्चरः रुधिरांगारकः यत्रतत्रराशौशनैश्चरांगारकौसौम्यर्क्षांशेबुधनवांशकेमिथुनांशकेकन्यांशकेवाभवतः अथवाबुधर्क्षेमिथुनकन्ययोरन्यतमेराशौस्थितौभवतः चेच्छब्दोदयार्थं यद्येवंतदात्रास्मिन्योगेसदंतोदंतसहितो गर्भस्थोवाच्यः । केचित्सौम्यर्क्षांशे मिथुनेमिथुनांशकेकन्यायांकन्यांशकेचेतीच्छंति ऋक्षांशयोर्युगपद्ब्रह्मणात् । अंशशब्देनकेवलेनैवसिद्धिः स्यात्तद्वक्ष्यग्रहणमतिरिच्यतइति । एवंविधेयोगेगर्भस्थः सदंतोभवतिजातोवा कुब्जःस्वर्क्षइति । शशिनिचंद्रेस्वर्क्षेआत्मीयराशौकर्कटस्थिते तथाभूतेचतनुगते लग्नगते तथाभूतेमंदमाहेयदृष्टे मंदेनशनैश्चरेणमाहेयेनांगारकेणचदृष्टेऽवलोकितेचन्द्रेएवंभूतेयोगेगर्भस्थः कुब्जोवाच्यः । पंगुमीनइति । मीनेलग्नसंस्थेयमशशिकुजैः यमः शनैश्चरः शशीचंद्रः कुजोभौमः एतैर्वीक्षितेदृष्टेपंगुः पादविकलोगर्भस्थोवाच्यः । संधौपापइति । पापेआदित्यकुजसौराणामन्यतमेशशिनिचचंद्रेसंधौकर्कटवृश्चिकमीनांत्यनवांशगतेयथासंभवंगर्भस्थोजंतुर्जडः श्रोत्रेन्द्रियहीनोवाच्यः । नचेत्सौम्यदृष्टइति । एते योगकर्तारोग्रहायथादर्शितानचेत् यदिसौम्यैः शुभग्रहैर्दृष्टानभवंतितदैतद्योगचतुष्टयपूर्णवक्तव्यम् सौम्यैर्वलिभिर्निरीक्षितायोगाएव नभवंति मध्यबलैर्हीनबलैर्वादृष्टास्तदाअसमग्रफलाभवंति ॥ १८ ॥

सौरशशांकदिवाकरदृष्टेवामनकोमकरांत्यविलग्रे ॥

धीनवमोदयगैश्चदृकाणैःपापयुतैरभुजांघ्रिशिराःस्यात् ॥ १९ ॥

अधुनावामनहीनांगयोगौदोधकेनाह ॥ सौरशशांकेति । मकरांत्यविलग्रे मकरराश्यंत्यनवांशकेविलग्रस्थे नवमनवांशकउदयमानः सचमकरस्येत्यर्थः तस्मिन् शसौरशशांकदिवाकरदृष्टे सौरःशनैश्चरःशशांकश्चंद्रःदिवाकरःसूर्यःएतैरवलोकित-



तेवामनकोगर्भस्थोवाच्यःधीनवमोदयगैरिति।अत्रैकेव्याचक्षते।यदालभेद्वितीयद्रेष्काणोदयोभवतितदातस्यपंचमराशिसंबंधित्वाद्विद्रेष्काणइत्याख्या तस्मिन्द्वितीयेद्रेष्काणे पापग्रहयुतेउदयमनुप्राप्तेनवमेतस्मिन्सौरशशांकदिवाकरदृष्टे गर्भस्थोऽभुजोभुजहीनोवाच्यः । एवंयदालभेद्वितीयस्यद्रेष्काणस्यउदयोभवतितदातस्यनवमराशिसंबंधित्वान्नवमद्रेष्काणइत्याख्या तस्मिन्नुदयगतेपापयुतेसौरशशांकदिवाकरदृष्टेऽनंघ्रिःपादहीनोगर्भस्थोवाच्यः। एवंप्रथमद्रेष्काणस्यलग्नसंबंधित्वादुदयद्रेष्काणइत्याख्यातस्मिन्नुदयगतेसौरशशांकदिवाकरदृष्टेऽशिराःशिरोहीनोगर्भस्थोवाच्यःएतेपुयोगेपुसौरशशांकदिवाकराणांदर्शनयोगात्पापयुक्तइति।केवलंनंगारकेणयुक्तेयोगोभवति अत्राप्यन्येधीनवमोदयगैर्द्रेष्काणैःपापयुतैःकेवलमेवाभुजांघ्रिशिरसांसंभवंव्याचक्षते सौरशशांकदिवाकरदृष्टइत्यस्यानुवृत्तिर्नेच्छंति। अन्येविभुजादिसंभवेयथासंख्यंत्यक्त्वादृक्काणत्रयेपिप्रतिदृक्काणंतदुद्भवविकल्पमाहुः।विभुजोवानांघ्रिर्वाविशिरावेति अन्येएवंव्याचक्षते यथा । लग्नप्रथमद्रेष्काणोदयोभवति तदापंचमपिराशौप्रथमद्रेष्काणोनवमोपिप्रथमएव । एतद्रेष्काणत्रयंयदिपापयुतंभवतितदाभुजहीनोगर्भस्थोवाच्यः । अथलग्नेद्वितीयद्रेष्काणोदयोभवतितदापंचमनवमयोरपितृतीयएव । एतद्रेष्काणत्रयंयदापापयुतंभवति तदापादहीनोगर्भस्थोवाच्यः।अथलग्नेतृतीयद्रेष्काणोदयोभवतितदापंचमनवमयोरपितृतीयएव । एतद्रेष्काणत्रयंयदिपापयुतंभवति तदाशिरोविहीनोगर्भस्थोवाच्यःअत्राप्यन्येयथासंख्यंत्यक्त्वात्रिप्रकारेपियोगेभुजांघ्रिशिरोहीनानां विकल्पेनगर्भस्थस्यसंभवमाहुः।वयंपुनर्ब्रूमः।निषेककाले पंचमराशौयोद्रेष्काणः सयधंगारकेणयुक्तः सौरशशांकदिवाकरदृष्टश्चभवति तदाविभुजोभवति एवंनवमेस्थानेद्रेष्काणोनवमद्रेष्काणः तथानिषेककालेनवमराशौयोद्रेष्काणः सयधंगारकेणयुक्तः सौरशशांकदिवाकरदृष्टश्चभवति तदाअनंघ्रिर्भवति तथानिषेककाले लग्नस्थोद्रेष्काणः सयधंगारकेणयुक्तःसौरशशांकदिवाकरदृष्टश्चभवतितदाअशिरागर्भस्थोवाच्यः।एषैवव्याख्यासाध्वी।यस्माद्भगवान्गार्गिः। लग्नद्रेष्काणगोभौमः सौरसूर्येदुर्वीक्षितः। कुर्याद्विशिरसंतद्रूपंचमेवाहुर्वर्जितम्॥विषदंनवमस्थानेयदि सौम्यैर्नवीक्षितइति।तथाचसारावल्याम् भौमयुताद्रेष्काणास्त्रिकोणलग्नेपुसंदृष्टाः। विभुजांघ्रिमस्तकः स्याच्छनिरविचंद्रैर्वदेद्गर्भः ॥ १९ ॥

रविशशियुतेसिंहेलग्नेकुजार्किनिरीक्षितेनयनरहितःसौम्यासौम्यैःसबुद्बुदलोचनः ॥ व्ययगृहगतश्चंद्रोवामंहिनस्त्यपरंरविर्नशुभगदितायोगायाप्याभवन्तिशुभेक्षिताः ॥ २० ॥

अथविकलजन्मज्ञानार्थहरिण्याह ॥ रविशशियुतेइति । सिंहलमेर-  
विशशियुतेअर्कचंद्राभ्यांसंयुतेतथाभूतेकुजार्किनिरीक्षितेभौमसौराभ्यांदृष्टेनयन-  
रहितो नेत्ररहितोयोगभस्थोवाच्यः । अर्थादेवकेवलेसिंहलमेरुकेणयुक्तेसौ-  
रांगारकदृष्टेदक्षिणाक्षिकाणः । एवंसिंहलमेरुकेवलेनचंद्रेणयुक्तेसौरांगारकदृष्टे  
वामाक्षिकाणः । सौम्यासौम्यैः सवुद्धदलोचनइति । तस्मिन्नेवसिंहलमेरुकेचंद्रा-  
भ्यांयुक्तेसौम्यासौम्यैः शुभपापग्रहैर्दृष्टेगर्भस्थः सवुद्धदलोचनः पुष्पिताक्षोवाच्यः ।  
अत्राप्येकतमयुक्तेप्राग्वत्पुष्पिताक्षत्वंवाच्यम् ॥ व्ययगृहगतइति । निषेककाल-  
लमाज्जन्मलमाद्वयस्यचंद्रमाव्ययगृहगतोद्वादशस्थोभवति तस्यवामचक्षुर्हि-  
नस्तिवामाक्षिकाणः सभवतीत्यर्थः । एवंपरिवारादित्यो लमाद्वादशोऽपरंदक्षिणचक्षु-  
र्हिनस्ति । नशुभगदितायोगादिति । एतेयोगाः प्रागभिहितास्त्रिकोणगेज्ञइत्यादि-  
नाग्रंथेनशुभाशुभफलदास्तेषांसर्वेषामेवयोगानांयदायोगकर्तारोग्रहाः शुभग्रहैः  
सौम्यग्रहैर्दृष्टाभवन्ति तदातेयोगायाप्याभवन्ति पूर्णयथोक्तफलंनप्रयच्छन्ति किंतु  
किंचित्प्रयच्छन्तीत्यर्थः ॥ २० ॥

तत्कालमिन्दुसहितोद्विरसांशकोयस्तत्तुल्यराशिसहितेपुरतः  
शशांके ॥ यावानुदेतिदिनरात्रिसमानभागस्तावद्गतेदिननिशोः  
प्रवदन्तिजन्म ॥ २१ ॥

अथप्रभाधानकालेयोगवशात्प्रसवकालज्ञानंवसंततिलकेनाह ॥ तत्कालमिन्दुस-  
हित इति । तत्कालेप्रभकालेवायस्मिन्राशौचंद्रमावर्ततेतत्रचयस्मिन्द्वादशभागे  
व्यवस्थितः सतत्कालमिन्दुसहितोद्विरसांशकः । केचित्तुतत्कालिकेन्दुसहितोद्विर-  
सांशकइतिपठन्ति तत्कालिकेन्दुनायावत्संख्योद्वादशभागः सहितः । तत्तुल्यस्ताव-  
त्संख्योमेपादौगणनयायोराशिस्तत्रस्थेचंद्रमसिपुरतोऽग्रतोदशमेमासिगर्भस्यप्र-  
सवोवाच्यइतिकेचित् । तथाचसारावल्याम् ॥ यस्मिन्द्वादशभागेगर्भाधानेव्यव-  
स्थितश्चंद्रः । तत्तुल्यक्षेप्रसवंगर्भस्यसमादिशेत्प्राज्ञः ॥ अन्येपुनरेवंव्याचक्षते । आधान-  
कालेयत्रराशौचंद्रमाव्यवस्थितस्तत्रयावत्संख्योद्वादशभागोवर्तते तस्माद्वादश-  
भागराशेस्तावत्संख्योयएवपुरतोराशिस्तत्रस्थेचंद्रमसिदशमेमासिप्रसवोवक्तव्यः  
एषैवसाध्वीव्याख्या । यस्माद्भगवान्गार्गिः ॥ यावत्संख्येद्वादशांशेशीतरश्मिर्व्यव-  
स्थितः । तत्संख्योयस्ततोराशिर्जन्मेदौतद्गतेवदेत् ॥ अत्रापिनक्षत्रानयनेयमनुपातो-  
पायः । यदि चंद्राक्रांतद्वादशभागप्रमाणेनसकलचंद्रराशिरष्टादशशतलिप्ताप्र-  
माणोलभ्यते तदानेनभक्तद्वादशराशिप्रमाणेनकिमितिलब्धचंद्रराशिभुक्तंलभ्यते  
ततोष्टशतलिप्तापरिकल्पनयानक्षत्रमूहम् । अत्रापिदिनरात्रिकालज्ञानमाहायावानु



देतीति । दिनरात्रिसंज्ञाः पूर्वव्याख्याताः गोजाश्विककिमिथुनाइत्यादि ॥  
 आधानकालेप्रभकालेवायल्लभंतस्ययःप्रविभागः दिनसंज्ञोरात्रिसंज्ञोवायावानुदे-  
 तिस्वमानाद्यावत्कालभागोगतस्तावत्येवदिननिशोः स्वमानाद्रतेकालेजन्मभ-  
 विप्यतीतिवाच्यम् । एवंदिनस्यरात्रेर्वागतकालंहुद्धाप्रसवकालेलभहोराद्रेष्काण-  
 नवांशकद्वादशभागत्रिंशांशकावाच्याः । अत्रयेप्रवदंतिकथयंति तेषांतद्वाक्यंसारां-  
 वल्याम् । तत्कालंदिवसनिशासंज्ञः समुदेतिराशिभागोयः । यावानुदयस्तावान्वा-  
 च्योदिवसस्यरात्रेर्वा ॥ इत्याधानेप्रथमंप्रसूतिकालंसुनिश्चितंकृत्वा । जातकविहितं  
 चविधिविचिन्तयेत्तत्रगणितज्ञः ॥ २१ ॥

उदयतिमृदुभांशेसप्तमस्थेचमंदेयदिभवतिनिषेकःसूतिरब्द-  
 त्रयेण ॥ शशिनिनुविधिरेषद्वादशेव्देप्रकुर्यान्निगदितमिहचि-  
 त्यंसूतिकालेपियुक्त्या ॥ २२ ॥

इतिनिषेकाध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥

अधुनाधृतस्यगर्भस्यवर्षत्रयवर्षद्वादशज्ञानंमालिन्याह ॥ उदयतीति । मृदोःसौ-  
 रस्यभांशे । मृदुभांशेनिषेककालेयस्यतस्यलभस्योदयेमृदुभांशेशनैश्चरराशिन-  
 वांशकेमृगांशिकेकुंभांशिकेवोदयति तथाभूतेतस्मादेवलग्रान्मंदेशनैश्चरेतत्काले  
 सप्तमस्थेद्यूनगतेएवंविधयोगेयदिनिषेकआधानंभवतितदाधृतस्यगर्भस्याब्दत्र-  
 येणवर्षत्रयेणसूतिःप्रसवोवक्तव्यः । शशिनीति ॥ एषएवविधिर्यदाशशिनिचंद्रेभव-  
 तितदाद्वादशेव्देद्वादशेवर्षेसूतिःप्रसवंकुर्यादित्यर्थः । एतदुक्तंभवति । यस्यतस्यलभ-  
 स्योदयेयदाकर्कटांशकोदयोभवति तस्माल्लग्रान्सप्तमश्चंद्रोभवतितदाधृतस्यगर्भ-  
 स्यद्वादशेव्देप्रसवोवाच्यः ॥ निगदितमिहेति । इहास्मिन्नाधानाध्यायेआधानकाल-  
 योगवशाद्यथाहीनाधिकांगादीनांगर्भसंभवोभवति तथाप्रसूतिकालेपितादृग्योग  
 वशात्तथाविधानामेवजन्मवक्तव्यम् । पितृमातृपितृव्यमातृष्वमृणामपिशुभाशु-  
 भंजन्मकाललभवशात्तदनंतरमपिवक्तव्यम् । युक्त्येति । यन्नसंभवति तन्नवक्तव्यं  
 यथागर्भस्त्रावादिगर्भप्रसवकालनिर्देशादिच । एवमाधानकालात्प्रसवकालाच्च  
 यथैवोद्देशःकृतस्तथाप्रभकालादपिवक्तव्यः । उक्तंचजन्मन्याधानेप्रभकालेवेति २२

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौनिषेकाध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिदावपश्यति ॥

विदेशस्थस्य चरभेमध्याद्दृष्टे दिवाकरे ॥ १ ॥

अथातो जन्मविधिर्नामाध्यायो व्याख्यायते ॥ तत्रादावेव पितुः सन्निधावसन्निधौ वा जात इत्यनुष्टुभाह ॥ पितुर्जात इति । इन्दौ चंद्रप्रसवलग्रमपश्यतिसति पितुः परोक्षस्य जनकस्यासन्निधौ जातः । तत्र पितुरसन्निधाने स्वदेशपरदेशस्थितिज्ञानमाह ॥ विदेशस्थस्येति । दिवाकरे मूर्ये चरभे चरराशिस्थिते मध्याह्नमस्थानाद्भ्रष्टे पतिते एकादशद्वादशस्थेन वमाष्टमस्थानस्थे पितुर्विदेशस्थस्य अन्यदेशगतस्य जातः । चंद्रमसि प्रसवलग्रमपश्यत्येव पयोगो नान्यथेति । चंद्रप्रसवलग्रमपश्यति अकेंस्थिरराशिस्थे मध्याह्ने स्वदेशस्थस्यैव पितुः परोक्षे जातः । अस्मिन्नेव योगे द्विस्वभावस्थे कें मध्याह्ने स्वदेशपरदेशयोर्मध्योपस्थितस्य परोक्षे जातः अर्थादेव चंद्रप्रसवलग्रमपश्यत्येकं चरराशिस्थे स्थिरराशिस्थे वा द्विस्वभावराशिस्थे वा मध्याह्ने भ्रष्टेऽपि वा पितुः स्वदेशस्थस्यैव परोक्षे जात इति वक्तव्यम् । तथा च सारावल्याम् ॥ होरा मनीष्यमाणे पितरि न गेहस्थितेश्चिनिजातः । मेघूरणाच्च्युते वा चरगे भानौ विदेशगते ॥ १ ॥

उदयस्थेऽपि वामंदे कुजे वास्तं समागते ॥

स्थिते वांतः क्षपानाथे शशांकसुतशुक्रयोः ॥ २ ॥

अथान्यानपियोगाननुष्टुभाह ॥ उदयस्थ इति । मंदसौर उदयस्थे लग्नगते पितुः परोक्षस्य जातः अथ वा कुजे भौमे जन्मलग्नादस्तंसप्तमं स्थानं समागते प्राप्ते पितुः परोक्षस्य जात इति । स्थिते वांत रिति । क्षपानाथे चंद्रशशांकसुतशुक्रयोर्मध्यस्थे शशांकसुतो बुधः शुक्रो भार्गवः अनयोर्मध्यस्थिते चंद्रादेकोद्वादशेन्यो द्वितीये अथ वै कस्मिन् राशौ मध्यभागे पुचंद्रः स्थितः आद्यंतभागयोर्बुधशुक्रौ तथापि मध्यस्थः एवं विधेयोगे पितुः परोक्षस्य जातः । तथा च स्वल्पजातके ॥ चंद्रलग्नमपश्यति मध्ये वा सौम्यशुक्रयोश्चंद्रे । जन्मपरोक्षस्य पितुर्यमोदये वा कुजे चास्ते इति ॥ २ ॥

शशांके पापलग्ने वा वृश्चिकेश्चित्रिभागगे ॥

शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपि वा ॥ ३ ॥

अधुना सर्पज्ञानं सर्पवेष्टितज्ञानं चानुष्टुभाह ॥ शशांक इति । वृश्चिकेशो वृश्चिकस्वामी भौमः शशांके चंद्रे वृश्चिकेश्चित्रिभागगे भौमद्रेष्काणस्थे तत्र भौमद्रेष्काणः मेषप्रथमः कर्कटे द्वितीयः सिंहवृत्तीयः वृश्चिके प्रथमः धनुषि द्वितीयः मीने-



तृतीयः एषामन्यतमस्थस्यचंद्रमसः शुभैः शुभग्रहैः- स्वायस्थितैर्द्वितीयैका-  
दशस्थानस्थितैः सर्पउरगोजातइतिवक्तव्यम् । पापलभेवेति।एवंपापग्रहसंव-  
धिलग्नोदयेयदाभौमद्रेष्काणोभवति तत्रपापलभेभौमद्रेष्काणः भेषप्रथमः क-  
र्केद्वितीयः सिंहेतृतीयः वृश्चिकेप्रथमः धनुषिद्वितीयः मीनेतृतीयः ए-  
षामन्यतमस्योदयेलग्नग्राह्यदिशुभग्रहैर्द्येकादशस्थेस्तद्वेष्टितः सर्पवेष्टितोजंतुर्जात  
इतिवक्तव्यम्।अन्येपुनरेवंव्याचक्षते । चंद्रपापलभेवाभौमद्रेष्काणस्थेतस्मादेवशु-  
भग्रहैः स्वायस्थितैः विकल्पेनसर्पोवासर्पवेष्टितोवाजातइतिवक्तव्यम् । अत्रपू-  
र्वव्याख्यासाध्वी । यस्माद्भगवान्गार्गिः ॥ भौमद्रेष्काणगेचंद्रेसौम्यैरायधनस्थि-  
तैः । सर्पस्तद्वेष्टितस्तद्वत्पापलभेविनिर्दिशेत् ॥ तथाचसारावल्याम् । भौमद-  
काणगतेंदौलभेवासंस्थितेवदेज्जातम् । द्येकादशैः सौम्यैरहिवेष्टितकोभु-  
जंगोवा ॥ ३ ॥

चतुष्पादगतेभानौशेषैर्वीर्यसमन्वितैः ॥

द्वितनुस्थैश्चयमलौभवतःकोशवेष्टितौ ॥ ४ ॥

अधुनैकजरायुवेष्टितयोजन्मज्ञानमनुष्टुभाह॥चतुष्पादेति।भानौसूर्येचतुष्पादरा-  
शिगतेभेषवृषसिंहधन्विपरार्धमकरपूर्वार्धानामन्यतमस्थेशेषैरन्यैः सर्वग्रहैर्द्वित-  
नुस्थैर्द्विस्वभावराशिस्थितैः स्ववीर्यसमन्वितैर्वलिभिश्चकोशवेष्टितौएकजरायुवे-  
ष्टितौ यमलौजायेते ॥ ४ ॥

छागेसिंहेवृषेलग्नैतत्स्थेसौरैथवाकुजे ॥

राश्यंशसदृशेगात्रेजायतेनालवेष्टितः ॥ ५ ॥

अधुनानालवेष्टितजन्मज्ञानमनुष्टुभाह॥छागइति ।छागोमेषः सिंहःप्रसिद्धः वृ-  
षोवृषभः एतैः छागसिंहवृषैर्लग्नस्थितैः एषामन्यतमोयदिलग्नगतोभवति  
तत्स्थेसौरैथवाकुजेतस्मिच्छागसिंहवृषाणामन्यतमेलग्नगतेतत्स्थेतत्रस्थेसौरैश-  
नैश्चरेथवाकुजेभौमेतत्रस्थेनालवेष्टितोजंतुर्जायते । नालशब्देननाड्योविधीयते  
कस्मिन्नंगेवेष्टितइत्याह । राश्यंशसदृशेगात्रेइति । राशेरंशोराश्यंशः राशेः लग्न-  
स्ययोनवांशकस्तत्कालमुदितः सचयद्राशिसंबंधीसचराशिर्यस्मिन्नंशकालपुरु-  
षस्य व्यवस्थितः कालांगानीत्यादिनाग्रंथेननिरूपितस्तत्सदृशेगात्रेतास्मिन्ने-  
वांगेनालवेष्टितइतिवक्तव्यम् । तथाचसारावल्याम् ॥ सिंहाजगोभिरुदयेमूते-  
नालेनवेष्टितोजंतुः । लग्नकुजेथसौरैराश्यंशसमानगात्रेषु ॥ ५ ॥

नलग्नमिदुंचगुरुर्निरीक्षतेनवाशशांकरविणासमागतम् ॥

सपापकोर्केण्युतोथवाशशीपरेणजातंप्रवदंतिनिश्चयात् ॥ ६ ॥

अधुनाजारजातवंशस्थेनाह ॥ नलग्नमिति । गुरुर्जीवोलग्नमुदयमिदुंचंद्रचयदिन  
निरीक्षतेन पश्यति लग्नचंद्रावेकराशिस्थौ पृथक्स्थौ वा यदोभावपि गुरुणानदृश्ये-  
तेतदापरेणजारेणजातइतिनिश्चयात्प्रवदंतिकथयंतिमुनयः । अत्रयदिलग्नचंद्रौ  
जीवभागस्थौजीवनवांशकस्थौभवतः तदानपरजातइतिवक्तव्यम् । यस्माद्यव-  
नेश्वरः ॥ अजीवभागेप्यनवीक्षितेवाजीवेनचंद्रेथविलग्नभेवा । जातंपरोद्भूतमिति  
ब्रुवंतिवाच्योजनेनाथबलावल्लोकादिति ॥ १ ॥ नवाशशांकमिति । शशां-  
कंचंद्रविणासूर्येणसमागतंसंयुक्तंगुरुर्ननिरीक्षतेचंद्रार्कावेकराशिस्थौयदिचबृह-  
स्पतिनानदृश्येतेतदापरेणजातः अथवा शशीचंद्रः सपापकः पापग्रहेणभौमेन  
सौरेणवायुक्तः तथाविधोर्केणसूर्येणयदियुक्तोभवतितथापिपरेणजातइति अ-  
त्राप्यन्येजीवदृष्ट्यनुवर्तिव्याख्यानंकुर्वीति । तदयुक्तम् । यस्माच्चंद्रार्कावेकराशिगतौ  
पापयुक्तावयुक्तौवाजीवेनदृश्यमानावदृश्यमानौवाजारजातजन्मकरौ तत्रचं-  
द्रार्कयोगःपापेनसमेत्यकिंकृतंभवति तस्माच्चंद्रार्कावेकराशिगतौ अपापौ  
जीवेनादृश्यमानौसपापौजीवेनदृश्यमानौ अदृश्यमानौवाजारजातजन्मकरौ  
निश्चयादवश्यंभवतः । अत्रचंद्रमायदिगुरुगृहेतद्वेष्काणतन्नवांशकद्वादशभाग-  
त्रिंशद्भागस्थोभवति अन्यत्रवाराशौगुरुणायुक्तस्तदानजारजातइति । यस्मा-  
द्भगवान्गार्गिः ॥ गुरुक्षेत्रगतेचंद्रेतद्युक्तेवान्यराशिगे । तद्वेष्काणेतदंशवानपरै-  
र्जातइष्यते ॥ ६ ॥

क्रूरक्षगतावशोभनौसूर्याद्यून्ननवात्मजस्थितौ ॥

बद्धस्तुपिताविदेशगःस्वेवाराशिवशादथोपथिं ॥ ७ ॥

अथजातस्यपितृबंधनयोगज्ञानंवैतालीयेनाह ॥ क्रूरक्षगताविति । क्रूरक्षाणि क्रू-  
रग्रहराशयः मेघसिंहवृश्चिकमकरकुंभाः कृष्णपक्षेक्षीणचंद्रेकर्कटः पापयुक्तेषुधे-  
पिकन्यामिथुने अशोभनौपापौ शनिभौमौक्रूरक्षगतौपापक्षेत्रस्थितौसूर्याद्रवे-  
द्यूननवात्मजस्थितौ द्यून्नंसप्तमंनवमंप्रसिद्धं आत्मजस्थानंपंचममेषामन्यतमस्थौ  
भवतस्तदाजातस्यपिताजनकोबद्धोवाच्यः । तस्यादित्याक्रांतराशिवशाद्वंधन-  
देशज्ञानमाह ॥ स्वेवाराशिवशादथोपथीति । चरराशिस्थेऽर्केपरदेशेबद्धः स्थिररा-  
शिस्थेर्केस्वदेशेद्विस्वभावेपथिमार्गे एवराशिवशात्स्थानपरिज्ञानम् । अथोइत्ययं  
निपातोविकल्पे । केचित्स्वेवाराशिवशात्तथापथीतिपठन्ति ॥ ७ ॥

पूर्णे शशिनिस्वराशिगेसौम्येलग्नगते शुभे सुखे ॥

लग्ने जलजेस्तगेपि वा चंद्रे पोतगता प्रसूयते ॥ ८ ॥



अधुनापोतगताप्रसवज्ञानंवैतालीयेनाह ॥ पूर्णइति । शशिनिचंद्रपूर्णेपरिपूर्णमंडलेतस्मिंश्चस्वराशिगेकर्कटस्थितेतथासौम्येबुधेलग्रगतेउदयस्थे शुभेजीवे उदयात् सुखेचतुर्थेपोतगतानौस्थाप्रसूयते इतिवक्तव्यम् । तत्रान्येशुभैः सुखइतिपठंतिपठित्वाचैवंव्याचक्षते । शुभैःसुखे चतुर्थभवनेशुभैरितिवहुवचनंनघटते । लग्नेबुधउक्तःशुक्रबृहस्पतीशेषौशुभाभ्यामित्येवंप्राप्नोति । यत्क्रियतेशुभैरितितस्मादेवमवसीयते । पूर्णश्चंद्रमाःशुक्रबृहस्पतिभ्यांयुक्तोभवति तदाशुभैरितिभवति एतच्चमेषलग्नेतत्रस्थेबुधेपूर्णचंद्रेशुक्रबृहस्पतिभ्यांसमायुक्ते कर्कटव्यवस्थितेसर्वयुज्यतइति । अयंपाठोमध्याख्यानेनयुक्तः यस्मान्मकरावस्थितेऽर्ककर्कटस्थश्चंद्रमाः पूर्णोभवति मकरव्यवस्थितेचार्कमकराच्चतुर्थभवनेमेषेबुधस्यसंभवोनास्ति । किंपुनर्मकरात्सप्तमराशौकर्कटकेशुक्रस्याप्यवस्थानमिति । तस्माच्छुभेसुखेइतिसप्तम्येकवचनांतएवपाठोन्याय्यः ॥ शुभेसुखइति । तत्कथंजीवोव्याख्यातः । उच्यते । बुधोलग्रगतस्तस्माच्चतुर्थेशुक्रस्यावस्थानंसंभवति अतोजीवइतिव्याख्यातम् । केचित्पूर्वशास्त्रानुसारेणेतिशुक्रइच्छन्ति।अथपोतगताप्रसवयोगोद्वितीयः । लग्नेजलजइति । लग्नेजलजेजलराशौकर्कटमकरपश्चिमाद्धमीनानामन्यतमेतस्मादस्तगेसप्तमस्थानस्थेचंद्रेपूर्णेवा पूर्णेचपोतगतैवप्रसूयतइति । वाशब्दःप्रकारार्थः ॥ ८ ॥

आप्योदयमाप्यगःशशीसंपूर्णःसमवेक्षतेथवा ॥

मेपूरणबंधुलग्नःस्यात्प्रमूतिःसलिलेनसंशयः ॥ ९ ॥

अथोदकमध्यप्रसवज्ञानंवैतालीयेनाह ॥ आप्योदयमिति । आप्यराशयो मकरपश्चिमाद्धर्कमीनास्तेषामन्यतमस्योदयआप्योदयः ॥ जलराशिलग्नैभवतिशशीचंद्रश्चाप्यगोजलराशिस्थस्तदामूतिःप्रसवःसलिलेजलसमीपे नसंशयः निश्चयाद्वाच्यः । अथवासंपूर्णःशशीलग्नमाप्योदयंसमवेक्षतेपश्यति तथापिसलिलेजलसमीपेप्रमूतिः ॥ मेपूरणबंधुलग्नइति । अथवाप्यराशाबुदयगतेमेपूरणबंधुलग्नोमेपूरणेदशमेबंधुस्थानेचतुर्थेलग्नेप्रागलग्नेस्थितःस्याद्भवेत्तथापि सलिलेप्रमूतिरितिबदेत् । तथाचसारावल्याम् । सलिलभलग्नेचंद्रोजलराशौवीक्षतेथवापूर्णः ॥ प्रसवंसलिलेविद्याद्धूदयदशमगश्चयदा ॥ ९ ॥

उदयोडुपयोर्व्ययस्थितेगुप्त्यांपापनिरीक्षितेयमे ॥

अलिकर्कियुतेविलग्नगैसौरेशितकरेक्षितेवटे ॥ १० ॥

अधुनावंधनागारावटयोः प्रसवज्ञानंवैतालीयेनाह।उदयेति।उदयोलग्रमुहुपश्चंद्रः तयोरुदयोडुपयोरिकराशिस्थयोर्यमेसौरेव्ययस्थितेद्वादशस्थेतस्मिंश्चपापनिरीक्षिते

तेगुप्त्यांबंधनागारेप्रसूयतइतिवक्तव्यम् । सौरेशनैश्वरेअलिककिंयुतवृश्चिककुलीर-  
योरन्यतमस्थेविलग्नगेतस्मिंश्चशीतकरेक्षितेचंद्रदृष्टेऽवटेश्वरेप्रसूतिर्वक्तव्या । १० ॥

मंदेब्जगतेविलग्नगेबुधसूर्येन्दुनिरीक्षितेक्रमात् ॥

क्रीडाभवनेसुरालयेसोखरभूमिषुचप्रसूयते ॥ ११ ॥

अथक्रीडागृहदेवालयसोखरभूमिप्रदेशेषुप्रसवज्ञानंवैतालीयेनाह॥ मंदेइति। मंदे  
शनैश्चरेऽब्जगतेजलराशिस्थेतथाभूतेविलग्नगेप्राग्लग्नस्थेक्रमात्परिपाट्याबुधसू-  
र्येन्दुनिरीक्षितेक्रीडाभवनेसुरालयेसोखरभूमिषुचप्रसूयतइतिवदेत् । एतदुक्तंभवति  
शनैश्चरेजलराशिस्थेलग्नगेतेबुधनिरीक्षितेबुधदृष्टेक्रीडाभवनेरतिगृहेप्रसूयते । एवं  
सूर्येणार्केणनिरीक्षिते सुरालयेदेवगृहे इन्दुनाचंद्रेणनिरीक्षिते सोखरभूमिषुसवालु-  
कास्ववनिषुप्रसूयतइति ॥ ११ ॥

नृलग्नगंप्रेक्ष्यकुजःश्मशानेरम्येसितेंदूगुरुरग्निहोत्रे ॥

रविर्नरेंद्रामरगोकुलेषुशिल्पालयेज्ञःप्रसवंकरोति ॥ १२ ॥

अथश्मशानरम्यप्रदेशाग्निशालानृपदेवगृहगोकुलाशिल्पालयप्रसवज्ञानमुपजा-  
त्याह॥ नृलग्नगमिति। पूर्वश्लोकान्मंदइत्यनुवर्ततेप्रत्यासन्नत्वात्। नृलग्नगंनरराशिल-  
ग्नस्थितंनरराशयोमिथुनकन्यातुलाधन्विपूर्वार्धकुंभाः तत्रगतंशनैश्चरंकुजोंगारकः  
प्रेक्ष्यदृष्ट्वाभौमोयदिपश्यति तदाश्मशानेप्रसवंजन्मकरोति । केचिनृलग्नदर्शी  
क्षितिजइतिपठन्ति। नृलग्नगंपश्यतितच्छीलोनृलग्नदर्शीक्षितिजः। रम्येसितेंदूइति ।  
नरराशिलग्नगतंशनैश्चरयुक्तंसितः शुक्रःइंदुश्चंद्रोवापश्यतितदारम्येरमणीयेप्रदे-  
शेजन्मएवंविधंसौरं गुरुर्जीवः पश्यतितदाअग्निहोत्रेऽग्निशालायाम् । एवंविधंसौ-  
रिरविः पश्यति तदानरेंद्रामरगोकुलेषुनरेंद्रगृहेराजवेशमनिअमरगृहेदेवागारेवा  
गोकुलेगोशालायांप्रसूतिः। एवमेवबुधेनदृष्टेसौरेशिल्पालयेशिल्पिगृहेचित्रपुस्त-  
ककरवर्धकिप्रभृतीनांशिल्पिनामालयेगृहेप्रसूतिरिति । तथाचसारावल्याम्। रवि-  
जेजलजविलग्नक्रीडाघानेबुधेक्षितेप्रसवः॥ रविणादेवागारेतथोखरेचैवचंद्रेण १॥  
आरण्यभवनलग्नगिरिवनदुर्गेतथानरविलग्नग्रे । रुधिरेक्षितेश्मशानेशिल्पिकनिल-  
येचसौम्येन ॥ तथाचवादरायणः। सूर्येक्षितेगोनृपदेववासेशुक्रेंदुजाभ्यांरमणीय-  
देशे ॥ सुरेज्यदृष्टे द्विजवन्दिहोत्रेनरोदयेसंप्रवदंतिसूतिम् ॥ १२ ॥

राश्यंशसमानगोचरेमार्गेजन्मचरेस्थिरेगृहे ॥

स्वर्क्षांशगतेस्वमंदिरेवलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ १३ ॥



अथप्रसवदेशज्ञानंवैतालीयेनाह॥राश्यंशेति।राशिश्चअंशश्चतद्वाश्यंशंराशिल-  
भराशिरंशोनवांशकः लभराशेस्तन्नवांशकस्यवायः समानः सदृशःस्वात्मीयगोच-  
रोविषयःखचराश्चसर्वइत्यनेनप्रदर्शितःतत्रयास्मिन्यस्मिन्प्रदेशेयोयोराशिरूपःप्रा-  
णीसंचरतितत्रयोमार्गः पंथास्तस्मिञ्जन्म । यदिचरेलभराशिस्तन्नवांशकोवा-  
चरोभवति अथलभराशिस्तन्नवांशकोवास्थिरस्तदाराशिस्वरूपतुल्यस्यप्राणिनः  
यस्मिन्गृहेयत्रप्रसवेसतितत्स्थाने । राशिस्वरूपतुल्यस्यप्राणिनोयद्गृहंसमीपस्त-  
त्रप्रसवइत्यर्थः।स्वर्क्षांशगतइति । चरस्यस्थिरस्यद्विस्वभावस्यवाराशेर्लभगतस्य  
स्वर्क्षांशआत्मीयनवांशकोदयोयदाभवति तदास्वर्गमंदिरे आत्मीयगृहेएवजन्मव-  
क्तव्यम्।तत्रराश्यंशसमानगोचरेमार्गेजन्मइत्यादिसामान्येनोक्तं तत्रज्ञायतेकिंल-  
भराशिसमानगोचरे किमंशसमानगोचरेप्रसवादेशःक्रियतांतदर्थमयंनिश्चयः ॥  
बलयोगादिति । अंशकोनवांशकः ऋक्षंराशिः अनयोर्वलयोगात्फलंप्रसव-  
स्थानज्ञानम् । एतदुक्तंभवति लभराशेर्नवांशकराशेश्चयोबलवांस्तत्समानगोचरे-  
षुमार्गगृहसमीपेषुप्रसवोवक्तव्यः।अत्रपूर्वोक्तयोगाभावेराश्यंशसमानगोचरमार्गा-  
दिषुप्रसवोवक्तव्यः । तेषांसंभवेयोगोक्तप्रदेशेष्वेवप्रसवोवक्तव्यः ॥ १३ ॥

आराकंजयोस्त्रिकोणगेचंद्रेऽस्तेचविसृज्यतेवया ॥

दृष्टेमरराजमंत्रिणादीर्घायुःसुखभाक्चसस्मृतः ॥ १४ ॥

अथयस्मिन्योगेजातोमात्रात्यज्यतेयस्मिंश्चयोगेजातस्त्यक्तोपिमात्रादीर्घायु-  
सुखीचभवति तद्योगद्वयंवैतालीयेनाह॥आराकंति।चंद्रेशाशिन्याराकंजयोर्भौमः  
सौरयोरेकराशिगतयोस्त्रिकोणगेनवमस्थेपंचमस्थेवाऽस्तेचसप्तमेस्थानेस्थितेजा-  
तोवयामात्राविसृज्यतेत्यज्यते । एवंविधेयोगेचंद्रमसिअमरराजमंत्रिणागुरुणा  
दृष्टेमात्रात्यक्तोपिपरहस्तगतोपिदीर्घायुः चिरजीवीसुखभाक्चभवति ॥ १४ ॥

पापेक्षितेतुहिनगाबुदयेकुजेऽस्तेत्यक्तोविनश्यतिकुजार्कजयो-  
स्तथाये ॥ सौम्येपिपश्यतितथाविधहस्तमेतिसौम्येतरेषुपर-  
हस्तगतोप्यनायुः ॥ १५ ॥

अथयस्मिन्योगेजातोमात्रात्यक्तोविनश्यतितद्वसंततिलकेनाह ॥ पापेक्षितइ-  
ति । तुहिनगौचंद्रेपापेक्षितेपापग्रहदृष्टेसौरेणार्केणवेत्यर्थः।तथाभूतेउदयेलभेस्थि-  
तेकुजेर्भौमेचाऽस्तेसप्तमस्थाने जातोमात्रात्यक्तोविनश्यति म्रियतइत्यर्थः । कु-  
जार्कजयोरिति । तथातेनैवप्रकारेणलगते चंद्रमसिपापेक्षितेसूर्यदृष्टेकुजार्क-  
जयोर्भौमशनैश्चरयोरायेलग्रादेकादशेस्थितयोर्जातो मात्रात्यक्तोपि विनश्यति

म्रियतइत्यर्थः।सौम्येपिपश्यतीति । पूर्वोक्तयोगस्थेचंद्रमसिपापदृष्टेसौम्येशुभग्र-  
हेपिपश्यतिसति जातोमात्रात्यज्यते त्यक्तोपियादृग्वर्णप्रभुणासौम्यग्रहेणचंद्र-  
मसादृष्टस्तथाविधस्यहस्तमेतितादृग्वर्णस्यब्राह्मणादेर्हस्तंगच्छतितेनधार्यतेजी-  
वतिच । अथास्मिन्नेवयोगेस्थितश्चंद्रमाः पापेनकुजेनसूर्येणसौरेणवादृश्यतेऽ-  
न्येनसौम्यग्रहेणचदृश्यते तदाजातस्तयोर्द्रष्टृग्रहयोर्बलवांस्तादृग्वर्णस्यब्राह्म-  
णादेर्हस्तंगतोपिविनश्यति।यदुक्तम् । सौम्येतेरेपुपरहस्तगतोप्यनायुरिति।ननुय-  
थायोगस्थेचंद्रमसिसौम्यैः पापैश्चदृश्यमानेमात्रात्यक्तोविनश्यतीत्यभिहितं  
त्रक्षत्रियवैश्यशूद्रवर्णसंकरादिपुहस्तगतः सर्वएवविनाशमाप्नोति । बहवश्च  
मात्रात्यक्ताः क्षत्रियादिवर्णसंकरगताश्चजीवमानादृश्यन्ते तस्मात्पूर्वश्लोकादृष्टेऽ-  
मरराजमंत्रिणादीर्घायुः सुखभाक्चसस्मृतइत्येतदिहशेषभूतमवगंतव्यम् । त-  
स्माद्बुधेनशुकेणवायथादर्शितयोगस्थश्चंद्रमादृश्यते जीवेननदृश्यते तदापर-  
हस्तगतोपिम्रियते । यदापापेनसौम्येनवादृश्यमानोपिजीवेनदृश्यतेतदाद्रष्टृग्रह-  
योर्बलवशात्तद्वर्णस्यब्राह्मणादेर्हस्तगतोजीवति । तथाचसारावल्याम् । म्रियते  
पापैर्दृष्टे शशिनिविलम्बेकुजेस्तगेत्यक्तः ॥ लग्नाच्चलाभगतयोर्वसुधासुतमंदयोरे-  
वम्।पश्यतिसौम्योबलवान्यादृगृह्णातितादृशोजातम् । शुभपापग्रहदृष्टेपरैर्गृही-  
तोप्यसौम्रियते ॥ सर्वेष्वेतेषुयदायोगेषुशशिसुरेज्यसंदृष्टः । भवतितदादीर्घायुर्ह-  
स्तगतः सर्ववर्णेषु ॥ १५ ॥

पितृमातृगृहेषुतद्वलात्तरुशालादिषुनीचगैःशुभैः ॥

यदिनैकगतैस्तुवीक्षितौलर्ग्रेदूविजनेप्रसूयते ॥ १६ ॥

अधुनाप्रसवगृहज्ञानंवैतालीयेनाह॥पितृमातृगृहेष्विति।पितृमातृगृहादिवार्क-  
शुक्रावित्यादिनोक्तास्तद्वलात्पितृमातृग्रहवीर्यात्पितृमातृगृहेषुप्रसूयतइतिवदेत् ।  
तत्रार्कशनेश्चरयोरन्यतमेबलवतिपितृगृहेपितृष्वसृपितृव्यादिसंबन्धिगृहेप्रसूतिः।  
एवंमातृग्रहयोश्चंद्रशुक्रयोरन्यतमेबलवति मातृगृहेमातृष्वसृमातुलादिगृहे प्रसू-  
तिः।तरुशालादिषुनीचगैः शुभैरिति । बहुवचनात्सर्वएवशुभग्रहाः यदानीचस्था  
भवंतितदातरुपुवृक्षेषुशालासुप्रसवोवाच्यः । आदिग्रहणान्नदीकूपारामपर्वता-  
दिप्रदेशेष्वनावृतेषुइति।यदिनैकगतैरिति । नीचगैःशुभैरित्यनुवर्तते।सर्वेशुभग्रहाः  
नीचगतास्तैर्लग्नेदूदयचंद्राबुभावप्येकराशिगतैर्ग्रहैर्बहुवचनान्निप्रभृतिभिर्यदा  
नदृश्यतेतदाविजनेजनरहितस्थानेऽटव्यांप्रसूतिरिति।यदापुनरेकस्थैर्बहुभिर्ग्रहैर्ल-  
ग्नेदूदृश्यतेतदाजनाकीर्णंप्रसूतिरिति । तथाचसारावल्याम् । पितृमातृग्रहवर्गेत-  
त्स्वजनगृहेषुबलयोगात् । प्राकारतरुनदीषुचमूतिर्नीचाश्रितैःसौम्यैः॥नेक्षेतैर्लग्ने-  
दूयद्येकस्थाग्रहास्तदाटव्याम् ॥ १६ ॥



मंदक्षांशेशशिनिहिबुकेमंददृष्टेऽब्जगेवातद्युक्तेवातमसिशयनं  
नीचसंस्थैश्चभूमौ ॥ यद्द्राशिर्ब्रजतिहरिजंगर्भमोक्षस्तुतद्व-  
त्पापैश्चंद्रस्मरसुखगतैःक्लेशमाहुर्जनन्याः ॥ १७ ॥

अधुनादीपसंभवासंभवभूपदेशप्रसवज्ञानंगर्भमोक्षमातुः सूतिकाले तन्निमित्त-  
क्लेशज्ञानंचमंदाक्रांतयाह ॥ मंदक्षांशइति। शशिनिचंद्रेयत्रतत्रराशौमंदक्षांशेशनैश्चर-  
स्यनवभागेमकरकुंभयोरन्यतमांशकस्थेतमस्यंधकारेभूतिकाशयनंवक्तव्यम् ॥ हि-  
बुकेलभाच्चतुर्थस्थेचंद्रेऽधकारएवशयनम् । यत्रतत्रावस्थितेचंद्रेमंदेनसौरिणदृष्टेऽ-  
धकारएव । अब्जगेवेति । अब्जराशीअत्रकर्कटमीनौद्रौविज्ञेयौ मकरकुंभयोरुक्त-  
त्वात् । मंदक्षांशइत्यादिनेति । तेनयत्रतत्रराशौकर्कटनवांशकस्थेचंद्रेतमस्यं-  
धकारएव । मीननवांशकस्थेवातमस्यंधकारएव । तद्युक्तेवेति। तदिति सौरः परा-  
मृश्यते। यत्रतत्रावस्थितेचंद्रेसौरयुक्तेधकारएव । एवंनिषेककालेनारीशयनमपि ।  
सर्वेष्वेतेपुयोगेपुयदार्कदृष्टश्चद्रमाभवतितदांधकाराभावः । यस्माद्यवनेश्वरः ।  
सौरांशकस्थेशशिनिप्रलभेजलेजलाख्यांशकमाश्रितेवा । स्वांशस्थितेकेंद्रगतेर्क-  
जेवाजातस्तमिस्त्रेयदिनार्कदृष्टः ॥ १ ॥ अन्येषांमंतंयथा । सूर्येवलवतिभौमेन  
दृष्टेसत्त्वपियोगेष्वांधकाराभावः । तथाचसारावल्याम्।वलवतिसूर्येदृष्टेवहुप्रदी-  
पाधराकुपुत्रेण । अन्यैर्व्यपगतवीर्यैःभूतौज्योतिस्तृणैर्भवति ॥ सौरांशेजलजांशे  
चंद्रेऽर्कयुतेथवाहिबुके । तद्दृष्टेवाकुर्यात्तमसिप्रसवनंसंदेहः । नीचसंस्थैश्चभूमा-  
विति । शयनमित्यनुवर्तते । बहुवचनाद्यथासंभवंत्रिप्रभृतिभिर्ग्रहेर्नीचस्थैर्भूमौ  
शयनंवाच्यम् । भूशब्देनात्रतृणास्तृताभूज्ञेया । केचिल्लभस्थेचतुर्थस्थेवानीचगते  
चंद्रेभूशयनमिच्छंति। तथाचसारावल्याम् । नीचस्थेभूशयनंचंद्रेप्यथवासुखेवि-  
लभेवा ॥ यद्वदिति। प्रसवलमराशिर्यद्द्वयेनप्रकारेणहरिजं ब्रजत्युदयलेखांपरित्य-  
जतितद्वत्तेनैवप्रकारेणनार्यागर्भमोक्षोवाच्यः । यत्राकाशभूम्यासहसंसक्तंसमंता-  
दृश्यतेतद्वरिजम् । उक्तंच। हरिजमितिगगनमवनौसंपृक्तमिवलक्ष्यतेयथोक्तेषु। त-  
द्यथा शीर्षोदयेषुलभेपूतानास्योदरंदर्शयतोर्गर्भस्यमोक्षोवाच्यः पृष्ठोदयेष्वाधो-  
मुखस्यपृष्ठंदर्शयतः मीनोदयेपार्श्वंदर्शयतः । तथाचसारावल्याम् । शीर्षोदयेवि-  
लभेमूर्ध्नाप्रसवोन्यथोदयेचरणैः । उभयोदयेचहस्तैः शुभदृष्टेशोभनोन्यथाकष्टः ॥  
केचिदेवंव्याचक्षते । यथालग्राधिपोनवांशकाधिपोवा लग्नस्थोवाग्रहोवक्रीभवति  
तदावैपरीत्येनगर्भमोक्षोभवति । तथाचमणित्थः । लग्राधिपेशकपतौलग्नस्थेव-  
क्रितेग्रहेप्यथवा। विपरीतगतोमोक्षोवाच्योर्गर्भस्यसंक्लेशः । पापैरिति । पापग्रहै-  
श्चंद्रगतैःशशिनासहव्यवस्थितैःस्मरगतैर्लग्नात्सप्तमस्थैर्वा सुखगतैर्लग्नाच्चतुर्थ-  
स्थैर्वाप्रसवकालेजनन्यामातुःक्लेशमाहुःकष्टंकथयंतिमूरयः । तथाचसाराव-  
ल्याम् । क्लेशोमातुः क्रूरैर्वध्वस्तगतैः शशांकयुक्तैर्वा ॥ १७ ॥

स्नेहःशशांकादुदयाच्चवर्तिर्दीपोर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः ॥

द्वारंचतद्वास्तुनिकेंद्रसंस्थैर्ज्ञेयंगृहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ १८ ॥

अथदीपगृहद्वारज्ञानमिद्वचन्याह ॥ स्नेहःशशांकादिति।शशांकाच्चंद्रास्नेहो वाच्यः जन्मकालेपूर्णचंद्रमसिस्नेहेनपूर्णदीपभाजनंवक्तव्यम् । क्षीणेक्षीणस्नेहाक्तमिति।तथाचसारावल्याम्।दीपःपूर्णः पूर्णेशशिनिक्षीणेक्षयस्तुतैलस्य॥यद्येवंतदामावास्यायांसर्वेषामंधकारेप्रसवोभवति तस्मादयुक्तमेतत् । तेनयत्रराशौचंद्रमा व्यवस्थितस्तत्रयदिराशिप्रारंभेस्थितोभवतितदादीपभाजनंस्नेहेनपूर्णवक्तव्यम्। यत्रराश्यवसानेस्थितस्तत्रस्नेहाक्तम्।मध्यप्रातेऽर्धम्।अन्यत्रानुपातादिति।उदयाच्चवर्तिः उदयाल्लभादीपवर्तिरादेश्या लभारंभेतत्क्षणदत्तावर्तिरादेश्या मध्येअर्धदग्धावर्तिः लभावसानेवर्तिदाहोवाच्यः । अंतरेनुपातः । तथाचसारावल्याम् । यावल्लभादुदितंवर्तिर्दग्धातुतावतीभवति ॥ दीपोर्कयुक्तर्क्षवशादिति । अर्कोरविस्तद्युक्तराशिवशाच्चराद्योदीपोवाच्यः । तत्रचरराशिव्यवस्थितेर्केसंचार्यमाणोदीपआदेश्यः स्थिरराशिस्थेर्केएकदेशस्थः । द्विस्वभावस्थेर्केचलितप्रतिष्ठितइति । केचिद्वदन्ति यथायस्मिन्राशावर्कःस्थितः सराशिर्यस्यांदिशिस्थितः प्रागादीशः क्रियवृषनृयुक्कर्कटेत्यादिनाप्रदर्शितस्तस्यां दिशिदीपआदेश्यः । अन्येएवंवदन्ति यथायस्यां दिशिअर्कोभ्रमवेशेनाष्टप्रहरकल्पनयाष्टासुदिक्षुपरिभ्रमतितेनैवक्रमेणयस्यांदिशिव्यवस्थितः तस्यां दिशिगृहस्यदीपस्थानमिति।तथाचसारावल्याम् । द्वादशभागविभक्तेवासगृहेवस्थितेसहस्रांशौ।दीपश्चरस्थिरादिपुतथैववाच्यःप्रसवकाले । अत्रप्राच्यादिक्रमेण गृहंद्वादशधाविभज्यमेषादिगणनयार्कराशिर्यत्रभवतितत्रदीपस्थानमिति।केचिल्लभस्ययादृशोवर्णस्तादृग्वर्णादीपवर्तिमिच्छन्ति।तथाचमणित्थः ॥ लभस्ययोत्रवर्णोनिर्दिष्टस्तेनवर्तिरादेश्या।द्वारंचद्वस्तुनीति । तद्वास्तुनिसूतिकागृहेलभात्केन्द्रस्थैर्ग्रहैर्द्वारादेशः कार्यः तस्यग्रहस्ययादिकप्राच्याद्यारविशुक्ललोहिततमइत्यादिनोक्ताः तदिगभिमुखंसूतिकागृहंवक्तव्यं बहुपुकेन्द्रेषुचलवद्ब्रह्मवशात् । शून्येषुकेन्द्रेषुतल्लभराशिवशात् लभस्ययादिकतदभिमुखम् । यस्मादनेनैवस्वल्पजातकेउक्तम्।द्वारंवास्तुनिकेंद्रोपगताद्ब्रह्मादसतिवाविलभर्क्षात्।अन्येवदन्ति।यथा।लभद्वादशभागराशिदिगभिमुखंसूतिकागृहद्वारं।तथाचमणित्थः।लभेयोद्विरसांशस्तदभिमुखंसूतिकागृहेद्वारम् । एतच्चसंवादेनापिदृष्टमिति।वीर्यसमन्वितादित्युत्तरत्रसंबध्यते।केचिद्वदन्ति । यथावीर्यसमन्विताद्ब्रह्माद्ब्रह्मद्वारंवदेत् । तथाचसारावल्याम् । वासगृहोद्यानगतंद्वारंदिकपालकाद्वलोपेतादिति ॥ १८ ॥



जीर्णसंस्कृतमर्कजेशितिसुतेदग्धनवंशीतगौकाष्टाढ्यंनदृढं-  
वौशशिसुतेतत्रैकशिल्प्युद्भवम् ॥ रम्यंचित्रयुतंनवंचभृगुजे  
जीवेदृढमंदिरंचक्रस्थैश्चयथोपदेशरचनांसामंतपूर्वावदेत् ॥ १९॥

अधुनामूतिकागृहस्वरूपज्ञानंशार्दूलविक्रीडितेनाह॥जीर्णसंस्कृतमिति। वीर्य-  
समन्वितादित्यनुवर्तते सर्वग्रहेभ्योर्कजेसौरेवीर्यवतिसवले जीर्णमितिचिरंतनं  
भूयःसंस्कृतंमूतिकागृहंवक्तव्यम् । क्षितिसुते भौमेबलवत्याग्निनादग्धं शीतगौचंद्रे  
नवं शुक्लपक्षेउपलितंवदेत्।यस्माद्यवनेश्वरः ॥ संवर्धताचंद्रमसोपलितमिति।का-  
ष्टाढ्यंनदृढंरवाविति।रवावादित्येकाष्टाढ्यंदारुबहुलं नदृढमसारं शशिसुतेबुधे  
तद्वहमनेकशिल्प्युद्भवंबहुविधशिल्पिरचितम् । रम्यंचित्रयुतमिति।भृगुजेशुक्लेरम्यं  
रमणीयंमनोरमंचपरं नवंनूतनंचित्रयुतंचित्रकर्मयुक्तम् । जीवेगुरौदृढंचिरकाल-  
स्थायि।चक्रस्थैर्भचक्राधिरुद्वैर्गृहदातृग्रहसमीपस्थैरन्यैर्ग्रहैः सामंतपूर्वासमंतात्स-  
र्वदिभ्युथोपदिष्टांवदेद्भूयात् सामंतपूर्वाप्रतिवेशिमकवेशमनांसमंतात्क्रमेणेत्यर्थः ।  
यथागृहदातृग्रहस्यपुरतः पश्चाद्वापाश्वयोर्वाऽन्येग्रहाव्यवस्थितास्तेनैवक्रमेणसू-  
तिकागृहस्यान्यानिप्रतिवेशमगृहाणिवाच्यानि।अन्येसामंतपूर्वामितिपठंति समं-  
ताद्वहपर्यंतपूर्विकांरचनामिति । तथाचसारावल्याम् । भवनग्रहसंयोगैः प्रतिवे-  
शमाश्रितनीयाश्च॥देवाल्यांबुपावककौशविहाराद्यवस्करस्थानम्।निद्रागृहंचभा-  
स्करशशिकुजगुरुभार्गवार्किबुधयोगात्।अत्राचार्येणभूमिकाप्रमाणंनोक्तंत्रिशाल-  
द्विशालज्ञानंचतदुच्यते । बृहस्पतौकर्कटस्थेपरमोच्चाद्दृष्टेलमादशमगोद्विभूमिक-  
मुच्चभागेष्वर्वाक्स्थितेत्रिभूमिकम्।उच्चभागस्थेचतुर्भूमिकंधनुपिसवलेदशमस्थान  
स्थेगुरौत्रिशालंतद्वहम्।मिथुनकन्यामीनस्थेद्विशालम्। उक्तंचस्वल्पजातके॥गुरु-  
च्चेदशमस्थेद्वित्रिचतुर्भूमिकंकरोतिगृहम्। धनुपिसवलेत्रिशालंद्विशालमन्येषुविम-  
लेष्विति ॥ १९ ॥

मेषकुलीरतुलालिवटैःप्रागुत्तरतोमुरुसौम्यगृहेषु ॥

पश्चिमतश्चवृषेणनिवासोदक्षिणभागकरौमृगसिंहौ ॥ २० ॥

अथसमस्तवास्तुनिकसूतिकागृहमितितद्विज्ञानंदोधकेनाह ॥ मेषेति । मेषः  
प्रसिद्धः कुलीरः कर्कटः तुलातुलएव अलिर्धृश्चिकः घटः कुंभः एषामन्य-  
तमेलग्रेवास्तुनिप्राग्भागेनिवासःमूतिकास्थानंवक्तव्यम् । अंशेवा उत्तरतोमुरुसौ-  
म्यगृहेषु । गुरुगृहेधन्विमीनौ सौम्यगृहेमिथुनकन्ये । एतेषुलभेषुतदंशकेषु

चौत्तरतोवास्तुनिसूतिकागृहंवाच्यम् । वृषेणतदंशकेनचगृहपश्चिमभागेमूतिका-  
गृहम् । मृगसिंहौ मकरकेसरिणौदक्षिणभागकराविति । दक्षिणभागेमूतिका-  
गृहंकुरुतः ॥ २० ॥

प्राच्यादिगृहेक्रियादयोद्वौद्वौकोणगताद्विमूर्तयः ॥

शय्यास्वपिवास्तुवद्वदेत्पादैःषट्त्रिनवांत्यसंस्थितैः ॥ २१ ॥

अथमूतिकागृहेकशयनमितितज्ज्ञानंवैतालीयेनाह ॥ प्राच्यादिगृहइति । गृहे  
मूतिकावेशमनिप्राच्यादिपूर्वाद्याःक्रियादयोमेपादयोराशयःद्वौद्वौचतसृषुदिक्षुको  
णगताविदिक्थाद्विमूर्तयोद्विस्वभावाः।तद्यथा।मेषवृषयोर्लग्नयोगृहस्यप्राग्विभागे  
मूतिकाशयनम् मिथुनेआग्नेय्याम् कर्कसिंहयोर्दक्षिणे कन्यायानैर्ऋत्ये तुला-  
वृश्चिकयोःपश्चिमे धनुषिवायव्ये मकरकुंभयोः उत्तरे मीनेऐशानेइति । एष  
एवाविधिः शय्यास्वपिवक्तव्यः । अतउक्तम् शय्यास्वपिवास्तुवद्वदेदिति । किंत्व-  
यंविशेषः । पादैःषट्त्रिनवांत्यसंस्थितैरिति । इहखट्वापादाः षट्त्रिनवांत्य-  
राशयः लग्नात्षष्ठतृतीयनवमद्वादशराशयःपादाः परिकल्प्याः तत्रैतज्ज्ञातं  
येनलग्नेनप्रसवस्तदुक्तदिशिशय्यायाः शिरस्तस्मादेवषट्त्रिनवांत्याः पादाः  
तत्रद्वादशतृतीयौपूर्वपादौ तत्रापितृतीयोदक्षिणःपादोद्वादशोवामः षष्ठनवमौ  
पश्चिमपादौ तत्रापिषष्ठोदक्षिणोनवमोवामः लग्नद्वितीयौशीर्षभागः चतुर्थपंच-  
मौदक्षिणमंगंसप्तमाष्टमौपादांतभागः दशमैकादशौवामांगम्।प्रयोजनम् विनत-  
त्वंयमलक्षैः कूरैस्तचुल्यउपधातइति । यत्रद्विस्वभावराशयः स्थितास्तत्रविन-  
तत्वं यत्रपापास्तत्रतत्सदृशोवोपधातः एवंसदैवानुपपन्नखट्वांगप्रसंगः । य-  
स्मादवश्यंकचिदपियमलक्षेणपापग्रहैर्भावितव्यं तस्माद्यत्रयमलक्षैःसौम्यग्रहस्वा-  
मियुतदृष्टंतत्रविनतत्वम् । पापग्रहोपिस्वोच्चराशित्रिकोणमित्रक्षेत्रस्थोशुभफल-  
करोनभवतीति ॥ २१ ॥

चंद्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैःस्युरूपमूतिकाः ॥

बहिरंतश्चचक्रार्धेदृश्यादृश्येन्यथापरे ॥ २२ ॥

अधुनोपमूतिकासंख्यामनुष्ठुभाह ॥ चंद्रलग्नेति।लग्नादारभ्ययत्रराशौचंद्रमा  
व्यवस्थितस्तदंतरेतयोर्मध्येयावंतोग्रहाव्यवस्थितास्तेचंद्रलग्नांतरगताग्रहास्तैरु-  
पमूतिकाः स्युः । तावत्संख्याउपमूतिकाः समीपवर्तिन्यः स्त्रियः स्युर्भवेयुः ।  
ताश्चग्रहजातिवयोवर्णरूपाः । तथाचसारावल्याम् ॥ शशिलग्नविवरयुक्ताग्रहतु-  
ल्याः मूतिकाश्चविज्ञेयाः।अनुदितचक्रार्धयुतैरंतर्वहिरन्यथावदंत्येके॥लक्षणरूप-



विभूषणयोगास्तासां शुभैर्योगात्। क्रूरैर्विरूपदेहालक्षणहीनाश्चरौद्रमलिनाश्च॥ मि-  
श्रैर्मध्यमरूपा बलसहितैः सर्वमेतदवधार्यम्॥ बहिरंतश्चेति । तत्र यावंतो ग्रहादृश्य-  
चक्रार्धे व्यवस्थितास्तावत्संख्या उपसूतिका गृहबाह्ये वक्तव्याः । यावंतश्चादृश्य-  
चक्रार्धे व्यवस्थितास्तावत्संख्या अभ्यंतरे वक्तव्याः । तत्र लग्नस्य यावंत उदिता भा-  
गास्तथा द्वादशैकादशदशमनवमाष्टमाराशयस्तथा सप्तमराशेर्लघ्नोदितभागतुल्यां  
शादृश्यमर्धशेषमदृश्यमिति । अन्यथापरे । अपरे अन्ये आचार्या अन्यथाऽन्येन  
प्रकारेण दृश्यचक्रार्धे अभ्यंतरगता वर्णयन्ति । अदृश्ये वा ह्यस्थाज्ञेयाः । तथा च जीव-  
शर्मा । उदयशशि मध्यस्थैर्ग्रहेः स्युरूपसूतिकास्तत्र । उदगर्धस्थैर्बाह्ये दक्षिणैर्ग-  
तरे ज्ञेयाः॥ एतदाचार्यस्य नाभिप्रेतम् । यतो नैनैव स्वल्पजातके उक्तम् । शशिलग्नान्त-  
रसंस्था ग्रहतुल्याः सूतिकाश्च वक्तव्याः । उदगर्धे अभ्यंतरगा बाह्याश्च क्रस्य दृश्येर्धे॥ अ-  
त्र चायुर्दायविधिना स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंयुग्ममित्यादिना द्वित्रिगुणत्वं कृत्वा गृह-  
स्थानवशादुपसूतिकानि श्रयः कार्यः । यदि बहुजनप्रसूतियोगान भवन्ति तथापि ग्र-  
हसंख्याधि सूतिकासंभवो यत्र भवति तत्र बहुजनप्रसूतियोगेन भवितव्यमिति ॥ २२

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्दीर्घयुतग्रहतुल्यतनुर्वा ॥

चंद्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ २३ ॥

अथ जातस्य स्वरूपादि ज्ञानं दोषकेनाह ॥ लग्नेति । जन्मकाले लग्ने योनवांशक उदि-  
तस्तस्य यः स्वामी स लग्ननवांशपः ततुल्यतनुस्तदाकारो जातो वक्तव्यः । यथा  
मधुपिंगलद्विगित्यादि । अथवा जातकाले सर्वग्रहेभ्यो यो ग्रहो वीर्ययुतो बलवां-  
स्ततुल्यतनुर्वा वक्तव्यः । यदि लग्ननवांशकस्थो राशिर्वलवान् भवति तदा तदी-  
शतुल्यतनुर्भवति । अन्यथा सर्वग्रहेभ्यो यो वीर्यवान् ग्रहस्ततुल्यतनुरिति । चंद्रस-  
मेत इति ॥ योनवांशः शशिना चंद्रेण समेतश्चंद्रो यस्मिन्नवांशके स्थित इत्यर्थः ।  
तस्य नवांशराशे यो धिपतिः स चंद्रसमेतनवांशपतिस्तस्य यो वर्णस्तद्वर्णो जातो भ-  
वति । अत्र च वर्णो रक्तः श्यामो भास्वरो गौर इति । अन्ये च द्वाक्रांतरा शिवर्णमेवा-  
हुः यथारक्तः श्वेतः शुक्रतनुनि भइत्यादि । अत्र शुक्रवर्णस्यासंभवादयुक्तमेतत् ।  
एतच्च वर्णादिजाति कुलदेशान्बुद्धावक्तव्यम् । उक्तं च बालिनः सदृशी मूर्तिर्बुद्ध्या वा  
जाति कुलदेशानिति । कादिविलग्नविभक्तभगात्र इति । आधानविधिना शीर्षादी-  
नामवयवानां ह्रस्वदीर्घत्वं निरूपयति । कादिभिर्विलग्नभैर्लग्नराशिभिः विभ-  
क्तानि गात्राणि यस्य सः । कादिविलग्नविभक्तभगात्रः तत्र लग्नादयो राश-  
यः कादिपुशिरः प्रभृति गात्रेषु परिकल्प्याः । यथा कालांगानि । तत्र लग्नशिरः द्वि-  
तीयो राशिर्वक्रम् तृतीय उरः चतुर्थो हृत् पंचमः क्रोडः षष्ठः कटिः सप्तमो वस्तिः  
अष्टमः शिश्नगुदे नवमो वृषणौ दशम ऊरू एकादशो जानुनी द्वादशो जंघा-

पादौ। अत्रचराशीनांप्रमाणमुक्तम् पूर्वाद्धविषयादयइति । तत्रयत्रांगस्थेदीर्घरा-  
शौदीर्घराश्यधिपोग्रहोव्यवस्थितोभवति तदंगतस्यदीर्घवक्तव्यम् । तथा-  
चसत्यः॥ दीर्घाधिपतिर्दीर्घग्रहःस्थितोव्यवदीर्घकृद्भवति । अर्थादेवाल्पप्रमाणरा-  
शावल्परश्यधिपोग्रहोव्यवस्थितस्तदंगाल्पकृद्भवति । दीर्घराश्यधिपोऽल्प-  
राशिव्यवस्थितःसमध्यमकृत् । अल्परश्यधिपोदीर्घराशौव्यवस्थितोगमध्यम-  
कृत् । यत्रांगराशौबहवोव्यवस्थितास्तत्रबलवद्बहवशाद्वाच्यम् यत्रनकश्चिद्व्यव-  
स्थितःतत्रराशिप्रमाणतएवांगवाच्यम् ॥ २३ ॥

इति सूतिकाप्रकरणम् ॥

कंदकच्छोत्रनसाकपोलहनवोवक्त्रं च होरादयस्तेकंठांसकवाहुपार्श्व-  
हृदयक्रोडानिनाभिस्ततः ॥ वस्तिःशिश्रुगुदेततश्चवृषणावूरूत-  
तोजानुनीजंघांघ्रातिथुभयत्रवाममुदितैर्द्वेष्काणभागैस्त्रिधा ॥ २४॥

अत्रैवसूतिकाध्यायेजातस्यव्रणमशकादिनिरूपणार्थमंगप्रकरणमारभ्यते ।  
तत्रलग्नप्रथमद्वितीयतृतीयद्रेष्काणवशेनप्रथमद्वितीयतृतीयशरीरभागपरिच्छे-  
दः तत्रशिरःप्रभृतियावद्वक्त्रं प्रथमोंगविभागःशिरोधस्ताद्यावन्नाभिस्तावद्वितो-  
यः तदधस्तात्तृतीयः ॥ तेषामंगविभागानाराशिविभागंशार्दूलविक्रीडितेनाह ।  
कंदगिति । त्रिभिःप्रकारैस्त्रिधा त्रिभिर्द्वेष्काणभागैस्त्रिधाशरीरप्रविभागः ।  
तत्रलग्नस्यप्रथमद्रेष्काणेउदयतिप्रथमोमूर्धाद्यंगविभागः । द्वितीयेद्रेष्काणेउ-  
दयतिकंठपूर्वकोद्वितीयोंगविभागः । तृतीयेद्रेष्काणेउदयति वास्तिपूर्वकस्तृती-  
यः ॥ तत्राप्यंगविभागेवामदक्षिणवर्त्यव्यवज्ञानंकथमित्याह । वाममुदितै-  
रिति । राशिभिरुदितैः दृश्यभागावस्थितैर्वामोंगविभागः । लग्नस्योदि-  
तभागाः । तथाद्वादशैकादशदशमनवमाष्टमाः । तथासप्तमस्यराशेर्लघ्नोदित-  
तुल्यभागाः । एषभागउदितः शेषोनुदितः अर्थादनुदितैरदृश्यैर्दक्षिणइति ।  
तत्रलग्नानुदितभागास्तथाद्वितीयतृतीयचतुर्थपंचमषष्ठाः । सप्तमराशेर्लघ्नो-  
दिततुल्यभागाः । एवंस्थिते लग्नप्रथमद्रेष्काणोदयोलग्रराशिः । कंशिरः  
कल्पनीयम् । लग्नाद्वितीयद्वादशेदृक्चक्षुषी । तत्रद्वितीयोदक्षिणमक्षि ।  
द्वादशोवामम्। तृतीयैकादशौश्रोत्रे । तत्रतृतीयोदक्षिणम्। एकादशोवामम्। चतुर्थ-  
दशमौनासापुटे । चतुर्थोदक्षिणम् । दशमोवामम् । पंचमनवमौकपोलौ पञ्चमो  
दक्षिणः । नवमोवामः । षष्ठाष्टमौहनु । षष्ठोदक्षिणम् । अष्टमोवा-  
मम् सप्तमोवक्त्रंमुखम् एवंराश्याद्युपलक्षितः प्रथमोंगविभागः तेकंठांशकइति ।  
अथद्वितीयद्रेष्काणोदयः कंठाद्योद्वितीयोंगविभागेपरिकल्प्यः । तद्यथा लग्नकंठो



गलकः द्वितीयद्वादशौस्कंधौ तत्रद्वितीयोदक्षिणस्कंधोद्वादशोवामः तृतीयैकाद-  
शौवाहू तत्रतृतीयोदक्षिणएकादशोवामः चतुर्थदशमौपार्श्वे तत्रचतुर्थोदक्षिणं द-  
शमोवामं पंचमनवमौहद्वागौ तत्रपंचमोदक्षिणः नवमोवामः षष्ठाष्टमौक्रोडउ-  
दरभागौ षष्ठोदक्षिणः अष्टमोवामः सप्तमोनाभिरिति। नाभिग्रहणमुदरोपलक्षणा-  
र्थम्। एवंद्वितीयोऽंगविभागः। वस्तिः शिश्रुगुदेति। लग्नद्रेष्काणे तृतीये उदयतितएव  
होरादयस्त्वृतीयैर्गविभागपरिकल्प्याः। तद्यथा। लग्नं वस्तिः नाभिलिंगयोर्मध्यभागः  
द्वितीयद्वादशौ शिश्रुगुदे तत्रद्वितीयोदक्षिणभागः द्वादशोवामः। ततोऽनंतरं तृती-  
यैकादशौ वृषणौ। तृतीयोदक्षिणः एकादशोवामः। चतुर्थदशमौ ऊरू। चतुर्थोद-  
क्षिणः दशमोवामः। पंचमनवमौ जानुनी। पंचमोदक्षिणम्। नवमोवामम्।  
षष्ठाष्टमौ जंघे। षष्ठोदक्षिणजंघा अष्टमोवामजंघा। सप्तमः पादद्वयमिति ॥ २४॥

तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत्स्वर्क्षांशे स्थिर-  
संयुतेषु सहजः स्यादन्यथा गंतुकः ॥ मंदेश्मानिलजोऽग्निश्च-  
विषजो भौमे बुधे भूभवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदे न हिमगौ शृंग्य वज्रजो-  
न्यैः शुभम् ॥ २५ ॥

अथांगज्ञानप्रयोजनं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ तस्मिन्पापयुत इति। तत्र प्रथमद्रे-  
ष्काणे जातस्य शिरोऽंगविभागो द्वितीयद्रेष्काणे जातस्य कंठाद्यंगविभागः तृतीयद्रे-  
ष्काणे जातस्य वस्त्याद्यंगविभागः। यत्र पापग्रहो व्यवस्थितस्तस्मिन्पापयुते व्रणो  
वाच्यः। तस्मिन्नेव पापयुते गराशौ शुभयुते दृष्टे। सौम्यग्रहसंयुक्तेऽवलोकिते वात-  
द्राश्रुपलक्षिते गेलक्ष्मादिशेत् मशकादिचिह्नं वाच्यम्। स्वर्क्षांश इति। स एव ग्रहो व्र-  
णमशकादिकर्ता स्वर्क्षे स्वराशौ स्वनवांशके वा स्थितो भवति स्थिरराशौ स्थिरांशके  
वा स्थितस्तदा व्रणमशकादि सहजोत्पन्नतस्य जंतो भवति। अन्यथोक्तविपर्ययस्यै  
आगंतुको जातस्योत्तरकाले केनचिन्निमित्ते न वक्ष्यमाणेन स्वदशाकाले एव वक्तव्यः।  
आगंतुकस्य व्रणादेर्ग्रहवशेन निमित्तमाह। मंदेश्मानिलज इति। मंदेश्मनैश्चरे व्रणकर्तृ-  
त्वं प्राप्ते स व्रणादि रश्मजः पाषाणहेतुकोऽनिलजो वातव्याधिहेतुको वा वक्तव्यः। भौ-  
मे व्रणकर्तृत्वे प्राप्तेऽग्निश्च विषजोऽग्निहेतुकः शस्त्रहेतुको विषहेतुको वा वक्तव्यः। बुधे  
भूभवः भूस्थितपातादुच्छ्रितपाताद्भूम्यधिपातहेतुको लोष्टप्रहारहेतुको वा। सूर्ये रवौ  
काष्ठप्रहारहेतुकश्चतुष्पदप्राणिहेतुको वा वक्तव्यः। हिमगौ चंद्रेशृंग्य वज्रजः शृंग्य-  
भिधातहेतुकः शृंगे विद्येते यस्य प्राणिनः स शृंगी तज्जातो वज्रजो वा जलप्राणिहेतुको  
वा वक्तव्यः। अन्यैः शुभम्। अन्ये ग्रहायत्रांगदेशस्था भवन्ति तत्र शुभव्रणादिकरा भव-  
न्ति। तत्रावशेषौ गुरुसितौ तत्किं बहुवचनम्। उच्यते। बुधः पापयुक्तो व्रणकरः क्षीणश्च-  
द्रमा नान्यथा ततोऽन्यैः शुभमित्युक्तम् ॥ २५ ॥

समनुपतितायस्मिन्भागेत्रयःसबुधाग्रहाभवतिनियमात्तस्या-  
वाप्तिःशुभेष्वशुभेषुवा ॥ व्रणकृदशुभःपष्टेदेहेतनोर्भसमाश्रि-  
तेतिलकमशकृदृष्टःसौम्यैर्युतश्चसलक्ष्मवान् ॥ २६ ॥

इतिजन्मविधिनामाध्यायः समाप्तः ॥ ५ ॥

अथव्रणज्ञानंहरिण्याह ॥ समनुपतिताइति । यस्मिन्भागेवाभेदक्षिणेवात्रयः  
सबुधाग्रहाः त्रयोन्येग्रहाश्चतुर्थेनबुधेनसहिताः समनुपतिताः समाश्रितास्तत्रांगे  
पूर्वप्रक्रांतस्यव्रणादेर्नियमान्निश्चयादवश्यंप्राप्तिर्भवतिशुभेष्वशुभेषुवा तैग्रहाःसबु-  
धाःशुभाःसौम्याःअशुभाः पापावाभवन्ति तथापितत्रांगेतस्यव्रणावाप्तिर्वक्तव्या  
तेषांमध्येयोवलीसस्वदशायांकरोति । व्रणकृदिति । लग्नात्पष्टेस्थानेअशुभः पा-  
पोग्रहोव्यवास्थितोदेहेशरीरेव्रणकृद्भवति । कस्मिन्स्थाने । तनोर्भसमाश्रिते  
तनोर्लग्नात्सपष्टस्थोराशिः कालांगानीत्यनेनदर्शितांगविभागेयस्मिन्भवतित-  
स्मिन्भसमाश्रितेराशियुक्तेदेहेशरीरेभवति । अत्रापिस्वर्क्षांशस्थिरसंयुतेपुस-  
हजः स्यादन्यथांगंतुकइत्यनुवर्तनीयम् । सएवषष्टस्थानस्थःपापःसौम्येनशु-  
भग्रहेणयदादृष्टोभवतितदातत्रांगेतिलकमशकृद्भवति तिलकः कृष्णोर्विदुःम-  
शकोर्बुदः । अथशुभग्रहेणसएवपापोयुतस्तदासलक्ष्मवान्भवति राशयुपलक्षितमं-  
गंसचिह्नंभवति । अत्रस्थानेधनोलोमनिच्योलक्ष्मेति ॥ २६ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौजन्मविधिनामाध्यायःपंचमःसमाप्तः ॥५॥

संध्यायांहिमदीधितिहोरापापैर्भातगतैर्निधनाय ॥

प्रत्येकंशशिपापसमेतैःकेंद्रैर्वासविनाशमुपैति ॥ १ ॥

अथारिष्टाध्यायोव्याख्यायते । तत्रतावजातस्यारिष्टसंभवेसत्यायुर्दायाष्टक-  
वर्गोद्देशःकर्तव्यःतस्मात्प्रथममारिष्टाध्यायंवक्ष्याति।तत्रारिष्टद्वयंविद्युन्मालयाह ॥  
संध्यायामिति । संध्यालक्षणंसंहितायामुक्तम्।अर्धास्तसमयात्संध्याव्यक्तीभूतान  
तारकायावत् । तेजःपरिहानिमुखाद्भानोरधोदयोयावत्॥अस्मिन्संध्याकालइति  
तत्रजन्मनियस्यसंध्याकालोभवति तत्काललग्नगताहिमदीधितेश्चंद्रस्यहोराभ-  
वति यथासंभवंपापैर्भातगतैः यत्रतत्रराशिस्थांत्यनवांशगताः पापाभवन्ति तदैष  
योगोजातस्यनिधनायमरणायभवति।प्रत्येकमिति।एकमेकमितिप्रत्येकंशशीचंद्रः  
पापास्त्रयश्चतुर्षुकेंद्रेषुव्यवस्थिताभवन्ति ॥ एतदुक्तंभवति ।आदित्यचंद्रांगारकशने-  
श्चरैर्यथासंभवंचत्वार्यपिकेंद्राण्याक्रांतानिभवन्ति तथापियस्यजन्मभवतिसवि-  
नाशमुपैति त्रियतइत्यर्थः ॥ १ ॥



चक्रस्यपूर्वापरभागगेषुकूरेषुसौम्येषुचकीटलग्ने ॥

क्षिप्रंविनाशंसमुपैतिजातःपापैर्विलग्नस्तमयाभितश्च ॥ २ ॥

अथान्यानरिष्टयोगानिद्रवञ्जयाह । चक्रस्येति । यावंतोभागालग्नस्योदितास्ता-  
वंतएवभागालग्नचतुर्थराशेः परित्यज्यशेषभागमारभ्यपंचमषष्ठसप्तमाष्टमनव-  
मराशयोदशमराशिलग्नोदितभागतुल्यांशाश्चक्रपरार्द्धम् । शेषंपूर्वार्द्धम् । तत्रचक्रस्य  
पूर्वभागेऋराः पापाः इतरभागेपश्चिमेसौम्याः शुभग्रहाः । कीटलग्ने वृश्चि-  
कराशाबुदयेकर्कटेचोदयस्थितेजातःशिशुःक्षिप्रमाश्वेवविनाशमुपैतिमरणंप्राप्नो-  
तीत्यर्थः । नन्वत्रपूर्ववृश्चिकः कीटसंज्ञउक्तः पुनरपिद्विपदादयोद्विनिशिचप्रा-  
प्तेचसंध्याद्वयेइत्यत्रकर्कटवृश्चिकमकरमीनानांकीटत्वमभ्युपगतम् । तदत्रवृश्चिकक-  
र्कटावेवकथंव्याख्यातावित्यत्रोच्यते । मकरमीनयोर्जलत्वादपिसपक्षत्वात्कीटसं-  
ज्ञानाभ्युपगम्यते । यस्माद्वादरायणः ॥ पूर्वापरभागगतैः शुभाशुभैरालिनिक-  
र्कटे लग्ने । जातस्याशिशोर्मरणंसद्यःकथयंतियवनेंद्राः ॥ पापैर्विलग्नस्तमया-  
भितश्चेति । पापैःऋग्रहैः विलग्नभितः अस्तमयाभितश्चस्थितैश्चसद्योजातः  
क्षिप्रंशीघ्रमेवविनाशंसमुपैति । अत्रकेचिदेवंयोगद्वयंव्याचक्षते । अभितउभयतः  
लग्नात्पापैरुभयतइत्येकोयोगः अस्तमयाच्चाभितइतिद्वितीयः तत्रलग्ना-  
द्वादशद्वितीयस्थयोःपापयोर्जातोन्नियते । तथालग्नषष्ठाष्टमयोश्चपापयोर्जा-  
तोन्नियते तथालग्नसप्तमाच्चयेद्वादशद्वितीयेतत्स्थयोश्चपापयोर्जातोन्नियते । अ-  
न्येपुनरभिश्चदआभिमुख्येवर्ततइत्यनुवर्णयंति । तत्रलग्नाद्योद्वितीयराशौग्रहः  
स्थितःसउदयमभिलषति लग्नस्याभिमुखोभवति । यश्चलग्नादष्टमराशौभवति  
सोस्तमयमभिलषतीत्यतः सप्तमराशेरभिमुखोभवति । तेनैतज्जातम् लग्नाद्वि-  
तीयाष्टमगतैःसर्वैःपापैर्जातोन्नियते । वयंपुनरभिश्चदआभिमुख्यव्यावृत्तिब्रूमः  
यस्माद्यवनेश्वरः ॥ पापेषुलग्नाभिमुखेषुसर्वेष्वेवातवीर्येषुशुभर्क्षगेष्वपि । किंतु  
योलग्नाद्वादशस्थानेस्थितःसउदयमभिलषति लग्नाभिमुखोभवति यश्चषष्ठेस्थितः  
सोस्ताभिमुखोभवति यस्माद्ग्रहाणांप्राङ्मुखीगतिः । उक्तंच प्राग्गतयस्तुल्यजवा  
ग्रहाश्चसर्वेस्वमंडलगाइति । तत्रपूर्वाभिमुखं व्रजतोगच्छतोलग्नाद्वितीयस्थस्यतदा-  
भिमुख्यनंसंभवति । नचाष्टमस्थस्यास्ताभिमुख्यम् । तेनैतज्जातंलग्नाद्वादशषष्ठा-  
श्रितैःपापैर्यस्यजन्मसन्नियतेइति । भगवतागार्ग्येणसर्वाण्येवव्याख्यातान्याभि-  
मुख्यानीति । तथाचतद्वाक्यम् ॥ रिपुव्ययगतैः पापैर्यदिवाधनमृत्युगैःलग्नेवापाप  
मध्यस्थेद्यनेवामृत्युमाप्नुयादिति ॥ २ ॥

पापाबुदयास्तगतौ क्रूरेण युतश्च शशी ॥

दृष्टश्च शुभैर्नयदामृत्युश्च भवेदचिरात् ॥ ३ ॥

अथयोगांतरमनुष्ठभाह ॥ पापाविति । एकः पापउदये लग्ने स्थितो न्योऽस्ते सप्तमे गतः शशीचंद्रमाः यत्र तत्र स्थः क्रूरेण पापेन युतो भवति सच सौम्यैः शुभग्रहैर्यदि न दृष्टस्तदा जातस्य मृत्युरचिराच्छीघ्रमेव भवेत् ॥ ३ ॥

क्षीणे हिमगौव्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः ॥

केंद्रेषु शुभाश्च न चेत्क्षिप्रं निधनं प्रवदेत् ॥ ४ ॥

अथयोगांतरमनुष्ठभाह ॥ क्षीणे हिमगाविति । हिमगौचंद्रे क्षीणे लग्नाद्ययगे द्वादशस्थे तथा पापैः क्रूरग्रहैरुदयाष्टमगैः लग्नस्थैरष्टमगतैश्च केंद्रेषु केंटकेषु चेद्यदि शुभान भवन्ति तदा जातस्य क्षिप्रमाश्वेन निधनं मरणं प्रवदेद्भूयात् । अत्र केचित् पापैरुदयाष्टमगैरिति नेच्छन्ति । तदयुक्तम् । यस्माद्लग्नाङ्गार्गिः । क्षीणे चंद्रे व्ययगते पापैरष्टमलग्नैः । केंद्रबाह्यगतैः सौम्यैर्जातस्य निधनं वदेत् ॥ ४ ॥

क्रूरेण संयुतः शशी स्मरांत्यमृत्युलग्नगः ॥

कंटकाद्गहिः शुभैरवीक्षितश्च मृत्युदः ॥ ५ ॥

अथारिष्टांतरमनुष्ठभाह ॥ क्रूरइति । शशीचंद्रः क्रूरेण पापग्रहेण संयुतस्तथाभूतः स्मरांत्यमृत्युलग्नगः सप्तमद्वादशाष्टमलग्नानामन्यमस्थस्तथा शुभैः शुभग्रहैः कंटकाद्गहिः केंद्रवर्जमन्यस्थानस्थैः अवीक्षितः न दृष्टो यदि भवति तदा जातस्य मृत्युदो मरणदो भवति । अर्थादेव सौम्यैः केंद्रस्थैस्तदारिष्टाभावः । तथा च सारावल्याम् ॥ व्ययाष्टसप्तोदयगेशशकिपापैः समेते शुभदृष्टिहीने । केंद्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु जातस्य सद्यः कुरुते प्रणाशम् ॥ ५ ॥

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते शुभैरथ समाष्टकंद-

लमतश्च मित्रैः स्थितिः ॥ असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासं

शुभेकलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे ॥ ६ ॥

अथारिष्टांतराणि पृथग्व्याह ॥ शशिनीति । शशिनचंद्रे अरिविनाशगे लग्नात्षष्ठस्थानस्थेऽष्टमस्थे वा तत्र च पापानां क्रूरानामन्यतमेनेक्षिते दृष्टे सौम्यग्रहेणादृष्टे तस्य निधनं मरणमाशु क्षिप्रमेव भवति । शुभैरिति । अथ लग्नात्षष्ठाष्टमगे चंद्रे सौम्यैर्ग्रहैर्दृष्टे पापेनादृश्यमाने जातस्य समाष्टकंवर्षाष्टकं स्थितिः जीवितं वक्तव्यम् ।



ततो नंतरं मरणमिति । समाशब्दो वर्षपर्यायः । दलमतइति । लग्नात्षष्ठाष्ट-  
मगे चंद्रे मिथैः पापैः सौम्यैश्च दृष्टे । अतोऽस्मात्समाष्टकाद्वर्षाष्टकादलमर्द्धं वर्षचतु-  
ष्टयं स्थितिर्वदेत्ततो मरणमिति । अथादेव षष्ठाष्टमस्थे चंद्रमसिन केन चिद्दृश्यमा-  
नेऽरिष्टयोगाभावः । चंद्रमायदि षष्ठाष्टमस्थः सौम्यक्षेत्रगतः सौम्ययुक्तो भवति ।  
तदानमरणप्रदः । यस्माद्यवने श्वरः ॥ लग्नाच्छशी नैधनगेऽशुभक्षेपष्ठोऽथवा पाप-  
निरीक्षितश्च । सर्वायुराहन्ति शुभैर्विमिश्रैस्तदीक्षितोऽन्दाष्टकमर्धकं वा ॥ तथा ॥  
यस्य कृष्णपक्षे दिवा जन्मशुक्लपक्षे रात्रौ जन्मलग्नात्षष्ठाष्टमगः शशीशुभाशुभदृष्टो-  
पि भवति तस्य नमरणप्रदः । यस्मान्मांडव्यः ॥ पक्षे सिते भवति जन्मयादि-  
क्षपायां कृष्णेऽथवा हनिशुभाशुभदृश्यमानः । तच्चंद्रमारिषु विनाशगतोऽपि  
यत्नादापत्सुरक्षतिपितेव शिशुं नहंति । असद्गिरिति । अत्रास्मिन्नेव षष्ठे-  
ष्टमे वा स्थानेषु भेः सौम्यग्रहे बुधगुरुसितानामन्यतमे स्थिते तस्मिन्श्चासद्भिः पापैः  
बलिभिर्वार्ययुक्तैरवलोकिते दृष्टे जातस्य मासं स्थितिः जीवितं वक्तव्यम् । ततो मर-  
णम् अत्र निर्दिष्टयोगस्थेषु भग्रहेषु भदृष्टेऽरिष्टयोगाभावः ॥ यस्मादनेनैव स्वल्पजा-  
तके उक्तम् । शशिवत्सौम्याः पापैर्वैकिभिरवलोकितानां शुभदृष्टाः । मासेन मरणदाः  
स्युः पापयुतोलग्नपश्चास्ते ॥ कलत्रसहितइति ॥ विलग्नधिपेजन्मलग्नपतौ कलत्रस-  
हिते सप्तमस्थानस्थे वा पापविजितेऽग्रग्रहेण युद्धे संग्रामे विजिते । विजितलक्षणम् ॥  
दक्षिणादिस्थः परुषो वेपथुरप्राप्य सन्निवृत्तोऽणुः । अधिरूढो विकृतो निष्प्रभो  
विवर्णश्चयः सजितः ॥ भौमादीनामाकाशे युद्धं भवति यः दक्षिणाशास्थः सग्र-  
हः सजितः कुसुतादीनां युद्धमित्युक्तत्वाच्चंद्रदीपिकायाम् परुषोरूक्षः वेपथुः कं-  
पमानः अन्यगृहमप्राप्य सन्निवृत्तः विपरीतगतिमापन्नः अणुः सूक्ष्मः अधिरूढः  
अन्येनाक्रांतः विकृतः विकारसहितः निष्प्रभो दीप्तिरहितः विवर्णः वर्णरहितः  
सजितइति । चशब्दान्मासं स्थितिस्ततो मरणमिति ॥ ६ ॥

लग्ने क्षीणेशशिनिनिधनं रन्ध्रकेंद्रेषु पापैः पापांतः स्थे निधनहिबु-  
कद्यूनयुक्ते च चंद्रे ॥ एवं लग्ने भवति मदनच्छिद्रसंस्थैश्च पापै-  
र्मात्रासार्धयदि च न शुभैर्वीक्षितः शक्तिभृद्भिः ॥ ७ ॥

अथारिष्टांतराणि मंदाक्रांतयाह ॥ लग्ने क्षीणइति । क्षीणेशशिनिचंद्रलग्ने जन्मल-  
ग्नस्थिते तथारन्ध्रकेंद्रेषु पापैः क्रूरैः स्थितैर्यथा संभवमैवं विधेयोगे जातस्य निध-  
नं मरणं वक्तव्यम् । तथा चंद्रेशशिनिपापांतः स्थे पापमध्यगते निधनहिबुकद्यूनयु-  
क्तेऽष्टमचतुर्थसप्तमस्थानानामन्यतमस्थे जातस्य मरणं वक्तव्यम् । एवमिति । एव-  
मनेनैव प्रकारेण लग्ने पापांतः स्थे शशिनि तथा मदनच्छिद्रसंस्थे सप्तमाष्टमस्थानयो-

रन्यतमस्थेपापेकूरैयदिशुभैः सौम्यग्रहैः शक्तिभृद्भिः सबलैः चंद्रमा न वी-  
क्षितो न दृष्टो भवति तदा जातस्य मात्रासार्द्धजनन्यासहमरणं वदेत् । अथ निर्दिष्टयो-  
गस्थश्च चंद्रमाः शुभैर्दृश्यते बलिभिस्तदा जातस्यैव मरणं न तन्मातुरिति ॥ ७ ॥

राश्यंतगेसद्भिरवीक्ष्यमाणे चंद्रे त्रिकोणोपगतैश्च पापैः ॥

प्राणैः प्रयात्याशु शिशुर्वियोगमस्ते च पापैस्तु हिनां शुलग्ने ॥ ८ ॥

अथारिष्टांतराणीद्वयञ्च याह ॥ राश्यंतग इति । चंद्रे शशिनिराश्यंतगे यत्र तत्र  
राशौ न वमनवांशगे तथा भूते सद्भिः शुभग्रहैरवीक्ष्यमाणेन संदृष्टे पापैः कूरैस्त्रिको-  
णोपगतैः नवपंचमस्थानस्थैः जातः शिशुर्बालकः आशु क्षिप्रमेव प्राणैरसुभि-  
र्वियोगं प्रयाति गच्छति म्रियत इत्यर्थः । अस्ते च पापैरितितुहिनां शौचंद्रे लग्ने अ-  
स्ते सप्तमे सप्तमस्थानस्थितैः पापैश्च शब्दाच्छिशुराश्वेव प्राणैर्वियोगं प्रयाति । अ-  
त्र तु हिनां शुलग्न इति कर्कटलग्नैकैश्चिद्व्याख्यातम् । तदयुक्तम् । यस्मादनेनैव स्व-  
ल्पजातके उक्तम् ॥ उदयगतो वा चंद्रः सप्तमराशिस्थितः पापैरिति ॥ ८ ॥

अशुभसहिते ग्रस्ते चंद्रे कुजे निधनाश्रिते जननि सुतयोर्मृत्युर्लग्ने  
रवौ तु सशस्त्रजः ॥ उदयति रवौ शीतांशौ वा त्रिकोणविनाशगै-  
र्निधनमशुभैर्वीर्योपेतैः शुभैर्न युतेक्षिते ॥ ९ ॥

अथारिष्टांतराणि हरिण्याह ॥ अशुभसहित इति । चंद्रे शशिन्यशुभसहिते यद्य-  
पि सामान्येनोक्तं तथाप्यशुभेन पापेन शनैश्च रेणैव युक्ते तथा भूते लग्नगतेन केवलं याव-  
त् लग्नगते ग्रस्ते सराहौ राशिगते स लग्नाच्च कुजे गारके निधनाश्रिते षष्ठमस्थानस्थे जन-  
नि सुतयोः मातृपुत्रयोः मृत्युर्भवति । रवौ तु सशस्त्रज इति । एवं विधेयो गे रवावादित्ये  
स्थिते जननि सुतयोर्मृत्युः शस्त्रजः शस्त्रेण युधेन जातो भवति । एतेनैतदुक्तं भवति ।  
शनैश्च रेण बुधेन वा युक्ते के ग्रस्ते लग्नगते कुजे चाष्टमगे जातस्य मात्रासहशस्त्रहेतुकं  
मरणं वाच्यम् । नन्वशुभ इति सामान्येनोक्तम् । तत्केवलेन शनैश्च रेण युक्ते चंद्रे शशिनि  
इति किं व्याख्यातम् । शनैश्च रेण बुधेन वा युक्ते के इति नोक्तम् । अत्रोच्यते । असंभवादेव  
पौर्णमास्यां चंद्रग्रहणं भवति तत्र तावदर्कसहितेन चंद्रमसान् भवितव्यम् । बुधेन चार्क-  
समीपवर्तिना सदैव भवितव्यम् । अष्टमस्थानत्वाद्भौमेनापि चंद्रसहितेन न भवित-  
व्यम् । शनैश्च रेण विनाव्यवस्थितेन बुधेन सौम्येनैव भवितव्यम् । तस्माच्चंद्रग्रहणे शनैश्च-  
रेणेति व्याख्यातम् । अर्कग्रहणे तु पुनः बुधेन यदि युक्तो ऽर्को भवति तदा र्कसहितत्वा-  
त्तस्य पापता भवतीत्यर्कोस्य बुधसहितत्वमिति व्याख्यातम् । क्षीणे दुयोगादर्कस्य  
पापयोग एवायं न गण्यते यस्मादवश्यममावास्यां ते ऽर्कग्रहणेन भवितव्यम् । तत्र चा-  
वश्यमर्केण क्षीणचंद्रसहितेन भवितव्यम् । यद्यर्कः क्षीणे दुना युक्त इति आचार्यस्याभि-



प्रेतं स्यात्तदाग्रस्तेर्केनिधनाश्रितेकुजइति केवलमकरिष्यत्। उदयतिरवावित्यादि।  
रवावादित्ये उदयतिलगते शीतांशौ चंद्रेवालगते तथा अशुभैः पापैस्त्रिकोण-  
विनाशकैः नवपंचमाष्टमस्थैः सर्वैरेव यथासंभवमेवंविधयोगस्थैरवौ चंद्रेवाशुभैः  
सौम्यग्रहैः वीर्योपेतैः बलवद्भिः न युक्तेक्षिते न संयुक्ते नापि दृष्टे जातस्य निधनं मरणं  
वदेत् अर्थादेवोक्तयोगस्थैरवौ चंद्रेवाललिभिः शुभैर्युते दृष्टे चारिष्टयोगाभावः ॥ ९ ॥

असितरविशशांकभूमिजैर्व्ययनवमोदयनैधनाश्रितैः ॥

भवति मरणमाशु देहिनां यदि बलिना गुरुणानवीक्षिताः ॥ १० ॥

अथारिष्टांतरमपरवक्रेणाह ॥ असितेति । असितः सौरः रविरादित्यः शशां-  
कश्चंद्रः भूमिजो गारकः एतैर्यथाक्रमं व्ययनवमोदयनैधनाश्रितैः द्वादशनव-  
मलमाष्टमस्थानस्थैः तत्रैतज्जातं शनैश्चरेद्वादशे । अर्केन वमे । चंद्रेलग-  
ने । भौमेष्टमस्थे एते सर्वे एव योगकर्तारोग्रहाय दिवल्लिना वीर्यवता गुरुणा जी-  
वेन नवीक्षिताः न दृष्टास्तदा जातस्य जंतोराश्वेव मरणं भवतीति वदेत् । अत्र यदा  
योगकर्तृन् ग्रहान् बलवान् गुरुः कांश्चित्पश्यति कांश्चिन्नपश्यति अथवा बलहीनः  
सर्वानेव पश्यति तदा जातस्य मरणाय प्रवदेत् किंतु आशुशीघ्रं न वदेत् अर्थादेव स-  
र्वानेव गुरुः पंचमगः पश्यति तदारिष्टयोगाभावः ॥ १० ॥

सुतमदननवांत्यलग्नरंध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ॥

भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न युतो वलोकितो वा ॥ ११ ॥

अथारिष्टांतरं पुष्पिताग्रयाह । सुतेति । शीतरश्मिश्चंद्रः सचक्षीणः अशुभयु-  
तः पापग्रहेण संयुक्तः सुतमदननवांत्यलग्नरंध्रेषु स्थितः पंचमसप्तमनवमद्वाद-  
शोदयाष्टमगतः । अथवा सुतमदननवांत्यरंध्रे स्थित इति पाठः । एतेषामन्यतमस्थान-  
स्थः भृगुसुतेन शुकेण शशिपुत्रेण बुधेन देवपूज्येन बृहस्पतिना बलिभिर्वी-  
र्यसंयुक्तैर्न युतो नाप्यवलोकितः एषां त्रयाणां मध्यादेकतमेनापि संयुतो न च दृष्टस्त-  
दा जातस्य मरणाय भवति अर्थादेव भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यानामन्यतमेन बलव-  
ता दृष्टो युक्तो वा भवति तदारिष्टयोगाभावः । अत्रक्षीणचंद्रग्रहणं नास्ति तत्कस्मा-  
द्वाख्यातमित्यत्रोच्यते । आगमांतरदृष्टत्वात् । तथा च सारावल्याम् ॥ निधनास्तव्य-  
यलग्नत्रिकोणगाः क्षीणचंद्रसंयुक्ताः । पापावलिनः शुभैर्दृश्यमाना गता युषां प्रायः ।

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चंद्रे स्वं वातनुगृहमथवा ॥

पापैर्दृष्टे बलवति मरणं वर्षस्यांतः किल मुनिगदितम् ॥ १२ ॥

इत्यरिष्टाध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

अथानुक्तमरणकालानामरिष्टयोगानांकालपरिज्ञानंभ्रमरविलसितेनाह॥ यो-  
 गेस्थानमिति । यस्मिन्नरिष्टयोगेजातस्यमरणकालावधिर्नोक्तस्तस्मिन्नरिष्टयो-  
 गेजातस्ययोगकर्तारोयेग्रहास्तेपांमध्याद्योबलवान्सयस्मिन्राशौजन्मकालेव्यव-  
 स्थितः सराशिर्बालिनःस्थानंतत्रचारक्रमाचंद्रमसिप्राप्तेजातस्यमरणंवक्तव्यम्।अ-  
 थवाचंद्रेस्वमात्मीयस्थानंगतेजन्मकाले यत्रराशौचंद्रमाव्यवस्थितस्तमेवराशौ  
 पुनरपिचंद्रेगतेतत्रतस्यमरणंवक्तव्यम् । तनुगृहमथवा तनुगृहंलभंवाचारक्रमा-  
 द्रतेचंद्रमसिजातस्यमरणंवक्तव्यम् ॥ कदेत्युच्यते। वर्षस्यांतः संवत्सराभ्यंतरे ।  
 एतदुक्तंभवति अनुक्तकालारिष्टजातोवर्षनातिक्रामतीति।नन्वत्रप्रतिमासंचंद्रम-  
 सासर्वाण्येवस्थानानिगंतव्यानितकिमित्युक्तंवर्षस्यांतः।उच्यते । पापैर्दृष्टेबलव-  
 तीति । एपुनिर्दिष्टस्थानेषुमध्याद्यत्रगतश्चंद्रमाबलवान्भवति पापैश्चदृश्यते तदा  
 जातस्यमरणंवक्तव्यम्।नकेवलंगतमात्रएवचंद्रे । किलमुनिगदितंकिलेत्यागमसू-  
 चनेमुनिगदितमिदमरिष्टलक्षणमित्यागमपारंपर्येणश्रूयतइति । अत्रान्यैराचार्यैर-  
 रिष्टभंगाउक्तास्तेचसत्यरूपाः यतोबहवोजाताअपिसत्स्वपियोगेषुजीवंतोदृश्यं-  
 तेऽतोस्माभिः किंचिल्लिख्यते । सर्वानिमानतिबलःस्फुरदंशुजालोलग्रस्थितःप्रशं-  
 मयेत्सुरराजमंत्री । एकोबहूनिदुरितानिसुदुस्तराणिभक्त्याप्रयुक्तइवशूलधरप्रणा-  
 मः॥१॥लभाधिपोतिबलवानशुभैरदृष्टः केंद्रस्थितैःशुभफलैरवलोक्यमानः । मृ-  
 त्युंविधूयविदधातिसुदीर्घमायुः सार्धंगुणैर्बहुभिरुज्जितयाचलक्ष्म्या॥२॥लभादष्ट-  
 मवर्त्यपिगुरुबुधशुक्रदृकाणगश्चंद्रः। मृत्युंप्राप्तमपिनरंपरिरक्षत्येवनिर्व्याजम्॥३॥  
 चंद्रःसंपूर्णतनुःसौम्यक्षमतःशुभेक्षितश्चापि। प्रकरोतिरिष्टभंगंविशेषतःशुक्रसंदृष्टः  
 ॥ ४ ॥ बुधभार्गवजीवानामेकतमःकेंद्रमागतोबलवान् । यद्यत्क्रूरसहायःसद्यो-  
 रिष्टस्यभंगाय ॥५॥ रिपुभवनगतोपिशशीगुरुसितचंद्रात्मजदृकाणस्थः । अगद-  
 इवभोगिदष्टंपरिरक्षत्येवनिर्व्याजम् ॥६॥सौम्यद्वयांतरगतः संपूर्णःस्निग्धमंडलः  
 शशभृत्।निःशेषरिष्टहंताभुजंगलोकस्यगरुडइव ॥७॥ शशभृतिपूर्णशरीरेशुक्लेपक्षे  
 निशाभवेकाले।रिपुनिधनस्थैरिष्टंप्रभवतिनैवात्रजातस्य॥८॥प्रस्फुरितकिरणजा-  
 लेस्निग्धामलमंडलेबलोपेते।सुरमंत्रिणिकेंद्रगतेसर्वारिष्टंशमंयाति॥९॥सौम्यभ-  
 वनोपयाताःसौम्यांशकसौम्यदृकाणस्थाः । गुरुचंद्रकाव्यशशिजाःसर्वैरिष्टस्यहं-  
 तारः॥१०॥चंद्राध्यासितराशेरधिपःकेंद्रेशुभग्रहोवापि।प्रशमयतिरिष्टयोगंपापा-  
 नियथाहरिस्मरणम्॥११॥पापायदिशुभवर्गेसौम्यैर्दृष्टाःशुभांशवर्गस्थैः। निघ्नंति-  
 तदारिष्टंपातिंविरक्तायथायुवतिः॥१२॥राहुस्त्रिषष्टलामेलमात्सौम्यैर्निरीक्षितःस-  
 म्यक्॥नाशयतिसर्वदुरितंमारुतइवदलसंघातम् ॥१३॥ शीर्षोदयेपुराशिषुसर्वेग-  
 गनाधिवासिनःमृतौ।प्रकृतिस्थैश्चारिष्टंविलीयतेघृतमिवाग्निस्थम्॥१४॥तत्काले  
 यदिविजयीशुभग्रहःशुभनिरीक्षितोऽवश्यम् । नाशयतिसर्वरिष्टंमारुतइवपाद-  
 पान्प्रबलः ॥१५॥ सर्वैर्गगनभ्रमणैर्दृष्टश्चंद्रोविनाशयतिरिष्टम् । आपूर्यमाण-  
 मूर्तिर्यथानृपःस्वंनयेद्वेषीति ॥१६॥

इतिश्रीमदोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौरिष्टाध्यायःषष्ठःसमाप्तः ॥ ६ ॥



मययवनमणित्थशक्तिपूर्वोदिवसकरादिषुवत्सराःप्रदिष्टाः ॥

नवतिथिविषयाश्चिभूतरुद्रदशसहितादशभिःस्वतुंगभेषु ॥ १ ॥

अथायुर्दायाध्यायोव्याख्यायते । तत्रपूर्वोक्तदिष्टाध्यायेऽरिष्टवर्जितस्यायुर्दा-  
यःकर्तव्यःतत्रादावेवमययवनमणित्थपराशरमतेन प्रत्येकस्यग्रहस्यपरमायुःप्र-  
माणंपुष्पिताग्रयाह ॥ मययवनेति । मयो मयनामादानवःसूर्यलब्धवरप्रसादः  
यवनाम्लेच्छजातीयाहोराविदः मणित्थआचार्यः शक्तिपूर्वःपराशरःशक्तिःपूर्वा  
यस्यसशक्तिपूर्वःपूर्वशब्देनपिताउच्यते तैःमययवनमणित्थशक्तिपूर्वैः दिवसक-  
रादिष्वादित्यादिपुग्रहेषुवत्सराःसंवत्सराःपरमायुःप्रमाणाब्दाःप्रदिष्टाः उक्ताः  
नवतिथिविषयाश्चीत्यादि । अत्रनवादिभिर्दशसहिताइतिसर्वत्रैवशेषभूतंतेनन-  
वभिः दशसहिताएकोनविंशतिः परमायुःप्रमाणवत्सरादिवसकरस्यादित्य-  
स्यतिथिभिःपंचदशभिःसहितादशपंचविंशतिश्चंद्रस्य । विषयैः पंचभिः सहि-  
तादश पंचदशभौमस्य अश्विभ्यांद्वाभ्यांसहितादशद्वादशबुधस्य भूतैः पंचभिः  
सहितादशपंचदशगुरोः रुद्रैरेकादशभिः सहितादशएकविंशतिः शुक्रस्य दश-  
भिः सहितादशविंशतिःसौरस्य एतानिग्रहाणांपरमायुःप्रमाणवर्षाणि स्वतुंग-  
भेषु स्वपरमोच्चांशस्थितेषुभवन्ति तत्रेदृशाः परमोच्चस्थिताग्रहाआदित्यादयोभ-  
वन्ति । तद्यथा । एवंविधाह्येतेयथानिर्दिष्टवर्षाणिप्रयच्छन्ति १९।२५।१५।१२।  
१५।२१।२०। अंकेनापिएतान्यर्कादीनांपरमायुः प्रमाणवर्षाणि ॥ १ ॥

नीचेतोर्द्ध्वसतिहिततश्चांतरस्थेनुपातोहोरात्वंशप्रतिममप-  
रेराशितुल्यंवदन्ति ॥ हित्वावक्रंरिपुगृहगतैर्हीयतेस्वत्रिभागः  
सूर्योच्छिन्नद्युतिषुचदलंप्रोद्ध्यशुक्रार्कपुत्रौ ॥ २ ॥

अथपरमनीचावस्थितानामायुर्दायज्ञानंमंदाक्रांतयाह॥ नीचेति।एतएवदिव-  
सकरादयोनीचेपरमनीचेप्राप्ताअर्धंपरमायुःप्रमाणवर्षेभ्योऽपहरन्ति । अतएवोक्तम्  
नीचेऽतोस्मात्पूर्वोक्तात्परमायुषोर्ध्वदलंहसतिक्षीयते अथेदृशारव्यादयः परमनी-  
चस्थाभवन्ति परमनीचस्थास्तएवपूर्वोक्तायुषोर्ध्वदलंप्रयच्छन्ति । तद्यथा रविः  
नवसार्थानिवर्षाणिप्रयच्छति चंद्रोद्वादशसार्थानिवर्षाणिप्रयच्छति एवंभौमः  
सप्तसार्थानि एवंबुधः षट् एवंबृहस्पतिः सप्तसार्थानि एवंशुक्रोदशसार्था-  
नि एवंशनैश्चरोदश अंकेनापि रवेवर्षाणि ९ मासाः ६ चंद्रस्यवर्षा-  
णि १२ मासाः ६ भौमस्यवर्षा ७ मासाः ६ बुधस्यवर्षा ७ मासाः ६  
गुरोःवर्षा ७ मासाः ६ शुक्रस्यवर्षा १० मासाः ६ शनेःवर्षा १०  
मासाः ६ ततश्चांतरस्थेनुपातइति । ततःतस्मादुच्चात्रीचाच्चांतरस्थेमध्यवर्ति-

निग्रहेनुपातः त्रैराशिकः कर्तव्यः सर्वेषां नीचानि अंकतयैव लिख्यन्ते । तत्र तावत्सर्वस्यैव ग्रहस्य परमोच्चपरमनीचांतरालं राशिषट्कं भवति तावदेव लिप्तापि ण्डीकृत्य दशसहस्राण्यष्टौ च शतानि भवन्ति १०८०० तत्र स्वोच्चादधिकं ग्रहेण यदा भुक्तं भवति तदा तत्र स्वोच्चं विशोध्य शेषस्य लिप्तापि ण्डीकार्यम् । अथ स्वनीचादधिकं ग्रहेण भुक्तं भवति तदा तत्र स्वनीचमपास्यावशेषं लिप्तापि ण्डीकार्यम् । तासां ग्रहलिप्तानां ग्रहभुक्तलिप्तागण इत्याख्या तस्यैव ग्रहस्य परमनीचोक्तानि वर्षाणि मासयुतानि कार्याणि कथमुच्यन्ते । वर्षाणि द्वादशभिः संगुण्य तत्र मासान्यो जयेत्तानि च मासीकृतान्यादित्यादीनां लिख्यन्ते । तद्यथा चतुर्दशाधिकं शतं रवेः प्राग्वद्विभज्य सार्धं शतं चंद्रस्य नवतिर्भौमस्य द्विसप्ततिर्बुधस्य नवतिर्जीवस्य षड्विंशत्यधिकं शतं शुक्रस्य विंशत्यधिकं शतं सौरस्य अंकेनापि ११४ सू० १५० चं० ९० भौ० ७२ बु० ९० जीव० १२६ शुक्रस्य १२० शनेः तत्र त्रैराशिकं यद्विभगणार्धलिप्ताभिः खखाष्टदिवसंख्याभिरेताभिः १०८०० इष्टग्रहपरमनीचमासालभ्यन्ते तद्ग्रहभुक्तलिप्ताभिः क्रियन्त इति । अत्रेदं सूत्रम् । त्रैराशिके प्रमाणं फलमिच्छाद्यन्तयोः । सदृशरशीइच्छाफलं न गुणिता प्रमाणभक्ता फलं भवति तदर्थं ग्रहभुक्तलिप्ता एव ग्रहपरमनीचमासैः संगुण्य भगणार्धलिप्ताभिर्विभज्या वासं मासाः मासशेषं त्रिंशद्गुणितं ३० प्राग्वद्विभज्या वासं दिवसाः दिनशेषं षष्ठ्या संगुण्य प्राग्वद्विभज्या वासं घटिकाः घटिकाशेषं षष्ठ्या संगुण्य प्राग्वद्विभज्या वासं विकलाः पलानि ॥ एवं मासादिश्च षकांतः काल आगतः मासानां द्वादशभिर्भागमपहत्य चावाप्तं वर्षाणि लिभ्यन्ते तदेव शेषं मासाः एव मागतं वर्षादिपरमोच्चायुः दर्शितवर्षेभ्यः संशोध्यावशेषं ग्रहेण वर्षादि-रायुषः कालोदत्तो भवति । एवमुच्चाद्विच्युतस्य नीचमप्राप्तस्य कर्तव्यं नीचाद्विच्युतस्योच्चमप्राप्तस्य प्राग्वत्कालमानीय तस्यैव ग्रहस्य परमनीचायुषिसंयोज्य ग्रहस्यायुषः कालो वर्षादिर्भवति । अथ वा यदि राशिषट्कलिप्ताभिरर्थायुर्वर्षाण्यपचायन्ते तदैताभिर्ग्रहभुक्तलिप्ताभिः किमित्यत्र मध्यमराशिसवर्णाकृत्य तेनां केन ग्रहभुक्तलिप्तागुणयेत् ततः परिवर्त्य भागहारच्छेदांशैरच्छेदसंगुण्यच्छेदांशांशगुणोभाज्यस्य भागहारः सवर्णितयोरित्यत्र वर्षाणामेव मस्वच्छेदादिकेन भगणार्धलिप्ताः संगुण्य खखषट्चंद्रनयनलिप्ता भवन्ति २१६०० एताभिर्भागमपहत्य वर्षाणि लिभ्यन्ते शेषं द्वादशभिः सविकलं संगुण्याधःस्थस्य सविकलस्य षष्ठ्या भागमपहत्योपरितनराशौ संयोज्य प्राग्वद्विभज्य मासालभ्यन्ते । एवं शेषं सविकलं त्रिंशता षष्ठ्या संगुण्य दिनघटिकाविघटिकाश्चानायितव्याः । शेषं प्राग्वत्कर्म । अथ लघुनोपायेन षण्डायुष आनयनं प्रदर्श्यते । तद्यथा इष्टग्रहात्प्रागुक्तमुच्चध्रुवकं विशोध्यावशेषं कर्मभूमौ स्थापयेत् । अथोच्चध्रुवकं न शुध्यति तदा ग्रहराशिद्वादशकं दत्त्वा तस्मादुच्चमपास्यावशेषं स्थापयेत् । ततस्तदवशेषं राशिषट्कादूनं भवति तदाराशिद्वादशकादपास्य शेषं स्थाप्यम् ।



अथराशिषट्कादधिकंभवतितदातदेवग्राह्यम् । तत्कर्मभूमौराश्यादिकंविलिप्तांतं  
 स्वपरमायुर्वर्षैःसंगुण्यस्वच्छेदैर्विभज्यलब्धमुपर्युपरियोजयेत्। अवशेषंस्थापयेत् ।  
 विलिप्तानांलिप्तानांचषष्ट्याभागानांत्रिशताराशीनांद्वादशभीराशिभ्योलब्धव-  
 र्षाणितदवशेषंमासाः भागशेषंदिवसाःलिप्ताशेषंधटिकाःविलिप्ताशेषंचपकाइ-  
 ति। एतावतैवकर्मणास्फुटंभवति। तथाचसारावल्याम् ॥ स्वोच्चशुद्धोग्रहःशोधः  
 षड्राश्यूनोभमंडलात् । स्वपिंडगुणितोभक्तोभादिमानेनवत्सराः । १।१२। ३० ।  
 ६०।६०।इतिहोरात्वंशप्रतिममिति। होरालम् । साचांशप्रमाणानिवर्षाणिददा-  
 ति यावंतोनवांशकालमेनभुक्तास्तावंत्येववर्षाणिददाति। तत्करणंयथा । तात्का-  
 लिकस्यलग्नस्यराशीनपास्यशेषंलिप्तापिंडीकार्यम् । तत्रशतद्वयेनभागमपहृत्या-  
 वाप्तभुक्तनवांशकास्तावंत्येववर्षाणिलग्नमायुर्दायंप्रयच्छंति । अवशेषेणसहत्रैरा-  
 शिकंकृत्वावर्षाणामधस्तान्मासाद्यंस्थापयितव्यम् । तद्यथा यदिलिप्ताशतद्वये-  
 नद्वादशमासालभ्यंते तदवशेषलिप्ताभिः कियंतइति तेनावशेषलिप्ताद्वादश-  
 भिःसंगुण्यशतद्वयेनविभज्यावातंमासास्तेचवर्षाणामधःस्थाप्याः। मासशेषंत्रिश-  
 तासंगुण्यशतद्वयेनप्राग्वद्विभज्यावातंचदिवसाः तान्मासानामधःस्थापयेत् ।  
 दिनशेषंपष्ट्यासंगुण्यप्राग्वद्विभज्यावातंधटिकादिवसानामधः स्थाप्याः । घ-  
 टिकाशेषंपष्ट्यासंगुण्यप्राग्वद्विभज्यावातंचपकाघटिकानामधः स्थाप्याः । ए-  
 वंलग्नमायुर्दायः । अपरेराशितुल्यंवदंति । अपरेन्येमणित्थादय आचार्यालग्नस्य  
 राशितुल्यमायुर्दायमिच्छंति । लग्नेनयावत्योराशयोभुक्तास्तावंत्येववर्षाणिल-  
 ग्नायुः लग्नस्यभुक्तभागादिकंलिप्तापिंडीकृत्यमासाद्यानयने त्रैराशिकंकर्तव्यम् ।  
 यद्यष्टादशभिर्लिप्ताशतैर्द्वादशमासालभ्यंते तदैताभिर्लग्नभुक्तलिप्ताभिःकियं-  
 तइति । प्राग्वद्वर्षाणामधस्तान्मासाद्यं निहितव्यम् । एवंकेचिल्लग्नमायुर्दायमि-  
 च्छंति । तथाचमणित्थः॥लग्नराशिसमाश्चाव्दामासाद्यमनुपाततः । लग्नमायुर्दा-  
 यमिच्छंतिहोराशास्त्रविशारदाइति ॥ तदेवमतंशोभनमित्यस्माकमभिप्रेतम्। अ-  
 न्यत्वेवमिच्छंति। यथा लग्नांशपतौबलवतिअंशतुल्यंराश्यधिपेबलवतिचराशितु-  
 ल्यमिति॥ तथाचसारावल्याम् ॥ लग्नाद्वायोंशतुल्यःस्यादंतरेचानुपाततः। तत्पतौ  
 बलसंसुक्तेराशितुल्यंचभाधिपे ॥ हित्वावक्रमिति। येनग्रहेणयावत्संख्यआयुर्दायो  
 दत्तस्तत्तस्यस्वंभवति तस्मात्स्वादायुषोभौमादिकस्यग्रहस्यवक्रंविपरीतगतंहि-  
 त्वावर्जयित्वायोग्रहोरिपुगृहगतः शत्रुक्षेत्रावस्थितोभवतितेनस्वादायुषस्त्रिभागो  
 हीयते सग्रहस्त्रिभागमपहरतीत्यर्थः। वक्रितःपुनःशत्रुक्षेत्रगतोपिनापहरति। तथा-  
 चवक्रचारंविनाग्रंशंशत्रुराशौहरेद्ग्रहः। एतद्ब्रह्मनामतम्। आचार्यस्यपुनरेषएवपक्षो-  
 ऽभिप्रेतः। अन्यथा हित्वाभौमंरिपुगृहगतैर्हीयतेस्वत्रिभागमित्येवावक्ष्यत्। वक्रंहि-  
 त्वायोग्रहोरिपुराशिगतएवज्ञायते यथावक्रगोग्रहआयुर्दायंसवलत्वात्रिगुणंददा-

ति तथात्रापिनापहरतीतिनिश्चयः । अन्येपुनरेवंव्याचक्षते यथा वक्रमंगारकं  
हित्वायोग्रहोरिपुराशिगस्तेनस्वादायुषस्त्रिभागोहीयते भौमः शत्रुक्षेत्रगतोपि  
नापहरति । अत्रचवादरायणः॥भूम्याःपुत्रंवर्जयित्वारिभस्थाह्न्युः स्वात्स्वादा-  
युषस्तेत्रिभागमिति । सूर्योच्छिन्नद्युतिपुसूर्येणरविणाउच्छिन्नाकर्तिताद्युतिर्येषांते  
सूर्योच्छिन्नद्युतयः आदित्यमंडलेअस्तमितेपुग्रहेपुदलमर्धहीयते । किंतुशुक्रार्क-  
पुत्रौसितशनैश्चरौप्रोज्ज्वयवर्जयित्वा । तावस्तंगतावपिनापहरतः।तथाचवादरा-  
यणः॥अस्तंयाताः सर्वएवार्धहानिकुर्युर्हित्वादित्यपूज्यार्कपुत्रौ ॥ २ ॥

सर्वाद्ध्रिचरणपंचपष्टभागाःक्षीयंतेव्ययभवनादसत्सुवामम् ॥  
सत्स्वर्द्ध्वसतितथैकराशिगानामेकोऽंशहरतिवलीतथाहसत्यः ३

अथग्रहाणांस्वादायुषश्चक्रपातेनापहानिप्रहर्षिण्याह ॥ सर्वाद्ध्रिमिति । असत्सु  
पापग्रहेषुव्ययभवनादारभ्यद्वादशस्थानात्प्रभृतिसप्तमांतं यावद्व्यवस्थितेषु  
वामंव्युत्क्रमेणयथाक्रमंसर्वाद्ध्रादयोभागाःक्षीयंते । तत्रलग्राद्द्वादशस्थः पाप-  
ग्रहः सर्वमायुरात्मीयमेवापहरति एकादशस्थोऽर्द्धं दशमस्थस्त्रिभागम् नवमस्थ-  
श्चतुर्भागम् अष्टमस्थःपंचमभागं सप्तमस्थःषड्भागमिति।सत्स्वर्द्ध्रिमिति।एतेष्वेव  
व्ययादिपुस्थानेषुसत्सुशुभग्रहेषुव्यवस्थितेष्वशुभग्रहोक्तस्यार्द्धंक्षीयते । तत्रलग्रात्  
द्वादशस्थः शुभग्रहः स्वादायुषोर्द्धमपहरति एकादशस्थश्चतुर्भागम् दशम-  
स्थःषड्भागम् नवमस्थोष्टमभागम् अष्टमस्थोदशमभागम् सप्तमस्थोद्वादशभा-  
गमिति । तथैकराशिगानामिति । उक्तस्थानेषुयदाग्रहद्वयंभवतिवहवोवास्युस्त-  
दातेषामेकसंस्थितानांमध्यादेकएवयोबलीवीर्यवान्सएवैकोऽंशभागंयथापठितम-  
पहरति नान्ये तत्रस्थाअपहरंतिएतत्सत्यआह सत्याचार्यःकथयति । अंशग्रहणं  
यथासंभवंभागप्रदर्शनार्थम् । तथाचसत्यः॥ एकादशोत्क्रमात्सप्तमादितिप्राहहर-  
णकर्माणि । एकक्षणेपुवीर्याधिकःस्वभागंहरेदेकः ॥ अर्धतृतीयभागंचतुर्थकंपं-  
चमंचषष्ठंच । आयुःपिडात्पापाहरंति सौम्यास्तथार्धानि ॥ द्वादशसंस्थःपापः  
स्वादायंशोभनस्ततोर्द्धं तु । अपहरतिसर्वमायुर्यथाचयोगस्तमपिवक्ष्यइति ॥  
एकक्षोपगतानांयोभवतिवलाधिकोविशेषेण । क्षपयतियथोक्तमंशंसएवनान्यो-  
पितत्रस्थइति ॥ वराहमिहिरस्याप्येवंमतम् । इहसत्यमतोपन्यासआगमानुस-  
तिप्रदर्शनार्थः ॥ ३ ॥

सार्द्धोदितोदितनवांशहतात्समस्ताद्भागोष्टयुक्तशतसंख्यमु-  
पैतिनाशम् ॥ क्रूरेविलग्नसहितेविधिनात्वननेनसौम्येक्षितेदल-  
मतःप्रलयंप्रयाति ॥ ४ ॥

अथलग्नस्थः पापश्चक्रपातवदायुषोऽंशमपहरतितस्यांशप्रमाणज्ञानंवसंततिल-



केनाह॥साद्धौदितइति।उदितायेनवांशास्तेउदितनवांशाः सहाद्धौदितेननवांशे-  
नवर्ततइतिसाद्धौदितोदितनवांशाः।एतदुक्तंभवति।तात्कालिकस्यस्फुटलग्नस्यये  
भुक्ताभागाः तेषांलिप्ताः पिंडीकृत्यशतद्वयेनभागमपहृत्यावाप्तंतास्मिन्कालेभ-  
चक्रस्यचयावंतो नवांशकाउदिताः पश्चादद्धौदितोनवांशकः सतत्रउदितनवांश-  
समूहेयोज्यः एवंकृतेसाद्धौदितोदितनवांशसमूहोभवति तेनगणितागतंसम-  
स्तमेवायुःपिंडंशुणयेत् एवंकृतेसाद्धौदितोदितनवांशहतः समस्तआयुःपिंडोभव-  
ति तस्मादष्टाधिकशतेनभागेहृतेयदवाप्यतेवर्षादितन्नाशमुपैतिक्षयंगच्छति ।  
किंसर्वेषां नेत्याह।क्रूरविलग्नसहित इति।यदाविलग्नस्थः क्रूरः आदित्यांगारकश-  
नैश्चराणामन्यतमोभवतितदैवआगतंवर्षादिसमस्तायुःपिंडात्संशोध्यम् एवंकृते  
तत्कालजातस्यजंतोरायुर्वर्षादिस्फुटंभवति किंतुप्रत्येकस्यग्रहस्यैतत्कर्मकर्तव्यम्  
येनायुःसंशुद्धानिदशावर्षाणिसर्वेषांभवन्ति । विधिनात्वनेनसौम्येक्षितइति । अ-  
नेनविधिनासएवलग्नस्थः क्रूरग्रहोयदासौम्येक्षितः शुभग्रहेणदृश्यते तदावि-  
धिनात्वनेनयत्फलमायुःपिंडात्साधौदितोदितनवांशहतात्समस्तायुः पिंडादष्टो-  
त्तरशतेनभागेहृतेयत्फलंलब्धम् अतोदलग्नमर्थप्रलयंप्रयाति।तदद्धौकृत्यायुःपिंडा-  
त्पातयेदेवंकृतेआयुःप्रमाणंस्फुटंभवति । अन्येएवंव्याचक्षते । तात्कालिकेनल-  
ग्नैनभुक्तायेनवांशकास्तेसाद्धौदितनवांशेनसहग्राह्याः । अयमर्थः। तात्कालिकस्य  
लग्नस्यराशीनपास्यभागान्लिप्तापिंडीकृत्यशतद्वयेनभागमपहृत्यावाप्तमुदितां-  
शकास्तैःप्राग्वत्कार्यम्।एतदपिस्थूलम्। तेनलग्नभागांल्लिप्ताकृत्यताभिःप्रत्येकग्रह-  
दत्तवर्षादिरायुर्दायंसंगुण्यस्वच्छेदैर्भागमपहत्योपर्युपरियोजयेत् वर्षभगणकला-  
भिर्भागमपहरेल्लब्धंवर्षादि तस्यप्राग्वत्पातनंकार्यम्।तथाचसारावल्याम्॥लग्नां-  
शलितिकाहत्वाप्रत्येकंविहगायुषा। भाज्यामंडलालिताभिल्लब्धंवर्षादिशोधयेत् ॥  
२१६०० स्वायुषोलग्नग्रेक्रूरसौम्यदृष्टेचतद्वलमिति । एतदेवशोभनमस्माकंप्रति-  
भाति । नकेवलमत्र यावच्चक्रपातेप्येवंविधिः लग्नादिष्टग्रहंशोध्यावशेषंयदिषड्-  
भादूनंतदातस्यग्रहस्यचक्रपातोस्तिनान्यथेति तेनावशेषेणायुःपिंडस्यभागम-  
पहत्यलब्धंप्राग्वदायुःपिंडंपातयेत् तेनायुश्चक्रेणशुद्धंभवति।अथरूपादूनोभागहा-  
रोभवतितदारूपाद्भागहारंसंशोध्यशेषेणायुर्दायंसंगुण्यरूपेणभागमपहत्यलब्ध-  
मेवायुश्चक्रपातशुद्धंभवति । उक्तंच लग्नग्रहोनकंषड्भादूनकंयद्यसौहरः । आयुः-  
पिंडंभजेत्तेनलब्धंकर्षादिशोधयेत् ॥ रूपाद्यदोनोहारःस्याद्रूपाच्छुद्धेनताडयेत् ।  
रूपेणविभजेल्लब्धंतदेवायुः स्फुटंभवेत् ॥ अस्मिन्साधौदितेकर्मणिलग्नयदापा-  
पसौम्यौभवतस्तदायोलग्नोदितांशकसमीपवर्तीसएवग्राह्योनेतरइति।अत्रक्रूरश-  
व्देनक्षीणश्चंद्रमानग्राह्यः । तथाचवादरायणः ॥ सूर्यांगारकशनीनामेकस्मिंल्लग्न-  
गेभवतिहानिः । विधिनात्वनेनसौम्येक्षितेदलंपातयेल्लब्धम् ॥ ४ ॥

समाःषष्टिर्द्विधामनुजकरिणांपंचचनिशाहयानांद्वात्रिंशत्ख-  
रकरभयोःपंचककृतिः ॥ विरूपासाप्यायुर्वृषमहिषयोर्द्वाद-  
शशुनांस्मृतंछागादीनांदशकसहिताःषट्परमम् ॥ ५ ॥

अथपुरुषादीनांपरमायुःप्रमाणज्ञानंशिखरिण्याह ॥ समाषष्टिर्द्विधाइति । स-  
माशब्देनवर्षमुच्यते समानांवर्षाणांपष्टिर्द्विधाद्विगुणीकृताविंशत्यधिकंवर्षशतं  
भवति एवंविंशत्यधिकंवर्षशतंपंचनिशापंचरात्रयोर्होरात्राणीत्यर्थः । मनुजक-  
रिणामनुजानांमनुष्याणांकरिणांहस्तिनांचपरमायुः हयानामश्वानांद्वात्रिंशद्वर्षा-  
णिपरमायुः खरोगर्दभः करभट्टः अनयोः पंचककृतिः पञ्चकस्यकृतिः पंचानां  
वर्गः पंचविंशतिः परमायुः विरूपासाप्यायुरितिसापंचककृतिः विरूपाविगता  
रूपा एकोना चतुर्विंशतिर्वर्षाणिवृषमहिषयोः वृषाणांमहिषाणांचपरमायुः  
गोमहिष्योरित्यर्थः । शुनांसारमेयानांद्वादशवर्षाणिपरमायुः । श्वग्रहणंसर्वेषांन-  
खिनामुपलक्षणार्थं तेनसिंहमार्जारादीनामप्येतदेवस्मृतम् । छागादीनामिति  
दशकसहिताःषट्षोडशवर्षाणिपरमायुः । छागादीनाम् आदिग्रहणान्मृगादीना-  
मपि । परममिति सर्वेषांशेषभूतम् । किंपरमायुर्दायप्रयोजनम् । अश्वादीनां  
जातानामायुःप्रमाणज्ञानार्थमिति । तद्यथा अश्वादेर्जातस्यपुरुषवदायुःप्रमाणमा-  
नीयततत्त्रैराशिकंकर्तव्यंयदिविंशत्यधिकंवर्षशतंपंचदिनाधिकंपुरुषस्यायुःप्रमा-  
णंतदाद्वात्रिंशद्वर्षायुःप्रमाणस्याश्वस्यर्कस्यादिति । एवमागतमायुःप्रमाणमश्वस्य  
तत्कालजातस्यवाच्यम् । एवंसर्वेषामभिहितप्राणिनांस्वायुषापरमेष्ठित्रैराशिकंकृ-  
त्वातत्कालजातस्यायुःप्रमाणनिर्देशः कार्यः । अन्येएवंवदन्ति यथापठितात्परमा-  
युषः प्रमाणादधिकंन कश्चिज्जीवति । तदयुक्तम् । यस्माद्विंशत्यधिकाद्वर्षशता-  
दधिकमप्यायुर्गणितकर्मणाभवति यस्मात्परमायुःप्रमाणपठनंत्रैराशिकार्थ-  
मेवज्ञातव्यमिति ॥ ५ ॥

अनिमिषपरमांशकेविलग्नेशशितनयेगविपंचवर्गलिप्ते ॥

भवतिहिपरमायुषःप्रमाणंयदिसकलाःसहिताःस्वतुंगभेषु ॥ ६ ॥

अथयस्मिन्योगेजातस्यपरमायुर्भवतितद्योगज्ञानंपुष्पिताग्रयाह ॥ अनिमि-  
षपरमांशकइति । अनिमिषोमीनः तस्यपरमांशकोनवमनवांशकः तस्मिन्ननि-  
मिषपरमांशकेविलग्नेशशितनयेबुधेगविवृषेचपंचवर्गलिप्तेस्थिते लिप्ताः पंच-  
विंशतिभुक्त्वाबुधोवृषेस्थितः सकलाः समस्ताअन्येग्रहाःसर्वेएवयदिस्वतुंगभे-  
षुस्थिताः परमोच्चगताभवन्ति तदाजातस्यपरमायुःप्रमाणंविंशत्यधिकंवर्षशतं



पंचदिनाधिकमायुर्भवति । तत्रचकर्म तद्यथा आदित्यादयोग्रहाः सलग्नाईदृशाः

| र. | च. | मं. | बु. | शु. | श. | ल. |
|----|----|-----|-----|-----|----|----|
| ०  | १  | ९   | १   | ३   | ११ | ६  |
| ९  | २  | २७  | ०   | ४   | २६ | १९ |
| ०  | ०  | ०   | २५  | ०   | ०  | ५९ |
| ०  | ०  | ०   | ०   | ०   | ०  | ०  |

अत्रादित्यादीनांबुधवर्जितानां यथापठितानि परमायुः प्रमाणवर्षाणि भवन्ति बुधस्य पुनः क्रियते । तत्र तावद्बुधो नीचान्मीनाद्विच्युतः तस्मात्तात्कालिकादस्माद्बुधात् ११०।२५।० बुधपरमनीचध्रुवकमिदं ११।१५।००

संशोध्य जातम् । ११।५।२५।० एतल्लिप्तापिंडीकृतं २७२५ एताभिस्त्रैराशिकं यदि भगणार्धलिप्तानामेतासां १०८०० बुधपरमनीचवर्षाणि षट् भवन्ति लग्न ११ । २७ तदाऽऽसां नीचाक्रांतलिप्तानां २७२५ किं स्यादिति ।

|        |        |    |     |
|--------|--------|----|-----|
| च      | सु. १  | ११ | मं. |
| बु. २५ | शु. १२ | १० |     |
| ३      | ९      |    |     |
| ४शु.   | ६      | ८  |     |
| ५      | ७श.    |    |     |

अत्र प्राग्वत्फलवर्षादि १ । ६ । ५ । ० एतद्बुधपरमनीचवर्षेष्वेतेषु दत्त्वा जातं ७।६।५ एतद्बुधस्य परमायुः तत्र लग्नादेकादशस्थानत्वाद्भौमस्य चक्रपातात्परमायुः प्रमाणवर्षपंचदशकादर्धपातयित्वा सार्धानि सप्त ७ । ६ । वर्षाणि सौरस्याष्टमस्थानस्थत्वात्परमायुः प्रमाणाद्वर्षविंशतेः पंचमभागे चत्वारिवर्षाणि पातयित्वा जातानि षोडशवर्षाणि १६ आदित्यचंद्रबृहस्पतिशुक्राणां परमायुः लग्नस्य नवम-

नवांशकस्थत्वात्त्रयवर्षाणि भवन्ति । सर्वेषां स्थापनम् । सूर्यवर्षाणि १९ चंद्रवर्षा ०२५ भौमवर्षा ० ७ मासाः ६ बुधवर्षा ० ७ मासाः ६ दिनानि ५ जीववर्षा ० १५ शुक्रवर्षा ० २१ शनिवर्षा ० १६ लग्नवर्षा ० ९ सर्वेषां योगः वर्षा ० १२० दिनानि ५ एवं दर्शितयोगे परमायुः प्रमाणमागतमिति । अत्र चादित्ये मेघस्थे कन्यास्थत्वं बुधस्य न संभवति तेन षड्विंशैरुच्चस्थैर्बुधे च वृषस्थे योगोऽयं प्रदर्शितः । अत्र च परमोच्चगते सूर्ये बुधस्य वृषस्थ भागचतुष्टयं भुक्त्वा स्थितिर्भवति नास्मादधिकं यतो मध्यमार्कोदयराशिस्थाने शून्यभागाः षट्पंचाशल्लिप्ता ०।६।५० भवन्ति तदा तस्य स्फुटस्य परमोच्चता भवति एष एव सूर्यो मध्यमबुधः अत्र च यदा परमार्कफलं परमं च शीघ्रफलं न गतं भवति तदा बुधो वृषे भागचतुष्के स्फुटो भवति तत्र यथा दर्शितलग्ने यथावस्थितग्रहसंस्थायां वृषे चतुर्थभागे ईदृशो बुधो भवति १।४ अस्मान्नीचध्रुवकमिदम् ११।१५। संशोध्य जातम् १ । १९ एतल्लिप्तापिंडीकृतम् २९४० एताभिस्त्रैराशिकं यदि भगणार्धलिप्तानामेतासाम् १०८०० षड्वर्षाणि तदैताभिः २९४० कानीति लब्धं वर्ष १ मासाः ७ दिनानि १८ एतद्बुधपरमनीचवर्षेषु दत्त्वा जातानि वर्षाणि ७ मासाः ७ दिनानि १८ एतद्विषयं यथा दर्शितवर्षेषु संयोज्य जातवर्षाणां विंशत्यधिकं शतं १२० मासः १ दिनानि १८ एतद्दर्शितपरमायुः प्रमाणादधिकमप्यायुः संभवति इति । तस्मात्परमायुः प्रमाणपठनं त्रैराशिकार्थमेव व्याख्यातम् । अन्ये

पुनः अनिमिषपरमांशकेविलम्बेयोगमेवामुंव्याचक्षते । यथामीनेवर्गोत्तमगते  
 लम्बेवृषभस्थेनबुधेनपंचविंशतिलिप्ताभुक्ताभवंत्यन्येचग्रहाः स्वोच्चराशिपुपरभो-  
 च्चभागव्यतिरेकेणापियादिस्थितास्तदा योगशक्त्यैवपरमायुःप्रमाणंजातोजीव-  
 ति । अथबुधस्यपरमनीचध्रुवकंमिदम् ११ । १४ पूर्वदर्शितंसांप्रतंकर्मका-  
 लेकथमिदंप्रदर्शितमित्यत्रोच्यते । चतुर्दशभागान्भुक्त्वापंचदशेपठितेपरमनीच-  
 भागेव्यवस्थितोभवति अतश्चतुर्दशभागाः परमनीचस्थस्यप्रदर्शिताः तत्रस्थ-  
 स्यपरमनीचप्रदर्शितमायुर्भवति तस्माद्यावत्पंचदशभागोनभुक्तोबुधेनतावत्रै-  
 राशिकोत्पत्तिर्नकर्तव्येत्यतः कर्मकालेपंचदशभागाः प्रदर्शिताः इत्येतत्सर्वेषामे-  
 वग्रहाणांत्रैराशिककालेपठितैर्भागैर्भुक्तैः प्रदर्शयितव्या

| सू. | चं. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | ल. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| ०   | १   | ९   | ५   | ३   | ११  | ६  | ११ |
| ९   | २   | २७  | १४  | ४   | २६  | १९ | ८४ |

नितत्रैराशिकार्थमुच्चध्रुवकाः तथात्रैराशिकार्थपरम-  
 नीचध्रुवकाः एतैः कर्मकर्तव्यमिति ॥ ६ ॥

आयुर्दायंविष्णुगुप्तोपिचैवंदेवस्वामीसिद्धसेनश्चक्रे ॥

दोषश्चैषांजायतेष्टावरिष्टंहित्वानायुर्विंशतेःरूयादधस्तात् ॥ ७ ॥

अथास्यापरमतायुर्दायस्यदूषणार्थंशालिन्याह॥आयुर्दायमिति । एतदायुर्दायं  
 नकेवलंमययवनमणित्यशक्तिपूर्वैरुक्तंयावद्विष्णुगुप्तेनापिचाणक्यापरनाम्नैवमुक्त-  
 म् । आचार्यदेवस्वामीतथासिद्धसेनश्चैवंचक्रेकृतवानित्यर्थः । तथाचविष्णुगुप्तः॥पर-  
 मोच्चगतैःसर्वैर्मीनेमीनांशसंस्थिते । सौम्येचवृषगेजातः परमायुःसजीवति॥तथा-  
 चदेवस्वामी॥मूर्याद्यैरुच्चगतैर्मीनेमीनांशसंस्थितेलम्बे । सौम्येवृषभंयातेजातःपर-  
 मायुराप्नोति॥तथाचसिद्धसेनः॥मीनेपरमांशगतेसौम्येगविपंचवर्गलिप्तास्थे । सर्वैः  
 परमोच्चगतैर्जातःपरमायुराप्नोति । यद्येवंबहुभिराचार्यैरुक्तंतत्कोस्यदोषः । तत्रोच्य-  
 ते । वक्ष्यमाणंसत्याचार्यमतेप्रदर्शितमायुर्दायंबहुतराणामाचार्याणामतमिति । य-  
 स्मादाचार्यवराहमिहिरस्यप्रतिज्ञेयम् । ज्योतिषमागमशास्त्राविप्रतिपत्तौनयोग्यम-  
 स्माकम् । स्वयमेवविकल्पयितुंकिंतुबहूनामतंवक्ष्ये॥ अस्यपरमतस्यबहुतरविरुद्ध-  
 त्वंतावदास्ताम् । विवादसंभवोदोषोप्यस्तिदोषश्चैषामित्यादि । एषामाचार्याणां  
 मतेदोषोजायते कीदृशइत्याह । अष्टावरिष्टमित्यादि । वर्षाष्टकंयावज्जातानामरि-  
 ष्टमुक्तंवर्षाष्टकंहित्वात्यक्त्वावर्षविंशतेरधस्ताद्विशतप्रकारेणायुर्नस्यान्नागच्छति ।  
 एवंवर्षाष्टकादूर्ध्वमरिष्टंनास्ति तस्माद्वर्षाष्टकादूर्ध्ववर्षविंशतेरधस्तान्नकस्यचिन्म-  
 रणमापद्यते यावच्चक्ष्रियंतोदृश्यंते अयंतेषांप्रत्यक्षोदोषः ॥ ७ ॥

यस्मिन्योगेपूर्णमायुःप्रदिष्टंतस्मिन्प्रोक्तंचक्रवर्तित्वमन्यैः ॥

प्रत्यक्षोयंतेषुदोषःपरोपिजीवत्यायुःपूर्णमर्थैर्विनापि ॥ ८ ॥



अधुनातेषामेवाचार्याणांमतेआयुर्दायदूषणांतरंशालिन्याह॥यस्मिन्योगेइति।अ  
निमिषपरमांशकेविलम्बइत्यस्मिन्योगेविंशत्यधिकंवर्षशतंसंपंचदिनंपरमायुः पूर्णं  
प्रदिष्टं तस्मिन्योगेषद्ग्रहाः परमोच्चगताभवन्ति षड्भिश्चपरमोच्चगतैश्चक्रवर्तित्वं  
भवतीतिप्रोक्तमभिहितमन्यैराचार्यैः। तथाचचादरायणः॥षड्भिः स्याच्चक्रवर्ती  
त्रिभुवनमखिलंशास्ति सर्वैर्ग्रहेन्द्रैरिति। यवनेश्वरश्च॥षड्राजराजर्द्धिवलोपकर्षप्रदा-  
नमानेष्वभिजातशक्तिः। तत्रपरमोच्चगतायावन्तः षड्ग्रहानभवन्ति तावत्परमो-  
च्चायुर्नप्राप्नोति यदापरमोच्चगताभवन्तितदाजातेनचक्रवर्तिनाभवितव्यम्। एवंपू-  
र्णमायुःविंशत्यधिकंवर्षशतमर्थैर्धनैर्विनावर्जयित्वाबहवःपुरुषाजीवन्ति तस्मादय-  
मपितेष्वपरोदोषः। एतच्चपरमतायुर्दायदूषणंशालिनीद्वयमसंबद्धत्वाद्ग्राहमिहि-  
रकृतमेवभवतीतिप्रतिभाति। तत्रतावद्यदत्रप्रथमशालिन्यादूषणमुक्तमूतस्यदूष-  
णस्यासंबद्धत्वमुच्यते साङ्गोदितोदितनवांशहतात्समस्तादिति न्यायेनयत्कूरेवि-  
लम्बगतेआयुषः पातनंक्रियते तस्यप्रतिलम्बप्रत्यंशकवशादियत्तानसंभवतीति त-  
च्चपातयित्वायदायुरवशिष्यतेतस्यापीयत्तानास्तीति। तस्माद्यदुक्तम् नायुर्विंश-  
तैःस्यादधस्तात्तदयुक्तम्। अत्रोदाहरणम् यथाकुंभलग्नस्याद्यंशकोदयेआदित्यचं-  
द्रशुक्राःपरमोच्चेबुधजीवशनैश्चराः परमनीचेभौमश्चकुंभस्याप्यष्टाविंशतिमंभागं  
भुक्त्वास्थितस्तदातात्कालिकाग्रहाःसलग्नाःअत्रलग्नंनकिंचिद्भुक्तमिति लग्नायुर्दा-  
योनास्ति परमोच्चगतानांपरमनीचगतानांचज्ञातएव भौमस्यक्रियते तात्कालि-  
काद्भौमादस्मात्१०।२८भौमस्यपरमोच्चध्रुवकमिदम्९।२८ संशोध्यजातम् १।०

| सू. | चं. | मं. | दु. | वृ. | शु. | श. | ल. | एतल्लिप्तापिंडीकृतम् १८०० अथत्रैराशिकंयदिभगणार्द्धं  |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|--|
| ०   | १   | १०  | ११  | ९   | ११  | ०  | १० | लिप्तानामेतासां १०८०० भौमनीचमासाःनवति ९०             |
| ९   | २   | २८  | १४  | ४   | २६  | १९ | ०  | भवन्ति तदेतासांक्रियंतइति लब्धामासाः १५ एतैर्वर्ष    |
| ०   | ०   | ०   | ०   | ०   | ०   | ७  | १  | सत्रिमासंजातं वर्षं१मासाः ३ एतद्भौमपरमोच्चवर्षेण्वे- |

तेषु १५ संशोध्यजातंवर्षाणि १३ मासाः ९ एषभौमायुर्दायः। अथजीवस्यल-  
ग्नद्वादशस्थत्वाच्चक्रपातेनार्द्धपातयित्वाजातजीवायुर्दायःवर्षा०३मासाः९ पर-  
मोच्चगतानांपरमनीचगतानांचशत्रुक्षेत्रस्थत्वात्त्र्यंशमस्तंगतानामर्द्धचनपात्यते  
यस्मादनिमिषपरमांशकेविलम्बेइत्यत्रयोगेचंद्रमसोवृषस्थत्वाद्यद्यायुषः त्रिभ गः  
पात्यतेतदापूर्णमायुर्नभवतीति यस्मादन्याचार्यमतमिति तात्कालिकमित्राभि-  
त्रविधावुक्तम्॥मूलत्रिकोणाद्धनधर्मबंधुपुत्रव्ययस्थानगताग्रहेन्द्राः। तात्कालिकाः  
स्युःसुहृदोयहस्यस्वोच्चेचयोयस्यविकृष्टवीर्यः॥ जामित्रषष्ठाष्टमशत्रुमूर्तिर्द्युनत्रि-  
क्रोणैकगृहेनिविष्टाः। तात्कालमेतेरिपवोभवन्तिह्येतानिमित्राणिरिपूंश्चक्ष्ये ॥  
अनेनापिशुक्रश्चंद्रमसः तात्कालिकमित्रंनभवति तस्मान्मीनस्थेशुक्रेवृषस्यश्चंद्र-  
माः शत्रुगृहगोभवति तस्यचशत्रुक्षेत्रस्थत्वाद्यद्यायुषस्त्रिभागःपात्यतेतदा अनि-  
मिषपरमांशकइत्यत्रयोगेपूर्णमायुर्नप्राप्नोतीति। तच्चाचार्येणशृंगग्राहिकयैवप्रद-

शितम् । तेनैतज्ज्ञापयति । परमोच्चगतानां परमनीचगतानां च शत्रुक्षेत्रेऽयं शमस्तं  
गतानां चार्द्धनपात्यते तेन यथा दर्शितयोगं कृथपृथग्रहायुर्दायवर्षाणि लिख्यन्ते ।  
सूर्यस्य वर्षा० १९ चंद्रस्य वर्षा० २५ भौमस्य वर्षा० १३ मासाः ९ बुधस्य वर्षा०  
६ जीवस्य वर्षा० ३ मासाः ९ शुक्रस्य वर्षा० २१ शनेः वर्षा० १० लग्नेन न किंचिद्भुक्तमिति  
लग्नायुर्दायो नास्ति । अथैतेषां योगः वर्षा० ९८ मासाः ६ अथांगारकस्य लग्नगतत्वात्साद्धौ दितेति कर्मक्रियते तत्र चलग्रे कुंभारं भत्वा न्नवति ९०  
नवांशकाभुक्ता भवन्ति ते च नवांशकाश्चक्रस्योदिता उदयगत एकनवतिसमाः ९१  
तेनैकनवत्यासर्वायुः पिण्डमिदं वर्षा० ९८ मासाः ६ संगुण्य जातम् ८९।६।३।६  
अस्याष्टाधिकशतेन भागमपहृत्या वात्तवर्षाणि ८२ मासाः ११ दिनाः २८ घटिकाः २०  
एतानि वर्षाणि अस्मात् ९८।६ संशोध्य जातं वर्षा० १५ मासाः ६ दिनं १ कलाः ४०  
एवमष्टम्य ऊर्ध्वं विंशतेरधस्तादायुरुत्पन्नमिति । तस्मादयुक्तमुक्तम् ।  
नायुर्विंशतेः स्यादधस्तादिति । अत्रान्येव दंति । यथा क्रूरहीनं मीनलग्नं हृदि कृत्वैतद्ग-  
राहमिहिरेणोक्तम् अनिमिषपरमांशके विलग्न इति । अनेनापि प्रकारेण न वक्तव्यम् ।  
यथानायुर्विंशतेः स्यादधस्तादित्यत्र धन्विलग्रे क्षीणे चंद्रे विंशतितमे भागे बुधस्तत्रा-  
स्तमितः सर्वेष्वन्येषु परमनीचस्थेषु यस्य जन्म भवति तस्य चक्रपाते नैवायुर्दायो ब-  
हुः पततीति । तस्यैव तावत्प्रदर्श्यते तत्र तात्कालिकाग्रहाः सलग्नाः रविः ६।९  
चंद्रः ७।२ भौमः ३।२७ बुधः ५।२० गुरुः ९।४ शुक्रः ५।२६ शनिः ०।१९  
लग्नं ८।० तत्र बुधस्योच्चध्रुवकं ५।१५ बुधः ५।२० अस्मात्पातयित्वा शेषं ०।५  
लिप्तापिंडीकृतं ३०० ततश्चैराशिकेन तदंतरं परमनीचमासैः ७२ गुणितं भगणा-  
र्थलिप्ताभिः १०८०० भक्तं लब्धं वर्षा० मासौ २ एतत्परमायुषः निपात्य जातं  
वर्षा० ११ मासाः १० अन्येषां परमनीचस्थत्वाज्ज्ञायते लग्नेन न किंचिद्भुक्तमि-  
तितस्यायुर्दायो नास्ति । चंद्रस्य क्षीणस्य पापत्वाल्लग्न्याद्वादशस्थत्वाच्चक्रपातेन  
सर्वपतितितदायुर्दायो नास्ति । आदित्यस्य लग्नैकादशस्थत्वाच्चक्रपातेनार्द्धपातयि-  
त्वा जातं वर्षा० ४ मासाः ९ बुधस्यास्तमितत्वादर्थपातयित्वा जातं वर्षा० ५  
मासाः ११ दशमस्थत्वाच्चक्रः स्वादायुषस्तृतीयमंशमपहरति इति । सौम्यत्वात्त-  
दर्धमस्यात्षड्भागाद्वर्षमेकं नवमासान्पातयित्वा जातान्यष्टौ वर्षाणि नवमासाश्च शु-  
क्रस्य भौमस्य लग्नाष्टमस्थत्वात्पंचमभागं सार्द्धं वर्षपातयित्वा जातानि वर्षा-  
णि षट् इति । एवं सर्वेषां वर्षाणि वर्षा० ४ मासाः ९ सूर्यस्यावर्षा० मासाः ० चंद्र-  
स्य । वर्षा० ६ मासः ० भौमस्य । वर्षा० ५ मासाः ११ बुधस्य । वर्षा० ७ मासाः  
६ जीवस्य । वर्षा० ८ मासाः ९ शुक्रस्य । वर्षा० १० मासाः ० शनैश्चरस्य ।  
वर्षा ० मासाः ० लग्नस्य । सर्वेषां योगः वर्षा० ४२ मासाः ११  
अत्रासंभवेऽप्यभिगम्यापि ब्रूमः । एवं विधया युर्दायः सर्वेऽप्यस्तंगतायदि भवन्ति ।



तथापि सूर्योच्छिन्नद्युतिपुचदलप्रोज्झ्य शुक्रार्कपुत्रावितिकृत्वा तथापिपंचत्रिंश-  
 द्वर्षाणिमासोनानियतोबुधस्यपूर्वमेवार्द्धपातितम् । एवंचद्विचत्वारिंशतोऽधस्ता-  
 दायुर्नागच्छतीति तथापिविंशतेरधस्तादित्यसंबद्धम् । अत्राप्यन्येएवंवदन्ति क्रूर-  
 हीनेविलम्बेजाताअष्टाभ्यऊर्ध्वविंशतेः अधस्तान्म्रियमाणादृश्यन्ते तेनान्याचार्य-  
 मतमसंबद्धम् । अत्रोच्यते।अन्याचार्यमतंपूर्वापर्येणविचार्यैतद्वदन्ति यैरेवाचार्यै-  
 रनेनमार्गेणायुर्दायः प्रदर्शितः तैरेवायमृत्युयोगोभिहितः । सचेहलिख्यते ।  
 तथाचवादरायणः ॥ षष्ठाष्टमस्थोरिपुष्टमूर्तिः पापग्रहः पापग्रहेयदिस्यात् ।  
 स्वांतर्दशायांमरणायजंतोर्ज्ञेयः सयुद्धेविजितोयदान्यैः ॥ तथाचयवने-  
 श्वरः ॥ षष्ठाष्टमस्थोशुभदस्त्वरौद्रःपापैः सुहृत्स्थानगतश्चदृष्टः । स्वांतर्दशायां  
 प्रकरोतिमृत्युंपाशाध्वबंधादिपरिक्षयाद्वा ॥ तथाचसारावल्याम् ॥ क्रूरदशायां  
 क्रूरः प्रविश्यचांतर्दशांयदाकुरुते । पुंसांस्यात्संदेहस्तदारियोगोहिंसदैवमहान् ॥  
 रवितनयस्यदशायांक्षितिजस्यांतर्दशांयदाभवति । बहुकालजीविनामपिमरणं  
 निःसंशयंपुंसाम् ॥ क्रूरराशौस्थितः पापः षष्ठेवानिधनेपिवा । तत्स्थेनवारि-  
 णादृष्टः स्वपाकेमृत्युदोग्रहः ॥ योलमाधिपतेः शत्रुर्लभस्यांतर्दशांगतः । करो-  
 त्यकस्मान्मरणंसत्याचार्यः प्रभाषते ॥ एवंक्रूरहीनेलम्बेजातास्तेपांवर्षाष्टका-  
 दूर्ध्वदर्शितकालादधस्तान्मरणंसंभवत्येव । तेचापिमृत्युयोगेनानेनमृताइतिज्ञे-  
 याः यस्मात्तस्यांतर्दशादर्शितग्रहसंबन्धिनीकदाभवतीत्यत्रायंनियमः । तस्मा-  
 दन्याचार्यमतेनैवाष्टाभ्यऊर्ध्वदर्शितकालादधस्तान्मरणंसंभवत्येव तस्मादेत-  
 द्रूपणमसंबद्धंप्रथमम् । अथाद्वितीयस्य द्रूपणस्यासंबद्धत्वमुच्यते । अत्रचक्रवर्तित्व-  
 योगंविनापिदीर्घमायुःसंभवति । अत्रोदाहरणम् । यत्रतात्कालिकाग्रहाः  
 सलग्नाःवृषेर्कोदशभागान्भुक्त्वास्थितः । एवंमिथुनेचंद्रमास्त्रीन्भागान् कुंभेभौ-  
 मोष्टाविंशतिभागान् मेषेबुधःपंचदशभागान् सिंहेजीवःपंचभागान् मेषेसप्त-  
 विंशतिःसत्रिभागान्छुक्रः कुंभेविंशतिभागान्सौरः धन्विलभमंत्येऽंशे । तद्यथा

| र. | च. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|----|----|-----|-----|-----|-----|----|----|
| १  | ३  | १०  | ०   | ४   | ०   | १० | ८  |
| १० | ३  | २८  | १५  | ५   | ३७  | २० | ५९ |

ईदृशाग्रहाः अत्रपूर्वप्रदर्शितकर्मणागतानिग्रहायुर्दाय-  
 वर्षाणिलिख्यन्ते वर्षा० १७ मासाः ५ सूर्यस्य वर्षा० २२  
 मासाः ११ चंद्रस्य वर्षा० १३ मासाः ९ भौमस्य वर्षा०  
 ७ मासाः ० बुधस्य वर्षा० १३ मासाः ९ जीवस्य वर्षा० १९ मासाः २ दिना०  
 २६ घ० ३० शुक्रस्य वर्षा० १३ मासाः ४ शनेः वर्षा० ९ मास० लग्नस्याथबृहस्प-  
 तेर्वर्षाणांचक्रपातादष्टमभागमपास्यजातंवर्षा० १३ मासाः ० दि० ११ घ० १५  
 चंद्रस्यषड्भागमपास्यजातंवर्षा० १९ मासः १ दि० ५ रवेः गुरुर्मित्रमतो-  
 न्यथान्यइति । शुक्रः शत्रुः सचार्कमूलत्रिकोणात्सिहान्नवमेस्थानेस्थितः तस्मा-  
 त्तात्कालिकंमित्रिभूतः तेनवृषस्थः समक्षेत्रे स्थितस्तेनतस्यायुर्दायंनकिंचित्प-

तति चंद्रश्चमिथुनेमित्रक्षेत्रेस्थितः । तस्यापियथादर्शितान्येवायुर्दायवर्षाणि ।  
यस्मादुक्तम् इंदोर्बुधेदेवगुरुंचविद्यात् । अंगारकः कुंभेशत्रुक्षेत्रेस्थितः यस्मा-  
दुक्तम् भौमस्यशुक्रः शशिजश्चमित्रमिति । शेषान् रिपून् शेषत्वाच्छनैश्चरस्त-  
स्यशत्रुस्तात्कालिकश्चैकगृहेनिविष्टत्वाच्छनैश्चरोधिशत्रुः किंत्वांगारकस्यशत्रु-  
क्षेत्रस्थस्यापिनपतति । यस्मादुक्तम् हित्वावक्रंरिपुगृहगतैर्हीयतेस्वामित्रभागइति ।  
तस्मादंगारकस्ययथागतमेवायुः चांद्रेरनर्काइतिवचनाद्भौमोबुधस्यमित्रम् ते-  
नतस्यमेषस्थत्वाद्यथागतमेवायुर्बुधस्य बृहस्पतेरप्यादित्योमित्रम् । यस्मादुक्तम्  
गुरोश्चभौमंपरिहृत्यसर्वेइति । तस्मात्सिंहस्थस्यबृहस्पतेः यथागतमेवायुः शु-  
क्रस्य मेषेसचमित्रक्षेत्रे । यस्मादुक्तम् भृगुनंदनस्यत्वर्केदुवज्याः सुहृदः प्रादि-  
ष्टाः । तस्मात्तस्यापियथागतमेवायुः शनैश्चरस्यापि कुंभेस्वक्षेत्रेस्थितत्वाद्यथागत-  
मेवायुः लग्नस्यपातचारहीनत्वात् यथागतमेवायुः । एवमायुर्दायवर्षाणिपृथ-  
क्पृथग्लिख्यन्ते । वर्षाणि १७ मासाः ५ सूर्यस्य वर्षा ० १९ मासः १ दिना ० ५ चंद्र-  
स्य वर्षा ० १३ मासाः ९ भौमस्य वर्षा ० ७ मासाः ० बुधस्य वर्षा ० १२ मासाः ० दि ० ११  
घ ० १५ गुरोः वर्षा ० १९ मासौ २ दि ० २६ घ ० ३० शुक्रस्य वर्षा ० १३ मासाः ४  
शनेः वर्षा ० ९ मास ० लग्नस्य एवंविधयोगेदशाधिकंवर्षशतमप्यायुः वर्षादि  
११० । १० । १२ । ४५ संभवति ११३ मासा ११ यदाचंद्रवर्षा ०  
२२ मासाः ९ तदासर्वेषांयोगः वर्षादि ११४।८।७।४५ एवंविधयोगेचतुर्दशाधि-  
कंवर्षशतमप्यायुः संभवति । केमद्रुमाख्यश्चायंयोगः । यस्माद्वक्ष्यति ॥ हित्वा-  
कैस्तुनफानफादुरधरास्वांत्योभयस्थैर्ग्रहेः शीतांशोः कथितोन्यथात्रबहुभिः  
केमद्रुमोन्यैस्त्वसौ । तस्मादेवंविधयोगेजातोदीर्घमायुः प्राप्नोति । केमद्रुमत्वा-  
च्चदरिद्रोभवति । वक्ष्यतिच केमद्रुमेमलिनदुःखितनीचनिःस्वाः प्रेप्याः  
खलाश्चनृपतेरपिवंशजाताः । केवलंदरिद्रादीर्घायुषोदृश्यन्ते । नकेनचित्कस्यचि-  
दरिद्रस्यायुःप्रमाणंज्ञातम् । यथायंदरिद्रोर्विशत्यधिकेनवर्षशतेनसंपंचदिनेनमृतः  
तस्मात्क्षौद्रमेवदूषणंज्ञातव्यम् । एवमस्यदूषणस्यासंबद्धत्वंप्रदर्शितमिति । अ-  
संभाव्यत्वाद्ग्राहमिहिरकृतमेतच्छालिनीद्वयनसंभाव्यते । यच्चदर्शिताचार्यमेत-  
नायुर्दायित्यक्त्वासत्यमतायुर्दायमंगीकरिष्यत्याचार्यस्तत्रचसत्यमतस्यबहुतरा-  
णामाचार्याणांमतांगीकरणमेवप्रयोजनम् । यस्मात्पूर्वमेवाचार्यमतेनायुःप्रति-  
ज्ञाव्याख्याता । ज्योतिषमागमशास्त्रंविप्रतिपत्तौनयोग्यमस्माकम् । स्वयमेववि-  
कल्पयितुंकिंतुबहूनामतंवक्ष्ये ॥ अथकश्चिदाह । ननुयोयं योगस्त्वयाप्रदर्शितः  
सकेमद्रुमएवभवति । यस्मादाचार्यएववक्ष्यति केंद्रेशीतकरेथवा ग्रहयुतेके-  
मद्रुमेनिष्यतइति । लग्नात्सप्तमस्थः केंद्रस्थश्चंद्रमास्तस्मादयंकमद्रुमोभव-  
ति । अत्रचब्रूमः । अत्रचंद्रमानगण्यते यस्माच्चंद्रमसः सकाशाद्ग्रहेणान्येनयोगः



कर्तव्यइति । यद्येवंतल्लग्रात्केंद्रस्थः कथंकरोतीत्यत्रोच्यते । चंद्रलग्नयो-  
स्तुल्यत्वात् । तथाचयवनेश्वरः॥मूर्तिचहोरांशशिनंचविंद्यात् । अत्रचगार्गिः॥व्य-  
यार्थकेंद्रगश्चंद्राद्विनाभानुनंचेद्ग्रहः । कश्चित्स्याद्वाविनाचंद्रलग्रात्केंद्रगतोथवा ॥  
योगः केमद्रुमोनामतदास्यात्तत्रगर्हितः । भवंतिनिदिताचारादरिद्यामयसंयु-  
ताइति । तस्माल्लग्रात्सप्तमस्थेचंद्रमस्यस्ययोगस्यकेमद्रुमतासिद्धैवेति ॥ ८ ॥

स्वमतेनकिलाहजीवशर्माग्रहदायंपरमायुषःस्वरांशम् ॥

ग्रहमुक्तनवांशराशितुल्यंवहुसाम्यसमुपैतिसत्यवाक्यम् ॥९॥

अथजीवशर्ममतेनसत्याचार्यमतेनचायुर्दायमौपच्छंदसिकेनाह॥स्वमतेनेति॥  
जीवशर्मानामाचार्यः स्वमतेनात्मीयमतेनपरमायुषोविंशत्यधिकस्यवर्षशतस्य  
संपंचदिनस्यस्वरांशंसप्तमभागंप्रत्येकस्यग्रहस्यायुर्दायमाहकथयति । किलशब्द-  
स्तथानामप्रदर्शनार्थः । तद्यथापरमायुः १२०।०५ अस्यसप्तभिर्भागमपहत्या-  
वाप्तंवर्षादि १७ । १।२२ । ८ । ३४ । यथान्याचार्यैर्नवतिथिविषयेत्येदमादी-  
निपरमोच्चगतानामादित्यादीनांवर्षाणिपठितानितथैतानिपरमायुःस्वरांशवर्षा-  
ण्येकैकस्यजीवशर्मपठितानि नीचेद्धंसतीत्यत्रापिस्थितमेवतत्रार्द्धमेतत् ८ ।  
६।२६।४।१७। एतानिपरमनीचस्थस्यैकैकस्यग्रहस्य एतैः प्राग्वदेवत्रैराशि-  
कंकृत्वैकैकस्यग्रहस्यायुर्दायः कर्तव्यः । अत्रापिवक्रंविनाशनुक्षेत्रस्थस्यग्रहस्य  
त्र्यंशापहानिः शुक्रशनैश्वरौविनाभौमंविनास्तंगतस्यार्द्धोपहानिः सर्वार्द्ध-  
त्रिचरणेत्यादिकाचक्रपातापहानिः क्रूरेविलभेसार्द्धोदितोदितेतिहानिः एत-  
त्सर्वजीवशर्मणोप्यन्याचार्यैः समानम् । तथाचजीवशर्मा॥सप्तदशै १७ को १  
द्वियमौ २२ वसवो ८ वेदामयो ३४ ग्रहेन्द्राणाम् । वर्षाण्युच्चस्थानांनीचस्था-  
नामतोर्द्धस्यात् । मध्येनुपाततः स्यादानयनं शेषमत्रयत्किंचित् ॥ पिंडायुषइ-  
वकार्यं तत्सर्वगणिततत्त्वज्ञैरिति । अत्रानयनं सुखोपायेनप्रदृश्यते । स्वोच्चशु-  
द्धोग्रहः शोध्यषड्भादूनोभमंडलात् । तद्भागाः कव्धिषड्भोगि ८६४१ हता-  
वेदाभ्रसायकैः ५०४ ॥ भक्तादिनादियल्लब्धंतदायुर्जीवशर्मजम् । दिनैस्तुत्रिश-  
तामासामासेभ्योरविभिः समाः ॥ नकेवलंग्रहदायंपरमायुषः स्वरांशमेतत्  
तेनोक्तम् । यावत्स्वमतेनेति । अनेनैवंप्रतिपादयति । यथैतन्मयाऋषिकृतेष्वाचार्य-  
कृतेपुवानकेपुचिच्छास्त्रेषुदृष्टमिति तस्मादस्यायुर्दायस्यजीवशर्मणः स्वमतक-  
रणमेषदोषः । एवंसर्वाचार्यमतेनायुर्दायोव्याख्यातः । अत्राचार्येणपरमतमेवो-  
पन्यस्तम् मययवनमणित्यशक्तिपूर्वैरिति । नचयवनेश्वरकृतेशास्त्रेतथावि-  
धआयुर्दायोदृष्टः । यस्माद्यवनेश्वरेणोक्तम् ॥ आयुर्पिराश्यंशकराशियो-  
गादिति । अत्रोच्यते । यवनेश्वरेणस्फुजिध्वजेनान्यच्छास्त्रंकृतम् । तथाच

स्फुजिध्वजः ॥ गतेनसाभ्यर्धशतेनयुक्ताप्यंकेनकेषांनगताब्दसंख्या । कालः  
 शका १०४४ नांसविशोध्यतस्मादतीतवर्षाद्युगवर्षजातम् ॥ एवंस्फुजिध्व-  
 जकृतंशककालस्यार्वाग्ज्ञायते।अन्यच्च यवनाचार्यैःपूर्वैः कृतमिति तदर्थस्फुजि-  
 ध्वजोप्याह । यवनाऊचुः येसंग्रहेदिगजनजातिभेदाःप्रोक्ताःपुराणैःक्रमशोग्रहस्य ।  
 तदेतज्ज्ञायतेयथावराहमिहिरेणपूर्वयवनाचार्यमतमेवोपन्यस्तम् अस्माभिस्तत्र  
 दृष्टम् स्फुजिध्वजकृतमेवदृष्ट्वा पराशरस्यापीयमेववार्ता पाराशरीयासंहिताके-  
 वलमस्माभिर्दृष्टानजातकंश्रूयतेस्कंधत्रयमितिपाराशरस्येति तदर्थंवराहमिहिरः  
 शक्तिपूर्वैरित्याह ॥ चित्रंप्रोज्झयपराशरः कथयतेदौर्भाग्यदंयोषितामित्येवमादि  
 मयमणित्थयोहोराशास्त्रेविद्येते।तथाचमयः॥एकोनविंशतिःसूर्यश्चंद्रमाःपंचविंश-  
 तिः।तिथिसंख्याकुजः सौम्योद्वादशोच्चगतोगुरुः॥कुजवदैत्यपूज्यस्यवर्षाणामेक-  
 विंशतिः॥एकोनासूर्यपुत्रस्यपरमोच्चगतस्यच ॥ आयुर्दायमिदंप्रोक्तमर्थनीचगत-  
 स्यतु।अंतरेत्वनुपाताच्चकारयेदायसंग्रहम्॥तथाचमणित्थः॥नवरूपाःशरयमला-  
 स्तिथयोर्काःपंचरूपकाःक्रमशः।रूपयमाकृतिसंख्याःसूर्यादीनांस्वतुंगभेष्वब्दाः॥  
 नीचेष्वस्माद्बलमन्यत्रानुपाततःकार्यम् । आयुर्दायविधानंहोराभक्तांशराशितुल्य  
 मपि॥अथवराहमिहिरस्यस्वमतायुर्दायोयवनेश्वरसत्यमतानुसारीव्याख्यायते ।  
 ग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यमिति । यत्रतत्रराशौयस्मिन्नवांशकेग्रहोव्यवस्थितःसच-  
 नवांशकोमेषादेरारभ्ययावत्संख्यस्यराशेःसंबंधीभवति तावन्तिवर्षाणिग्रहः स्वा-  
 युर्दायंप्रयच्छति । एतदुक्तंभवति । मेषादेरारभ्ययावत्ताराशीनांसंबन्धिनोनवांश-  
 काग्रहेणभुक्ताभवन्ति।तावन्तिवर्षाणिग्रहःप्रयच्छति एवंग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यंभ-  
 वति।यस्मिन्नवांशकेवर्तते तस्माद्यद्भुक्तंग्रहेणतेनसहत्रैराशिकंकृत्वामासाद्यानयि-  
 तव्यम्।त्रैराशिककरणंचवक्ष्यति।एवमायुर्दायानयनंचसत्याचार्येणोक्तम्।तथाच-  
 तद्वाक्यम्॥राश्यंशकसंयोगादायुरिहसमासतोग्रहादद्युः । एतच्चसत्यवाक्यम्॥  
 बहुसाम्यंसमुपैति बहूनामाचार्याणांसंमतम्॥तथाचयवनेश्वरः ॥ आयूंषिराश्यं-  
 शकचारयोगादिति ।अत्रतावत्सत्ययवनेश्वरवाक्यव्याख्यानेकिंचिद्विप्रातिपन्नं रा-  
 शेरंशकचारयोगादितिव्याचक्षते । यथायस्मिन्राशौग्रहोवर्तते तत्रतेनयावंतो-  
 नवांशकाभुक्तास्तावन्त्येववर्षाण्यायुःसंग्रहोददाति । अत्रचव्याख्यानेपरमग्रहदाय-  
 साध्यमानेनवर्षाणिभवन्ति । एतच्चव्याख्यानंवादरायणादिभिर्गङ्गीकृतम्।तथाच-  
 वादरायणः॥राश्यंशकलागुणिताद्वादशनवभिर्ग्रहस्यभगणभ्यः । द्वादशहताव-  
 शेषेव्दमासदिननाडिकाःक्रमशः ॥ इदमाचार्यवराहमिहिरेणविनष्टएवस्वल्पजा-  
 तकोभिहितमेतदनुसारेणसत्ययवनेश्वरयोर्व्याख्यानंक्रियते । आयूंषिराश्यंशक-  
 चारयोगादिति । राशीनामंशकाराश्यंशकाः । तेषुचारयोगादिति।यत्रतत्रराशौ  
 मेषांशकस्थोग्रहोवर्षमेकंप्रयच्छति वृषनवांशकस्थोग्रहोवर्षद्वयंप्रयच्छति एवमु-



तरोत्तरांशकवृद्ध्यावर्षवृद्धिर्यावन्मीनांतेद्वादशइति पूर्वव्याख्यानेनयवनेश्वरस-  
त्यवाक्ययोराशिग्रहणमनर्थकंभवति। अवश्यमेवराश्यंशकैर्भवितव्यमिति ॥९॥

सत्योक्तेग्रहमिष्टंलिप्ताकृत्वाशतद्वयेनाप्तम् ॥

मंडलभागविशुद्धेऽदाःस्युःशेषात्तुमासाद्याः ॥ १० ॥

अथानेनैवव्याख्यानानुसारेणाचार्यःसएवायुर्दायानयनमार्ययाह ॥सत्योक्तेइ-  
ति। सत्योक्ते सत्यमतायुर्दायकरणेतात्कालिकमिष्टमभिप्रेतं ग्रहंलिप्ताकृत्यालिप्ता-  
पिंडंकृत्वातस्यशतद्वयेनभागमपहृत्ययदवाप्तंतदवाप्ताख्यंस्थाप्यम्। अवशेषमधः  
स्थाप्यम्। अवाप्तमंडलभागविशुद्धेऽदाःस्युःमंडलभागशब्देनद्वादशभागउच्य-  
ते।तेनावप्तस्यद्वादशभिर्भागमपहृत्यावाप्तंत्याज्यम्।यदवशिष्यतेतेऽदाःस्युस्ता-  
वन्तिवर्षाणितेनग्रहेणायुषोदत्तानिभवंति। शेषात्तुमासाद्याःयदवशेषंस्थापितं त-  
स्माद्द्वादशगुणितात्तेनैवच्छेदेनविभक्तान्मासालभ्यन्ते।तच्छेषात्रिंशद्गुणिताद्दिना-  
नि तच्छेषषष्ठ्यागुणिताद्घटिकाःपुनरपिषष्टिघ्नात्प्राग्वत्भक्ताच्चविकलालभ्यन्तेइ-  
ति एवमागतंग्रहस्यायुर्दायंभवति॥तत्रोदाहरणम्॥तात्कालिकोग्रहः१।८।२५।०  
लिप्तापिंडीकृताः २३२५ अस्यशतद्वयेन २०० भागमपहृत्यावाप्तं ११  
जातंअवशेषम् १२५ अवाप्तस्यास्यद्वादशभिर्भागंनप्रयच्छति इतिएतदेवाव-  
शेषंतस्माद्ग्रहेणैकादशवर्षाणिदत्तानिभवंति। अवशेषं १२५ द्वादशभिर्गुणितं  
जातम् १५०० अस्यशतद्वयेनभागमपहृत्यावाप्तं ७ जातमेवंसप्तमासाः अथ-  
मासशेषम् १०० त्रिंशता ३० गुणितंजातम् ३००० अस्यशतद्वयेनभाग-  
मपहृत्यावाप्तं १५ दिवसाः पंचदशइति शेषस्याभावात् घटिकाभावः ए-  
वमागतमेवंविधाद्गहाद्वर्षादि वर्षा० ११ मासा० ७ दिना० १५ घटिका०  
अथतदेवराश्यंशकलागुणितादिति न्यायेनप्रदर्श्यते। तद्यथा राश्यादिग्रहः  
१।८।४५। अस्यराशिभागलिप्ताः पृथक्पृथग्द्वादशहताः १२।८६।५४० अथ  
भूयोऽनवाहताः।१०।८।८६४।४८६० अत्रलिप्तानामेतासां ४८६० षष्ठ्याभा-  
गेहतेलब्धम् ८१ अवशेषं० लब्धमिदंघटिकाख्यं ८१ भागेषु ८६४ सं-  
योज्यंजातम् ९४५ अस्यत्रिंशताभागेहतेलब्धम् ३१ अवशेषम् १५ एतेदिव-  
साः अथलब्धमिदं ३१ राशिष्वेतेषु १८ संयोज्यंजातम् १३८ अस्यद्वादश-  
भिर्भागेहतेलब्धं ११ शेषम्७ एतेमासाः लब्धस्यात्य ११ द्वादशभिर्भागं  
नप्रयच्छतीत्यतएतदेवात्रशेषम् ११ एतानिग्रहायुर्दायवर्षाणि ११ मासाः ७-  
दिना० १५ घ०। एतत्पूर्वकृतायुर्दायेसंविहितमिति। एवंयवनेश्वरसत्याचार्य  
बादरायणवराहमिहिरैरायुर्दायः प्रदर्शितइति ॥ १० ॥

स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणंद्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागैः ॥

इयान्विशेषस्तुभदत्तभाषितेसमानमन्यत्प्रथमेप्युदीरितम् ॥ ११ ॥

एवमागतस्यायुर्दायस्यसत्याचार्यमतेनैवकर्मविशेषार्थव्यंशस्थेनाह ॥ स्वतुंगव-  
क्रेति । स्वतुंगस्थैः स्वोच्चगतैर्ग्रहैः वक्रोपगतैः विपरीतगत्यास्थितैश्चयस्त्वदत्त-  
मायुस्तत्रिशत्संगुणंकार्यम् । द्विरुत्तमेति । उत्तमांशोपगतैः वर्गोत्तमांशस्थितैः  
स्वांशकस्थितैः स्वनवमभागगतैः स्वभस्थैः स्वराशुपगतैः स्वत्रिभागैः  
स्वद्रेष्काणस्थैः एतैः यद्वत्तमायुः तद्विसंगुणंकार्यम् । इयान्विशेषइति । भदत्तश-  
ब्देनसत्याचार्योभिधीयते यस्मात्तन्मतमिहप्रमाणीक्रियते । पूर्वोक्तविधिनामय-  
यवनमणित्यादिमतेनायुर्दायः कृतः तस्माद्भदत्तभाषिते सत्याचार्यकृतेइया-  
नेतावान्विशेषः । यदेतत्स्वतुंगवक्रोपगतैः त्रिसंगुणमिति तत्सत्योक्तमेवसमा-  
नमन्यदिति । अन्यद्यच्छेषं तत्प्रथमेप्युदीरितम् । प्रथमेमययवनादिमतेयदुदीरि-  
तमुक्तम् । तत्समानमत्रापितत्तुल्यम् । एतदुक्तंभवति ॥ सत्याचार्यमतेनायुर्दायंकृ-  
त्वावक्रवर्ज्यंशत्रुक्षेत्रगतस्यव्यंशपातनीयंशुक्रसौरवर्ज्यम् । अस्तगतस्यार्द्धपात  
नीयंसर्वार्धत्रिचरणेत्यादिचक्रपातोपहानिः कार्या ॥ ११ ॥

किंत्वत्रभांशप्रतिमंददातिवीर्यान्विताराशिसमंचहोरा ॥

क्रूरोदयेचोपचयःसनात्रकार्यचनाब्दैःप्रथमोपदिष्टैः ॥ १२ ॥

एवंसत्याचार्यमतेनग्रहायुर्दायमुक्त्वाधुनालग्नायुर्दायकरणंक्रूरोदयेपापहानिःप्रा-  
प्तातदपवादार्थमिद्वज्रयाह ॥ किमिति । अत्रास्मिन्सत्यमतायुर्दायेहोरालग्नंभांश-  
प्रतिमंददाति ॥ एतदुक्तंभवति ॥ मेषादेरारभ्ययावत्संख्यास्यराशेःसंबंधीनवांशको  
लग्नेनभुक्तस्तावंतिसंख्यानिवर्षाणिलग्नयायुर्दायोभवति । शेषाद्भागादिकान्नवांश-  
कात्रैराशिकेनमासाद्यानयितव्यम् । एतदुक्तंभवति । सत्योक्तेग्रहमिष्टंलिप्तीकृत्येत्ये-  
वंलग्नयायुर्दायःकर्तव्यः । एवंकृत्वायदिवीर्यान्विताहोराभवति तदाराशिसमानानि  
राशितुल्यानिवर्षाणिप्रयच्छतीति । होरास्वाभिगुरुज्ञवीक्षितयुतानान्यैरिति न्या-  
येनयदिवीर्यान्विताबलवतीहोरालग्नंभवति तदाराशिसमंददाति तत्तुल्या-  
निवर्षाणिप्रयच्छति भागादिकात्रैराशिकेनमासाद्यानयितव्यं कथमुच्यते । भा-  
गाश्चलितापिंडीकृत्यद्वादशभिः संगुण्याष्टादशभिः शतैः भागमपहृत्यावातं  
मासाः अवशेषंत्रिशतासंगुण्य तैर्नवच्छेदेनभागमपहृत्यावातंदिवसाः  
तदेवशेषं षष्ट्यासंगुण्यतथैवघटिकाः पुनरपिशेषंषष्ट्यासंगुण्य तथैवचष-  
काः लब्धं मासादितत्रैवयोजयेदेवंलग्नयायुर्दायोभवति वीर्यान्वितस्यलग्नस्य  
यत्कर्मतद्वीर्यवर्जितस्यचनकर्तव्यम् ॥ अत्रचबादरायणः ॥ होरादयोप्येवंबलयु-



क्तान्यानि राशितुल्यानि । वर्षाणि संप्रयच्छत्यनुपाताञ्चांशकादिफलम् ॥ एतच्चार्य-  
वराहमिहिरेण स्वल्पजातकेऽविनष्ट्रैवाभिहितम् । क्रूरोदयइति । मययवनादि-  
मतायुर्दाये क्रूरोदये क्रूरलमगते सार्द्धादितोदितनवांशहतात्समस्तादितिन्यायेन-  
यदायुषोपचयः क्रियते तदत्रास्मिन्सत्यमतायुर्दायेन कर्तव्यम् । अन्यत्सर्वकर्तव्य-  
म् । कार्यचनाद्दैरिति प्रथमोपदिष्टैः पूर्वकथितैरब्दैः नवतिथिविषयेति येष्व्दायवन-  
वादरायणाचार्यमतेन पठिता जीवशर्ममतेन च ग्रहदायं परमायुषः स्वरांशमिति  
तैरब्दैस्त्रैराशिकमुक्तं तदिह न संभवति । यथादित्यस्य द्वादशकानामंशकानामेको-  
नविंशत्यब्दा भवन्ति तदैकास्मिन्नंशके किमिति सत्यायुर्दायेन कर्तव्यम् ॥ १२ ॥

सत्योपदेशो वरमत्र किंतु कुर्वंत्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः ॥

आचार्यकत्वं च बहुघ्रतायामेकंतुयद्भूरितदेवकार्यम् ॥ १३ ॥

अथ मयादिमतमुपन्यस्य जीवशर्ममतंचोपन्यस्य सत्यमतस्यैवांगीकरणमिद-  
वज्रयाह ॥ सत्योपदेशइति । अत्रास्मिन्मतत्रये सत्योपदेशो वरं भेष्टइत्यर्थः । किंतु तद-  
प्यन्ये बहुवर्गणाभिः बह्विभिः गुणनाभिरयोग्यं कुर्वन्ति विनाशयंतिकास्ताः गु-  
णनाः स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणमित्यादिकाः तत्रयदिस्वगृहेग्रहो भवति तदा  
द्विगुणमायुः कुर्वन्ति स एव स्वगृहांशके यदि भवति तदाभूयोपि द्विगुणं कुर्वन्ति स  
एव स्वद्रेष्काणे यदा भवति तदाभूयोपि द्विगुणं वर्गोत्तमांशे स एव वक्रीयदि भवति  
तदाभूयस्त्रिगुणं कुर्वन्ति स एव स्वोच्चस्थो भवति तदाभूयोपि त्रिगुणं कुर्वन्ति । एवमन-  
वस्था । अनेनानवस्थाप्रसंगेन सत्योक्तमप्यायुर्दायमयुक्तं बहुवर्गणाभिः कुर्वन्ति ।  
तथाचमयः ॥ वर्गोत्तमे स्वराशौ द्रेष्काणे स्वेन वांशके द्विगुणम् । वक्रोच्चगते त्रिगु-  
णं द्विगुणं कार्यं यथा संख्यम् ॥ तथाच सारावल्याम् ॥ बहुताडनसंप्राप्तौ यां करोत्ये-  
कवर्गणम् । वराहमिहिराचार्यः सानदृष्टाचिरंतनैरिति ॥ एतदप्ययुक्तम् । तदात्र  
किं कार्यमित्याह । आचार्यकत्वं तु बहुघ्रतायामिति । एतदाचार्यकत्वमत्रागमः बहु-  
घ्रतायां प्राप्तायामेकंतुयद्भूरि बहुतरंगुणनंतदेवकार्यमिति । बहुषु गुणनासु प्राप्ता-  
स्वेकैव क्रियते इति बहुवारं यत्र द्विगुणं प्राप्तं तत्र सकृदेव द्विगुणमायुः कर्तव्यम् ।  
यत्र द्विगुणत्वं त्रिगुणत्वं च प्राप्तं तत्र सकृदेव त्रिगुणं कर्तव्यम् । यत्र वारद्वयं त्रिगुणत्वं  
प्राप्तं तत्र सकृदेव त्रिगुणं कर्तव्यम् । एकंतुयद्भूरितदेवकार्यमिति वचनात् स्वल्पजा-  
तकेऽप्युक्तमाचार्येण ॥ वर्गोत्तमे स्वराशौ स्वद्रेष्काणे स्वेन वांशके सकृद्विगुणं व-  
क्रोच्चयोस्त्रिगुणितं द्वित्रिगुणत्वे सकृद्विगुणमिति ॥ चक्रपातं वर्जयित्वा बहुवर्ग-  
णान्यायेनैतदेव कर्म शत्रुक्षेत्रस्थो नीचस्थश्च यदाग्रहो भवति अस्तंगतो वा तदा  
सकृदेवापहानिः कार्या नीचे तोर्द्धं सतीत्यत्रापि अनुवर्तनीयम् । उक्तंच स्वल्पजा-  
तके ॥ शत्रुक्षेत्रे व्यंशं नीचेर्द्धं मूर्यलुप्तकिरणाश्च । क्षपयंति स्वादायान्नास्तं यातौरविज-

शुक्राविति ॥ एवंकृतस्यसत्याचार्यमतस्यस्पष्टताभवतीत्याचार्यस्यमतम् । यत्रापहानिः प्राप्तागुणनाचप्राप्तातत्रसकृदेवापहानिंकृत्वासकृदपिगुणनाकार्या किं त्वपहानौकर्तव्यायांचक्रपातापहानिंकृत्वाततः शत्रुक्षेत्रस्थस्यापहानिः सकृदेवकर्तव्या ततःसकृदेवगुणनाकार्या अत्रचभगवान्गार्गिः॥ राशितुल्यांशसंख्या निग्रहोद्दानिप्रयच्छति।लग्नश्चसबलोन्त्यानि भुक्तराशिसमानितु॥मासाद्यानयनं कार्यमनुपातादतःपरम्।सर्वाद्ध्रिचतुर्थाशान्वामंपंचचतुःसमित् ॥ हरंतिपापाः स्वादायात्तदर्थमितरेग्रहाः।व्ययाच्चक्रापहानिस्तुकथितेत्यंतथाधुवम्॥एकस्त्वेकक्षेगेष्वेवकरोतिबलवान्ग्रहः।शत्रुक्षेत्रगतरुयंशंनीचेद्धर्मूर्यगस्तथा॥हंतिस्वादायाद्विगौनसितादित्यनन्दनौ।नचावनिमुतश्चांशंशत्रुक्षेत्रगतस्तथा॥ध्रुवापहानिःकर्तव्याततोन्त्यासुबहुष्वपि।प्राप्तास्वेकैवकर्तव्यायास्यात्तासुमहत्तरा॥ ततोपिगुणनाकार्याप्येकैवमहतीसकृत् । द्वाभ्यांवर्गोत्तमेस्वांशस्वद्रेष्काणस्वकेग्रहे ॥ त्रिभिर्वर्गगतस्याथस्वोच्चराशिगतस्यचाग्रहदायोभवत्येवंशोधक्षेपकृतस्तुयः ॥ अत्रयद्यप्याचार्येणांशायुः प्रमाणीकृतम् तथापिलग्नोयदिसम्यग्बलीभवतितदांशायुः कर्तव्यम्।अथाकोवलवांस्तदापिंडायुः।तथाचमणित्यः ॥ विलभेतिबलोपेतेशुभदृष्टेशसंभवः।रवौपिंडोद्भवंकुर्यादितिद्रूयुश्चिरंतनाः॥तथाचसारावल्याम्।अंशोद्भवंविलभात्पिण्डंभानोर्निसर्गजंचंद्रादिति ॥ अन्येप्येवमाहुः यथाअंशायुःपिंडायुषीद्वेअपिकार्ये द्वाभ्यामपिदशांतर्दशाविभागपरिकल्पनाकार्या तत्रयदल्पंतस्यांतिममंतर्दशासैवयद्यधिकस्यतत्कालंवर्तते तदाधिकमायुर्जीवति शत्रुदशाचेत्तदातत्रैवमरणंमित्रदशाचेत्तदापिजीवति मध्यमदशाचेत्तदापीडाभवति ततोपिजीवति अस्माकंसत्याचार्यमतमभिमतमिति ॥ १३ ॥

गुरुशशिसहितेकुलीरलग्नेशशितनयेभृगुजेचकेंद्रयाते ॥

भवरिपुसहजोपगैश्चशेषैरमितमिहायुरनुक्रमाद्विनास्यात्॥१४॥

इति आयुर्दायाध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

अथ यस्मिन्योगेजातस्यायुःप्रमाणंनज्ञायतेतद्योगज्ञानंपुष्पिताग्रयाह ॥ गुरुरिति ॥ कुलीरलग्नेकर्कटोदयेगुरुशशिसहितेजीवचंद्रयुक्तेतथाशशितनयेबुधेभृगुजेचशुकेकेंद्रयातेकंटकगते शेषैःपरिशिष्टैः रविभौमसौरैः भवरिपुसहजोपगतैःभवस्थानमेकादशरिपुस्थानंषष्ठंसहजस्थानंतृतीयमेतेषुभवरिपुसहजेषुउपगतैः स्थितैःइहास्मिन्योगेजातस्यानुक्रमाद्विनागणितकर्मांतरेणापिविनाऽमितमपरिमितायुःस्याद्भवेत् ॥ एतदुक्तंभवति ॥ यदाकर्कटलग्नंभवतितत्रैवचंद्रजीवौव्यवस्थितौभवतः बुधशुक्रौसहितौपृथक्स्थौवालग्नचतुर्थसप्तमदशमस्थानानामन्यतमेयथासंभवंभवतः परिशेषाः आदित्यांगारकशनैश्चराः पृथक्सहितावाय-



थासंभवमेकादशषष्ठतृतीयगाः भवंतितदाईदृग्योगेयोजातः तस्यामितप्रमाण-  
मायुर्भवति अनुक्रमाद्गणितागतंविनैवअयमर्थः एवंविधेयोगेदृष्टेआयुर्दायग-  
णनानकर्तव्या यस्मात्तस्यासंभवइति अतोऽन्यथाजातस्ययथागतेनायुषावश्य-  
मेवभवितव्यम् । नायुःपिंडस्यार्वाक्तस्यमृत्युर्भवति नचायुःपिंडमतिक्रम्यते-  
नजीवितव्यमिति।यस्मिन्योगेजातस्यानाचारस्यैवायुषोध्वंसोभवतिइति । तथा  
चस्मृतिषूक्तम् ॥ पारदार्यमनायुष्यमित्येवमादिकैर्दोषैर्नजीवति एतद्योगेजातस्या  
युर्वेदोक्तैर्विधिसेवितैरसायनैः प्रयोगैर्यथाभिहितैर्दीर्घमायुरवाप्नोतीति ॥ १४ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतावायुर्दायाध्यायःसप्तमः ॥ ७ ॥

उदयरविशशांकप्राणिकेंद्रादिसंस्थाःप्रथमवयसिमध्येत्येच  
दद्युःफलानि ॥ नहिनफलविपाकःकेंद्रसंस्थाद्यभावेभवति  
हिफलपक्तिःपूर्वमापोक्लिमेपि ॥ १ ॥

अथातोदशांतर्दशाध्यायोव्याख्यायते।परिज्ञातसमस्तायुषःपुरुषस्यजीविता-  
भ्यंतरेस्थितयोःसुखदुःखयोःपरिच्छेदःक्रियते तत्रचशोध्यक्षेपविशुद्धमायुर्याव-  
त्प्रमाणयेनग्रहेणदत्तंतावत्प्रमाणैवतस्यसंबंधिनीदशाभवति । तत्रदशाक्रमोनज्ञा-  
यतेतज्ज्ञानंमालिन्याह ॥ उदयोलग्रंतनुः रविरादित्यआत्मा शशांकश्चंद्रोमनः  
एषामुदयरविशशांकानांमध्याद्यःप्राणीबलवांस्तद्बलवशात्तस्यसंबंधिनीप्रथमाद-  
शाभवति प्राधान्याद्देहवताम्।तथाचयवनेश्वरः ॥ निशाकरादित्यविलग्नमध्येत-  
त्कालयोगादधिकंवलंयः ॥ विभर्तितस्यादिदशेष्यतेसाशेषास्ततः शेषबलक्रमे-  
णेति ॥ उदयश्चरविश्रशशांकश्चोदयरविशशांकाः उदयरविशशांकानांप्राणीउद-  
यरविशशांकप्राणीउदयरविशशांकप्राणीचकेंद्रादिसंस्थाश्चोदयरविशशांकप्राणि-  
केंद्रादिसंस्थाः एवमेषांमध्याद्येनप्रथमादशादत्तातस्यैवकेंद्रादिसंस्थाः केंद्र-  
पणफरापोक्लिमेपुस्थिताग्रहाः वीर्योपचयक्रमेणदशादद्युः एवंलभार्कशशांका-  
नांमध्यादेकस्यबलवतोदशाआदौपरिकल्प्या ततस्तस्यकेंद्रस्थास्तेषांदशाःपरि-  
कल्प्याः तैःकेंद्रस्थैः प्रथमवयसिफलंदत्तंभवति ॥ यदुक्तम् प्रथमवयसिमध्येत्ये-  
चदद्युःफलानीति। तथाचयवनेश्वरः ॥ पूर्वतुकेंद्रोपगताःफलंतिमध्येवयःपाणफ-  
रंनिविष्टाः। आपोक्लिमस्थाःफलदावयोंत्येयथाबलंस्वंसमुपैतिपूर्वम्॥अथयदिकें-  
द्रस्थाग्रहाःनभवन्ति तदाकः प्रथमेवयसिफलंप्रयच्छतीत्याह ॥ नहिनफलविपाक  
इत्यादि। केंद्रस्थाद्यभावेकेंद्रस्थानांग्रहाणामभावेअसंभवेसतिप्रथमेवयसियःफल-  
विपाकःसनहिन।यतोद्वौनऔप्रकृतमर्थंगमयतः।पणफरस्थानामप्यभावेमध्येवय  
सिफलविपाकोनहिन आपोक्लिमस्थानामभावेत्येवयसिफलविपाकोनहिन॥एत-

दुक्तंभवति । यदाकेंद्रस्थाग्रहानभवंतितदापणफरस्थाः पूर्वफलंप्रयच्छंति । ततआपोक्लिमस्थाः । अथकेंद्रस्थाः पणफरस्थाश्चनभवंति तदासर्वास्मिन्नेववयसिआपोक्लिमस्थाःफलंप्रयच्छंति। यतउक्तम् भवतिहिफलपक्तिःपूर्वमापोक्लिमे-  
पिइति । एवमापोक्लिमस्थानामभावेप्रथमंकेंद्रस्थाः फलंप्रयच्छंति ततःपणफर-  
स्थाः यदाआपोक्लिमस्थानभवंति नचपणफरस्थास्तदासर्वस्मिन्नेववयसिकेंद्र-  
स्थाःफलंप्रयच्छंति । एतदुक्तंभवति लग्नार्कशशांकानांयोबलवांस्तदशाभवेत्प्रथ-  
मा । प्रथमांदशांकल्पयित्वाततस्तत्केंद्रगानांसर्वेषांकल्पनीयाः तेषांपरिकल्प्यप-  
णफरस्थानांपरिकल्पनीयास्ततःपरमापोक्लिमस्थानां केंद्रस्थानामभावेप्रथमंद-  
शापतेरनंतरंपणफरस्थानांकल्पनीयास्ततः आपोक्लिमस्थानांकेंद्रस्थानामभावे  
पणफरस्थानामभावे आपोक्लिमस्थानामेवकल्पनीयाः अथकेंद्रस्थाभवंतिपण-  
फरस्थानभवंति आपोक्लिमस्थाएवभवंति तदाकेंद्रस्थानांकल्पयित्वाआपो-  
क्लिमस्थानामेवकल्पनीयाः।अथकेंद्रस्थाएवकेवलंभवंतितदातेषामेवकल्पनीयाः-  
अथपणफरस्थाएवभवंतितदापणफरस्थानामेवकल्पनीयाः अथापोक्लिमस्थाभ-  
वंतितदातेषामेवकल्पनीयाः । तथाचस्वल्पजातकेउक्तम् ॥ लग्नार्कशशांकानांयो  
बलवांस्तदशाभवेत्प्रथमा । तत्केंद्रपणफरापोक्लिमोपगानांबलाच्छेषाः ॥ १ ॥

आयुःकृतंयेनहियत्तदेवकल्प्यादशासाप्रबलस्यपूर्वम् ॥

साम्येबहूनांबहुवर्षदस्यतेषांचसाम्येप्रथमोदितस्य ॥ २ ॥

अथदशाकालप्रमाणंकेंद्रस्थानानामपिदशाक्रमज्ञानमिद्वच्ययाह ॥ आयुःकृ-  
तमिति । शोधयक्षेपविशुद्धमायुर्यावद्वर्षप्रमाणंयेनग्रहेणदत्तंतदेवतस्यग्रहस्यसंब-  
धिनिदशाकल्प्यापरिकल्पनीया । तत्रलग्नार्कशशांकानांयोबलवांस्तदशाभवेत्प्र-  
थमेतिन्यायेनतदशांप्रथमंकल्पयित्वा ततस्तत्केंद्रगानांमध्यात्सैवदशाप्रबलस्या-  
तिबलस्यपूर्वंप्रथमंकल्प्यांअनंतरंतस्मादूनबलस्य एवंक्रमेणयथायथाऊनबलाभ-  
वंतितथातथापश्चात्तदीयदशाःकल्पनीयाःएवंकेंद्रस्थानां दशाःपरिकल्प्याःततः  
पणफरस्थानाम् अनेनैवक्रमेणपरिकल्प्याः ततःआपोक्लिमस्थानाम् अनेनैवक्रमे-  
णेति । साम्येबहूनामिति।केंद्रस्थानांबहूनांग्रहाणांबलसाम्येसतिबहुवर्षदस्यबहू-  
निवर्षाणियेनदत्तानितस्यप्रथमंदशापरिकल्प्या ! नन्वत्रकथंग्रहाणांबलसाम्यंभ-  
वति यदिद्रावपिसुहृत्त्रिकोणोच्चगतौभवतस्तदानैसर्गिकेणबलेनयोधिकः स  
एवबलीस्यात्।अस्त्वेतत् । किंतुस्थानदिक्चेष्टाकालबलग्रहदर्शनादिवलानियाव-  
द्गणितविधिनैकीक्रियंतेतावद्बलसाम्यंभवति ग्रहाणायथासामान्येनोदाहरणम्।य  
दिशनैश्चरोबलत्रयेणसंयुक्तोभवति भौमोबलद्वयेनतदातत्रभौमस्यानिसर्गबल-  
वत्त्वाद्बलसाम्यंभवति एवं सर्वेषामपिज्ञेयम् । तेषांचसाम्येप्रथमोदितस्येति



तेषां वर्षाणां साम्ये वर्षदानतुल्येऽपि प्रथमोदितस्य दशापरिकल्प्या प्रथममादावर्क-  
मंडलाद्युदिततद्गतस्तस्य यदा बलसाम्यं न भवति तदा बहुवर्षदेऽपि ग्रहे स्थिते तदा  
प्रथमोदितेऽपि स्थिते बलाधिकस्यैव पूर्वदशापरिकल्प्या तेषां च बलसाम्ये प्रथमोदि-  
तस्येत्यत्र द्विविध उदयः प्रत्यहं चक्रभ्रमवशादेकः आदित्यविप्रकर्षेणापरः त-  
त्रेहादित्यविप्रकर्षेण उदयोगणितस्कंधोक्तकालांशकवशाज्ज्ञेयः । अत्र च भगवान्  
गार्गिः ॥ बलीलभेदुसूर्याणां दशमाद्यां प्रयच्छति ॥ तस्मात्ततः प्रयच्छंतिकेन्द्रादि-  
स्थाः क्रमेण तु ॥ तत्रापि बलिनः पूर्वतत्साम्ये बहुदायकाः । तत्साम्येऽपि प्रयच्छंतिये  
पूर्वरविविच्युताः ॥ २ ॥

एकक्षगोर्ध्वमपहत्य ददाति तु स्वं त्र्यंशं त्रिकोणगृहगः स्मरगः  
स्वरांशम् ॥ पादं फलस्य चतुरस्रगतः सहोरास्त्वेवं परस्परगताः  
परिपाचयन्ति ॥ ३ ॥

एवं दशाव्यवस्थायां जातायामंतर्दशापाकग्रहज्ञानं वसंततिलकेनाह ॥ एकक्षगो-  
र्ध्वमिति । दशापतिना सहैकक्षगो ग्रहः एकस्मिन् राशौ व्यवस्थितः दशापतिदत्तांतर्द-  
शाकालस्य यद्वर्द्धतदपहत्य स्वैरात्मीयैर्दशागुणैः परिपाचयति । त्र्यंशमिति । त्र्यंशं  
त्रिकोणगृहगः दशापतेऽस्त्रिकोणगृहगो नवपंचमस्थानयोरन्यतमस्थितो दशापति-  
दत्तांतर्दशाकालात् त्र्यंशं तृतीयभागमपहत्य स्वैरात्मीयैर्दशागुणैः परिपाचयति ॥  
स्मरगः स्मरांशमिति । दशापतेः स्मरगः सप्तमस्थानस्थः दशापतिदत्तांतर्दशा-  
कालात् स्वरांशं सप्तमभागमपहत्य स्वैर्दशागुणैः परिपाचयति । पादं फलस्येति । चतु-  
रस्रगतः दशापतेः चतुरस्रगोष्टमचतुर्थस्थानस्थो दशापतिदत्तांतर्दशाकालात् पादं  
चतुर्थभागमपहत्य स्वैर्दशागुणैः परिपाचयति । सहोराः होरालभंतयासहिताः पर-  
स्परमन्योन्यमनेन प्रकारेण व्यवस्थिताः स्वैः स्वैर्दशागुणैः परिपाचयति । एत-  
दुक्तं भवति । यथा दशापतेः सकाशादेकक्षादिस्थो ग्रहो यथास्वं पठितमंशं परिपाच-  
यति तथा लग्नमपि पाचयति । अत्र दशापतेः प्रथममंशपरिकल्पनां कृत्वा पश्चादे-  
कक्षादिस्थितानां कर्तव्याः यस्माद् दशापतेर्योऽंशभाग आगच्छति तदनुसारेणाद्धादयो  
भागाः परिशेषाणां भवन्ति । अथैकस्मिन् स्थाने यदा बहवो ग्रहा भवन्ति तदा तेषां मध्ये  
यो बलवान्स एवैकः परिपाचयति नान्ये । कथमेतदवगम्यते । उच्यते । एकवचन-  
निर्देशात् एकक्षगोर्ध्वमपहत्य ददाति तु स्वमित्याद्येकवचनात् । न केवलं मिहिरा-  
चार्येणैकवचननिर्देशः कृतो यावत्स्वल्पजातकेऽपि तथा चोक्तम् ॥ एकक्षगोर्ध्वं त्र्यंशं  
त्रिकोणयोः सप्तमे तु सप्तांशम् । चतुरस्रयोस्तु पादं पाचयति गतो ग्रहः स्वगुणैरिति ॥  
न केवलं यावद्दुर्गादीनामप्येकवचननिर्देशोऽस्ति । तथा च भगवान् गार्गिः ॥ एक-  
क्षं संस्थितश्चाद्धं त्रिभागं तु त्रिकोणगः । सप्तमस्थः स्वरांशं तु पादं तु चतुरस्रगः ॥

लभेनसहिताः सर्वे ह्यन्योन्यं फलदायकाः ॥ यवनेश्वरश्चाप्येवम् ॥ कालोर्धभागैक-  
गृहाश्रितस्य तदर्धभागं लभते चतुर्थे । त्रिभागभागी च त्रिकोणसंस्थस्तदर्धभा-  
गस्याच्च पृथक् त्रिकोणे ॥ स्यात्सप्तमे सप्तमभागभागी स्थितो ग्रहश्चरवशाद्ब्रह्मस्य ॥ ए-  
वं सर्वत्रैकवचननिर्देशः । तस्मादेवं ज्ञायते । यत एक एवांशहारो भवति न सर्व इति ।  
तथा च सत्यः ॥ अर्धं तृतीयमर्धात्तथा द्विस्वाच्च सप्तमं भागम् । एकर्क्षेन वपंचमचतुर्थनि-  
धनाद्यसप्तानाम् ॥ दद्युर्ग्रहाग्रहाणां स्वदशास्वंतर्दशाख्यानाम् । फलकालान्मिश्रवि-  
विधं क्रमेण भेद्याश्च तेऽप्येवम् ॥ एकर्क्षेण पुबलवान्भागहारो मित्रतोरिपोर्वापि । मि-  
त्रं च पुष्टफलं तस्मिन्कालेरिपुर्नैवम् ॥ तथा च यमः ॥ एकर्क्षोऽपगतानां यो भवति बला-  
धिको विशेषेण । एकः स एव हर्तानान्येतत्र स्थिता विहगा इति ॥ लभेऽपि यत्रांशाप-  
हारित्वं प्राप्तं तत्र चलमेयदाग्रहः स्थितो भवति तदालग्रहयोर्यो बलवान्स एवै-  
कः पठितमंशमपहरति नेतर इति । अन्ये सर्वेषां भेदादिराशिगानामंतर्दशा-  
भागमिच्छन्ति । अन्ये पुनः एकमेव भागं गृहीत्वा तद्भागस्यैकर्क्षगानां भागीकृ-  
त्य तद्भागमिच्छन्ति ॥ ३ ॥

स्थानान्यथैतानि सवर्णयित्वा सर्वाण्यधश्छेदविवर्जितानि ॥

दशाब्दपिंडे गुणका यथांशं छेदस्तदैक्येन दशाप्रभेदः ॥ ४ ॥

अथ दशापरिकल्पनाज्ञानमिदं वञ्जयाह ॥ स्थानानीति । अर्द्धादिका भागाः  
स्थानशब्देनोच्यन्ते तेषामर्द्धादिकानां भागानां सवर्णनाकार्या सवर्णनासदृश-  
च्छेदनासादृश्यमुत्पाद्यतस्तानि सर्वाणि स्थानानि अधश्छेदैः विवर्जितानि  
कार्याणि छेदानपास्य इत्यर्थः । उपरिस्थिताराशयो यथासंभवं प्रत्यंशं गुण-  
कारा भवन्ति । छेदस्तदैक्येन तेषां राशीनामैक्येन संयोगेन च्छेदो भागहारो भवति ।  
कस्मिन् गुणकारा भागहारा इत्याह । दशाब्दपिंडे दशावर्षसमूहे तिनैतदुक्तं भवति ।  
दशाब्दान् पृथक् पृथक् गुणकारैः संगुण्य छेदेन विभज्या वा तं वर्षाद्यंतर्दशा भ-  
वति । तद्यथोदाहरणम् । दशापतिनैव केवलं कश्चिद्ग्रहः स्थितः अन्यस्था-  
ने पुन कश्चित् स्थितस्तदा स एवापहारी तत्र दशापतेः रूपस्यैकस्यैवाधोरूप-  
मेकं न्यसेत् एवमर्द्धहारस्य रूपस्याधोरूपद्वयं न्यासः ३।२ अत्र परस्परच्छेदगु-  
णावेतौ राशीकर्तव्यौ कृतौ ३।२ एतौ समच्छेदिभूतौ छेदहीनौ २ । १ एतौ गु-  
णकारौ अनयोर्योगः जातौ ३ एष भागहारः । अत्र दशापतिदत्तायुर्दायः ३।०।०।०  
एतद्वाभ्यां संगुण्य त्रिभिर्विभज्या वा तं फलम् २ इयं मूलदशापतेरंतर्दशा । अथ पुनरे-  
व मूलदशापतिवर्षाणि ३ व. ० मा. ० दि. ० घ. ० एकेन संगुण्य त्रिभिर्विभज्या वा तं फलं  
वर्षादि १ व. ० मा. ० दि. ० घ. इयं दशापतिना सहैकराशिव्यवस्थितस्यांतर्दशा एवं  
मूलदशापतिदत्तांतर्दशा कालेकराशिगेन ग्रहेणार्द्धपाचितो भवति अस्यांतर्द-



शाकालद्वयस्ययोगोवर्षादिः ३।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अथदशापतेः न-  
 वपंचमस्थानयोरेकस्मिन्स्थानेकश्चिद्ब्रह्मस्थितोभवति नद्वितीयेनचदशापति-  
 नासहनचतुरस्रयोः नचसप्तमे तदान्यासः  $\frac{3}{3}$  एतौपरस्परच्छेदहतौ  $\frac{3}{3}$  छेदेन  
 हीनौ ३।१ एतौगुणकारौएकीकृतौ ४ एषभागहारः मूलदशापतेः दायः  
 ४।०।०।०अस्यत्रिगुणस्यचतुर्भिर्भागमपहृत्यावाप्तम् ३।०।०।० अयंमूलदशापते-  
 रंतर्दशाकालः।अथमूलदशापतिदायस्यास्य ४।०।०।० एकगुणस्यचतुर्भिर्भाग-  
 मपहृत्यावाप्तम् १।०।०।० एषात्रिकोणस्थस्यांतर्दशेति।एवंमूलदशापतिदत्तां-  
 तर्दशाकालंत्रिकोणस्थेनग्रहेणत्रिभागमपहृत्यपाचितंभवति अस्यांतर्दशाकाल-  
 द्वयस्ययोगः जातः ४।०।०।० सैवमूलदशेति । अथदशापतेश्चतुर्थाष्टमयोरेक-  
 स्मिन्स्थानेकश्चिद्ब्रह्मोभवति नद्वितीये नचदशापतिनासहनत्रिकोणयोःनसप्तमे  
 तदान्यासः  $\frac{3}{3}$  परस्परच्छेदहतौ  $\frac{3}{3}$  छेदहीनौ ४।१ एतौगुणकारौएकीकृ-  
 तौ५एषभागहारःमूलदशापतेःदायः५।०।०।०अस्यचतुर्गुणस्य२०।०।०।०पंचभि-  
 र्भागमपहृत्यावाप्तम् ४।०।०।० अयंमूलदशापतेरंतर्दशाकालः अथमूलदशाप-  
 तिदायस्यास्य ५।०।०।० एकगुणस्यपंचभिर्भागमपहृत्यावाप्तम् १।०।०।० एषा  
 चतुरस्रस्थस्यांतर्दशेति । एवंमूलदशापतिदत्तांतर्दशाकालाच्चतुरस्रस्थेनपादम-  
 पहतंभवति । अस्यांतर्दशाकालद्वयस्ययोगः ५।०।०।० जातासैवमूलदशेति ।  
 अथदशापतेःसप्तमेस्थानेकश्चिद्ब्रह्मोभवति नदशापतिनासहनत्रिकोणेनचतुरस्र-  
 योस्तदान्यासः  $\frac{3}{3}$  परस्परच्छेदहतावेतौ ७।३ । छेदहीनौ ७ । १ ।  
 एतौगुणकारौएकीकृतौ ८ एषभागहारः दशापतेः दायः ८।०।०।०  
 अस्यसप्तगुणस्या ५।६ षट्भिः भागमपहृत्यावाप्तंवर्षादिः ७।०।०।०  
 इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिमूलदशापतेः दायः ८।०।०।० अ-  
 स्यैकगुणस्याष्टभिः भागमपहृत्यावाप्तम् १।०।०।० इयंमूलदशापतेः स-  
 त्तमस्थानस्थस्यांतर्दशा एवंमूलदशापत्यंतर्दशाकालात्सप्तमोभागः सप्तमस्थे-  
 नग्रहेणपाचितोभवति अस्यांतर्दशाकालद्वयस्थयोगः ८।०।०।० जातासै-  
 वमूलदशेति एवमेकस्मिन्दशाविकल्पाः अत्रादौमूलदशापतेरंतर्दशाभवति  
 तदनंतरमंशहरस्य।अथदशापतिनासहैकस्मिन्राशौकश्चिद्ब्रह्मोभवत्यपरश्चनवम-  
 पंचमयोर्मध्यादेकस्मिन्भवतिनद्वितीयेनान्येषुस्थानेषुनचतुरस्रयोः नसप्तमेत-  
 दान्यासः  $\frac{3}{3}$  ।  $\frac{3}{3}$  ।  $\frac{3}{3}$  । एतेराशयः परस्परच्छेदहताजाताः  $\frac{6}{3}$  ।  $\frac{3}{3}$  ।  $\frac{3}{3}$  छे-  
 दहीनाः ६ । ३ । २ एतेगुणकाराः एकीकृताः ११ एषभागहारः । अथद-  
 शापतिदायः ११।०।०।० अस्यषड्गुणस्यैकादशभिः भागमपहृत्या-  
 वाप्तम् ६।०।०।० एवंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदाय-  
 स्यास्य ११।०।०।० त्रिगुणस्यैकादशभिः भागमपहृत्यावाप्तम्

३।०।०।०।० इयमर्द्धपाचकस्यांतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदायस्या-  
 स्य ११।०।०।०।० द्विगुणस्यैकाशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् २।०।०।०।०  
 इयंत्रिकोणावस्थितस्यांतर्दशा अत्रदशापतेः यदर्द्धतदेकगृहावस्थितः पाचय-  
 तित्रिभागंचत्रिकोणगः अंतर्दशात्रयस्यास्ययोगः ११।०।०।०।० जा-  
 तासैवमूलदशेति । अथदशापतिनासहैकस्मिन्नाशौकश्चिद्भवत्यपरश्चतुरस्रयोः  
 मध्यादेकस्मिन्नद्वितीयेनचान्येषुस्थानेषुत्रिकोणयोः नसप्तमेतदान्यासः । ३।  
 ३।३ एतेपरस्परच्छेदहताजाताः ६।४।३ छेदहीनाः ८।४।२ एतेगु-  
 णकाराः एकीकृताः १४ एषभागहारः । अथदशापतिदायस्यास्य १४।०।०।०।०  
 अष्टगुणस्यचतुर्दशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् ८।०।०।०।० इयं  
 मूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदायस्यास्य १४।०।०।०।०  
 चतुर्गुणस्यचतुर्दशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् ४।०।०।०।० इयमर्द्धपाच-  
 कस्यांतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदायस्यास्य १४।०।०।०।० द्विगुण-  
 स्यचतुर्दशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् २।०।०।०।० इयंचतुर्थभागपाचकस्यांतर्द-  
 शा अत्रदशापतेः यदर्द्धतदेकगृहावस्थितः पाचयति चतुर्भागंचतुरस्रगतः  
 अंतर्दशात्रयस्यास्ययोगः १४।०।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अ-  
 थयत्रदशापतिनासहैकस्मिन्नाशौकश्चिद्भवत्यपरश्चसप्तमेनान्येषुस्थानेषुतदान्या-  
 सः ३।३।३ एतेपरस्परच्छेदहताजाताः ३४।३४।३४ छेदहीनाः १४।  
 ७।२ एतेगुणकाराः एकीकृताः २३ एषभागहारः । अथदशापतिदायस्यास्य  
 २३।०।०।०।० चतुर्दशगुणस्यत्रयोविंशत्याभागमपहृत्यावाप्तम् १४।०।०।०।०  
 इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपि मूलदशापतिदायस्यास्य २३।०।०।०।० सप्त-  
 गुणस्यत्रयोविंशत्याभागमपहृत्यावाप्तम् ७।०।०।०।० इयंपाचकस्थेनसहा-  
 वस्थस्यांतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदायस्यास्य २३।०।०।०।० द्विगुणस्य  
 त्रयोविंशत्याभागमपहृत्यावाप्तम् २।०।०।०।० इयंसप्तमभागपाचकस्यांतर्द-  
 शा अस्यांतर्दशात्रयस्ययोगो जातः २३।०।०।०।० सैवमूलदशेति । अथ  
 दशापतेस्त्रिकोणयोरपिग्रहोव्यवस्थितः नान्येषुस्थानेषुतदान्यासः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| १ | ३ | ३ |

  
 एतेराशयः परस्परच्छेदहताजाताः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| ९ | ३ | ३ |
| ९ | ९ | ९ |

 छेदहीनाः ९।३।३  
 एतेगुणकाराः एकीकृताः १५ एषभागहारः दशापतिदाय-  
 स्यास्य ५।०।०।०।० नवगुणस्यपंचदशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् ३।०।०।०।०  
 इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिमूलदशापतिदायस्यास्य ५।०।०।०।० त्रिगु-  
 णस्य १५।०।०।०।० पंचदशभिः भागमपहृत्यावाप्तम् १।०।०।०।०  
 इयंत्रिकोणस्थस्यांतर्दशाद्वितीयस्यैवैव अस्यांतर्दशात्रयस्ययोगः ५।०।०।०।०  
 जातासैवमूलदशेति । अथदशापतेस्त्रिकोणयोः मध्यादेकस्मिन्काश्चिद्ग्रहोव्यव-



स्थितः चतुरस्रयोः मध्यादेकस्मिन्नापिनान्येषुस्थानेषुतदान्यासः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| १ | ३ | ४ |

  
एतेपरस्परच्छेदहताजाताः 

|    |   |   |
|----|---|---|
| १२ | ४ | ३ |
|----|---|---|

 छेदहीनाः १२ । ४ । ३ एते-  
गुणकाराः एकीकृताः १९ 

|    |    |    |
|----|----|----|
| १२ | १२ | १२ |
|----|----|----|

 एषभागहारः अथदशापतिदायस्यास्य १९।  
० । ० । ० द्वादशगुणस्यैकोनविंशत्याभागमपहत्यावाप्तम् १२ । ० । ० । ०  
इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिदशापतिदायस्यास्य १९ । ० । ० । ० चतु-  
र्गुणस्यैकोनविंशत्याभागमपहत्यावाप्तम् ४ । ० । ० । ० इयंत्रिकोणभागपा-  
चकस्यांतर्दशा पुनरपिदशापतिदायस्यास्य १९ । ० । ० । ० त्रिगुणस्यैकोन-  
विंशत्याभागमपहत्यावाप्तम् ३ । ० । ० । ० इयंचतुर्भागपाचकस्यांतर्दशा अ-  
स्यांतर्दशात्रयस्ययोगः १९ । ० । ० । ० जातासैवमूलदशेति।अथयत्रदशापते-  
स्त्रिकोणयोर्मध्यादेकस्मिन्स्थानेकश्चिद्ब्रह्मोऽन्यः सप्तमेतदान्यासः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| १ | ३ | ७ |

 एते  
राशयः परस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |
|----|----|----|
| २१ | ७  | ३  |
| २१ | २१ | २१ |

 छेदहीनाः २१ ।  
३ एतेगुणकाराः एकीकृताः ३१ 

|    |    |    |
|----|----|----|
| २१ | २१ | २१ |
|----|----|----|

 एषभागहारः दशापतिदाय-  
स्यास्य ३१ । ० । ० । ० एकविंशत्यासंगुणितस्यैकत्रिंशताभागमपहत्यावा-  
प्तम् २१ । ० । ० । ० इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिदशावर्षाणि ३१ । ० । ० । ०  
सप्तभिः संगुण्यैकत्रिंशताभागमपहत्यावाप्तम् ७ । ० । ० । ० इयंत्रिभागपा-  
चकस्यांतर्दशा पुनरपिदशावर्षाणि ३१ । ० । ० । ० त्रिभिःसंगुण्यैकत्रिंशता  
भागमपहत्यावाप्तम् ३ । ० । ० । ० इयंसप्तमभागपाचकस्यांतर्दशा अस्यां-  
तर्दशात्रयस्ययोगः ३१ । ० । ० । ० जातासैवमूलदशेति यत्रदशापतेः च-  
तुरस्रयोः द्वयोरेवग्रहौस्थितौनान्यत्रतदान्यासः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| १ | ४ | ४ |

 एतेराशयः पर-  
स्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |
|----|----|----|
| १६ | ४  | ४  |
| १६ | १६ | १६ |

 छेदहीनाः १६ 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | ४ | ४ |
|---|---|---|

 । ४ । ४ एतेगुण-  
काराएकीकृताः २४ 

|    |    |    |
|----|----|----|
| १६ | १६ | १६ |
|----|----|----|

 एषभागहारः मूलदशापतिवर्षाण्येतानि ६ ।  
० । ० । ० षोडशभिःसंगुण्य ९६ । ० । ० । ० चतुर्विंशत्या २४ भागमप-  
हत्यावाप्तम् ४ । ० । ० । ० इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिदशापतेः दायस्या-  
स्य ६ । ० । ० । ० चतुर्गुणस्यचतुर्विंशत्याभागमपहत्यावाप्तम् १ । ० । ० । ०  
इयंचतुर्थभागपाचकस्यांतर्दशा द्वितीयस्याप्येषैव अस्यांतर्दशात्रयस्ययोगः  
६ । ० । ० । ० सैवमूलदशेति । अथयत्रदशापतेश्चतुरस्रयोः मध्यादेकस्मिन्क-  
श्चिद्ब्रह्मोभवतिसप्तमेन्यस्तदान्यासः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | १ | १ |
| १ | ४ | ७ |

 एतेराशयः परस्परच्छेदहता  
जाताः 

|    |    |    |
|----|----|----|
| २८ | ७  | ४  |
| २८ | २८ | २८ |

 छेदहीनाः 

|   |   |   |
|---|---|---|
| १ | ४ | ७ |
|---|---|---|

 २८ । ७ । ४ एतेगुणकाराः  
एकीकृ ताः ३९ एषभागहारः । अथमूलदशापतिवर्षाणि  
३६ । ० । ० । ० एतान्यष्टाविंशत्यासंगुण्यैकोनचत्वारिंशताभागमपहत्यावा-  
प्तम् २५ । १० । ४ । ३६ इयंमूलदशापतेरंतर्दशा पुनरपिदशावर्षाणि ३६  
सप्तभिः संगुण्यैकोनचत्वारिंशताभागमपहत्यावाप्तम् ६ । ५ । १६ । ९ इयंच-

तर्भागपाचकस्यांतर्दशापुनरपि दशावर्षाणि ३६ चतुर्भिः संगुण्यैकोनचत्वारिंशताभागमपहृत्यावाप्तम् ३।८।९।१५ इयंसप्तमभागपाचकस्यांतर्दशा अस्यांतर्दशात्रयस्ययोगः ३६।०।०।० जातासैवमूलदशेति । एवंत्रिविकल्पाः । अथयत्र दशापतिनासहैकराशौकश्चिद्व्यवस्थितोद्वयोरपित्रिकोणयोः

तदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ३ |

 एतेराशयः परस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| १८ | ९  | ६  | ६  |
| १८ | १८ | १८ | १८ |

 छेदहीनाः १८।९।६।६ एतेगुणकाराः

एकीकृताः ३९ एषभागहारः । अथमूलदशापतिवर्षाणि १३।०।०।० अतःप्राग्वदंतर्दशान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ६ | ३ | २ | २ |
| ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्ययोगः १३।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अथयत्र दशापतिनासहैकराशौकश्चिद्व्यवस्थितः त्रिकोणयोर्मध्यादेकस्मिन् नक्षत्रिद्वयवस्थितश्चतुरस्रयोर्मध्यादेकस्मिन्नेव

नान्यत्रतदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ |

 एतेराशयः परस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| २४ | १२ | ८  | ६  |
| २४ | २४ | २४ | २४ |

 छेदहीनाः २४।१२।८।६ एतेगुणकाराः एकीकृताः ५० एष

भागहारः मूलदशा ३६।०।०।० अतःप्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |    |    |    |    |   |    |
|----|----|----|----|----|---|----|
| १७ | ३  | १० | ४८ | ८  | ७ | २० |
| २४ | ५९ | ३३ | ६४ | ३२ | ५ | १२ |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्ययोगः ३६।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अथदशापतिनासहैकस्मिन्राशौकश्चिद्व्यवस्थितस्त्रिकोणयोः मध्यादेकस्मिन्नन्यः सप्तमेव्यवस्थितोनान्यत्र तदान्यासः

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ७ |

 एतेराशयः परस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ४२ | २१ | १४ | ६  |
| ४२ | ४२ | ४२ | ४२ |

 छेदहीनाः 

|    |    |    |   |
|----|----|----|---|
| ४२ | २१ | १४ | ६ |
|----|----|----|---|

 एतेगुणकाराः एकीकृताः ८३ एषभागहारः मूलदशावर्षाणि

१६।०।०।० अतः प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः आनीताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ८  | ४  | २  | १  |
| १  | ०  | ८  | २  |
| ४  | १७ | ११ | २६ |
| ४२ | २१ | ३४ | २३ |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्ययोगः १६।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अथदशापतिनासहैकस्मिन्राशौकश्चिद्व्यवस्थितः अन्यौद्वयोश्च तुरस्रयोस्तत्र

न्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ४ | ४ |

 एतेपरस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ३२ | १६ | ८  | ८  |
| ३२ | ३२ | ३२ | ३२ |

 छेदहीनाः ३२।१६।८।८ एतेगुणकाराः एकीकृताः ६४ एष

भागहारः मूलदशा ३६।०।०।० अतःप्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |   |   |   |
|----|---|---|---|
| १८ | ९ | ४ | ४ |
| ०  | ० | ६ | ६ |
| ०  | ० | ६ | ६ |
| ०  | ० | ६ | ६ |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्ययोगः ३६।०।०।० जातासैवमूलदशेति । अथयत्र दशापतिनासहैकस्मिन्राशौकश्चिद्व्यवस्थितोन्यश्चतुरस्रयोः

मध्यादेकस्मिन्नन्यः सप्तमेतदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ४ | ७ |

 एतेपरस्परच्छेदहताजाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ५६ | २८ | १४ | ८  |
| ५६ | ५६ | ५६ | ५६ |

 छेदहीनाः ५६।२८।१४।८ एतेगुणकाराः एकीकृताः १०६ एषभागहारः मूलदशा ३६।०।०।० अतः

प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |   |   |    |   |   |   |    |   |   |   |    |   |   |    |   |
|----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|----|---|
| १९ | ० | ६ | ४८ | ९ | ६ | ३ | २४ | ४ | ९ | १ | ४२ | २ | ८ | १८ | ६ |
|----|---|---|----|---|---|---|----|---|---|---|----|---|---|----|---|

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्ययोगः जातासैवमूलदशेति ३६।०।०।० अथयत्र त्रिको-



णयोः द्वयोः कश्चिद्ग्रहः स्थितः चतुरस्रयोः मध्यादेकस्मिन्स्तदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | ३ | ३ | ४ |

  
 एते परस्परच्छेदहता जाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ३६ | १२ | १२ | ९  |
| ३६ | ३६ | ३६ | ३६ |

 छेदहीनाः ३६।१२२।  
 १२।९ एते गुणकाराः एकीकृताः ६९ एष भागहारः मूलदशा  
 २३।०।०।० अतः प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ० | ० | ० | ४ | ० | ० | ० | ४ | ० | ० | ० |
| ३  | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्य योगो जातः २३।०।०।० सैव मूलदशेति।  
 अथ यत्र दशापतेस्त्रिकोणयोर्मध्यादेकस्मिन् स्थितः कश्चिद्द्वयोश्चतुरस्रयोश्चतदान्यासः  
 न्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| ४ | ४ | ४ | ४ |

 एते परस्परच्छेदहता जाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ४८ | १६ | १२ | १२ |
| ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |

 छेदहीनाः  
 ४८।१६।१२।१२ एते गुणकाराः एकीकृताः ८८ एष भागहारः मूलदशा २२।०।०।० अतः प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |   |
|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ० | ० | ० | ४ | ० | ० | ० | ४ | ० | ० | ० |
| ३  | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

 अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्य योगः जा-  
 तासैव २२।०।०।० मूलदशेति। अथ यत्र दशापतेस्त्रिकोणयोर्मध्यादेकस्मिन् क-  
 श्चिच्छिन्नः चतुरस्रयोरप्येकस्मिन् सप्तमे च कश्चिच्छिन्नस्तदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | ३ | ४ | ७ |

  
 एते राशयः परस्परच्छेदहता जाताः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| ८४ | २८ | २१ | १२ |
| ८४ | ८४ | ८४ | ८४ |

 छेदहीनाः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | ३ | ४ | ७ |

  
 ८४।२८।२१।१२ एते गुणकाराः एकीकृताः १४५ एष भा-  
 गहारः मूलदशा ३६।०।०।० अतः प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः 

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| २० | ६  | ५  | २॥ |
| १० | ११ | २  | ११ |
| ७  | १२ | १६ | २२ |
| ५१ | ३८ | ५८ | ३३ |

 अ-  
 स्यांतर्दशाचतुष्टयस्य योगः ३६।०।०।० जातासैव मूल-  
 शेति। अथ यत्र दशापतेश्चतुरस्रयोः द्वयोरपि ग्रहः स्थितः तमे चतदान्यासः 

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ |
| १ | ४ | ४ | ७ |

 एते परस्परच्छेदहता जाताः 

|     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|
| ११२ | २८  | २८  | १६  |
| ११२ | ११२ | ११२ | ११२ |

  
 छेदहीनाः ११२। २८।२८।१६ एते गुणकाराः 

|     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|
| ११२ | ११२ | ११२ | ११२ |
| ११२ | ११२ | ११२ | ११२ |

  
 एकीकृताः १८४ एष भागहारः मूलदशा ३६।०।०।० अतः प्राग्वच्चतस्रोतर्दशाः  
 २१।१०।२८।४२।५।५।२२।१०।५।५।२२।१०।३।१।१६।८ अस्यांतर्दशाचतुष्टयस्य योगः ३६।०  
 ०।० जातासैव मूलदशेति एवं चतुर्विकल्पाः। अथ पंचविकल्पेषु न्यासादेव ग्रहावस्थानं  
 बोद्धव्यम्। न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ४ |

 छेदेनानेन २४ हता जाताः गुणकाराः २४।१२।८।६।६ भाग-  
 हारः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ३ | ७ |

 न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ३ | ७ |

 छेदेनानेन गुणका-  
 राः ४२।२१।१४।१४।६ भागहारः ९७ न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ४ |

 छेदेनानेन २४ गुणकाराः २४।१२।८।६।६ भाग-  
 हारः ५६ न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ७ |

 छेदेनानेन ५६ गुण-  
 काराः ५६।२८।१४।१४।८ भागहारः १२० न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ७ |

 छेदेनानेन ८४ गुणकाराः ८४।४२।२८।२१।१२ भागहारः  
 १८७ न्यासः 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ७ |

 छेदेनानेन १४४ गुण-  
 काराः १४४।४८।४८।३६।३६ भागहारः ३१२ न्यासः





मन्तर्दशायांचकालेशरीरारोग्यधनवृद्धिभिःपुरुषोभिवर्द्धते । अथसमस्तबलै-  
र्युक्तो न भवति किंचिद्नबलस्तदा तस्य संपूर्णनाम्नीदशा भवति । अथ परमोच्चग-  
तो न भवति केवलमेवोच्चराशिगतो भवति तदा तस्य दशा पूर्णैव भवति । पू-  
र्णायांचदशायांचकाले धनलाभमवाप्नोति । तत्रारोग्यम् । बलवर्जितस्य ग्रहस्य रि-  
क्तानाम्नीदशा भवति । यश्च नीचराशौ स्थितस्तस्य रिक्तैवरिक्तादशाकाले तर्द-  
शाकाले धनहानिमवाप्नोति । नीचांशगतस्येति नीचांशे नीचराशिनवभागयो  
ग्रहो गतः । स्थितो भवति । यश्च शत्रुभागे शत्रुनवांशे च स्थितस्तस्य दशानिष्टफ-  
लाज्ञेया ज्ञातव्या । अनिष्टफलदशांतर्दशाकाले धनहानिमनारोग्यंच प्राप्नोति ।  
अत्र च भगवान्गार्गिः ॥ सर्वैर्वलैरुपेतस्य परमोच्चगतस्य च । संपूर्णाख्यादशा-  
ज्ञेया धनारोग्यविवर्धिनी । सर्वैर्वलैर्विहीनस्य नीचराशिगतस्य च । रिक्ताना-  
मदशाज्ञेया धनारोग्यविनाशिनी । स्वोच्चराशिगतस्याथ किंचिद्बलयुतस्य च ।  
पूर्णानामदशाज्ञेया धनवृद्धिकरी शुभा । यः स्यात्परमनीचस्थस्तथाचारिनवांशके ।  
तस्यानिष्टफलानामव्याध्यनर्थविवर्द्धिनी ॥ ५ ॥

भ्रष्टस्य तुंगादवरोहिसंज्ञामध्याभवेत्सामुह्यदुच्चभागे ॥

आरोहिणीनिम्नपरिच्युतस्य नीचारिभांशेष्वधमाभवेत्सा ॥ ६ ॥

अथ दशांतर्दशासंज्ञाः पुनरपीन्द्रवज्रयाह ॥ भ्रष्टस्येति । तुंगात्परमोच्चाद्भ्रष्टस्य  
च्युतस्यावरोहिसंज्ञा । अवरोहिणीनाम्नीदशाज्ञेया । दशापरमोच्चभागादार-  
भ्ययावत्परमनीचभागादि अत्रांतरेयद्राशिषट्कं तत्रावस्थितेन ग्रहेण यादत्तादशांत  
र्दशाद्यासावरोहिणीसंज्ञा भवति । यस्मात्परमोच्चाद्भ्रष्टः प्रत्यहमधोवतरतीति  
विकल्प्यते । यावत्परमनीचमिति । अवरोहिसंज्ञादशाऽधमफला भवति । य-  
स्माद्रक्ष्यति । संज्ञानुरूपाणि फलान्यथैषामिति । मध्याभवेत्सामुह्यदुच्चभागा  
इति । सैवावरोहिणी । यत्र तत्र राशौ व्यवस्थितेन सुहृद्भागेन मित्रांशकस्थेन द-  
त्तादशामध्यानामन्येव भवति । एवं यत्र तत्र राशौ अर्थादेव स्वांशकस्थेन दशाम-  
ध्यैव । एवं यत्र तत्र राशौ स्वोच्चनवांशकस्थेन दशामध्यैव । आरोहिणीति । नि-  
म्नान्नीचात्परिच्युतस्य चलितस्य ग्रहस्य आरोहिणीनाम्नीदशा भवति । परमनी-  
चांतर्भागादारभ्य यावत्परमोच्चभागादिरत्रांतरेयद्राशिषट्कं तत्रावस्थितेन ग्रहेण  
यादत्तादशांतर्दशावासारोहिणीनाम्नीदशा भवति । यस्मात्परमनीचा षट्प्र-  
त्यहं तावदारोहतीति ग्रहः परिकल्प्यते । यावत्परमोच्चमिति । आरोहिणीश्रे-  
ष्ठफला भवति । नीचारिभांशइति । सैवारोहिणी । यत्र तत्र राशौ स्वनीचरा-  
श्यंशोपगतेन दत्ताधमानाम्नीदशा भवति । एवं यत्र तत्र राशावरिभांशकस्थेन  
शत्रुनवांशकस्थेन दत्ताधमैव दशा भवति । पूर्वं शत्रुनवांशकस्थेन दत्तानिष्टफले-

त्युक्तमधुनासैवाधमेति । तत्किमेतदित्यत्रोच्यते । अवरोहिणीशत्रुनवांशक-  
स्थेनदत्तापिअनिष्टफलाज्ञेया । आरोहिण्यधमा । अनयोःकःफलभेदः । अत्रो-  
च्यते । अनिष्टफलाफलमशुभंप्रयच्छति । अधमाशुभमेवाल्पमिति । एवम-  
वरोहिणीसंज्ञायदाधमसंज्ञाभवति तदासैवानिष्टफलसंज्ञालभते । आरोहि-  
णीयदामध्यसंज्ञाभवति तदासैवपूर्णेतिसंज्ञाज्ञेया । अत्रचभगवान्गार्गिः ॥  
उच्चनीचांतरस्थस्यदशास्यादवरोहिणी । तस्यामल्पमवाप्नोतिफलंक्लेशाच्छुभं  
नरः ॥ मित्रोच्चात्मांशकस्थस्यमध्यामध्यफलातुसा । नीचोच्चमध्यगस्योक्ताश्रे-  
ष्ठाचारोहिणीदशा ॥ सैवाधमाख्याभवतिनीचराश्यंशगस्यतु । अवरोहिणी  
चेदधमाभवेत्कष्टफलातदा ॥ आरोहिणीमध्यफलासंपूर्णापरिकीर्त्तितेति ॥ ६ ॥

नीचारिभांशेसमवस्थितस्यशस्तेगृहेमिश्रफलाप्रदिष्टा ॥

संज्ञानुरूपाणिफलान्यथैषांदशासुवक्ष्यामियथोपयोगम् ॥७॥

अथदशांतर्दशासंज्ञाःपुनरप्युपजातिकयाह ॥ नीचेति । शस्तानिगृहाणि  
स्वोच्चमूलत्रिकोणात्मक्षेत्रमित्रक्षेत्राणि तेष्ववस्थितेननीचराश्यंशकेरिभागे  
शत्रुनवांशकेसमवस्थितेनवाग्रहेणदत्तायादशांतर्दशावासामिश्रफलानामन्येव ।  
मिश्रफलाशुभमशुभंचफलंप्रयच्छति । व्याधिसमेतमर्थागममेवमादिशेत् । अ-  
र्थादेवाशस्तराशिगेनअशस्ताअशस्ताःशत्रुनीचराश्यः तत्स्थेनस्वोच्चमित्र-  
मूलत्रिकोणात्मवर्गोत्तमनवांशकस्थेनापिदत्ता मिश्रफलैवभवति । संज्ञानु-  
रूपाणिस्वनामसदृशानिफलानिस्वांतर्दशासुचज्ञेयानि । तद्यथा । संपूर्णात्यंतश्रे-  
ष्ठफलप्रदा पूर्णाश्रेष्ठफलदा अधमाशुभाल्पफलदा रिक्तार्थापहारिणी  
अनिष्टफलदात्यंतमशुभकारिणीमिश्रफलाशुभमशुभंचफलंप्रयच्छति । अथैषां  
दशास्थितिः । अथशब्दानंतये । एषामादित्यपूर्वाणांग्रहाणांदशासुयथोपयो-  
गमुत्तरत्रवक्ष्यामि । यथायेनैवप्रकारेणैवयुज्यते । तथातत्कथयिष्यामि । कस्यां  
तर्दशार्थांकिफलमुपयुज्यतइति ॥ ७ ॥

उभयेधममध्यपूजिताद्रेष्काणैश्चरभेषुचोत्क्रमात् ॥

अशुभेष्टसमाःस्थिरेक्रमाद्धोरायाःपरिकल्पितादशा ॥ ८ ॥

अथलभदशायां शुभाशुभज्ञानंवैतालीयेनाह॥उभयेति।उभयेद्विस्वभावेराशौ  
लभगतेद्रेष्काणक्रमेणाधममध्यपूजितादशाज्ञेयाः । प्रथमद्रेष्काणेजातस्याधमा-  
शोभनानिष्टफला । द्वितीयेद्रेष्काणेमध्यमामिश्रफला । तृतीयेद्रेष्काणेपूजिता  
श्रेष्ठफला । चरभेचरराशावुत्क्रमेणवैपरीत्येनतेनप्रथमद्रेष्काणेजातस्यपूजिता  
द्वितीयेमध्यमा तृतीयेधमानिष्टफला । अशुभेष्टसमाः स्थिरेक्रमादिति ।



स्थिरेस्थिरराशौप्रथमद्रेष्काणेशुभा । द्वितीयेद्रेष्काणेइष्टाश्रेष्ठा । तृतीयेद्रेष्काणे  
समामध्यफला । एवंहोरायाः लग्नस्यदशाः परिकल्पिताउक्ताइति ॥ ८ ॥

एकंद्वौनवविंशतिधृतिकृतीपंचाशदेषांक्रमाच्चंद्रारेंदुजशुक्रजीव-  
दिनकृद्देवाकरीणांसमाः ॥स्वैःस्वैःपुष्टफलानिसर्गजनितैःपक्तिर्द-  
शायाःक्रमादंतेलग्नदशाशुभेतियवनानेच्छंतिकेचित्तथा ॥ ९ ॥

अथनैसर्गिकाणाग्रहाणांदशाकालंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ एकमिति । एका-  
द्याःसमाः एकादीनिवर्षाणिचंद्रादीनांयथाभिहितानिनैसर्गिकाणि । तद्यथा । ज-  
न्मसमयादारभ्यैकाः समाः संवत्सराः । एकश्चंद्रस्य ततःपरंद्वावारस्यां-  
गारकस्य । एवंत्रयः । ततःपरंनवेंदुजस्यशुभस्य । एवंद्वादश । ततः परंविं-  
शतिः शुक्रस्य । एवंद्वात्रिंशत् । ततः परंधृतयोष्टादशजीवस्यगुरोः । एवंपं-  
चाशत् । ततःपरंकृतिसंख्याविंशतिः दिनकृतः सूर्यस्य । एवंसप्ततिः । ततः  
परंपंचाशत् देवाकरेःसौरस्य । एवंविंशत्यधिकंवर्षशतम् १२० एतेपुनि-  
सर्गदशाधिपेपुग्रहेषुबलवत्सूपचयस्थितेषुचतदशाशुशोभनानि दशाफलानि-  
भवंति । हीनबलेष्वनुपचयस्थेष्वशोभनानि । एतच्चसर्वदाचित्यंयतोनिर्गद-  
शास्वितिसंवादइति । तथाचयवनेश्वरः ॥ स्तन्योपभोगः शशिनोवयः  
स्वभौमस्यविंद्यादशनानुजन्म । बौधंतुशिक्षापदकालमाहुरामैथुनेच्छाकुलितप्र-  
वृत्ति ॥ शौक्रंयुवत्वंविधिपूर्वदृष्टमामध्यमादेवगुरोर्वदंति । रवेर्वयोर्द्वात्परम-  
न्यदस्मात्सौरेर्जरादुर्भगकालमाहुरिति॥नैसर्गिकस्यदशाकालस्यप्रयोजनमाह॥  
स्वैस्वैरिति । तत्रयस्यग्रहस्यसंबन्धिनीपूर्वविधिनाकृतादशांतर्दशावासायदिनै-  
सर्गिकसमाभिः निसर्गकथितवर्षैः स्वैः स्वैः आत्मीयैः युज्यते स्व-  
दशाकालेनसमकालंभवति तदायावत्कालंतस्यदशायुक्ताभवति । निस-  
र्गवर्षसमयंयदिप्राप्नोतीत्यर्थः । कालद्वयस्यैक्यमुद्ब्रहति । तदायावत्कालं  
तस्यसंबन्धिनीदशांतर्दशाभवति । तस्याः पुष्टफलापक्तिः भवति । तस्याः  
पुष्टापरिपूर्णफलापक्तिः पाकोभवति । क्रमात्प्रतिपाद्यायावद्वर्ततेतावच्छु-  
भफलैत्यर्थः । अत्रकेचिद्ब्रदंति । पूर्वविधिनाजाताशुभातदाशुभफलमत्यर्थंप्रय-  
च्छत्यन्यथाशुभातदाशुभमत्यर्थमिति । एतच्चायुक्तम् । यस्माद्यवनेश्वरः ॥ श्रे-  
ष्ठादशास्वे वयसिग्रहस्येति । तथाचसत्यः । एकाब्दिकः शशी त्र्यब्दि-  
कः कुजो द्वादशाब्दिकः सौम्यः । द्वात्रिंशद्गुणुत्रोगुरुस्तुकथितः शत-  
स्यार्द्धम् ५० सप्तत्यब्दः सूर्योर्विंशत्यधिकः शनैश्चरोब्दशतः ।  
वयसोतराणित्रैषांस्वदशानैसर्गिकः कालः । स्वस्वं वयसः सदृशंग्रहः  
समासाद्यदेहिनांकालम् । रक्षणोपपणचेष्टास्वभावदाः स्युर्यथासंख्यम् ॥ अथ

लग्नदशानैसर्गिककालंपुराणयवनमतेनाह॥ अंतलग्नदशेति । विंशत्यधिकाद्-  
 र्षशतादूर्ध्वयदिकस्यचिदायुषः कालोभवति । तदासकालः सर्वएवल-  
 ग्नस्यनैसर्गिकोभवति । तस्मिन्कालेपुराणयवनानांमतेनलग्नदशाशोभनाभवति ।  
 विंशत्यधिकाद्दर्षशतादूर्ध्वमित्येतत्कुतोवगम्यते। उच्यते। तदर्वाक्कालस्यान्यग्रहप-  
 रिगृहीतत्वात् लग्नस्यानवकाशादेव । अथान्यः कश्चिदाह । यथाननुविंशत्य-  
 धिकाद्दर्षशतादधिकंयस्यायुर्नास्ति । किंतस्यलग्ननैसर्गिकोदशाकालोनास्ति ।  
 उच्यते । नास्त्येवनकेवलंयावद्दर्षसप्ततेरभ्यधिकंयस्यायुर्नास्ति तस्यशनैश्चरसं-  
 बन्धीनैसर्गिकोदशाकालोनास्ति । यस्यपंचाशतोधिकंनास्ति तस्यादित्यस्यकि-  
 मपिनास्ति । एवमन्येषामपियोज्यम् । ननुविंशत्यधिकंवर्षशतंपरमायुरत ऊर्ध्वं  
 जीविताभावात्कोलग्नस्यनैसर्गिकोदशाकालः । उच्यते । पूर्वमेवव्याख्या-  
 तम् । यथाविंशत्यधिकंवर्षशतंपरमायुः । त्रैराशिकार्थमश्वादीनामायुर्ज्ञाना-  
 र्थंप्रदर्शितम् । ततः तावत्प्रमाणादायुषः परंसंभवतीति । तथाच  
 यदामीनलग्नबलवतिमीनांशकांतेचकश्चिज्जातोभवति सर्वेचग्रहाः यत्रतत्र  
 राशौमीनांशकावस्थिताभवंति । केचिदुच्चगताः । केचिच्चवक्रितास्तदामीनल-  
 गोद्वादशवर्षाणिददाति । सएवबलयुतस्तदान्यानिद्वादशवर्षाणिग्रहैकैको  
 मीनाशकांतेस्थत्वाद्वादशवर्षाणिददाति । तानिचवक्रौच्चस्थत्वात्त्रिगुणानिषड्-  
 त्रिंशद्भवन्ति । आदित्यवर्ज्यम् । आदित्यस्यमेषमध्यमांशकस्थितस्यसप्तविंशति-  
 वर्षाणिभवंति । एवंचंद्रादीनांषण्णांशतद्वयंषोडशाधिकंभवति । आदित्यस्यसप्त-  
 विंशतिः । लग्नस्यचतुर्विंशतिः एवमेकीकृतंशतद्वयंसप्तषष्ठ्यधिकंभवति । नन्वे-  
 तावत्प्रमाणं कालं कश्चिज्जीवमानोनदृश्यते योगस्यातिदुर्लभत्वात् । उच्यते ।  
 कश्चित्दृश्यतएवजंत्वादिकः । नेच्छन्ति केचित्तथेति । ताललग्नदशामंतेकेचि-  
 दाचार्याः श्रुतकीर्तिप्रभृतयः तथातैनैवप्रकारेणशुभमितिनेच्छन्ति । नौवाञ्छं-  
 तीत्यर्थः । यस्मादवल्वेललग्नस्यवयोतेतदशाभवति साशुभा । आचार्येणलग्न-  
 दशायांशुभाशुभत्वंबलवशात्नोक्तम्। द्विष्काणवशादुक्तम्। उभयेधममध्यमपूजिता  
 इति । यस्माद्वलहीनस्यापिलग्नस्यवयोतेदशाद्विष्काणवशाच्छुभाभवतितस्मा-  
 द्येआचार्याअंतलग्नदशानेच्छन्ति । तेनिष्कारणमेवनेच्छन्ति । ननुकिमागमग्रं-  
 थानांकारणेन । उच्यते । यएवाचार्याअंतलग्नदशानेच्छन्ति । तएवागमांस्त्यक्त्वा  
 यथादर्शितकारणभुपन्यस्यनेच्छन्ति। तेनकारणेनदोषोक्तः । तथाचश्रुतकीर्तिः ॥  
 अंतलग्नदशाशुभेति यवनानैतद्वहूनांमतं तस्मिन्हीनबलेयतोत्यसमयेसास्याद-  
 तोनेष्यते । एतच्छ्रुतकीर्तिनाकारणभुपन्यस्तंतच्चदृष्टमतेनैसर्गिकेलग्नदशाकाले-  
 तदर्दशाशुभैवेत्यवगंतव्यम् ॥ ९ ॥



पाकस्वामिनिलग्रगेसुहृदिवावर्गैर्यसौम्येपिवाप्रारब्धाशुभदाद-  
शात्रिदशषड्भाभेषुवापाकपे ॥ मित्रोच्चोपचयस्त्रिकोणमदनेपाके-  
श्वरस्यस्थितश्चन्द्रःसत्फलबोधनानिकुरुतेपापानिचातोऽन्यथा १० ॥

अथदशांतर्दशाशुभाशुभज्ञानंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ पाकस्वामिनीति । सौ-  
रसावनचांद्रनाक्षत्राणिचत्वारिमानानि । तत्रसौरमानं रविभगणभोगः । या-  
वताकालेनाकोशमेकंभुंकेतत्सौरंदिनम् । यावताकालेनराशिद्वादशकंभुंकेतत्सौ-  
रंवर्षम् । तच्चपंचषष्ठ्यधिकैस्त्रिभिःशतैः दिनानांघटिकापंचदशकेनसाद्धेन  
भवति । सावनमुदयादुदयः अर्कोदयात्पुनरेवाकोदयः सावनमहोरात्रम् ।  
तच्चषष्ठ्यधिकमहोरात्रम् । अहोरात्रत्रिंशन्मासः । मासाद्वादशवर्षम् ।  
एवंषष्ठ्यधिकैस्त्रिभिःशतैः दिनानांसावनंवर्षंचांद्रंतिथिभोगः । तच्चस्वमाने-  
नषष्ठ्यधिकंशतत्रयंभवति सावनेनमीयमानंशतत्रयंचतुःपंचाशदधिकंदि-  
नानांतच्चवर्षंभवति । एवंसौरसावनचांद्राणित्रीणिमानानि प्रत्येकंस्वमाने-  
नषष्ठ्यधिकंशतत्रयंभवति । नाक्षत्रं चंद्रनक्षत्रभोगः । तच्चदिनानांसप्तविं-  
शत्यामासोभवति । शतत्रयेणचतुर्विंशत्यधिकेन दिनानांवर्षमुक्तम् ॥ रव्यंश-  
भोगोहोरात्रः सौरश्चांद्रमसस्तिथिः । चंद्रनक्षत्रभोगस्तुनाक्षत्रः परिकीर्ति-  
तः ॥ ससावनोग्रहर्क्षाणामुदयादुदयावधि । नाक्षत्रमानेमासःस्यात्सप्तविंश-  
तिवासराः ॥ शेषमानेषुनिर्दिष्टोमासस्त्रिंशदिनात्मकइति ॥ तस्मात्सावन-  
मानेनायुर्दायगणनाकार्या । यस्माच्छोध्यक्षेपविशुद्धमायुःकर्तव्यम् । तच्चसा-  
वनमानम् । सौरमानेनसंक्रांत्यवधिकोमासः । सावनस्त्रिंशद्वात्रः । चांद्रोमावा-  
स्यांतिकः । नाक्षत्रोरेवत्यंतिकः । सौरमधिमासयुतंचांद्रंभवति । चांद्रमूनरा-  
त्रोनंसावनंभवति । चांद्रशब्देननाक्षत्रम् । उक्तंचायुगवर्षमासपिंडंरविमानंसाधि-  
मासकंचांद्रम् । अवमविहीनंसावनमैदवमब्दान्वितंवर्षमिति । एवंशोध्यक्षेपवि-  
शुद्धंसावनमानेनायुर्दायविधिः । तथाचमयूरचित्रकेभगवान्गार्गिः । आयुर्दा-  
यविभागश्चप्रायश्चित्तक्रियास्तथा । सावनेनैवकर्तव्याःसत्राणामप्युपासनम् । न-  
न्वर्कोदयादारभ्याकोदयंयावदहोरात्रं तत्पुलिशतंत्रेसौरमहोरात्रंपठ्यते । वसु-  
सत्तरूपनवमुनिनगतिथयः शतगुणाश्चसौरेणेति । एतच्चपुलिशएवजानाति ।  
यस्मात्पुलिशतंत्रंवर्जयित्वा सर्वसिद्धांतेषुतंत्रेषुसौरमानेनरविभगणभोगः ।  
सौरमानमधिमासयुतंचांद्रंभवति । चांद्रमवमरात्रोनंसावनंभवति एवंशोध्य-  
क्षेपविशुद्धंसावनमानंसर्वसंहितासुचाकोदयादारभ्याकोदयंयावदहोरात्रंतत्सा-  
वनमहोरात्रमिति संज्ञा । तथाचभगवान्पराशरः । सावनमहोरात्रम् । गार्गिश्च ।  
सावनेनस्मृतोमासस्त्रिंशदुष्णकरोदयः ॥ तथाचश्रीभट्टब्रह्मगुप्तः ॥ सावनमुदया-

दुदयइति । एवंपुरुषस्यजन्मसमयेसावनमहर्गणंकृत्वातस्मात्तिथिनक्षत्रच्छेदं ता-  
त्कालिकग्रहलभादिकंकृत्वातथादशांतर्दशाः कर्तव्याः । ततआगामिदशाफलंव-  
क्तव्यम् । तत्रप्रथमजन्मनि अहर्गणंतात्कालिकंकृत्वा ततस्तत्रांतर्दशाकालं  
वर्षादिकंदिनीकृत्ययोजयेद्वर्षाणि द्वादशभिःसंगुण्यतेपुमासान्संयोज्यत्रिंश-  
तापुनःसंगुण्यतेपुदिनानिक्षिपेत् । एवंकृतेदशाकालोदिनरूपोभवति । तच्चता-  
त्कालिकेजन्माहर्गणेसविकलेसविकलंसंयोज्याहर्गणोभवति । तत्राद्योषद्वदि-  
कादिः कालोभवति । तस्यातीतार्द्धरात्रात्परतोगणनाकार्या । तस्मादिष्ट-  
दिनमानमानयेदनेनाचार्यमूत्रेण । युगणोधोभवगुणितोद्धिनवरसातावमाधि-  
कश्चांद्रः । चांद्रोधरर्तुवेदानागाताअधिमासदिनैर्हीनाइति । एतत्खंडखाद्यकर-  
णेनैवभवति । कौसौरविद्युगणइत्याह । शाकोगवसुशरोनोर्कगुणश्चैत्रादि-  
माससंयुक्तः।त्रिंशद्युगस्तित्युतइति । अस्यषष्ठ्यधिकेनशतत्रयेणभागमपहृत्या-  
वाप्तं करणाब्दाः । शेषास्त्रिंशद्भक्ताश्चैत्रसिताद्यामासाः । शेषावर्तमानमासेसि-  
ताद्यास्तितथयः । करणाब्देष्वगवसुशरान्संयोज्यातीतः शककालोभवति ।  
तस्मिञ्छाकेतस्मिन्मासेतस्मिन्दिनेसोहर्गणइति । तत्रैवदशांप्रवेशः पुनरप्य-  
न्यमंतर्दशाकालंदिनीकृत्यतस्मिन्योजयेत् । एवंयावंत्योंतर्दशाभवंतितान्यो-  
नेनैवप्रकारेणयोजनीयाः । ततोग्रहान्लग्नचगणयेत् अथवान्येनप्रकारेण  
कालानयनम् । आदित्येक्रियमाणेयावंतोगतभगणाभवंति । तावंतःकरणप्रारं-  
भादारभ्यगताब्दाः तेषुकरणपरिणतशककालंसंयोज्येष्टशककालोभवति  
वर्तमानेवर्षेयावंतोराशयः स्फुटार्केणभवंतितान्योमासाः मूर्यभोगातीताः ।  
शुक्लपक्षंकृष्णपक्षंवातिथिनक्षत्रंचंद्रार्काभ्यांज्ञायतएव पाकस्वामिनीत्यादि । यस्य  
ग्रहस्यांतर्दशांप्रवेशः सपाकस्वामी । तावच्चासौपाकस्वामीयावत्तस्यांतर्दशा ।  
सचपाकस्वाम्यंतर्दशांप्रवेशकालेलग्नगोयदिभवति तदातस्यसंबन्धिन्यंतर्दशा  
प्रारब्धाशुभदाशोभनफलदाभवति । अथवातात्कालंपाकस्वामिनोयत्सुहृन्मित्रं  
तस्मिन्नपिदशांप्रवेशकालेलग्नगेशोभनादशावक्तव्या । अथवास्यदशापतेः पूर्वं  
व्याख्यातोयोवर्गः तस्मिन्नपिलग्नगेशोभना । अथवान्यस्मिन्सौम्येशुभग्रहेत-  
त्काललग्नगेशोभनाप्रारब्धाशोभनैव । अथवापाकपेदशाधिपतौग्रहेतात्कालिकल-  
मात्रिदशषड्लाभेषु तृतीयषड्दशमैकादशस्थानानामन्यतमस्थेशोभनैवदशा  
वक्तव्या । यद्यप्यत्रसामान्येनोक्तंप्रारब्धाशुभदादशातथापि शब्दविशिशुद्ध-  
शायांप्राप्तानिष्टफलप्रदा । अधिमित्रोपिमित्रस्यदशांप्राप्नोतिशोभनः॥समःसम-  
दशामेत्ययथोक्तफलदोहिसः ॥ एतदपिचिंतनीयम् । अनेनप्रकारेणयदिशुभफ-  
लदांतर्दशाभवति तदाशुभैव अन्यथाऽशुभैव ॥ अथशुभफलायामंतर्दशायांकि-  
मप्यनवरतमेव सर्वकालंशुभफलावाप्तिर्भवति । किंवाकस्मिंश्चित्कस्मिंश्चिद्दि-



वसे एवमशुभायामन्तर्दशायामशुभफलावाप्तिरित्युभयत्र संदेहव्युदासार्थमाह ॥ मित्रोच्चोपचयेत्यादि। पाकेश्वरस्य दशापतेः प्रतिराशौ संचरतः तत्काले योग्रहो मित्रं तत्क्षेत्रस्थितश्चंद्रमायदाभवति तदा सत्फलबोधनानि कुरुते शुभफलानि प्रकटीकरोति । अत्र यस्मिन्नहिनियस्मिन्गृहे चारवशाच्चंद्रमा भवति तस्य गृहस्य योधिपतिर्भवति । स चेत्तस्मिन्नहनि पाकपतेस्तत्कालिकं मित्रं भवति तदा चंद्रमाः पाकपतेर्मित्रक्षेत्रस्थो ज्ञेयः । तथा पाकपतेः स्वोच्चस्वराशिस्थः सत्फलबोधनानि कुरुते । न केवलं यावत्पाकपतेरुपचयस्थानगतोऽपि त्रिषु देकादशदशमस्थानानामन्यतमस्थानस्थस्त्रिकोणगोपिनवपंचमस्थानगतोऽपि तथा मदनस्थः स तमेव स्थितः । एते पुनिर्दिष्टस्थानेष्वन्यतमस्थानस्थश्चंद्रमाः शुभफलायां दशायां सत्फलबोधनानि कुरुते । न ज्ञायते तेषां फलानामित्यत्रोच्यते । मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदनेस्मिन्स्थाने पाकेश्वरश्चंद्रमाः स्थितः सराशिः जन्मनियोभावआसीत्तदुद्धृतं सत्फलं बोधयति । विशेषेण तथा दशापठितमिति । अतोऽस्मादुक्तप्रकारादन्यथा पाकपतेस्तत्कालं शत्रुगृहे नीचराशौ वा दशापतिना सहैकराशौ स्थितस्तथा द्वितीयचतुर्थाष्टमद्वादशस्थानानामन्यतमस्थानस्थो भवति तदा शुभफलायां दशायां पापानि फलानि प्रकटीकरोति । स च राशिर्योभावआसीत्तदुद्धृतं फलं बोधयति । विशेषेण दशापठितमिति । अनिष्टमप्यष्टकवर्गोद्धृतं च मिश्रदशायां मित्रोच्चोपचयादिषु सत्फलबोधनानि कुरुते । शत्रुनीचादिषु अशुभफलानामिति । तथा च भगवान्गार्गः । यद्राशिसंस्थः शीतांशुः शुभकृत्पारिकीर्तितः । सराशिर्जन्मकाले तु योभावस्तत्कृतं च तत् ॥ शरीरादिकृतं सौख्यं वक्तव्यं बलयोगतः । अनिष्टराशिसंस्थस्तु तद्वावानामशोभनइति ॥ १० ॥

प्रारब्धा हिमगौ दशास्वगृहगेमानार्थसौख्यावहा कौजे दूषयति स्त्रियं बुधगृहे विद्यासुहृद्वित्तदा ॥ दुर्गारण्यपथालये कृषिकरीसिंहे सितक्षेत्रे ददा कुस्त्री दामृगकुंभयोर्गुरुगृहे मानार्थसौख्यावहा ॥ ११ ॥

अथांतर्दशाकाले चंद्राक्रांत राशिवशेन शुभज्ञानं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ प्रारब्धा हिमगाविति । यस्य तस्य ग्रहस्यांतर्दशाप्रवेशसमये हिमगौ चंद्रे स्वगृहे आत्मीयक्षेत्रस्थे कर्कटगे प्रारब्धा प्रविष्टा तदा सौख्यार्थमानावहा भवतीति । सौख्यं सुखभावः । अर्थो धनं मानं पूजामावहति करोति । कौजे भौमक्षेत्रे मेषवृश्चिकयोरन्यतमे व्यवस्थिते चंद्रे प्रवृत्तांतर्दशास्त्रियं दूषयति । परपुरुषकृतं स्त्रीदोषमुत्पादयति । बुधगृहे मिथुनकन्ययोरन्यतमस्थे चंद्रे प्रवृत्तांतर्दशा विद्यासुहृद्वित्तदा । विद्याशास्त्रानुरतिः सुहृदो मित्राणि वित्तंधनं ददाति । सिंहस्थे चंद्रे दुर्गारण्येषु पाथि च मार्गे आलये च गृहसमीपे एते पुंस्थले पुकृषिकरोति । सितक्षेत्रे शुक्रराशौ वृषतुल-

योरन्यतमस्थेचंद्रेन्नदा मिष्टभोज्यप्रदाभवति । मृगकुंभयोर्मकरघटयोरन्य-  
तमस्थेचंद्रेप्रवृत्तांतर्दशाकुस्त्रीदा कुत्सितांस्त्रियंददाति । गुरुगृहेजीवक्षेत्रेधन्वि-  
मीनयोरन्यतमस्थेचंद्रेप्रवृत्तांतर्दशामानार्थसौख्यावहा मानंपूजा अर्थोधनं  
सौख्यंसुखभावः । एतान्यावहतिददाति । एवंशुभदशाशुभकालप्रवृत्ताशुभत-  
राभवति । एवंशुभाशुभकालप्रवृत्तामध्या । अशुभाशुभकालप्रवृत्तामध्या । अशु-  
भाशुभकालप्रवृत्ता अशुभतरा । मध्याशुभकालप्रवृत्ताशोभना । मध्या अ-  
शुभकालप्रवृत्ताअशोभना । एवंशुभाशुभत्वकरणानियान्युक्तानितानिविख्यातां-  
तर्दशानां शुभाशुभं व्यामिश्रफलत्वंपरिकल्पनीयमिति ॥ ११ ॥

सौर्यास्वन्नखदंतचर्मकनकक्रौर्याध्वभूपाहवैस्तैक्ष्ण्यं धैर्यमजस्रमुद्य-  
मरतिःख्यातिःप्रतापोन्नतिः॥भार्यापुत्रधनारिशस्त्रहुतभुग्भूपोद्भवा-  
व्यापदस्त्यागीपापरतिःस्वभृत्यकलहोहृत्क्रोडपीडामयाः ॥१२॥

अथार्कदशायांशुभाशुभफलप्रदर्शनंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ सौर्यामिति ।  
सूर्यस्यैयं दशासौरीतस्यांदशायांमंतर्दशायांवानखदंतचर्मकनकक्रौर्याध्वभूपाह-  
वैःकारणभूतैःस्वंधनंप्राप्नोति । नखंसुगंधिद्रव्यंप्राणिकरजंवादंतोहस्तिदंतादिः  
चर्मव्याघ्रादीनां कनकंसुवर्णं क्रौर्यंक्रूरता अध्वामार्गः भूपोराजा आहवःसंग्रा-  
मः एतैर्धनंप्राप्नोति । तैक्ष्ण्यमुग्रस्वभावता धैर्यंशुभाशुभफलप्राप्तौहर्षविषादैरन-  
भिभवः अजस्रमनवरतमुद्यमरतिःउद्योगपरत्वं ख्यातिः कीर्तिः प्रतापोन्नतिः  
प्रतापेनशौर्येणोन्नतिः शस्त्राणामन्यशत्रुनिग्रहजनिताभीतिः । एतान्यादित्यशु-  
भदशायांपुरुषस्यभवन्ति । अथाशुभदशायांभार्यापुत्रेति । भार्याजायापुत्राःसुताः  
धनंवित्तमरिःशत्रुःशस्त्रमायुधादि हुतभुगग्निः भूपोराजा एभ्यउद्भूताउत्पन्नाव्या-  
पदोविशेषेणापदोभवन्ति । त्यागीत्यागशीलताभवति । शुभदशायांशुभस्थाने  
त्यागी । अशुभदशाचाशुभत्वादशुभस्थानेत्यागीभवति । पापरतिःपापासक्त-  
श्चभवतिस्वभृत्यकलहः आत्मीयैर्भृत्यैःसहकलहोभवति । हृत्क्रोडपीडने  
भवतः । हृत् हृदयं क्रोडमुदरं हृदयोदरपीडा । आमयाःरोगाश्चास्यभवन्ति ।  
मिश्रायासुभयमपि । इति सूर्यदशांतर्दशाफलम् ॥ १२ ॥

इंदोःप्राप्यदशांफलानिलभतेमंत्रद्विजात्युद्भवानीक्षुक्षीरविकार-  
वस्त्रकुसुमक्रीडातिलान्नश्रमैः॥ निद्रालस्यमृदुद्विजामररतिःस्त्री-  
जन्ममेधाविताकीर्त्यर्थोपचयक्षयौचवलिभिर्वैरंस्वपक्षेणच॥ १३ ॥

अथचंद्रदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह । इंदोरिति । इंदोश्च-  
द्रमसोदशांवयोवस्थांप्राप्यलब्ध्वा मंत्रद्विजात्युद्भवानिफलानिलभते



मंत्रःशैववैष्णवादिश्चाणक्यविहितोवावैदिकोवा । द्विजातयोब्राह्मणाः ।  
 एभ्य उद्भूतानिउत्पन्नानि नकेवलंयावदिक्षुविकाराद्गुडादिकाक्षीरवि-  
 काराद्दध्यादिकादस्त्रेभ्योवरेभ्यःकुसुमेभ्यःपुष्पेभ्यःक्रीडायाःक्रीडाभ्यःतिलेभ्यः  
 अन्नाच्छूमाच्चव्यायामात् । एतैःशुभदशायांशुभानिफलानि प्राप्नोति ।  
 अथाऽशुभायामशुभदशायांनिद्रालस्यमृदुद्विजामररतिरिति । निद्रायामा-  
 लस्येचरतिरासक्तिर्भवति । मृदुद्विजामररतिर्भवति । मृदुःक्षमावान्द्वि-  
 जानांब्राह्मणानाममराणांदेवानांचाराधनेरतिरासक्तिर्भवति । स्त्रीजन्मकन्याप्र-  
 सूतिः मेधाविताबुद्धिवृद्धिः कीर्तिः यशः अर्थानांधनानामुपचयक्षयौ ।  
 शुभदशायामुपचयःप्राप्तिरशुभायांक्षयःनाशः अशुभायांवलवद्विर्वीर्यवद्विः  
 स्वपक्षेणात्मीयबंधुवर्गेणचसहवैरंभवति । मिश्रायामुभयमपि । इतिचंद्रदशां-  
 तर्दशाफलम् ॥ १३ ॥

भौमस्यारिविमर्दभूपसहजक्षित्याविकजैर्धनंप्रद्वेषःसुतमित्रदार-  
 सहजैर्विद्वद्गुरुद्वेष्टता ॥ तृष्णासृग्ज्वरपित्तभंगजनितारोगाः पर  
 स्त्रीकृताःप्रीतिःपापरतैरधर्मनिरतिः पारुष्यतैर्क्षण्यानिच ॥१४॥

अथभौमदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह । भौमेति । भौमस्यक्षि-  
 तिजस्यदशायांकैर्धनंभवति । अरिविमर्दनेनशत्रुप्रमथनेन । भूपोराजा सह-  
 जाः भ्रातरः क्षितिःभूः आविकजैःऊर्णाविकारसंभूतैः आजैश्छागसंभूतैः  
 एतैःअरिविमर्दादिभिःधनंप्राप्नोति । एतच्छुभदशायाम् । अथाशुभायांदशायां  
 सुताःपुत्रामित्राणिसुहृदः दाराःकलत्रं सहजाःभ्रातरः । एतैःसहप्रद्वेषः  
 वैरम् । विद्वद्भिःपंडितैःगुरुभिःगौरवसहितैश्चसहद्वेष्टताअप्रीतिः । तृष्णातृद्-  
 असृग्धिरं ज्वरःप्रसिद्धारोगः पित्तंघातुप्रसिद्धम् भंगःअवयवादेः स्फोटनम् ।  
 एतैःजनिताउत्पादितारोगाभवंति परस्त्रीणामिष्टतावाल्लभ्यम् । अन्ये । रोगाःप-  
 रस्त्रीकृताइतिपठन्ति । परस्त्रीकृतारोगाः अन्यस्त्रीप्रसंगेनप्रहारादिकाः अ-  
 तिप्रसंगाद्घातुक्षयकृतावा । अथवातत्कृतमूलकमोद्भवाभवंति । तथापापरतैः  
 अधसक्तैः सहप्रीतिर्भवति । अधर्मेनिरतिः आसक्तिर्भवति । पारुष्यंवचन-  
 परुषता कर्कशता तैर्क्ष्यमुग्रस्वभावता । मिश्रायामुभयमपि । इतिभौम-  
 दशांतर्दशाफलम् ॥ १४ ॥

बौध्यांदौत्यसुहृद्गुरुद्विजधनंविद्वत्प्रशंसायशोयुक्तिद्रव्यसुव  
 र्णवेसरमहीसौभाग्यसौख्यातयः॥ हास्योपासनकौशलंमतिच  
 योधर्मक्रियासिद्धयः पारुष्यंश्रमबंधमानसशुचः पीडाचधा  
 तुत्रयात् ॥ १५ ॥

अथबुधदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ बौध्यामिति । बुधस्ये-  
यंदशाबौधीतस्यांदौत्येन दूतत्वेन सुहृद्भ्योभिन्नेभ्यः गुरुभ्यःपूजार्हेभ्यः  
द्विजेभ्योब्राह्मणेभ्यः धनंप्राप्नोति । विद्वद्भ्यःपंडितेभ्यः प्रशंसास्तुतिः यश-  
श्चकीर्तिर्भवति । युक्तिद्रव्यं रीतिकांस्यादि । सुवर्णकनकम् । विसरःअश्वविशेषः ।  
महीभूः । सौभाग्यंसर्वजनवाह्यभ्यम् । सौख्यंसुखभावः । एषामातयोलाभाभवं-  
ति । हास्यंपरोपहासः उपासनासेवा अनयोःकौशलंतज्ज्ञता । मतिचयः  
बुद्धिवृद्धिः । धर्मक्रियासिद्धयः धर्मयुक्तानांक्रियाणांसिद्धयोभवन्ति । एतच्छु-  
भदशायाम् ॥ अथाशुभदशायांपारुष्यमित्यादि । पारुष्यंपरुषवचनता श्रमःखेदः  
बंधःबंधनं मानसशुचः शोकश्चित्तदौस्थ्यमेतेभवन्ति । धातुत्रयात्पीडा वात-  
पित्तश्लेष्मणांत्रयाणांदोषाणांप्रकोपात्पीडाव्याधिश्रजायतेमिश्रायामुभयमपि ॥  
इतिबुधदशांतर्दशाफलम् ॥ १५ ॥

जैव्यांमानगुणोदयोमतिचयः कांतिप्रतापोन्नतिर्माहात्म्योद्य-  
ममंत्रनीतिनृपतिस्वाध्यायमंत्रैर्धनम् ॥ हेमाश्वात्मजकुंजरांव-  
रचयः प्रीतिश्चसद्भूमिपैः सूक्ष्म्योहागहनाश्रमः श्रवणरुग्वै-  
रंविधर्माश्रितैः ॥ १६ ॥

अथजीवदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ जैव्यामिति । जीव-  
स्येयंदशाजैवीतस्यांजैव्यां मानगुणोदयः मानःपूजा गुणाविद्याशौर्यादयः ।  
एषामुदयःप्रादुर्भावः । मतिचयःबुद्धिविवृद्धिः । कांतिःकमनीयता । प्रता-  
पोन्नतिःप्रतापेनपुरुषार्थेनउन्नतिः । प्रभावः शत्रूणांभीतिः । माहात्म्यं  
परोपकारशीलता । केचिद्गर्वमाहुः । उद्यमः उत्थानशीलता । मंत्रैर्वैदि-  
कैरन्यैर्वा नीतिनृपतिस्वाध्यायमंत्रैर्धनम् । नीत्याचाणक्योक्तयान्येननीति-  
शास्त्रेणवा । नृपतीराजातदाराधनेनस्वाध्यायेनपाठेन । मंत्रेण मंत्रजाप्येन ।  
एतैः धनंवित्तंप्राप्नोति । हेमसुवर्णम् अश्वस्तुरगः । आत्मजाः पुत्राः  
कुंजरः हस्ती । अंबराणिवस्त्राणि । एषांचयोबाहुल्यम् । सद्भूमिपैः गुणवद्भिः  
नृपैः सहप्रीतिः स्नेहंप्राप्नोति । एतच्छुभदशायाम् ॥ अथाशुभायां सूक्ष्म्यो-  
हेत्यादि । सूक्ष्म्यंवस्तुगहनात्मकं चोहयतस्तर्कयतः श्रमःखेदोभवति । य-  
त्सूक्ष्ममतिखेदसहंगहनंगूढम् तदूहयतइत्यर्थः । श्रवणरुक्पर्णरोगः वैरंविधर्मा-  
श्रितैः धर्मबाह्यैः पुरुषैः सहवैरम् । मिश्रायामुभयमपि । इति गुरोर्दशांत-  
र्दशाफलम् ॥ १६ ॥



शौक्रयांगीतरतिप्रमोदसुरभिद्रव्यान्नपानांवरस्त्रीरत्नद्युतिमन्म-  
थोपकरणज्ञानेष्टमित्रागमाः ॥ कौशल्यं क्रयविक्रये कृषिनिधि-  
प्राप्तिर्धनस्यागमो वृन्दोर्वीशनिषादधर्मरहितैर्वैरं शुचः स्नेहतः ॥ १७ ॥

अथशुक्रदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ शौक्रयामिति । शुक्र-  
स्येयं दशाशौक्रीतस्यांशौक्रयाम् । गीतरतेः गीतासक्तेः प्रमोदस्य हर्षस्य सुरभिद्रव्या-  
णां सुगंधद्रव्याणामन्नस्य भोजनस्य पानस्यासवस्यां वराणां वस्त्राणां स्त्रीणां योषितां  
रत्नानां मणीनां श्रुतेः कान्तेः मन्मथोपकरणानां कामोपयोग्यानां शय्यादीनां वि-  
ज्ञानस्य योगशास्त्रस्येष्टानां प्रियाणां मित्राणां सुहृदामागमालब्धयो भवन्ति ।  
कुशलः शिक्षितः कुशलस्य भावः कौशल्यं कुशलः श्रेयोवाकौशल्यमभीष्ट-  
क्रियासु श्रेष्ठत्वम् । क्रयविक्रये क्रयोयदिच्छति विक्रेतुं तत्क्रयः विक्रयोयदिच्छति  
विक्रेतुं तद्विक्रयः । कृषिः कर्षणम् । निधिः निधानं परैर्यद्वित्तं भूमावधः स्थाप्यते  
स निधिस्तत्प्राप्तिर्लाभः । एते भवन्ति एतच्छुभदशायाम् ॥ अथाऽशुभदशायां वृन्दो-  
र्वीशेति । वृन्देन बहुभिः सह उर्वीशेन राज्ञा निषादानामन्यजीविनां प्राणिघातिनां  
धर्मरहितैः पापासकैः एतैः सह वैरं प्राप्नोति । शुचः स्नेहतः स्नेहाच्छुचः शोकाभ-  
वन्ति । यत्र स्नेहस्तदुद्भवाच्छोकान् प्राप्नोति । मिश्रायाशुभयमपि । इति शुक्रद-  
शांतर्दशाफलमिति ॥ १७ ॥

सौरीं प्राप्य खरोष्ट्रपक्षिमहिषीवृद्धांगनावाप्तयः श्रेणीग्रामपुराधिका-  
रजनिता पूजा कुधान्यागमः ॥ श्लेष्मेष्ण्यां निलकोपमोहमलिनव्याप-  
त्तितंद्राश्रमान्भृत्यापत्यकलत्रभर्त्सनमपि प्राप्नोति च व्यंगताम् ॥ १८

अथशनैश्चरदशायांशुभाशुभफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ सौरीमिति । सौ-  
रींशनैश्चरदशांप्राप्य खराः गर्दभाः उष्ट्राः करभाः पक्षिणः इयेना-  
दयः महिषीप्रसिद्धा वृद्धांगनावृद्धास्त्री । एषामाप्तयः लाभा भवन्ति । बहु-  
समानजातीयानां संघः श्रेणीतस्याधिकारे नियुज्यते । ग्रामेपुरे वा श्रेणीग्रामपुरा-  
धिकारजनितां तदुत्पन्नां पूजां मानतां प्राप्नोति । कुधान्यानां कोदवादीनामागमः  
लाभः । एतच्छुभदशायाम् ॥ अथाशुभदशायां श्लेष्मेष्प्येति । श्लेष्मणा कफेनार्द्रि-  
यामत्सरत्वेन । अनिलेन वायुना । कोपेन क्रोधेन । मोहेन चित्तभ्रमेण । मलिन-  
तयामलीमसत्वेन । व्यापत्तिः विपत् तंद्रानिद्रालस्ययोरंतरैव वर्तते । तस्यालक्षणम् ॥  
हृदये व्याकुलीभावो वाचश्चंद्रियगौरवम् । मनोबुद्धयप्रसादश्च तंद्रयालक्षणं  
विदुः । श्रमः खेद एतान् प्राप्नोति । भृत्येभ्यः कर्मकरेभ्यः । अपत्येभ्यः पुत्रदुहि-  
तृभ्यः । कलत्रेभ्यो भार्याभ्यः भर्त्सनं तर्जनं प्राप्नोति । व्यंगतामंगच्छेदं व्याधि-  
नातदारणं वा । मिश्रायाशुभयमपि । इतिशनैश्चरदशांतर्दशाफलम् ॥ १८ ॥

दशासुशस्तासुशुभानिकुर्वन्त्यनिष्टसंज्ञास्वशुभानिचैवम् ॥

मिश्रासुमिश्राणिदशाफलानिहोराफलंलग्नपतेःसमानम् ॥१९॥

अथैकस्मिन्वृत्तेदशासुशुभान्यशुभानिचफलान्युक्तानि तेषांविषयविभागंलग्न-  
दशाफलंचोपजातिकयाह॥दशास्विति।शुभाशुभंन्यामिश्रत्वंदशासुपूर्वमेवोक्तम्  
तथाजन्मकालेउपचयराशिस्थानिर्मलमूर्तयः । स्पष्टगतयश्चयेग्रहास्तेषामपि  
दशाः शुभाः । येचोपचयस्थाहतारूक्षाः स्वल्पमूर्तयस्तेषामपिदशाअशु-  
भाः । तथाचयवनेश्वरः ॥ निशाकरादित्यविलग्नभानांतत्कालयोगादधिकंवलं  
यः । विभर्तितस्यादिदशेष्यतेसाशेषास्ततः शेषबलक्रमेण ॥ वयोधिकोयः  
प्रथमोदितोवाग्रहः सपूर्वपठितोदशेशः । बलाधिकश्चेद्यदिकेंद्रसंस्थः पूर्व  
सशेषास्तुयथाप्रदिष्टाः॥श्रेष्ठादशास्वेवयसिग्रहस्यस्वोच्चश्रिताकालबलाश्रिताच ।  
मूलत्रिकोणात्स्वगृहाच्चमध्यामित्राश्रिताजन्मगृहाश्रितावा ॥ नीचारिभांशोप-  
गताजिताद्वागृहात्परिध्वस्तविवर्णरूक्षात् । जन्मेशशत्रोर्निधनारिभेशाद्यापक्यते  
साबहुदोषदास्यात् ॥ एवंशस्तासुशोभनासुदशासुग्रहाः शुभान्येवफलानिकु-  
र्वन्ति । दशाफलवृत्ते यानिशुभान्यशुभान्यभिहितानितान्येवभवन्ति । नेतराणि  
अनिष्टसंज्ञास्वशुभदशासुअशुभान्यनिष्ठानि एवभवन्ति । मिश्रासुदशासुमिश्रा-  
ण्येवदशाफलानिभवन्ति । एतच्चप्रतिसूत्रमस्माभिश्चव्याख्यातम्।तथाचसत्यः ॥  
जन्मन्युपचयभवनेषुसंस्थिताः सव्यगाः सुमूर्तिधराः । श्रेष्ठफलंविदध्युग्र-  
हाः क्रमात्स्वांदशांप्राप्य ॥ अन्यैर्निहितारूक्षाल्पमूर्तयोह्यपचयर्क्षसंस्थाश्च ।  
स्वदशाभिहितनेष्टंग्रहाः प्रयच्छन्तिलोकेषु ॥ होराफलंलग्नपतेः लग्नाधिप-  
स्यसमानंतुल्यंवक्तव्यम्।यथामेषलग्नजातस्यभौमदशाफलंवृषलग्नजातस्यशुक्र-  
दशाफलम् । एवमन्येष्वपि वक्तव्यम्।किंतुद्वेष्काणवशाच्छुभायांलग्नदशायांशुभ-  
फलमशुभायामशुभम्।मिश्रायामुभयमपि । अथयेपूर्वदशारिष्टाउक्तास्तेषामि-  
मेभंगाः प्रोक्ताः । तथाचसारावल्याम् । प्रवेशेबलवान्खेटः शुभैर्वासन्नि-  
रीक्षितः।सौम्याधिभिन्नवर्गस्थोमृत्युकृन्नभवेत्तदा॥अंतर्दशाधिनाथस्यविवलस्य  
दशायदा । विबलास्यात्तदाभंगोनवाध्यातस्यचध्रुवम् ॥ युद्धेचविजयीतस्मि  
न्ग्रहयोगेशुभोयदि । दशायांनभवेत्कष्टंस्वोच्चादिपुचसंस्थिते ॥ इति ॥ १९ ॥

संज्ञाध्यायेयस्ययद्व्यमुक्तंकर्माजीवोयश्चयस्योपदिष्टः ॥

भावस्थानालोकयोगोद्भवंचतत्तत्सर्वतस्ययोज्यंदशायाम्॥२०॥

अथान्येषामपिफलानांदशास्वतिदेशार्थशालिन्याह । संज्ञाध्यायइति ।  
यस्यग्रहस्यसंज्ञाध्यायेयद्व्यंताम्रस्यान्मणिहेमेत्यादिनाग्रंथेनोक्तंकथितंतस्यतद्-



व्यस्यशुभदशायांप्राप्तिः योज्या । अशुभदशायांहानिः । तथा यश्चकर्माजी-  
वोयस्यग्रहोपदिष्टो जातकेभिहितः । अर्थाप्तिः पितृपितृपत्नीरित्यादि । तस्य  
ग्रहदत्तस्यकर्माजीवस्यतदंतर्दशायामेवाप्तिर्भवति । भावफलंवक्ष्यति । शूरःस्त-  
ब्धइत्यादि । तथाप्रथितश्चतुरोदनइत्यादि । तथामेषेस्वस्तिमिरनयनइत्यादि ।  
आलोकनफलं दृष्टिफलम् । चंद्रेभूपबुधौइत्यादि । योगोद्भवंनाभसयोगान्मुक्त्वा  
सर्वयोगेषुयोगकर्तृभ्योग्रहेभ्योमध्याद्योबलीयान्सस्वदशायामेवफलंददाति । ना-  
भसयोगाः सकलदशास्वपिफलप्रदाः । वक्ष्यतिच । इतिनिगदितायोगाः  
सार्द्धफलैरिहनाभसा नियतफलदाश्चित्याह्येतेसमस्तदशास्वपीति ॥ एवमा-  
दियद्यदुक्तंतत्सर्वंनिरवशेषम् । तस्यग्रहस्यदशायांयोज्यमिति ॥ २० ॥

छायांमहाभूतकृतांचसर्वेभिव्यंजयन्तिस्वदशामवाप्य ॥ क्वंक्वग्नि-  
वाय्वंवरजान्गुणांश्चनासास्वदृक्त्वक्छूषणानुमेयान् ॥ २१ ॥

अथयस्यजातस्यजातकमप्यगणितंतस्यशरीरंछायांदृष्ट्याग्रहदशाज्ञानंभिद्र-  
वज्जयाह ॥ छायांमहाभूतकृतामिति । पूर्वमुक्तं शिखिभूखपयोमरुद्गणानांविशि-  
नोभूमिसुतादयः क्रमेणेति । तत्रादित्यचंद्रौबन्धुप्रसिद्धावेव । यःकश्चिद्ब्रह्मः  
स्वदशामात्मीयदशामवाप्यमहाभूतकृतांचछायांमभिव्यंजयति प्रकटीकरोति ।  
छायाशब्देनशरीरशोभाभिधीयते । शरीरकांतितिरित्यर्थः । तथाचसंच्छायोयं  
विच्छायोयंवर्ततइत्यभिधीयते । एवमात्मीयदशायांपृथिव्यादिमहाभूतकृतां  
शरीरंछायांव्यंजयतिप्रकटीकरोति । साचक्वंक्वग्निवाय्वंवरजान्गुणान्कुः  
पृथिवी अंबुवरुणः अग्निर्हुताशनः वायुः अनिलः अंबरमाकाशमेभ्यो  
जातोत्पन्नासाछायातद्गुणान्करोति । तांश्चयथासंख्यंनासास्यदृक्त्वक्छूष-  
णानुमेयान् पार्थिवंगुणंगंधमभिव्यंजयति । नासानुमेयंत्राणेनोपलभ्यते । अ-  
थाप्यंगुणंसमभिव्यंजयति । तच्चास्यानुमेयम् । आस्यशब्देनेहजिह्वाज्ञेया । त-  
यारसस्योपलब्धेः आस्यग्रहणंचात्रवृत्तानुरोधात्कृतम् । आग्नेयीआग्नेयंगुणरू-  
पमभिव्यंजयति । दृष्ट्यानुमेयम् । वायवी वायव्यंस्पर्शगुणमभिव्यंजयति ।  
त्वगनुमेयंस्पर्शनोपलभ्यते । नाभसी नाभसंगुणंशब्दमभिव्यंजयति । श्रव-  
णानुमेयंकर्णोपलभ्यम् । एतदुक्तंभवति । यदाशुभगंधः पुरुषोभवति तदा-  
स्यबुधकृतापार्थिवीच्छायाज्ञेया । यदामिष्टरसभोजीभवतितदास्यचंद्रशुककृता  
छायाज्ञेया । यदातीवरूपवान्मुकांतः पुरुषोभवति तदासूर्यभौमकृता  
आग्नेयीछायाज्ञेया । यदास्पर्शनमृदुर्भवति तदाशनैश्चरकृतावायवीछाया  
ज्ञेया । यदास्यवचनंकर्णयोः सुखकरंभवतितदाजीवकृतानाभसीछायाज्ञेया ।  
छायाविशेषलक्षणमाचार्येण संहितायामभिहितम् । तथाच । छायाशुभाशुभफ-

लानिनिवेदयंतीलक्ष्यामनुष्यपशुपक्षिपुलक्षणज्ञैः । तेजोगुणान्वहिरपिप्रविका-  
शयंतीदीपप्रभास्फटिकरत्नघटस्थितेव । स्निग्धद्विजत्वङ्मुखरोमकेशाच्छाया  
सुगंधाचमहीसमुत्था । तुष्ट्यर्थलाभाभ्युदयान्करोति धर्मस्यचाहन्यहनिप्रवृ-  
द्धिम् ॥ स्निग्धासिताचहरितानयनाभिरामासौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान्करो-  
ति।सर्वार्थसिद्धिजननीजननीवचाप्याच्छायाफलंतनुभृतांशुभमाददाति॥चंडाधृ-  
ष्यापद्मह्रमाभिवर्णायुक्तंतेजोविक्रमैः सप्रतापैः । आग्नेयीतिप्राणिनांस्याज्जया-  
यक्षिप्रंसिद्धिवांछितार्थस्यधत्ते ॥ मलिनपुरुषकृष्णापापगंधानिलोत्थाजनयति  
वधवंधंव्याध्यनर्थार्थनाशम् । स्फटिकसदृशरूपाभाग्ययुक्तात्युदारानिधिरिव  
गगनोत्थाश्रेयसांस्वच्छवर्णा ॥ २१ ॥

शुभफलददशायांतादृगेवांतरात्मावहुजनयतिपुंसांसौख्यम-  
र्थागमंच ॥ कथितफलविपाकैस्तर्कयेद्वर्तमानांपरिणमति  
फलोक्तिः स्वप्रचिंतास्ववीर्यैः ॥ २२ ॥

अत्रचवायव्यांछायांवर्जयित्वासर्वास्वेवच्छायासु शुभमशुभंफलमुक्तंतत्कथम्।  
शुभफलेयमशुभफलेयमितिदशज्ज्ञायते तज्ज्ञानार्थमंतरात्मनः स्वरूपंमा-  
लिन्याह ॥ शुभफलमिति । शुभफलंददातियः सशुभफलदः शुभफलदस्य  
ग्रहस्ययादशातस्यामंतरात्मास्वदेहस्थः परमात्माचित्स्वरूपः तादृगेव  
शुभोभवति । पुरुषस्यतस्यचच्छायादर्शितग्रहदशाकालेबहुविधमनेकप्रकारंसौ-  
ख्यंसुखभावमर्थागमंधनलाभंचजनयत्युत्पादयति । अर्थादेवाशुभदशायांपुरु-  
षस्यांतरात्माप्यशुभोभवति । तत्रछायादर्शितग्रहजातातादृगेवफलदा । साचा-  
सौख्यमनर्थागमंचबहुप्रकारंजनयति । मिश्रायांमिश्रंच । यात्रायांचवक्ष्यति ।  
निमित्तानुचरंसूक्ष्मंदेहेन्द्रियमहत्तरम्।तेजोह्येतच्छरीरस्थंत्रिकालफलविन्तृणाम् ।  
प्रीतयेनमनोनाथेनासिद्धावभिनंदति । तस्मात्सर्वात्मनायातुरनुमेयंयथामनः ॥  
शुभाशुभानिसर्वाणिनिमित्तानिस्युरेकतः । एकतश्चमनःशुद्धिस्तद्विशुद्धिर्ज-  
यावहाइति॥कथितफलविपाकैरिति । ग्रहाणांदशासुयानिफलानि शुभान्यशुभा-  
निवाकथितान्युक्तानितानियः पुरुषोभुंक्ते । तस्यपुरुषस्यतद्ग्रहदशावर्ततेइति  
ज्ञेयम् । एतदुक्तंभवति । यादृशंफलंशुभमशुभंवापुरुषस्योपलभ्यते । तच्चयस्य  
ग्रहस्यदशायांपठितम् । सातस्यदशानरस्यवर्ततइतिज्ञेयम्।एवंवर्तमानांदशांतर्क-  
येल्लक्षयेदित्यर्थः।एवंछायावशेनांतरात्मवशेनफलपाक्तिवशेनवागणितस्यजातक-  
स्यवर्तमानां दशांवदेत्।अथसौरदशायामशुभायांव्यंगत्वमुक्तंचशुभायाम्।अशु-  
भायामप्यनेकेषांव्यंगत्वंदृष्टम्। शुक्रदशायांशुभायांनिधिप्राप्तिरुक्तानचसापिदृष्टा  
तदर्थमाह । परिणमतिफलोक्तिरिति । अवीर्यैः बलहीनैः ग्रहैः फलानि



यानिशुभान्यशुभानिवादत्तानितत्फलोक्तिः फलप्राप्तिः स्वप्नेस्वप्नावस्थायां परिणमत्यनुभूयते । चिंतायां मनोरथेन वेति । केचिच्छुभफलददशायां तादृगेवांतराख्याइति पठन्ति । पठित्वैवं व्याचक्षते । यथा शुभायां दशायामंतराख्यां तर्दशाशुभायदि भवति । तदा बहुजनयति पुंसां सौख्यमर्थागममिति । अर्थादेवाशुभायां दशायामशुभांतर्दशा असौख्यमनार्थागमंच बहुजनयति । अनेन व्याख्यानेन शुभायामशुभायांच शुभाशुभानि भवन्ति मिश्रफलं प्रयच्छन्ति । न चैतदिष्यते । यस्मादुक्तम् । एकर्क्षगोर्द्धमपहृत्य ददाति तु स्वमिति । अत्र दशापतेः फलमपहृत्यांतर्दशापतिरेव स्वफलं ददातीति ज्ञेयम् । अन्यथापहृत्येति निरर्थकं स्यादिति । तस्मात्पूर्वपाठः श्रेयान् द्वितीयः प्रमादपाठः । प्रथमपाठेन विनाछायां शुभाशुभत्वमनुमातुं न शक्यत इति ॥ २२ ॥

एकग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधेनाशंवदेद्यदधिकं परिपच्यते  
तत् ॥ नान्योग्रहः सदृशमन्यफलं हि नस्ति स्वांस्वादशासुपग-  
ताः स्वफलप्रदाः स्युः ॥ २३ ॥

॥ इति दशांतर्दशाध्यायोष्टमः ॥ ८ ॥

अथैकग्रहदत्तयोः फलयोः सदृशयोर्नाशो भवति भिन्नदत्तानां बहूनामपि पक्तिरेव भवतीत्येतद्वसंततिलकेनाह ॥ एकग्रहस्येति । सर्वाण्येव फलानि नाभिसवर्ज्यं स्वदशायां ग्रहः प्रयच्छतीत्युक्तम् । तत्रैकेन ग्रहेण यदा सदृशं विरुद्धं फलद्वयं दत्तं भवति । तस्मिन् सदृशे तुल्ये द्वयोः फलविरोधे सति नाशो भवति । तस्य फलद्वयस्य वदेद्व्यात् । कीदृशं तद्विरुद्धमित्यत्रोच्यते । यथा कश्चिद्ग्रहः कयापि युक्त्या दशफलादिना सुवर्णदो भवति स एवान्यया युक्त्या अष्टवर्गफलयोगफलदृष्टि फलभावफलानामन्यतमेन सुवर्णापहारी भवति । तदा फलद्वयेऽपि सुवर्णसंबन्धोस्तीति सादृश्यं स्वर्णदानापहारिणाविति विरोधः । एवमेकस्य ग्रहस्य सदृशफलयोः विरोधेनाशंवदेत् । न सुवर्णलाभो न चापहानिरिति । यदधिकं परिपच्यते । तत एकैनापि ग्रहेण फलद्वयं दत्तमन्यरूपं तयोर्मध्याद्यदधिकं तत्परिपच्यते भवति । यथा कश्चिद्ग्रहो निर्दिष्टप्रकारद्वयेन सुवर्णदः स एव प्रकारेणैकेन सुवर्णापहारी तदा द्वयोरधिकत्वात्तद्दानस्य सुवर्णं ददात्येव । नापहरति । अथवा प्रकारद्वयेन सुवर्णापहारी । प्रकारेणैकेन सुवर्णदः । तदा पहरणस्याधिकत्वादपहरत्येव । अथवा सुवर्णापहारी रूप्यदश्चातथापि द्वे असदृशे असदृशत्वादधिकं परिपच्यते । सुवर्णापहारी रूप्यदश्च भवति इति केचित् । नान्योग्रह इति । अन्येन ग्रहेण दत्तं सदृशं विरोध्यपि फलं नान्योग्रहोपि हि नस्त्यपहरति । यथा कश्चिद्ग्रहः सुवर्णदो भवत्यन्यश्च सुवर्णापहारी ।

तदातत्रसुवर्णदः स्वदशायांसुवर्णददाति । स्वदशायांसुवर्णापहारीचापहरति ।  
अनेनैतदुक्तंभवति । यथैकग्रहस्यसदृशफलयोः विरोधेसमग्रजन्मांतरेपिफलना-  
शंवदेत् । अन्यत्रविरुद्धयोरपिफलयोः नाशनवदेत् । यतःसुवर्णदोग्रहः  
स्वामात्मीयांदशामुपगतःप्राप्तः सुवर्णलाभंकरोति । सुवर्णापहारीस्वदशामुप-  
गतः प्राप्तःसुवर्णमपहरति । एतदष्टकवर्गफलंविनाशयतस्तत्रैकस्यग्रहस्यफल-  
सदृशयोरपितुल्यसंख्ययोःफलयोर्नाशोभविष्यति । यथाभविष्यति तथातत्रै-  
वप्रतिपादयिष्यामइति ॥ २३ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौदशांतर्दशाध्यायोष्टमः ॥ ८ ॥

स्वादर्कःप्रथमायबंधुनिधनद्व्याज्ञातपोद्यूनगोवक्रात्स्वादिव  
तद्देवरविजाच्छुक्रात्स्मरांत्यारिषु ॥ जीवाद्धर्मसुतायशत्रु-  
षुदशत्र्यायारिगःशीतगोरेष्वेवांत्यतपःसुतेषुचबुधाल्लग्न्यात्स-  
बंध्वंत्यगः ॥ १ ॥

अथाष्टकवर्गाध्यायोव्याख्यायते । तत्रांतर्दशाफलमिति । पूर्वमेवोक्तंतत्प्रद-  
श्याधुनास्थिरस्याष्टकवर्गफलस्यावसरः । लग्नाष्टमाः सर्वेएवग्रहास्तेभ्यः  
सकाशादेकैकस्यग्रहस्यचारवशाद्राशौविचरतः शुभाशुभंफलमष्टकवर्गेनिरूप्य-  
ते । तत्रादावेवार्काष्टकवर्गंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्वादर्कइति । यत्रराशौ  
जन्मसमयेपुरुषस्यादित्यः स्थितः सएवतस्यस्वस्थानमुच्यते । एवमन्येषाम-  
पिग्रहाणांज्ञेयम् । योयत्रव्यवस्थितः सएवतस्यस्वस्थानंतस्मात्स्वादर्कः प्रथ-  
मायबंधुनिधनद्व्याज्ञातपोद्यूनगः प्रथमैकादशचतुर्थाष्टमद्वितीयदशमनवमस-  
प्तमेषु १ । ११।४।८।२।१० । ९ । ७ एतेषांस्थानानांसंज्ञाःप्रागेवव्याख्याताः ।  
अतःपुनर्नोच्यंते । एषामंकन्यासएवव्याख्यानमितिसर्वत्रज्ञेयम् । एतेषुस्था-  
नेषुगतः स्वात्स्थानादर्कः सूर्यः शुभः इष्टफलदः अर्थादेवान्यस्थानेष्व-  
शुभअनिष्टफलदः । यतोवक्ष्यति । इतिनिगदितमिष्टंनेष्टमन्यदित्येवंसर्वत्रज्ञेयम् ।  
वक्रात्स्वादिव वक्रादंगारकात्स्वादात्मीयस्थानादिवशुभः । येष्वेवस्वस्थाना-  
त्तेष्वेवांगारकात् १ । ११।४।८।२।१० । ९ । ७ एतेष्वर्कोभौमाच्छुभः ।  
तद्देवरविजात् । रविजात्सूर्यपुत्रात्तद्देवयेष्वेवस्थानेषुस्वाच्छुभस्तेष्वेवसौरा-  
त् १ । ११।४।८।२।१०।९ । ७ एतेषुसौरादर्कः शुभइति सर्वत्रा-  
नुवर्तते । शुक्रात्स्मरांत्यारिषुसएवार्कः । स्मरांत्यारिषुसप्तमद्वादशषष्ठेषुशुक्राच्छुभः  
७ । १२ । ६ । जीवाद्धर्मसुतायशत्रुषु जीवाद्धहस्पतिस्थानात् धर्मसुताय-  
शत्रुषु नवमपंचमैकादशषष्ठेषुशुभः ९ । ५ । ११ । ६ दशत्र्यायारिगःशीतगोः



शीतगोश्रंद्रादश्यायारिगः दशमतृतीयैकादशषष्ठगः शुभः १० । ३ । ११ । ६ एतेष्वेवांत्यतपःसुतेषुचतुर्धाच्छुभः । एष्वेवप्रागुक्तेषुचंद्रस्थानेषुदश्यायारिषुचशब्दात्तथांत्यतपःसुतेषुद्वादशनवपंचमेषुचतुर्धाच्छुभः १० । ३ । ११ । ६ । १२ । ९ । ५ लग्नात्सबंध्वंत्यगः सहशब्देनप्रागुक्तानिचंद्रस्थानान्यनुक्षिप्यंते तेनांत्यतपःसुतस्थानानीति सर्वत्रपरिभाषा तेनैतेषुचंद्रस्थानेषुदश्यायारिषुसबंध्वंत्येषुचतुर्थद्वादशसहितेषुगतोलग्रादुदयाच्छुभः १० । ३ । ११ । ६ । ४ । १२ । तथाचसत्यः ॥ स्वात्स्थानादिवसकरस्तृतीयषष्ठांत्यभत्रिकोणानि हित्वेष्टः ३ । ६ । १२ । ५ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरदर्शितानिस्थानानिजातानि १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ सौरस्यतुसहजारिसुतांत्यसंज्ञानिहित्वेष्टइत्यनुवर्तते ३ । ६ । ५ । १२ । एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरदर्शितानिस्थानानिजातानि १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ । चंद्रादशमैकादशतृतीयषष्ठोपगः शुभःसूर्यः १० । ११ । ३ । ६ जीवात्रिकोणयोः षष्ठस्तथैकादशश्चेष्टः ९ । ५ । ६ । ११ प्रथमद्वितीयसप्तमचतुर्थनैधनगतान्विनाराशीन्सौम्यादिष्टःसूर्यः १ । २ । ७ । ४ । ८ । एतानिर्वर्जयित्वा तान्येववराहमिहिरप्रदर्शितानिस्थानानिजातानि १० । ३ । ११ । ६ । १२ । ९ । ५ कुजस्तुसहशोर्कपुत्रेण १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ दशमैकादशषष्ठतृतीयगोंत्यश्चतुर्थगोलग्रात् १० । ११ । ६ । ३ । १२ । ४ शुक्रस्थानाद्रविः षट्सप्तमद्वादशेषु भवतीष्टः ६ । ७ । १२ । तथाचसूक्ष्मजातके । केंद्रायाष्टदिनवस्वर्कः स्वादाकिंभौमयोश्चशुभः । षट्सप्तांत्येषुसितात्षडायधीधर्मगोजीवात् ॥ उपचयगोर्कश्चंद्रादुपचयनवमांत्यधीयुतःसौम्यात् । लग्नादुपचयबंधुव्ययस्थितःशोभनःप्रोक्तः ॥ इतिआदित्याष्टकवर्गः ॥ १ ॥

लग्नात्षट्त्रिदशायगः सधनधीधर्मेषुचाराच्छशीस्वात्सास्तादिषुसाष्टसप्तसुरवेः षट्त्रयायधीस्थोयमात् ॥ धीत्रयायाष्टमकंटकेषुशशिजार्जीवाद्ययायाष्टगःकेंद्रस्थश्चसितात्तुधर्मसुखधीत्रयायरूपदानंगगः ॥ २ ॥

अथचंद्राष्टकवर्गंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ लग्नात्षडिति । लग्नात्षट्त्रिदशायगः शशीचंद्रः लग्नादुदयात्षट्त्रिदशायगः षष्ठतृतीयदशमैकादशेषुस्थानेषुशुभः ६ । ३ । १० । ११ सधनधीधर्मेषुचाराच्छशी । सहशब्देनप्रागुक्तान्येवस्थानान्यनुक्षिप्यंते । शशीचंद्रः आराद्रौमादेष्वेवषट्त्रिदशायेषुधनधीधर्मसहितेषुद्वितीयपंचमनवमयुक्तेषुशुभः ६ । ३ । १० । ११ । २ । ५ । ९ स्वात्सास्तादिषुआत्मीयस्थानादेष्वेवषट्त्रिदशायेषुसास्तादिषुसप्तमप्रथमसहितेषु

शुभः शशी ६।३।१०।११।७।१ साष्टसप्तसुरवेरादित्यादेष्वेवस्थानेषु  
 साष्टसप्तसु अष्टमसप्तमसंयुक्तेषु ६।३।१०।११।८।७ शुभः षट्त्र्या-  
 यधीस्थोयमात् यमात्सौरात् षट्त्र्यायधीस्थः षष्ठतृतीयैकादशपंचमस्थानस्थः  
 शुभः ६।३।११।५ धीत्र्यायाष्टमकंदकेषुशशिजात् । शशिजाद्बुधाद्बुधस्था-  
 नाद्धीत्र्यायाष्टमकंदकेषुपंचमतृतीयैकादशाष्टमकंदेषुशुभः शशी।५।३।११।८।१।४  
 ।७।१०। जीवाद्ययायाष्टमः केंद्रस्थश्च । जीवाद्बुधस्थानाद्ययायाष्टमः केंद्र-  
 स्थश्च द्वादशैकादशाष्टमकेंद्रस्थश्चशुभश्चंद्रः १२।११।८।१।४।७।१०  
 सिताचतुर्धर्मसुखधीत्र्यायास्पदानंगः । सिताच्छुक्राद्धर्मसुखधीत्र्यायास्पदा-  
 नंगेषु नवमचतुर्थपंचमतृतीयैकादशदशमसप्तमेषुशुभः ९।४।५।३।  
 ११।१०।७। तथाचसत्यः । षष्ठैकादशसप्तमतृतीयदशमादिसंस्थितश्चंद्रः ।  
 स्वादिष्टः ६।११।७।३।१०।१ सौरस्यतुसहजारिसुतायसंस्थितश्च  
 शुभः ३।६।५।११॥ रिपुनिधनसहजसप्तमदशमैकादशसंस्थितः मूर्यात् ।  
 ६।८।३।७।१०।११। लमात्तृतीयदशमारिलाभसंस्थितः शुभश्चंद्रः  
 ३।१०।६।११॥ भ्रातृसुतकर्मधनलाभधर्मरिपुराशिगः कुजादिष्टः ३।५।  
 १०।२।११।९।६। जीवात्तृतीयषष्ठद्विनवमसुतवर्जितेष्विष्टः ३।६।२  
 ९।५॥ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानिजातानि १२।  
 ११।८।१।४।७।१० प्रथमद्वितीयषष्ठाष्टमांत्यवर्जेषुभार्गवादिष्टः १।२  
 ६।८।१२ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानिजातानि  
 ३।४।५।७।९।१०।११ षष्ठधनपंचमनवमपश्चिमवर्ज्येषुबुधात्मशस्तश्च ।  
 ६।२।५।९।१२ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थाना-  
 निजातानि १।३।४।७।८।१०।११॥ तथाचमूक्षमजातके । शश्युपच-  
 येपुलमात्साध्यशुनिः स्वात्कुजात्सनवधीस्थः । सूर्यात्साष्टस्मरगच्छिषडायसुते-  
 पुसूर्यसुतात् ॥ ज्ञात्केंद्रत्रिसुतायाष्टमगोशुरोर्व्ययभवाष्टकेंद्रेषु । त्रिचतुःसुतनव-  
 दशसप्तमायगश्चंद्रमाः शुभः शुक्रात् ॥ इतिचंद्राष्टकवर्गः ॥ २ ॥

वक्रस्तूपचयेष्विनात्सतनयेष्वाद्यादिकेषूदयाच्चंद्रादिग्विफ-  
 लेषुकेंद्रनिधनग्राह्यर्थगः स्वाच्छुभः ॥ धर्मायाष्टमकेंद्र-  
 गोर्केतनयाज्ज्ञात्षट्त्रिधीलाभगः शुक्रात्षड्व्ययलाभमृत्यु-  
 पुगुरोः कर्मांत्यलाभारिषु ॥ ३ ॥

अथभौमाष्टकवर्गशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ वक्रस्तूपचयेष्विनादिति । वक्रों-  
 गारकः । इनादादित्यादुपचयेषुत्रिषडेकादशदशमेषुसतनयेषुपंचमस्थानसहि-  
 तेपुशुभः ३।६।११।१०।५ आद्याधिकेषूदयाद्वक्रः शुभः । उदयाल-



म्रादेष्वेवोपचयेष्वाद्याधिकेषुप्रथमस्थानयुक्तेषुशुभः ३ । ६ । ११ । १० । १  
 चंद्रादिग्विफलेषुचंद्रस्थानादेष्वेवोपचयेषुदिग्विफलेषुदशमस्थानफलवर्जितेषु  
 तेनदशमस्थानेनशुभंनाप्यशुभंफलंकरोतीत्यर्थः । ३ । ६ । ११ एतेषुशुभः । केंद्र-  
 निधनप्राप्त्यर्थगः स्वाच्छुभः स्वादात्मीयस्थानात्केंद्रनिधनप्राप्त्यर्थगः केंद्रा-  
 ष्टमैकादशद्वितीयगः शुभः १ । ४ । ७ । १० । ८ । ११ । २ धर्मायाष्टमकेंद्र-  
 गोर्कतनयात् सौराद्धर्मायाष्टमकेंद्रगः नवमैकादशाष्टमकेंद्रगतः शुभः ।  
 ९ । ११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० ज्ञात्पद्त्रिधीलाभगः ज्ञाद्बुधात्पद्त्रिधीला-  
 भगः षष्ठतृतीयपंचमैकादशगतः शुभः ६ । ३ । ५ । ११ । शुक्रात् षड्व्य-  
 यलाभमृत्युषु शुक्रस्थानात् षष्ठद्वादशैकादशाष्टमेषुशुभः ६ । १२ । ११ । ८ गुरोः  
 कर्मात्यलाभारिषुगुरोः जीवाद्दशमद्वादशैकादशषष्ठेषुशुभः १० । १२ । ११ । ६ ॥  
 तथाचसत्यः । द्वादशपंचमनवमतृतीयषष्ठान्विनाकुजस्त्विष्टः । स्वस्थानात् १२ । ५ ।  
 ९ । ३ । ६ एतानिवर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानि जातानि ।  
 १ । ४ । ७ । १० । ८ । ११ । २ सौरस्यतुनवमाभ्यधिकेषुअनर्थेषुएष्वेवद्विती-  
 यस्थानंविनानवमाभ्यधिकेषु ११ । ८ । ९ । १ । ४ । ७ । १० भौमस्तृतीयपं-  
 चमदशमैकादशरिपुस्थितः मूर्यात् । इष्ट ३ । ५ । १० । ११ । ६ श्रृंद्रान्मध्यमदश-  
 मषष्ठसहजलाभेषु १० । ३ । ६ । ११ ॥ दशमैकादशषष्ठांत्यगः कुजो भूमिजः  
 पूजितोगुरुस्थानात् १० । ११ । ६ । १२ । षष्ठैकादशपंचमतृतीयगः शुभः सौम्यात् ।  
 ६ । ११ । ५ । ३ ॥ अंत्यायाष्टमषष्ठगः कुजः पूजितः शुक्रात् १२ । ११ । ८ । ६ ।  
 प्रथमैकादशदशरिपुसहजोपगतश्चहोरायाः १ । ११ । १० । ६ । ३ ॥ तथाचस्वल्प-  
 जातके । भौमः स्वादायस्वाष्टकेंद्रगरूपायषट्सुतेषुबुधात् । जीवाद्दशायशत्रु-  
 व्ययेष्विनादुपचयसुतेषु ॥ उदयादुपचयतनुषुत्रिषडायेष्विदुतः समोदशमः ।  
 चंद्रस्थानादुपचयेषुदशमवर्जितेषुशुभः ॥ दशमेशुभोपिनभवति ३ । ६ । ११  
 भृगुतोत्यषडष्टायेषु १२ । ६ । ८ । ११ ॥ असितात्केंद्रायनववसुषु १ । ४ । ७ ।  
 १० । ११ । ९ । ८ इति भौमाष्टकवर्गः ॥ ३ ॥

द्व्याद्यायाष्टतपःसुखेषुभृगुजात्सत्र्यात्मजेष्विदुजः साज्ञास्ते-  
 पुयमारयोर्व्ययरिपुप्राप्त्यष्टगोवाक्पतेः ॥ धर्मायारिसुतव्ययेषु  
 सवितुः स्वात्साद्यकर्मत्रिगः षट्स्वायाष्टसुखारूपदेषुहिमगोः  
 साद्येषुलगाच्छुभः ॥ ४ ॥

अथबुधस्याष्टकवर्गंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ द्व्याद्यायाष्टतपइति । इंदुजोबुधः  
 भृगुजाच्छुक्रात् द्व्याद्यायाष्टतपःसुखेषु द्वितीयप्रथमैकादशाष्टमनवमचतु-  
 र्थेषुसत्र्यात्मजेषुतृतीयपंचमयुक्तेषुशुभः २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ । ३ । ५

साज्ञास्तेपुयमारयोः । एष्वेवद्व्याद्यायाष्टतपःसुखेषुसाज्ञास्तेषु दशमसप्तमस-  
हितेषुयमारयोः शनैश्चरंगारकयोः यमात् २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ । १० । ७  
आराच्चशुभः २ । १ । ११ । ८ । ९ । ४ । १० । ७ व्ययरिप्राप्त्यष्टगोवा-  
क्पतेः । वाक्पतेः जीवात् द्वादशषष्ठैकादशाष्टमगतः शुभः १२ । ६ । ११ । ८  
धर्मायारिसुतव्ययेषुसवितुः सूर्यान्नवमैकादशमषष्ठपंचमद्वादशेषुशुभः ९ । ११ ।  
६ । ५ । १२ स्वात्साद्यकर्मत्रिगः । स्वादात्मीयस्थानादेष्वेवधर्मादिपुस्था-  
नेषुसाद्यकर्मत्रिकेषु प्रथमदशमतृतीयसहितेषुगतः शुभः ९ । ११ । ६ । ५ ।  
१२ । १ । १० । ३ षट्स्वायाष्टसुखास्पदेषुहिमगोश्रंद्रात् षष्ठद्वितीयैका-  
दशाष्टमचतुर्थदशमेषुशुभः ६ । २ । ११ । ८ । ४ । १० । साद्येषुलगाच्छुभः  
एष्वेवषष्ठादिपुस्थानेषुसाद्येषुप्रथमस्थानसहितेषुलगाच्छुभः ६ । २ । ११ । ८ ।  
४ । १० । १ ॥ तथाचसत्यः । स्वात्स्थानाच्छशितनयोद्वितीयसप्तमचतुर्थनिध-  
नानि।हित्वेष्टः २ । ७ । ४ । ८ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानि  
स्थानानिजातानि १ । ३ । ५ । ६ । ९ । १० । ११ । १२ सूर्यस्यतुलाभारि-  
सुतांत्यनवमस्थः । ११ । ६ । ५ । १२ । ९ ॥ सुतसहजषष्ठपश्चिमवर्जितेषुमंड-  
लेषुबुधस्त्विष्टः । सौराराभ्यांस्थानादविकल्पाच्छास्त्रनियमेन ५ । ३ । ६ । १२ ॥  
एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानिजातानि १ । ११ । ४ ।  
२ । ८ । ९ । १० । ७ लग्नाच्छुक्रोयेषुप्रशस्यतेतेषुचंद्रजस्तस्य । येषुस्थानेषु  
लग्नाच्छुक्रः शुभस्तेष्वेवस्थानेषुशुक्रस्थानाद्बुधः शुभोभवति ॥ शुक्राष्टकवर्गः  
पठ्यते।लग्नादिष्टः शुक्रोरिषुसप्तमदशमपश्चिमान्हित्वा ६ । ७ । १० । १२ ॥ एता-  
निस्थानानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानिजातानि १ । २ । ३ । ४ ।  
५ । ८ । ९ । ११ एतेषुस्थानेषुशुक्रस्थानाच्छुभोबुधः । अंत्योपांत्याष्टमशत्रुभे-  
पुजीवाद्बुधः श्रेष्ठः १२ । ११ । ८ । ६ । दशमस्वलाभषष्ठाष्टमेषुचंद्राद्बुधश्चतुर्थेच  
१० । २ । ११ । ६ । ८ । ४ । लग्नाच्चेष्टोद्यूनान्त्यनवमसुतसहजवर्ज्येषु ७ ।  
१२ । ९ । ५ । ३ एतानिर्वर्जयित्वातान्येववराहमिहिरपठितानिस्थानानिजा-  
तानि २ । ६ । १० । ११ । ८ । ४ । १ एतेषुलगाच्छुभः । तथाचस्वल्पजा-  
तके । सौम्योत्पषण्णवायात्मजेष्विना १२ । ६ । ९ । ११ । ५ त्वात्रि-  
तनु ३ । १ दशयुतेषु १० । चंद्राद्विरिषुदशायाष्टसुखगतः २ । ६ । १० । ११ ।  
८ । ४ । १ सादिषुविलगात् । प्रथमसुखायद्विनिधनधर्मेषु १ । ४ । ११ । २ । ८ ।  
९ सितात्रिधीसमेतेषु ३ । ५ । साशास्मरेषु १० । ७ । सौरारयोर्व्ययायरिषुवसु-  
षु १२ । ११ । ६ । ८ गुरोः । इतिबुधस्याष्टकवर्गः ॥ ४ ॥

दिक्स्वाद्याष्टमदायबंधुषुकुजात्स्वात्सत्रिकेष्वंगिराः सूर्या-  
त्सत्रिनवेषुधीस्वनवदिग्गलाभारिगोभार्गवात् ॥ जायायार्थन-



वात्मजेषु हिमगोर्मंदात्रिषड्धीव्ययेदिग्धीषट्स्वसुखायपूर्वन-  
वगोज्ञात्सस्मरश्चोदयात् ॥ ५ ॥

अथजीवस्याष्टकवर्गशार्दूलविक्रीडितेनाह । दिगिति । दिक्स्वाद्याष्टमदा-  
यबंधुपुकुजादंगिरा इति । अंगिराजीवः कुजादंगारकादशमद्वितीयप्रथमाष्टम-  
सप्तमैकादशचतुर्थेषु शुभः १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ स्वात्सत्रिकेष्वा-  
गिराः स्वादात्मीयस्थानादंगिराः गुरुः पूर्वोक्तेषु दिक्स्वाद्यादिषु सत्रिकेषु तृ-  
तीयस्थानसहितेषु शुभः १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ । ३ । ९ सूर्यात्सत्रिनवेषु गुरुः शुभः ।  
सूर्यादादित्यादिष्वेव स्थानेषु प्रागुक्तेषु सप्तमस्तृतीयेषु तृतीयनवमस्थानाधिके-  
षु शुभः १० । २ । १ । ८ । ७ । ११ । ४ । ३ । ९ धीस्वनवदिग्गलाभारिगो-  
भार्गवात् । भार्गवाच्छुक्रात्पंचमद्वितीयनवमदशमैकादशषष्ठेषु शुभः ५ । २ ।  
९ । १० । ११ । ६ जायायार्थनवात्मजेषु हिमगोः । हिमगोश्चंद्रात्सप्तमै-  
कादशद्वितीयनवमपंचमेषु शुभः ७ । ११ । २ । ९ । ५ मंदात्रिषड्धीव्यये मंदा-  
त्सौरात्तृतीयषष्ठपंचमद्वादशेषु शुभः । ३ । ६ । ५ । १२ दिग्धीषट्स्वसु-  
खायपूर्वनवगोज्ञाद्गुरुः ज्ञाद्गुधादशमपंचमषष्ठद्वितीयचतुर्थैकादशप्रथमनवमे-  
षु शुभः १० । ५ । ६ । २ । ४ । ११ । १ । ९ सस्मरश्चोदयात् । उदयाल्ल-  
भादेष्वेव स्थानेषु सस्मरेषु सप्तमस्थानसहितेषु शुभः १० । ५ । ६ । २ । ४ । ११ । १ ।  
९ । ७ ॥ तथाच सत्यः । येषु बुधस्य शशांकस्तेषु गुरुः पुष्कलस्वकात्स्थानात्तच्चंद्राष्ट-  
कवर्गः पठ्यते । षष्ठधननवमपश्चिमवर्ज्येषु बुधात्प्रशस्तश्च ६ । २ । ९ । १२ ॥ ए-  
तानि स्थानानि वर्जयित्वा जातानि १ । ३ । ४ । ५ । ७ । ८ । १० । ११  
अत्र पंचमद्वितीययोः स्थानयोः वराहमिहिरेण सह भेदः । अत्र च वराहमिहिरे-  
ण यवनेश्वरमतमंगीकृत्य द्वितीयस्थानस्य शुभत्वमंगीकृतम् । तथा च यवनेश्वरः ।  
स्वस्थानतः स्थानसुतार्थमानप्राप्तिद्वितीये च गुरुः करोति । एवं द्वितीये च  
शुभः विवादैन्याध्वगदस्त्रिकोणतस्मात्पंचमेन शुभः । एष्वेवार्कादिष्टोनवमाभ्य-  
धिकेषु भवने १ । ३ । ४ । ५ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ अत्रापि पंचमद्वितीययोः  
वराहमिहिरेण यवनेश्वरमतमंगीकृतम् । तथा च यवनेश्वरः । स्थानेरवर्षे द्विसुहृद्  
नास्तिकरोति जीवो धनदो द्वितीये । एवं द्वितीये शुभत्वाद् वराहमिहिरेणांगीकृतम् ।  
रुद्राजपीडाध्वकृदिंद्रसूरिः स्यात्पंचमेतस्मात्पंचमे न शुभः । आत्मसदृशेषु सहज-  
भवनविनाकुजाच्च गुरुरिष्टः १ । ४ । ५ । ७ । १० । ११ अत्रापि पंचमद्वितीययोः  
वराहमिहिरेण सह भेदः । अत्रापि यवनेश्वरः । गुरुः कुजस्थानगतोरिहंता द्विती-  
यगस्तु द्यतिहर्षदाता । तस्माद् वराहमिहिरेणा द्वितीयस्थानमंगीकृतम् । जामित्र-  
गोव्याध्यरिशोककारी । एवं सप्तमस्थानं नांगीकृतम् । द्वादशरिपुपंचमतृतीयसंज्ञे

शुभः सौरात् १२ । ६ । ५ । ३ दशमैकादशनवमद्वितीयपदपंचमेपुभृगोः । जी-  
वदृष्टः १० । ११ । ९ । २ । ६ । ५ चंद्राजामित्रनवमसुतलाभकोशर्षेपुगुरुः  
शुभः ७ । ९ । ५ । ११ । २ । प्रथमद्वितीयपंचमचतुर्थधर्मारिलाभदशमस्थः  
सौम्यादुरुरिष्टः १ । २ । ५ । ४ । ९ । ६ । ११ । १० जीवोलभादेवमिष्टः  
सजामित्रः १ । २ । ५ । ४ । ९ । ६ । ११ । १० । ७ ॥ तथाचस्वल्पजातके ।  
जीवोभौमाद्व्यायाष्टकेंद्रगोऽ २ । ११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० कांत्सधर्मसह-  
जेषु २ । ११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० । ९ । ३ स्वात्सत्रिकेषु २ । ११ । ८  
। १ । ४ । ७ । १० । ३ शुक्रान्नवदशलाभस्वधीरिपुषु ९ । १० । ११ । २ ।  
५ । ६ शशिनः स्मरत्रिकोणार्थलाभग ७ । ९ । ५ । २ । ११ स्त्रिरिपुधीव्यये-  
पुयमात् ३ । ६ । ५ । १२ नवदिकसुखाद्यधीस्वायशत्रुपुजा ९ । १० । ४  
। ११ । ५ । २ । ११ । ६ त्सकामगोलमात् ९ । १० । ४ । १ । ५ । २ ।  
११ । ६ । ७ इतिजीवाष्टकवर्गः ॥ ५ ॥

लग्नादा सुतलाभरंध्रनवगः सांत्यः शशांकात्सितः स्वात्सा-  
ज्ञेषुसुखत्रिधीनवदशच्छिद्रातिगः सूर्यजात् ॥ रंध्रायव्ययगो-  
रवेर्नवदशप्राप्त्यष्टधीस्थोगुरोर्ज्ञाद्धीन्यायनवारिगश्चिनवषट्-  
पुत्रायसांत्यः कुजात् ॥ ६ ॥

अथशुक्रस्याष्टकवर्गंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ लग्नादिति । सितः शुक्रः ल-  
ग्नादासुतलाभरंध्रनवगः शुभः लग्नात्पभृतिसुतस्थानपंचमं यावत्तथाला-  
भरंध्रनवगः सितः शुभः । तेषुप्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थपंचमैकादशाष्टनवमे-  
पुलगाच्छुक्रः शुभः १ । २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ सांत्यः शशांका-  
त्सितः । शशांकाच्चंद्रादेष्वेवस्थानेषुसांत्येषुसव्ययेषुद्वादशस्थानाधिकेषुशुभः १  
। २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ । १२ । स्वात्साज्ञेषुस्वादात्मीयस्थानादेष्वे-  
वस्थानेषुसाज्ञेषुदशमस्थानाधिकेषुशुभः १ । २ । ३ । ४ । ५ । ११ । ८ । ९ ।  
१० सुखत्रिधीनवदशच्छिद्रातिगः सूर्यजात् सौराच्चतुर्थतृतीयपंचमनवमद-  
शमाष्टमैकादशेषुशुभः ४ । ३ । ५ । ९ । १० । ८ । ११ रंध्रायव्ययगोरवेः  
रवेरादित्यादष्टमैकादशद्वादशेषुशुभः ८ । ११ । १२ नवदशप्राप्त्यष्टधीस्थो  
गुरोः जीवान्नवमदशमैकादशाष्टमपंचमेषुशुभः ९ । १० । ११ । ८ । ५  
ज्ञाद्धीन्यायनवारिगः । ज्ञाद्धात्पंचमतृतीयैकादशनवमषष्ठेषुशुभः ५ । ३  
। ११ । ९ । ६ त्रिनवषट्पुत्रायसांत्यः कुजात् । कुजाद्भौमात्तृतीयनवम-  
षष्ठपंचमैकादशेषुसांत्येषुअंत्येनद्वादशेनसहितेषुस्थानेषुशुक्रः शुभः ३ । ९  
। ६ । ५ । ११ । १२ ॥ तथाचसत्यः । स्वस्थानाद्भृगुतनयः षट्सप्तमपश्चिमेत-



रेष्विष्टः ६।७।१२ एतानि वर्जयित्वा तान्येव वराहमिहिरपठितानि स्थानानि जातानि १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११ रिपुपत्तिकर्मवज्येषु सितश्चंद्राचुपुष्कलोनृणाम् ६।७।१० एतानि वर्जयित्वा तान्येव वराहमिहिरपठितानि जातानि १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२। अंत्योपांत्याष्टमगः सूर्यादिष्टस्तुभार्गवः कथितः १२।११।८। भौमादंत्योपांत्यतृतीयनवमसुतशत्रुगश्चैवम् । १२।११।३।९।५।६ दशमैकादशनिधनत्रिकोणसंस्थो भृगुर्जीवात् । १०।११।८।५।९ सौम्यात्सुतधर्मलाभसहजारिसंज्ञेषु । ५।९।११।३।६ लमादिष्टः शुक्रोरिपुसप्तमदशमपश्चिमान्हित्वा । ६।७।१०।१२ एतानि वर्जयित्वा तान्येव वराहमिहिरपठितानि स्थानानि जातानि । १।२।३।४।५।६।७।८।९।११ आद्यद्वितीयरिपुसप्तमांत्यवज्येषु सौराच्च । १।२।६।७।१२ एतानि वर्जयित्वा तान्येव वराहमिहिरपठितानि स्थानानि जातानि । ३।४।५।६।७।८।९।१०।११। तथा च स्वल्पजातके । शुक्रोलमादासुतनवाष्टलाभेषु १।२।३।४।५।९।८।११ सव्ययश्चंद्रात् । स्वात्साज्ञेपुरविसुतात्रिधीसुखातिनवकर्मरंघ्रेषु । वस्वंत्यायेष्वात्रवदिगलाभाष्टधीस्थितोजीवात् । ज्ञात्रिसुतनवायारिष्वायसुतापोक्लिमेपुकुजात् ॥ इति शुक्राष्टकवर्गः ॥ ६ ॥

मंदः स्वात्रिसुताय शत्रुषु शुभः साज्ञांत्यगोभूमिजात्केंद्रायाष्टधनेष्विनादुपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात् ॥ धर्मायारिदशांत्यमृत्युषु बुधाच्चंद्रात्रिषड्लाभगः षष्ठायांत्यगतः सितात्सुरगुरोः प्राप्त्यंत्यधीशत्रुषु ॥ ७ ॥

अथ सौरस्याष्टकवर्गं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ मंदः स्वात्रिसुताय शत्रुषु शुभ इति । मंदः सौरः स्वादात्मीयस्थानात्तृतीयपंचमैकादशषष्ठस्थानेषु शुभः । साज्ञांत्यगोभूमिजात् । भूमिजाद्वैमादेष्वेव प्रागुक्तेषु साज्ञांत्येषु गतः । दशमद्वादशसहितेषु शुभः । ३।५।११।६।१०।१२ केंद्रायाष्टधनेष्विनात् इनात्सूर्याकेंद्रैकादशाष्टमद्वितीयेषु शुभः । १।४।७।१०।११।८।२ उपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात् उदयाल्लमात्तृतीयषष्ठदशमैकादशप्रथमचतुर्थेषु शुभः । ३।६।१०।११।१।४ धर्मायारिदशांत्यमृत्युषु बुधात् । बुधाद्विधस्थानात्रवमैकादशषष्ठदशमद्वादशाष्टमेषु शुभः । ९।११।६।१०।१२।८ चंद्रात्रिषड्लाभगः । चंद्रस्थानात्तृतीयषष्ठैकादशेषु शुभः । ३।६।११ षष्ठांत्यायगतः सितात् शुक्रस्थानात् षष्ठद्वादशैकादशेषु शुभः । ६।१२।११ । सुरगुरोः प्राप्त्यंत्यधीशत्रुषु सुरगुरोः जीवादेकादशद्वादशपंचमषष्ठेषु शुभः । ११।१२।५।६। तथा च सत्यः । एकादश-

पंचमषष्ठगोर्कजः स्वाच्छुभस्तृतीयेच । ११ । ५ । ६ । ३ । स्थानान्निशाक-  
 रस्यतुपंचमवज्यैष्वथैष्वेव ११ । ३ । ६ येष्वात्मनोरविस्तेषुभास्करिस्तादृशो  
 रविस्थानात् । आदित्याष्टकवर्गेपठ्यते । स्वात्स्थानादिवसकरस्तृतीयषष्ठांत्यभ-  
 त्रिकोणानि । हित्वेष्टः । ३ । ६ । १२ । ५ । ९ एतानिहित्वाजातानि । १ ।  
 २ । ४ । ७ । ९ । १० । ११ । ८ अत्रवराहमिहिरादभ्यधिकंनवमंस्थानंतच्च  
 यवनेश्वरविरोधित्वाद्राहमिहिरेणनोक्तम् । तथाचयवनेश्वरः । पापप्रवृत्तिनवमे  
 विधत्तइति । जीवादिष्टः । षट्पंचमपश्चिमैकादशस्थश्च । ६ । ५ । १२ । ११  
 भ्रातृसुतविजयलाभांत्यकर्मगः पुष्कलौनृणाम् । भौमस्थानात्सौरिः । ३ । ५ ।  
 ६ । ११ । १२ । १० षष्ठांत्योपांत्यगः शुक्रात् । ६ । १२ । ११ दशमैका-  
 दशषष्ठाष्टमांत्यनवमोर्कजः सौम्यात् । १० । ११ । ६ । ८ । १२ । ९ स्थाना-  
 दिष्टोलगाच्छुभस्तुलगाद्यथासूर्यः । आदित्याष्टकवर्गेपठ्यते । दशमैकादशषष्ठ-  
 तृतीयगोलग्रगश्चतुर्थगश्चलग्रात् । १० । ११ । ६ । ३ । १ । ४ तथाचस्वल्पजा-  
 तके । स्वात्सौरस्त्रिसुतायारिगः । ३ । ५ । ११ । ६ कुजादंत्यकर्मसहितेषु ।  
 ३ । ५ । ११ । ६ । १२ । १० स्वायाष्टकेंद्रगोर्का । २ । ११ । ८ । १ । ४ ।  
 ७ । १० च्छुक्रात्षष्ठांत्यलाभेषु । ६ । १२ । ११ त्रिषडायगः शशांका । ३ ।  
 ६ । ११ दुदयात्समुखाद्यकर्मगो । ३ । ६ । ११ । ४ । १ । १० थगुरोः । सु-  
 तषड्व्ययायगो ५ । ६ । १२ । ११ ज्ञाद्ययायरिपुदिङ्मवाष्टस्थः । १२ । ११  
 ६ । १० । ९ । ८ इतिसौरस्याष्टकवर्गः ॥ ७ ॥

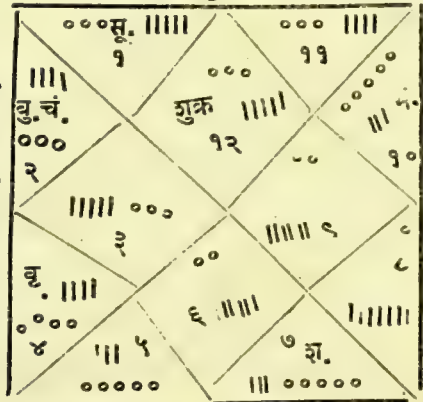
इतिनिगदितमिष्टंनेष्टमन्यद्विशेषादधिकफलविपाकंजन्मभा-  
 त्तत्रदद्युः । उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टंत्वपचयगृहनी-  
 चारातिगैर्नेष्टसंपत् ॥ ८ ॥ इत्यष्टकवर्गः ॥

अथाष्टकवर्गफलनिरूपणार्थमालिन्याह ॥ इतिनिगदितमिति । इत्यनेनोक्तेनप्र-  
 कारेणयन्निगदितमुक्तं तदिष्टंनेष्टमन्यत् । यदन्यंनिगदितं तत्सर्वमनिष्टमशोभनम् ।  
 एतदुक्तंभवति । स्वादर्कः प्रथमायबंधुनिधनइत्यनेनपाठेनयान्युक्तानिस्थाना-  
 नितेषांश्रिष्टंफलम् । विशेषादधिकफलविपाकमेवमिष्टानिष्टयोः फलयोः विशे-  
 षात्संशोधनादधिकमिष्यते । तत्फलविपाकंभवति । एतज्जन्मभात् जन्मका-  
 लेयत्रस्थानेग्रहाः स्थिताः तस्मात्स्थानाच्छुभाशुभानिफलानिप्रयच्छंति नतथा  
 तत्कालाक्रांतराशितः । एतदुक्तंभवति । यानिशुभस्थानान्याचार्येणपठितानि ।  
 तानिबिंदूपलक्षितानिकार्याणि । यान्यशुभानितानिरेखोपलक्षितानि कार्याणि ।  
 तदिष्टानिष्टयोः विशेषमंतरंकृत्वाऽवशिष्टस्यफलस्यपक्तिरिति । यत्रबिंद्वष्टकं  
 जातंतत्रशुभफलंसंपूर्णम् । यत्रचषड्बिंदवस्तत्रपादोनफलम् । यत्रचबिंदुचतुष्टयं



तत्रार्द्धफलम् । यत्रविंदूद्वौ तत्रपादफलम् । अशुभफलस्यैवंरेखाभिः कल्पनाकार्या ॥  
 तत्रचानिमिषपरमांशके विलग्नइत्यत्रप्रयोगे जातस्यांगारकस्याष्टकवर्गउदाहि-  
 यते । तत्राचार्यपठितानिस्थानानि विंदूपलक्षितानि कार्याणि । अपठितानि अशु-  
 भानि स्थानानि रेखापलक्षितानि कार्याणि । तद्यथा ग्रहसंस्था मीनलग्नगतः शुक्रः ।  
 मेषे द्वितीयस्थानस्थोर्कः । तृतीये वृषे चंद्रबुधौ पंचमस्थाने कर्कटस्थो जीवः । अष्ट-  
 मे तुलायां शनैश्चरः । एकादशे मकरस्थो भौमः । अनया ग्रहसंस्थया प्रदर्श्यते न्यासः  
 वक्रस्तूपचयेष्विनात्सतनयेष्वाद्याधिकेषूदयाच्चंद्रादिग्विफलेषु केंद्रानि धनप्राप्त्य-  
 र्थगः स्वाच्छुभः । धर्मायाष्टमकेंद्रगोर्कतनयाज्ज्ञात्पट्टत्रिधीलाभगः शुक्रात्पट्ट-  
 व्ययलाभमृत्युपुगुरोः कर्मात्यलाभारिषु ॥ अष्टकुंडलिकान्यासः । अथशुभा-  
 शुभफलविशेषः क्रियते । तत्रभेषरेखापंचकं विंदुत्रयं च जातं रेखात्रयं विंदुत्रयं चा-  
 पास्यद्वेरेखेजाते । तस्मादेवंविधयोगे जातस्य सदैवचारवशान्भेषस्थों गारकोष्ट-  
 भागद्वयेनाशुभः । वृषे रेखापंचकं विंदुत्रयं जातम् । रेखात्रयं विंदुत्रयं चापास्यद्वेरे-  
 खेजाते तस्मादृषस्थो भौमोष्टभागद्वयेनाशुभो भवति । मिथुने रेखापंचकं विंदुत्रयं  
 च जातम् । रेखात्रयं विंदुत्रयं चापास्यद्वेरेखेजाते । तस्मिन्मिथुनस्थो भौमोष्टभाग-  
 द्वयेनाशुभः । कर्कटे विंदुचतुष्टयं रेखाचतुष्टयं च जातम् । तत्रनकिंचिदवशिष्यते ।  
 तेन तत्स्थानं नशुभं नाप्यशुभम् । समत्वान्मध्यमः । सिंहविंदुपंचकं रेखात्रयं च जातं ।

रेखात्रयं विंदुत्रयं चापास्यविंदुद्वयं जातं  
 तस्मात्तस्य सदैव सिंहस्थो भौमोष्टभागद्व-  
 येनाशुभो भवति । कन्यायां रेखाषट्कं विं-  
 दुद्वयं च जातम् । विंदुद्वयं रेखाद्वयं चापा-  
 स्यरेखाचतुष्टयं जातम् । तस्मात्कन्यास्थो  
 भौमोष्टभागचतुष्टयेनाशुभः । तुलायां  
 रेखात्रयं विंदुपंचकं च जातं तत्ररेखात्रयं  
 विंदुत्रयं चापास्यविंदुद्वयं जातम् । तेन तु-



लास्थो भौमोष्टभागद्वयेन सदैव शुभः । वृश्चिके रेखासप्तकमेको विंदुः जातः तत्र-  
 विंदुरेखां चापास्यरेखाषट्कं जातं तस्मादृश्चिकस्थो भौमोष्टभागषट्केनाशुभः । ध-  
 नुषिरेखाषट्कं विंदुद्वयं च जातम् तत्ररेखाद्वयं विंदुद्वयं चापास्यरेखाचतुष्टयं च जातं  
 एवमष्टभागचतुष्टयेन धनिस्थो भौमो सदैवाशुभः । मकरे रेखात्रयं विंदुपंचकं च जातं  
 तत्ररेखात्रयं विंदुत्रयं चापास्यविंदुद्वयं जातं तेन मकरस्थो भौमोष्टभागद्वयेनाशुभः ।  
 कुंभे रेखाचतुष्टयं विंदुत्रयं च जातम् । अत्रचंद्रस्थानात् दशमस्थानम् भौमस्य  
 समत्वादष्टमो विंदुर्न जातस्तस्माद्रेखात्रयं विंदुत्रयं चापास्य एकारेखा जाता त-  
 स्मात्कुंभस्थोष्टमभागेनैकेनाशुभः । मीने रेखापंचकं विंदुत्रयं च जातम् । रेखात्रयं

विदुत्रयंचापास्यरेखाद्वयंचजातम् । तस्मान्मीनस्थोभौमोष्टभागद्वयेनाशुभः ।  
 आस्यतोशुद्धौस्थापना । एवंशुभाशुभान्येकीकृत्याष्टौफलानिभवंति । तेषांसंशो-  
 धनंकृत्वायदवशिष्यतेतदादेश्यम् । यत्ररेखाचतुष्टयंविदुचतुष्टयंचभवति । तत्रसमं  
 मध्यस्थोग्रहोभवति । यत्ररेखाष्टकंतत्रातीवाऽशुभः । यत्रविंदष्टकंतत्रातीवशुभः ।  
 एवंजन्मकालाक्रांतराशिवशेनसर्वग्रहाणामष्टकवर्गः कार्यः । तथाचवादरायणः ।  
 एकेनयःशुभःस्यात्पङ्क्तिःस्थानैः सपापदोभवति । यस्तुचतुर्भिर्नष्टः सर्वफलेकल्प-  
 नाप्येवम् । ननुपूर्वमुक्तम् एकग्रहस्यसदृशफलयोर्विरोधेनाशंवदेद्यदधिकंपरिपच्य-  
 तेतत् । इतिनिगदितमिष्टनेष्टमन्यद्विशेषादितिपुनरुक्तम् । उच्यते । नैतत्पुनरुक्तम् ।  
 अष्टकवर्गंविनायदुक्तमेकग्रहस्यसदृशफलयोर्विरोधइति । तत्रसदृशयोः फलयो-  
 र्विरोधेनाशोविज्ञेयः । यथासएवग्रहः कयापियुक्त्यासुवर्णदोभवति । सएवयुक्त्यं-  
 तरेणसुवर्णापहारीतदानसुवर्णदोभवति । नसुवर्णापहारीचेति । यदधिकंपरिप-  
 च्यतेतत्रतत्रापि । यदिकारणद्वयेनसुवर्णापहारीभवति । कारणेनैकेनसुवर्णद-  
 स्तथापिसुवर्णापहारीभवति । नसुवर्णदः । अथकारणद्वयेनसुवर्णदः कारणेनैके-  
 नसुवर्णापहारी । तथापिकारणद्वयस्याधिक्यात्सुवर्णदएव । एवंतत्रसदृशफल-  
 योर्विरोधेनाशंवदेन्नासदृशयोः । इहतुपुनः असदृशेपिफलयोर्विरोधेनाशएवेति ।  
 तद्यथा । वादरायणयवनेश्वरादिभिरष्टकवर्गेभिहितम् । अस्यग्रहस्यस्थानादयंग्र-  
 हःस्वस्मिन्स्थानेतिष्ठमानइमानिशुभान्यशुभानिफलानिप्रयच्छतीति । तत्रास-  
 दृशान्यपियदितानिफलानिभवंतितथापितेषांशुभाशुभविरोधादेवनाशंवदेत् ।  
 विशेषादधिकफलविपाकंजन्मभात्तत्रदद्युरिति । यथाकश्चिद्ग्रहः केनचित्कारणे-  
 नसुवर्णदोभवत्यपरेणरूप्यापहारीच । तथाप्यसदृशयोरपिफलयोर्विरोधेदान-  
 हरणात्मकेनशुभोनाप्यशुभइतिकल्पनीयः । एवंस्थानाष्टकाद्यत्रस्थानेबहुभिः  
 शुभोभवत्यल्पेनाशुभः । तत्रशुभाशुभफलविशेषंकृत्वाशुभमेकंकल्पनीयम् ।  
 अनेनैवप्रकारेणस्थानसंज्ञामात्रेणस्थानशुभाशुभत्वमेवोक्तंनपृथक्फलनिर्देशोय-  
 वनेश्वरादिवत् । यद्येवंचाष्टकवर्गंप्रधानंतत्संहितायांगोचरफलेचंद्रस्थानात् ।  
 किमितिपृथक्फलनिर्देशोवराहमिहिरेणकृतः । जन्मन्यायासदोर्कइत्येवमादि ।  
 अत्रोच्यते । तस्मादष्टकवर्गफलविशेषाद्यदतिरिच्यते । तदेववक्तव्यमिति ।  
 तदेवपूर्वप्रत्ययनार्थमतिप्रसिद्धत्वाद्गोचरस्यान्यमतमेवांगीकृतवोक्तम् । तथाच  
 यात्रायांतैर्नैवोक्तम् । यस्यगोचरफलप्रमाणतातस्यवेधफलमिष्यतेनवा । प्रायशो-  
 नबहुसंमतंत्विदंस्थूलमार्गफलदोहिगोचरइति । यवनेश्वरेणापिपृथक्पृथक्फल-  
 निर्देशंकृत्वैतदेवाष्टकवर्गमंगीकृतम् । तथाचतद्वाक्यम् । फलाष्टवर्गेशुभपापलक्षे-  
 समानकल्पावफलौप्रदिष्टौ । ज्यायांस्तुयस्तस्यफलंविधार्ययात्राविधानेचसमु-  
 द्रवेच । पृथक्फलनिर्देशंकृत्वावादरायणोप्यष्टकवर्गमेवाह । कष्टश्रेष्ठेतुल्यसं-



रूपेफलेचेत्स्यातांशःफलयोस्तत्रवाच्यः । वाच्यापक्तियोंतिरिक्तस्तयोः  
 स्यात्स्थानेस्थानेकल्पनेयंप्रदिष्टा । उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैः पुष्टमिष्टमिति ।  
 लग्नाच्चंद्राद्यान्युपचयस्थानानितथामित्रक्षेत्राणिस्वोच्चं च । एतानि शुभस्थाना-  
 नि शुभस्थानोपलक्षणानि । उपलक्षणत्वात्स्वक्षेत्रंमूलत्रिकोणंचगृह्यते । तत्र-  
 लग्नाच्चंद्रादोपचयतोग्रहः स्वक्षेत्रस्थः स्वोच्चस्थोमित्रक्षेत्रस्थोमूलत्रिकोण-  
 स्थश्चयदाशुभंफलंप्रयच्छति।तदातीवपुष्टंफलंप्रयच्छति । अत्रचश्रीदेवकीर्तिः ।  
 लग्नादुपचयसंस्थश्चंद्राद्वास्वगृहमूलतुंगस्थः । मित्रक्षेत्रगतोवाफलमतिशयितः  
 शुभंदद्यात् ॥ लग्नाच्चंद्राद्यान्युपचयस्थानानि । तथाशत्रुक्षेत्रनीचानिचतान्य-  
 शुभानि । तेपुस्थितोग्रहोयदाशुभफलंप्रयच्छति।तदप्यतिनिकृष्टमिति । अर्थादे-  
 वशुभगृहस्थःशुभंफलंप्रयच्छति। अशुभगृहस्थश्चशुभमल्पम्।किमेवंविधेषुस्थानेषु  
 ग्रहस्यजन्मकालेस्थितिरन्वेष्ट्या । किंवाचारवशात्फलकल्पनेति । उच्यते । ज-  
 न्मकालिकमेवतत् । तत्रांतर्दर्शनतः।तथाचदेवकीर्तिः।अपचयराशौनीचेऽशुक्षे-  
 त्रेचजन्मकालेस्यात् । यस्तुसदद्यात्पापंफलमतिशयितोयथाकालम्॥यवनेश्वर-  
 श्च । यस्तुस्वनीचारिगृहोपगोन्यैर्जितोरिदृष्टोत्पत्तनुर्विवर्णः । सूतावभूजन्मपतौ  
 बलस्येसजन्मगोबंध्यफलोनिर्मुक्तः । ईषत्सुहृत्स्वोच्चभृदिष्टदृष्टोमित्रर्क्षजन्मोप-  
 चयेबलीयान्।योजातकेभूत्सतुजन्मसंस्थोदद्याच्छुभंनत्वशुभोप्यनिष्टम्॥तथाच  
 सत्यः । जन्मन्युपचयभवनेएकोग्रहोत्पचयेपुष्टफलः । अपचयभवनोपेताः  
 पीडास्थानेह्यपचयाय ॥ फलकालेत्पुनश्चंद्रवर्ज्यमन्योग्रहोबलवानेवशुभमशुभं  
 वापुष्टंफलंप्रयच्छतीति । चंद्रःशुभोपिवलरहितः पापफलोभवति ।  
 अत्रचश्रीदेवकीर्तिः । पुष्टमपुष्टंस्वफलंदद्यात्सबलोबलेनहीनस्तु । ग्रहइ-  
 वसर्वश्चंद्रः कष्टफलोबलविहीनश्च ॥ तथाचसत्यः । स्नेहवपुरंशुबलैर्विवर्जितः  
 शत्रुभेरिसंदृष्टः।ग्रहइवफलमनुदद्याच्चंद्रस्तुयदीदृशःकष्टः॥वराहमिहिरोप्यबलानां  
 ग्रहाणांफलदाने असमर्थानांयात्रायामाह । नीचस्थाग्रहविजितारव्यभिभूता  
 विरश्मयोह्रस्वाः । भुजगाइवमंत्रहताभवंतिकार्याक्षमालग्रे । यात्रायांयवनेश्व-  
 रोपि । स्ववर्गसंस्थावलिनोविशेषाद्ग्रहायथोद्दिष्टफलप्रदाःस्युः । नीचेजिताश्चा-  
 रिगृहेल्पवीर्यास्तेग्रंत्यनिष्टेष्टफलप्रवृत्तिम्।तत्रशास्त्रेषुयानिवाक्यान्युच्चादिसंस्था-  
 नांशुभाशुभफलप्रवृत्तिप्रदर्शकानिनीचारिस्थानामशुभफलप्रदर्शकानितानिज-  
 न्मसंस्थियेज्ञेयानि । यानिचशुभानामशुभानांवाफलानिग्रहवशेनैवपुष्टिप्रदर्शका-  
 नि तानि चारवशात्फलदानकालेग्रहस्येज्ञेयानीति ॥ ८ ॥

॥ इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतावष्टकवर्गाध्यायोनवमःसमाप्तः ॥ ९ ॥

अथ कर्माजीवाध्यायोव्याख्यायते॥ अर्थाप्तिःपितृपितृपत्ति  
शत्रुमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनादिवाकराद्यैः ॥ होरेंद्रोर्दशमगतै  
र्विकल्पनीयाभेंद्रर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या ॥ १ ॥

अथातःकर्माजीवाध्यायोव्याख्यायते।अनेनपुरुषेणकथंधनमर्जयितव्यमित्य-  
ध्यायेस्मिन्निरूप्यते । अत्रचप्रकारद्वयेनधनदाताग्रहोभवति।लभाच्चंद्रभाच्चयो-  
दशमस्थोग्रहः सधनदाताभवति । अथलग्नचंद्रयोर्दशमस्थानेशून्येभवतस्त-  
दाललग्नचंद्रादित्यानां येयेदशमराशयस्तेषांयेऽधिपतयस्तेयेपुनर्वांशकेपुपुरुषस्यज-  
न्मकालेस्थितास्तेषांनवांशकानांयेग्रहाअधिपतयस्तेग्रहाः धनदातारोभवन्ति ।  
किंतुलभाच्चंद्राच्चयेदशमाग्रहाः तेअनेनप्रकारेणधनदातारोभवन्ति । किंतुभेंद्र-  
र्कास्पदपतिगांशनाथाअनेनप्रकारेणेति । तत्रादावेवलभाच्चंद्राच्चदशमस्थोग्रहोये-  
नप्रकारेणधनंददाति तथाभेंद्रर्कास्पदपतिगांशनाथायेनप्रकारेणधनप्रदास्तत्प्र-  
कारद्वयप्रदर्शनंप्रहर्षिण्याह ॥ अर्थाप्तिरिति । होरेंद्रोः लग्नचंद्रयोः दिवाकराद्यैः  
सूर्याद्यैः ग्रहैः दशमगतैः दशमस्थानाश्रितैः पित्रादिभ्योर्थाप्तिः धनप्राप्तिः  
विकल्पनीयाविचिंत्या । तत्रपुरुषस्यजन्मसमयेलभाच्चंद्राद्यादित्योदशम-  
स्थोभवतितदापितृतोर्थाप्तिर्भवति । एवंचंद्रेलभादशमगतैपितृपत्तिः मातुः  
सकाशात् । भौमेललग्नचंद्रयोर्दशमेसतिशत्रुतः रिपुतः । बुधेमित्रात् सुहृत्तः ।  
गुरौभ्रातृतःसहजात् । शुक्रेस्त्रीतः योषितः । सौरैभृतकजनात्कर्मकरात् से-  
वकादित्यर्थः । अथकश्चिल्लभादशमेभवत्यपरश्चंद्रात्तदास्वस्यांस्वस्यामंतर्दशा-  
यांद्वावपिस्वाभिहितफलप्रदोभवतः । नकेवलम्।यावच्चंद्राल्लभाच्चबहवोपियदि  
दशमस्थाभवन्ति । तदासर्वेएवस्वस्यांस्वस्यामंतर्दशायांस्वस्वप्रकारेणधनप्रदा-  
भवन्ति । अथलग्नचंद्राद्धानकश्चिदशमोभवति । तदाकोर्थप्रदोभवति । अतउ-  
क्तम् । भेंद्रर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या।भंलग्नम्। इंदुश्चंद्रः । अर्कः आदित्यः । भं-  
चेंदुश्चार्कश्चभेंद्रर्काः तेभ्यः प्रत्येकस्यास्पदाख्योयोराराशिः दशमइत्यर्थः ।  
तस्ययोधिपतिः ग्रहःसः यस्मिन्नवांशकेगतः स्थितस्तस्ययोनाथः स्वा-  
मीतस्ययावक्ष्यमाणावृत्तिः तयावृत्त्यातस्यधनप्रदोभवति । एवंलग्नचंद्राद-  
र्कादपिबक्तव्यम्। केचिदेवंव्याचक्षते । यथालभाच्चंद्राच्चयदादशमस्थाग्रहाभवन्ति  
तदाललग्नचंद्रयोर्बलवांस्तस्ययोदशमः सएवार्थप्रदोभवति । भेंद्रर्काणांयो-  
बलीतस्यास्पदपतिगांशनाथवृत्त्याएकएवार्थप्रदोभवतीति । तदयुक्तम् । यस्मा-  
दत्रबलग्रहणंनास्तितस्मादेवंज्ञायते सर्वेभ्यएवभवति । पुरुषस्यबहुप्रकारध-  
नागमदर्शनादिति । तथाचभगवान्मार्गिः । उदयाच्छशिनोवापियेग्रहादशम-  
स्थिताः । तेसर्वेथप्रदाज्ञेयाःस्वदशासुयथोदिताः । लग्नार्करात्रिनाथेभ्योदशमा-



धिपतिर्ग्रहः । यस्मिन्नवांशे तत्कालं वर्तते तस्य यः पतिः । तद्वृत्त्या प्रवदो द्वितं जा-  
तस्य बहवो यदा । भवंति वित्तदास्ते पिस्वदशासु विनिश्चितमिति ॥ १ ॥

अर्कांशे तृणकनकोर्णभेषजाद्यैश्चंद्रांशे कृषिजलजांगनाश्रया-  
च्च ॥ धात्वग्निप्रहरणसाहसैः कुजांशे सौम्यांशे लिपिगणितादि-  
काव्यशिल्पैः ॥ २ ॥

भेदार्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या इति यदुक्तमधुना तां वृत्तिं प्रहर्षिणीद्वयेनाह ।  
अर्कांश इति । भेदार्कास्पदपतिगांशनाथोर्कः यदा भवति तदा तृणैः सु-  
गंधैः कनकेन सुवर्णेन च ऊर्णया आविकलोम्ना भेषजेन औषधेन । आ-  
दिशब्दाद्विषकृत्क्रियारोगिणां परिचर्यया च धनमाप्नोति । अथ चंद्रांशो भवति ।  
तदा कृष्याकर्षणेन जलजैः शंखमुक्ताप्रवालादिभिः अंगनाभिः स्त्रीभिः । जल-  
जानां क्रयविक्रयैः । अंगनानां समाश्रयणैरेतैः धनमाप्नोति । अथ कुजांशो भौम-  
नवांशो यदा भवति । तदा धातुभिः मृत्तिकादिभिः पक्काभिः सुवर्णरूप्यताम्रादीनि  
भवंति । ताभिः प्राप्नोति । अथ वा धातुभिः मनःशिलाहरितालहिंगुलकांजनप्र-  
भृतिभिः अग्निनामिक्रियया प्रहरणैः खड्गचक्रकुंतचापतोमराद्यैः साहसैः असमी-  
क्षितकार्यकरणैरथवा स्वबलक्रियारंभैः धनमाप्नोति । अथ सौम्यांशो बुधनवांश-  
को यदा भवति । तदा लिपिगणितादिकाव्यशिल्पैः धनमाप्नोति । लिप्यक्षरवि-  
न्यासेन गणितेन आदिग्रहणाद्व्याख्यानेन यंत्रादिप्रयोगैः काव्यक्रियया शिल्पैः  
चित्रपुस्तकपत्रच्छेदवाणमाल्यरचनागंधयुक्तिप्रभृतिभिः धनमाप्नोति ॥ २ ॥

जीवांशे द्विजविबुधाकरादिधर्मैः काव्यांशे मणिरजतादिगोम-  
हिष्यैः ॥ सौरांशे श्रमवधभारनीचशिल्पैः कर्मशाध्युषितनवां-  
शकर्मसिद्धिः ॥ ३ ॥

अथ जीवांशे द्वितीयप्रहर्षिण्याह । जीवांश इति । जीवांशे द्विजविबुधाकरा-  
दिधर्मैरिति । अथ जीवांशको यदा भवति । तदा द्विजेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः विबुधे-  
भ्यो देवेभ्यः पंडितेभ्यो वा । आकरेभ्यः सुवर्णादीनां लवणादीनां अंजना-  
दीनां गजादीनां च समुत्पत्तिस्थानेभ्यः । आदिग्रहणात्क्रियावादेन । धर्मैः यज्ञ-  
दानोपवासतीर्थगुरुसेवनादिभिः धनमाप्नोति । अथ शुक्रनवांशको यदा भ-  
वति । तदा मणिभिः वज्रमरकतपन्नरागेंद्रीलप्रभृतिभिः । रजतेन रूप्येण ।  
आदिग्रहणात्सर्वैर्लोहैः गोभिः । तथामहिषकर्मणि महिषेभ्यो वा साधुः म-  
हिष्यः श्रेष्ठमहिष्यैः । धनमाप्नोति । अथ सौरांशको यदा भवति । तदा श्रमेण

अध्वगमनादिकेनवधेनचवध्यघातितया । अथवास्वशरीरताडनाद्येन । भार-  
वाहेनेननीचशिल्पैः स्वकुलानुचितैः कर्मभिःधनमाप्नोति । एवंजातकका-  
लवशात्पुरुषस्यधनागमंज्ञात्वा कालानुकालंकर्मेशचारवशात् कर्मसिद्धि-  
माह ॥ कर्मेशाध्युषितनवांशकर्मसिद्धिः । कर्मणिर्दशः कर्मेशः लग्नाद्दशम-  
राशिः तदधिपः कर्मेशः । सचारवशाद्यस्मिन्नवांशकेअध्युषितोभवति । व्यव-  
स्थितोभवतितस्ययःस्वामीतस्ययानिकर्माणि । अर्कांशेतृणकनकोर्णभेषजाद्यैरि-  
त्यादीनि । तत्समानानांसिद्धिर्भवति । तानिप्रारब्धानिसिध्यतीति । अत्रके-  
चित्कर्मेशाध्युषितसमानकर्मसिद्धिरितिपठन्ति । अत्रचनवांशग्रहणंनस्तिप्रकृ-  
तत्वात्प्रागनुवृत्तेः । नवांशकोव्याख्यायते । तथाचभगवान्गार्गिः । लग्नक-  
र्माधिपेयस्मिन्नवांशेवर्ततेग्रहः । चारक्रमेणतत्तुल्यांकर्मणांसिद्धिमादिशेत् । ज्ञा-  
तजातकस्येदंक्रियाश्रयंकर्मकर्मेशाध्युषितनवांशकपतिकर्मणांयथादर्शितानांप्रा-  
रब्धानांकालानुकालंसिद्धिर्वक्तव्यानान्येषामिति ॥ ३ ॥

मित्रारिस्वगृहगतैर्ग्रहैस्ततोर्थतुंगस्थेवल्लिनिचभास्करेस्ववी-  
र्यात् ॥ आयस्थैरुदयधनाश्रितैश्चसौम्यैः संचित्यंवलसहितै-  
रनेकधास्वम् ॥ ४ ॥

## ॥ इतिकर्माजीवाध्यायः ॥

अथधनागमज्ञानंप्रहर्षिण्याह । मित्रारिस्वगृहगतैरिति । चंद्रलग्नयोः ये  
दशमगाग्रहास्तदभावेचयेभेदार्कास्पदपतिगांशनाथाः तेचयदिजन्मकालेमि-  
त्रगृहस्थिताभवंति तदास्वांतर्दशाकालेमित्रगृहेस्थिताभवंति । ततस्तस्मा-  
देवमित्रात् मित्रतः धनप्रदाभवंति । अथारिगृहस्थाः शत्रुगृहगाभवं-  
ति । तदारितएव । अथस्वगृहस्थास्तदास्वगृहादेवधनप्रदाभवंति तुंगस्थे  
वल्लिनीति । यस्यपूर्वविधिनाभास्करः सूर्योर्धनप्रदोज्ञातः । तस्मिस्तुंग-  
स्थेउच्चगेभेषप्राप्तेतद्वल्लिन्यन्यैर्वलैः कालवलाद्यैर्युक्तैस्तदासपुरुषः स्ववीर्या-  
द्धनमर्जयति । स्वविक्रमार्जितधनोभवतीत्यर्थः । आयस्थैरिति । सौम्यैः  
शुभग्रहैः जन्मन्यायसंस्थैरेकादशस्थानगतैः उदयधनाश्रितैश्चलग्नैः  
द्वितीयस्थानगतैर्वातैश्चवलसहितैः वीर्यवद्भिः जातः अनेकधाबहुभिः प्रकारैः  
स्वधनंप्राप्नोतीति । संचित्यंनिश्चयः कार्योंयेनयेनप्रकारेणधनार्जनमाकांक्षते ते-  
नतेनप्रकारेणायत्नादवाप्नोतीत्यर्थः । तथाचभगवान्गार्गिः । धनदाजन्मसमये  
मित्रारिस्वगृहोपगाः । यस्यतस्यधनंदद्युर्मित्रारिस्वगृहोद्भवम् ॥ धनदोभास्क-



रोयस्यतुंगेवलसमान्वितः । भवेज्जन्मनियस्यस्याद्वितमात्मोद्यमार्जितम् । लाभार्थलग्नैः सौम्यैर्येनयेनैवकर्मणा । धनार्जनप्रार्थयतेतेनायत्नात्समश्रुतइति ॥४॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौकर्माजीवाध्यायोदशमः ॥ १० ॥

अथ राजयोगाध्यायः ॥ प्राहुर्यवनाः स्वतुंगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः ॥ क्रूरैस्तुनजीवशर्मणः पक्षेक्षित्यधिपः प्रजायते ॥ १ ॥

अथातो राजयोगाध्यायो व्याख्यायते । तत्रादावेव यवनानां जीवशर्मणश्च मतवैतालीयेनाह ॥ त्रिप्रभृतिभिरुच्चस्थैर्नृपवंशभवा भवन्ति राजानः ॥ इति सर्वजातकेषु प्रसिद्धम् । तत्रैतावद्यवनानां मतभेदः । यस्य जन्मसमये क्रूरैः पापग्रहैः स्वतुंगैः स्वोच्चस्थैर्जातो महीपती राजा भवति । किंतु क्रूरमतिः पापबुद्धिरिति प्राहुः कथयन्ति । अर्थादेव सौम्यैरुच्चगतैः महीपतिर्धर्मात्मा च भवति । मिश्रैरुच्चगतैर्मिश्रस्वभावो राजा इति । एष एवार्थो मणित्येनाभिहितः । तथा च तद्वाक्यम् । पापैः पापमतिः स्वोच्चगतैर्धर्मवास्तथा सौम्यैः । व्यामिश्रैर्मिश्रमतिः पृथ्वीशो जायते मनुजः ॥ क्रूरैस्त्विति । जीवशर्मणः पक्षे तन्मते क्रूरैस्तुच्चगतैः क्षित्यधिपो न राजा प्रजायते । किंतुराज्ञातुल्यो धनवान् भवति । तथा च तद्वाक्यम् । पापैरुच्चगतैर्जातान् भवन्ति नृपानराः । किंतु वित्तान्वितास्ते स्युः क्रोधिः कलहप्रिया इति । वराहमिहिरस्य यवनेश्वरमतमभिप्रेतम् । यतस्तेन सामान्येनैव स्वल्पजातकेभिहितम् । त्रिप्रभृतिभिरुच्चस्थैर्नृपवंशभवा भवन्ति राजानः । पंचादिभिरन्यकुलोद्भवाश्च तद्वत्त्रिकोणगतैरिति ॥ १ ॥

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च स्वोच्चेषु षोडशनृपाः कथितैकलग्ने ॥ द्वेकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्नैस्वक्षेत्रगेशशनिषोडशभूमिपाः स्युः ॥ २ ॥

अथ द्वात्रिंशद्राजयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ वक्रार्कजा इति । वक्रोंगारकः । अर्कजः सौरः । अर्कः सूर्यः गुरुर्जीवः एतैः वक्रार्कजार्कगुरुभिः भौमशनि-सूर्यजीवैः सकलैः सर्वैश्चतुर्भिरपि स्वोच्चेषु स्थितैः कथितैकलग्ने एषां कथितग्रहाणां चतुर्णामध्यादेकैकस्मिंल्लग्नगते चत्वारो राजयोगा भवन्ति । तथा त्रिभिश्च एषामेव मध्यात्रिभिः स्वोच्चगतैः तेषु मध्यादेकैकस्मिन् लग्नगे कथितैकलग्ने द्वादशराजयोगा भवन्ति । एवं षोडशे द्वेकाश्रितेष्विति । एतेषां मध्याद्वाभ्यामुच्चगताभ्यामनयोर्मध्यादेकस्मिंल्लग्नगते शशिनचंद्रैस्वक्षेत्रगे कर्कटस्थे तेषामेव वक्रार्कजार्कगुरुणां मध्याद्ब्रह्मद्वये स्वोच्चाश्रिते तदेकतमे विलग्नगे द्वादशराजयोगा भ-

वंति । एकाश्रितेषु च तेषामेव मध्यादेकस्मिन्बुद्ध्याश्रिते तस्मिन्नेव विलग्नगेस्वक्षेत्र-  
त्रगते चंद्रमसि च त्वारोराजयोगा भवन्ति । एवं षोडश श्लोकपूर्वोक्तैः सह द्वात्रिं-  
शत् । तद्यथा । मेषर्कः कर्कटे जीवः तुले सौरः मकरे कुजः शेषायथेष्टम् । ईदृ-  
श्यां ग्रहसंस्थायां मेषलग्नगते एको योगः १ कर्कटे द्वितीयः २ तुले तृ-  
तीयः ३ मकरे चतुर्थः ४ एवं वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैः स्वोच्चेषु  
तदेकतमेलमे च त्वारोराजयोगाः । अथ त्रिभिः तद्यथा । मेषर्कः कर्कटे जीवः तुले  
सौरः शेषायथेष्टम् । ईदृश्यामपि ग्रहसंस्थायां मेषलग्ने एको योगः । कर्कटे द्वितीयः  
तुले तृतीयः । पूर्वैः सह सप्त ७ । अथ मेषर्कः कर्कटे जीवः मकरे भौमः शेषाय-  
थेष्टम् । ईदृश्यां च ग्रहसंस्थायां मेषलग्ने एको योगः । कर्कटे द्वितीयः मकरे तृतीयः ।  
पूर्वैः सह दश १० । अथ मेषर्कः तुले सौरः मकरे भौमः शेषायथेष्टम् । ईदृश्यां  
च ग्रहसंस्थायां मेषलग्ने एकः तुले द्वितीयः । मकरे तृतीयः ३ एवं त्रयोदश १३ ।  
अथ कर्कटे जीवः । तुले सौरः । मकरे भौमः । शेषायथेष्टम् । ईदृश्यां च ग्रहसंस्थायां  
कर्कटे एकः । तुले द्वितीयः । मकरे तृतीयः ३ एवं षोडश राजयोगाः १६ चतुर्भिः त्रिभिः  
स्वोच्चगतैः । तदेकतमे विलग्नगते इति गतम् । द्वेकाश्रितेष्वित्यादियोगेषु यावत्कर्कटे  
चंद्रमान भवति तावद्योगा एव न भवन्ति । तद्यथा । व्याश्रितेषु ग्रहेषु स्वक्षेत्रगते  
च चंद्रे द्वादश राजयोगा व्याख्यायन्ते । तद्यथा । मेषर्कः कर्कटे चंद्रजीवौ शेषाय-  
थेष्टम् । ईदृश्यां च ग्रहसंस्थायां मेषलग्ने एको योगः । कर्कटे द्वितीयः २ । अथ मेषर्कः ।  
कर्कटे चंद्रः । तुले सौरः । शेषायथेष्टम् । तदा मेषे तृतीयः ३ तुले चतुर्थः ४ । अथ-  
मेषर्कः । कर्कटे चंद्रः मकरे भौमः शेषायथेष्टम् । तदा मेषे पंचमः ५ मकरे षष्ठः ६  
अथ कर्कटे चंद्रजीवौ । तुले सौरः । शेषायथेष्टम् । तदा कर्कटे सप्तमः ७ तुले षष्ठ-  
मः ८ । अथ कर्कटे स्थौ चंद्रजीवौ । मकरे भौमः । शेषायथेष्टम् । तदा कर्कटे नव-  
मः ९ मकरे दशमः १० । अथ तुले सौरः । मकरे भौमः । कर्कटे चंद्रः । शेषायथेष्टम् ।  
तदा तुले एकादश ११ मकरे द्वादश १२ व्याश्रितेष्विति गतम् । अथैकाश्रितेषु क-  
र्कटस्थे चंद्रे मेषस्थे कर्के मेषलग्ने एकः १ कर्कलग्नतद्गतयोश्चंद्रजीवयोः द्वितीयः २  
कर्कटस्थे चंद्रे तुलास्थे सौरे तस्मिन्नेव लग्ने तृतीयः ३ कर्कटस्थे चंद्रे मकरस्थे भौमे त-  
स्मिन्नेव लग्ने चतुर्थः ४ एवं पूर्वैर्द्वादशभिः सह षोडश । श्लोकपूर्वोक्तैः षोडशभिः  
सह द्वात्रिंशद्राजयोगा ३२ व्याख्याताः ॥ २ ॥

वर्गोत्तमगते लग्ने चंद्रे वा चन्द्रवर्जितैः ॥ चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपाद्वा-  
विंशतिः स्मृताः ॥ ३ ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशद्राजयोगाननुष्ठुभाह ॥ वर्गोत्तमगते लग्न इति । लग्ने जन्म-  
कालिके लग्ने वर्गोत्तमगते स्वनवांशकस्थ इत्यर्थः । तस्मिन् चंद्रवर्जितैरन्यग्रहैश्चतु-



राद्यैः दृष्टेचतुर्भिःपंचभिः षड्भिर्वावलोकितेद्वाविंशतिराजयोगाः स्मृताः  
 उक्ताः । अत्रलभ्रेचंद्रेणदृश्यमानेनयोगभंगः कितुपश्यतांमध्येनगण्यते । स-  
 तुपश्यतुमावापश्यतु अन्यैश्चतुरादिभिर्ग्रहैर्दृष्टेराजयोगोभवति । एवंवर्गो-  
 त्तमगतेलभ्रेद्वाविंशतियोगाः २२ एवंचंद्रेवर्गोत्तमांशस्थेचतुराद्यैर्ग्रहैः दृष्टेद्वाविं-  
 शतियोगाभवन्ति । एवंचतुश्चत्वारिंशत् ४४ अत्रलभ्रेचंद्रेवाचतुर्भिर्दृश्यमानेपंच-  
 चदश १५ विकल्पाभवन्ति।पंचभिःदृश्यमाने६षड्विकल्पाभवन्ति । षड्भिरेकः१  
 एवंद्वाविंशतिः २२ तद्यथा । लभ्रेचंद्रेवारविभौमबुधगुरुभिःदृश्यमानेएको  
 योगः । रविभौमबुधसितैःद्वितीयः २ रविभौमबुधसौरैः तृतीयः ३ रविभौ-  
 मजीवसितैश्चतुर्थः ४ रविभौमजीवसौरैःपंचमः ५ रविभौमशुक्रसौरैःषष्ठः ६  
 रविबुधजीवशुक्रैःसप्तमः ७ रविबुधजीवसौरैरष्टमः ८ रविबुधशुक्रसौरैर्नवमः ९  
 रविजीवशुक्रसौरैर्दशमः १० भौमबुधजीवशुक्रैरेकादशः ११ भौमबुधजीव-  
 सौरैर्द्वादशः १२ भौमबुधशुक्रसौरैस्त्रयोदशः १३ भौमजीवशुक्रसौरैश्चतुर्दशः १४  
 बुधजीवशुक्रसौरैःपंचदशः १५ एवंचतुर्भिरपिविकल्पैःपंचदश । अथपंचविक-  
 ल्पाः । रविभौमबुधजीवशुक्रैरेकः १ रविभौमबुधजीवसौरैर्द्वितीयः २ रवि-  
 भौमबुधशुक्रसौरैस्तृतीयः ३ रविभौमजीवशुक्रसौरैश्चतुर्थः ४ रविबुधजीवशु-  
 क्रसौरैःपंचमः ५ भौमबुधजीवशुक्रसौरैःषष्ठः ६ एवंपंचविकल्पैःषट् । पूर्वोक्तैः  
 पंचदशभिःसहैकविंशतिः २१ रविभौमबुधजीवशुक्रसौरैःषड्भिरेकः१एवंद्वाविं-  
 शतिः २२ लमाचंद्राच्चैवमेवंचतुश्चत्वारिंशत् ४४ परमार्थेनैतद्योगद्वय-  
 मेव । तद्यथा । वर्गोत्तमगतेचंद्रेचतुराद्यैर्दृष्टेएकः । लभ्रेद्वितीयः । संख्याप्रदर्श-  
 नंगणितप्रदर्शनार्थम् । अत्रैवचंद्रमसोयदिराशौराशौवर्गोत्तमावस्थितिंनिरू-  
 प्यगणितंक्रियते तदैतेषामेवयोगानांचतुःषष्ठ्यधिकंशतद्वयंसंभवति । ए-  
 वंप्रत्येकस्मिन् लभ्रेवर्गोत्तमस्थेचतुःषष्ठ्यधिकमेवयोगशतद्वयम् । एवंचंद्रलग्न-  
 योयोगानामेकीकृतानांपंचशतान्यष्टाविंशत्यधिकानिभवन्ति । तथाचमांडव्यः ।  
 विलग्नभवनंगतेवल्युतेचवर्गोत्तमे चतुःप्रभृतिभिर्ग्रहैः शशिनिवासमालो-  
 किते ॥ संभवति पार्थिवः खलुकृपाणपाणीरणेकदाचिदपिबीक्षतेरिपुजनो न  
 यस्याननम् ॥ ३ ॥

यमेकुंभेर्केजेगविशशिनिनैरेवतनुगैर्नृथुक्सिहालिस्थैः शशि-  
 जगुरुवक्रैर्नृपतयः ॥ यमंदूतुंगेसवितृशशिजौषष्ठभवनेतुला  
 जेदुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्चनरपौ ॥ ४ ॥

अथशिखरिण्यापंचयोगानाह । यमेइति । यमेसौरैकुंभस्थेअर्केसूर्येऽजेमेषथे  
 सति । शशिनिचंद्रेगविवृषस्थितेतैरेवतनुगैः तेषांग्रहाणामेकतमेतनुगेलग्न-

स्थेनकेवलं यावच्छशिजगुरुवक्रैः बुधजीवभौमैः नृयुर्कसिहालिस्थैः मि-  
थुनहरिवृश्चिकस्थैः जातानृपतयोराजानोभवन्ति । चकारोत्रलुतोद्रष्टव्यः । त-  
त्रैतज्जातम् । सौरः कुम्भे । रविमेषे । चंद्रोवृषे । बुधोमिथुने । जीवः सिंहे ।  
भौमोवृश्चिके । ईदृश्याग्रहसंस्थायांकुम्भलग्नेएकोयोगः १ । मेषेद्वितीयः २ वृ-  
षे तृतीयः । यमेद्वितीति । सौरचंद्रौ तुंगेउच्चैनकेवलंयावदंगेतनौलग्नेइत्यर्थः ।  
सवितृशशिशौमूर्यबुधौषष्ठभवने कन्यायां तुलाजेंदुक्षेत्रैः तुलाप्रसिद्धः ।  
अजोमेषः । इंदुक्षेत्रंकर्कटः एतैः । यथासंख्यंससितकुजजीवैः शुक्रभौम-  
गुरुयुक्तैः नरपौद्गौराजयोगाविति । तत्रैतज्जातम् । तुलेसौरः । वृषेचंद्रः । क-  
न्यायामर्कबुधौ । तुलेशुक्रः । मेषेभौमः । कर्कटेजीवः । ईदृश्यां ग्रहसंस्थायांतु-  
लालग्नैएकोयोगः १ वृषेद्वितीयः २ पूर्वैस्त्रिभिः सहजपंच ५ । अत्रषष्ठ-  
भवनेषष्ठराशौलग्नात्केचिदिच्छंति । एतदयुक्तम् । यस्मात्तुलस्थेशुक्रंमीनस्थस्यार्क-  
स्यासंभवः । तथाचवादरायणः । तुललग्नसितसौरौमेषेभौमोगुरुः कुली-  
रगतः । कन्यायारविशशिशौजातो नृपतिर्वृषेसचंद्रेवा ॥ ४ ॥

कुजेतुंगेकेंद्रोर्द्धनुषियमलग्नेचकुपतिः पतिर्भूमेश्चान्यः क्षिति-  
सुतविलग्नसशशिनि ॥ सचंद्रे सौरैस्तेसुरपतिगुरौचापधरगे  
स्वतुंगस्थेभानाबुदयमुपयातेक्षितिपतिः ॥ ५ ॥

अथान्यद्राजयोगत्रयंशिखरिण्याह ॥ कुजेतुंगेकेंद्रोरिति । कुजेभौमेतुंगस्थे  
उच्चस्थेमकरगतेइत्यर्थः । अकेंद्रोः सूर्यशशिनोः धनुषिचापेस्थितयोः । य-  
मलग्नेयत्रतत्रराशौलग्नेशनैश्चरेलग्नगतेमकरस्थइत्यर्थः । एवंविधयोगेजातः  
कुपतिः भूमीशः नृपतीराजाभवति । यमलग्नेइति । मकरकुम्भयोः  
अन्यतमेलग्नैव्याख्यातम् । यमस्यलग्नेयमलग्नेइति । कैश्चित्त्यत्रतत्रराशाव-  
वस्थितेसौरैलग्नैइतिव्याख्यातम् । तच्चायुक्तम् । यस्माद्वादरायणः । लग्नेसौरस्तुं-  
गेभौमश्चंद्रादित्यौचापंप्राप्ताविति । अस्माकंप्रथमाव्याख्यासाध्वीप्रतिभाति ।  
यस्मान्मांडव्यः । आदित्यश्चनिशाकरश्चभवतोवागीशराशौयदासार्द्धभास्करि-  
णास्ववीर्यसहितः प्राप्तोमृगेमंगलः । प्राप्नोतिप्रभवंतदासमुकृतीक्ष्मापालच-  
डामणिस्त्रयंतिप्रतिपंथिनोरणमुखेयस्मात्कृतांतादिवा ॥ पतिर्भूमेश्चान्यइति । अ-  
स्मिन्नेवयोगेक्षितिसुतविलग्नैभौमेसशशिनिचंद्रयुक्तेलग्नैक्षितिसुतोंगारकः ।  
तस्मिन्स्वोच्चस्थेशशिनाचंद्रमसायुक्तैर्केधनुर्धरस्थेराजयोगः । तत्रैतज्जातमकर-  
लग्नेचंद्रांगारकयुतेधनुर्धरगतेकेंद्रोऽन्योद्वितीयोभूमेः पतिर्भवति राजाइत्यर्थः ।  
अत्रचवादरायणः । भानुश्चापेसेंदुभौमस्तुंगप्राप्तोलग्नैवास्यात् । सचंद्रेसौरैस्तइ-  
ति । सौरैशनैश्चरेसचंद्रेशशियुक्तेतथाभूतेस्तेसप्तमस्थानगते तथासुरपतिगुरौ



जीवेचापधरगेधनुर्धरस्थेभानौआदित्येस्वतुंगस्थेस्वोच्चैमेषप्राप्ते उदयलग्नमु-  
पयातेप्राप्तेजातः क्षितिपतीराजाभवति । तत्रैतज्जातम् । मेषलग्नैतत्रैवार्कः ।  
धन्विनिजीवः तुलागतौशशिसौरौ एवंविधयोगेजातोराजाभवत्येवराजयो-  
गास्त्रयः ॥ ५ ॥

वृषेसंदौलग्नसवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैःसुहज्जायाखस्थैर्भव-  
तिनियमान्मानवपतिः॥मृगेमंदेलग्नसहजरिपुधर्मव्ययगतैः  
शशांकाद्यैःख्यातःपृथुगुणयशाःपुंगलपतिः ॥ ६ ॥

अथशिखरिण्याराजयोगद्वयमाह ॥ वृषेसंदौलग्नइति । वृषेगविसंदौचं-  
द्रयुक्तेलग्नस्थिते । सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः मूर्यजीवसौरैः यथा-  
संख्यंसुहज्जायाखस्थैः चतुर्थसप्तमदशमस्थितैः नियमान्निश्चयान्मानव-  
पतिः राजाभवति । तत्रैतज्जातम् । वृषोलग्नस्तत्रैवचंद्रः । सि-  
हेऽर्कोवृश्चिकेजीवः । कुंभेसौरः । एवंविधयोगेजातोवश्यंराजाभवति ।  
मृगेमंदइति । मृगेमकरेलग्नैतत्रस्थेमंदेसौरैः । सहजरिपुधर्मव्ययगतैः  
तृतीयपष्ठनवमद्वादशस्थैः शशांकाद्यैः चंद्रांगारकबुधजीवैः । एवं  
विधयोगेजातः ख्यातः सर्वत्रविदितः । पृथुगुणयशाः गुणाः शौर्या-  
दयः विस्तीर्णगुणकीर्तिः । पुंगलपतिः मनुष्यनाथोभवति । ननुशशांकाद्यै-  
रित्युक्तं शुक्रःकगच्छतु । उच्यते । यथासंख्यात्पंचमस्थानस्थाविद्यमानत्वात् ।  
शुक्रस्यादित्यपंचमत्वादनवकाशः । तत्रैतज्जातम् । मकरोलग्नस्तत्रैवसौरः ।  
मीनेचंद्रः । मिथुनेभौमः । कन्यायांबुधः । धन्विनिजीवः । शुक्रार्कोयत्रत-  
त्रस्थौ । एवंविधयोगेजातोराजाभवति । पृथुगुणयशाः । एवमत्रराजयोगौद्वौ ।  
तथाचमांडव्यः । मृगेलग्नसौरस्तिमियुगगतः शीतकिरणः कुजोयुग्मेनार्या-  
शशभृतसुतश्चापधरगः । गुरुदैत्येज्यार्कावभिमतगतौचारवशतः प्रसूतौय-  
स्यासौभवतिनरपः शक्रसदृशः ॥ ६ ॥

हयेसंदौजीवमृगमुखगतेभूमितनयेस्वतुंगस्थौलग्नभृगुजशशि-  
जावत्रनृपती ॥ सुतस्थौवक्रार्कीगुरुशशिसिताश्वापिहि-  
बुकेबुधेकन्यालग्नैर्भवतिहिनृपोन्योपिगुणवान् ॥ ७ ॥

अथशिखरिण्याराजयोगत्रयमाह । हयेसंदाविति । हयेधनुषिजीवेगुरौसं-  
दौसचंद्रेस्थिते । भूमितनयेंगारकेमृगमुखगतेमकरस्थे । मृगार्द्धपूर्वोमकरोमृ-  
गार्द्धइतिवचनात् । भृगुजशशिशौशुक्रबुधौस्वतुंगस्थौस्वोच्चप्राप्तौयदिलग्नैर्भव-

१ आदिस्थपंचमत्वादनवकाशः इतिपाठोद्वष्टव्यः तेन आदिस्थाच्चंद्रात्शुक्रस्ययथासं-  
ख्येनपंचमत्वम् ॥

तस्तदात्रास्मिन्योगद्वयेजातौराजानौभवतः । राजयोगद्वयमेतत् । तत्रैतज्जातम् ।  
 बृहस्पतौसचंद्रेधन्विगतेमकरगतेभौमेएवंविधायांग्रहसंस्थायांमीनलग्नसशुक्रेए-  
 कोयोगः । कन्यालग्नसबुधेद्वितीयोयोगः । सुतस्याविति । वक्रार्कीभौमसौ-  
 रौसुतस्थौपंचमस्थानगतौ । तथागुरुशशिसिताः जीवचंद्रशुक्राह्निबुकेचतुर्थे  
 स्थानेबुधेकन्यागतेलग्नजातौऽन्योपरोपिनृपोराजागुणवान्भवति । तत्रैतज्जातम् ।  
 कन्यालग्नंतत्रैवबुधः । मकरस्थौशनिभौमौधनुर्धरस्थाजीवचंद्रशुक्राः यदाभवं-  
 ति तदाजातौराजागुणवांश्चभवति । एवंराजयोगास्त्रयः ॥ ७ ॥

झषेसंदौलग्नघटमृगमृगेंद्रेषुसहितैर्यमाराकैर्यौभूत्सखलुमनु-  
 जः शास्तिवसुधाम् ॥ अजेसारमूतौशशिशुहृगतेचामरगुरौसु-  
 रेज्येवालग्नधरणिपतिरन्योपिगुणवान् ॥ ८ ॥

अथशिखरिण्याराजयोगत्रयमाह ॥ झषेसंदेविति । झषेमीनेसंदौसचंद्रेलग्न-  
 मीनलग्नसचंद्रे घटमृगमृगेंद्रेषुसहितैर्यमाराकैः । घटः कुंभः । मृगोमकरः ।  
 मृगेंद्रः सिंहः । तेषुयथासंख्यंयमाराकैः स्थितैः । तत्रैतज्जातम् । मीनोलग्नस्त-  
 त्रैवचंद्रःस्थितः । कुंभेसौरः । मकरेभौमः । सिंहोर्कः । एवंविधेयोगेजातः ।  
 यःउत्पन्नः समनुजोमनुष्यःशास्तिवसुधांभूमिंपरिपालयति । राजाभवती-  
 त्यर्थः । खलुशब्दाद्वाक्यालंकारः । अजेसारइति । अजेभेषसारेसभौमे ।  
 मूतौलग्नस्थितेतथाचामरगुरौ जीवेशशिशुहृगतेकर्कटस्थेजातौनृपोराजागुण-  
 वान्भवति । अथवासुरेज्येबृहस्पतौकर्कटस्थेलग्नगतेभौमेभेषस्थेजातौन्यःपरो  
 राजागुणवांश्चभवति । एवमत्रराजयोगास्त्रयः ॥ ८ ॥

कर्किणिलग्नतत्स्थेजीवेचंद्रासितज्ञैरायप्रातैः ॥

मेषगतैर्केजातंविद्याद्विक्रमयुक्तंपृथ्वीनाथम् ॥ ९ ॥

अथराजयोगंविद्युन्मालयाह । कर्किणीति । कर्किणिलग्नकर्कटकेलग्नतत्स्थेत  
 त्रैवव्यवस्थितेजीवेगुरौ । चंद्रासितज्ञैः शशिशुक्रबुधैः आयप्रातैरेकादशस्था-  
 नस्थैः मेषगतैर्के आदित्येमेषस्थेजातंसंभूतंपृथ्वीनाथं भूमिपतिं विक्रमयुक्तं  
 प्रतापसहितंविद्याजानीयात् ॥ ९ ॥

मृगमुखेर्कतनयस्तनुसंस्थःक्रियकुलीरहरयोऽधिपयुक्ताः ॥

मिथुनतौलिसहितौबुधशुक्रौयदितदापृथुयशाःपृथिवीशः ॥ १० ॥

अथद्रुतविलंबितेनराजयोगमाह ॥ मृगमुखेति । अर्कतनयः सौरः । मृग-  
 मुखेमकरगतः सचतनुसंस्थोलग्नप्रातः । तथाक्रियकुलीरहरयः मेषकर्किसिं



हाः अधिपैः स्वनाथैः युक्ताःसहिताः । तथामेषेभौमः । कर्कटेचंद्रः । सिं-  
हेसूर्यइत्यर्थः । तथाबुधशुक्रौज्ञासितौयथासंख्यंमिथुनतौलिसहितौ । तथामिथुने  
बुधः । तुलेशुक्रः । एवंविधोयदियोगोभवति तदाजातः पृथुयशाः वि-  
स्तीर्णकीर्तिः पृथिवीशोराजाभवति । तत्रैतज्जातम् । मकरोलग्नस्तत्रैवसौरः ।  
मेषेभौमःकर्कटेचंद्रः । सिंहैर्ऋकः । मिथुनेबुधः । तुलेशुक्रः । एवंविधायांग्रहसं-  
स्थायांयत्रतत्रस्थेजीवेयदिजातोभवति । तदापृथिवीशःपृथुयशाभवति ॥ १० ॥

स्वोच्चसंस्थेबुधेलग्नभृगौमेपूरणाश्रिते ॥

सर्जीवेस्तेनिशानाथेराजामंदारयोःसुते ॥ ११ ॥

अथराजयोगमनुब्रूमाह । स्वोच्चेति । बुधेस्वोच्चसंस्थेकन्यागतेलग्नगे । भृगौ  
शुक्रेमेपूरणाश्रितेदशमस्थानस्थिते । निशानाथेचंद्रेसर्जीवेबृहस्पतिसंयुक्तेऽस्ते  
सप्तमस्थानगते मंदारयोःशनिभौमयोः सुतेपंचमेस्थितयोः जातोराजाभव-  
ति । तत्रैतज्जातम् । कन्यालग्नसंबुधेमिथुनगतेशुक्रेगुरौसचंद्रेमीनस्थे । मकरस्थ-  
योः शनिभौमयोः जातोराजाभवति । एतेराजयोगाः प्रोक्ताः ॥ ११ ॥

अपिखलकुलजातामानवाराज्यभाजः किमुतनृपकुलोत्थाः  
प्रोक्तभूपालयोगैः ॥ नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवावक्ष्यमाणैर्भ-  
वतिनृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ १२ ॥

एतेष्वराजवंशतोपिजातोराजाभवति । वक्ष्यमाणेषुतुराजवंशजएवराजाभ-  
वति । तच्चमालिन्याह ॥ अपीति । अपिशब्दःसंभावनायाम् । प्रोक्तभूपालयोगैः  
कथितराजयोगैः खलकुलजातानीचवंशोद्भवाअपिमानवाःपुरुषाः राज्य-  
भाजः नृपाःभवन्ति । किमुतकिंपुनः नृपकुलोत्थाः राजवंशसंभूताः । तेऽ-  
वश्यंराजानोभवन्ति । वक्ष्यमाणैःपुनः योगैःनृपतिकुलसमुत्थाः राजवंशजाः  
पार्थिवाः राजानोभवन्ति । तेषुवक्ष्यमाणेषुअभूपालवंशजःअराजपुत्रः नृपति-  
तुल्योभवति राजसमइत्यर्थः । नराजा किमुतसंभावनायाम् ॥ १२ ॥

उच्चस्वत्रिकोणगैर्वलस्थैरुयाद्यैर्भूपतिवंशजानरेंद्राः ॥

पंचादिभिरन्यवंशजाताहीनैर्वित्तयुतानभूमिपालाः ॥ १३ ॥

अथराजयोगमौपच्छंदासिकेनाह ॥ उच्चस्वत्रिकोणगैरिति । व्याधैः व्यादि-  
भिर्ग्रहैःस्वोच्चगतैः स्वत्रिकोणगतैःवलस्थैः कालादिवलोपेतैः जाताभूप-  
तिवंशजाः नृपकुलजातानरेंद्राराजानोभवन्ति । आदिग्रहणाच्चतुर्भिरपिपंचा-  
दिभिरन्यवंशजाताइति । पंचादिभिःग्रहैःस्वोच्चस्थैः मूलत्रिकोणगैर्वा । अन्य

वंशजाताहीनकुलजाअपिराजानोभवन्ति । आदिग्रहणात्पद्भिःसप्तभिरपिहीनैर्वि-  
त्तयुताइति । त्रिभिरुच्चस्थैः मूलत्रिकोणस्थैर्वाहीनवलैः । कालादिवलरहितैः ।  
राजकुलजाअपिराजानोभवन्ति । किंतुराजतुल्याभवन्ति । एतैर्यथोक्तैःहीनैः  
वित्तयुताःसधनाभवन्ति । नभूमिपालाः राजानः । एतदुक्तंभवति । एकेनग्रहेण  
द्वाभ्यांवास्वोच्चगाम्भ्यांमूलत्रिकोणस्थाभ्यांवाराजकुलजोपिराजानभवति । किं  
तुधनवान् । एवंत्रिभिश्चतुर्भिर्वाऽन्यवंशजातावित्तयुताभवन्ति । नराजानः । अत्रय-  
दिग्रहाः यथाभिहितसंख्याउच्चस्थाः नभवन्ति । स्वोच्चगामूलत्रिकोणस्थैः सहसं-  
ख्यांसंपादयन्ति । तथापियथोक्तफलदाभवन्ति । अथवोच्चगताः केवलंस्वत्रि-  
कोणगतावा तथापि ॥ १३ ॥

लेखास्थैर्केजेंदौलग्नेभौमेस्वोच्चेकुंभेमंदे ॥

चापप्राप्तेजीवेराज्ञः पुत्रंविद्यात्पृथ्वीनाथम् ॥ १४ ॥

अथान्यद्राजयोगंविद्युन्मालयाह ॥ लेखास्थेइति । लेखाः यांतिष्ठतीतिलेखा-  
स्थः तस्मिन् लेखाशब्देनोदयउच्यते । अर्केसूर्येतत्स्थेलेखास्थेभूवृत्तादधोदि-  
तेनकेवलंयावदजेमेषस्थेतत्रैवमेपलग्नेइदौचंद्रेस्थितेभौमेकुजेस्वोच्चेमकरस्थेमंदे  
सौरैकुंभस्थे । जीवेगुरौचापप्राप्तेधनुर्धरगते एवंविधयोगेजातोराज्ञः पुत्रो नृप-  
सुतोयदिभवति तदातंभूमेर्नाथंविद्याजानीयात् । अन्यकुलजोधनवान् । अत्रके-  
चिल्लग्रस्थेर्केऽजेंदौलग्नेइतिपठन्ति । आदित्येलेखास्थेसतिसिंहगतेसूर्येचंद्रेमेषस्थे-  
मेतदपिनकश्चिद्विरोधोराजयोगएवभवति ॥ १४ ॥

स्वर्क्षेऽशुक्रेपातालस्थेधर्मस्थानंप्राप्तेचंद्रे ॥

दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैःशेषैर्जातःस्वामीभूमेः ॥ १५ ॥

अन्यद्राजयोगंविद्युन्मालयाह ॥ स्वर्क्षेइति । स्वर्क्षेसितेआत्मीयराशौस्थिते  
वृषतुल्योरन्यतमस्थेनकेवलंयावत्पातालस्थेलग्न्याच्चतुर्थेचंद्रेधर्मस्थानप्राप्तेनवम-  
गतेशेषैरन्यग्रहैः रविभौमबुधगुरुसौरैः । दुश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः तृतीयलग्नै-  
कादशस्थानस्थैः जातोभूमेः पृथिव्याः स्वाम्यधिपतिर्भवति । तत्रैतज्जातम् ।  
कुंभेलग्नौ वृषेशुक्रः तुलेचंद्रः शेषाग्रहायथासंभवंमेषकुंभधन्विस्थाः । एवंवि-  
धयोगेजातोराजपुत्रोराजाभवति । अन्यकुलजोधनवान् । अथवाकर्कटोलमः  
तुलेशुक्रः मीनेचंद्रः । शेषाग्रहायथासंभवंकन्याकर्कटवृषस्थाः एवंविधयोगेजातो  
राजपुत्रोराजाभवत्यन्यकुलजोधनवान् ॥ १५ ॥

सौम्येवीर्ययुतेतनुयुक्तेवीर्याढ्येचशुभेशुभयाते ॥

धर्मार्थोपचयेष्ववशेषैर्धर्मात्मानृपजःपृथिवीशः ॥ १६ ॥



अथान्यद्राजयोगं नवमालिकयाह ॥ सौम्ये बुधे वीर्ययुक्ते कालादिवलैः यु-  
क्ते तथाभूते तनुयुक्ते लग्नस्थे शुभे शुभयाते । शुभे शुभग्रहे गुरुसितयोरन्यतमे यथा-  
संभवं वीर्याद्व्येच । सवलेशुभयाते धर्मस्थानगते नवमगत इत्यर्थः । शुभे सुखात्  
इति पठन्ति । चतुर्थस्थानस्थ इत्यर्थः । अवशेषैः परिशिष्टग्रहैः यथासंभवं धर्मार्थो-  
पचये पुनवमद्वितीयत्रिपदे कादशदशमानामन्यतमस्थानस्थितैः । एवं विधे योगे  
जातो नृपजो राजपुत्रो राजा भवति । धर्मात्मा च । अन्यकुलजो धनवान् ॥ १६ ॥

वृषोदये मूर्तिधनारिलाभगैः शशांकजीवार्कसुतापरैर्नृपः ॥

सुखे गुरौ खेशशितीक्ष्णदीधित्यमोदये लाभगतैर्नृपोपरैः ॥ १७ ॥

अथान्यद्राजयोगद्वयं वंशस्थेनाह ॥ वृषोदय इति । वृषोदये वृषलग्ने तथा श-  
शांकजीवार्कसुतापरैः चंद्रगुरुसौरैरपरैश्चरविकुजबुधसितैः यथासंख्यं मूर्ति-  
धनारिलाभगैः । लग्नद्वितीयपष्ठैकादशस्थैः जातो नृपो राजा भवति । तत्रैत-  
ज्जातम् । वृषलग्ने सचंद्रमिथुनस्थे जीवे । तुलास्थे सौरैः । मीनस्थैः रविकुजबु-  
धसितैः जातो राजपुत्रो राजा भवति । अन्यकुलजो धनवान् । सुखे गुराविति ।  
गुरौ जीवे सुखे चतुर्थस्थानस्थे खेदशमेशशितीक्ष्णदीधित्यौ । चंद्रार्कौ यमोदये शनै-  
श्चरलग्नगते । अपरैरन्यैर्भौमबुधशुक्रैः लाभगतैरेकादशस्थैः जातो नृपो रा-  
जा भवति । तत्रैतज्जातम् । शनैश्चरौ लग्ने चतुर्थे जीवः । दशमे सूर्यचंद्रौ । भौमबुध-  
शुक्रा एकादशे । एवं विधे योगे जातो राजपुत्रो राजा भवति । अन्यकुलजो धन-  
वान् भवति ॥ १७ ॥

मेघूरणाय तनुगाः शशिमंदजीवाज्ञारौ धने सितरवीहिबुके नरे-  
द्रम् ॥ वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या होरा सुखास्तशुभ-  
खातिगताः प्रजेशम् ॥ १८ ॥

अथान्यद्राजयोगद्वयं वंशंतिलकेनाह ॥ मेघूरणाय तनुगा इति । शशिमंदजी-  
वाः चंद्रसौरगुरवः यथासंख्यं मेघूरणाय तनुगाः दशमैकादशलग्नस्थाः ।  
ज्ञारौ बुधभौमौ धने द्वितीयस्थाने । सितरवीशुक्रार्कौ हिबुके ४ चतुर्थे । एवं  
विधे योगे जातो नरेन्द्रो नृपो भवति । तत्रैतज्जातम् । दशमे चंद्रः । एकादशे सौरः ।  
लग्ने जीवः । द्वितीये बुधभौमौ । चतुर्थे शुक्रार्कौ । एवं विधे योगे जातो राजपु-  
त्रो राजा भवत्यन्यकुलजो धनवान् । वक्रासिताविति । वक्रासितौ भौमसौरौ ।  
शशिसुरेज्यसितार्कसौम्याः चंद्रगुरुशुक्रसूर्यबुधाः यथासंख्यं होरा सुखास्त-  
शुभखातिगताः लग्नचतुर्थसप्तमनवमदशमैकादशस्थाः भवन्ति । तदा जातः  
प्रजेशो राजा भवति । तत्रैतज्जातम् । भौमसौरौ लग्नगतौ । चतुर्थे चंद्रः । सप्तमे

जीवः । नवमेशुकः । दशमसूर्यः । एकादशेबुधः । एवंविधयोगेजातोराजपुत्रो  
राजाभवत्यन्यकुलजोधनवान् ॥ १८ ॥

कर्मलग्नयुतपाकदशायांराज्यलब्धिरथवाप्रवलस्य ॥

शत्रुनीचगृहयातदशायांछिद्रसंश्रयदशापरिकल्प्या ॥ १९ ॥

अथराजयोगजातस्यकस्मिन्कालेराज्यावाप्तिर्भविष्यतीति तज्ज्ञानंस्वागत-  
याह ॥ कर्मलग्नयुतपाकदशायामिति । राजयोगकर्तृणांग्रहाणामध्याद्योग्रहः  
कर्मणिलभादशमेस्थितः । यश्चराजयोगकर्तृणांग्रहाणामध्याद्योग्रहः लग्नयु-  
तोजन्मलग्नस्थः । तत्पाकदशायां तस्यसंबन्धिनीयापाकदशांतर्दशावाभवति ।  
तत्रतस्यराज्यलब्धिर्भवति । अथलग्नदशमयोः द्वयोरपिग्रहौभवतः । तदा  
तयोर्योबलवांस्तस्यदशायामंतर्दशाकालेराज्यलब्धिः । अथतत्रबह्वोयदाभवं-  
ति तदाप्रवलस्यसर्वोत्तमबलस्यांतर्दशाकाले । अथवाप्रवलस्येति । अथलग्नद-  
शमौयदाशून्यौभवतस्तदाजन्मनियःप्रवलः सर्वोत्तमबलस्तस्यांतर्दशाकाले  
एवराज्यदःस्यात् । बहुष्वंतर्दशासुयस्मिन्नंतर्दशाकालेचारवशादतिबलवत्त्वंसं-  
भवति तस्यामेवांतर्दशायांराज्यप्रदोभवति । शत्रुनीचगृहेति । लब्धराज्य-  
स्यापिजन्मकालेशत्रुक्षेत्रस्थेननीचक्षेत्रस्थेनवाग्रहेणयां तर्दशादत्तातस्यांतस्मिन्ब-  
लवतिराज्यहरणंवाच्यम् । यतःसाछिद्रदशाविवलेऽपितस्मिन्नापद्रवति । साच  
संश्रयदशापरिकल्प्या । तस्यामंतर्दशायांसंश्रयकार्यम् । दैवयुक्तनृपसंश्रयगुणात्त-  
न्मोक्षोपि । वक्ष्यतिच यात्रायाम् । अरिकोपहतदशायांजन्मोदयनाथशत्रुपाके  
च । स्वदेशेशकारकदशाः संश्रयणीयोनरेन्द्रइति ॥ अत्रचभगवान्गार्गिः ।  
लग्नगःकर्मगोवास्यादथवाप्रबलोपियः । सस्यात्स्वांतर्दशाकालेराज्यदःप्रव-  
लोयदा ॥ नीचारिगृहसंस्थस्यदशायांप्रवलस्यच । च्युतिर्वलविहीनस्यतन्मोक्षः  
परसंश्रयादिति ॥ १९ ॥

गुरुसितबुधलग्नेसप्तमस्थेर्कपुत्रेवियतिदिवसनाथेभोगिनांज-  
न्मविद्यात् ॥ शुभवलयुतकेंद्रैः क्रूरमस्थैश्चपापैर्ब्रजतिशवरद-  
स्युस्वामितामर्थभाक्च ॥ २० ॥

॥ इतिराजयोगाध्यायएकादशः ॥ ११ ॥

अथभोगिनांशवरदस्युस्वामिनांचजन्मज्ञानंमालिन्याह ॥ गुरुसितबुधलग्ने  
इति । गुरुसितबुधाः । जीवशुक्रसौम्याः । एषामन्यतमलग्नगते अर्कपुत्रेसौरे  
सप्तमस्थे दिवसनाथेसूर्ये वियतिदशमस्थानगते एवंविधयोगेभोगिनां



भोगवतां जन्मविद्याज्जानीयात् । एवंविधे योगे जातः सदैव भोगवान् भवति । तस्यार्थविहीनस्यापि यतः कुतश्चिद्भोगावाप्तिर्भवति । रविबुधसितलग्ने इत्यत्र कैश्चित् रविबुधसितानां संबंधिलग्न इति व्याख्यातम् । सिंहवृषतुलाभिथुनकन्यालग्नेष्विति । यतो दशमस्थे केंद्रे बुधसितयोरवस्थानं न संभवति । आचार्येण वराहमिहिरेण पूर्वशास्त्रानुसारेणायं योगः कृतः । अत्र च भगवान् गार्गिः । जीवज्ञभार्गवैर्लग्ने सप्तमस्थे केंद्रं दत्ते । दशमस्थे रवौ जातो भोगवान् पुरुषो भवेत् ॥ शुभबलयुतकेंद्रैरिति । शुभग्रहसंबन्धिनो राशयः । ते च सबलायस्य केंद्रगता भवन्ति । तैस्तथा भूतैस्तथा पापैः क्रूरग्रहैः क्रूरमस्थैः पापराश्याभितैः यस्य जन्म भवति । स शवराणां पुलिदानां दस्यूनां चोराणां स्वामित्वं व्रजति गच्छति । अर्थभाग्यवान् धनवांश्च भवति । शुभबलयुतकेंद्रैरिति । अत्र शुभग्रहैः बलयुतैः केंद्रगतैरिति कैश्चिद्व्याख्यातम् । तच्चायुक्तम् । यस्माद्भगवान् गार्गिः । पापक्षेत्रगतैः पापैः केंद्रस्थैः सौम्यराशिभिः । सबलैर्यस्य जन्म स्यात् स्यादसौ दस्युनायक इति ॥ २० ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां बृहज्जातकविवृतौ राजयोगाध्याय एकादशः ॥ ११ ॥

नवदिग्वसवस्त्रिकाग्निवेदैर्गुणिता द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः ॥

यवनैस्त्रिगुणाहिषट्शती साकथिता विस्तरतोत्र तत्समाः स्युः ॥ १॥

अथातो नाभसयोगाध्यायो व्याख्यायते । नाभसयोगानां चत्वारो विकल्पाः । तत्राकृतियोगा एको विकल्पः । आकृतियोगाः संख्यायोगाश्च विकल्पद्वयम् । आकृतियोगाः संख्यायोगा आश्रययोगाश्च विकल्पत्रयम् । आकृतियोगाः संख्यायोगा आश्रययोगा दलयोगौ चेति विकल्पचतुष्टयम् । तत्र विंशतिराकृतियोगाः । सप्तसंख्यायोगाः । त्रय आश्रययोगाः । द्वौ दलयोगौ । तत्र द्वित्रिचतुर्विकल्पजानां योगानां संख्याज्ञानमौपच्छंदसिकेनाह ॥ नवदिगिति । नवप्रसिद्धाः दिक्छन्देन दश उच्यन्ते । वसवोष्टौ एते यथा संख्यं त्रिकाग्निवेदैः गुणिताः त्रिकशब्देन त्रय एव उच्यन्ते । अग्निशब्देन त्रयः । वेदाश्चत्वारः ४ एतैर्गुणिताः । तद्यथानवदिग्वसवः ९ । १० । ८ एते यथा संख्यं त्रिकाग्निवेदैः ३ । ३ । ४ एतैर्गुणिता जाता २७ । ३० । ३२ एते यथा संख्यं द्वित्रिचतुर्विकल्पजा भवन्ति । एतदुक्तं भवति । आकृतियोगा विंशतिः । संख्यायोगाः सप्त एवमाकृतिसंख्या विकल्पद्वयेन सप्तविंशतियोगाः भवन्ति । आश्रययोगास्त्रयः । आकृतिसंख्या आश्रयकृतेन विकल्पत्रयेण त्रिंशत् ३० दलयोगौ द्वौ आकृतिसंख्या आश्रयदलयोगकृतेन विकल्पचतुष्केण द्वात्रिंशत् ३२ । एवं द्वित्रिचतुर्विकल्पजा योगाः स्युः भवेयुरिति । यवनैस्त्रिगुणाहीति । पुराणयवनैः त्रिगुणाहिषट्शती कथिता षण्णांशतानां समाहारः षट्शती सा च त्रिगुणा अष्टादशयोगशतान्यभिहिता-

नीत्यर्थः १८०० । ननुस्फुजिध्वजेनकिमुक्तम् । उच्यते । नाभसयोगानामान्त्यम् ।  
 तथात्रतद्वाक्यम् । संस्थानसादृश्यमनंतकस्याद्रव्याणिनानाप्रकृतीनिदृष्टेति ।  
 कथंपुराणयवनैरष्टादशशतान्यभिहितानि । उच्यंते । आकृतियोगान्त्रयोविंशति-  
 स्तैरभिहिताः । संख्यायोगानां सप्तविंशत्यधिकं शतं भवति । एवं सार्द्धं शतं भवति ।  
 तच्चैकैकं राशिलग्नगतमधिकृत्योक्तम् । तस्माद्भग्नद्वादशकेनाष्टादशयोगशता-  
 निभवंति । यस्मात्सार्द्धं शतं द्वादशहतमष्टादशशतानि भवंति । एतेषामुत्पत्ति-  
 मध्यायांतेप्रदर्शयिष्यामः । विदिताध्यायार्थस्य सुखावबोधत्वात् । एवं यवनैस्त्रि-  
 गुणाष्टादशतीविस्तरतः कथितोक्ता । अत्रास्मिच्छास्त्रेतत्समासः । तत्संक्षेपः  
 क्रियते । विस्तरस्य समासोभिधीयतइति । पूर्वप्रदर्शिताद्वात्रिंशदेवाभिधीयंते ।  
 तत्फलेष्वन्यफलानां समानत्वात् । द्वात्रिंशत्स्वेवयोगेष्वष्टादशयोगशतान्य-  
 तर्भवन्तीति ॥ १ ॥

रज्जुर्मुशलं नलश्चराद्यैः सत्यश्चाश्रयजाजगादयोगान् ॥

कैद्वैः सदसद्युतैर्दलाख्यौ स्रक् सपौकथितौ पराशरेण ॥ २ ॥

अथाश्रययोगत्रयंदलयोगद्वयंचौपच्छंदसिकेनाह ॥ रज्जुर्मुशलमिति ।  
 चराद्यैः चरस्थिरद्विस्वभावराशिग्रहसंयुक्तैः यथासंख्यं रज्जुर्मुशलं नलश्चेति  
 योगत्रयं भवति । तद्यथैकस्मिंश्चरराशौ चरराशिद्वये चरराशिद्वये च-  
 रराशिचतुष्के वा यदा सवैग्रहाः भवंति । स्थिरराशयो द्विस्वभावराशयश्च स-  
 वेशून्या भवंति । तदारज्जुर्नामयोगो भवति । एवमेकस्मिन् स्थिरराशौ राशि-  
 द्वये राशिद्वये राशिचतुष्के वा यदा सवैग्रहाः भवंति चरराशयो द्विस्वभावराश-  
 यश्च शून्या भवंति । तदामुशलं नामयोगो भवति । एवमेकस्मिन् द्विस्वभावराशौ  
 राशिद्वये राशिद्वये राशिचतुष्के वा सवैग्रहाः भवंति । चरराशयः स्थिरराशयश्च  
 शून्या भवंति । तदानलाख्यो योगो भवति । एतानां श्रयजां स्त्रीन्योगान्सत्या-  
 चार्यो जगाद उक्तवान् । केचित्सत्यस्त्वाश्रयजानिहाहयोगानिति पठन्ति ।  
 इहास्मिन्प्रकरणे आहोक्तवानिति । तथाच सत्यः । सर्वेचरेपुराशिपुयदास्थिता  
 योगग्राहतरज्जुम् । अनयप्रियस्य सततं विदेशवासार्थयुक्तस्य ॥ सर्वेस्थिरेपुराशिपु  
 यदास्थितामुशलमाहतं योगम् । जन्मनिकर्मकराणां युक्तानामर्थमानाभ्याम् ॥ द्वि-  
 शरीरे पुनलइतियोगोहीनातिरिक्तदेहानाम् । निपुणानां पुरुषाणां धनसंचयभोगिनां  
 भवति ॥ अत्रकैश्चिद्वाख्यातम् । चरराशिचतुष्के यदा सवैग्रहाः भवंति तदारज्जुः  
 स्थिरराशिचतुष्के मुशलं द्विःस्वभावराशिचतुष्के नलइति । तच्चायुक्तम् । यस्माद्भग-  
 वान्गार्गिः ॥ एकोद्वौवात्रयः सर्वेचरायुक्ता यदाग्रहैः । चरयोगस्तदारज्जुः शीर्ष्याणां  
 जन्मदोभवेत् ॥ स्थिराश्चेन्मुशलं नाममानिनां जन्मकृन्तृणाम् । द्विस्वभावो नला-



ख्यस्तु धनिनां परिकीर्तितः ॥ एवमाश्रययोगत्रयं व्याख्यातं सत्यमतेन । तथा च स-  
त्यः । चरराशिगैर्ग्रहेन्द्रैरज्जुः स्थिरराशिगैस्तथा मुशलम् । द्विशरीरगतैर्योगो न सं-  
ज्ञो मुनिभिरुद्दिष्टः ॥ अथ दलयोगद्वयमुच्यते । केंद्रैः सदसद्युतैरिति । केंद्रैः यथा सं-  
ख्यं सदसद्युतैः सद्ग्रहैः सौम्यैर्युतैः दलाख्यो दलयोगः स्रग्मालानामभवति ।  
तथा केंद्रैरसद्ग्रहैः पापग्रहयुक्तैः दलयोगः सर्पोनामयोगो भवति । एतदुक्तं भव-  
ति । यिपुते पुत्रिपुकेन्द्रे पुसौम्यग्रहाः बुधगुरुशुक्राः यदा भवंति । न कस्मिन्कश्चित्के-  
न्द्रे पापो भवति तदा स्रग्माला योगो भवति । अथ ये पुते पुत्रिपुकेन्द्रे पुपापाः सूर्यभौम-  
सौराः भवंति । न कस्मिन्कश्चित्केन्द्रे भवति सौम्यग्रहः । तदा सर्पोनामयोगो भवति ।  
नन्वत्रयोगद्वये केंद्रैः सदसद्युतैर्दलाख्यावित्युक्त्वा त्रिपुकिमिति व्याख्यातम् । य-  
स्माच्छुक्लपक्षकृष्णपक्षयोश्चन्द्रस्य सौम्यत्वं पापत्वं च संभवति । एवं स्थिते यदा सौ-  
म्याक्रांतिपुत्रिपुकेन्द्रे पुक्षीणश्चन्द्रमायदा चतुर्थो भवति । अथ वा पापाक्रांतिपुत्रिपुकेन्द्रे-  
पुक्षीणश्चन्द्रमायदा चतुर्थो भवति । तदा पितृव्यसर्पो योगो भवतः । तच्चतुर्पुकेन्द्रे पु-  
किमिति न व्याख्यातम् । उच्यते नैवम् । यस्मादनैव स्वल्पजातके उक्तम् । केंद्रत्रयगैः  
पापतरेर्दलाख्यावहिश्च माला च । अत्र सौम्यास्त्रयः पापास्त्रय इति कथं ज्ञायते ।  
यथानयोर्द्वयोर्मध्ये चन्द्रमास्तृतीयो न भवति । उच्यते । भगवता गार्गिणोक्तम् ।  
त्रिकेंद्रगैर्यमाराकैः सर्पो दुःखितजन्मदः । भोगिजन्मप्रदामालातद्वज्जीवसिते-  
दुजैः । स्रग्मालाः पापवर्जितकेन्द्रे पु सर्पः सौम्यवर्जिते प्वितिकथं ज्ञायते । उच्यते ।  
वादरायणेनोक्तम् । केंद्रेष्वपापेषु सितज्ञजीवैः केंद्रत्रिसंस्थैः कथयंति मालाम् । सर्प-  
स्त्वसौम्यैश्च यमारासूर्यैर्योगाविमौ द्वौ कथितौ दलाख्यौ ॥ एतौ दलयोगौ द्वौ स-  
र्वसर्पो कथितौ पराशरेणोक्तौ । न त्वन्यैरप्युक्तौ । उच्यते । अन्यैरुक्तौ अन्यैर्नोक्तौ ।  
पराशरेणोक्ताविति स्वशास्त्रे वराहमिहिरेणोक्तौ । तथा च मणित्थः । केंद्रत्रयगतैः  
पापैः सौम्यैर्वा दलसंज्ञितौ । द्वौ योगौ सर्पमालाख्यौ विनष्टेष्टफलप्रदौ ॥ एवमा-  
श्रययोगत्रयमपि अन्यैरुक्तमन्यैर्नोक्तम् । अन्यैरुक्तत्वाद् वराहमिहिरेण शास्त्रे संगृही-  
तम् । एवं दलयोगद्वयं व्याख्यातम् ॥ २ ॥

योगात्रजं त्याश्रयजाः समत्वं यवाब्जवज्रांडजगोलकाद्यैः ॥

केंद्रोपगैः प्रोक्तफलौ दलाख्यावित्याहुरन्येन पृथक्फलौ तौ ॥ ३ ॥

अथान्यैराचार्यैरेनकारणेनाश्रययोगत्रयं दलयोगद्वयं च नाख्यातम् तत्कारणमु-  
पजातिकयाह ॥ योगात्रजंतीति । आश्रयजायोगारज्जुर्मुशलनलाख्या आकृति-  
योगैः । यवाब्जवज्रांडकगोलकाद्यैः यवपद्मवज्रविहंगगोलकैः । आदिग्रहणा-  
द्गदाशकटाभ्यां च तथा संख्यायोगैः गोलकाद्यैः गोलकयुगशूलकेदारैः संख्या-  
योगैः । आश्रयजायोगास्तु ल्यतां समत्वं व्रजंतीत्यतो न्यैर्नोक्ताः । तद्यतिरेकेणा-

प्याश्रययोगानामवकाशोस्तीतिवराहमिहिरेणोक्ताः । यैश्चयोगैःसमतांयास्यं-  
ति । यत्रचैतेषामनवकाशस्तदध्यायांतव्याख्यास्यामः । केंद्रोपगैःप्रोक्तफला-  
विति । दलाख्यौदलयोगौद्वौकेंद्रोपगैः प्रोक्तफलौकथितफलौकेंद्रोपगतैः ग्रहैः  
प्रोक्तेफलेययोः । केंद्रत्रयगैःकेंद्रस्थानांशुभग्रहाणांशुभंफलमुक्तमशुभानामशुभ-  
मिति । अतएवमौप्रोक्तफलौ कथितफलौ । उक्तंचवराहमिहिरेण । केंद्रत्रिकोणेपु-  
शुभाः प्रशस्तास्तेष्वेवपापानशुभप्रदाः स्युः । केंद्रत्रिकोणगैः शुभैःशुभंफलंभव-  
तीति मालानोक्ता । एवंकेंद्रत्रयगैःपापैःपापफलंभवतीति सप्तोक्तः ।  
एवमन्येअपरेआहुःकथयन्ति । तथातौनपृथक्फलानुक्तार्थत्वात् । यद्येवंतर्हि किम-  
र्थंवराहमिहिरेणोक्तावित्यत्रोच्यते । नाभसयोगांतर्भूतत्वात्समस्तदशास्वपि  
फलदौभवतः । यदाकेंद्रोपगानांयोगंविनाफलमंगीक्रियते । तदास्वदशास्वे-  
वफलंप्रयच्छन्ति । एतच्चपराशरादीनाममम् । तेषामंतंयथानाभसयोगावेतौ  
समस्तदशास्वपिफलप्रदौनवराहमिहिरेणोक्तौ ॥ ३ ॥

आसन्नकेंद्रभवनद्वयगैर्गदाख्यस्तन्वस्तगेपुशकटंविहगःख-  
बंध्वोः ॥ शृंगाटकंनवमपंचमलग्नसंस्थैर्लग्नान्यगैर्हलमितिप्र-  
वदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ४ ॥

अथाकृतियोगान्पंचगदाशकटविहंगशृंगाटकहलाख्यान्वसंततिलकेनाह ॥  
आसन्नेति । आसन्नेनिकटवर्तिनिकेंद्रभवनद्वयेकंटराशिद्युग्मेयदासर्वग्रहाः  
भवन्ति तदागदाख्योयोगोभवति । सचचतुःप्रकारः । लग्नचतुर्थस्थैः सर्वग्रहै-  
रेकः । चतुर्थसप्तमस्थैर्द्वितीयः । सप्तमदशमस्थैस्तृतीयः । दशमलग्नस्थैश्चतुर्थः ।  
तन्वस्तगेष्विति । तन्वस्तगेपु लग्नसप्तमगेपुसर्वग्रहेपुशकटंभवति । खबंध्वोः ।  
दशमचतुर्थयोः स्थितेपुसर्वग्रहेपुविहगाख्योयोगः । नवमपंचमलग्नस्थैः सर्वग्रहैः  
शृंगाटकाख्योयोगोभवति । लग्नान्यगैर्हलमिति । लग्नवर्जयित्वायथासंभवमन्ये  
सर्वग्रहाः परस्परंत्रिकोणगताभवन्ति । तदाहलमितियोगः तज्ज्ञाः होराशास्त्रपंडि-  
ताः प्रवदन्ति कथयन्ति । सचत्रिप्रकारः । द्वितीयषड्दशमस्थैः सर्वग्रहैरेकः । तृती-  
यसप्तमैकादशस्थैर्द्वितीयः प्रकारः । चतुर्थाष्टमद्वादशस्थैस्तृतीयः प्रकार इति ॥ ४ ॥

शकटांडजवच्छुभाशुभैर्वज्रंतद्विपरीतगैर्यवः ॥

कमलंतुविमिश्रसंस्थितैर्वापीतद्यदिकेंद्रवाह्यतः ॥ ५ ॥

अथवज्रयवकमलवापीसंज्ञयोगचतुष्टयंवैतालीयेनाह ॥ शकटांडमिति ।  
शकटवच्छुभैः व्यवस्थितैरंडजवदशुभैश्चवज्रंभवति । एतदुक्तंभवति । लग्न-  
सप्तमयोः सौम्याश्चतुर्थदशमयोश्चपापाभवांति । नान्यत्रकेचित्तदावच्चाख्योयो-



गोभवति । तद्विपरीतगैर्यवः । तएवग्रहायदिविपरीतगताभवंति । तदायवा-  
ख्योयोगोभवति । शकटवदशुभाः अंडजवच्छुभाः । एतदुक्तंभवति । लग्न-  
सप्तमयोः पापाःस्थिताः चतुर्थदशमयोश्चशुभाः स्थितास्तदायवाख्योयोगो  
भवति । कमलंत्विति । एतैरेवसौम्यपापैः विभिन्नसंस्थितैश्चतुर्ष्वपिकेंद्रेषुसमव-  
स्थितैः कमलाख्योयोगोभवति । तदेवकमलंयदिकेंद्रवाह्यतोभवति तदावा-  
पीसंज्ञोयोगः । एतदुक्तंभवति । सर्वैरेवकेंद्रवाह्यतः स्थितैः केंद्राणिवर्जयि-  
त्वान्यत्रपणफरापोक्लिमेषुस्थितैस्तदेवकमलंवापीसंज्ञोभवतियोगः । पणफरेषु  
चतुर्ष्वपिक्लिमेषुचतुर्विंशति ॥ ५ ॥

पूर्वशास्त्रानुसारेणमयावज्रादयःकृताः ॥

चतुर्थेभवेनसूर्याज्ज्ञसितौभवतःकथम् ॥ ६ ॥

अथवज्रयवयोः संभवोनभवति तौचमयापूर्वशास्त्रानुसारेणकृतावित्ये-  
तदनुष्टुभाह ॥ पूर्वशास्त्रानुसारेणेति । पूर्वशास्त्रानुसारेण पूर्वाचार्यैः मययवना-  
दिभिः । वज्राख्योयोगः कृतः यवाख्यश्च । तस्मान्मयापिकृतः । वज्रादयइति  
बहुवचननिर्देशोऽन्येषामेवंप्रकाराणांप्रदर्शनार्थः । वज्रादयोयोगायद्यपिनसंभ-  
वंति । तथापिपूर्वशास्त्रानुसारेणमयाकृताः।तान्यनुसृत्यदृष्टेत्यर्थः । यतः सूर्या-  
दादित्याच्चतुर्थेभवने चतुर्थराशौपूर्वेणपश्चिमेनवाज्ञसितौबुधशुक्रौकथंभवतः ।  
नकदाचिदकोदयेस्तमयेवामध्याह्नार्द्धरात्रयोः बुधशुक्रौभवतः । आदित्येम-  
ध्याह्नस्थेऽर्द्धरात्रस्थेवातयोरुदयोस्तमयोवानभवत्येव ॥ ६ ॥

कंटकादिप्रवृत्तैस्तुचतुर्गृहगतैर्ग्रहैः ॥

यूपेषुशक्तिदंडाख्याहोराद्यैःकंटकैःक्रमात् ॥ ७ ॥

अथयूपेषुशक्तिदंडाख्ययोगचतुष्टयमनुष्टुभाह ॥ कंटकादिति । होरालभंतदा-  
द्यैःकेंद्रैःक्रमात्परिपाठ्या लग्नकेंद्रमादितः कृत्वाचतुर्ष्वगृहेषुयथासंभवंसर्वग्रहाणा-  
मवस्थानंभवति।तदायूपेषुशक्तिदंडाख्याश्चत्वारोयोगाभवंति।तद्यथा लग्नद्विती-  
यतृतीयचतुर्थेषुचतुर्ष्वपियदासर्वेग्रहाःभवंति।तदायूपाख्योयोगोभवति । अथ  
चतुर्थपंचमषष्ठसप्तमेषुचतुर्षुसर्वेएवग्रहाभवंति । तदेपुःशराख्योयोगः । अथ  
सप्तमाष्टमनवमदशमेषुचतुर्षुसर्वेएवग्रहाभवंतितदाशक्तियोगः । अथदशमैकाद-  
शद्वादशलक्ष्मेषुचतुर्षुसर्वेएवग्रहाभवंति । तदादंडयोगइति ॥ ७ ॥

नौकूटच्छत्रचापानितद्वत्सप्तर्क्षसंस्थितैः ॥

अर्द्धचंद्रस्तुनावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यर्क्षसंस्थितैः ॥ ८ ॥

अथनौकूटच्छत्रचापार्द्धचंद्राख्ययोगपंचकमनुष्टुभाह॥नौकूटच्छत्रेति । तद्व-  
त्तेनैवप्रागुक्तेनप्रकारेणलग्नकेंद्रादारभ्यैकैकस्मात्केंद्रात्सप्तभिर्ग्रहैःसप्तर्क्षसंस्थितैः  
नौकूटच्छत्रचापसंज्ञयोगचतुष्टयंभवति । तद्यथा । लग्नद्वितीयतृतीयचतुर्थपंच-  
मषष्ठसप्तमेपुयदासर्वेग्रहाःभवन्ति । तदानौर्नामयोगोभवति । एवंचतुर्थपंचम-  
षष्ठसप्तमाष्टमनवमदशमेपुयदासर्वेग्रहाःभवन्ति । तदाकूटाख्ययोगोभवति ।  
अथसप्तमाष्टमनवमदशमैकादशद्वादशलग्नपुसर्वेग्रहाभवन्तितदाछत्राख्ययोगः ।  
अथदशमैकादशद्वादशलग्नद्वितीयतृतीयचतुर्थेपुयदासर्वेग्रहाभवन्ति । तदाचा-  
पंचापाख्ययोगः । अर्द्धचंद्रइति । नावाद्यैरेवयोगैरन्यर्क्षसंस्थितैः अपरराशि-  
व्यवस्थितैरर्धचंद्राख्ययोगोभवति । नावाद्याः कंटकेषूक्ताः तैश्चान्यर्क्षसंस्थितैः  
अपरराशिगतैः तेनपणफरेभ्यः आरभ्यनिरंतरंसप्तसुगृहेपुयदासर्वेग्रहाभवन्त्या-  
पोह्निमेभ्योवातदार्द्धचंद्राख्यः । सचाष्टप्रकारः । तद्यथा । द्वितीयतृतीयचतुर्थपंच-  
मषष्ठसप्तमाष्टमेपुसप्तसुसर्वेग्रहायदाभवन्तितदैकः । एवंतृतीयादिनवमांतेपु-  
द्वितीयः । पंचमादिष्वेकादशांतेपुतृतीयः । षष्ठादिपुद्वादशांतेपुचतुर्थः । अष्टमादि-  
पुद्वितीयांतेपुपंचमः । नवमादिपुतृतीयांतेपुषष्ठः । एकादशादिपुपंचमांतेपुस-  
प्तमः । द्वादशादिपुषष्ठांतेपुयदासर्वेग्रहाभवन्तितदाष्टमइति ॥ ८ ॥

एकांतरगतैरर्थात्समुद्रः षड्गृहाश्रितैः॥

विलग्नादिस्थितैश्चक्रमित्याकृतिजसंग्रहः ॥ ९ ॥

अथसमुद्रचक्राख्यौद्ग्यौगावनुष्टुभाह ॥ अर्थाद्वितीयस्थानादारभ्यैकांतर-  
गतैर्ग्रहैः षड्गृहाश्रितैः षड्राशिषुव्यवस्थितैः सप्तभिर्ग्रहैः समुद्राख्ययोगोभवति ।  
तद्यथा । द्वितीयचतुर्थषष्ठाष्टमदशमद्वादशेषुषट्सुयदासप्तग्रहाभवन्तितदास-  
मुद्राख्ययोगः । विलग्नादिस्थितैरिति । अनेनैवप्रकारेणविलग्नाल्लग्नान्त्रभृत्येकां-  
तरस्थैः षड्गृहेषुसप्तभिर्ग्रहैः स्थितैः चक्राख्ययोगोभवति । तद्यथा । लग्नतृतीयपंच-  
मसप्तमनवमैकादशेषुषड्गृहेपुयदासर्वेग्रहाः भवन्ति तदाचक्राख्ययोगोभवति ।  
इत्येवंप्रकारेण आकृतिजानामाकारवशादुत्पन्नानांसंग्रहोव्याख्यातः ॥ ९ ॥

संख्यायोगाः स्युः सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेकापायाद्वल्लकीदामिनीच ॥

पाञ्चकेदारः शूलयोगोयुगंचगोलश्चान्यानपूर्वमुक्तान्विहाय ॥ १० ॥

अथसंख्यायोगसप्तकंशालिन्याह । संख्यायोगाइति । सप्तभिर्ग्रहैः सप्तर्क्षसंस्थैः  
सप्तसुराशिषुगतैरेकापायादेकापगमात्क्रमात्सप्तसंख्यायोगाः स्युः भवेयुः । तेच  
वल्लक्यादयोगोलांताः । तद्यथा । येषुतेषुसप्तसुगृहेपुयदासर्वेग्रहाभवन्ति । तदा  
वल्लकीनामयोगोभवति । यदाषट्सुगृहेषुसप्तग्रहाभवन्ति । तदादामिनीनामः



योगोभवति । एवंपंचसुसप्तग्रहाःपाशःपाशोयोगः । चतुर्षुकेदारःकेदारोयोगः । त्रिषुशूलःशूलोयोगः द्वयोर्युगंयुगनामयोगः । एकस्मिन्राशौसप्तग्रहायदाभवन्ति । तदागोलःगोलनामायोगः । अन्यान्पूर्वमुक्तान्विहाय पूर्वोक्तानन्यान्योगान्विहायवर्जयित्वाएतेयोगाःभवन्ति । एतदुक्तंभवति । यथोक्तानांयोगानांमध्याद्यदिसंख्यायोगस्यसादृश्यंभवति । तदासंख्यायोगोनांगीकार्यः । सएव योगोग्राह्यइति ॥ १० ॥

ईर्ष्युर्विदेशनिरतोध्वरुचिश्चरज्ज्वांमानीधनीचमुशलेबहुकृत्य-  
सक्तः ॥ व्यंगःस्थिराढ्यनिपुणोनलजः स्रगुत्थोभोगान्वितो  
भुजगजोबहुदुःखभाक्स्यात् ॥ ११ ॥

अथाश्रययोगत्रयजातानांदलयोगद्वयजातानांचफलंवसंततिलकेनाह ॥ ई-  
र्ष्युरिति । ईर्ष्युःसमत्सरःपरिद्धिमत्सरी । विदेशनिरतःपरदेशाध्यासनशीलः ।  
अध्वरुचिः सततमदनः । ननुविदेशनिरतएवाध्वरुचिः । तत्किमत्रद्वयोर्ग्र-  
हणम् । उच्यते । विदेशेप्यनेकप्रदेशाध्यासनशीलोभवति सततपटनोभवति ।  
एवंविधोरज्ज्वारज्ज्वाख्येयोगेजातोभवति । मानीगर्वितः । धनीवित्तवान् ।  
बहुपुकृत्येषुकार्येष्व्वासक्तः । बहुकर्मारंभशीलः । एवंविधोमुशलाख्येयोगेजातो  
भवति । व्यंगोऽङ्गहीनः विगतमंगंयस्य । स्थिरोदृढनिश्चयः । आढ्योऽधनवान् ।  
निपुणः कार्येषु सूक्ष्मदृष्टिः । एवंविधोनलजोनलाख्येयोगेजातोभवति ।  
एवमाश्रययोगत्रयजातानांफलंव्याख्यातम् । स्रगुत्थोभोगान्वितइति । स्रगुत्थः  
स्रग्योगेजातोभोगान्वितोभवति । भुजगजोभुजगाख्येसर्पयोगेजातोबहुदुःख-  
भाक्स्यात् । नानाप्रकाराणांदुःखानां भोगीभवति । केचिदत्रबहुवचनंपठन्ति ।  
व्यंगाः स्थिराढ्या निपुणा नलजाः स्रगुत्था भोगान्विता भुजगजा बहुदुःख-  
भाज इतिनकश्चिदोषः । एवंदलयोगद्वयजातानांफलंव्याख्यातम् ॥ ११ ॥

आश्रयोक्तास्तुविफलाभवन्त्यन्यैर्विमिश्रिताः ॥

मिश्रायैस्तेफलंदद्युरमिश्राःस्वफलप्रदाः ॥ १२ ॥

अथान्योयोगआश्रययोगश्चयदासमकालंयत्रदृश्यतेतत्राश्रययोगस्यनिराक-  
रणार्थमनुष्टुभाह ॥ आश्रयोक्तास्त्विति । यत्रान्योयोग आश्रययोगश्चभवति  
तत्राश्रययोगोऽन्येनयवादिनामिश्रोभवति । मिश्रितत्वाच्चाफलोभवति स्वफलं  
नप्रयच्छति । एवमन्यैरपरैः विमिश्रितानिफलाभवन्ति । यैश्चमिश्राः  
सादृश्यंगतास्तेतत्रफलंदद्युःकेचिन्मिश्रायैस्तेफलंतेषामितिपठन्ति । अमिश्राश्चा-  
न्यैः यदाभवन्ति तदास्वफलप्रदाआत्मीयंफलंददति । तत्रचरराशौलभग-

तेस्थिरद्विस्वभावस्थैरमिश्राः । स्थिरलभेचरद्विस्वभावगतैरमिश्राः । द्विस्वभाव-  
 लभेचरस्थिरगतैरमिश्राइति ॥ १२ ॥

यज्वार्थभाक्सततमर्थरुचिर्गदायांतद्वृत्तिभुक्छकटजःसरुजः  
 कुदारः॥दूतोटनःकलहकृद्विहगेप्रदिष्टःशृंगाटकेचिरसुखीकृ-  
 पिकृद्धलाख्ये ॥ १३ ॥

अथगदाशकटविहगशृंगाटकहलाख्येपुयोगेपुजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह॥  
 यज्वार्थभागिति । यज्वायजनशीलः । अर्थभागधनानांभाजनंसततंसर्वकाल-  
 मर्थरुचिः अर्थार्जनोद्यमशीलः । एवंविधोगदाख्येयोगेजातोभवति । तद्वृत्ति-  
 भुगिति तदितिशकटपरामर्शः । तद्वृत्तिभुक्शकटवृत्तिभुंक्ते । शकटजीवी  
 भवतीत्यर्थः । सरुजोव्याध्यर्दितः । कुदारः कुत्सितभार्यः । एवंविधः  
 शकटजः शकटयोगेजातोभवति । दूतोटनइति । दूतःपरसंदेशप्रापणार्थपर-  
 सकाशगामी । अटनः परिभ्रमणशीलः । ननुदूतेनाप्यवश्यमटनेनभवितव्यम्।  
 उच्यते । परेच्छयागमनशीलोदूतः । अयंपुनःस्वेच्छयाटनः । तदुभयभागभ-  
 वति । कलहकृतकलहशीलः । एवंविधोविहगाख्येयोगेजातोभवति । प्रदिष्टः  
 उक्तः । चिरेणसुखीचिरसुखीवयोतेसुखीत्यर्थः । एवंविधःशृंगाटकाख्येयोगे  
 जातोभवति । अन्यैश्चिरंसुखीचिरसुखीशृंगाटकेव्याख्यातः।तच्चायुक्तम् । यस्मा-  
 द्भगवान्गार्गिः । लग्नपंचमधर्मस्थैर्योगःशृंगाटकोमतः । वयोतेसुखिनांजन्म  
 तत्रस्यात्स्वादुभाषिणाम्।कृषिकृद्धलाख्ये । हलाख्येयोगेजातः कृषिकृद्धवति  
 कृषिकरोतीत्यर्थः ॥ १३ ॥

वज्रंत्यपूर्वसुखिनःसुभगोतिशूरोवीर्यान्वितोप्यथयवेसुखितोव-  
 योतः॥विख्यातकीर्त्यमितसौख्यगुणश्चपद्मेवाप्यांतनुस्थिर-  
 सुखोनिधिकृन्नदाता ॥ १४ ॥

अथवज्रयवपद्मवापीजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ वज्रंत्यपूर्वसुखिन-  
 इति । अंत्येवयोत्येसुखिनः । पूर्वेसुखिनश्च । बाल्येसुखी । यौवने दुः-  
 खितोवृद्धत्वेपुनरेवसुखीभवतीत्यर्थः । सुभगः सर्वजनवल्लभः । अतिशूरो-  
 तीवसंग्रामधीरः । एवंविधोवज्राख्येयोगेजातोभवति । शौर्यान्वितः  
 पराक्रमयुक्तः । अथशब्दःपादपूरणे । वयोतःवयोमध्येसुखी । अंतः-  
 शब्दोत्रमध्यपर्यायः । एवंविधोयवाख्येयोगेजातोभवति । विख्यातकीर्तिः स-  
 र्वजनप्रसिद्धकीर्तिः । सानतुकिमत्रविख्यातकीर्तिरस्ति । उच्यते । अस्तिकचि-  
 च्चसा । यथाकीर्तिप्रापककर्मभिः शतैरपिपरंप्रख्यातकीर्तिंनप्राप्नोति । अमि-



तसौख्यगुणः अपरिमितसौख्योऽपरिमितगुणश्च । गुणाः विद्याशौर्यादयः ।  
 एवंविधः पद्माख्येयोगेजातोभवति । तनुस्थिरसुखं तनुस्वल्पंस्थिरंचिरका-  
 लस्थायिसुखं यस्यस्वल्पसुखंबहुकालं भवतीत्यर्थः । निधिकृत् भूमावर्थ-  
 स्थापनशीलः नदाताकदर्यः । एवंविधोवापीसंज्ञेयोगेजातोभवति ॥ १४ ॥

त्यागात्मवान्क्रतुवरैर्यजतेचयूपेहिंस्रोथगुप्त्याधिकृतःशरकृ-  
 च्छराख्ये॥ नीचोलसः सुखधनैर्वियुतश्चशक्तौदंडेप्रियैर्विरहि-  
 तःपुरुषोऽत्यवृत्तिः ॥ १५ ॥

अथयूपशरशक्तिदंडाख्येयोगचतुष्टयेजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ त्या-  
 गात्मवानिति । त्यागीदाता आत्मवानप्रमादी । क्रतुवरैर्यज्ञश्रेष्ठैर्यज्ञैः यजते ।  
 एवंविधोयूपाख्येयोगेजातोभवति । हिंसेति । हिंस्रोवधरुचिः गुप्त्याधिकृतः ।  
 बंधनपालः शरकृत् शरकारः एवंविधश्चशराख्येयोगेजातोभवति । नीच इति ।  
 नीचः अधमानामकुलोचितानांकर्मणांकर्ता । अलसः क्रियास्वपटुः । सुख-  
 धनैर्वियुतोभोगवित्तविवर्जितः । निःसुखोनिर्वनश्च । एवंविधः शक्तौयोगेजा-  
 तोभवति । प्रियैः पुत्रादिभिः विरहितः वर्जितः अंत्यवृत्तिः दासवृत्तिः शूद्रवृ-  
 त्तिरित्यर्थः । एवंविधोदंडाख्येयोगेजातः पुरुषोभवति ॥ १५ ॥

कीर्त्यायुतश्चलसुखःकृपणश्चनौजःकूटेनृतप्लवनबंधनपश्चजा-  
 तः॥छत्रोद्भवःस्वजनसौख्यकरोऽत्यसौख्यःशूरश्चकार्मुकभवः  
 प्रथमांत्यसौख्यः ॥ १६ ॥

अथनौकूटच्छत्रकार्मुकजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ कीर्त्यायुतश्चलसुख  
 इति । कीर्त्यायुतः ख्यातयशाः । चलसुखः कदाचित्सुखीकदाचिदुःखी । कृपणः  
 अदाता । चशब्दोत्र समुच्चयार्थे । एवंविधोनौजः नावाख्येयोगेजातः प्राणी  
 भवति । कूटेऽनृतइति । अनृतेप्लवनामतिर्यस्यासावनृतप्लवनः असत्याभिधायी  
 असत्याभिभाषीच । बंधनपः बंधनंपातीतिबंधनपः केचित्कूटेऽनृतकृपणबंध-  
 नपश्चजात इतिपठंति । एवंविधः कूटाख्येयोगेजातोभवति । इतिकूटयोगः ।  
 छत्रोद्भवइति । स्वजनसौख्यकरः स्वजनेषुसुखंकरोतीति स्वजनसौख्यकरः ।  
 अंत्यसौख्योवृद्धत्वेसुखितः । एवंविधः छत्राख्येयोगेजातोभवति । इतिछत्र-  
 योगः । कार्मुकभवः शूरश्चसंग्रामप्रियः प्रथमांत्यसौख्यः प्रथमेवात्येसुखी । अंत्ये  
 वृद्धत्वेसुखीच । एवंविधः कार्मुकभवः चापाख्येयोगेजातोभवति । इति  
 चापयोगः ॥ १६ ॥

अर्धेदुजःसुभगकांतवपुःप्रधानस्तोयालयेनरपतिप्रतिमस्तुभो-  
गी ॥ चक्रेनरेन्द्रमुकुटद्युतिरंजितांग्रिवांगोद्भवश्चनिपुणःप्रियगी-  
तनृत्यः ॥ १७ ॥

अथाद्धचंद्रसमुद्रचक्रवल्लकीजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ अर्धेदुजइति ।  
सुभगः सर्वजनप्रियः कांतवपुः प्रदर्शनीयः प्रधानः सर्वजनपूज्यः एवंवि-  
धोर्धेदुजोऽर्द्धचंद्राख्ययोगेजातोभवति । नरपतिप्रतिमः राज्ञातुल्यः । भोगी भोग-  
वान् । एवंविधस्तोयालयेसमुद्राख्ययोगेजातोभवति । चक्रेति । नरेन्द्राराजानः  
तेषांमुकुटाः किरीटाः चूडामणिरत्नानितेषांद्युतिः कांतिः तयारंजितौलु-  
रितावंग्रीपादौयस्याराजानस्तस्यपादयोः पतन्ति । महाराजाधिराजोभवती-  
त्यर्थः । तपोज्ञानादियोगाद्राज्ञांपूजनीयोवा । एवंविधश्चक्राख्ययोगेजातोभ-  
वति । आकृतियोगविंशतिजातानांफलंव्याख्यातम् । अत्रैवभूपालसंख्यायो-  
गानांफलंव्याख्यायते । वीणोद्भवश्चेति । निपुणः सूक्ष्मदृष्टिः । प्रियगीतनृ-  
त्यः गीतप्रियोनृत्यप्रियश्च एवंविधो वीणोद्भवोवीणाख्ययोगेजातोभवति ॥ १७ ॥

दातान्यकार्यनिरतःपशुपश्चदाग्निपाशेधनार्जनविशीलसभृत्यवं-  
धुः ॥ केदारजःकृषिकरःसुबहूपयोज्यःशूरःक्षतोधनरुचिर्विध-  
नश्चशूले ॥ १८ ॥

अथदामिनीपाशकेदारशूलजातानांस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ दातान्यकार्ये-  
ति । दाताउदारः । अन्यकार्यनिरतः परोपकारासक्तः । पशुपःपशुरक्षिता । ब-  
हुपशुभाग्भवति । अथवाबहुपपाठेबहूनांपालयितारक्षयिता । ग्रामाधिपतिरित्यर्थः ।  
एवंविधोदाग्नियोगेजातोभवति । पाशइति । धनार्जनेविशीलः धनार्जन-  
विशीलः धनार्जनविशीलश्चासौसभृत्यबंधुश्च धनार्जनविशीलसभृत्यबंधुः ।  
स्वयमेवधनार्जनेविशीलः असन्मार्गेणधनार्जनंकरोति । तथाभूताअस्यभृत्याः  
कर्मकरावांधवाश्चभवन्ति । एवंविधःपाशाख्ययोगेजातोभवति । केदारजइति ।  
कृषिकरःकृषिकरोति । सुबहूपयोज्यः । सुषुशोभनंकृत्वावहूनामुपयुज्यते ।  
उपकरोति । एवंविधःकेदारजः केदाराख्ययोगेजातोभवति । शूरःसमरधी-  
रः । क्षतःप्रहारितः । धनरुचिः अर्थप्रियः । केचिद्वधरुचिरितिपठन्ति । विधनः  
दरिद्रश्च । एवंविधः शूलाख्ययोगेजातोभवति ॥ १८ ॥

धनाविरहितःपाखंडीवायुगेत्वथगोलकेविधनमलिनोऽज्ञानो-  
पेतःकुशिल्प्यलसोटनः ॥ इतिनिगदितायोगाःसार्द्धफलैरि



हनाभसानियतफलदाश्चित्याह्येतेसमस्तदशास्वपि ॥ १९ ॥  
इतिनाभसयोगाध्यायः ॥ १२ ॥

अथयुगगोलयोजातस्यस्वरूपं सर्वेषां च नाभसयोगानां समस्तदशास्वपि फल-  
प्रदर्शनं हरिण्याह ॥ धनविरहित इति । धनविरहितः अर्थहीनः । पाखंडी त्रयी-  
मार्गव्यपेतः । एवं विधो युगाख्ये योगे जातो भवति । केचिद्भनविरहितः पाखं-  
डी चेति पठन्ति । वाशब्दोत्र चार्थः । अर्थहीनः पाखंडी च । अथशब्द आनंतये । विध-  
नोर्थहीनः । मलिनो मलोपेतशरीरः मलिनवासावा । अज्ञानोपेतः मूर्खः । कु-  
शिल्पी लोके निधिशिल्पकर्ता । अलसः क्रियास्वसमर्थः । अटनो भ्रमणशीलः ।  
नन्वत्रालसोऽटनश्चेति विरुद्धम् । उच्यते । यद्यपि स्वरूपेणालसः तथाप्यतिदा-  
रिद्र्याद्भोजनक्रियामटनं विना संपादयितुमशक्यत्वादटनः । एवं विधो गोलख्ये  
योगे जातो भवति । एवं सप्तसु संख्यायोगेषु शुभफलं व्याख्यातम् । इति निगादितायो-  
गा इति । इत्येवं प्रकारानाभसयोगाः फलैः सार्द्धं सह निगदिता उक्ताः । इहास्मिन्न-  
ध्याये एते समस्तदशास्वपि नियतफलदाः । सर्वकालफलप्रदाः चित्या विज्ञात-  
व्याः । ननु वज्रादिष्वार्थं तसु खिता प्रदर्शिता तत्कथं समस्तदशास्वित्युक्तम् । उच्यते ।  
तेषां वचनाद्यथा दर्शितकालः । सुखदुःखयोर्भविष्यति । येषां कालविभागो नो-  
क्तस्तेषां समस्तदशास्वपि यथा दर्शितसु खदुःखप्रदा भविष्यति । ननु कस्यचित्सम-  
स्तं जन्म सुखेन दुःखेन चैकरूपेण गच्छति । ये च भोगिनः तेऽपि मानसैर्दुःखैराभि-  
तप्ता भवन्ति । येषां भिक्षाशिनस्तेऽपि कदाचिद्भर्माभितप्ता भवन्ति । शीतला सुद्रुमच्छा-  
या सुसुखितमित्यात्मानं मन्यन्ते । तस्मादेवमादिसुखदुःखं सर्वेण संसारिजातेन  
विपर्ययेणानुभूयते तत्कथं समस्तदशास्वपियोगाः फलप्रदा भवन्ति । उच्यते ।  
नैते योगादशाष्टकवर्गफलहन्तारः । शुभमशुभं वा फलं दशापतिर्ददात्यष्टकवर्गाश्रित-  
मपि फलं च । अतो यथा कालयोगा अपि समग्रजन्मनि फलं ददत्येवं मिश्रफलानुभ-  
वो भोगिनां दरिद्राणां च संभवत्येव । एवता वन्नाभसयोगाध्यायो व्याख्यातः ।  
अस्मिन्नध्याये यद्वक्तव्यं पूर्वं प्रतिज्ञातं तदुच्यते । दलयोगाकृतियोगयोः समका-  
लमुपस्थानं नास्ति तथा दलयोगैः सहाश्रययोगानां तुल्यकालमुपस्थानं नास्त्येव ।  
अथ दलयोगैः सह संख्यायोगा युज्यन्ते । तदा दलयोगफलमेव भवति । अथाकृ-  
तियोगा आश्रययोगैर्युज्यन्ते । तदा आकृतियोगफलं भवति । अथाकृतियोगाः सं-  
ख्यायोगैर्युज्यन्ते । तथाप्याकृतियोगफलं भवति । यस्मात्संख्या-  
योगानामपवादः । अन्यान् पूर्वमुक्तान्विहाय आश्रययोगानामप्यप-  
वादः । आश्रययोगास्तु विफला भवन्त्यन्यैर्विमिश्रिता इति । तस्मात्संख्या-  
योगा आश्रययोगाश्च आकृतियोगैश्चाभिभूयन्ते । अथाश्रययोगेन सह संख्यायो-

गस्यावस्थानंभवति । तदाआश्रययोगएवभवति । नन्वाश्रययोगसंख्यायो-  
 गानांतुल्ये अपवादेआश्रययोगेनसंख्यायोगः कथमभिभूयते । उच्यते । यदिसं-  
 ख्यायोगेनाश्रययोगस्यावस्थानंभवतितदाआश्रययोगस्यावकाशएवसंभवति ।  
 आश्रययोगेनसंख्यायोगस्यावस्थानेकृते अस्त्येवान्योवकाशः संख्यायोगस्य ।  
 किंतु । एकस्मिन्राशौयदासर्वेग्रहाः भवंति तदाआश्रययोगेनभवति । सं-  
 ख्यायोगोभवति । तत्रयदिआश्रययोगेनसंख्यायोगोऽभिभूयते तदागोलक-  
 स्थानवकाशः । अवकाशएवनस्यात् । परिभाषाचैयम् । निरवकाशाहिविधयः  
 सावकाशान्विधीन्वाधतेइति । अथैकैकराशिलग्नगतमधिकृत्यपुराणयवनम-  
 तेनयत्सार्द्धयोगशतमुक्तं तदधुनाप्रदर्श्यते।तेषांतावन्नयोर्विंशतिराकृतियोगाः  
 विंशतिरेववराहमिहिरेणाभिहिताः । किंतु तेषांमध्याद्गदायोगेनचत्वारोयोगा  
 अभिहिताः । लग्नचतुर्थयोः यदासर्वेग्रहाभवंति तदागदायोगः । चतुर्थस-  
 तमयोः शंखः । सप्तमदशमयोः वभ्रुकः । दशमलग्नयोः ध्वजः । तत्र  
 पूर्वोक्ताविंशतिः शंखवभ्रुध्वजैः सहत्रयोविंशतिः भवंति संख्यायोगानां  
 सप्तविंशत्यधिकंशतमेवंसार्द्धशतं १५० राशिद्वादशकेनाष्टादशशतानिभवंति ।  
 १८०० तत्रसप्तविंशत्यधिकस्यसंख्यायोगशतस्योत्पत्तिः प्रदर्श्यते । तद्यथैषां  
 विकल्पाः सप्त । तत्रैकविकल्पाःसप्त । द्विविकल्पाएकविंशतिः । त्रिविकल्पाः  
 पंचत्रिंशत् ३५ । चतुर्विकल्पाः । पंचाभिः ३५ । पंचविकल्पाएक-  
 विंशतिः २१ । षड्विकल्पाः सप्त । सप्तविकल्पाएकः । एतदेकीकृतंसप्त-  
 विंशत्यधिकंशतंभवति १२७ । एतदेववराहमिहिरेणविवाहपटलेउक्तम् । द्वि-  
 व्यादियोगान्परिगृह्यकस्मान्नोक्तंशतंसत्रिंशंविलग्नइति । अथविकल्पगणितं  
 प्रदर्श्यते । तत्राचार्येणविकल्पगणितंसंहितायामुक्तम् । पूर्वेणपूर्वेणगतेनयुक्तं  
 स्थानंविनांत्येप्रवदंतिसंख्याम् । इच्छाविकल्पैःक्रमशोभिनीयनीतेनिवृत्तिःपुनर-  
 न्यनीतिरिति । अत्रयावत्संख्यानांविकल्पाः क्रियंतेतदंतानेकाद्यानुपर्युपरि  
 स्थापयेत् । तद्यथात्रसप्तग्रहैः एकाद्यानांसत्तांतानान्यासः ७ । ६ । ५ । ४ । ३ ।  
 २ । १ अत्रपूर्वेणगतेनयुक्तंस्थानंविनांत्यमिति । पूर्वश्चासौगतश्चपूर्वगतः तेनपू-  
 र्वेणगतेनयुक्तमंयमुपरिस्थंस्थानंविनातद्वर्जयित्वेत्यर्थः । प्रथममेकमधःस्थितं  
 तयोर्द्वयोरुपरिस्थयोः क्षिपेत् । एवंतत्रत्रीणिरूपाणिजातानि तानिचस्वोपरि  
 त्रिषुक्षिपेत् । एवंतत्रषड्जातानितानि स्वोपरिचतुर्षुक्षिपेत् । एवंतत्रदशरूपाणि  
 जातानि तानिस्वोपरिपंचसुक्षिपेत् । तत्रपंचदशजातानि तानिस्वोपरिषट्सुक्षि-  
 पेत् । तत्रैकविंशतिर्जातानि । अतः परंचकर्मणोऽभावात्तदुपरिसत्तेवस्थिताः ।  
 यदुक्तं स्थानंविनांत्यंपुनरप्यधःप्रभृत्येवंकृत्वापंचमेस्थानेपंचत्रिंशजाताः । पुनर-  
 पिचतुर्थेपंचत्रिंशत् । पुनरुत्तरीयेएकविंशतिः । पुनः द्वितीयेसप्त प्रथमेएकैव ७



२१।३५।३५।२१।१।१ । अथवान्येनप्रकारेणसंख्यानयनंप्रतिलोमंवि-  
निक्षिप्यचानुलोममधः क्षिपेत् । अनुलोमंसमाहन्यादधःस्थेनविभाजयेत् ।

|   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ | ० |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ० |

न्यासः अत्रसप्तानामधोरूपंछेदः । अनेनभागमपह-  
त्यलब्धंसप्त ७ एतैः द्वितीयेस्थाने षट्संगुण्याधः-

स्थिताभ्यांद्वाभ्यांभागमपहरेत् । लब्धमेकविंशतिः २१ एतैस्तृतीयस्थाः पंच  
संगुण्यत्रिभिः भजेल्लब्धंपंचत्रिंशत् ३५ । एतैश्चतुर्थस्थानस्थाश्चत्वारिसंगुण्यचतु-  
र्भिः भजेल्लब्धंपंचत्रिंशत् ३५ एभिः त्रीणिसंगुण्यपंचभिः विभाज्यावातमेक-  
विंशतिः २१ एभिः द्वेसंगुण्यषड्भिः विभज्यावातंसप्त एभिरेकंसंगुण्यसप्तभिः  
विभज्यावातमेकएवं एवमेकद्वित्रिचतुःपंचषट्सप्तविकल्पाः । एवंविकल्पगणितं  
कृत्वायथेष्टसंख्यानांव्याख्येयम् । अथैतेषां विकल्पानां लोष्टकप्रस्तारेणोद्धारः कर्त-  
व्यः । इच्छाविकल्पैः क्रमशोभिनीयनीते निवृत्तिः पुनरन्यनीतिरिति । यथेष्ट-  
संख्यानां विकल्पानामाद्याक्षराणिलिखेत् । तत्रैकविकल्पेष्वेकैकं लोष्टचिह्नं कृत्वा  
विकल्पानुत्पादयेत् । द्विविकल्पेष्व्वाद्यं स्थिरं लोष्टचिह्नं कृत्वा द्वितीयेन लोष्टचिह्नेन  
सहविकल्पानुत्पादयेत् । एवं त्र्यादिषु विकल्पेष्व्वाद्यं स्थिरं लोष्टचिह्नं कृत्वा त्रित-  
लोष्टचिह्नैः सहान्यान्विकल्पानुत्पादयेत् । एवं कृत्वा प्रथमस्यापासनं कार्यम् ।  
नीते निवृत्तिरिति वचनात् । ततोऽन्यस्थिरचिह्नं कृत्वा अन्यसेत् । पुनरन्यनीतिरिति वच-  
नात् । उक्तंच भट्टश्रीशंकरेण । वर्णसंख्यांककोष्ठाख्याक्षिपक्षो ज्ञेयसंख्यकः । ज्ञेयो-  
क्त्यान्यत्र तत्पूर्वस्तत्पूर्वश्चाप्यनुक्रमात् । नयेद्रामाद्यमंत्यक्षाद्यपूर्वेतां निरंतरम् ।  
ज्ञेयोऽत्यः पुनराद्याश्च कोष्टनिष्ठावधिर्विधिरिति । तद्यथैकविकल्पाः । रविः । चंद्रः ।  
भौमः । बुधः । गुरुः । शुक्रः । शनिः । एवमेकविकल्पाः सप्त ७ । अथ द्विविकल्पाः ।  
रविचंद्रौ । रविभौमौ । रविबुधौ । रविशुक्रौ । रविसौरौ । एवमादित्येन  
सहषट् ६ । शशिभौमौ । शशिवुधौ । शशिजीवौ । शशिशुक्रौ । शशिसौरौ ।  
एवं चंद्रेण सहपंच ५ । भौमबुधौ । भौमजीवौ । भौमशुक्रौ । भौमसौरौ । एवं  
भौमेन सहचत्वारः ४ । बुधजीवौ । बुधशुक्रौ । बुधसौरौ । एवं बुधेन सहत्रयः  
३ । जीवशुक्रौ । जीवसौरौ । एवं जीवेन सहद्वौ २ । शुक्रसौरौ । एवं शुकेण सह एकः ।  
एवं द्विविकल्पाः एकविंशतिः । अथ त्रिविकल्पाः । रविचंद्रभौमाः । रविचंद्र-  
बुधाः । रविचंद्रजीवाः । रविचंद्रशुक्राः । रविचंद्रसौराः । एवमादित्यचंद्रयोः ।  
पंच ५ । रविभौमबुधाः । रविभौमजीवाः । रविभौमशुक्राः । रविभौमसौराः ।  
एवमादित्यांगारकयोश्चत्वारः ४ । रविबुधजीवाः । रविबुधशुक्राः । रविबुधसौ-  
राः । एवमादित्यबुधयोस्त्रयः ३ । रविजीवशुक्राः । रविजीवसौराः । एवंद्वौ २ । रवि-  
शुक्रसौराः । एवमेकः १ । एवमादित्येन सह त्रिविकल्पाः पंचदश १५ । चंद्रभौ-  
मबुधाः । चंद्रभौमजीवाः । चंद्रभौमशुक्राः । चंद्रभौमसौराः । एवं चंद्रभौमयो-

श्रत्वारः ४ । चंद्रबुधजीवाः । चंद्रबुधशुक्राः । चंद्रबुधसौराः । एवंत्रयः ३ । चंद्र-  
 जीवशुक्राः । चंद्रजीवसौराः । एवंद्वौ २ । चंद्रशुक्रसौराः । एकः १ । एवंचंद्रेण  
 सहदश १० । भौमबुधजीवाः । भौमबुधशुक्राः । भौमबुधसौराः । एवंत्रयः ३ ।  
 भौमजीवशुक्राः । भौमजीवसौराः । एवंद्वौ २ । भौमशुक्रसौराः । एवंभौमेन-  
 सहषट् ६ । बुधजीवशुक्राः । बुधजीवसौराः । एवंद्वौ २ । बुधशुक्रसौराः । जीव-  
 शुक्रसौराः । एकः १ । एवंत्रिविकल्पाः पंचत्रिंशत् ३५ । अथचतुर्विकल्पाः ।  
 रविचंद्रभौमबुधाः । रविचंद्रभौमजीवाः । रविचंद्रभौमशुक्राः । रविचंद्रभौम-  
 सौराः । एवंचत्वारः ४ । रविचंद्रबुधजीवाः । रविचंद्रबुधशुक्राः । रविचंद्रबुध-  
 सौराः । एवंत्रयः ३ । रविचंद्रजीवशुक्राः । रविचंद्रजीवसौराः एवंद्वौ २ । रवि-  
 चंद्रशुक्रसौराः । एवमेकः १ । रविभौमबुधजीवाः । रविभौमबुधशुक्राः । रवि-  
 भौमबुधसौराः । एवंत्रयः ३ । रविभौमजीवशुक्राः । रविभौमजीवसौराः । एवं  
 द्वौ २ । रविभौमशुक्रसौराः । एवमेकः १ । रविबुधजीवशुक्राः । रविबुध-  
 जीवसौराः द्वौ २ । रविबुधशुक्रसौराः । रविजीवशुक्रसौराः २ । एवमादित्ये-  
 नसहविंशतिः २० । चंद्रभौमबुधजीवाः । चंद्रभौमबुधशुक्राः । चंद्रभौमबुधसौराः ।  
 एवंत्रयः ३ । चंद्रभौमजीवशुक्राः । चंद्रभौमजीवसौराः । एवंद्वौ २ । चंद्रभौमशुक्र-  
 सौराः । एकः १ । चंद्रबुधजीवशुक्राः । चंद्रबुधजीवसौराः । चंद्रबुधशुक्रसौराः ।  
 चंद्रजीवशुक्रसौराः । एवंचंद्रेणसहदश १० । भौमबुधजीवशुक्राः । भौमबुधजीव-  
 सौराः । भौमबुधशुक्रसौराः । भौमजीवशुक्रसौराः । एवंभौमेनसहचत्वारः ४ ।  
 बुधजीवशुक्रसौराः । बुधेनसहएकः १ । एवंचतुर्विकल्पाः पंचत्रिंशत् ३५ ।  
 अथपंचविकल्पाः । रविचंद्रभौमबुधजीवाः । रविचंद्रभौमबुधशुक्राः । रवि-  
 चंद्रभौमबुधसौराः । एवंत्रयः ३ । रविचंद्रभौमजीवशुक्राः । रविचंद्रभौम-  
 जीवसौराः । एवंद्वौ २ । रविचंद्रभौमशुक्रसौराः । रविचंद्रबुधजीवशुक्राः ।  
 रविचंद्रबुधजीवसौराः । रविचंद्रबुधशुक्रसौराः । रविचंद्रजीवशुक्रसौराः ।  
 रविभौमबुधजीवशुक्राः । रविभौमबुधजीवसौराः । रविभौमबुधशुक्रसौराः ।  
 रविभौमजीवशुक्रसौराः । रविबुधजीवशुक्रसौराः । एवमादित्येनसहपंचदश  
 १५ । चंद्रभौमबुधजीवशुक्राः । चंद्रभौमबुधजीवसौराः । चंद्रभौमबुधशुक्रसो-  
 राः । चंद्रभौमजीवशुक्रसौराः । चंद्रबुधजीवशुक्रसौराः । एवंचंद्रमसासहपंच ।  
 भौमबुधजीवशुक्रसौराः । एवंपंचविकल्पाः एकविंशतिः २१ । अथष-  
 ड्विकल्पाः । आदित्यचंद्रभौमबुधजीवशुक्राः । रविचंद्रभौमबुधजी-  
 वसौराः । रविचंद्रभौमबुधशुक्रसौराः । रविचंद्रभौमशुक्रसौराः । रवि-  
 चंद्रबुधशुक्रसौराः । रविभौमबुधजीवशुक्रसौराः । चंद्रभौमबुधजी-  
 वशुक्रसौराः । एवंषड्विकल्पाः । अथसप्तविकल्पाः । रविचंद्रभौमबुधजी-



वशुकसौराः । सप्तविकल्पएकएव । एवंसप्तविंशत्यधिकंविकल्पशतम् १२७  
व्याख्यातम् ॥ १९ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौनाभसयोगाध्यायोद्वादशः ॥ १२ ॥

अथ चंद्रयोगाध्यायप्रारंभः ॥

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेंद्रादिसंस्थेशशिनिविनयवित्तज्ञा-  
नधीनैपुणानि ॥ अहनिनिशिचचंद्रेस्वेधिमित्रांशकेवासुरगु-  
रुसितदृष्टेवित्तवान्स्यात्सुखीच ॥ १ ॥

अथातश्चंद्रयोगाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवार्कात्केंद्रपणफरापोक्लिमस्थे  
चंद्रेजातस्यस्वरूपज्ञानंमालिन्याह ॥ अधमसमवरिष्ठानीति । विनयोनीतिः । सुशी-  
लता वित्तंधनं । ज्ञानंविज्ञानंशास्त्रावबोधः । धीः बुद्धिः । नैपुण्यं कार्येषु सूक्ष्मदर्शित्वम् ।  
अर्कादादित्यात्केंद्रादिसंस्थेकेंद्रपणफरापोक्लिमसंस्थेशशिनिचंद्रेजातस्यविनय-  
वित्तज्ञानधीनैपुणान्यधमसमवरिष्ठानिनिष्ठमध्यमोत्तमानिभवंति । एतदुक्तं  
भवति । यस्यादित्याज्जन्मनिकेंद्रस्थश्चंद्रमाभवति । तस्यैतानि विनयादीन्यध-  
मानिभवंति । अधमत्वमेतेषामभावः । यस्माद्यवनेश्वरः ॥ यस्मान्दरिद्रांश्चपला-  
न्विशीलांश्चंद्रः प्रसूतेर्कचतुष्टयस्थः ॥ यस्यजन्मसमयेपणफरस्थश्चंद्रः सूर्याद्भवति ।  
तस्यैतानिमध्यमानिभवंति । नचातिभवतीत्यर्थः । यस्यजन्मनि आपोक्लि-  
मस्थश्चंद्रोभवति । तस्याविनयादीनिवरिष्ठानिभवंति । तथाचयवनेश्वरः ।  
कुर्याद्वितीयेधनिनांप्रसूतिमापोक्लिमस्थेकुलजाग्रजानामिति । अहनीत्यादि ।  
चंद्रेशशिनिस्वेधिमित्रांशकस्थे अहनिनिशिचयथासंख्यंसुरगुरुसितदृष्टेजीव-  
शुक्राभ्यामवलोकितेजातोवित्तवान् धनीसुखीचभोगवांश्चस्याद्भवेत् । एतदु-  
क्तंभवति । यस्याहनिदिवाजन्मभवति । चंद्रश्चयस्मिंस्तस्मिन्राशौस्वनवांश-  
कस्थोभवति । स्वस्याधिमित्रांशकेस्थितोवासुरगुरुणाजीवेनदृष्टः । तदासपु-  
रुषोवित्तवान्सुखीचभवति । अथयस्यनिशिरात्रौजन्मभवति । चंद्रमाःस्वनवां-  
शकस्थोऽधिमित्रनवांशकस्थोवाभवति । शुक्रेणदृश्यतेतदाजातोवित्तवान्सुखी  
चभवति । अत्राहनिनिशिचचंद्रेस्वाधिमित्रांशकेवास्थितेयथासंख्यंसुरगुरुसित-  
दृष्टेकेचिद्व्याचक्षते । अयुक्तमेतत् । यस्माद्भगवान्गार्गिः । स्वांशेधिमित्रस्यां-  
शेवासंस्थितोदिवसेशशी । गुरुणादृश्यतेतत्रजातोवित्तसुखान्वितः । निश्चयं  
भृगुणादृष्टःशशीजन्मनिशस्यते । विपर्ययस्थेशीतांशौजायंतेलपधनानराः ।  
इति । तथाचयवनेश्वरः । स्वांशेशशीभार्गवदृष्टमूर्तिर्निशीश्वरोत्पत्तिकरः  
प्रदिष्टः । तदुत्तमोद्भूतिकरः सतुस्यादृष्टोदिवादेवपुरोहितेन ॥ १ ॥

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वडि योगइंदोस्तस्मिंश्चमूपसचिवक्षिति

## पालजन्म॥संपन्नसौख्यविभवाहतशत्रवश्चदीर्घायुषोविगतरोगभयाश्चजाताः ॥ २ ॥

अथाधियोगाख्ययोगं सफलं वसंततिलकेनाह । सौम्यैरिति । इंदोश्चंद्रा-  
 त्सौम्यैः बुधगुरुसितैः स्मरारिनिधनेषु सप्तमषष्ठाष्टमेषु त्रिषु स्थानेषु बुध-  
 योर्वास्थानयोरेकस्मिन्वास्थाने सर्वे एव भवन्ति । तदाधियोगाख्यो योगो व्या-  
 ख्यातो भवति । अत्र कैश्चित्पष्ठसप्तमाष्टमानां स्थानानां सौम्यग्रहत्रयस्यावस्थाना-  
 दशून्यतायामधियोगो व्याख्यातः । तच्चायुक्तम् । यस्माच्छ्रुतकीर्तिः ।  
 निधनद्यूनं पष्ठचंद्रस्थानां च दाशु भैर्युक्तम् । अधियोगः सप्रोक्तो व्यासकृतौ सप्तधा  
 पूर्वैः ॥ व्यासकृतौ विस्तरकृतौ पूर्वैराचार्यैश्चिरंतनैः स च सप्तधा सप्तप्रकारः प्रोक्तः  
 कथितः । तद्यथा । षष्ठे राशौ यदा सर्वे सौम्यग्रहाः भवन्ति तदैकः । सप्तमे द्वितीयः ।  
 अष्टमे तृतीयः । षष्ठसप्तमयोश्चतुर्थः । षष्ठाष्टमयोः पंचमः । सप्तमाष्टमयोः षष्ठः । षष्ठस-  
 प्तमाष्टमेषु सप्तमइति । एवमेवं स्थितेषु सौम्येष्वधियोगः । अर्थादेवैवमवस्थितेषु पापैः  
 पापः । मिश्रैर्मिश्रः । तथा च श्रुतकीर्तिः । षट्सप्तमाष्टसंस्थैश्चंद्रात्सौम्यैः शुभो-  
 धियोगः स्यात् । पापः पापैरेवं मिश्रैर्मिश्रस्तथैवोक्तः । अधियोगजातानां फलमाह ।  
 तस्मिन्ममूपासचिवक्षितिपालजन्मेति । तस्मिन्नधियोगे जातश्चमूपः सेनापतिर्भ-  
 वति । सचिवो मंत्री वा भवति । क्षितिपालो भूपालो राजा वा भवति । तेषां युगपदसंभ-  
 वात्पृथक्त्वं व्याख्यातम् । तथा च बादरायणः । शशिनः सौम्याः षष्ठे द्यूने वानिध-  
 नसंस्थिता वास्युः । जातो नृपतिर्ज्ञेयो मंत्री वा सैन्यनायको वापि । तेनैतदुक्तं भव-  
 ति । बुधगुरुसितैरुत्कृष्टवीर्यैः नृपो मध्यमवीर्यैः सचिवः हीनवीर्यैः सेना-  
 पतिः । एषामन्यतमा अपि । संपन्नसौख्यविभवाः अति सौख्यैश्चर्यसंपन्नाः ।  
 हतशत्रवः नष्टरिपवः । दीर्घायुषः चिरजीविनः । विगतरोगभयाः स्वस्थदे-  
 हानिर्भयाश्च । एवं विधेयोगे जाता भवन्ति । केषां चिन्मते राजयोग एव । तथा च सा-  
 रावल्याम् । द्यूनं षष्ठमथाष्टमं शिशिरगोः प्राप्ताः समस्ताः शुभाः क्रूराणां यद्विगोचरे  
 नपतिताः सूर्यालयादूरतः । भूपालः प्रभवेत्सयस्य जलधेर्वलावनांतोद्भवैः से-  
 नामत्तकर्त्ता द्रदानसलिलं भृंगैर्मुहुः पीयते ॥ १ ॥ तथा च मांडव्यः ॥ अमित्रं यामित्रं  
 निधनमथवा शीतरुचितोगताः सर्वे सौम्यास्तमिह जनयेयुर्नरपतिम् । वृत्तेनैवासेकं  
 गतवति विषादाश्रुपयसाप्रतापामिर्यस्य ज्वलति हृदये शत्रुषु भृशम् ॥ २ ॥ २ ॥

हित्वा कैंसुनफानफादुरुधुराः स्वांत्योभयस्यैग्रहैः शीतांशोः  
 कथितो न्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोन्यैस्त्वसौ ॥ केंद्रे शीतकरेऽ  
 थवाग्रहयुते केमद्रुमो नैष्यते केचित्केंद्रनवांशकेषु च वदंत्युक्तिः  
 प्रसिद्धानते ॥ ३ ॥



अथसुनफानफादुरुधुराकेमद्रुमाख्ययोगचतुष्टयंशार्दूलविक्रीडितेनाह॥ हित्वा-  
 र्कमिति। अथार्कमादित्यंहित्वात्यक्त्वायदान्यः कश्चिद्ब्रह्मभौमादिकः शीतांशोश्च-  
 द्रात्स्वांत्योभयस्थोभवति। द्वितीयस्थोद्वादशस्थोवाद्द्वितीयद्वादशस्थोवाद्बौभव-  
 तस्तदासुनफानफादुरुधुराख्ययोगत्रयंभवति। एतदुक्तंभवति। अर्कंहित्वायदाऽ-  
 न्योग्रहः कश्चिच्चंद्राद्वितीयस्थानेभवति तदासुनफानामयोगोभवति। अथार्कव-  
 र्जयित्वाचंद्रात्द्वादशोक्तश्चिद्ब्रह्मभवति । तदाअनफानामयोगोभवति । एवमर्क-  
 वर्जयित्वाचंद्रात्द्वितीयद्वादशगौग्रहौभवतस्तदादुरुधुरानामयोगोभवति । अ-  
 त्रयोगत्रयेप्यादित्योद्वितीयेद्वादशोवास्थानेभवति । तदानयोगभंगकृद्भवति ।  
 किंतुयोगकर्तृणामध्येनगण्यते । एतदुक्तंभवति । आदित्योद्वितीयेद्वादशोवास्था-  
 नेभवतुभाभवतुवा। भौमादिस्तत्रस्थोयथादर्शितयोगकर्ताभवति । एतेयोगावहु-  
 भिराचार्यैः पठिताः । अन्यथा केमद्रुमउक्तः । अस्माद्योगत्रयाद्यद्येकोपियो-  
 गोनभवतितदाकेमद्रुमाख्योयोगोभवति । एतदुक्तंभवति । भौमादीनांकेंद्रेशी-  
 तकरेथवाग्रहयुतेकेमद्रुमोनेप्यते। अन्येषांगर्गादीनामेवंमतम् । केंद्रेजन्मलग्नेकेंद्रे  
 शीतकरेचंद्रेवाभौमादिग्रहयुते भौमादिग्रहविरहितयोरपिचंद्राद्वितीयद्वादश-  
 स्थानयोः केमद्रुमोभवति । केंद्रेग्रहयुतइत्यत्रैकश्चिच्चंद्रैकेंद्रमेवकेवलंव्याख्यातं  
 तच्चायुक्तम् । चंद्रकेंद्रेग्रहयुतेचंद्रमसोपियोगोतर्भवति । शीतकरेग्रहयुतेइत्येतद-  
 पार्थक्यस्यात् । अत्रचभगवान्गार्गिः । व्ययार्थकेंद्रगश्चंद्रादिनाभातुंनचेद्ब्रह्मः ।  
 कश्चित्स्याद्वाविनाचंद्रंलगात्केंद्रगतोयवा ॥ योगःकेमद्रुमोनामनदास्यात्तत्रग-  
 र्हितः । भवंतिनिदिताचारादारिद्र्यापत्तिसंयुताः । तथाचसारावर्याम् । सुनफा-  
 नफादुरुधुराः क्रमेणयोगाभवन्ति रविरहितैः । वित्तांत्योभयसंस्थैः कैरव-  
 वनवांधवादिहगैः । एतेनयदायोगाः केंद्रग्रहवर्जितः शशांकश्च । केमद्रुमो-  
 तिकष्टः शशिनिचसर्वग्रहादृष्टे॥ एवंकेंद्रेशीतकरेऽथवाग्रहयुतेकेमद्रुमोनेप्यते । अ-  
 न्येआचार्यानेच्छन्ति । वराहमिहिरस्तुपुनरिच्छत्येव । यस्मिन्नर्थेतस्यैवतद्वाक्य-  
 म्। अन्यथाकेमद्रुमइत्येवमुक्त्वापरमतमुक्तम्। अन्यैरसौ एवं केंद्रेशीतकरेथवाग्रह-  
 युतेकेमद्रुमोनेप्यते । स्वल्पजातकेपि । तेनसुनफानफादुरुधुराभावेकेमद्रुमउ-  
 क्तः । तथाच । रविवर्ज्यद्वादशगैरनफाचंद्राद्वितीयगैःसुनफा । उभयस्थितै-  
 र्दुरुधुराकेमद्रुमसंज्ञकोतोऽन्यः ॥ सत्यस्यापि । सुनफानफादुरुधुराभावेकेमद्रुमः ।  
 तथाच॥ सुनफात्वनफायोगौदोरुधुरश्चंद्रसंस्थितः क्षेत्रात् । प्राक्पृष्ठतोग्रहेंद्रैरुभ-  
 यगतैस्तेनुरविवर्ज्यम् । केमद्रुमोत्रयोगोऽन्यथाभवेद्यत्रगर्हितंजन्म । केचित्केंद्रन-  
 वांशकेष्विति । केचिदाचार्याः केंद्रेषुकेचिच्चनवांशकेष्वेतद्योगत्रयंवदन्ति । य-  
 थाचंद्राद्वितीयद्वादशोभयस्थैर्ग्रहैः सुनफाद्यायोगाव्याख्याताः । तथाकैश्चि-  
 च्छुतकीर्तिजीवशर्मप्रभृतिभिः केंद्रवशात्त्रवांशकवशाच्चव्याख्याताः । ए-

तदुक्तंभवति । ताराग्रहैश्चन्द्राच्चतुर्थस्थानस्थैःसुनफा । दशमस्थानस्थैरनफा । चतुर्थदशमस्थितैः दुरुधुराअतोऽन्यथाकेमद्रुमः । तथाचश्रुतकीर्तिः । चंद्राच्चतुर्थैःसुनफादशमस्थितैः कीर्तितोऽनफाविहगैः । उभयस्थितैर्दुरुधुराकेमद्रुमसंज्ञितोऽन्यथायोगः । केचित्केन्द्रनवांशकेषुतुवदंति । यत्रतत्रराशौयद्राशिसंबन्धिनवांशकेचंद्रमाभवति । तस्माद्राशेयोद्वितीयोराशिः । तत्रयदिताराग्रहोभवति तदासुनफा । अथचंद्रनवांशकराशेः द्वादशेताराग्रहोभवति तदानफा । अथचंद्रनवांशकराशेः द्वितीयेद्वादशेचयदाग्रहोभवतस्तदादुरुधुरा । अतोऽन्यथाकेमद्रुमः । तथाचचंद्रनवांशकराशितोद्विद्वादशराशीयदिग्रहरहितौभवतः तदाकेमद्रुमः । तथाचजीवशर्मा । यद्राशिसंज्ञेशीतांशुर्नवांशेजन्मनिस्थितः । तद्वितीयस्थितैर्योगःसुनफाख्यःप्रकीर्तितः । द्वादशैरनफाज्ञेयोग्रहैर्द्विद्वादशस्थितैः । प्रोक्तोदुरुधुरायोगोऽन्यथाकेमद्रुमःस्मृतः॥ उक्तिःप्रसिद्धानते येषामेवंविधंमतम् । तेषामुक्तिलोकेनप्रसिद्धा । तन्मतंवृद्धज्यौतिषिकैर्नागीकृतमित्यर्थः ॥ ३ ॥

त्रिंशत्सरूपाः सुनफानफाख्याः षष्टित्रयंदौरुधुरेप्रभेदाः ॥

इच्छाविकल्पैःक्रमशोभिनीयनीतेनिवृत्तिःपुनरन्यनीतिः ॥ ४ ॥

अथसुनफानफादुरुधुराख्यंप्रकारज्ञानमिद्वज्रयाह ॥ त्रिंशत्सरूपाइति । सरूपाद्विंशदेकत्रिंशत् । एकत्रिंशत्सुनफाख्यायोगाः । तावंतएवानफाख्याः । षष्टित्रयमशीत्यधिकम् । शतंदुरुधुराप्रभेदानामेषांपूर्ववद्विकल्पगणितम् । इच्छाविकल्पैरित्यादि । एतच्छ्लोकेलोष्टकप्रस्तारंपूर्वमेवनाभसयोगाध्यायेव्याख्यातम् । इच्छाविकल्पैःक्रमशःपरिपाठ्यान्यत्रलोष्टकमभिनीयनीतेनिवृत्तिः कार्या । पुनःभूयोन्यनीतिरित्यत्रस्थानांतरेचालनम् । अथसुनफादयोभौमबुधशुक्रसितासितैः पंचभिर्निष्पाद्यन्ते । तस्मादिच्छाविकल्पाःपंच तेषान्यासः । अत्रप्राग्बत्पूर्वेण पूर्वेणगणितेनयुक्तस्थानंविनात्यंप्रवदंतिसंख्यामितिकृत्वाजातम् ५।४।३।२।१ अथवाप्राग्वत्संख्यैः स्वसंख्याजाता 

|   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ३ | २ | १ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |

 एवमेकविकल्पाःपंच । द्विविकल्पादश । त्रिविकल्पादश । चतुर्विकल्पाःपंच । पंचविकल्पाएकः । एवमेकत्रिंशत् ५ । १० । १० । ५ । १ । तद्यथा । द्वितायेचंद्राद्भौमःबुधःबृहस्पतिःशुक्रःसौरःएवमेकविकल्पाःपंच । अथद्विविकल्पाः । भौमबुधौ । भौमजीवौ । भौमशुक्रौ । भौमसौरौ । बुधजीवौ । बुधशुक्रौ । बुधसौरौ । जीवशुक्रौ । जीवसौरौ । शुक्रसौरौ । एवंद्विविकल्पाः दश । अथत्रिविकल्पाः । भौमबुधजीवाः । भौमबुधशुक्राः । भौमबुधसौराः । भौमजीवशुक्राः । भौमजीवसौराः । भौमशुक्रसौराः । बुधजीवशुक्राः । बुधजीवसौराः । बुधशुक्रसौराः । जीवशुक्रसौराः । एवंत्रिविकल्पादश १० । अथ



चतुर्विकल्पाः । भौमबुधजीवशुक्राः । भौमबुधजीवसौराः । भौमजीवशुक्रसौराः । भौमबुधशुक्रसौराः । बुधजीवशुक्रसौराः । एवंचतुर्विकल्पाःपञ्च ५ । अथ पञ्चविकल्पाः । भौमबुधजीवशुक्रसौराः । एवंपञ्चविकल्पएकः १ । एवमेकत्रिंशत् ३१ सुनफायोगाःउत्पादिताः । अनेनैवप्रकारेणद्वादशस्थैः अनफाभेदाः एकत्रिंशत् । अथदुरुधुराविकल्पाः । एषांलोष्टकप्रस्ताराभावात्स्वबुद्धयेच्छाविकल्पैः क्रमशोभिनीयेति । न्यायेनव्युत्पत्तिः । एकोद्वितीये । द्वितीयोद्वादशे । एकोद्वादशे । द्वितीयो द्वितीये । तद्यथा । भौमबुधौ १ बुधभौमौ २ भौमजीवौ ३ जीवभौमौ ४ भौमशुक्रौ ५ शुक्रभौमौ ६ भौमसौरौ ७ सौरभौमौ ८ बुधजीवौ ९ जीवबुधौ १० बुधशुक्रौ ११ शुक्रबुधौ १२ बुधसौरौ १३ सौरबुधौ १४ जीवशुक्रौ १५ शुक्रजीवौ १६ जीवसौरौ १७ सौरजीवौ १८ शुक्रसौरौ १९ सौरशुक्रौ २० अथैकोद्वितीये । द्वादशेद्वा । द्वितीयेद्वा । द्वादशेश्चैकः । तद्यथा । भौमःबुधजीवौ १ बुधःजीवभौमौ २ जीवःशुक्रबुधौ ३ बुधःशुक्रभौमौ ४ भौमःबुधसौरौ ५ बुधःसौरभौमौ ६ भौमःजीवशुक्रौ ७ जीवःशुक्रभौमौ ८ भौमःजीवसौरौ ९ भौमःसौरभौमौ १० भौमःशुक्रसौरौ ११ शुक्रःसौरभौमौ १२ बुधःभौमजीवौ १३ जीवःभौमबुधौ १४ बुधःभौमशुक्रौ १५ भौमःशुक्रबुधौ १६ बुधःभौमसौरौ १७ भौमःसौरबुधौ १८ बुधःजीवशुक्रौ १९ जीवःशुक्रबुधौ २० बुधःजीवसौरौ २१ जीवःसौरबुधौ २२ बुधःशुक्रसौरौ २३ शुक्रःसौरबुधौ २४ जीवःभौमबुधौ २५ भौमःबुधजीवौ २६ जीवःभौमशुक्रौ २७ भौमःशुक्रजीवौ २८ जीवःभौमसौरौ २९ भौमःसौरजीवौ ३० जीवःबुधशुक्रौ ३१ बुधःशुक्रजीवौ ३२ जीवःबुधसौरौ ३३ बुधःसौरजीवौ ३४ जीवःशुक्रसौरौ ३५ शुक्रःसौरजीवौ ३६ शुक्रःभौमबुधौ ३७ भौमःबुधशुक्रौ ३८ शुक्रःभौमजीवौ ३९ भौमःजीवशुक्रौ ४० शुक्रःभौमसौरौ ४१ भौमःसौरशुक्रौ ४२ शुक्रःबुधजीवौ ४३ बुधःजीवशुक्रौ ४४ शुक्रःबुधसौरौ ४५ बुधःसौरशुक्रौ ४६ शुक्रःजीवसौरौ ४७ जीवःसौरशुक्रौ ४८ सौरःभौमबुधौ ४९ भौमःबुधसौरौ ५० सौरःभौमजीवौ ५१ भौमःजीवसौरौ ५२ सौरःभौमशुक्रौ ५३ भौमःशुक्रसौरौ ५४ सौरःबुधजीवौ ५५ बुधःजीवसौरौ ५६ सौरःबुधशुक्रौ ५७ बुधःशुक्रसौरौ ५८ सौरःजीवशुक्रौ ५९ जीवःशुक्रसौरौ ६० एवमेकत्रजाताः ८० । अथैकोद्वितीये । द्वादशेत्रयः । तद्यथा । भौमःबुधजीवशुक्राः १ बुधजीवशुक्राः भौमः २ भौमःबुधजीवसौराः ३ बुधजीवसौराः भौमः ४ भौमःबुधशुक्रसौराः ५ बुधशुक्रसौराः भौमः ६ भौमःजीवशुक्रसौराः ७ जीवशुक्रसौराः भौमः ८ बुधःभौमजीवशुक्राः ९ भौमजीवशुक्राः बुधः १० बुधःभौमजीवसौराः ११ भौमजीवसौराः बुधः १२

बुधः भौमशुक्रसौराः १३ भौमशुक्रसौराः बुधः १४ बुधः जीवशुक्र-  
 सौराः १५ जीवशुक्रसौराः बुधः १६ जीवः भौमबुधशुक्राः १७ भौम-  
 बुधशुक्राः जीवः १८ जीवः भौमबुधसौराः १९ भौमबुधसौराः जी-  
 वः २० एवमेकत्र १०० । जीवः भौमशुक्रसौराः १ भौमशुक्रसौराः  
 जीवः २ जीवः बुधशुक्रसौराः ३ बुधशुक्रसौराः जीवः ४ शुक्रः  
 भौमबुधजीवाः ५ भौमबुधजीवाः शुक्रः ६ शुक्रः भौमबुधसौराः ७  
 भौमबुधसौराः शुक्रः ८ शुक्रः भौमजीवसौराः ९ भौमजीवसौराः  
 शुक्रः १० शुक्रः बुधजीवसौराः ११ बुधजीवशुक्राः सौरः १२ सौ-  
 रः भौमबुधजीवाः १३ भौमबुधजीवाः सौरः १४ सौरः भौमबुध-  
 शुक्राः १५ भौमबुधशुक्राः सौरः १६ सौरः भौमजीवशुक्राः १७ भौ-  
 मजीवशुक्राः सौरः १८ सौरः बुधजीवशुक्राः १९ बुधजीवशुक्राः  
 सौरः २० एवमेकत्र १२० । अथद्वितीयैकोद्वादशेचत्वारः । चत्वारोद्विती-  
 येद्वादशेचैकः । तद्यथा । भौमः बुधजीवशुक्रसौराः १ बुधजीवशुक्रसौराः  
 भौमः २ बुधः भौमजीवशुक्रसौराः ३ भौमजीवशुक्रसौराः बुधः ४  
 जीवः भौमबुधशुक्रसौराः ५ भौमबुधशुक्रसौराः जीवः ६ शुक्रः  
 भौमबुधजीवसौराः ७ भौमबुधजीवसौराः शुक्रः ८ सौरः भौमबुधजी-  
 वशुक्राः ९ भौमबुधजीवशुक्राः सौरः १० एवमेकत्र १३० । अथद्वौद्वा-  
 दशेद्वावेवद्वितीये । तद्यथा । भौमबुधौजीवशुक्रौ १ जीवशुक्रौभौमबुधौ २ भौम-  
 बुधौजीवसौरौ ३ जीवसौरौभौमबुधौ ४ भौमबुधौशुक्रसौरौ ५ शुक्रसौरौ भौमबुधौ  
 ६ भौमजीवौशुक्रबुधौ ७ शुक्रबुधौभौमजीवौ ८ भौमजीवौ बुधसौरौ  
 ९ बुधसौरौभौमजीवौ १० भौमजीवौशुक्रसौरौ ११ शुक्रसौरौभौमजीवौ १२  
 भौमशुक्रौबुधजीवौ १३ बुधजीवौभौमशुक्रौ १४ भौमशुक्रौबुधसौरौ १५ बुधसौरौ  
 भौमशुक्रौ १६ भौमशुक्रौजीवसौरौ १७ जीवसौरौभौमशुक्रौ १८ बुधजीवौभौ-  
 मसौरौ १९ भौमसौरौबुधजीवौ २० एवमेकत्र १५० । भौमसौरौ बुधशुक्रौ १  
 बुधशुक्रौभौमसौरौ २ भौमसौरौजीवशुक्रौ ३ जीवशुक्रौभौमसौरौ ४  
 बुधजीवौशुक्रसौरौ ५ शुक्रसौरौबुधजीवौ ६ बुधशुक्रौ जीवसौरौ ७ जी-  
 वसौरौबुधशुक्रौ ८ जीवशुक्रौबुधसौरौ ९ बुधसौरौजीवशुक्रौ १० एवमे-  
 कत्र १६० । द्वौद्वितीयत्रयोद्वादशेद्वादशेद्वौत्रयोद्वितीयेच । तद्यथा । भौम-  
 बुधौ जीवशुक्रसौराः १ जीवशुक्रसौराः भौमबुधौ २ भौमजीवौ बुध-  
 शुक्रसौराः ३ बुधशुक्रसौराः भौमजीवौ ४ भौमशुक्रौ बुधजीवसौ-  
 राः ५ बुधजीवसौराः भौमशुक्रौ ६ भौमसौरौबुधजीवशुक्राः ७ बुध-  
 जीवशुक्राः भौमसौरौ ८ बुधजीवौभौमशुक्रसौराः ९ भौमशुक्रसौराः



बुधजीवौ १० एवमेकत्र १७० । बुधशुक्रौभौमजीवसौराः १ भौमजीव-  
सौराः बुधशुक्रौ २ बुधसौरौभौमजीवशुक्राः ३ भौमजीवशुक्राः बुध-  
सौरौ ४ जीवशुक्रौभौमबुधसौराः ५ भौमबुधसौराः जीवशुक्रौ ६ जी-  
वसौरौभौमबुधशुक्राः ७ भौमबुधशुक्राः जीवसौरौ ८ शुक्रसौरौभौमबुध-  
जीवाः ९ भौमबुधजीवाः शुक्रसौरौ १० एवमेकत्र १८० । एवंदुरु-  
धुरायोगभेदः । शतमशीत्यधिकंप्रदर्शितम् ॥ ४ ॥

स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समोवाभवतिहिसुनफायांधी-  
धनख्यातिमांश्च ॥ प्रभुरगदशरीरःशीलवान्ख्यातकीर्तिर्विष-  
यसुखसुवेषोनिर्वृतश्चानफायाम् ॥ ५ ॥

अथतुलफानकयोर्योगजातस्यस्वरूपविज्ञानंमालिन्याह । स्वयमिति । स्व-  
यमात्मनाधिगतमर्जितंवित्तंयेनस्वबाह्वर्जितधनः पार्थिवोराजाभवति । तत्स-  
मोवा । यदिराजानभवतितदाराजतुल्यः धीधनख्यातिमान् । बुद्धिवित्तकी-  
र्तिर्भिर्युक्तः । एवंविधः सुनफायांयोगेजातोभवति । प्रभुरिति । प्रभुरप्र-  
तिहताज्ञः । अगदशरीरो नीरुजदेहः अविद्यमानागदारोगायस्य । शीलवान्  
दमविनयादिभिर्गुणैर्युक्तः । ख्यातकीर्तिः प्रथितयशाः जनविदितस-  
ङ्गः । विषयसुखः शब्दस्पर्शरूपरसगंधाविषयाः तत्सुखैर्युक्तः । ननुकिंवि-  
षयव्यतिरिक्तसुखमस्ति । उच्यते । अस्ति । यद्योगिनांमनः । सुखंसुवेषः  
अनुलेपनालंकारमाल्यसद्वस्त्रधारणशीलः निर्वृतः मनोदुःखविनिर्मुक्तः एवं-  
विधोऽनफायांयोगेजातोभवति ॥ ५ ॥

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढ्यस्त्यागान्वितोदुरुधुराप्रभवः  
सुभृत्यः॥केमद्रुमेमलिनदुःखितनीचनिःस्वाःप्रेष्याः खलाश्च  
नृपतेरपिवंशजाताः ॥ ६ ॥

अथदुरुधुराकेमद्रुमयोगेजातयोः स्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ उत्पन्नभोग-  
सुखभुगिति । यत्रतत्रयथातथोत्पन्नैर्भोगैः सुखानिभुंक्ते । धनेनवित्तेनवाहनै-  
रशवादिभिराढ्यः त्यागान्वितोदाता सुभृत्यः शोभनभृत्यः । एवंविधोदु-  
रुधुराप्रभवोदुरुधुरायोगेजातोभवति । केमद्रुमइति । मलिनः मलिनवासाः ।  
स्नानालसश्चदुःखितः शरीराद्यैः मानसाद्यैः दुःखैरन्वितः । नीचः स्व-  
कुलानुचिताधमकर्मकरः । निःस्वःदरिद्रः । प्रेष्यः दासकर्मकरः । खलः  
दुर्जनस्वभावः । एषामुक्तार्थानामन्यतमेनयुक्तोयदितृपतेः राज्ञोपिवंशकु-

लेजातः । तथाप्येवंविधः केमद्रुमजातोभवति । केचिदत्रबहुवचनं पठन्ति ।  
केमद्रुमेमलिनदुःखितनीचनिःस्वाः प्रेष्याः खलाश्च नृपतेरपि वंशजाताः ॥ तथा-  
पिनकश्चिदोषः ॥ ६ ॥

उत्साहशौर्यधनसाहसवान्महीजःसौम्यःपटुःसुवचनोनिपुणः  
कलासु ॥ जीवोर्थधर्मसुखभाङ्गनृपपूजितश्चकामीभृगुर्बहुधनो  
विषयोपभोक्ता ॥ ७ ॥

एवंतावत्सुनफानफादिपुसामान्येनफलमभिधायेदानीं ग्रहवशाद्विशेषफलं वसं-  
ततिलकेनाह ॥ उत्साहवान्बलीनित्योद्यमशीलः । शौर्यवान्रणप्रियः । धनवा-  
न्वित्तान्वितः । साहसवान्समीक्षितकार्यकरः । यद्यत्कार्यं यदाकाले त्वविचार्यक-  
रोतियः ससाहसिकः । एवंविधोमहीजो गारकोयदियोगकर्ता भवति । तदा  
जातोभवति । पटुः दक्षः । सुवचनः शोभनवाक् । कलासु निपुणः गीतवाद्य-  
नृत्यचित्रपुस्तककर्मादिषु मूढमदृष्टिः । यदि सौम्यो बुधो योगकरः तदैवं वि-  
धोजातोभवति । अर्थभाक् धनानां भाजनः । धर्मभाक् धर्मक्रियास्वनुरतः ।  
सुखभाक् नित्यसुखितः । नृपपूजितः राज्ञां मान्यः । यदि जीवो बृहस्पतिः  
योगकरः । तदैवं विधोजातोभवति । कामी कामुकः स्त्रीलोलः । बहुधनः  
प्रभूतार्थः । विषयोपभोक्ता विषयाणामिन्द्रियार्थानामुपभोक्ता उपभोग-  
शीलः तत्सुखान्वितः । यदि भृगुः शुक्रो योगकरस्तदैवं विधोजातोभवति ॥ ७ ॥

परविभवपरिच्छदोपभोक्ता रवितनयो बहुकार्यकृद्गणेशः ॥ अशु-

भकृदुडुपोऽहिदृश्यमूर्तिर्गलिततनुश्च शुभोऽन्यथान्यदूह्यम् ॥ ८ ॥

अथ शनैश्चरे योगकर्तरि पुरुषस्य स्वरूपं चंद्रमसि च दृश्यादृश्ये जातस्य स्वरूपज्ञा-  
नं पुष्पिताग्रयाह ॥ परार्जितानां विभवानामैश्वर्याणां परिच्छदानां गृहवस्त्रवा-  
हनपरिवाराणामुपभोक्ता भवति । बहुकार्यकृद्गणेशः विधानां कार्याणां कर्ता ।  
गणेशः बहुगणस्वामी गणाः संघाः तेषां प्रभुः । एवंविधो रवि-  
तनयः शनैश्चरो योगकरो यदि भवति तदा जातो भवति । अत्र योगत्रये-  
सुनफानफादुरुधुराख्ये एकैकस्य ग्रहस्य फलमुक्तं व्यादिसंभवे फलं व्यादिकं वाच्यम् ।  
अशुभकृदिति । उडुपश्चंद्रो हि दिने दृश्यमूर्तिः दृश्यमानशरीरः । अशुभकृद  
निष्ठफलकर्ता । एतदुक्तं भवति । दिवा जन्मनि चंद्रमादृश्ये च क्राद्धे स्थितः  
अशुभं फलं करोति स पुरुषोदारिद्र्यादि युक्तो भवतीत्यर्थः । गलिततनुरदृश्यमूर्तिः  
शुभः । एतदुक्तं भवत्यदृश्ये च क्राद्धे स्थितः शुभकृजात एश्वर्यादि युक्तो भवति ।  
अन्यथान्यदूह्यम् । उक्तप्रकारादन्यथास्थे चंद्रमसि फलमन्यदूह्यं स्वबुद्ध्या वि-



कल्पनीयम् । एतदुक्तंभवति । रात्रौजन्मन्यदृश्येचक्रार्द्धे यस्यचंद्रोभवति तस्याशुभंजन्म । यस्यदृश्येचक्रार्द्धेचंद्रोभवतितस्यशुभंजन्म भवतीत्यर्थः ॥८॥

लग्नादतीववसुमान्वसुमाञ्छशांकात्सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः स  
मस्तैः ॥ द्वाभ्यांसमोलपवसुमांश्चतदूनतायामन्येष्वसत्स्वपि  
फलेष्विदमुत्कटेन ॥ ९ ॥

इतिचंद्रयोगाऽध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

अथलग्नाच्चंद्राद्वयस्योपचयेसौम्यग्रहाभवंतितस्यफलंवसंततिलकेनाह ॥ ल-  
गादिति । यस्यजन्मनिलग्नोत्सौम्यग्रहाः बुधजीवसिताउपचयगताभवंति  
सर्वेएव सपुरुषोऽतीववसुमानत्यर्थधनवान्भवति । यस्यशशांकाच्चंद्रादप्युपचये  
सर्वेएवसौम्यग्रहाः भवंति सोपिधनवान्भवति । एवंसमस्तैः त्रिभिरेत-  
त्फलम् । द्वाभ्यांसमः । यस्यलग्नाच्चंद्राद्वौग्रहौसौम्यावुपचयगतौभवतः सस-  
मोमध्यधनोभवति नातिबहुधनोभवतीत्यर्थः । तदूनतायामिति । तदूनतायां  
लग्नाच्चंद्राद्वयस्यैकः सौम्यग्रहः उपचयगतोभवति सोलपवसुमान्किंचिद्ध-  
नान्वितोभवति । अर्थादेवलग्नोच्चंद्राद्वयस्योपचयेनकश्चित्सौम्यग्रहोभवति  
सदरिद्रोभवति । यस्यलग्नचंद्रयोर्द्वयोरपिसौम्यग्रहाउपचयस्थाः कयापियु-  
क्त्याभवंति सोप्यतीववसुमान्भवति । अन्येष्वसत्स्वपिफलेष्विति । अन्येष्व-  
परेष्वसत्स्वशोभनेष्वपिफलेषुसत्स्विदंफलमुत्कटेनबाहुल्येनभवति । एतदुक्तंभ-  
वति । यस्यलग्नाच्चंद्राद्वयउपचयस्थाः सौम्यग्रहाभवंति । तस्यान्ययोगमशु-  
भमपिकेमद्रुमादिफलमभिभूयेदंशुभमेवफलमुत्कटत्वेनप्रावर्त्येनभवतीति ॥९॥  
इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांवृहज्जातकविवृतौचंद्रयोगाऽध्यायस्त्रयोदशःसमाप्तः ॥ १३ ॥

तिग्मांशुर्जनयत्युपेशसहितोयंत्राश्मकारंनरंभौमेनावरतंबुधे-  
ननिषुणंधीकीर्तिसौख्यान्वितम् ॥ क्रूरंवाक्पतिनान्यकार्य-  
निरतंशुक्रेणरंगायुधैर्लब्धस्वरविजेनधातुकुशलंभांडप्रका-  
रेषुवा ॥ १ ॥

अथद्विग्रहयोगाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादित्येचंद्रादियुक्तेजातस्यस्वरूपं  
शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ तिग्मांशुरिति । तिग्मांशुरादित्यः उपेशेनचंद्रमसास-  
हितोयुक्तः उपारात्रिः उषायाईशः उपेशः रात्रिनाथः नरंमनुष्यंयंत्राश्मकारं  
जनयति । यंत्राणिसहस्रधातिप्रभृतीन्यश्मानः पाषाणाः तत्क्रियासुतत्कर्मसु  
निरतंसक्तंतकरोति । एवंभौमेनसहैकराशिगतोकोऽधरतंपापासक्तंजनयति ।

बुधेनक्रियासुनिपुणंमूक्षमदृष्टिं धीकीर्तिसौख्यान्वितं धीर्बुद्धिः कीर्तिः यशः सौ-  
ख्यं सुखं सुखभावः । एतैरन्वितं संयुक्तं वाक्पतिना गुरुणा क्रूरं विषमस्वभावमन्य-  
कार्यनिरतं परकर्मतत्परं जनयति । शुक्रेण रंगा युधैः रंगावतरणक्रियया मल्लादि-  
कयाऽयुधैः खड्गादिभिश्च लब्धस्वंप्राप्तार्थं जनयति । रविजेन शनैश्चरेण धातुपुता-  
म्राद्युत्पत्तिमृत्तिकासु गैरिकाद्यासु वा धातुषु कुशलं निपुणं भांडप्रकारेषु समुद्रादय-  
स्तेषु कुशलं वा ॥ १ ॥

कूटख्यासवकुंभपण्यमशिवं मातुः सवक्रः शशीसज्ञः प्रसृतवा-  
क्यमर्थनिपुणं सौभाग्यकीर्त्यान्वितम् ॥ विक्रांतं कुलमुख्यम-  
स्थिरमर्तिवित्तेश्वरं सांगिरावस्त्राणां ससितः क्रियादिकुशलं सा-  
र्किः पुनर्भूसुतम् ॥ २ ॥

अथ भौमादियुक्ते चंद्रे जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीतेनाह ॥ कूटइति । कूटं प-  
ण्यद्रव्याणां प्रतिरूपक्रियासक्तं स्त्रीपण्यं नारीविक्रयकम् । आसवपण्यं पानविक्रयकं  
कुंभपण्यं घटविक्रयकम् । अशिवमश्रेयस्करम् । मातुः जनन्याः एवंविधः शशीचंद्रमाः  
सवक्रो वक्रेणांगारकेण युक्तो न रंजनयति । सज्ञइति । प्रसृतवाक्यं प्रियंवदम् । अर्थनिपु-  
णमर्थेषु सूक्ष्मदृष्टिं सौभाग्येन सर्वजनवल्लभेन कीर्त्या यशसान्वितं संयुक्तम् । सज्ञो बु-  
धसहितः शशीन रंजनयति । विक्रांतं शत्रुजेतारं । कुलमुख्यं वंशप्रधानम् । अस्थि-  
रमर्तिचपलं वित्तेश्वरं धनस्वामिनं । सांगिराः अंगिरसा गुरुणा संयुक्तः शशीन रं  
जनयति । वस्त्राणां क्रियादिकुशलं तं तु वायकम् । आदिग्रहणात्सीवन रंजनक्रयवि-  
क्रमेष्वपि कुशलं । ससितः शुक्रेण संयुक्तः शशीन रंजनयति । क्रियादिकुशलं सर्व-  
क्रियासु निपुणम् । सार्किः अर्किणा शनैश्चरेण युक्तः द्विः संस्कृता पुनर्भूः तस्याः  
सुतं पुत्रं शशीन रंजनयति । पुनर्भूलक्षणं । परिणीतापतिं हित्वा सवर्णकामतः  
श्रेयत् । अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृता पुनः ॥ २ ॥

मूलादिस्नेहकूटैर्व्यवहरति वाणिग्वाहुयोद्धाससौम्ये पुर्यध्यक्षः  
सजीवे भवति नरपतिः प्राप्तवित्तो द्विजो वा ॥ गोपो मल्लो थदक्षः  
परयुवति रतो द्यूतकृत्सासुरेज्ये दुःखातोऽसत्यसंधः ससवितृत-  
नये भूमिजे निंदितश्च ॥ ३ ॥

अथांगारके बुधादियुक्ते जातस्य स्वरूपं स्रग्धरयाह ॥ मूलादीति । ससौम्ये भू-  
मिजे बुधयुक्ते गारके जातो वाणिग्भवति । स च वणिङ् मूलादिभिः व्यवहरति । मू-  
लादीनि मूलपुष्पवल्कलसारफलानि । स्नेहास्तैलादयः एतैर्व्यवहरति । कूटैश्च



द्रव्यप्रतिरूपैः कृत्रिमैर्व्यवहरति । बाहुयोद्धानियुद्धकुशलश्चभवति । एवंविधः  
ससौम्येसौम्येनबुधेनयुक्तेभूमिजेजातोभवति । पुर्यध्यक्षः नगराधिकृतः । पु-  
रिअध्यक्षः पुर्यध्यक्षः । स्वामीअथवानरपतिः राजाभवति । अथवाद्विजोत्रा-  
ह्मणःप्राप्तवित्तोलब्धधनः । केचित्प्राप्तविद्यइतिपठन्ति । सजीवेगुरुसंयुक्तेभौमे  
जातोभवति । गोपःगोपालकः । मल्लःबाहुयोद्धा । अथशब्दःपादपूरणे । दक्षः  
चतुरः । परयुवतिरतः परस्त्रीसक्तः । द्यूतकृत्कितवः । सासुरेज्ये असुरैरी-  
ज्यः असुरेज्यः तेनअसुरेज्येनशुकेणयुक्तेभूमिजेजातएवंविधोभवति । दुःखा-  
र्तःदुःखपीडितः । असत्यसंधः असत्येनसंधाप्रतिज्ञायस्य अनृतभाषीनिदि-  
तःकुत्सितोसूययायुक्तःससवितृतनये सवितृतनयेनसौरेणयुक्तेभूमिजेजातो  
भवति ॥ ३ ॥

सौम्येरंगचरोबृहस्पतियुतेगीतप्रियोनृत्यविद्वाग्मीभूगणपः

सितेनमृदुनामायापटुर्लघुकः॥सद्विद्योधनदारवान्वहुगुणःशु-

केणयुक्तेगुरौज्ञेयःश्मश्रुकरोऽसितेनघटकृज्जातोऽन्नकारोपिवा॥४॥

अथबुधेजीवादियुक्तेजीवेचशुक्रादियुक्तेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥  
सौम्येरंगचरइति । रंगचरोमल्लादिकः । गीतप्रियः गीतवल्लभः । नृत्यविन्नृत्य-  
ज्ञः।एवंविधःसौम्येबुधेबृहस्पतिनायुक्तेजातोभवति । प्रशस्तावाग्यस्य सवाग्मी  
वचनक्रिययापरप्रत्यायनसमर्थः । भूगणपः । भुवश्चगणानांसंधानामधिपतिः ।  
एवंविधोबुधेसितेनशुकेणसहिते जातोभवति । मायापटुःपरवचनदक्षः । लघ-  
कः गुरुवचनातिक्रामी । एवंविधोमृदुनाशनैश्चरेणसहितेबुधेजातोभवति ।  
सद्विद्यइति । सद्विद्यःशोभनविद्यः । धनदारवान् वित्तकलत्रसंयुक्तः । बहु-  
गुणः प्रभूतगुणैः शौर्यादिभिर्युक्तः । एवंविधोगुरौजीवेशुकेणयुक्तेजातोभव-  
ति । श्मश्रुकरीनापितः । अथवाघटकृत्कुंभकारः । अथवान्नकारःसूपकारः ।  
एवंविधोऽसितेनसौरेणयुक्तेगुरौजातोज्ञेयोविज्ञातव्यः ॥ ४ ॥

असितसितसमागमेलपचक्षुर्युवतिसमाश्रयसंप्रवृद्धवित्तः॥भव-

तिचलिपिपुस्तचित्रवेत्ताकथितफलैःपरतोविकल्पनीयाः॥५॥

इति द्विग्रहयोगाऽध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

अथशुक्रशनैश्चरयुक्तेजातस्यस्वरूपंत्रिग्रहयोगफलंचपुष्पिताग्रयाह ॥ असित  
इति । अल्पचक्षुरल्पदृष्टिः । युवतिसमाश्रयेणस्त्रीसंश्रयणेनसम्यक्प्रवृद्धंवित्तंध-  
नंयस्य ९ सयुवतिसमाश्रयसंप्रवृद्धवित्तः । लिपिरक्षरविन्यासः । पुस्तकलेखकर्म  
चित्रमालेख्यम् । एषांवेत्तातज्ज्ञः । एवंविधः असितसितसमागमेशनैश्चरस्य

शुक्लेणसंयोगेजातः पुरुष एवंविधोभवति । यदिराशिद्वयेद्वौग्रहयोगौभवतः । तच्चद्विग्रहयोगद्वयस्यापिफलंवक्तव्यम् । अथराशित्रयेद्विग्रहयोगत्रयंभवति । तदाद्विग्रहयोगत्रयस्यापिफलंवाच्यम् । कथितफलैरिति । द्वाभ्यांपरतोऽपरेऽन्येत्रयोग्रहाः यदैकगताभवन्ति तदाकथितफलैरुक्तफलैरेवं विकल्पनीयाः । तदाद्विग्रहयोगत्रयस्थंफलंवाच्यम् । यद्यर्कचंद्रभौमाएकराशिस्थाभवन्ति । तदार्कचंद्रयोगेयत्फलमुक्तम् । यच्चादित्यांगारकयोगेफलंयच्चंद्रांगारकयोगेफलंतत्फलत्रयमपिवाच्यम् । एवंयथासंभवमन्यत्रापिग्रहत्रयस्यैकराशिगतस्यफलंवक्तव्यम् । यद्येकराशौद्विग्रहयोगोऽन्यत्रत्रिग्रहयोगोवाभवतस्तदासर्वाणिफलानिवाच्यानीति ॥ ५ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायां बृहज्जातकविवृत्तौ द्विग्रहयोगाऽध्यायश्चतुर्दशः समाप्तः ॥ १४ ॥

### अथ प्रव्रज्यायोगाध्यायप्रारंभः ॥

एकस्थैश्चतुरादिभिर्वलयुतैर्जाताः पृथग्वीर्यगैः शाक्याजीविकभिर्भुवृद्धचरकानिर्ग्रथवन्याशनाः ॥ माहेयज्ञगुरुक्षपाकरसितप्राभाकरीनैः क्रमात्प्रव्रज्याबलिभिः समाः परजितैस्तत्स्वामिभिः प्रच्युतिः ॥ १ ॥

अथातः प्रव्रज्यायोगाऽध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवचतुरादिभिरेकस्थैः ग्रहैः जातस्य प्रव्रज्यायोगं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ एकस्थैरिति । एकस्मिन्यत्रतत्रराशौचतुरादयोग्रहाभवन्ति । चत्वारः पंचषट्सप्तवाभवन्ति तैरेकस्थैश्चतुरादिभिः बलयुतैः वीर्यवद्भिः माहेयादिभिः जाताः संभूताः शाक्यादिकाः प्रव्राजकाः भवन्ति । किंतुचतुरादिभिः बलयुतैरेकाप्रव्रज्याभवति । तदर्थमाह ॥ पृथग्वीर्यगैः तैश्चबलिभिः वीर्यगैः सबलैः । पृथक्पृथक्प्रव्रज्याभवन्ति । एतदुक्तंभवति । चतुरादीनामेकस्थानां मध्याद्यद्येकोबलवान् भवति तदाजातस्यैकैवप्रव्रज्याभवति । अथचतुरादीनामेकस्थानां मध्यान्नकश्चिद्बली भवति तदाजातस्यप्रव्रज्यानभवति । अथद्वौबलिनौभवतस्तदाजातस्यप्रव्रज्याद्वयमेवभवति । यदाबहवोबलिनस्तदाबह्व्यः प्रव्रज्याभवन्ति । एवमेकस्थैश्चतुरादिभिर्वलयुतैः जाताः प्रव्रज्याभाजोभवन्ति । यस्मादुक्तम् । प्रव्रज्याबलिभिः समाः । ताश्चपृथग्वीर्यगैः माहेयादिभिः भौमाद्यैः शाक्याद्या भवन्ति । तद्यथा । चतुरादीनामेकस्थानां मध्याद्यदामाहेयोभौमोबलवान्भवति तदाजातः शाक्योरुक्तपटोभवति । एवंज्ञेबुधेबलवति आजीविकोभवति । आजीविकश्चैकदंडीभिर्भुः यतिर्भवति । गुरौबलवति । क्षपाकरश्चंद्रो यदाबलवान्तदावृद्धः वृद्धावकः कापालिकः । वृत्तभंगभयाच्छावकशब्दोन्नल्लुप्तोदृष्टव्यः ।



सितेशुकेवलवतिचरकः चक्रधरः । प्राभाकरिःसौरः तस्मिन्बलवतिनिर्ग्रयः  
नम्रः । क्षपणकःप्रावरणरहितइत्यर्थः । इनेआदित्येबलवतिवन्याशनः मूलफ-  
लाशनस्तपस्वीभवति । एवंक्रमात्क्रमशः परिपाट्याएतेप्रव्रज्यापर्यायाः ।  
एतेवंकालकमताद्याख्याताः । तथाचवंकालकाचार्यः । तावसिओदिणगाहेचंदे  
कावालिओतहाभणिओ । रत्तवडोभूमिसुवेसोमसुवेएअदंडीआ । देवगुरुशुक्को-  
णक्कमेणजईचरअखवणाई । अस्यार्थः । तावसिओतापसिकः । दिणगाहे  
दिननाथेसूर्ये । चंदेचंद्रे । कावालिओकापालिकः । तहाभणिओ तथाभणितः ।  
रत्तवडोरत्तपटः । भूमिसुवेभूमिसुते । सोमसुवेसोमसुतेबुधे । एअदंडीआ एक-  
दंडी । देवगुरुर्बृहस्पतिः । शुक्कशुक्रः । कोणः शनैश्चरः । क्कमेणक्रमेण । जई  
यतिः । चरअचरकः । खवणाईक्षपणकः । अत्रबृद्धश्रावकग्रहणंमाहेश्वराश्रितानां  
प्रव्रज्यानामुपलक्षणार्थम् । आजीविकग्रहणंचनारायणाश्रितानाम् । तथाचवंकाल-  
केसंहितांतरेपठ्यते । जलणहरसुगअकेसवसूईबह्मण्णणग्गमग्गेषु । दिक्खाणं  
णाअव्वासुराइग्गहक्कमेणणाहगआ । जलणज्वलनः सामिकइत्यर्थः । हरईश्वर-  
भक्तः । भट्टारकः । सुगअसुगतः बौद्धइत्यर्थः । केसव केशवभक्तः । भाग-  
वतइत्यर्थः । सूईश्रुतिमार्गगतः मीमांसकः । बह्मण्णब्रह्मभक्तः । वानप्रस्थः ।  
णग्गोनम्रःक्षपणकः । मग्गेषुमार्गेषु । दिक्खाणं दीक्षाणां । णाअव्वाज्ञातव्याः ।  
सुराइग्गहा सूर्यादिग्रहाः । क्कमेणक्रमेण । णाहगआ नाथगताः । एवंचतुरादीना-  
मेकस्थानांमध्याद्यावंतोबलिनः तावंत्यएवप्रव्रज्याभवन्ति । तत्रापिप्रथमावी-  
र्याधिकस्य संबंधिनीप्रव्रज्याभवति । यस्मात्स्वल्पजातकेउक्तम् । चतुरादिभिरे-  
कस्थैःप्रव्रज्यांस्वांग्रहःकरोतिबली । बहुवीर्यैस्तावद्भयःप्रथमावीर्याधि-  
कस्यैव । तापसःबृद्धश्रावकरत्तपटाजीविभिश्चरकाणांनिर्ग्रथानांचेति । वीर्यो-  
पचयक्रमेणान्यासांक्रमः । एवंबलिभिः समाःप्रव्रज्याःबलिनोग्रहस्ययादृश्येवतद्ब-  
लानुसारेणप्राप्नोतिपरिपालयतिऊनबलस्यमनाङ्गनाप्नोतिपालयति । पराजि-  
तैस्तत्स्वामिभिःप्रच्युतिरिति । शाक्यादिप्रव्रज्यास्वामिभिर्ग्रहैः पराजितैर-  
न्यैर्ग्रहैःयुद्धेविजितैःप्रच्युतिःप्रव्रज्यात्यागः । तत्प्रव्रज्यांगृहीत्वापुनस्त्यजति ।  
एतदुक्तंभवति । चतुरादीनांमध्याद्यद्येकोबलवान्भवति । सचग्रहयुद्धेअन्येनग्र-  
हेणजातककालेपराजितस्तदाप्रव्रज्यांगृहीत्वापुनस्त्यजति । त्यक्त्वाचप्रव्र-  
ज्यामनाश्रित्यैवतिष्ठति । अथचतुरादीनांमध्याद्यैर्बहवोवाबलिनोभवन्ति ।  
तेचपराजितास्तदातस्यावश्यमेवसर्वाभ्यःप्रव्रजाभ्यः च्युतिर्भवति । यस्माद्ब-  
लवद्बृहसंख्यास्तेनप्रव्रज्याःकर्तव्याः । अंत्यप्रव्रज्याधिपतिर्यद्यन्येनग्रहेणजि-  
तो नभवति तदातामेवप्रव्रज्यामाश्रितोम्रियते । अथप्रव्रज्यादायकोग्रहएकए-  
वजितोनभवति । तदायावज्जीवंतामेवप्रव्रज्यामाश्रयति । अथद्वौग्रहौप्रव्रज्या-

दायकौतौचापराजितौ । तदाप्रथमप्रव्रज्यादायकांतर्दशायां प्रथमां प्रव्रज्यांगृहीत्वातामेवाश्रित्यतावत्तिष्ठति । यावद्वितीयप्रव्रज्यादायकग्रहां-  
तर्दशाप्रवेशः । तत्रप्रथमांत्यक्त्वाद्वितीयामाश्रयति । एवं बहुषु प्रव्रज्यासु संभवे  
योज्यम् । अत्र च सत्याचार्यः । तेष्वधिकबलीजीवस्त्रिदंदिनेभार्गवश्चरकमुख्यम् ।  
नम्रश्रमणंसौरोबुधस्तदाजीविकाचार्यम् ॥ वृद्धश्रावकमिदुर्दिवाकरस्तापसंतपो-  
युक्तम् । वक्रः शाक्यः श्रवणक्षेत्राश्रयजंगुणाश्चैतान् ॥ वीर्योपेतत्पतनावदीक्षि-  
ताभक्तिवादिनस्तेषाम् । अन्यैः पराजितश्चेत्प्रव्रज्याप्रच्युतिं कुर्यात् ॥ यावंतो  
वीर्ययुताः प्रव्रज्याभवंति तावंत्यः । एकक्षेपेण नियमात्तेषामाद्यावल्लोपेतात् ॥ १ ॥

रविलुप्तकरैरदीक्षितावलिभिस्तद्गतभक्तयो नराः ॥

अभियाचितमात्रदीक्षितानिहतैरन्यनिरोक्षितैरपि ॥ २ ॥

अथास्तमितान्यजितान्यदृष्टानां ग्रहाणामपवादंवैतालीयेनाह ॥ रविलुप्तकरै-  
रिति । चतुरादीनामेकस्थानां मध्याद्यावंतो ग्रहावलिनस्तावंतः स्वप्रव्रज्यादा-  
यकास्तत्रापि बलिनां मध्ये यावंतो रविलुप्तकराः सूर्यमंडलगा अस्तमिता भवंति  
तैरदीक्षिता जाता भवंति । तावंतः स्वकीयाः प्रव्रज्यां प्रयच्छन्तीत्यर्थः ।  
किंतु जातानराः तद्गतभक्तयः तद्गतानां तत्प्रव्रज्याप्रविष्टानां मध्ये भक्ता भ-  
वंति । अत्र रविलुप्तकरत्वमुदयास्तमयंगणयित्वाऽन्वेष्यम् । शुक्रगुरुज्ञार्किंकुजाः  
कालांशैरुत्तरोत्तरैः नवभिर्दश्यादृश्यादृक्कर्मणा रवेः द्वादशभिर्दि-  
रित्येवमादिकर्मणि कृते कदाचिदादित्येन सहैकराशिगतैरपि नास्तमितो भवति ।  
कदाचित् द्वितीयराशिस्थोऽप्यस्तमितो भवति । एवमुदयास्तमयमन्वेष्ट्यास्त-  
मितफलं वाच्यम् । अभियाचितमात्रदीक्षिता इति । बलिभिरित्यनुवर्तते ।  
बलिभिर्निहतैः ग्रहयुद्धेन्यग्रहविजितैरन्यैश्च ग्रहैर्निरोक्षितैर्दृष्टैः अभिया-  
चितमात्रदीक्षिताः दीक्षाप्रार्थनपरा भवंति । न च तां प्राप्नुवंति ।  
पूर्वमुक्तं पराजितैस्तत्स्वामिभिः प्रच्युतिरित्यस्यायमपवादः । तेनै-  
तदुक्तं भवति । बलिग्रहो ग्रहयुद्धेन्येन विजितो भवति । न केनचिद्दृश्यते  
तदा तत्प्रव्रज्यांगृहीत्वा पुनस्त्यजति । अथ बलीग्रहः समागमनेन ग्रहेण वि-  
जितो भवत्यन्येन च दृश्यते तदा प्रव्रज्यां प्रार्थ्यमानोऽपि न प्राप्नोति । य-  
स्य च प्रव्रज्याप्रच्युतिः जाता तस्य तदवसाने बहुष्वंतर्दशासु चारवशाद्य-  
स्मिन्नंतर्दशाकाले बलवान् भविष्यति तस्मिन्काले प्रव्रज्यां दास्यति । तथा चोक्तम् ।  
दीक्षादानसमर्थोऽयं भवति तदा बलेन संयुक्तः । तस्यैव दशाकाले दीक्षां लभते नरोऽ-  
वश्यम् । यस्य च दीक्षाच्यवनं तस्यैव दशावसाने स्यात् । एवं जातककाले संचित्य  
बलाबलं वाच्यम् ॥ २ ॥



जन्मेशोन्यैर्यद्यदृष्टोर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपंवाबलोनम् ॥ दी-  
क्षांप्राप्नोत्यार्किदृक्काणसंस्थेभौमाक्यैशेसौरदृष्टेचचंद्रे ॥ ३ ॥

अथचतुरादिभिरेकस्थैर्विनाप्रव्रज्यायोगंमालिन्याह ॥ जन्मेशइति । जन्मनि  
यस्मिनराशौचंद्रः स्थितस्तस्ययोधिपतिर्ग्रहःसजन्मेशः । सचयद्यन्यै-  
र्ग्रहैरदृष्टोनावलोकितः । नकेनचिद्ग्रेहेणदृश्यतेतथाभूतोसावर्कपुत्रंशनैश्चरंपश्य-  
ति तदाजातस्यप्रव्रज्याभवति । साचशनैश्चरकृताशनैश्चरजन्मेशयोः  
योबलवांस्तदीयांतर्दशाकाले । उक्तंच । यस्यैक्षतेर्कपुत्रंजन्मभनाथोग्रहैर्नसंदृष्टः।  
तस्यहिदीक्षालाभोतडलयोगाद्दशाकाले । पश्यत्यार्किरिति । अथवार्किः सौरः  
सबलोजन्मराश्यधिपंवलोनंवीर्यराहितंपश्यति।तथापिशनैश्चरोक्तप्रव्रज्यांवदति।  
उक्तंच । शनिदृष्टेबलिहीनेजन्मनिनाथेवदेच्चनिर्ग्रथम् । दीक्षांप्राप्नोतीति।यत्रतत्र  
राशौचंद्रेशशिन्यार्किर्द्रेष्काणसंस्थेसौरद्रेष्काणव्यवस्थितेनकेवलंयावद्भौमाक्यै-  
शेकुजसौरयोरन्यतमनवांशकस्थेतस्मिंश्च सर्वग्रहादृष्टेशनैश्चरेणक्षमाणेदीक्षांप्रा-  
प्नोति । शनैश्चरोक्तप्रव्रज्यांव्रजति । तथाच । सौरद्रेष्काणसंस्थोयदिभवतिश-  
शीतदंशसंस्थश्च । वक्रांशेवादृष्टःसौरेणतुसर्वदर्शनविमुक्तः । निर्ग्रथसंज्ञोयोर्कपु-  
त्रवीर्यानुसारेण । जन्माधिपतिःपापैरपिनिरीक्षितस्त्वेकईक्षतेसौरः । यस्यपुरुष-  
स्यभूतौनियतादीक्षिताभवंति तस्यजन्माधिपतिंविबलंनिरीक्षते।यस्यमूर्यजःस-  
बलःसोपिखलुभाग्यहीनः प्रव्रज्यांप्राप्नुयाज्जातः । माद्येकौजैवांशिशशी  
स्थितःकृष्णजेद्रेष्काणेवा।अंशाधिपानुरूपेकालेदीक्षाप्रदोभवति । अत्रयोगत्रये-  
पि पूर्वापवादाअनुवर्तनीयाः ॥ ३ ॥

सुरगुरुशशिहोरास्वार्किदृष्टासुधर्मेगुरुरथनृपतीनांयोगजस्ती-  
र्थकृत्स्यात् ॥ नवमभवनसंस्थेमंदगेन्यैरदृष्टेभवतिनरपयोगे  
दीक्षितःपार्थिवेन्द्रः ॥ ४ ॥

इतिबृहज्जातकेप्रव्रज्यायोगाध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥

अथयेनयोगेनजातः शास्त्रकरोभवति । येनचराजापिदीक्षितोभवति त-  
द्योगद्वयंमालिन्याह ॥ सुरगुरुरिति । सुरगुरुः जीवः । शशीचंद्रः।होरालग्नम् ।  
एतासुसुरगुरुशशिहोरासु । आर्किणाशनैश्चरेणदृष्टासुअवलोकितासु । धर्मेनव-  
मेस्थानेगुरुः जीवोयदिभवति । अथशब्दःपादपूरणे । नृपतीनांयोगजः  
कश्चिद्राजयोगोजातस्यभवति । तदासपुरुषः तीर्थकृच्छास्त्रकृत्स्याद्भवेत् ।  
काणादबुद्धपांचशिखवराहमिहिरब्रह्मगुप्तप्रतिमइति । सुरगुरुशशिहोरास्विति ।  
धन्विमीनकर्कटलग्नैकैश्चिद्व्याख्यातम्।तच्चायुक्तम्।यस्मान्मांडव्यः। गतेमंदालो-

कंगुरुशशिविलग्रेनवमगेगुरौनिष्पद्यन्तेनइहनृपयोगेनृपतयः । विजृम्भन्तेयेपाल-  
टहरचनारंभसुभगाजगत्यांयेविद्वद्गुणकथनपाषाणसदृशाः। तथाचोक्तम् । गुरुश-  
शिलग्रादृष्टाकोणेनतुनवमगोयादगुरुः । नरनाथजन्मजातःशास्त्रकरोभवतिन  
चनृपः । अथद्वितीयोराजयोगस्तत्रोपस्थानंकरोति तदाराजाभवति। तीर्थकर-  
श्चजिनककाशिराजस्कुजिध्वजप्रतिमइति । उक्तं च । अस्मिन्योगेचान्योनृप-  
योगोभवति तत्रयोजातः । सभवतिजिनेन्द्रतुल्योनरनाथःशास्त्रकर्ताच । न-  
वमभवनसंस्थेमंदगेमंदगच्छतीतिमंदगः सौरः तस्मिन्मंदगेऽग्रात्रवमभवन-  
संस्थेधर्मस्थानाश्रितेन्यैः सर्वैर्ग्रहेरदृष्टेनावलीकृते । तथानरपयोगेराजयो-  
गानांमध्यादन्यतमेराजयोगेसतिजातोदीक्षितः । प्रव्रजितः। पार्थिवेन्द्रश्चराजा-  
धिराजोभवति । पश्चात्तत्कालंसर्ववलीतदीक्षायांदीक्षितश्चभवति । राज-  
योगंविनायमपिप्रव्रज्यायोगः । योगेस्मिन् राजयोगजश्चेजातोराजादी-  
क्षितश्चभवति । अन्यथादीक्षितएव । उक्तं च । नवमस्थानेसौरोयदिस्थितः  
सर्वदर्शनविमुक्तः । नरनाथयोगजातो नृपोपिदीक्षान्वितोभवति ॥ नृपयोगस्या-  
भावेयोगेस्मिन्दीक्षितोनरोजातः। निःसंदिग्धंप्रवदेद्योगस्यास्यप्रभावेनेति ॥४॥  
इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौप्रव्रज्यायोगाध्यायः पंचदशःसमाप्तः॥१५॥

### अथ ऋक्षशीलाध्यायः ॥

प्रियभूषणःसुरूपःसुभगोदक्षोश्वेनोषुमतिमांश्च॥

कृतनिश्चयसत्यारुदक्षःसुखितश्चभरणीषु ॥ १ ॥

अथऋक्षशीलाध्यायोव्याख्यायते । ऋक्षंनतत्रंराशिश्च । तत्रादावेवचंद्रभु-  
ज्यमाननक्षत्रशीलंभवति । तत्राधिश्रीभरणयोः जातस्य शीलविज्ञानमार्य-  
याह ॥ प्रियभूषणइति । प्रियभूषणः अलंकरणवद्भूषणः । सुरूपः शोभन-  
रूपः वपुष्मान् । सुभगः सर्वजनप्रियः । दक्षः सर्वकार्यकरणपटुः ।  
मतिमान् बुद्धियुक्तः । एवंविधोऽधिश्रीषुजातोभवति । तारकापेक्षयात्रसर्वत्र  
बहुवचननिर्देशः कृतः । कृतनिश्चयइति । कृतनिश्चयः प्रारब्धानांकर्मणा-  
मंतगः । सत्यः सत्यवाक् । अरुक्नीरुजः । दक्षःचतुरः । सुखितः दुःखनि-  
र्मुक्तः । एवंविधोभरणीषुजातोभवति ॥ १ ॥

बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वीकृतिकामुविख्यातः॥

रोहिण्यांसत्यशुचिः प्रियंवदःस्थिरमतिःसुरूपश्च ॥ २ ॥

अथकृतिकारोहिण्योर्जातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ बहुभुक्प्रभूताहारः । परदा-  
ररतः परस्त्रीष्वासक्तः । तेजस्वीअसहिष्णुः । विख्यातः सर्वत्रप्रसिद्धकीर्तिः ।



एवंविधः कृत्तिकासुजातोभवति । सत्यः अवितथभाषी । शुचिः  
परस्वाद्यलुब्धः शास्त्रोक्तशौचानुष्ठाता । प्रियंवदः मधुरवाक् । स्थिर-  
मतिः एकमतिः । सुरूपश्चवपुष्मान् । एवंविधः रोहिण्यांजातोभवतीति ॥ २ ॥

चपलश्चतुरोभीरुःपटुरुत्साहीधनीमृगेभोगी ॥

शठगर्वितःकृतघ्नोहिंस्रःपापश्चरौद्रक्षे ॥ ३ ॥

अथमृगशीर्षाद्रियोः जातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ चपलइति । चपलः  
क्रियास्वनवास्थितः । चतुरः दक्षः । भीरुः भयार्तः । पटुः प्रवक्ता । उत्साहीसो-  
द्यमः । धनीवित्तवान् । भोगीसंभोगशीलः । एवंविधोमृगेमृगशिरसिजातोभ-  
वति । शठः परकार्यविमुखः । उक्तंचग्रंथांतरे शठलक्षणं-मनसावचसायश्चदृश्य-  
तेकार्यतत्परः । कर्मणाविपरीतश्चसशठःसद्भिरुच्यते । गर्वितः मानी । कृ-  
तघ्नः खलः कृतमुपकृतंहंतियः सकृतघ्नः । हिंस्रः वधकः । पापः पाप-  
कर्मकर्ता । एवंविधोरौद्रक्षेआर्द्रायांजातोभवतीति ॥ ३ ॥

दांतःसुखीसुशीलोदुर्मेधारोगभाक्पिपासुश्च ॥

अल्पेनचसंतुष्टःपुनर्वसौजायतेमनुजः ॥ ४ ॥

अथपुनर्वसौजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ दांतःशमपरः तपःक्लेशसहः । सुखी  
सुखितः । सुशीलः शोभनशीलः विनयवान् । दुर्मेधाजडप्रायः । रोगभा-  
क्पीडितदेहः । पिपासुः तृषार्तः । अल्पेनस्तोकेनैवार्थेनसंतुष्टः । एवंविधोमनु-  
जोमनुष्यः पुनर्वसौजायतेउत्पद्यते ॥ ४ ॥

शांतात्मासुभगःपंडितोधनीधर्मसंसृतःपुण्ये ॥

शठसर्वभक्षपापःकृतघ्नधूर्तश्चभौजंगे ॥ ५ ॥

अथपुण्याश्लेषयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ शांतात्मेति । शांतात्मा  
शमदमपरोजितेंद्रियः । सुभगः सर्वजनप्रियः । पंडितःशास्त्रार्थवित् । धनीवि-  
त्तवान् । धर्मसंसृतः धर्मनिरतः । एवंविधः पुण्यजोभवति । शठः  
परकार्यविमुखः । सर्वभक्षः संचयनशीलः । पापःपापकर्मरतः । कृतघ्नः  
कृतमुपकृतंहंतिसकृतघ्नः । धूर्तःपरवंचनदक्षः । एवंविधोभौजंगेआश्लेषायांजा-  
तोभवति ॥ ५ ॥

बहुभृत्यधनोभोगीसुरपितृभक्तोमहोद्यमःपित्र्ये ॥

प्रियवाग्दाताद्युतिमानटनोनृपसेवकोभाग्ये ॥ ६ ॥

अथमघापूर्वाफाल्गुन्योः जातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ बहुभृत्यइति । बहु-  
भृत्यधनः प्रभृतपरिवारवित्तान्वितः । भोगीभोगान्वितः । सुरपितृभक्तः  
देवानांपितृणांचभक्तः । महोद्यमः महोत्साही । एवंविधः पितृभक्त्याजातोभवति  
प्रियवाक् अभिमतवक्ता । दातादानशीलः । द्युतिमान्सुकांतिः । अटनः  
परिभ्रमणशीलः । नृपसेवकः राजसेवानुरतः । एवंविधोभाग्यपूर्वाफाल्गु-  
न्यांजातोभवति ॥ ६ ॥

सुभगोविद्याप्तधनोभोगीसुखभाग्द्वितीयफाल्गुन्याम् ॥

उत्साहीधृष्टः पानपोघृणीतस्करोहस्ते ॥ ७ ॥

अथोत्तराफाल्गुनीहस्तयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ सुभगइति । सुभगः  
सर्वजनाप्रियः । विद्याप्तधनः विद्यायाः आप्तधनंयेन । भोगीभोगान्वितः । सुख-  
भागदुःखरहितः । एवंविधोद्वितीयफाल्गुन्यामुत्तराफाल्गुन्यांजातोभवति ।  
उत्साहीसोद्यमः । धृष्टः प्रतिभायुक्तः । निर्लज्जोवा । पानपः पानप्रियः आसदानुरक्तः ।  
अघृणीनिर्दयः । तस्करः चोरः । एवंविधोहस्तेजातोभवति ॥ ७ ॥

चित्रांवरमाल्यधरः सुलोचनांगश्चभवतिचित्रायाम् ॥

दांतोवणिकृपालुः प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ ॥ ८ ॥

अथचित्रास्वात्योजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ चित्रांवरमाल्यधरः चित्राणि  
नानाप्रकाराणिअंबराणिवस्त्राणिमाल्यानिचधारयति । सुलोचनांगः शोभना  
नेत्रावयवायस्य । एवंविधः चित्रायांजातोभवति । दांतोविनयान्वितः ।  
जितेंद्रियः । वणिकृत्रयविक्रयज्ञः । कृपालुः दयालुः । केचित्तृपालुरितिपठंति ।  
तृपालुः तृपानसहते । प्रियवाक् अभिमतवक्ता । धर्माश्रितः धर्मरतः । एवं-  
विधः स्वातौजातोभवति ॥ ८ ॥

ईर्ष्युर्लुब्धोद्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशखासु ॥

आढ्योविदेशवासीक्षुधालुरटनोऽनुराधासु ॥ ९ ॥

अथविशखानुराधयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ ईर्ष्युरिति ईर्ष्युः परादि-  
मत्सरी । लुब्धः लोभाभिभूतः । द्युतिमान्सुकांतिः । वचनपटुः संभाषणदक्षः ।  
केचिदर्थपटुरितिपठंति । अर्थाजनेपटुः प्रवीणः । कलहकृद्विरोधशीलः । एवंविधो  
विशखासुजातोभवति । आढ्यः ईश्वरः । विदेशवासी परदेशनिवसनशीलः । क्षु-  
धालुः क्षुधानसहते । अटनः परिभ्रमणशीलः । एवंविधोऽनुराधासुजातोभवति ॥ ९ ॥



ज्येष्ठासुनवहुमित्रःसंतुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोपः ॥

मूठेनानीधनवान्सुखीनहिंस्रःस्थिरभोगी ॥ १० ॥

अथज्येष्ठाभूलयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ नवहुमित्रःस्वरूपमुहत् । संतुष्टः संतोषशीलः । धर्मकृद्दमनुरतः । प्रचुरकोपः अतिक्रोधी । एवंविधोज्येष्ठासु जातोभवति । मानीगर्वितः । धनवान्प्रभूतवित्तः । सुखीसुखितः । नहिंस्रःसौम्य-  
प्रकृतिः । परविघातनकरोति । स्थिरःएकप्रतिः । भोगीभोगान्वितः । एवंवि-  
धोमूलेजातो भवति ॥ १० ॥

इष्टानंदकलत्रोमानीदृढसौहृदश्चजलदैवे ॥

वैश्वेविनीतधार्मिकबहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च ॥ ११ ॥

अथपूर्वोत्तराषाढयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ इष्टानंदकलत्रइति । इष्टमभि-  
मतमानंदजनकं कलत्रंभार्यायस्य । मानीगर्वितः । दृढसौहृदः स्थिरमुहत् ।  
एवंविधोजलदैवेपूर्वाषाढायांजातोभवति । विनीतःविनयसंयुक्तः । धार्मिकः  
धर्मज्ञः । बहुमित्रः प्रभूतमुहत् । कृतज्ञःप्रचुरकारशीलः । सुभगश्चसर्वजन-  
प्रियः । एवंविधोवैश्वदेवे उत्तराषाढायांजातोभवति ॥ ११ ॥

श्रीमान्श्रवणेश्रुतवानुदारदारोधनान्वितःख्यातः ॥

दाताआढ्यःशूरोगीतप्रियोधनिष्ठासुधनलुब्धः ॥ १२ ॥

अथश्रवणधनिष्ठयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ श्रीमान्श्रियायुक्तः । श्रुतवा-  
न्पंडितः । उदारदारः उदारादारायस्य शोभनस्त्रीकः । धनान्वितः  
वित्तवान् । ख्यातःजनविदितकीर्तिः । एवंविधःश्रवणेजातोभवति । दातादा-  
नशीलः । आढ्यःईश्वरः । शूरः रणप्रियः । गीतप्रियःगीतवल्लभः । धनलुब्धः  
अर्थरुचिः । एवंविधोधनिष्ठासुजातोभवति ॥ १२ ॥

स्फुटवाग्व्यसनीरिपुहासाहसिकःशतभिषजिदुर्ग्राह्यः ॥

भाद्रपदासूद्विग्रःस्त्रीजितधनीपटुरदाताच ॥ १३ ॥

अथशतभिषक्पूर्वाभाद्रपदयोजातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ स्फुटवाक्सत्यवा-  
दी । व्यसनीरुयादिव्यसनोपहतः । रिपुहाशत्रुघातकः । साहसिकः अस-  
मीक्षितकार्यकृत् । दुर्ग्राह्यः दुराराध्यः । एवंविधः शतभिषजिजा-  
तोभवति । उद्विग्रः दुःखितमनाः । स्त्रीजितः स्त्रीभिरभिभूतः । धनी  
धनवान् । अथवास्त्रियाजितंधनंयस्य । पटुः प्रवक्ता । अथवाधनपटुः

धनार्जनेचतुरः । अदाताकर्दर्यः । एवंविधः पूर्वाभाद्रपदासुजातोभवति ॥ १३ ॥

वक्तासुखीप्रजावाञ्जितशत्रुधार्मिकोद्वितीयासु ॥

संपूर्णांगः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे ॥ १४ ॥

इति बृहज्जातकेऋक्षशीलाध्यायः ॥ १६ ॥

अथोत्तराभाद्रपदारेवत्योर्जातस्यस्वरूपमार्ययाह ॥ वक्तावचनपटुः संभाषणेदक्षः । सुखीविद्यमानसुखः । प्रजावान्वहुपुत्रपौत्रः । जितशत्रुः जितारिः । धार्मिकः धर्मशीलः । एवंविधोद्वितीयासूत्तराभाद्रपदासुजातोभवति । संपूर्णांगः परिपूर्णावयवः । सुभगः सर्वजनप्रियः । शूरः संग्रामधीरः । शुचिः परधनादिष्वलुब्धः । अर्थवान् धनान्वितः । एवंविधः पौष्णरेवत्यां जातोभवति । एतेयथोक्तानक्षत्रस्वभावाश्चंद्रस्यसबलत्वात्परिपूर्णा भवन्ति ॥ १४ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतावृक्षशीलाध्यायः ॥ १६ ॥

अथ राशिशीलाध्यायारंभः ॥

वृत्ताताम्रदृग्गुणशाकलघुभुक्क्षिप्रप्रसादोऽटनः कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽंगनावल्लभः ॥ सेवाज्ञः कुनखी व्रणांकितशिरामानी सहोत्थाग्रजः शक्त्यापाणितलेऽंकितोऽतिचपलस्तोयेभीरुः क्रिये ॥ १ ॥

अथातो राशिशीलाध्यायो व्याख्यायते । अथ मेषस्थे चंद्रमसि जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ वृत्तेति । वृत्ते परिवर्तुले आताम्रे लोहितवर्णे दृष्टी चक्षुषी यस्य स वृत्ताताम्रदृक् परिवर्तुललोहितनेत्रः । उष्णं शाकं लघु च स्वरूपं भुंक्ते स उष्णशाकलघुभुक् । उष्णभोजी शाकभोजीलघुभोजी । क्षिप्रप्रसादः आश्वेव प्रसीदति । अटनः परिभ्रमणशीलः । कामी सुरतप्रियः । दुर्बलजानुः निर्मासलजंघासंधिः । अस्थिरधनः अचिरवित्तः । शूरः रणप्रियः । अंगनावल्लभः स्त्रीप्रियः । अंगनानांवल्लभोऽंगनावल्लभायस्य । सेवाज्ञः पराराधनकुशलः । कुनखी कुत्सितनखः । व्रणांकितशिराः सच्छिद्रमूर्द्धा । मानी गर्वितः । सहोत्थाग्रजः सहोत्थानां सहजातानामग्रणीर्गुणप्रधानः । पाणितले हस्ततले सचिद्विशेषेणांकितः चिह्नितः । अतिचपलः । क्रियास्वनवस्थितः । तोये च जले भीरुः सभयः । एवंविधः क्रियेमेषस्थिते चंद्रमसि जातो भवति ॥ १ ॥

कांतः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्य पार्श्वोऽंकितस्त्यागी क्लेशसहः प्रभुः कुकुदवान्कन्याप्रजः श्लेष्मलः ॥ पूर्वैर्बधुधनात्मजैर्विरहितः



सौभाग्ययुक्तः क्षमी दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसुहृन्मध्यांत्य-  
सौख्ययोगवि ॥ २ ॥

अथ वृषस्थे चंद्रमसि जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ कांत इति । कांतः दर्शनीयः । खेलगातिः सविलासगामी । पृथूरुवदनः पृथुविस्तीर्णावूरुवदनं मुखं यस्यापृष्ठं पश्चिमभागः । आस्यं वक्रं पार्श्वे प्रसिद्धे एषामन्यतमस्थाने कितश्चित्तः । त्यागी दाता । क्लेशसहः कदर्थना समर्थः । प्रभुरप्रतिहताज्ञः । ककुदवान् ककुदसंयुक्तः । कन्याप्रजः कन्याप्रजायस्य स्त्रीजनकः । श्लेष्मलः कफाधिकः । पूर्वैः प्रथमैः बंधुभिः कुटुंबैः धनैः वित्तैः आत्मजैः पुत्रैश्च विरहितः वियुक्तः । सौभाग्ययुक्तः सर्वजनवल्लभः । क्षमी क्षमावान् । सहिष्णुरित्यर्थः । दीप्ताग्निः बद्धाग्नी । प्रमदाप्रियः स्त्रीवल्लभः । स्थिरसुहृद्वद्वदमित्रः । मध्यांत्यसौख्यः । मध्ये यौवनेत्येव बृद्धत्वे च सुखितः । अर्थादेव बाल्ये दुःखितः । एवं विधोगविवृषस्थे चंद्रे जातो भवति ॥ २ ॥

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलस्ताम्रेक्षणः शास्त्रविद्वूतः कुंचित-  
मूर्द्धजः पटुमतिर्हास्ये गितयूतवित् ॥ चार्वंगः प्रियवाक् प्रभक्ष-  
णरुचिर्गीतप्रियो नृत्यवित् क्लीबैर्यातिरतिसमुन्नतनसश्चंद्रे तृती-  
यक्षणे ॥ ३ ॥

अथ मिथुनस्थे चंद्रमसि जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्त्रीलोल इति । स्त्रीलोलः स्त्रीष्वभिलाषकरः । सुरतोपचारकुशलः सुरतोपचारे सुरतकर्मणिकामशास्त्रेषु कुशलः शिक्षितः । ताम्रेक्षणः लोहितनेत्रः । शास्त्रविच्छास्त्रज्ञः पंडितः । दूतः परेच्छया गमनागमनशीलः । कुंचितमूर्द्धजः कुटिलशिरोरुहः । पटुमतिश्चतुरधीः अतीवप्राज्ञः । हास्यमुपहासम् इंगितं परचिच्छानं चूतं प्रसिद्धम् एतानि वेत्ति जानाति । चार्वंगः शोभनावयवः । प्रियवागभिमतवक्ता । प्रभक्षणरुचिः बहुभुक् । गीतप्रियः गीतरतिः । नृत्यविनृत्यज्ञः । क्लीबैः षंडैः सहरतियातिगच्छति । समुन्नतनस उन्नतनासिकः । एवं विधश्चंद्रे तृतीयक्षणे तृतीयराशौ स्थिते मिथुनगे जातो भवतीत्यर्थः ॥ ३ ॥

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृदैवज्ञः प्रचुरा-  
लयः क्षयधनैः संयुज्यते चंद्रवत् ॥ ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं  
साभ्रासुहृद्वत्सलस्तोयोद्यानरतः स्ववेदमसहिते जातः शशां-  
केनरः ॥ ४ ॥

अथकर्कटस्थेचंद्रमसिजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ आवक्रैति ।  
 आवक्रंकुटिलंद्रुतं सत्वरंगच्छतीति आवक्रद्रुतगःकुटिलसत्वरगामी । ससु-  
 न्नतकटिःउच्चजघनः । स्त्रीनिर्जितः प्रमदाजितः । सत्सुहृच्छोभनमित्रः । दैवज्ञः  
 ज्योतिःशास्त्रार्थवेत्ता । प्रचुरालयःप्रभृतगृहकर्ता । क्षयधनैरपचयोपचयैश्चंद्रव-  
 च्छशिवत्संयुज्यते । कदाचिद्विधनइत्यर्थः । चंद्रक्षयवृद्धिवत् । ह्रस्वः अदीर्घः ।  
 पीनगलः मांसलकंठः । साम्नाप्रीत्यावशं वश्यतांसमेतियाति । सुहृद्वत्सलः  
 मित्रवल्लभः । तोयोद्यानरतः जलोपवनसक्तः । तोयेजलेउपवनेउद्यानेचरतः ।  
 एवंविधः स्ववेश्मसहितैकर्कटस्थेशशांकेचंद्रेनरःपुरुषः जातोभवति ॥ ४ ॥

तीक्ष्णस्थूलहनुर्विशालवदनःपिंगेक्षणोलपात्मजःस्त्रीद्वेषीप्रिय-  
 मांसकानननगःकुप्यत्यकार्यैचिरम् ॥ क्षुत्तृष्णोदरदंतमानसरु-  
 जासंपीडितस्त्यागवान्विक्रांतःस्थिरधीः सुगर्वितमनामातु-  
 विधेयोऽर्कभे ॥ ५ ॥

अथसिहस्थेचंद्रमसिजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ तीक्ष्णइति ।  
 तीक्ष्णः अमर्षशीलः । स्थूलहनुः वृद्धहनुः बृहत्कपोलः । विशालवदनो  
 विस्तीर्णवक्त्रःपिंगेक्षणः कपिलनेत्रः । अल्पात्मजः स्वल्पापत्यः । स्त्रीद्वेषी  
 प्रमदाद्विद् । स्त्रीद्वेषेति केचित्पठन्ति । प्रियमांसकानननगः मांसमाभिषंकान-  
 नमरण्यनगः पर्वतः एतेप्रियायस्य । आभिषवनपर्वतानुरतः । अकार्यैअकर-  
 णीयेथैकुप्यतिक्रुध्यति । चिरंचहुकालम् । केचिदकांडेइतिपठन्ति । अकांडेअकाले ।  
 क्षुत्प्रसिद्धा । तृष्णापिपासाउदरंजठरंदंतादशनाः मनश्चित्तमेभ्योजातारुजः  
 पीडास्ताभिःसंपीडितउपतप्तः । त्यागवान्दाता । विक्रांतःपराक्रमशीलः ।  
 स्थिरधीरेकमतिः । गर्वितमनाः अभिमानसंयुक्तः । मातुर्विधेयो जननीवश्यः  
 भक्तइत्यर्थः । विधेयोवचनग्राहीत्यमरः । एवंविधोर्कभेसूर्यराशौ सिंहस्थेचं-  
 द्रेजातोभवति ॥ ५ ॥

ब्रीडामंथरचारुवीक्षणगतिःस्रस्तांसबाहुःसुखीश्लक्ष्णःसत्य-  
 रतःकलासुनिपुणःशास्त्रार्थविद्वार्मिकः ॥ मेधावीसुरतप्रियः  
 परगृहैर्वितैश्चसंयुज्यतेकन्यायांपरदेशगःप्रियवचाःकन्याप्र-  
 जोल्पात्मजः ॥ ६ ॥

अथकन्यागतेचंद्रमसिजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ ब्रीडामंथर-  
 चारुवीक्षणगतिरिति । ब्रीडालज्जातयायन्मंथरत्वमलसत्वंतेनचारुशोभनवीक्ष-



णंदृष्टिपातोगतिः गमनंचयस्य । स्रस्तावधः पतितौ शिथिलावंसौ स्कंधौ वा ह्यभु-  
जौ यस्य । सुखी सुखितः । श्लक्ष्णः मृदुवाक् तनुकायो वा । सत्यरतः सत्यभाषी । धार्-  
मिकश्च परमार्थवादी । कलासु निपुणः । कलासु नृत्यगीतवाद्यपुस्तकचित्रकर्मसु  
निपुणः सुज्ञः । शास्त्रार्थवित्पंडितः । धार्मिकः धर्मानुरतः । मेधावी बुद्धिमान् ।  
सुरतप्रियः कामलोलुपः । परगृहैः परवेश्मभिः वित्तैर्धनैश्च संयुज्यते । सम्यग्युक्तो  
भवति । परदेशगः अन्यदेशनिवासशीलः । प्रियवचाः प्रियभाषी । कन्याप्रजः क-  
न्याप्रजायस्य स्त्रीजनकः । अल्पात्मजः स्वल्पपुत्रः । एवंविधः कन्यायां स्थिते चंद्रे-  
जातो भवति ॥ ६ ॥

देवब्राह्मणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः प्रांशुश्चोन्नतना-  
सिकः कृशचलद्वात्रोटनो रथान्वितः ॥ हीनांगः क्रयविक्र-  
येषु कुशलो देवद्विनामा सरुग्बंधूनामुपकारकृद्विरुषितस्त्यक्त-  
स्तुतैः सप्तमे ॥ ७ ॥

अथ तुलास्थे चंद्रमसि जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ देवेति । देवब्रा-  
ह्मणसाधुपूजनरतः । देवानां सुराणां ब्राह्मणानां द्विजानां साधूनां सज्जनानां च पूजने  
रतः सक्तः । प्राज्ञः मेधावी अत्र मेधाबुद्धिः । प्रज्ञालक्षणम्-अतीतानुस्मृतिर्मेधाबुद्धि-  
स्तत्कालग्राहिणी । शुभाशुभविचारज्ञाप्रज्ञाधीरैरुदाहता । शुचिः परधनाद्यलुब्धः  
श्रोत्रियो वा । स्त्रीजितः योषितां वशगः । प्रांशुरत्युच्चः । उन्नतनासिकः अत्यु-  
न्नतनासः । कृशचपलगात्रः दुर्बलशिथिलावयवः कृशंदुर्बलंचपलंबलही-  
नंगाग्रंशरीरयस्य अटनः परिभ्रमणशीलः । अर्थान्वितः सधनः । ही-  
नांगः अपरिपूर्णावयवः । क्रयेषु विक्रयेषु च कुशलः शक्तः । देवाद्विनामा स-  
भ्यपर्यायद्वितीयाभिधानः द्वितीयनाम देवाख्यं चास्य भवति । सरुक्पी-  
डितदेहः । बंधूनां स्वकुटुंबानामुपकारकृद्वितकारी । तैश्च बंधुभिः विरुषितः  
भर्त्सितः पराभूतः । त्यक्तः त्यजितश्च । एवंविधः सप्तमे तुलास्थे चंद्रमसि  
जातो भवति ॥ ७ ॥

पृथुलनयनवक्षावृत्तजंघोरुजानुर्जनकगुरुविद्युक्तः शैशवे व्या-  
धितश्च ॥ नरपतिकुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टोऽज्ञपकुलिशखगांक-  
श्छन्नपापो लिजातः ॥ ८ ॥

अथ वृश्चिकस्थे चंद्रमसि जातस्य स्वरूपं मालिन्याह ॥ पृथुलेति । पृथुल-  
नयनवक्षाः । पृथुले विस्तीर्णेन नयनेनेत्रे वक्षउरो यस्य । वृत्ते परिवर्तुले जंघे ऊरू

जानुनीचयस्य । जनकैः मातृपितृभिः । गुरुभिश्चोपदेशकारिभिः । गौरव-  
युक्तैश्चविद्युत्तोरहितः । शैशवेबाल्येव्याधितः पीडितः । नरपतिकुलेराज्ञां  
वंशेपूज्यः आराध्यः । पिंगलः कपिलः । क्रूरचेष्टः विषमस्वभावः । झष-  
कुलिशखगांकः झषोमीनः कुलिशंवच्चं खगः पक्षीएतैर्मत्स्यवज्रपक्षिसमानैरं-  
कैश्चिह्नैरंकितश्चिह्नितः । छन्नपापः गुप्ताशुभकृत् । एवंविधोलिनिवृश्चिकस्थेचंद्रे  
जातोभवति ॥ ८ ॥

व्यादीर्घास्यशिरोधरःपितृधनस्त्यागीकविर्वीर्यवान्वक्तास्थू-  
लरदश्रवाधरनसःकर्मोद्यतःशिल्पवित् ॥ कुब्जांसःकुनखीस-  
मांसलभुजःप्रागल्भ्यवान्धर्मविद्वंधुद्विट् नवलात्समेतिचवशं-  
साम्रैकसाध्योऽवजः ॥ ९ ॥

अथधनुर्धरस्थेचंद्रेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ व्यादीर्घास्येति ।  
व्यादीर्घास्यशिरोधरः । व्यादीर्घमतिदीर्घमास्यंमुखंशिरोधराग्रीवाचयस्य ।  
पितृधनः जनकवित्तान्वितः । त्यागीदाता । कविः काव्यज्ञः । वीर्यवा-  
न्वली । वक्तासंभाषणेदक्षः । स्थूलरदश्रवाधरनसः स्थूलामहत्प्रमाणारदादंताः  
श्रवसीकर्णौअधरओष्ठः नसः नासिकाघ्राणः एतेसर्वेवस्थूलायस्य । कर्मोद्य-  
तः सर्वकार्याणामुद्यमशीलः । शिल्पवित् शिल्पज्ञः लिपिपुस्तकचित्र-  
ज्ञः । कुब्जांसः अस्पष्टस्कंधः । कुनखीकुत्सितनखः । समांसलभुजः  
पीनबाहुः । प्रागल्भ्यवान् अतिप्रतिभायुक्तः । धर्मवित् धर्मज्ञः । वंधुद्विट् वंधू-  
नामप्रीतिभाक् । द्वेष्टावलात् हठादाक्रमणात् वशंसंविधेयतांवश्यतानंसमेति  
नायाति साम्राप्रीत्याएकैर्नैवगुणेनसाध्यः स्वीक्रियते । एवंविधोश्चजोधनुषिस्थि-  
तेचंद्रेजातोभवति ॥ ९ ॥

नित्यंलालयतिस्वदारतनयान्धर्मध्वजोधः कृशः स्वक्षः  
क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोलसः ॥ शीतालुर्मनुजोऽ  
टनश्चमकरेसत्त्वाधिकः काव्यकृल्लुब्धोगम्यजरांगनासुनिरतः  
संत्यक्तलज्जोदृष्टः ॥ १० ॥

अथमकरस्थेचंद्रेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ नित्यंलालयतीति ।  
नित्यंलालयतिस्वदारतनयान् स्वकलत्रंतनयांश्चपुत्रान् लालयति आराधयति  
प्रीत्याभजते । धर्मध्वजः दांभिकः मिथ्याधार्मिकः । अधः कृशः अधोभागा-  
दतिदुर्बलः । स्वक्षः शोभननेत्रः । क्षामकटिः कृशजघनः । गृही-



तवचनः उक्तग्राहकः । यदुच्यतेतत्सकृदेवगृह्णाति । सौभाग्ययुक्तः  
 सर्वजनप्रियः । अलसः क्रियास्वपटुः । शीतालुः शीतंनसहते ।  
 अटनः परिभ्रमणशीलः । सत्वाधिकः उदारचेष्टः । बलाधिकोवा ।  
 काव्यकृत् विद्वान् । लुब्धः लोभाभिभूतः । अगम्यास्वगमनीयासुनि-  
 कृष्टजातिपुजरदंगनासु वृद्धस्त्रीपुनिरतः संसक्तः । संत्यक्तलज्जः वि-  
 सुक्तव्रीडः । अघृणः निर्दयः । एवंविधोमनुजोमनुष्योमकरस्थेचंद्रमसि  
 जातोभवति ॥ १० ॥

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः पृथुचरणोरुपृ-  
 ष्टजघनास्यकटिर्जरठः ॥ परवनिताथपापनिरतः क्षयवृद्धि-  
 युतः प्रियकुसुमानुलेपनसुहृद्वटजोध्वसहः ॥ ११ ॥

अथकुंभस्थेचंद्रेजातस्यस्वरूपंत्रोटकेनाह ॥ करभगलइति । करभगलः  
 उष्ट्रसमग्रीवः । शिरालुः शिरासंततः । खरा कर्कशालोमायस्याःसालो-  
 मशदीर्घाऽत्युच्चातनुः शरीरंयस्य । पृथुविस्तीर्णौचरणौपादौ तथा  
 ऊरुजानूपरिभागौ पृष्ठंदेहपश्चिमभागो जघनं नितंबस्थानमास्यंसुखंकटिश्च  
 वस्तिः यस्यसः पृथुचरणोरुपृष्ठजघनास्यकटिः । तथाजरठः मूर्खः  
 परवनितासुपरस्त्रीपुपरार्थेषुपापेचनिरतः सक्तः । क्षयवृद्धियुतः उपचया-  
 पचयैर्युक्तः । प्रियकुसुमानुलेपनसुहृत् । कुसुमानिपुष्पाणि अनुलेपनंसमालं-  
 भनं सुहृदोमित्राणिप्रियाणियस्य । अध्वसहः पथिक्षमः । एवंविधोघ-  
 टजः कुंभस्थेचंद्रमसिजातोभवति ॥ ११ ॥

जलपरधनभोक्तादारवासोनुरक्तः समरुचिरशरीरस्तुंगना-  
 सोबृहत्कः॥अभिभवतिसपत्नान्स्त्रीजितश्चारुदृष्टिर्द्युतिनिधि-  
 धनभोगीपंडितश्चांत्यराशौ ॥ १२ ॥

अथमीनस्थेचंद्रमसिजातस्यस्वरूपंमालिन्याह ॥ जलपरधनभोक्तेति ।  
 जलपरधनभोक्ता । जलधनानामुदकोत्पन्नवित्तानांमुक्ताफलानांक्रयविक्रय-  
 जातानांपरधनानांचभोक्तास्वामी । दारवासोनुरक्तः दारेषुकलत्रेषुविष-  
 येषुवासांसिवस्त्राणिपेतेषुचानुरक्तः । समरुचिरशरीरः समंतुल्यंसर्वावयव-  
 परिपूर्णं रुचिरंदीप्तिमच्छरीरंयस्य । तुंगनासोऽत्युच्चनासिकः । बृहत्कः  
 विस्तीर्णमूर्द्धा । अभिभवतिसपत्नान् सपत्नान् शत्रून् अभिभव-  
 ति पराभवति । स्त्रीजितः प्रमदावशगः । चारुदृष्टिः शोभनाक्षः ।

द्युतिनिधिधनभोगी द्युतिः कांतिः निधिः भूमावधःस्थापितोऽर्थो निधिशब्देनो-  
च्यते धनं वित्तमेषां भोगी भोक्ता । पंडितश्च शास्त्रार्थवित् । एवं विधोऽन्तराशौमी-  
नस्थे चंद्रमसि जातो भवति ॥ १२ ॥

बलवतिराशौ तदधिपतौ च स्वबलयुतः स्याद्यदितुहिनांशुः ॥

कथितफलानामविकलदाता शशिवदतो न्येत्यनुपरिचिंत्याः ॥ १३ ॥

इति बृहज्जातके चन्द्रराशिशीलाध्यायः ॥ १७ ॥

अथोक्तराशिस्वरूपमपवादं च भ्रमरविलसितेनाह ॥ बलवतिराशाविति ।  
पुरुषस्य जन्मसमये यस्मिन् राशौ चंद्रमा व्यवस्थितस्तस्मिन् बलवतिसबले तथा त-  
स्य च राशे योऽधिपतिस्तस्मिन् तदधिपतौ च बलवति । तथा तुहिनांशुश्चंद्रमाः स च य-  
दि स्वबलेनात्मीयेन वीर्येण पूर्वोक्तेन संयुतो न्वितः स्याद्भवेत् । एवमेतेषु त्रिषु यदि  
सबलत्वं विद्यते तदा यथोक्तराशिस्वरूपं जातः पुरुषो भवति । यत उक्तं क-  
थितफलानामविकलदातेति । अनया सामर्थ्या स चंद्रः कथितफलानामुक्तस्व-  
रूपाणामविकलानां परिपूर्णानां दाता भवति । एषां मध्याह्नयोर्वलवतोर्मध्ये युक्तं  
स्वरूपं प्राप्नोति । एकस्मिन् बलवति हीनं किंचित् । न कस्मिंश्चिद्बलवतितदुक्तं  
स्वरूपं न किंचिद्भवति । शशिवदत इति । अतोस्माच्चंद्रादन्ये परिशिष्टा ये ग्रहाः  
रविभौमज्ञगुरुसितसौराः । शशिवच्चंद्रवत् परिकल्प्याः । यत्र राशौ स्थिता भ-  
वंति तदा श्रयेण वक्ष्यमाणं स्वरूपं दास्यंति । तदपि चंद्रवत् । एतदुक्तं भवति ।  
बलवतिराशौ । तदधिपतौ च । बलवतियस्य ग्रहस्य राशिस्वरूपं पठ्यते तस्मि-  
न् अपि बलवतितदधिपतौ च संपूर्णं तत्पठितं राशिस्वरूपं भवति । यद्येकयोश्च बल-  
वतोर्मध्यमो न भित्तिन कस्मिंश्चिद्बलवति । नैतं किंचिदिति । चंद्रराशि-  
स्वभाव इति ॥ १३ ॥

इति बृहज्जातके चन्द्रराशिशीलाध्यायः सप्तदशः ॥ १७ ॥

प्रथितश्चतुरोटनोल्पवित्तः क्रियगेत्वायुधभृद्वितुंगभागे ॥ ग-

विवस्त्रसुगंधपण्यजीवीवनिताद्विट्कुशलश्च गेयवाद्ये ॥ १ ॥

अथ मेषवृषगतेर्केजातस्य स्वरूपमौपच्छंदसिकेनाह ॥ प्रथितः प्रख्यातः  
चतुरः दक्षः । अटनः परिभ्रमणशीलः । अल्पवित्तः स्तोकार्थः । आयुधभृद्  
शस्त्रधारणजीवी । एवं विधः क्रियगे मेषस्थे भानावादित्ये जातो भवति । एत-  
च्च फलं वितुंगभागे यदितत्रैव मेषस्थः आदित्यः । परमोच्चस्थो भवति । तुंग-  
भागं परमोच्चं वर्जयित्वा अन्यत्र स्थितेर्के चैतत्फलं दोषभागजातो न भवति । तद्यथा



अल्पवित्तो बहुवित्तो भवति । अदनो न भवति । आयुधभृन्न भवति । तस्यान्ये आयुधभृतो नुयायिनो भवंति । अन्येतु पुनः पूर्वोक्ता गुणाः । प्रथितश्चतुरो भवति । गवीत्यादि । वस्त्रैरंवरैः सुगन्धद्रव्यैः पण्यैश्च जीवति । वनिता द्विद् स्त्री-  
षु द्वेष्टा । गेये गीते वाद्ये च वादनविधौ कुशलः शिक्षितः । एवं विधौ गविवृष-  
स्थे सूर्ये जातो भवति ॥ १ ॥

विद्याज्योतिषवित्तवान् मिथुनगे भानौ कुलीरे स्थिते तीक्ष्णोऽस्वः  
परकार्यकृच्छ्रमपथक्केशैश्च संयुज्यते ॥ सिंहस्थे वनशैलगोकुल-  
रतिर्वीर्यान्वितो ज्ञः पुमान् कन्यास्थे लिपिलेख्यकाव्यगणितज्ञा-  
नान्वितः स्त्रीवपुः ॥ २ ॥

अथ मिथुनकर्कसिंहकन्यास्थे सूर्ये जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ विद्या-  
ज्योतिषवित्तवान् । विद्यावान् पण्डितः । ज्योतिषवान् ज्योतिषशास्त्रज्ञः ।  
वित्तवान् धनी । एवं विधौ मिथुनस्थे भानौ जातो भवति । तीक्ष्णः उग्रः । अस्वः  
दरिद्रः । परकार्यकृदन्येषां कार्यकर्ता । श्रमपथक्केशैः श्रमेण खेदेन पथाध्वनाक्केशैः  
दुःखैश्च सर्वकालं संयुज्यते । एवं विधः कुलीरस्थे कर्कटगते भानौ जातो भवति ।  
सिंहस्थ इति । वनमरण्यं शैलः पर्वतः गोकुलः गोवाटः एते पुस्त्याने पुरतिः  
निवासशीलः । तदासक्त इत्यर्थः । वीर्यान्वितः बली । अज्ञः मूर्खः । एवं विधः  
पुमान् पुरुषः सिंहस्थे के जातो भवति । लिपिरक्षरविन्यासः लेख्यं चित्रकर्म  
काव्यं कवेः कर्म । गणितं ग्रहगणितादि । ज्ञानं विज्ञानम् । एतैरन्वितो युक्तः ।  
स्त्रीवपुः स्त्रीतुल्यशरीरः । एवं विधः कन्यास्थे के जातो भवति ॥ २ ॥

जातस्तौ लिनिशौण्डिको ध्वनिरतो हैरण्यको नीचकृत् क्रूरः साह-  
सिको विषार्जितधनः शस्त्रांतगोलिस्थिते ॥ सत्पूज्यो धनवा-  
न्धनुर्द्धरगते तीक्ष्णो भिषक् कारुको नीचोऽज्ञः कुवणिङ्मृगेलप-  
धनवाँलुब्धो न्यभाग्यैरतः ॥ ३ ॥

अथ तुलावृश्चिकधन्विमकरस्थे के जातस्य स्वरूपं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ जा-  
त इति । शौण्डिको मद्यविक्रयी भवति । मद्यकरो वेतिकेचित् । अध्वनिरतः  
पथि प्रसक्तः । हैरण्यकः स्वर्णकारः । नीचकृदनुचितकर्मकर्ता । एवं विधः तौ-  
लिनितुलास्थे के जातो भवति । क्रूरः उग्रस्वभावः । साहसिकः असमीक्षितकार्य-  
कृत् । तथाच । असमीक्षितकार्याणां कर्त्ता साहसिकः स्मृतः ॥ विषार्जितधनः ।  
विषप्रयोगैर्जितं धनं संचितं वित्तं येन । प्रत्यंतरे वृथार्जितधनः । यद्धनमर्जयति

तदस्यवृथानिष्फलंभवति चौरादयोपहरन्ति । शस्त्रांतगः शस्त्रनैपुण्यकः  
शस्त्रस्यायुधस्यांतगः एवंविधोलिस्थितेवृश्चिकगतेकैजातोभवति । सत्पूज्यः  
सतामर्चनीयः । धनवान्वित्तयुक्तः । तीक्ष्णः क्रूरचेष्टः । भिषक् वैद्यप्रयोगज्ञः ।  
कारुकः शिल्पकर्मज्ञः । एवंविधोधनुर्धरस्थेकैजातोभवति । नीचः ।  
कुलानुचिताधर्मकर्मकृत् । अज्ञः मूर्खः । कुवणिकु कुत्सितवाणिकु । अल्पधनवान्  
स्तोकार्थः । लुब्धः लोभाभिभूतः । अन्यभाग्यैरतः परकीयैर्भाग्यैः वित्ता-  
दिभिरतः परार्थोपकारभोक्ता । एवंविधोमृगेमकरस्थेकैजातोभवति ॥ ३ ॥

नीचोघटेतनयभाग्यपरिच्युतोस्वस्तोयोत्थपण्यविभवोवनि  
तादृतोत्ये ॥ नक्षत्रमानवतनुः प्रतिमेविभागे लक्षमादिशेत्तुहि-  
नरश्मिदिनेशयुक्ते ॥ ४ ॥

अथकुंभमीनगतेकैजातस्यस्वरूपंचंद्रार्कयोरेकराशिगतयोस्तुलक्ष्मज्ञानं वसं-  
ततिलकेनाह ॥ नीचइति । नीचः कुलानुचिताधर्मकर्मकृत् । तनयैः पुत्रैः  
भाग्यैश्चपरिच्युतः त्यक्तः पुत्रैः जनवाल्लभ्येनचविरहितः । अस्वः निर्धनः । एवं-  
विधोघटेकुंभस्थेकैजातोभवति । तोयोत्थंजलोत्पन्नंमुक्ताफलादितत्पण्येनतद्वि-  
क्रयेणविभवमैश्वर्य्यस्य । वनितादृतः स्त्रीपूज्यः । एवंविधोत्येमीनस्थेकै  
जातोभवति । नक्षत्रमानवतनुरित्यादि । नक्षत्रमानवकोराशिपुरुषः का-  
लांगानीत्यादिनाप्रदर्शितः । तुहिनरश्मिश्चंद्रः । दिनेशआदित्यः । एतौसमेतौ  
यस्मिन्राशौस्थितौसराशिनक्षत्रपुरुषस्ययस्मिन्नंगेस्थितस्तत्रपुरुषस्यजातस्यल-  
क्ष्मचिह्नंस्तकादिसमादिशेत् वदेत् । यथामेषस्थयोः शिरसि । वृषस्थयोः ।  
मुखइत्येवमूह्यम् । इतिआदित्यराशिस्वभावः ॥ ४ ॥

नरपतिसत्कृतोऽटनश्चमूपवणिकसधनाः क्षततनुश्चौरभूरिविष-  
यांश्चकुजः स्वगृहे ॥ युवतिजितान्सुहृत्सुविषमान्परदारर-  
तान्कुहकसुवेषभीरुपरुषान्सितभेजनयेत् ॥ ५ ॥

अथमेषवृश्चिकवृषतुलस्थेकुजेजातस्यस्वरूपंचोटकेनाह ॥ नरपतिसत्कृतः  
राजपूजितः । अटनः परिभ्रमणशीलः । चमूपः सेनापतिः । वणिकक्रयविक्रयज्ञः । स-  
धनः वित्तान्वितः । क्षततनुः विक्षतदेहः व्रणितशरीरः । चौरस्तस्करः । भूरिविष-  
यः । विप्रकीर्णेंद्रियः । एवंविधान्स्वगृहमेषवृश्चिकस्थः कुजः भौमः जनये-  
त् । युवतिजितः स्त्रीविधेयः । सुहृत्सुमित्रेषुविषमः दुर्विधेयः सकूरस्वभावः ।  
परदाररतः परयोषितिप्रसक्तः । कुहकज्ञः ऐंद्रजालिकः । सुवेषः शोभनालं-



कारः । भीरुःसभयः । परुषःकर्कशः । निस्नेहः । एवंविधान्पुरुषान्सितभेषुकक्षेत्रेवृषेतुलेचस्थितोभौमोजनयेदुत्पादयेत् ॥ ५ ॥

बौधेसहस्तनयवान्विसुहृत्कृतज्ञोगांधर्वयुद्धकुशलःकृपणोभयोर्थी ॥ चांद्रैथवान्सलिलयानसमर्जितस्वःप्राज्ञश्चभूमितनयेविकलःखलश्च ॥ ६ ॥

अथमिथुनकन्याकर्कटस्थेभौमेजातस्यस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ अथमिथुनकन्यागतेभौमेजातस्यस्वरूपमाह । बौधेइति । असहः तेजस्वी । तनयवान् । पुत्रयुक्तः । विसुहृत् मित्ररहितः । कृतज्ञःपरोपकारशीलः । गांधर्वयुद्धकुशलः मांधर्वेगतियुद्धेचसंग्रामेप्रवेशनिर्गमव्यूहरचनादिषुचकुशलः तज्ज्ञः । कृपणः अदाता । अभयःनिर्भयः । अर्थीयाश्चापरः । एवंविधोबौधेमिथुनकन्यास्थे कुजेभौमेजातोभवति । अथकर्कटस्थेभौमेजातस्यस्वरूपमाह ॥ चांद्रैइति । अर्थवान्सधनः । सलिलयानसमर्जितस्वः सलिलयानेन प्लवादिनासम्यगर्जितस्वंधनयेन । अथवासलिलेनजलेनयानेनगमनेनाध्वनासमर्जितस्वंधनयेन । प्राज्ञःमेधावी । विकलोगहीनः । खलःदुर्जनः । एवंविधश्चांद्रिकर्कटगतेभौमेजातोभवति ॥ ६ ॥

निःस्वःक्लेशसहोवनांतरचरः सिंहेल्पदारात्मजोजैवेनैकरिपु-  
नरेंद्रसचिवःख्यातोभयोल्पात्मजः॥ दुःखार्तोविधनोऽटनो-  
तरतस्तीक्ष्णश्चकुंभस्थितेभौमेभूरिधनात्मजोमृगगतेभूपोथ-  
वातत्समः ॥ ७ ॥

अथसिंहधन्विमीनकुंभमकरस्थेभौमेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ निःस्वइति । निःस्वः निर्धनः । क्लेशसहः आपद्धीरः कदर्थनाक्षमः । वनांतरचरः अरण्यमध्यचारी । केचिदभयोवनचरइतिपठंति । अभयोभयरहितः । वनांतरचरोरण्यचारी । अल्पदारात्मजोल्पकलत्रः अल्पापत्यः । एवंविधः सिंहस्थेभौमेजातोभवति । अनेकरिपुः बह्वरिः । नरेंद्रसचिवः मंत्री । ख्यातः विदितकीर्तिः । अभयः निर्भयः । अल्पात्मजः स्वल्पापत्यः । एवंविधोधन्विमीनस्थेभौमेजातोभवति । दुःखार्तः नित्यंदुःखसंतप्तः । विधनः दरिद्रः । अटनः परिभ्रमणशीलः । अनृतरतः असत्यभाषी । तीक्ष्णः निरपेक्षः क्रूरः । एवंविधः कुंभस्थेभौमेजातोभवति । भूरिधनात्मजः । प्रभूतधनः प्रभूतपुत्रः । भूपःराजा अथवातत्समः राजतुल्यः । एवंविधोमृगगते मकरस्थेभौमेजातोभवति ॥ ७ ॥

द्यूतर्णपानरतनास्तिकचौरनिःस्वाःकुस्त्रीककूटकृदसत्यरताः  
कुजर्क्षे॥आचार्यभूरिसुतदारधनार्जनेष्टाः शौक्रेवदान्यगुरुभ-  
क्तिरताश्चसौम्ये ॥ ८ ॥

अथमेषवृश्चिकतुलवृषगतेबुधेजातस्यस्वरूपंवसंततिलकेनाह॥ द्यूतेति। द्यूतेऽ  
क्षज्ञानेऋणेपरस्वहरणेपानेचनिरतःसक्तः । नास्तिकः शास्त्रार्थादपेतः तार्किकः  
नास्तिपरलोकेमतिर्यस्यसनास्तिकः । चौरस्तस्करः । निःस्वोदरिदः । कुस्त्रीकः  
कुत्सितभार्यः । कूटकृत कूटकर्तादांभिकः । असत्यनिरतः अनृतभाषी।एवंविधा  
जाताः सौम्येबुधेभौमर्क्षेमेषवृश्चिकस्थेभवन्ति । आचार्येत्यादि । आचार्यः  
उपदेशकर्ता।भूरिसुतःप्रभूतापत्यः । भूरिदारोबहुकलत्रः । धनार्जनेष्टः धनार्ज-  
नमिष्टयस्य । अर्थार्जनेनित्यमुद्यतः। वदान्यः दाता । गुरुभक्तिरताः । मातृपि-  
तृगुरूणांभक्ताः । एवंविधाःपुरुषाःशौक्रेवृषतुलस्थेबुधेजाताभवन्ति ॥ ८ ॥

विकत्थनः शास्त्रकलाविदग्धः प्रियंवदःसौख्यरतस्तृतीये ॥

जलार्जितस्वःस्वजनस्यशत्रुः शशांकजेशीतकरर्क्षयुक्ते ॥ ९ ॥

अथमिथुनकर्कटस्थेबुधेजातस्यस्वरूपमुपेन्द्रवज्रयाह ॥ विकत्थनइति । विक-  
त्थनः वाचालः असत्यवादी । शास्त्रकलाविदग्धः शास्त्रेकलामुचगीतवा-  
द्यनृत्यलेपचित्रकर्मसुविदग्धः शिक्षितः । प्रियंवदोभिमतवक्ता । सौख्यरतः  
सुखासक्तः । एवंविधः शशांकजेबुधे तृतीयेमिथुनस्थेजातोभवति । जलार्जि-  
तइति । जलार्जितस्वः जलेनोदकेनार्जितस्वंधनयेनसः । केचिद्वलार्जितस्व-  
इति बलेनवीर्येणार्जितस्वंधनयेन । स्वजनस्यात्मीयजनस्यचबंधुजनस्यशत्रुः  
रिपुः । एवंविधः शशांकजेबुधेशीतकरर्क्षेचंद्राशौककर्कटयुक्तेजातोभवति ॥ ९ ॥

स्त्रीद्विष्येविधनसुखात्मजोऽटनोऽज्ञः स्त्रीलोलःस्वपरिभवोर्करा-  
शिगेज्ञे ॥ त्यागीज्ञःप्रचुरगुणः सुखीक्षमावान्पुक्तिज्ञोविगतभ-  
यश्चषष्ठराशौ ॥ १० ॥

अथसिंहकन्यागतेबुधेजातस्यस्वरूपंप्रहर्षिण्याह ॥ स्त्रीद्विष्यइति । स्त्रीणांद्वि-  
ष्यः स्त्रीद्विष्यः । विधनसुखात्मजः विधनोधनरहितः । विसुखः विगत-  
सुखः । विगतात्मजः पुत्ररहितः । अटनः परिभ्रमणशीलः । अज्ञः मूर्खः ।  
स्त्रीलोलः वनिताभिलाषी । स्वपरिभवः स्वेषामात्मीयानांसकाशात्परिभवोय-  
स्य । एवंविधोऽज्ञेबुधेऽर्कराशिगेसिंहस्थेजातोभवति । त्यागीदाता।ज्ञःपंडितः । प्र-  
चुरगुणः प्रभूतगुणैर्युतः । गुणाविद्याशौर्यादयः।सुखीसुखितः।क्षमावान्सहिष्णुः ।



युक्तिज्ञः प्रयोगवेत्ता । विगतभयः निर्भयः । एवंविधः वष्टराशौकन्यास्थेबुधे जातोभवति ॥ १० ॥

परकर्मकृदस्वशिल्पबुद्धीऋणवान्विष्टिकरोबुधेर्कजर्क्षे ॥

नृपसत्कृतपंडितात्तवाक्योनवमैत्येजितसेवकोऽत्यशिल्पः ॥ ११ ॥

अथमकरधन्विमीनगतेबुधेजातस्यस्वरूपमौपच्छंदसिकेनाह ॥ परकर्मकृदिति । परकर्मकृत परप्रेष्यकरः । अस्वः दरिद्रः । शिल्पबुद्धिः शिल्पकर्मस्वनुरतमतिः । ऋणवान् परस्वग्रहणशीलः । विष्टिकरः आज्ञाकरः । एवंविधोर्कजर्क्षमकरकुंभस्थेबुधेजातोभवति । नृपसत्कृतः राजपूजितः नृपसंतोषा राजवल्लभः । पंडितः विद्वान् । आत्तवाक्यः व्यवहारार्थवेत्ता आत्मनुकूलवाक्यं यस्य । एवंविधोनवमैधन्विस्थितेबुधेजातोभवति । जितसेवकः जितासेवकायेन । पराराधनदक्षः पराभिप्रायज्ञः । अंत्यशिल्पः नीचशिल्पः । एवंविधोऽत्येमीनस्थेबुधेजातोभवति । इतिबुधराशिस्वभावः ॥ ११ ॥

सेनानीर्वहुवित्तदारतनयोदातासुभृत्यःक्षमी तेजोदारगुणान्वितः सुरगुरौख्यातः पुमान्कौजभे ॥ कल्पांगः सधनार्थमित्रतनयस्त्यागीप्रियः शौक्रभेवौधेभूरिपरिच्छदात्मजसुहृत्साचिव्ययुक्तःसुखी ॥ १२ ॥

अथमेषवृश्चिकवृषतुलमिथुनकन्यागतेजीवेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ सेनानीरिति । सेनानीः सेनानायकः । बहुवित्तः प्रभूतधनः । बहुदारः प्रभूतकलत्रः । बहुतनयः प्रभूतापत्यः । दाता दानशीलः । सुभृत्यः शोभनभृत्यः । क्षमी क्षमावान् । तेजसाकांत्यादारगुणैः कलत्रसौख्यैरन्वितो युक्तः । ख्यातः प्रख्यातकीर्तिः । एवंविधः सुरगुरौजीवेकौजेकुजभे भौमक्षेत्रेमेषवृश्चिकस्थेजातोभवति । कल्पांगः स्वस्थदेहः । सधनार्थः सधनः । समित्रः समुहत् । सतनयः पुत्रान्वितः । सुखधनमित्रपुत्रयुक्तः । त्यागीदाता । प्रियः सर्वजनवल्लभः । एवंविधः शौक्रभे शुक्रक्षेत्रस्थेवृषतुलस्थेजीवेजातोभवति । वौधेइत्यादि । भूरिपरिच्छदः बहुवस्त्रगृहपरिवारः । भूर्यात्मजः बहुपुत्रः । भूरिसुहृत् प्रभूतमित्रः । साचिव्यमंत्रित्वे नियुक्तः । सचिवस्यभावः साचिव्यम् । सुखीसुखितः । एवंविधोवौधेबुधक्षेत्रेमिथुनकन्यास्थेजीवेजातोभवति ॥ १२ ॥

चांद्रेरत्नसुतस्वदारविभवप्रज्ञासुखैरन्वितः सिंहेस्याद्वल-  
नायकः सुरगुरौ प्रोक्तं च यच्चंद्रभे ॥ स्वक्षेमांडलिकोनरेन्द्र-  
सचिवः सेनापतिर्वाधनीकुंभेकर्कटवत्फलानिमकरेनीचोल्प-  
वित्तोसुखी ॥ १३ ॥

अथकर्कटसिंहधन्विमीनकुंभमकरस्थेजीवेजातस्यस्वरूपंशाद्वलविक्रीडिते-  
नाह॥चांद्रइति । रत्नानि मणयः । सुताः पुत्राः । स्वंधनं । दाराः कलत्रं । विभ-  
वेष्वर्थम् । प्रज्ञा मेधा । सुखं सुखभावः । एतैरन्वितः संयुक्तः । एवंविधः चांद्रे  
चंद्रक्षेत्रेकर्कटस्थेसुरगुरौजीवेजातोभवति । वलनायकः सेनाप्रधानः । अन्य-  
च्च यच्चंद्रभेकर्कटस्थेउक्तम् । रत्नसुतस्वदारविभवप्रज्ञासुखैरन्वितः ।  
एवंविधः सिंहस्थेजीवेस्याद्ववेत् । मांडलिकः मंडलाधिपतिः । सेना-  
नाथोवा । अथवा धनीवित्तवान् । एवंविधःस्वक्षेस्वराशौधन्विमीनस्थेजीवेजातो  
भवति । कुंभेकर्कटवदिति । यानिकर्कटस्थेजीवेफलान्यभिहितानि । रत्नसुतस्व-  
दारविभवप्रज्ञासुखैरन्वितइत्येतानिकुंभस्थेगुरौभवंति । अत्रान्येनसहमत-  
भेदः । तेनानिष्टफलमभिहितम् । तथाच । नीचःकुंभेजनयति कर्मणितो-  
याश्रयेसक्तम् । नीचः कुलानुचिताधमकर्मकृत् । अल्पवित्तः स्तोकार्थः ।  
असुखीदुःखितः । एवंविधोमकरस्थेजीवेजातोभवति । इतिबृहस्पतिराशि-  
स्वभावः ॥ १३ ॥

परयुवतिरतस्तदर्थवादैर्हृतविभवः कुलपांसनः कुजक्षे ॥

स्ववलमतिधनोनरेन्द्रपूज्यःस्वजनविभुःप्रथितोभयःसितेस्वे॥१४

अथशुक्रराशिः॥अथमेषवृश्चिकवृषतुलगतेशुक्रेजातस्यस्वरूपंपुष्पिताग्रयाह॥  
परयुवतिरतः परस्त्रीपुसक्तः । तदर्थवादैस्तासांपरस्त्रीणामर्थवादैरपराधानुव-  
चनैः हृतविभवोपहृतार्थः । कुलपांसनः कुलकलंकभूतः । एवंविधः  
सितेशुक्रकुजक्षेभौमक्षेत्रेमेषवृश्चिकस्थेजातोभवति । स्ववलेत्यादि । स्ववले-  
नात्मीयवीर्येण स्वमत्याआत्मीयबुद्ध्याचधनंयस्यासौस्ववलमतिधनः ।  
नरेन्द्रपूज्यः राजवल्लभः । स्वजनविभुः बंधुप्रधानः । प्रथितः वि-  
ख्यातः । अभयः निर्भयः । एवंविधः स्वेस्वक्षेत्रे वृषतुलास्थेसितेशुक्रेजातो  
भवति ॥ १४ ॥

नृपकृत्यकरोर्थवान्कलाविन्मिथुनेषष्ठगतेतिनीचकर्मा ॥

रविजक्षेगतेमरारिपूज्येसुभगः स्त्रीविजितोरतःकुनार्याम् ॥ १५ ॥



अथमिथुनकन्यामकरकुंभस्थेशुक्रेजातस्यस्वरूपमौपच्छंदसिकेनाह ॥ नृपकृत्यकरः राज कर्मकर्ता । अर्थवान् धनी । कलावित् कलाज्ञः गीतवाद्यादिकवेत्ता । एवंविधो मरारिपूज्येदैत्यगुरौशुक्रेमिथुनस्थेजातोभवति । षष्ठगते कन्यास्थेशुक्रेऽतिनीचकर्मा कष्टकार्यकरोजातोभवति । सुभगः सर्वजनप्रियः । स्त्रीविजितः प्रमदावशगः । कुनार्याकुस्मितस्त्रियां रतःसक्तः । एवंविधः शुक्रैरविजक्ष्णतेमकरकुंभस्थेजातोभवति ॥ १५ ॥

द्विभार्योर्थीभीरुः प्रबलमदशोकश्चशशिभेरौयोषाप्तार्थः प्रवरं युवतिर्मंदतनयः ॥ गुणैः पूज्यः सस्वस्तुरगसहिते दानवगुरौज्ञपे विद्वानाढ्यो नृपजनितपूजोतिसुभगः ॥ १६ ॥

अथकर्कटसिंहधन्विमीनस्थेशुक्रेजातस्यस्वरूपं शिखरिण्याह ॥ द्विभार्यः द्विस्त्रीकः । अर्थीयाश्चापरः । भीरुः सभयः । प्रबलमदोतिदृप्तः । प्रबलशोकोतिदुःखितः । एवंविधो दानवगुरौदैत्यपूज्येशुक्रेशशिभेकर्कटस्थेजातोभवति । योषाप्तार्थः स्त्रीप्राप्तधनः । प्रवरयुवतिः प्रधानस्त्रीकः । मंदतनयः अल्पापत्यः । एवंविधो हरौसिंहस्थेशुक्रेजातोभवति । गुणैः पूज्यः मान्यः । सस्वः सधनः । एवंविधस्तुरगसहिते धन्विस्थे दानवगुरौशुक्रेजातोभवति । विद्वान्पण्डितः । आढ्यः ईश्वरः । नृपजनितपूजः नृपेण राजा जनितोत्पादिता पूजार्हण्यस्य । अतिसुभगः सर्वजनानामतिवल्लभः । एवंविधो ज्ञपेमीनस्थेशुक्रेजातोभवति । इति शुक्रराशिस्वभावः ॥ १६ ॥

मूर्खोऽटनः कपटवान्विसुहृद्यमेजे कीटे तु बंधवधभाक् च पलोऽघृणश्च ॥ निर्हंसुखार्थतनयः स्खलितश्चलेख्ये रक्षापतिर्भवति मुख्यपतिश्चबौधे ॥ १७ ॥

अथशनिः ॥ अथमेपवृश्चिकमिथुनकन्यागते सौरे जातस्यस्वरूपं वसंततिलकेनाह ॥ मूर्खोऽज्ञानोपेतः । अटनः परिभ्रमणशीलः । कपटवान् दांभिकः । विसुहृत् मित्ररहितः । एवंविधो यमे सौरे अजेमेषस्थेजातोभवति । बंधवधभाक् । बंधो बंधनं वधस्ताडनं वधबंधौ भजते । चपलः क्रियास्वनवस्थितः । अघृणः निर्दयः । एवंविधः कीटे वृश्चिकस्थेजातोभवति । निर्हंसुखार्थतनयः निर्गताहीलजायस्य स निर्लज्जः । निःसुखो दुःखितः । निरर्थो दरिद्रः । निस्तनयः पुत्ररहितः । लेख्ये आलेख्यकर्मणि स्खलितः अज्ञः । रक्षापतिर्भवत्यारक्षकः । मुख्यपतिः प्रधाननाथः । एवंविधो बौधे बुधक्षेत्रे मिथुनकन्यास्थे सौरे जातोभवति ॥ १७ ॥

वर्ज्यस्त्रीष्टोनबहुविभवोभूरिभार्योवृषस्थे ख्यातःस्वोच्चेगण-  
पुरबलग्रामपूज्योर्थवांश्च ॥ कर्किण्यस्वोविकलदशनोमातृ-  
हीनोसुतोज्ञः सिंहेनार्योविमुखतनयोविष्टिकृत्सूर्यपुत्रे ॥ १८ ॥

अथवृषतुलाकर्कटसिंहस्थेसौरैजातस्यस्वरूपमंदाक्रांतयाह ॥ वर्ज्यास्वग-  
म्यासुस्त्रीपुयोषित्सुइष्टः वल्लभः । नबहुविभवः नप्रभूतैश्वर्ययुक्तः अल्पैश्वर्य-  
युक्तः । भूरिभार्यः प्रभूतदारः । एवंविधोवृषस्थेसूर्यपुत्रेशनैश्चरेजातोभवति । ख्यातः  
विदितकीर्तिः । गणानां समूहानांपुराणानंगराणां बलानांसैन्यानां ग्रामाणांचपू-  
ज्योमान्यः । अर्थवान्सधनः । एवंविधः स्वोच्चेआत्मीयस्वोच्चराशौतुलास्थेसौरै  
जातोभवति । अस्वः दरिद्रः । विकलदशनः अल्पदंतः । मातृहीनः जननी-  
वियुक्तः । असुतः पुत्ररहितः । अज्ञः मूर्खः । एवंविधः कर्कटस्थेसौ-  
रेजातोभवति । सिंहेनार्यइति । अनार्यः मूर्खः । विमुखोदुःखितः । वि-  
तनयः पुत्ररहितः । विष्टिकृद्भारवाहकः । एवंविधः सिंहस्थेसूर्यपुत्रेशनैश्चरे  
जातोभवति ॥ १८ ॥

स्वंतःप्रत्ययितोनरेद्रभवनेसत्पुत्रजायाधनोजीवक्षेत्रगतेर्कजेपुर-  
बलग्रामाग्रनेताथवा ॥ अन्यस्त्रीधनसंवृतःपुरबलग्रामाग्रणीर्म-  
ददृक्स्वक्षेत्रेमलिनःस्थिरार्थविभवोभोक्ताचजातःपुमान् ॥ १९ ॥

अथधन्विमीनमकरकुंभगतेसौरैजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्वंतः  
शोभनोतःपर्यंतोयस्यसस्वंतः शुभेनकर्मणातस्यमृत्युर्भवति । अथवांतेशोभनंसु-  
खादिकंस्यस्य । नरेद्रभवनेराजगृहेप्रत्ययितः संजातप्रत्ययः । सत्पुत्रः शोभ-  
नापत्यः । सज्जायः शोभनभार्यः । सद्जनःसद्वित्तः । पुरबलग्रामाग्रनेता पुराणां  
नगराणांबलस्यसेनायाःग्रामाणांचअग्रनेताप्रधानोनायकः । एवंविधोर्कजेसौरै  
जीवक्षेत्रेधान्विमीनस्थेजातोभवति । अन्यस्त्रीधनसंवृतः परयोषिद्धिःपरधनैश्चसं-  
वृतः संयुक्तः पुरबलग्रामाग्रणीःपुराणांबलानांग्रामाणांचअग्रणीः । प्रधान-  
नायकः । मंददृगल्पचक्षुः । मलिनः मलोपेतः स्नानालसः । स्थिरार्थः स्थिरवि-  
त्तः । स्थिरविभवः स्थिरैश्वर्यः । भोक्ताअसंचयशीलः । एवंविधःपुमान्  
पुरुषः स्वक्षेत्रेमकरकुंभस्थेसौरैजातोभवति । इतिशनैश्चरराशिस्वभावः ।  
एतेपुसर्वेपुग्रहराशिस्वभावेपुबलवतिराशौतदधिपतौचतस्मिंश्चग्रहेबलवतिजा-  
तस्ययथोक्तंराशिस्वरूपंभवति । द्येकयोश्चबलवतोर्मध्येसमानमिति । नक-  
स्मिंश्चिद्वलवतिनकिंचिदिति ॥ १९ ॥



शिशिरकरसमागमेक्षणानांसदृशफलंप्रवदंतिलग्नजातम्॥ फ-  
लमधिकमिदं यदत्र भावाद्भवन्भनाथगुणैर्विचिंतनीयाः ॥ २० ॥

इति बृहज्जातके राशिशीलाध्यायोऽष्टादशः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथमेषादिपुलमेपुचंद्राकांतराशुक्तस्वरूपातिदेशंपुष्पिताग्रयाह शिशि-  
रकरश्चंद्रमास्तस्यराशिभिःसहसमागमेयत्स्वरूपमुक्तंवृत्ताताम्रदृगित्यादिकंत-  
न्मेषलग्नजातस्यापिवक्तव्यम् । एवमन्येष्वपिराशिपुवृषादिपुस्थितेचंद्रमसिय-  
दुक्तंतल्लग्नजातस्यापिवक्तव्यम् । यतोमुनयः सदृशफलंवदन्ति कथयन्ति ।  
स्वरूपभेदाभावात् । तथाचसत्यः । मेषविलमेकुनखीसुरोषणोभेदकृत्स्नलित-  
वाक्यः । पित्तानिलभूयिष्ठःकृपणोतिबहुव्यथश्चैव । रहितोवात्येगुरुभिर्म-  
दसुतःस्वजनसहजहितकर्ता । धर्मस्थितोविदेशोपगश्चकर्मार्भत्यफलम् ।  
नीचांवापिशुनांवाविकलांलभतेन्यपूर्विकांभार्याम् । सहजसमान्यपिमित्राणिचा-  
स्यबंधुत्वमुपयांति । शस्त्रेणवाविषैर्वा मरणंपित्तोद्भवैर्विकारैर्वा । स्वात्पक्षा-  
ज्ज्वलनाद्वावर्षाद्गुर्गात्रपतनाद्वा । वृषभविलमेस्थूलोष्ठगंडनासोमहाललाटश्च ।  
श्लेष्मानिलभूयिष्ठस्त्यागीबहुशोव्ययरतश्च । कन्याप्रजोलपपुत्रः पितुर्जनन्या-  
श्चदोषकृद्बुधः । कर्मणिसततंसक्तोविधर्मयुक्तोर्थभाक्चैव । नित्यंकलत्रकां-  
क्षीशस्त्रविधातीसदास्वजनहर्ता । मृत्युःशस्त्रैः पाशैर्मृगैश्चलभतेन्यदेशेषु । देहश्च-  
मैर्जलैर्वाशूलैर्वाप्यटननिरसनैश्चैव । पुरुषश्चतुष्पदैर्वावलान्वितान्मृत्युमुपयाति ।  
पूर्वविलमेमिथुनेहीनांगः सूयतेधिकांगोवा । प्रियवाग्वाशिष्टकर्मामिश्रप्रकृ-  
तिर्द्विजननीकः । अल्पमतिरल्पकायःसतांचमहितोगुरूणांच । अल्पसहजोलप-  
चेष्टःपरावमर्दागुणयुतश्च । कर्मसुबहुष्वभिरतोधर्मसाधयतिनचाथधर्मेण ।  
प्रासांल्लाभान्विविधान्दोषैस्तैस्तैश्चनाशयति । बद्धीःपत्नीर्लभतेरोगांश्चदारुणा-  
ञ्जयति । व्यालाद्विषान्मृगाद्वाप्युदकाद्वामृत्युमुपयाति । कर्किणिपूर्वविलमे  
नैकाग्रोगुह्यरोगवान्भीरुः । उरसिकृताभिज्ञानःकफानिलात्मादृढग्राही । पापान-  
हितान्भजतेपरस्वमपिनिक्षिपद्येनसकृत् । स्वजनादृतःस्वजनैर्विभर्त्सितोह्य-  
स्थिरप्रसवः । तीक्ष्णंकर्मविदेशेनित्यंह्यर्द्रोदितःपरस्वामी । असदृशदारोरिपुनि-  
र्जितश्चपूज्यःसमूहानाम् । कंठापीडाद्रज्वाकफोदयादस्थिभंजनाद्देदात् । देहच्छे-  
दादथवाजलोदरान्मृत्युमाप्नोति । सिंहविलमेकठिनःप्रियामिषः पैत्तिको  
विततनाशः । बह्वारंभकुटुंबःकृपणस्त्वथसंमतःख्यातः । सहजविषादीस्वजनस्य  
घातकोविक्रमैःस्वकैर्युक्तः । अविषादीकर्मकरोविविधोपायैस्त्वधर्मिष्ठः । भा-  
र्याबद्धीर्लभतेविद्याद्विविधाःकुलैरुपेताश्च । कत्यांरुजश्चबुधशोजान्बोर्दशनेपुचा-  
प्नोति । मृत्युःशस्त्रैःपापैर्विषैश्चाष्टैरथामयैश्चापि । अंबुचरैर्वासत्त्वैर्बुधक्षया

हासमुपयाति । षष्ठविलम्बेप्रियवाकृतनुच्छविदीर्घकरचरणः । मिश्रप्रकृतिश्चार्थाकृ-  
 तिर्वर्णीचार्थवान्कृपणः । स्वजनस्येष्टः कन्यावदुपजोभ्रातृभिर्विरुद्धश्च । ध-  
 र्मप्रियोत्पलाभः कर्मणिनिपुणः समाचरति । विविधाच्चतुष्पदगणान्छस्त्रात्  
 पित्तोद्भवाद्दोगात् । शोकात्संपाताद्दामृत्युंचामोति पाशाद्वा । सप्तमराशौलम्बेवि-  
 षमांगः मूयते विषमशीलः । कफवातिकः सुचपलो ह्रस्वग्रीवः कृतज्ञश्च । अर्था-  
 न्विपुलाल्लभते व्ययेन संपूज्यते यशः प्रायः । गुरुसेवायां निरतः पितान्यजन-  
 सहजपूज्यः । अध्वरुचिर्धर्मिष्ठो विनाशमायाति पीडनैः स्वैः स्वैः । मृतभार्यः  
 कलहरुचिर्वहुशः शोकादिभिः क्लिष्टः । मृत्युः ख्यातात्पुरुषात्स्वजनात्सौम्या-  
 च्चतुष्पदाद्वापि । खेदाच्चविप्रयोगादुपवासान्मार्गयोगाद्वा । अष्टमराशौलम्बेवि-  
 शालरज्ज्वाननोदरः क्रूरः । पित्तप्रकृतिः पिङ्गेक्षणो मृदुदुतगतिः परस्वामी ।  
 स्फीतकुटुंबस्वजनोत्तकश्च बहुव्ययो बहुप्रसवः । सुखरहितो भ्रातृव्यो वृषसेवी धर्मही-  
 नश्च । भार्यानिमित्तविमुखी शत्रोरर्थान्नददाति बहुशश्च । स्वकुलोद्भूतांश्छत्रैर्ल-  
 भते रोगांश्च नैकविधान् । गात्रच्छेदैः शत्रोर्वशंगतो बंधनैः प्रहरैश्च । रोगै-  
 र्वापापकृतैर्ज्वलनाद्दामृत्युमुपयाति । स्थूलोष्ठदशननासानवमेलमेकफानि-  
 लप्रकृतिः । मांसलगुह्योरुभुजः कुनखी कर्माद्यतः शूरः । क्षुद्रात्रीचान्भजते चौ-  
 र्यादनलान्पाच्चनष्टधनः । विज्ञानानां प्रसवो बहुपूज्यो भ्रातृघातरुचिः । कर्मवि-  
 देशेष्विष्टः कुरुते चित्तानि चार्हति नृपेभ्यः । धर्मे तु मध्यममतिर्दारैश्च विरोधमुप-  
 याति । रोगान्वदने लभते चतुष्पदाच्चात्मनः समाप्नोति । मृत्युं विलेशयाद्दानृ-  
 पाच्चबंधाज्जनाद्वापि । दशमविलम्बेतनुनासिकापुटो दीर्घवक्त्रकरचरणः ।  
 वाय्वात्मको मृगास्यो भीरुश्च पलो बंधनभाक् । क्षुद्रकुटुंबोत्पधनः कृपणः  
 कन्याप्रजो मृतस्वजनः । सहजसमृद्धः शौर्यावृषादरण्याच्चलब्धधनः ।  
 उपवासव्रतशीलो नीचामिष्टामवाप्नुयाद्भार्याम् । बहुविग्रहोल्पकेशो दुर्बलजानु-  
 श्चरोगार्तः । बालादनिलाच्छस्त्रावृषाद्विषात्प्रपतनाद्गजाद्वापि । पित्तोदया-  
 दजीर्णान्म्रियते वामार्गविभ्रष्टः । एकादशे विलम्बेस्तब्धः क्रूरः कुलाग्रजः  
 पुरुषः । पित्तानिलभूयिष्ठस्तिलपुष्पसमानमासश्च । प्राप्तान्नाशयते रथान् बहु-  
 भृत्यः साध्यते व्ययैश्चापि । क्षीणः स्वगोत्रगुरुजनपरपक्षसुहृत्स्वजनशत्रुः ।  
 कर्मणि पापे सक्तः तनुश्च कांतानवाप्नुयाल्लाभान् । धर्मध्वजप्रवृत्तौ दैवतपूजश्च  
 कारयति भार्याम् । विग्रहशीलाल्लभते विविधान् रोगान् कफोद्भवानुरसि । म्रिय-  
 ते च जठररोगाद्मनात्क्षीणां प्रयोगाद्वा । द्वादशगे प्राग्लम्बे स्थूलोष्ठो मीनदृङ्महा-  
 नासः । कफवातिको महात्मा त्वग्दोषी नैकमतिचेष्टः । शिष्टाय व्ययभृत्यैः  
 स्वजनस्त्रीपूजितः सहजनाथः । कर्मणि धर्मे युक्तः पित्रोपचयः सुदारश्च ।  
 नीचाचारां भार्याल्लभते चरिपूनुदारुणान्क्रूरान् । रोगात्सशोणितो दामुयाद्भ-



यंव्यालसिंहेभ्यः । मृत्युं पुरुषैर्गणवृन्दपूजितैर्गुह्यजैर्विकारैर्वा । विद्यौषधप्रयो-  
गादुपवासान्मार्गदोषाद्वा । एवंशिशिरकरसमागमसदृशलभजातफलम् । तथा  
च । शिशिरकराश्रितराशेरीक्षणंदृष्टिफलं वक्ष्यमाणंतथातदेवतल्लभजातस्यापि  
वंक्तव्यं चंद्रभूपबुधावित्यादि । किंतुलभेफलमपिकिमिदम् । यदत्रभावइति ।  
चंद्रराशितइदमत्रलभ्यादिषुभावेष्वाधिकंफलंयद्वावास्तन्वादयः । भवनगुणैः  
राशिगुणैर्भवननाथगुणैस्तत्स्वामिगुणैर्विचिंतनीयाः विचार्याः । भवनभना-  
थयोगुणः सबलत्वम् । एतदुक्तंभवति । लभेबलवतिलभपतौचबलवतिजात-  
स्यशरीरपुष्टिर्वक्तव्या । लभाद्वितीयराशौबलवतितदधिपतौचबलवतिजातस्य  
धनसमृद्धिर्वक्तव्या । एवंशेषराशिबलेतदधिपबलेचजातस्यभ्रात्रादीनांवृद्धिर्व-  
क्तव्या । तथापि किंचिद्विशेषः कथयति विपरीतंरिःफषष्ठाष्टमेषुइत्यादि ।  
एवंतन्वादस्थेषुराशिष्वबलवत्सुतदधिपेष्वबलवत्सुचभावहानिर्वक्तव्या । भव-  
नभनाथयोः । यद्येकोबलवान्भवतितदामध्यस्थाभाववृद्धिर्वाच्येति । तथाच  
यवनेश्वरः।भावेशभावराशिभस्वभावप्रधानमध्याधमदर्शनाद्यैः । तद्भावसंपत्ति-  
विपत्त्युपायैर्नैर्याणिकंपाकमुपैतिपुंसाम् ॥ २० ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौराशिशिलाऽध्यायोऽष्टादशःसमाप्तः॥१८॥

### अथदृष्टिफलाध्यायः ॥

चंद्रभूपबुधौनृपोपमगुणास्तेनोधनश्चाजगेनिःस्वःस्तेननृमा-  
न्यभूपधनिनःप्रेष्यः कुजाद्यैर्गवि ॥ नृस्थेयोव्यवहारिपार्थिव-  
बुधाभीस्तंतुवायोधनोस्वर्क्षेयोद्धकविज्ञभूमिपतयोऽयोजीवि-  
द्वगोगिणौ ॥ १ ॥

अथातोदृष्टिफलाध्यायोव्याख्यायते । तत्रमेषवृषमिथुनकर्कटस्थेचंद्रभौ-  
माद्यैर्ग्रहैः दृश्यमानेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ चंद्रभूपबुधा-  
विति।कुजाद्याभौमादयः । भौमबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चराकाः । तत्राजगेमेषस्थे  
चंद्रमसिभौमदृष्टेजातोभूपोराजाभवति । बुधदृष्टेबुधः पंडितः । जीवदृष्टेनृपो-  
पमः राजतुल्यः । शुक्रदृष्टेगुणीगुणवान्भवति । केचिद्वणिगितिपठंति । शनै-  
श्चरदृष्टेस्तेनश्चौरः । सूर्यदृष्टेधनः दरिद्रइति । एवमपिमेषलभेभौमादिदृष्टेफलं  
वाच्यं गविस्थेति । गविवृषस्थेचंद्रमसिभौमदृष्टेजातोनिःस्वः दरिद्रः भव-  
ति । बुधदृष्टेस्तेनश्चौरः । जीवदृष्टेनृमान्यः नृणांमान्यःपूज्यः । केचिन्नृपाढ्य  
इतिपठंति । नृपाढ्यःनृपोराजासचाढ्यः ईश्वरः । शुक्रदृष्टेभूपःराजा । सौर-  
दृष्टेधनी धनवान् । सूर्यदृष्टेप्रेष्यःदासः । एवंवृषलभेपि । नृस्थेमिथुनस्थेचंद्रम-  
सि भौमदृष्टेऽयोव्यवहारीशस्त्रविक्रयकः । बुधदृष्टेपार्थिवः राजा । जीवदृष्टेबुधः

पंडितः। शुक्रदृष्टेऽभीः निर्भयः धीरः भयरहितः । सौरदृष्टेतनुवायः। रविदृष्टेऽ-  
धनः दरिद्रः। एवंमिथुनलभेपि । स्वर्क्षेकर्कटस्थेचंद्रमसिभौमदृष्टे योद्धाभवति ।  
युद्धकुशलः। बुधदृष्टेकविः काव्यकर्त्ता । जीवदृष्टे ज्ञः पंडितः । शुक्रदृष्टेभूमिपती  
राजा । सौरदृष्टेऽयोजीवी आयुधजीवी शस्त्रोपजीवी । सूर्यदृष्टेद्विगोचिचक्षु-  
र्व्याध्यर्दितः। एवंकर्कटलभेपि ॥ १ ॥

ज्योतिर्ज्ञाढ्यनरेंद्रनापितनृपक्ष्मेशाबुधाद्यैर्हरौतद्वद्रूपचमू-  
पनैपुण्युताः षष्ठेशुभैरुयाश्रयः ॥ जूकेभूपसुवर्णकारवणिजः  
शेषैक्षितेनैकृतीकीटियुग्मपितानतश्चरजकोव्यंगोधनोभूपतिः२॥

अथासिंहकन्यातुलावृश्चिकस्थेचंद्रेबुधादिदृष्टेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडिते-  
नाह ॥ ज्योतिरिति। बुधादयः बुधशुक्रशनिःसूर्यभौमाः। हरिः सिंहस्तस्मिन्ह-  
रौसिंहस्थेचंद्रेबुधदृष्टेज्योतिर्ज्ञःज्योतिःशास्त्रार्थवेत्ता। जीवदृष्टेआढ्यःईश्वरः। शुक्र-  
दृष्टेनरेंद्रोराजा। सौरदृष्टेनापितः। रविदृष्टेनृपःराजा । भौमदृष्टेक्ष्मेशःभूपतिः। एवं  
सिंहलभेपि । तद्वदित्यादि । तद्वद्रुधादिभिर्दृष्टेइत्यनुवर्तते सर्वत्र। षष्ठेकन्यागते  
चंद्रेबुधदृष्टेभूपःराजा । जीवदृष्टेचमूपतिः सेनापतिः। शुक्रदृष्टेनैपुण्युतःसर्वका-  
यैषुसूक्ष्मदृष्टिः। अशुभैः सौररविभौमैर्दृष्टेस्त्रियाश्रयोभवति । स्त्रियमाश्रित्यजीव-  
तीत्यर्थः । एवंकन्यालभेपि । जूकेतुलास्थेचंद्रमसिबुधदृष्टेभूपोराजाभवति ।  
जीवदृष्टेसुवर्णकारः। शुक्रदृष्टेवणिजः क्रयविक्रयज्ञः । शेषाःसौरसूर्यभौमाः एतैः  
दृष्टेनैकृतीनिकृतः प्राणिघातकः। एवंतुलालभेपि । कीटिवृश्चिकस्थेचंद्रमसिबुध-  
दृष्टेयुग्मपितायुग्मस्यजनकः द्वयोःपिताजातोभवति जातएवयुग्मपिता ।  
द्विपितृकइतिकेचित्पठंति । जीवदृष्टेनतःप्रह्वः । शुक्रदृष्टेरजकः वस्त्ररागकृत् ।  
सौरदृष्टेव्यंगोङ्गहीनः । सूर्यदृष्टेऽधनः दरिद्रः । भौमदृष्टेभूपतिः राजा । एवमे-  
तैरेवदृष्टेवृश्चिकेपि ॥ २ ॥

ज्ञात्युर्वीशजनाश्रयश्चतुरगेपापैःसदंभः शठश्चात्युर्वीशनरेंद्रपं-  
डितधनीद्रव्योनभूपोमृगे ॥ भूपोभूपसमोन्यदारनिरतः शेषैश्च  
कुंभस्थितेहास्यज्ञोनृपतिर्बुधश्चक्षुषगेपापश्चपापेक्षिते ॥ ३ ॥

अथधन्विमकरकुंभमीनस्थेचंद्रमसिबुधादिदृष्टेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्री-  
डितेनाह ॥ ज्ञात्युर्वीशेति । तुरगोधन्वीतत्रस्थेचंद्रेबुधदृष्टेज्ञातीशः स्वजनभर्त्ता।  
जीवदृष्टेउर्वीशोराजा । शुक्रदृष्टेजनाश्रयः जनानामाश्रयस्थानम् । पापैः  
शनिरविभौमैर्दृष्टेसदंभः दांभिकः मिथ्याधर्मध्वजी । शठः परकार्य-  
विमुखश्च भवति। एवंधन्विलभेपि । मृगोमकरस्तत्रस्थेचंद्रेबुधदृष्टेऽत्युर्वीशोरा-



जाधिराजोभवति । जीवदृष्टेनरेन्द्रोराजा । शुक्रदृष्टेपंडितः । शनिदृष्टेधनीवित्तवान् । सूर्यदृष्टेद्रव्योनः दरिद्रः । भौमदृष्टेभूपोराजा । एवं मकरलग्नेपि । कुंभस्थेचंद्रमसि । बुधदृष्टेभूपः राजाभवति । जीवदृष्टेभूपसमः राजतुल्यः । शुक्रदृष्टेन्यदारनिरतः परस्त्रीसक्तः । चशब्दाच्छेषैः शनिसूर्यभौमैस्त्रिभिरप्यन्यदारनिरतएव । एवंकुंभलग्नेपि । झषगेमीनस्थेचंद्रमसिबुधदृष्टे । हास्यज्ञः उपहासंकर्तुंजानाति । जीवदृष्टेनृपतिः राजा । शुक्रदृष्टेबुधः पंडितः । पापाः शनिसूर्यभौमाः एतैर्दृष्टेचपापएवभवति । एवंमीनलग्नेपि । लग्नदृष्टिफलंचंद्रदृष्टिफलातिदेशेनोक्तम् । शिशिरकरसमागमेक्षणानांसदृशफलंप्रवदंतिलग्नजातमिति । तत्रचंद्रमसादृष्टेलग्नेफलंनोक्तम् । तस्मात्तत्रोच्यतेउक्तमेवयस्मादुक्तम् । होरास्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुतानानैश्ववीर्योत्कटाः तत्रकर्कटवर्ज्यमन्योलग्नः । चंद्रदृष्टो हीनबलोभवति । हीनबलत्वादशोभनफलः । उक्तंच । मुक्त्वातुचंद्रभवनंलग्नगतंशिशिरकिरणसंदृष्टम् । अशुभफलंनिर्दिष्टंप्रच्छायांजन्मसमयेवा ॥ ३ ॥

होरेशर्क्षदलाश्रितैः शुभकरोदृष्टः शशीतद्गतस्यशेतत्पतिभिः सुहृद्भवनगैर्वावीक्षितः शस्यते ॥ यत्प्रोक्तंप्रतिराशि-  
वीक्षणफलंतद्वादशांशेस्मृतं सूर्याद्यैरवलोकितेपिशशिनि  
ज्ञेयंनवांशेष्वतः ॥ ४ ॥

अथहोराद्रेष्काणव्यवस्थितस्यचंद्रस्यग्रहदृष्टिफलंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ होरेशेति । होराशब्देनराश्यर्द्धमुच्यते । होरेतिलग्नंभवनस्यचार्द्धमितिबचनात् । होरायाईशोहोरेशः तस्यर्क्षदलं होरेशर्क्षदलं तत्राश्रिताहोरेशर्क्षदलाश्रिताः । तैर्ग्रहैः होरेशर्क्षदलाश्रितैः । शशीचंद्रः तद्गतस्तद्धोरास्थोदृष्टः शुभकरोभवति । एतदुक्तंभवति । यत्रतत्रराशौयस्यांहोरायांचंद्रमाः स्थितः । तद्धोरास्थैः सर्वग्रहैः यदिदृश्यतेतदाजन्मनिशुभकरोभवति । तेनार्कहोरास्थश्चंद्रोयत्रतत्रराश्याश्रितैर्कहोराश्रितैर्ग्रहैः दृष्टश्चशुभकरोभवति । अर्थादेवचंद्रहोरास्थैर्दृष्टोशुभकरः । एवंयत्रतत्रराशौस्वहोरास्थश्चंद्रहोरास्थैर्ग्रहैर्यत्रतत्रावस्थैर्दृष्टः शुभकरोभवति । अर्थादेवार्कहोरास्थैर्दृष्टोऽशुभकरः । एवंलग्नेपिहोरेशेनफलंयोज्यम् । व्यंशेतत्पतिभिरिति । यत्रतत्रराशौयस्मिन्द्रेष्काणेस्थितश्चंद्रस्तस्ययः पतिस्तेनद्रेष्काणपतिनादृष्टश्चंद्रः शस्यते स्तूयते । शुभकर-  
इत्यर्थः । पतिभिरिति । बहुवचननिर्देशात्रवांशद्वादशांशत्रिंशांशकाधिपतयो गृह्यन्ते । तैरपिदृष्टः चंद्रः शुभकरोभवति । एवंलग्नेपि । यद्यपिसामान्येनोक्तं तथापिशुभग्रहैर्द्रेष्काणपतिभिर्दृष्टः शस्यते । पापग्रहैर्मध्यमः ।

यस्मादनेनैवस्वल्पजातकेउक्तम् । क्षेत्राधिपसंदष्टेशशिनिनृपस्तत्सुहृद्विरपिध-  
नवान् । द्रेष्काणांशकपैर्वाप्रायःसौम्यैःशुभनान्यैरिति । सुहृद्वनगै-  
रित्यादि । सुहृद्वनगैः मित्रक्षेत्रस्थैः ग्रहैः वीक्षितः दृष्टः चंद्रः शस्यतेस्त्वयते  
शुभकरएव । अर्थादेवस्वभवनगतैर्दृष्टः शस्यते । अर्थादेवारिभवन-  
गतैः दृष्टः नशस्यते अशुभफलोभवति । एवंलभेपियोज्यम् । यत्प्रोक्तंप्र-  
तिराशिवीक्षणफलंतद्वादशांशेस्मृतमिति । प्रतिराशिंराशौराशौमेषादिस्थेचं-  
द्रमसियद्वीक्षणफलं प्रोक्तंकथितंतदेवमेषादिद्वादशांशकस्थेचंद्रमसिस्मृत-  
मुक्तम् । तदेवंवाच्यमिति । चंद्रेभूपबुधावित्यादियुक्तम् । एवंलभेपि ।  
तत्रापिकर्कटद्वादशांशंविनाचंद्रदृष्टिरशोभनासूर्याद्यैरित्यादि । अतोऽस्मात्प-  
रंशशिनिचंद्रेसूर्याद्यैरर्कादिभिरवलोकितेदृष्टेनवांशेषुफलंज्ञेयं ज्ञातव्यमिति॥४॥

आरक्षिकोवधरुचिःकुशलोनियुद्धेभूपोर्थवान्कलहकृत्क्षिति-  
जांशसंस्थे ॥ मूर्खोन्यदारनिरतःसुकविःसितांशेसत्काव्यकृ-  
त्सुखपरोन्यकलत्रगश्च ॥ ५ ॥

अथमेषवृश्चिकवृषतुलांशकस्थेचंद्रमसिमूर्यादिदृष्टेफलंवसंततिलकेनाह ॥ आर-  
क्षिकइति । क्षितिजोभौमः तत्रवांशकस्थे । मेषनवांशकस्थेवृश्चिकनवांशकस्थे ।  
चंद्रमसिमूर्यदृष्टे । आरक्षिकोभवति । आरक्षिकः नगररक्षाधिकृतः । भौमदृ-  
ष्टेवधरुचिः प्राणिघातकः । बुधदृष्टेनियुद्धेकुशलः नियुद्धेबाहुयुद्धेकुशलः ।  
शिक्षितःप्रवीणः । जीवदृष्टेभूपःराजा । शुक्रदृष्टेर्थवानीश्वरः । सौरदृष्टेकलहकृ-  
दिति । मूर्खइत्यादि । सितांशेशुक्रनवांशकेवृषनवांशकेतुलनवांशकेवा स्थि-  
तेचंद्रमसिरविदृष्टेमूर्खोभवति । भौमदृष्टेन्यदारनिरतः परदारसक्तः । बुधदृ-  
ष्टेकाव्यकृत् काव्यज्ञः । केचिदाद्यवदितिपठंति । जीवदृष्टेसत्काव्यकृतशोभ-  
नकाव्यकर्ता । शुक्रदृष्टेसुखपरः सुखासक्तः । सौरदृष्टेपरकलत्रगः परदारा  
भिगामी ॥ ५ ॥

बौधेहिरंगचरचौरकवींद्रमंत्रिगेयज्ञशिल्पनिपुणःशशिनिस्थि-  
तेशे ॥ स्वांशेलपगात्रधनलुब्धतपस्विमुख्यःस्त्रीपोष्यकृत्य-  
निरतश्चनिरीक्ष्यमाणे ॥ ६ ॥

अथमिथुनकन्याकर्कटनवांशकस्थे चंद्रेर्कादिदृष्टेफलंवसंततिलकेनाह ॥  
बौधेहीति । शशिनिचंद्रेबौधेबुधनवांशकस्थे । मिथुननवांशकस्थेकन्यानवांश-  
कस्थेवा निरीक्ष्यमाणेदृष्टेरंगचरः मल्लादिकोभवति । भौमदृष्टेचौरः  
तस्करः । बुधदृष्टेकवींद्रः, कविराजः । जीवदृष्टेमंत्रीसचिवः । शुक्रदृष्टेगेयज्ञः । सौ-



रदृष्टेशिल्पनिपुणः । स्वांशेति । स्वांशेआत्मीयनवांशकस्थेकर्कटनवांशस्थेशशि-  
निचंद्रेमूर्यदृष्टेऽल्पगात्रः कृशदेहोभवति । भौमदृष्टेधनलुब्धः कृपणः ।  
अल्पधनोवा । बुधदृष्टेतपस्वी । जीवदृष्टेमुख्यःप्रधानः । सितदृष्टेस्त्रीपोष्यः  
स्त्रीभिरभिवर्धनीयः । सौरदृष्टेकृत्यनिरतः कार्यासक्तः ॥ ६ ॥

सक्रोधोनरपतिसंमतोनिधीशःसिंहांशेप्रभुरसुतोतिहिंस्रकर्मा ॥

जीवांशेप्रथितबलोरणोपदेष्टाहास्यज्ञःसचिवविकामवृद्धशीलः ७

अथासिंहधन्विमनिनवांशस्थेचंद्रे सूर्यादिदृष्टेफलंग्रहर्षिण्याह ॥ सक्रोधइति ।  
सिंहांशकस्थेचंद्रमस्यर्कदृष्टेसक्रोधः क्रोधयुक्तोभवति । भौमदृष्टेनरपतिसं-  
मतः राजवल्लभः । बुधदृष्टेनिधीशः निधिनाप्राप्तार्थः । गुरुदृष्टेप्रभुरप्रतिहता-  
ज्ञः । शुक्रदृष्टेऽसुतः पुत्ररहितः । सौरदृष्टेतिहिंस्रकर्मा क्रूरकर्मणिरतः ।  
जीवांशइत्यादि । जीवांशेबार्हस्पत्येनवांशकेधन्यंशकेमीनांशकगतेवास्थितेचं-  
द्रमसिसूर्यदृष्टेप्रथितबलः प्रख्यातवीर्योभवति । भौमदृष्टेरणोपदेष्टा संग्रा-  
मदेशकालव्यूहरचनाभिज्ञः । बुधदृष्टेहास्यज्ञः उपहासवेत्ता । जीवदृष्टेसचिवः  
मंत्री । शुक्रदृष्टेविकामः कामहीनःपुंस्त्वहीनः । सौरदृष्टेवृद्धशीलः धर्मम-  
तिरिति ॥ ७ ॥

अल्पापत्योदुःखितःसत्यपिस्वेमानासक्तःकर्मणिस्वेनुरक्तः ॥

दुष्टस्त्रीष्टःकृपणश्चार्किर्भागेचंद्रेभानौतद्वदिन्द्रादिदृष्टे ॥ ८ ॥

अथमकरनवांशकस्थेकुंभनवांशकस्थेवाचंद्रेसूर्यादिदृष्टेजातस्यफलंशालिन्या  
ह । अल्पापत्यइति ॥ आर्किःअर्कस्यापत्यमार्किः तस्यभागेशनैश्चरनवांशके  
मकरनवांशकस्थेकुंभनवांशकस्थेवाचंद्रेसूर्यदृष्टेऽल्पापत्योऽल्पप्रसवोभवति । भौ-  
मदृष्टेसत्यापिस्वेदुःखितः सत्यपिविद्यमानेपिस्वेधनेदुःखितोभवति । बुध-  
दृष्टेमानासक्तः गर्वितः । जीवदृष्टेस्वेआत्मीयेकर्मण्यनुरक्तः कुलानुरूपकर्म-  
कृत् । शुक्रदृष्टेदुष्टस्त्रीष्विष्टः वल्लभः । सौरदृष्टेकृपणः अदाता । एवंतत्काल-  
नवांशकवशात् ग्रहदृष्ट्यालम्बेपिवक्तव्यम् । किंतुतत्रापिकर्कटनवांशकंविना  
चंद्रदृष्टिरंशुमेति । भानौतद्वदिन्द्रादिदृष्टे । भानावादित्येन्द्रादिदृष्टेचंद्राद्यैर्ग्रहैर-  
वलोकितेतद्वत्तेनैवप्रकारेणदृष्टिफलंयत्रतत्रराशौयत्रतत्रनवांशकस्थे चंद्रम-  
स्यर्कादिदृष्टेयत्फलमुक्तंतद्वत् । यत्रतत्रराशौ यत्रतत्रनवांशकेव्यवस्थि-  
तेर्किंचंद्रदृष्टेतदेवफलंवाच्यम् । एतदुक्तंभवति । नवांशकव्यवस्थित-  
स्यादित्यस्यचंद्रस्यचताराग्रहदृष्टिफलंतुल्यम् । किंतु । यदादित्यदृष्ट्याचं-  
द्रस्योक्तम् तच्चंद्रदृष्ट्यामूर्यस्यवक्तव्यम् । तद्यथामेषवृश्चिकनवांशकस्थेर्किंचंद्र-

दृष्टेआरक्षिकोभवति । वृषतुलानवांशकस्थेमूर्खः । मिथुनकन्यानवांशकस्थेर-  
गचरः । सिंहनवांशकस्थेसक्रोधः । धन्विमीननवांशकस्थेप्रथितबलः । मकरकुं-  
भनवांशकस्थेलपापत्यः । कर्कटनवांशकस्थेलपगात्रः । एवमादित्यस्यनवांश-  
कावस्थितस्यग्रहदृष्ट्याचंद्रेणफलंसमानमिति ॥ ८ ॥

वर्गोत्तमस्वपरगेषुशुभंयदुक्तंतत्पुष्टमध्यलघुताशुभमुत्क्रमेण ॥  
वीर्यान्वितोशकपतिर्निरुणद्धिपूर्वराशीक्षणस्यफलमंशफलंद-  
दाति ॥ ९ ॥

इतिबृहज्जातकेदृष्टिफलाऽध्यायःसमाप्तः ॥ १९ ॥

अथास्यैवनवांशकदृष्टिफलस्यविशेषंवसंततिलकेनाह ॥ वर्गोत्तमेति । नवां-  
शकव्यवस्थितेचंद्रेनवांशकदृष्टिफलंदिप्रकारमुक्तंशुभमशुभं च । यथाआरक्षिक-  
इतिशुभम् । वधरुचिरित्यशुभं च । तत्रवर्गोत्तमांशकगतेचंद्रेयद्बृहदृष्टिजंफ-  
लंशुभमुक्तं तत्पुष्टमतीवशुभंभवति । स्वांशकस्थेतुयच्छुभमुक्तंतन्मध्यमम् ।  
परनवांशकव्यवस्थितेयच्छुभंतल्लघुस्तोकंविज्ञेयम् । एवंशुभफलस्यपुष्टतामध्य-  
तालघुता च । अशुभमुत्क्रमेण । अशुभमनिष्टंयत्फलंतदुत्क्रमेणविपरीतंज्ञेयम् ।  
परनवांशकस्थस्यचंद्रस्ययदशुभंदर्शनफलमुक्तं तदतीवाशुभंभवति । स्वनवां-  
शकस्थस्यमध्यमम् । वर्गोत्तमांशकस्थस्यलघुता । एवंलगादित्ययोरपिदृष्टिफलं  
योज्यम् । जातकेसर्वाण्येवफलानिभवंतीतिप्राप्तम् । यस्माद्यवनेश्वरः । अन्योन्य-  
राश्यंशकसंप्रयोगैरन्योन्यसंदर्शनसंगमैश्च । अन्योन्यसंयोगविकल्पनाभिरिदं  
समुद्रांनुवदप्रमेयमिति । अतःसदैवराशिदृष्टिनवांशकदृष्टिफलयोरपिसदैवप-  
क्तिप्राप्नोति । तत्रनवांशकपतौबलवतिराशिदर्शनफलबाधनार्थमाह ॥ वीर्या-  
न्वितइति । यस्मिन्नवांशकेव्यवस्थितश्चंद्रोलभंवाभवति । तस्यनवांशकस्ययोऽ-  
धिपतिः ॥ सचेद्वीर्यान्वितोबलवान्भवति तदानिरुणद्धिपूर्वप्रथमंनिवारयति ।  
किंसर्वमेव । नहिराशीक्षणस्यफलम् । नहोराद्रेष्काणद्वादशभागेक्षणस्य । तद्धि-  
त्वांशेक्षणफलमेवददाति । अथांशकेपतिर्बलवान्भवति तदाराशीक्षणांशके-  
क्षणफलेउभेअपिवाच्ये । एवंचंद्रलग्नयोरुभयोरपि आदित्यस्यतुनवांशकेक्षण-  
फलमेववक्तव्यम् । यस्मात्तस्यराशीक्षणफलमिहनोक्तमिति ॥ ९ ॥

इति दृष्टिफलाऽध्यायएकोनविंशतिः ॥ १९ ॥



अथ भावाध्यायप्रारंभः ॥

शूरस्तब्धो विकलनयनो निर्धृणो कैंतनुस्थे मेषे सस्वस्ति मि-  
रनयनः सिंहसंस्थे निशांघः ॥ नीचेंऽधोऽस्वः शशिगृहगते  
बुधुदाक्षः पतंगे भूरिद्रव्यो नृपहृतधनो वक्ररोगी द्वितीये ॥ १ ॥

अथातो भावाध्यायो व्याख्यायते । तत्रादित्यस्य लग्नगतस्य द्वितीयस्थस्य च  
फलमंदाक्रांतयाह ॥ शूरइति । शूरः संग्रामप्रियः । स्तब्धः चिरकार्यकृत् ।  
विकलनयनः हीनदृष्टिः । निर्धृणः निर्दयः । एवंविधो कैंरवौ तनुस्थे लग्नस्थे जा-  
तो भवति । एतत्तावत्सर्वलग्नेषु सामान्यफलं भवति । अथ मेषसिंहतुलाकर्कटाना-  
मन्यतमेललग्नगतैर्कैंतदापूर्वोक्तं फलं न भवति । वक्ष्यमाणं चोक्तराशीनां प्रतिराशि-  
फलं भवति । तद्यथा । मेषसस्वइति । मेषलग्ने तत्रस्थे चाकैंसस्वः सार्थः । तिमि-  
रनयनः चक्षुरोगी भवति । तिमिरश्चक्षुरोगीति प्रसिद्धः । सिंहलग्ने तत्रस्थे चा-  
कैंनिशांघः रान्यंधो भवति । आदित्यस्य नीचः तुलातस्मिँल्लग्नगते तत्रस्थे चाकैं  
सूर्येणः नेत्रहीनोऽस्वः दरिद्रश्च भवति । शशिगृहे कर्कटे लग्ने तत्रस्थे  
पतंगे चाकैं बुधुदक्षः पुष्पिताक्षो भवति । भूरिद्रव्यइति । लग्नात्  
द्वितीये कैं भूरिद्रव्यः । प्रभूतार्थः । नृपहृतधनः । राजा हृतस्वो वक्ररोगी मुख-  
पीडार्तश्च भवति ॥ १ ॥

मतिविक्रमवांस्तृतीयगेऽकैं विमुखः पीडितमानसश्चतुर्थे ॥

असुतो धनवर्जितस्त्रिकोणे बलवाञ्छत्रुजितश्च शत्रुयाते ॥ २ ॥

अथ लग्नात् तृतीयचतुर्थपंचमषष्ठस्थानस्थार्कफलमौपच्छंदसिकेनाह ॥ मती-  
ति । मतिः बुद्धिः विक्रमः पराक्रमः एतौ विद्येते यस्य । तथाविधस्तृतीयगे-  
ऽकैंरवौ भवति । विमुखो दुःखितः पीडितमानसः । नित्यो द्विप्रचित्तः । एवंविधश्चतु-  
र्थगेऽकैं जातो भवति । असुतः विपुत्रः । धनवर्जितो दरिद्रः । एवंविधस्त्रिकोणे पंचम-  
स्थेरवौ जातो भवति । बलवान् बलयुक्तः । शत्रुजितश्च शत्रुभिररिभिः ।  
जितः । एवंविधः शत्रुयाते षष्ठस्थानस्थेऽकैं जातो भवति । केचिद्बलवान् नष्टरिपु-  
श्च शत्रुयातइति पठन्ति । तथाच सत्यः । षष्ठे रिपुरोगशोकघ्नः । आचार्येणात्र  
यवनेश्चरमतमंगीकृतम् । यतः षष्ठस्थानस्थितानां पापानां यवनेश्चरेणानिष्टं फलं  
मभिहितम् । तथाच स्फुजिध्वजः । षष्ठाश्रितो कौंविषशस्त्रदाहक्षुद्रोगशत्रुव्यसनो-  
पंतस्तान् । काष्ठाश्मपाताच्चविशीर्णदंतान्यूनैटवीदंष्ट्रिनखिक्षतांश्च । कुजोगतस्त-  
त्रपरिक्षतां गृह्याधितं धिक्कृतिकर्शितं च । सौरः शिरोश्माशनिपातवातद्विमुष्टि-  
घातोपहतं च कुर्यात् । अनेनैवातिदेशं पापानामाचार्यः करिष्यत्यर्कवत् ॥ २ ॥

स्त्रीभिर्गतःपरिभवंमदगपतंगेस्वलपात्मजोनिधनगेविकलेक्ष-  
णश्च ॥ धर्मेसुतार्थसुखभाक्सुखशौर्यभावखेलाभेप्रभूतधन-  
वान्पतितस्तुरिःफे ॥ ३ ॥

अथलगात्सप्तमाष्टमनवमदशमैकादशद्वादशस्थेऽर्केजातस्यस्वरूपंवसंततिल-  
केनाह ॥ स्त्रीभिर्गतइति । पतंगेआदित्येमदगेसप्तमस्थानस्थेजातः स्त्रीभिः  
योषिद्भिः परिभवंगतःप्राप्तोभवति । केचिन्महतेपतगइतिपठंति । निधनगेअ-  
ष्टमस्थेपतंगेसूर्येस्वलपात्मजः अल्पापत्यः । विकलेक्षणश्च विकलेअक्षिणीय-  
स्य अदृढचक्षुर्भवाति हीनदृष्टिर्भवतीत्यर्थः । धर्मेनवमस्थेसुतार्थसुखभाक्  
सुताःपुत्राःअर्थोर्धनंसुखंसुखभावःएषांभागीभवति । केचिद्धर्मेसुतार्थरहितइ-  
तिपठंति । तथाचसत्यः।साध्वाचारविरोधंरुजःप्रदोदैन्यकृन्नवमसंस्थः । खेदशमे  
सुखशौर्यभाक्सुखितोबलीचभवति । लाभेएकादशेप्रभूतधनवान् । बहुवित्तो  
भवति । रिःफद्वादशेपतितः स्वकर्मपरिभ्रष्टोभवति । इत्यादित्यचारः ॥ ३ ॥

मूकोन्मत्तजडांधहीनबधिरप्रेष्याःशशांकोदयेस्वर्क्षाजोच्चग-  
तेधनीबहुसुतःसस्वःकुटुंबीधने ॥ हिंस्रोभ्रातृगतेसुखेसतनये  
तत्प्रोक्तभावान्वितोनैकारिर्मृदुकायवह्निमदनस्तीक्ष्णोलस-  
श्चारिगे ॥ ४ ॥

अथचंद्रेलमद्वितीयतृतीयचतुर्थपंचमषष्ठस्थेजातस्यस्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेना-  
ह ॥ मूकइति । मूकोवाग्धीनः । उन्मत्तः धातुवैषम्याद्यष्टेष्टकारी । जडः  
अप्रतिपन्नः । अंधःनेत्रहीनः । हीनः अनुचितकर्मकृत् । बधिरः श्रोत्रे-  
द्रियहीनः । प्रेष्योदासः । एषामन्यतमोजातः । शशांकोदयेशशांकेचंद्रेउदयगे  
लमस्थेजातोभवति । एतन्मेषवृषकर्कटवर्ज्यम् । तेषांविशेषमाह । स्वर्क्षाजो-  
च्चगतइति । स्वर्क्षःकर्कटकः तस्मिँल्लभेतत्स्थेचंद्रमसिधनीवित्तवान्भवति । अ-  
जेमेषलभेतत्स्थेचंद्रमसिबहुसुतः प्रभूतपुत्रोभवति । चंद्रस्योच्चोवृषः तस्मिँ-  
ल्लभेचंद्रेसस्वः अर्थवान्भवति । धनेलग्रात् द्वितीयचंद्रेकुटुंबी बहुकुटुंबोभ-  
वति । भ्रातृगतेतृतीयस्थानस्थेहिंस्रः क्रूरोभवति । प्राणिवधकोवा । सुखेच  
तुर्थेसतनये तनयेनपंचमेनस्थानेनयुक्तेतत्प्रोक्तभावान्वितस्तेनप्रोक्तेनकथितेन  
भावेनान्वितोयुक्तोभवति । तेनसुखेसुखितस्तनयेपुत्रान्वितइति । नैकारिरित्य  
नैकारिः बहुशत्रुः । मृदुकायः सुकुमारशरीरः । मृदुवह्निः नातिप्रदीप्ता-  
ग्निः । मृदुमदनः मैथुनशीघ्रगः । तीक्ष्णउग्रस्वभावः । अलसःक्रियास्वपदुः ।  
एवंविधोरिगेलग्रात् षष्ठस्थेचंद्रेजातोभवति ॥ ४ ॥



ईर्ष्युस्तीव्रमदोमदेवहुमतिव्याध्यर्दितश्चाष्टमेसौभाग्यात्मज-  
मित्रबंधुधनभागधर्मस्थितेशीतगौ ॥ निष्पत्तिसमुपैति  
धर्मधनधीशौर्यैर्युतः कर्मगेख्यातोभावगुणान्वितोभवगतेशु-  
द्रांगहीनोव्यये ॥ ५ ॥

अथलग्रात्सप्तमाष्टमनवमदशमैकादशद्वादशस्थेचंद्रे जातस्यस्वरूपंशार्दूलवि-  
क्रीडितेनाह ॥ ईर्ष्युरिति । ईर्ष्युः पराद्धिमत्सरी । तीव्रमदः अतिमदनः । ए-  
वंविधोमदेसप्तमस्थेचंद्रेजातोभवति । बहुमतिः बहुप्रज्ञः । चपलबुद्धिरि-  
त्यर्थः । व्याध्यर्दितः रोगपीडितः । एवंविधोऽष्टमस्थेचंद्रेजातोभवति । सौ-  
भाग्यंसर्वजनवाल्लभ्यम् । आत्मजाः पुत्राः । मित्राणिसुहृदः । बांधवाः स्वजनाः ।  
धनंवित्तम् एषांभागीभवति । शीतगौचंद्रेधर्मस्थेनवमस्थानाश्रितेजातोभवति ।  
निष्पत्तिः निष्पादनं सर्वकर्मसमुपैतिगच्छति । धर्मधनधीशौर्यैर्युतः ध-  
र्मेणधनेनवित्तेनधियाबुद्ध्याशौर्येणबलेनयुतः । एवंविधः कर्मगेदशमस्थानस्थेचं-  
द्रेजातोभवति । ख्यातइति । ख्यातः सर्वत्रप्रसिद्धः । भावगुणान्वितः भावए-  
कादशोलाभस्थानंतेनान्वितः सलाभइत्यर्थः । एवंविधोभवगतैकादशस्थेचं-  
द्रेजातोभवति । क्षुद्रोहिंस्रस्वभावः । अंगहीनः अवयवरहितः । एवंविधोव्ययेद्वा-  
दशस्थेचंद्रेजातोभवति । इतिचंद्रचारः ॥ ५ ॥

लग्नेकुजेक्षततनुर्धनगेकदन्नोधर्मैववान्दिनकरप्रतिमोन्यसं-  
स्थः ॥ विद्वान्धनीप्रखलपंडितमंत्र्यशत्रुधर्मज्ञविश्रुतगुणः प-  
रतोर्कवज्ज्ञे ॥ ६ ॥

अथलग्नादिस्थयोभौमबुधयोजातस्यस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ लग्नेइति ।  
लग्नस्थेकुजेप्रहारादिनाक्षततनुः विक्षतशरीरः । धनगेद्वितीयस्थेकदन्नः  
कुत्सितान्नाशीभवति । धर्मेनवमे अघवान्पापरतोभवति । अन्यसंस्थो  
दिनकरप्रतिमः अन्येषुपरिशिष्टस्थानेषुस्थितोदिनकरप्रतिमोर्कतुल्यफलः ।  
तृतीयचतुर्थपंचमषष्ठसप्तमाष्टमदशमैकादशद्वादशेषुयान्येवादित्यस्यफलान्य-  
भिहितानितान्येवभौमस्यवाच्यानि । तद्यथा । तृतीयेमतिविक्रमवांश्च-  
तुर्थेविमुखः पीडितमानसः । पंचमेसुतधनवर्जितः । षष्ठेबलवान् श-  
त्रुंजितश्च । सप्तमेस्त्रीभिः परिभवंगतः । अष्टमेस्वल्पात्मजः विकलेक्षणश्च । नवमे  
सुतार्थमुखभाक् । दशमेसुखशौर्यवान् । एकादशेप्रभूतधनवान् । द्वादशेपतितः ।  
इतिभौमचारः । अथ बुधचारः । विद्वान्धनीत्यादि । ज्ञेबुधेलग्रगतेवि-  
द्वान्पंडितोभवति । द्वितीयेधनीधनवान् । तृतीयेप्रखलः प्रकर्षेणखलोदुर्जनः ।

चतुर्थेऽपंडितः । पंचमेमंत्री । षष्ठेऽशत्रुः विगतरिपुः । सप्तमेधर्मज्ञः । अष्टमेविश्रुतगुणः प्रख्यातगुणः । परतोऽनंतरान्यस्थानेऽर्कवत् सूर्यवत् ॥ नवमदशमैकादशद्वादशेषुयान्यर्कस्यफलान्यभिहितानितान्येवबुधस्यवाच्यानि । तद्यथा । नवमेसुतार्थसुखभाक् । दशमेसुखशौर्यभाक् । एकादशेप्रभूतधनवान् । द्वादशेपतितइति । इतिबुधचारः ॥ ६ ॥

विद्वान्सुवाक्यः कृपणः सुखीचधीमानशत्रुःपितृतोधिकश्च ॥

नीचस्तपस्वीसधनः सलाभःखलश्चजीवेकमशोविलग्नात् ॥७॥

अथलगादिस्थस्यजीवस्यफलमिंद्रवज्रयाह ॥ विद्वानिति । जीवेगुरौविलग्नात्प्रभृतिस्थितेषुद्वादशेषुस्थानेषुकमशः परिपाद्यैतानिफलानि । तद्यथा । लग्नस्थेगुरौ विद्वान्पंडितोभवति । द्वितीयेसुवाक्यः शोभनवचनः । तृतीयेकृपणः अदाता । चतुर्थेसुखी । पंचमेधीमान् बुद्धिमान् । षष्ठेऽशत्रुः विगतरिपुः । सप्तमेपितृतोधिकः पितुःसकाशाङ्गणाधिकः । अष्टमेनीचःस्वकुलानुचितकर्मकृत् । नवमेतपस्वी विद्यमानतपाः । दशमेसधनः सवित्तः । एकादशेसलाभः लाभयुक्तः । द्वादशेखलः क्रूरचेष्टः । इतिबृहस्पतिचारः ॥ ७ ॥

स्मरनिपुणःसुखितश्चविलग्नप्रियकलहोऽस्तगतेसुरतेप्सुः ॥

तनयगतेसुखितोभृगुपुत्रेगुरुवदोन्यगृहेसधनोत्ये ॥ ८ ॥

अथलगादिस्थस्यशुकस्यफलंचित्रतयाह ॥ स्मरनिपुणइति । स्मरनिपुणः कामकुशलः । सुखितः संजातसुखः । एवंविधोविलग्नस्थेभृगुपुत्रेशुकेजातोभवति । प्रियकलहः कलहवल्लभः । सुरतेप्सुः सुरताभिलाषी । एवंविधोऽस्तगतेसप्तमस्थेशुकेजातोभवति । तनयगतेपंचमस्थेशुकेसुखितोभवति । गुरुवदोन्यगृहे अतोस्मात्स्थानत्रयादन्यस्मिन्गृहेस्थानेगुरुवत् । जीववत्फलानिवक्तव्यानि । द्वितीयतृतीयचतुर्थषष्ठाष्टमनवमदशमैकादशद्वादशेषुयान्येवगुरोः बृहस्पतेःफलान्यभिहितानि तान्येवशुकस्यवक्तव्यानि । तद्यथा । द्वितीयेसुवाक्योभवति । तृतीयेकृपणः । चतुर्थेसुखी । षष्ठेऽशत्रुः । अष्टमेनीचः । नवमेतपस्वी । दशमेसधनः । एकादशेसलाभः । द्वादशेखलः । सधनोत्ये अंत्येमीने । यत्रतत्रभावस्थेसधनःवित्तवान्भवति । स्थानोक्ततत्फलंनभवति । केचिद्गुरुवदस्तुज्ञेषेद्रविणीस्यादितिपठन्ति । अतोऽनंतरंपरिशेषस्थानेषुगुरुवत् । ज्ञेषमीनेद्रविणीस्यात् भवेदिति । इतिशुकचारः ॥ ८ ॥

अदृष्टार्थोऽरोगीमदनवशगोऽत्यंतमलिनःशिशुत्वेपीडार्तःसवित्सुतलग्नैत्यलसवाक् ॥ गुरुस्वक्षौच्चस्थेनृपतिसदृशोग्रामपुरपःसुविद्वांश्चार्वाङ्गोदिनकरसमोन्यत्रकथितः ॥ ९ ॥



अथलमादिस्थस्यसौरस्यफलंशिखरिण्याह ॥ अदृष्टार्थो रोगीति । अदृष्टार्थः नित्यंदरिद्रः । रोगीव्याधितः । मदनवशगः कामाधीनः । अत्यंतमलिनः अतीवमलोपेतः । शिशुत्वेबाल्येपीडातोव्याध्यर्दितः । अलसवाक् अव्यक्तभाषी । एवंविधः सवितृसुतेसौरलग्नस्थितेजातोभवति । यदितुलाधन्विमकरकुंभमीनानामन्यतमोराशिः लग्नगतोनभवति तदा तदेतदुक्तंफलंभवति । एषामन्यतमेलग्नगतस्यसौरस्यफलमाह । गुरुस्वक्षौंच्चस्थइति । गुरुक्षेत्रे । धन्विमीनौ शनैश्चरस्यस्वक्षेत्रेस्वक्षेत्रेमकरकुंभौतस्यैवोच्चस्तुला । एषामन्यतमोराशिः यदिलग्नगतोभवति तत्रस्थितेचसौरैरुपतिसदृशः राजतुल्योभवति । ग्रामपुरपः ग्रामाणांपुराणांचाधिपतिः सुविद्वान्पंडितः । चार्वंगः शोभनावयवश्चभवति । केचित्सुहृत्स्वक्षौंच्चस्थइतिपठंति तदयुक्तम् । यस्मात्सारावल्यामुक्तम् । स्वोच्चैस्वजीवभवनेक्षितिपालतुल्योलग्नैर्ऋजोभवतिदेशनराधिनाथः ॥ शेषेषुदुःखगदपीडितएवबाल्येदारिद्र्यकामवशगोमलिनोलसश्च ॥ १॥ दिनकरसमोन्यत्रकथितइति । अन्यत्रद्वितीयादिपुस्थानेषुदिनकरसमोर्कतुल्यः कथितउक्तोयान्यादित्यस्यफलान्यभिहितानितान्येवसौरस्यवाच्यानितद्यथा । द्वितीयेभूरिद्रव्योन्पहतधनोवक्ररोगीचभवति । तृतीयेमतिविक्रमवान् । चतुर्थेविमुखः पीडितमानसः । पंचमेअसुतोधनवर्जितः । षष्ठेवलवान् शत्रुनिर्जितः । सप्तमेस्त्रीभिःपरिभवंगतः । अष्टमेस्वलपात्मजोविकलेक्षणश्च । नवमेसुतार्थसुखभाक् । दशमेसुखशौर्यभाक् । एकादशेप्रभूतधनवान् । द्वादशेपतितइति । इतिशनैश्चरचारः ॥ ९ ॥

सुहृदरिपरकीयस्वर्क्षतुंगस्थितानांफलमनुपरिचित्यंलग्नदेहादिभावैः ॥ समुपचयविपत्तीसौम्यपापेषुसत्यःकथयतिविपरीतरिःफपष्ठाष्टमेषु ॥ १० ॥

अथलमादारभ्ययेतन्वादयोभावास्तेषुभावेषुव्यवस्थितानांसर्वेषामेवग्रहाणांफलविशेषंमालिन्याह ॥ सुहृदिति।यदेतत्प्रतिगृहंलमात्प्रभृतिद्वादशसुस्थानेषुफलमनुपरिचित्यम्।भावाःतनुकुटुंबसंहोत्थादयः । लग्नदेहादिभावैरिति । लग्नं देहः शरीरंपरिकल्प्यम् । लमादारभ्यतनुकुटुंबसंहोत्थादयोभावाःपरिकल्प्याः । अत्रकाभ्रांतिः । तत्रोच्यते । अस्त्येव । यस्माद्यवनेश्वरः । मूर्तिचहोरांशशिभंचविद्यादिति ॥ अत्रशशिभात्रपरिकल्प्यालग्नात्परिकल्प्याः । तेषुशरीरादिभावेषुयोग्रहोव्यवस्थितः सतस्यभावस्यपुष्टिकृशतांवाकरोति । कथमित्याह । सुहृदरिपरकीयस्वर्क्षतुंगस्थितानांफलमनुपरिचित्यमिति । सुहृत्क्षेत्रंमित्रक्षेत्रं । अरिक्षेत्रंशत्रुभं । परकीयमुदासीनभं।स्वर्क्षमात्मीयक्षेत्रं । तुंगमुच्चभम् । एते-

पुस्थानेषु स्थितानां फलमनुपरिचित्यं परिकल्प्यम् । भावस्थोग्रहोयादशेक्षेत्रे  
भवति तादृशं फलं प्रयच्छति । नन्वत्र सुहृदादिक्षेत्राणां परिगणनाकृता  
तत्र न शुभाशुभफलविभाग उक्तः । उच्यते । अर्थादेवैतद्गम्यते । यथामित्रक्षेत्रे  
स्थोभाववृद्धिं करोति शत्रुक्षेत्रादिस्थश्च तद्धानिम् । तत्र च येषु भाशुभक्षेत्रे नोक्ते त्रि-  
कोणनीचभेते अपि ग्राह्ये । मित्रादिक्षेत्रान्यक्षेत्रोपलक्षणानि ज्ञेयानि । कः पुनरपि अ-  
रिपरकीययोर्विशेष उच्यते । उदासीनोत्र परोभिप्रेतः । अरिः शत्रुः । पर उदासी-  
नः । तत्रैतदुक्तं भवति । पापः सौम्यो वा नीचस्थः शत्रुक्षेत्रस्थो वा यस्मिन् भा-  
वे व्यवस्थितः तस्य भावस्य हानिं करोति । उदासीनक्षेत्रस्थो न हानिं न च वृद्धिम् ।  
मित्रक्षेत्रे स्वक्षेत्रे मूलत्रिकोणे स्वोच्चैव्यवस्थितो भावस्य वृद्धिमिति । एतत्केषां-  
चिन्मते । तथा च भगवान् गार्गिः । नीचक्षरिपुगेहस्थो ग्रहो भावविनाशकृत् ।  
उदासीनगृहे मध्यो मित्रक्षेत्रस्वत्रिकोणगः । स्वोच्चगश्च ग्रहो वश्यं भाववृद्धिकरः  
स्मृत इति । सत्याचार्यस्तु पुनः । समुपचयविपत्ती सौम्यपापेषु कथयति । य-  
स्मिन् भावे सौम्याः स्थितास्तस्य भावस्य समुपचयं वृद्धिं कुर्वन्ति । यस्मिन् भावे पा-  
पाः स्थितास्तस्य भावस्य विपत्तिं हानिं कुर्वन्ति । किंतुरिः षष्ठ्याष्टमे वेतद्विपरी-  
तं कथयति । रिः फेद्वादशे स्थाने सौम्याः भावहानिं कुर्वन्ति । पापाः वृद्धिं । तेन रिः फे सौ-  
म्याव्ययहानिं कुर्वन्ति । पापाः व्ययवृद्धिम् । षष्ठे सौम्याः शत्रुहानिं कुर्वन्ति  
पापाः शत्रुवृद्धिम् । अष्टमे सौम्याः मृत्युहानिं कुर्वन्ति पापाः मृत्युवृद्धिमिति ।  
तथा च सत्यः । सौम्याः पुष्टिपापास्तद्धानिं संश्रिताग्रहाः कुर्युः ॥ त्र्यादिपुनिध-  
नेत्येष्वेव विपर्ययात्फलदाः । ननु पूर्वसौम्यानां पापानां चोपचयस्थानावस्थि-  
तानां शुभं फलं व्याख्यातं तत्कथं षष्ठस्थाः पापाः शत्रुवृद्धिं कुर्वन्ति । अत्रोच्यते ।  
पूर्वसामान्येनोक्तम् । यत्र च वाचनिकी वाधा भवति तत्र सामान्यं भावफलं  
त्यक्त्वा यथोक्तफलं वक्तव्यम् । यद्येवं कथं स्वल्पजातके उक्तम् । पुष्पांति शुभाभावा  
न्मृत्यादीन् व्रतिसंस्थिताः पापाः । सौम्याः षष्ठेरिन्नाः सर्वेनेष्टाव्ययाष्टम-  
गा इति । अत्रोच्यते । बृहज्जातके आचार्येणोक्तं स्वल्पजातकेऽन्याचार्यमत-  
नप्रातिज्ञातमाचार्येण । ज्यौतिषमागमशास्त्रं विप्रतिपत्तौ न योग्यमस्माकम् ।  
स्वयमेव विकल्पयितुं किंतु बहूनां मतं वक्ष्ये । यत्राचार्याणां समसंख्यानां मतभेद-  
समत्वं भवति । तत्र वराहमिहिरो मतद्वयमपि दर्शयति । तथा च बृहद्वात्राया-  
मन्यरूपां ग्रहकुंडलिकां स्वल्पयात्रायां सामान्यरूपां पठति । एवं बृहदल्पयोर्विवाह-  
पटलयोरपि ॥ १० ॥

उच्चत्रिकोणस्वसुहृच्छत्रुनीचगृहार्कगैः ॥

शुभं संपूर्णपादो न दलपादाल्पनिष्फलम् ॥ ११ ॥

इति बृहज्जातके भावाऽध्यायः समाप्तः ॥ २० ॥



अथग्रहकुंडलिकाफलविशेषमनुष्टुभाह ॥ उच्चेति । ग्रहकुंडलिकायांफलं द्विविधमुक्तं शुभमशुभंच । तत्रयच्छुभंफलं तदुच्चत्रिकोणस्व-  
सुहृच्छत्रुनीचगृहार्कगैर्ग्रहैर्दत्तंयथाक्रमंपादोनदलपादाल्पनिष्फलंभवति । तेनो-  
च्चस्थोग्रहःसंपूर्णप्रयच्छति।मूलात्रिकोणस्थःपादोनम्।स्वक्षेत्रस्थोऽर्द्धमित्रक्षेत्रस्थः  
पादफलम् । शत्रुक्षेत्रस्थः पादादप्यल्पम् । नीचस्थोस्तमितश्चनकिंचिदपि ।  
एवंशुभफलं । शुभग्रहणादेवाशुभस्यग्रहस्यव्युत्क्रमोव्याख्येयः । तत्रास्तमितो  
नीचस्थश्चाशुभंफलंसंपूर्णप्रयच्छति । शत्रुक्षेत्रस्थः पादोनमित्रक्षेत्रस्थोऽर्द्धमित्र-  
क्षेत्रस्थः पादम् । त्रिकोणस्थः पादादप्यल्पम् । उच्चस्थोनाकिंचिदपि । एवं  
जातककालेग्रहस्यावस्थानात्फलंवाच्यम् । दशाष्टकवर्गादिफलपत्तिकालेशुभम-  
शुभंवापुष्टफलंबलवानेवप्रयच्छति । एतच्चपूर्वमेवव्याख्यातम् । उक्तंच । तत्का-  
लंबलयुक्तोभवतियदिदशाधिपस्तस्य शुभमशुभंवापिफलवंक्तव्यंनित्यमेव  
परिपूर्णम् ॥ ११ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौभावाऽध्यायोविंशतिःसमाप्तः ॥ २० ॥

कुलसमकुलमुख्यबंधुपूज्याधनिसुखिभोगिनृपाःस्वभैकवृद्ध्या ॥  
परविभवसुहृत्स्वबंधुपोष्यागणपबलेशनृपाश्चमित्रभेषु ॥ १ ॥

अथातआश्रययोगाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवैकादिसंख्योत्तरवृद्ध्या  
स्वग्रहगतानांग्रहाणांमित्रक्षेत्रगतानांचफलंपुष्पिताग्रयाह ॥ कुलसमकुलेति ।  
स्वभेषुस्वराशिष्वेकवृद्ध्यास्थितैः ग्रहैर्जाताः कुलसमकुलमुख्यबंधुपूज्या ध-  
निसुखिभोगिनृपाः पुरुषाभवंति । यस्मिंस्तस्मिन्ग्रहेस्वक्षेत्रगतजातः  
कुलसमः स्वकुलतुल्योभवति । एवंद्वयोः स्वक्षेत्रस्थयोः । कुलमुख्यः  
स्वकुलप्रधानः स्वकुलाधिकः । त्रिषुबंधूनांपूज्यः । चतुर्षुधनीवित्तवान् ।  
पंचसुसुखी । षट्सुभोगीनृपतुल्यः । केचिद्भूपइतिपठंति । सचोपमानाद्भूपति-  
रिवभूपस्तत्समत्वमेवमुक्तम् । स्वल्पजातकेष्युक्तम्।कुलतुल्यकुलाधिकबंधुमान्य-  
धनिभोगिनृपसमनरेन्द्राः । एवंषट्सुनृपसमः । सप्तसुनृपोराजा । एवंगुणः  
एकोत्तरवृद्ध्यास्वक्षेत्रगेषुजातोभवति । परविभवेत्यादि । एकवृद्ध्याइत्यनुव-  
र्तते । मित्रभेष्वेकवृद्ध्यास्थितेषु परविभवसुहृत्स्वबंधुपोष्यागणपबलेशनृ-  
पाश्चजाताभवंति । तेनैकस्मिन्मित्रक्षेत्रस्थेग्रहेजातः परविभवपोष्योभवति ।  
पराजीवीत्यर्थः । द्वयोः सुहृत्पोष्यः । त्रिषुस्वपोष्योज्ञातिपोष्योभवति ।  
चतुर्षुबंधुपोष्यः भ्रातृपोष्यइत्यर्थः । पंचसुगणपः गणस्वामी । षट्सुबलेशो  
सेनापतिः । सप्तसुनृपोराजा ॥ १ ॥

जनयतिनृपमेकोप्युच्चगोमित्रदृष्टःप्रचुरधनसमेतंमित्रयोगा-  
च्चसिद्धम्॥विधनविसुखमूढव्याधितोबंधतप्तोवधदुरितसमेतः  
शत्रुनीचर्क्षणेषु ॥ २ ॥

अथोच्चगतस्यैकस्यापिमित्रदृष्टस्यफलमेकोत्तरवृद्ध्यानीचशत्रुस्थानांचमा-  
लिन्याह ॥ जनयतीति । एकोप्युच्चगतोग्रहोमित्रदृष्टः सुहृदवलोकितः  
नृपंराजानंजनयति उत्पादयति । एवमेकोप्युच्चगतोमित्रयोगान्मित्रयुक्त-  
त्वात्प्रचुरधनसमेतंसिद्धंचजनयति प्रचुरधनसमेतं पर्याप्तवित्तयुक्तंसिद्धंच  
सर्वत्रावाप्तपूजंजनयति । विधनविसुखमूढेत्यादि । एकवृद्धयेत्यनुवर्तते । एक-  
वृद्ध्या । शत्रुनीचर्क्षणेषु शत्रुक्षेत्रस्थेषु नीचगेषुवाग्रहेषु । विधनविसुखमूढ-  
व्याधिताबंधतप्तावधदुरितसमेताजाताः भवन्ति । तेनयस्यजन्मन्येकोग्रहः  
शत्रुक्षेत्रगोनीचगोवाभवतिसविधनः विगतधनोभवति दरिद्रः । यस्यद्वौ  
सविसुखोदुःखितः । यस्यत्रयः समूढः विवित्तः । यस्यचत्वारः सव्या-  
धितः पीडितः । यस्यपंच सबंधनतप्तोभवति । यस्यषट् सतप्तोभवति बहुदुः-  
खसंतप्तः । यस्यसप्त सवधदुरितसमेतोभवति । वधवध्योदुरितंदुष्कृतं वध  
एवदुरितंतेनसमेतोयुक्तोवा । नीचेयद्यपिसप्तनसंभवन्ति तथापिविज्ञादिवत्पूर्व-  
शास्त्रानुसारिणतत्फलोपदेशः ॥ २ ॥

नकुंभलग्नंशुभमाहसत्योनभागभेदाद्यवनावदन्ति ॥

कस्यांशभेदोनतथास्तिराशेरतिप्रसंगस्त्विति विष्णुशुभः ॥ ३ ॥

अथकुंभलग्नजातस्याऽशुभंफलमुपजातिकयाह ॥ नकुंभलग्नमिति । सत्या-  
चार्यः । कुंभलग्नंजन्मनिनशुभमाह नशोभनमुक्तवान् । तथाचसत्यः । जन्म-  
निचंद्रःश्रेष्ठःप्रवदेद्द्वोरारिनिधनवर्ज्यः स्यात् । होराचभवेदिष्टाद्विपदे-  
ष्विहकुंभवर्ज्येहि । कुंभविलग्नजातोभवतिनरोदुःखशोकसंतप्तइति । नभागभे-  
दादिति । पुराणयवनाभागभेदाद्वादशभागभेदाज्जन्मनिकुंभलग्नमशुभमिति  
यस्यतस्यलग्नस्यकुंभद्वादशभागेजन्मनशुभमिति तेषामंतनकुंभलग्ने । तथाच ।  
तन्मतानुसारिणाश्रुतकीर्तिनाप्युक्तम् । सर्वस्मिँल्लग्नगतेकुंभद्विरसांशकोयदाभ-  
वाति । राशौनतदासुखितःपरान्नभोजीभवेत्पुरुषइति । अत्रविष्णु-  
शुभचाणक्यावाहतुः । कस्यांशभेदइति । यदुक्तम् । भागभेदात्कुंभलग्नं  
जन्मनिनशुभम् । तत्कस्यराशेर्लग्नगतस्य । कुंभद्वादशभागोनास्त्यपितुसर्व-  
स्यैवास्तिविद्यते । यस्माद्यदिकुंभस्यद्वादशभागोनशुभस्तदासर्वाण्येवलभो-  
क्तानिफलानिनिरर्थकानिभवन्ति । तस्मादतिप्रसंगः । तेनकुंभलग्नमेवाशुभंतत्त-



द्वागभेदइति । तथाचतद्वाक्यम् । कुंभद्वादशभागोलग्रगतोनप्रशस्यतेयवनैः । यद्येवंसर्वेषांलगतानामनिष्टफलतास्यात् । घटयोगाद्राशीनांनमतंतत्सर्व-  
शास्त्रकाराणाम् । तस्मात्कुंभविलग्नोजन्मन्यशुभोनतद्वागइति ॥ ३ ॥

यातेष्वसत्स्वसमभेषुदिनेशहोराख्यातोमहोद्यमबलार्थयुतोति-  
तेजाः ॥ चांद्रांशुभेषुयुजिमादवकांतिसौख्यसौभाग्यधीमधुर-  
वाक्ययुतःप्रजातः ॥ ४ ॥

अधुनाहोरास्थानांग्रहाणांफलंवसंततिलकेनाह ॥ यातेष्विति । असद्ग्रहाः  
पापाः तेष्वसत्सुपापेषुअसमभेषुविषमराश्यवस्थितेषु नकेवलंपावद्दिनेशहो-  
रामादित्यहोरांयातेषुप्रातेषुविषमराशिषुपापाः प्रथमार्द्धस्थायदाभवन्ति ।  
तदाजातः ख्यातः सर्वत्रप्रसिद्धः । महोद्यमबलार्थयुतः महत्सुकार्यै-  
षूद्यमरतोवलवान् वीर्यवान् । अर्थयुतोधनवान् । अतितेजाअतितेज-  
स्वीभवति । चांद्रांशुभेष्विति । युजियुग्राशौशुभेषुसौम्यग्रहेषु चांद्रांहोरांया-  
तेषुसमराशिषुप्रथमार्द्धस्थाः सौम्या भवन्ति । तदाजातोमार्दवयुतोमृ-  
दुस्वभावः । कांतियुतोद्युतिमान् । सौख्ययुतः सुखान्वितः । सौभाग्ययुतः  
सर्वजनप्रियः । धीयुतः मतिमान् । मधुरवाक्ययुतः प्रियंवदः । एतैः गुणैर्युक्तो  
जातोभवति ॥ ४ ॥

तास्वेवहोरास्वपरर्क्षगेषुज्ञेयानराः पूर्वगुणेषुमध्याः ॥

व्यत्यस्तहोराभवनस्थितेषुमर्त्याभवन्त्युक्तगुणैर्विहीनाः ॥ ५ ॥

अथपुनरपिहोरागतफलमिद्वज्रयाह ॥ तास्वेवेति । तास्वेवपूर्वोक्तासुहो-  
रास्वपरर्क्षगेष्वन्यराश्याश्रितेषुजातानराः सर्वेषुपूर्वोक्तगुणेषुमध्याः भवन्ति ।  
एतदुक्तंभवति । समराशिषुराविहोरायांपापग्रहाणामवस्थानंभवति । तदा  
जातानां पूर्वोक्तगुणा मध्याभवन्ति । एवंविषमराशिषुचंद्रहोरायांसौम्यग्रहाणामव-  
स्थानंभवति तदाजातानांपूर्वोक्तगुणामध्याभवन्ति । व्यत्यस्तहोराभवन-  
स्थितेष्विति । व्यत्यस्तासु विपरीतस्थासुहोरासु व्यत्यस्तेषुच  
भवनेषुराशिषुस्थितेषुग्रहेषु जातामर्त्यामनुष्याउक्तगुणैः प्रागुद्दिष्टैः गुणैः  
विहीनावर्जिताभवन्ति । एतदुक्तंभवति । समराशिषुचंद्रहोरायांपापानामव-  
स्थानंभवति । तदाजातामहोद्यमबलार्थहीनाभवन्ति वितेजसश्च । एवं  
विषमराशिषुआदित्यहोरायांसौम्यानामवस्थानंभवति तदाजातामार्दवकां-  
तिसौख्यसौभाग्यधीमधुरवाक्यविहीनाजाताभवन्ति । अत्रचदर्शितेग्रहावस्थाने  
यथायथाग्रहबहुत्वंभवति तथातथागुणबहुत्वंवक्तव्यम् ॥ ५ ॥

कल्याणरूपगुणमात्मसुहृद्दृकाणेचंद्रोन्यगस्तदधिनाथगुणं  
करोति ॥ व्यालोद्यतायुधचतुश्चरणांडजेषुतीक्ष्णोऽतिहिंस्रगुरु-  
तलपरतोऽटनश्च ॥ ६ ॥

अथद्रेष्काणावस्थानाच्चंद्रस्यफलंवसंततिलकेनाह ॥ कल्याणरूपगुणमिति ।  
आत्मीयद्रेष्काणेतदाचंद्रः स्थितोभवति । अथवासुहृद्द्रेष्काणोस्थितस्तदाजातः  
कल्याणरूपगुणः प्रशस्तरूपः प्रशस्तगुणश्चभवति । आत्मीयद्रेष्काणमित्रद्रेष्का-  
णावस्थानंविनान्यद्रेष्काणावस्थितेचंद्रमसिविचारः । यस्मादुक्तान्यगस्तदधि-  
नाथगुणंकरोति । यस्मिन्द्रेष्काणेचंद्रमाव्यवस्थितस्तस्ययोधिपतिः सयदिचं-  
द्रस्यतत्कालमध्यस्थस्तदाजातस्यमध्यमौरूपगुणोभवतः । अथद्रेष्काणाधिप-  
तिश्चंद्रस्यतत्कालमरिस्तदाजातोरूपगुणहीनोभवति । व्यालोद्यतायुधेति । व्या-  
लद्रेष्काणः सर्पद्रेष्काणस्तत्रस्थेचंद्रेजातः तीक्ष्णउग्रोभवति । उद्यतायुधद्रेष्काणः  
सायुधस्तस्थेचंद्रेजातोतिहिंस्रोमारणात्मकोभवति । प्राणिघातरतइत्यर्थः ।  
चतुश्चरणः चतुष्पद्रेष्काणः । तत्रस्थेचंद्रेगुरुतलपरतोगुरुदाराभिगामी  
भवति । अंडजद्रेष्काणः पक्षिद्रेष्काणस्तत्रस्थेचंद्रेऽटनः परिभ्रमण-  
शीलोभवति । आत्मीयादिद्रेष्काणस्थेचंद्रमसिव्यालद्रेष्काणस्थेचंद्रेसभव-  
तःफलद्वयमपिवक्तव्यम् । अत्रव्यालद्रेष्काणाः। कर्कटद्वितीयः । कर्कटतृतीयः ।  
वृश्चिकाद्यः । वृश्चिकद्वितीयः । मीनतृतीयः ॥ उद्यतायुधद्रेष्काणाः । मेपाद्यः ।  
मेषतृतीयः । मिथुनद्वितीयः । मिथुनतृतीयः । सिंहद्वितीयः । सिंहतृतीयः ।  
कन्याद्वितीयः । तुलातृतीयः । धनुषिप्रथमः । धनुषितृतीयः । मकरतृतीयः ॥  
अथचतुष्पदद्रेष्काणाः । मेषद्वितीयः । वृषद्वितीयः । वृषतृतीयः । कर्कप्रथमः ।  
सिंहप्रथमः । सिंहद्वितीयः । सिंहतृतीयः । तुलातृतीयः । वृश्चिकतृतीयः । धनुषि  
प्रथमः । मकराद्यः ॥ अथखगद्रेष्काणाः । मिथुनद्वितीयः । सिंहप्रथमः ।  
तुलाद्वितीयः । कुंभप्रथमः । अत्रापिगुणद्वयांतर्भूतद्रेष्काणस्थेचंद्रेफलद्वयं  
वक्तव्यमिति ॥ ६ ॥

स्तेनोभोक्तापंडिताढ्योनरेन्द्रः कृविः शूरोविष्टिकृद्दासवृत्तिः ॥ पा-  
पोहिंस्रोऽभीश्वर्गोत्तमांशेष्वेषामीशाराशिवद्वादशांशैः ॥ ७ ॥

अधुनामेषादिनवांशकेजातस्यस्वरूपंशालिन्याह ॥ स्तेनइति । मेषवर्ज्यम-  
न्यस्मिन् राशौलभगतेमेषनवांशकेजातः स्तेनश्चौरोभवति । वृषवर्ज्यं वृष-  
नवांशकेजातोभोक्ता असंचयशीलः । एवंमिथुनवर्ज्यमिथुननवांशकेजातः



पंडितोविद्वान्भवति । कर्कटनवांशकेजातः आढ्यः ईश्वरः । सिंहांशकेनरेंद्रो राजा । कन्यांशकेक्लीबः पुरुषाकाररहितः । तुलांशकेशूरः संग्रामप्रियः । वृश्चिकांशकस्थेविष्टिकृद्भारजीवी । धन्यंशकेदासवृत्तिः । मकरांशकेपापः । कुंभांशकेहिंस्रः क्रूरः । मीनांशकेऽभीः निर्भयः । केचिदधीरितिपठंति । अधीः बुद्धिरहितः । आचार्यस्यचाभीरभिमतम् । तथाचस्वल्पजातके । तस्क-  
रभोक्तृविचक्षणधनिनृपतिनपुंसकाभयदरिद्राः । खलपापोग्रोत्कृष्टामेषाद्यानां नवांशभवाइति । वर्गोत्तमांशेष्वेधामीशाः । एष्वेवराशिपुवर्गोत्तमांशेषुजाताएषा-  
मेवपूर्वोक्तानामीशाःस्वामिनोभवन्ति । एतदुक्तंभवति । मेषलग्नेमेषनवांशके जातश्चौरस्वामीभवति । वृषलग्नेवृषनवांशकेजातोभोक्तृणामसंचयशीलानां स्वामीभवति । एवंमिथुनेपंडितस्वामी । कर्कटलग्नेईश्वराणांस्वामी महाध-  
निकः । सिंहेनृपस्वामी महाराजाधिराजः । कन्यायांक्लीबस्वामी । तुलायांशू-  
राणांस्वामी । वृश्चिकेभारवाहानांस्वामी । धन्विनिदासानांस्वामी । मकरपापानां स्वामी । कुंभेक्रूराणांस्वामी । मीनांशकेऽभयानांस्वामी । राशिवद्वादशांशैरि-  
ति । द्वादशांशैः राशिवत्फलानिवाच्यानि । यानिमेषादिस्थेचंद्रमसिफलान्य-  
भिहितानि वृत्ताताम्रदृगित्येवमादीनितान्येवमेषादिद्वादशांशकजातस्यवक्त-  
व्यानीति ॥ ७ ॥

जायान्वितोबलविभूषणसत्त्वयुक्तस्तेजोतिसाहसयुतश्चकुजे  
स्वभागे ॥ रोगीभृतस्वयुवतिर्विषमोन्यदारोदुःखीपरिच्छदयु-  
तोमलिनोर्कपुत्रे ॥ ८ ॥

अथभौमसौरयोः स्वत्रिंशांशकस्थयोःफलंवसंततिलकेनाह ॥ जायान्वि-  
तइति । जायान्वितोभार्यायुक्तः । बलवीर्यं विभूषणान्यलंकरणानि सत्त्वमौ-  
दार्यमेतैर्युक्तः । तथातितेजाः अतिसाहसेनासमीक्षितकार्यकरणेनचयुक्तः ।  
एवंविधः कुजेभौमेस्वभागेस्वत्रिंशांशकस्थेजातोभवति । रोगीव्याधितः । मृ-  
तस्वयुवतिः मृतास्वाआत्मीयायुवतिर्भार्यायस्य । विषमः क्रूरः । अन्यदा-  
रोऽन्यसंबन्धिनीदारायस्य परदारासक्तः । दुःखीनिःसुखः । परिच्छदयुतोऽगृहव-  
स्त्रपरिवारोपेतः । मलिनःमलोपेतः । एवंविधोर्कपुत्रेसौरेस्वत्रिंशांशकस्थेजातो  
भवति । नन्वत्रिंशांशकग्रहणं नास्ति तत्कथंज्ञायते त्रिंशांशकफलमेतत् ।  
उच्यते । शुक्रफलाभिधानेत्रिंशांशकग्रहणंभविष्यति ॥ ८ ॥

स्वांशेगुरौधनयशःसुखबुद्धियुक्तास्तेजस्विपूज्यनिरुद्यम-  
भोगवंतः ॥ मेधाकलाकपटकाव्यविवादशिल्पशास्त्रार्थसा-  
हसयुताःशशिजेतिमान्याः ॥ ९ ॥

अथजीवबुधयोःस्वत्रिंशांशकस्थयोः जातस्यस्वरूपंवसंततिलकेनाह ॥ स्वां-  
शइति । धनेनवित्तेन यशसाकीर्त्याः सुखेननिर्दुःखत्वेन बुद्ध्याप्रज्ञयाच युक्ताः ।  
तेजस्वीसोत्साहः पूज्यःलोकवंद्यः । निरुक् स्वस्थदेहः । उद्यमवान् उत्थान-  
शीलः । भोगवान् भोगसंयुक्तः । एवंविधागुरौजीवेस्वत्रिंशांशकस्थेजाताभवन्ति ।  
मेधाबुद्धिः । कलागीतवाद्यनृत्यपुस्तकचित्रकर्मादिकाः । कपटः दांभिकत्वम् ।  
काव्यंकवेःकर्म । विवादःवाक्पटुत्वांशिलपंतक्षकर्मादि । शास्त्रार्थःसतामाचारा-  
नुष्ठानं साहसमसमीक्षितकार्यकरणशीलता । अतिमान्योतिपूज्यः । एवंवि-  
धाः । शशिजेबुधेस्वत्रिंशांशकस्थेजाताः भवन्ति । केचिदत्रसर्वत्रैकवचनमेवे-  
च्छंतितथापिनकश्चिदोषः ॥ ९ ॥

स्वेत्रिंशांशेबहुसुतसुखारोग्यभाग्यार्थरूपः शुक्रेतीक्ष्णःसु-  
ललितवपुः सुप्रकीर्णोद्रियश्च ॥ शूरस्तब्धोविषमवधकौसद्गु-  
णाढ्यौसुखिज्ञौचार्वांगेष्टौरविशशियुतेष्वारपूर्वांशकेषु ॥ १० ॥

इतिबृहज्जातकेआश्रययोगाध्यायः ॥ २१ ॥

अथशुक्रस्यस्वत्रिंशांशकस्थस्य भौमादित्रिंशांशकस्थयोश्चंद्रार्कयोश्चजातस्य  
स्वरूपमंदाक्रांतयाह ॥ स्वेत्रिंशांशेइति । बहुसुतः प्रभूतपुत्रः । बहुसुखोऽपारि-  
मितसुखः । आरोग्येणनिरोगतया भाग्यैः जनप्रियत्वेन अर्थेनधनेन  
रूपेणसुचारुतया संयुक्तः । केचिद्भार्यार्थरूपइतिपठन्ति । भार्ययाकलत्रेण ।  
तथातीक्ष्णः क्रूरः । सुललितवपुः शोभनशरीरः । सुप्रकीर्णोद्रियः ।  
विक्षिप्तोद्रियार्थः । सुप्रकीर्णानिविक्षिप्तानीन्द्रियाणियस्य । बहुस्त्रीगमनशी-  
लः । एवंविधः शुक्रेस्वत्रिंशांशकस्थेजातोभवति । शूरस्तब्धावित्यादि ।  
आरपूर्वांशकेषुभौमप्रथमेषुभागेषुरविशशियुक्तेष्वर्कचंद्रसंयुक्तेषु यथासंख्यंफला-  
नि । तद्यथा । भौमत्रिंशांशकस्थेर्के शूरः संग्रामप्रियः । चंद्रेस्तब्ध-  
श्चिरकारी । सौरत्रिंशांशकस्थेर्केविषमः क्रूरोभवति । चंद्रमसिवधकः ।  
जीवत्रिंशांशकस्थेऽर्केसद्गुणोभवति । चंद्रमस्याढ्यः ईश्वरः । बुधत्रिंशांश-  
कस्थेर्केसुखीभवति । चंद्रेज्ञः पंडितः । शुक्रत्रिंशांशकस्थेर्केचार्वांगः  
शोभनशरीरः । चंद्रमसीष्टः सर्वजनप्रियः । एवमारपूर्वेष्वंशेषुआरोंगारकः  
पूर्वः प्रथमोयेषामंशकानांत्रिशद्भागानांतेष्विति ॥ १० ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौ आश्रययोगाध्यायएकाविंशतिः

समाप्तः ॥ २१ ॥



## अथप्रकीर्णकाध्यायप्रारंभः ॥

स्वर्क्षतुंगमूलत्रिकोणगाः कंटकेषुयावंतआश्रिताः ॥

सर्वएवतेन्योन्यकारकाः कर्मगस्तुतेषांविशेषतः ॥ १ ॥

अथातः प्रकीर्णकाध्यायोव्याख्यायते । मिश्रः प्रकीर्णकइत्युच्यते । तत्रग्रहाणांपरस्परंकारकसंज्ञावैतालीयेनाह ॥ स्वर्क्षेति । स्वर्क्षेस्वर्क्षेत्रेयोग्रहः स्थितः । यश्चतुंगेस्वोच्चे । यश्चमूलत्रिकोणेस्थितः । सचयदिलग्रकंटकेपुर्केद्रेष्वाश्रितः स्थितोभवति । एवंविधस्यग्रहस्यान्योप्येवंविधः । केंद्रगोयदिभवति तदातौग्रहावन्योन्यंपरस्परंकारकाख्यौभवतः । अनेनप्रकारेणयः कर्मगः । योयस्मात् ग्रहात्दशमस्थानस्थः सविशेषतः विशेषेणतेषां ग्रहाणामध्यात्कारकसंज्ञालभते । अतउक्तम् । कर्मगस्तुतेषांविशेषतइति ॥ १ ॥

कर्कटोदयगतेयथोडुपेस्वोच्चगाःकुजयमार्कसूरयः ॥

कारकानिगदिताःपरस्परंलग्नस्यसकलोवरांबुगः ॥ २ ॥

अथास्यैवोदाहरणप्रदर्शनार्थरथोद्धतयाह ॥ कर्कटेति । यथाकर्कटोदयेकुलीरलग्नेतत्स्थेचोडुपेचंद्रकुजोंगारकः । यमःसौरः । अर्कआदित्यः । सूरिर्बृहस्पतिः । एतेकुजयमार्कसूरयः । स्वोच्चगाः । आत्मीयतुंगस्था यदिभवति । कुजोमकरेयमस्तुलायामर्कमेषेसूरिःकर्कटे । तंदातेपरस्परमन्योन्यंकारकानिगदिताउक्ताः । अनेन प्रकारेणयावंतोभवन्तितावंतः परस्परंकारकाख्याः । अनेनोदाहरणेनैतत्प्रतिपादितंभवति । यथापुरुषस्यजन्मलग्नात्केंद्रंविनास्वक्षेत्रउच्चत्रिकोणगाः अपिपरस्परंकंटकगास्तदाकारकसंज्ञामपिलभते । लग्नस्येति । लग्नस्यग्रहस्यप्राग्लग्नसमवस्थितस्यसकलः सर्वोग्रहोंवरगः । दशमस्थानस्थश्चांबुगश्चतुर्थस्थानस्थश्चकारकसंज्ञोभवति । अनेनैतदुक्तंभवति । लग्नो ग्रहः स्वक्षेत्रगोच्चत्रिकोणेषुयद्यपिभवति तस्माद्योदशमस्थः चतुर्थोवासोप्युच्चत्रिकोणस्वक्षेत्राणामन्यतमस्थोभवति । तथापिलग्नगतस्य सकारकाख्योभवति । नतस्यलग्नगतइति । अतउक्तम् । लग्नस्यसकलोवरांबुगइति ॥ २ ॥



स्वत्रिकोणोच्चगोहेतुरन्योन्यंयदिकर्मगः॥

सुहृत्तद्गुणसंपन्नःकारकश्चापिसस्मृतः ॥ ३ ॥

अथपुनरपिअन्यत्कारकलक्षणमनुष्टुभाह ॥ स्वत्रिकोणोच्चगइति । स्वत्रिको-  
णोच्चगोग्रहः । कारकत्वेहेतुः कारणंनकेंद्रस्थः । तयोन्योस्यग्रहस्यलग्नकेंद्रंविना-  
प्यवस्थितस्ययदिकश्चिद्ग्रहः कर्मगोदशमस्थानस्थोभवतिसचस्वक्षेत्रोच्चमूल-  
त्रिकोणानामन्यतमेभवति । यस्माच्चदशमस्तस्ययदिसुहृन्मित्रंनिसर्गतोनकेवलं  
यावत्तुष्टुणसंपन्नस्तेनमित्रगुणेनसंयुक्तस्तात्कालिके मित्रामित्रविधिनाधिमित्रतां  
प्राप्तस्तथाविधः सर्वग्रहः कारकाख्योभवति । यस्यचदशमः सतस्यकार-  
काख्योनभवति । कारकसंज्ञाचयात्रायामुपयुज्यते । यतस्तत्रोक्तम् । रिक्तो-  
पहतदशायांजन्मोदयनाथशत्रुपाकेच । स्वदेशेशकारकदशासंश्रयणीयोनरेंद्रप-  
तिरिति । तथाससखिवेशिग्रहयुक्तः कारकक्षेपिचंद्रः जयसुखधनदातातत्प्रह-  
तान्यथेति ॥ ३ ॥

शुभंवर्गोत्तमेजन्मवेशिस्थानेचसद्ग्रहे ॥

अशून्येषुचकेंद्रेषुकारकाख्यग्रहेषुच ॥ ४ ॥

अथकारकसंज्ञाप्रयोजनमनुष्टुभाह ॥ शुभमिति । यस्यलग्ननवांशेवर्गोत्तमा-  
ख्येजन्मभवति चंद्रोपिवावर्गोत्तमांशगतोभवति तस्यशुभंजन्मय । स्मिन्ना  
शौपुरुषस्यजन्मसमयेकः स्थितस्तस्माद्राशेयोद्वितीयोराशिः सवेशिसं-  
ज्ञः । यस्यचप्रागुक्तेवेशिस्थानेसद्ग्रहः सौम्यग्रहोजगुरुसितानामन्यतमोभवति  
तस्यापिशुभंजन्म । यस्यजन्मलग्नकेंद्रचतुष्टयादेकमप्यशून्यकेंद्रंभवति त-  
स्यापिशुभंजन्म । अत्रसौम्यग्रहाधिष्ठितेकेंद्रेविशेषेणशुभंजन्म । यस्मादुक्तमने-  
नैव । एकस्मिन्नपिकेंद्रेयदिसौम्योनग्रहोस्ति यात्रायाम् । जन्मन्यथाकर्मणिन  
तच्छुभंप्रादुराचार्याः । यस्यजन्मनिकारकाख्याः कारकसंज्ञाग्रहाभवंति  
तस्यापिशुभंजन्म । अत्रयथागुणाधिक्यंतथाशुभतरमेवजन्म ॥ ४ ॥

मध्येवयसःसुखप्रदाःकेंद्रस्थागुरुजन्मलग्नपाः ॥

पृष्ठोभयकोदयक्षणास्त्वंतंतःप्रथमेषुपाकदाः ॥ ५ ॥

अथयेनयोगेनजातोयौवनेसुखीभवतितंदशापतिफलपाकंवैतालीयेनाह ॥  
मध्येवयसइति गुरुर्जावः । जन्मनियत्रराशौचंद्रमाः स्थितःतदधिप-  
तिः । जन्मपः यस्मिँल्लग्नजातः तदधिपोलग्नपः । एषामन्यतमोयस्यलग्न-  
केंद्रेभवति तस्यवयोमध्यसुखप्रदोभवति । यौवनेसुखीभवतीत्यर्थः । अत्र  
चयवनेश्वरः । जन्माधिपोलग्नपतिश्चयेषांचतुष्टयेस्याद्वलवान्गुरुर्वा । चतुर्षुहो-  
रादिषुसंगतःस्याच्चतुर्वयःकालफलप्रदःस्यात्पृष्ठोभयेत्यादि । दशापतिर्दशाप्रवे-  
शकालेपृष्ठोदयराशिगोमेषवृषधन्विमकराणामन्यतमस्थितोयदाभवति तदा



स्वदशातिफलप्रदोभवति । अथोभयोदयेमीनेभवतितदांतर्दशामध्येफलप्रदो भवति । अथकोदये शीर्षोदयेमिथुनसिंहकन्यातुलावृश्चिककुंभानामन्यतमेय-  
दाभवति तदाप्रथमदशाप्रवेशसमयेफलप्रदोभवति । एवंशुभस्याप्यशुभस्य  
पक्तिर्वाच्या । दशाकालंत्रिधापरिकल्प्ययस्मिन्कालेतस्यफलपक्तिर्ज्ञायते ।  
आद्येमध्येत्येवा तत्र चंद्रःसत्फलबोधनानिकुरुते पापानिचातोन्वथेति । एत-  
त्रिधाविभक्तेदशाकालेज्ञेयम् । पूर्वोक्तसर्वदशाफलंयोज्यम् । दशापतिःप्रवेश-  
कालेतिष्ठन्नेवतत्फलं ददातीत्येतत्कथंगम्यते । यवनेश्वरादिभिः सामान्येन  
चोक्तम् । उच्यते । भगवतोर्गर्गवचनात् । तथाचभगवान्गार्गिः ।  
आद्यंतमध्यफलदःशिरःपृष्ठोभयोदये । दशाप्रवेशसमयेतिष्ठन्वाच्योदशा-  
पतिरिति ॥ ५ ॥

दिनकररुधिरौप्रवेशकालेगुरुभृगुजौभुवनस्यमध्ययातौ ॥

रविसुतशशिनौविनिर्गमस्थौशशितनयःफलदस्तुसर्वकालम् ॥ ६ ॥

इति बृहज्जातकेप्रकीर्णाऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथाष्टकवर्गफलस्यकालंपुष्पिताग्रयाह ॥ दिनकरेति । चारवशात्पत्तिकाले  
यस्मिन्राशौशुभमशुभंवाष्टकवर्गफलंदिनकरआदित्यः प्रयच्छति तस्मिन्  
राशौप्रवेशकालेआद्येत्रिभागेतिष्ठन्नेवफलंप्रयच्छति । एवमेवरुधिरौभौमः ।  
गुरुर्जीवः । भृगुजः शुक्रः । एतौगुरुभृगुजौभुवनस्यराशेर्मध्ययातौमध्यत्रिभा-  
गगतौफलप्रदौभवतः । रविसुतः सौरः । शशीचंद्रः । एतौरविसुतशशिनौ  
विनिर्गमस्थौराश्यंतत्रिभागस्थौफलप्रदौभवतः । शशितनयोबुधः सर्वकालं  
फलदः सर्वभागस्थोफलप्रदोभवति । सर्वस्मिन्नेवराशौयावत्तिष्ठतितावत्फलं  
शुभमशुभंवायथाप्राप्तंददातीति ॥ ६ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पल वि०बृ० प्रकीर्णाऽध्यायोद्वाविंशतिः ॥ २२ ॥

अथानिष्टाऽध्यायः ॥

लग्नात्पुत्रकलत्रभेशुभपतिप्राप्तेथवालोकितेचंद्राद्वायदिसंपद-  
स्तिहितयोर्ज्ञेयोन्यथासंभवः ॥ पाथोनोदयगेरवौरविसुतोमी-  
नस्थितोदारहापुत्रस्थानगतश्चपुत्रमरणंपुत्रोवनेर्यच्छति ॥ १ ॥

अथातो अनिष्टाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवदारसुतहीनजन्मज्ञानंशार्द-  
लविक्रीडितेनाह ॥ लग्नादिति । यस्यजन्मनिलग्नात् पुत्रभंपंचमस्थानंशुभग्र-

हेणस्वपतिनाचप्राप्तसंयुक्तंभवत्यथवाआलोकितंदृष्टंभवति तस्यापिपुत्रसंपत्  
 अस्तीतिवक्तव्यम् । चंद्राद्वापंचमस्थानंयस्यशुभग्रहेणस्वपतिनावायुतदृष्टंभवति  
 तस्यापिपुत्रसंपदस्ति । यस्यलग्नचंद्रयोरुभयोरपिपंचमस्थानंशुभग्रहेणस्वपति-  
 नावायुतदृष्टंभवति तस्यपुत्रासंभवः अपुत्रत्वंवक्तव्यम् । अत्रकेचिद्वादशप्र-  
 कारंपुत्रवर्णयन्ति । औरसः । क्षेत्रजः । दत्तः । कृत्रिमः । अधमप्रभवः । गूढो-  
 त्पन्नः । अपविद्धः । पौनर्भवः । कानीनः । सहोढः । क्रीतकः । दासीप्रभवइति ।  
 तथाचसारावल्याम् । शुभभवनमथशुभयुतंशुभदृष्टंवासुतर्क्षमिहयेषाम् । तेषांप्र-  
 भवः पुंसांभवत्यवश्यंनविपरीतम् १ एकतमेगुरुवर्गेशुभराशावौरसोभवेत्पुत्रः ।  
 लग्नाच्चंद्रादथवावल्युक्ताद्दीक्षितोपिवासौम्यैः २ संख्यानवांशतुल्यासौम्यांशे  
 तावतीसदादृष्टा । शुभदृष्टेतद्विगुणाक्लिष्टापापांशकेतथादृष्टा ३ सौरर्क्षेसौरगुणो  
 बुधदृष्टोगुरुकुजार्कदृग्धीनः । क्षेत्रजपुत्रंजनयतिबौधोपिगुणोरविजदृष्टः ४  
 मादंसुतर्क्षमिदुंनिरीक्षतेयदिशनैश्चरेणयुतम् । दत्तकपुत्रोत्पत्तिःक्रीतश्चबुधस्य  
 चैवंस्यात् ५ सप्तमभागेकौजेसौरयुतेपंचमेसदाभवने । कृत्रिमपुत्रंविद्याच्छेष-  
 हदर्शनान्मुक्ते ६ वर्गेधमराशौसौरेसूर्येचतत्रसंयुक्ते । लोहितदृष्टेवाच्योजात-  
 श्चमुतोधमप्रभवः ७ चंद्रेभौमांशगतेधीस्थेमंदावलोकितेभवति । गूढोत्पत्ति-  
 र्भवेत्पुत्रःशेषग्रहदर्शनायाते ८ तस्मिन्नेवचभौमेशनिवर्गस्थेनिरीक्षितेरविणा ।  
 पुरुषस्यभवतिपुत्रोऽपविद्धइतिचरकमुनिवचनात् ९ शनिवर्गस्थेचंद्रेशनियुक्ते  
 पंचमेसदासौरे । शुक्ररविभ्यांदृष्टेपुत्रःपौनर्भवोभवति १० चूडायदार्कसत्वात्क-  
 लाहृतस्यैवपंचमेभवने । रविदृष्टेप्यथसहितेकानीनःसंभवतिपुत्रः ११ वर्गे  
 रविचंद्रमसोःसुतगेहेचंद्रसूर्यसंयुक्ते । शुकेणदृष्टमात्रेपुत्रः कथितः सहोढश्च  
 १२ पापैर्बलिभिर्युक्तेपापक्षेपंचमेसदाराशौ । जातोपुत्रःपुरुषः सौम्यग्रहदर्श-  
 नातीति १३ शुक्रनवांशेतस्मिन् शुकेणनिरीक्षितेत्वपत्यानि । दासीप्रभवानि  
 वदेच्चंद्रपिकेचिदाचार्याः १४ सितशाशिवर्गेधीस्थेताभ्यांदृष्टेथवापिसंयुक्ते ।  
 प्रायेणदारिकाःस्युस्तद्राशिगणोपिवान्यथापुत्राइति । १५ एवंलग्नाच्चंद्राद्वाकल-  
 त्रभंसप्तमस्थानंयस्यशुभेनस्वपतिनावायुतदृष्टंभवति तस्यकलत्रसंपदस्ती-  
 तिवक्तव्यम् । एवंलग्नाच्चंद्राद्वायस्यसप्तमस्थानंशुभग्रहेणस्वपतिनावायुतदृष्टंभव-  
 तितस्यकलत्रसंपन्नभवतीतिवक्तव्यम् । भार्यातस्यनभवतीत्यर्थः । यतउक्तंज्ञेयो-  
 न्यथासंभवः । अन्यथातयोः पुत्रकलत्रयोरसंभवः अभावोज्ञेयोज्ञातव्यः । अत्र  
 पुत्रकलत्रग्रहणमुपलक्षणार्थम् । सर्वेषामपितन्वादीनांभावानांलग्नाच्चंद्राद्वास्थि-  
 तिरन्वेष्ट्या । यतोद्वावेतौमूर्तिसंज्ञौ । तथाचयवनेरश्वरः । मूर्तिचहोरांश-  
 शिभंचविद्यादिति । अत्रकलत्रस्थानेपिकेचिद्विशेषवर्णयन्ति । शुक्रंदुज्जी-  
 वशशिजैः सकलैस्त्रिभिश्चद्वाभ्यांकलत्रभवनेचतथैककेन । एषांगृहे



पिचगणेष्वविलोकितेवासंतिस्त्रियोभवनवर्गखगस्वभावाः १ एवंक्रूरैर्नाशोल्ला-  
संद्वाददेच्चबलयोगात् । शशिरविजयोःकलत्रेभार्यापुंसांपुनर्भूःस्यात् २ भवना-  
धिपांशतुल्याभवंतिनार्योनिरीक्षणाद्वापि । एकैवरविकुजांशेगुरुबुधयोश्चापिजा-  
मित्रे ३ प्रायेणचंद्रसितयोर्वलसंयुक्तेथवापिजामित्रे । दृष्टेवावहुपत्न्योभवंति  
शुक्रेविशेषेण ४ गुरुशुक्रयोःस्ववर्णारविकुजशशिभानुजैर्भवन्त्युनाः । शुक्रेवेश्या-  
प्रायाश्चंद्रेपिवदंतिकेतुमालाख्याः ५ पाथोनेत्यादि । पाथोनःकन्यातस्मिन्नुदय-  
गेलग्रस्थेतत्रचरवावर्कस्थितेरविसुतः सौरःमीनस्थोयदिभवति तदादार-  
हाभवति दारान्कलत्राणिहन्ति घातयति । तस्यपुरुषस्यजीवतएवभार्या-  
मरणंवक्तव्यम् । अस्मिन्नेवयोगेपाथोनोदयगेरवौ । अवनेःभूमेःपुत्रोभौमः  
पुत्रस्थानेगतः पंचमेस्थानेगतोमकरेस्थितोभवति तदापुत्रमरणं सुतवि-  
पत्तियच्छति ददाति । तस्यजीवतएवपुत्रमरणंवक्तव्यम् ॥ १ ॥

उग्रग्रहैःसितचतुरस्रसंस्थितैर्मध्यस्थितेभृगुतनयेथवोग्रयोः॥सौ-  
म्यग्रहैरसहितसंनिरीक्षितेजायावधोदहननिपातपाशजः ॥२॥

अथजीवतएवभार्यामरणयोगत्रयंप्रहर्षिण्याह ॥ उग्रग्रहैरिति।उग्रग्रहाःआदि-  
त्यभौमसौराःतैः सिताच्छुक्राद्यथासंभवंचतुरस्रसंस्थितैः चतुर्थाष्टमगतैः यस्य  
जन्मभवति । तस्यजायावधोभार्याविपत्तिः दहनेनाभिनाभवति।तस्यजीवतए-  
वभार्याग्निनात्मानंव्यापादयति।अथवोग्रयोः पापयोःद्वयोर्मध्येशुक्रादेकोद्वादशेऽ  
न्योद्वितीयेभृगुतनयेशुकेस्थितेजातस्यनिपातेनोच्छ्रितपतनाज्जायावधोभवति ।  
तस्यजातस्यजीवतएवपतनान्निपतिताभार्याम्रियतइति । अथवैकस्मिन्नाशा-  
वेकेनभुक्तंस्थानमतिक्रम्यान्येनभुज्यमानमप्राप्ययदिशुक्रस्यावस्थानंतदापिपा-  
पद्वयमध्यस्थोभवति । अथयस्यजन्मनिसौम्यग्रहयोरन्यतमेनसहितः संयुक्तः  
शुक्रोभवति । नचापितन्निरीक्षितोदृष्टस्तस्यपाशजोजायावधोभवति जीव-  
तएवभार्योद्वधेनात्मानंव्यापादयति । कैश्चिद्योगद्वयमेतद्व्याख्यातम् । उग्रग्रहैः  
सितचतुरस्रसंस्थितैरेकःमध्यस्थितेभृगुतनयेथवोग्रयोः॥ द्वितीयःसौम्यग्रहैरसहि-  
तः सन्निरीक्षितइति । योगद्वयविशेषीभूतजायावधोदहननिपातपाशजः इति-  
योगद्वयेपिविकल्पः । तच्चायुक्तं यस्माद्भगवान्गार्गिः । चतुर्थाष्टमगैःशुक्रा-  
त्सौरारार्कैर्हुताशनात् । तेषांद्वयोस्तुमध्यस्थेतथाशुकेनिपातजः । शुकेसद्यो-  
गदृग्धीनेपाशाद्भार्यावधोभवेत् ॥ २ ॥

लग्नाद्वयारिगतयोःशशितिग्मरश्म्योः पत्न्यासहैकनयन-  
स्यवदंतिजन्म॥द्यूनस्थयोर्नवमपंचमसंस्थयोर्वाशुक्रार्कयो-  
र्विकलदारमुशंतिजातम् ॥ ३ ॥

अधुनाविकलनयनदारजन्मयोगज्ञानंवसंततिलकेनाह ॥ लग्नादिति । शशी  
चंद्रः तिग्मरश्मिः सूर्यः एतयोः लग्नाद्वयारिगतयोः । एकोव्ययेद्वादशेस्थाने  
द्वितीयोरिस्थानेषष्ठेपत्न्यासहैकनयनस्य एकाक्षस्य जन्मवदंतिकथयन्ति । जातः  
काणोभक्तिनकेवलंयावत् तद्भार्याकाणीभवतीत्यर्थः । द्यूनस्थयो-  
रिति । शुक्रसूर्ययोर्द्यूनस्थयोः लग्नाद्वयोरपिसप्तमस्थयोः नवमयोः पंचम-  
योर्वाजातंविकलदारमुशन्ति कथयन्ति । भार्याहीनांगाभवतीत्यर्थः । अत्र द्यून-  
स्थयोः नवमपंचमसंस्थयोर्वाशुक्रार्कयोः कैश्चिद्यथासंभवमेवयोगोव्याख्यातः ।  
तच्चायुक्तम् । यस्माद्भगवान्गार्गिः । पंचमेनवमेद्यूनेसमेतौसितभास्करो ।  
यस्यस्यातांभवेद्भार्यातस्यैकांगविर्वर्जिता ॥ ३ ॥

कोणोदयेभृगुतनयेस्तचक्रसंधौवंध्यापतिर्येदिनसुतर्क्षमिष्टयु-  
क्तम् ॥ पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः क्षीणेशशिन्यसुतक-  
लत्रजन्मधीस्थे ॥ ४ ॥

अथासुतकलत्रवंध्यापतिजन्मज्ञानंमालिन्याह ॥ कोणोदयइति । कोणः  
शनैश्चरस्तस्मिन्नुदयेलग्नगतेभृगुतनयेशुके । अस्तचक्रसंधौवृश्चिककर्कटमीनाना-  
मन्यतमांत्यनवांशकस्थेनकेवलंयावदस्तेलग्नात्सप्तमस्थानस्थेएवमस्तस्थश्चक्रसं-  
धौयदिभवतितदाजातोवंध्यापतिर्भवति । वंध्यानिष्फलार्तवा । एतन्मकरवृ-  
षकन्यालग्नेपुसंभवति । अपुत्रइतिवक्तव्येवंध्यापतिग्रहणेनैज्ज्ञापयति । यथा  
कौमारेभ्योदारेभ्यः पुत्रोत्पत्तिर्भवत्यविरुद्धकामेभ्योभवति । पापग्रहैरिति । पाप-  
ग्रहैः व्ययस्थानंद्वादशं मदस्थानंसप्तमं लग्नराशिरुदयः एतेषुद्वयोरेकास्मि-  
न्वापापग्रहैः यथासंभवंस्थितैः । शशिनिचंद्रेक्षीणेधीस्थेलग्नपंचमगेअसुतस्यापु-  
त्रस्याकलत्रस्यचस्त्रीवर्जितस्यपुत्रभार्यावर्जितस्यजन्मभवति । जातस्यनभा-  
र्यानपुत्रोभवतीत्यर्थः ॥ ४ ॥

असितकुजयोर्वर्गेस्तस्थेसितेतदवेक्षितेपरयुवतिगस्तौचेत्सं-  
दूस्त्रियासहपुंश्चलः ॥ भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्यौनरोविमुतो-  
पिवापरिणततनूनृख्योर्दृष्टौशुभैः प्रमदापती ॥ ५ ॥

अथपरयुवतिगजन्मज्ञानंहरिण्याह ॥ असितेति । असितकुजयोः सौरभौ-  
मयोः अन्यतमस्यवर्गेसितेशुकेस्थिते तस्मिन्वास्तस्थेलग्नत्सप्तमगेतदवेक्षितेत-  
योरेवसौरारयोरन्यतमेनावेक्षितेदृष्टेजातः परयुवतिगः परदारगामीभव-  
ति । तौचेदित्यादि । तौसौरारावस्तेसप्तमेस्थानेएकराशिस्थितौसंदूचंद्रसहि-



तौभवतः । असितकुजयोःवर्गः तत्स्थःसितःतदवेक्षितः तदाजातः । स्त्रियासहपुंश्चलोभवति । सपुरुषःपरदारेपुगच्छति । तद्भार्यापरपुरुषेपुगच्छति । भृगुजशशिनोरित्यादि।भृगुजःशुक्रः शशीचंद्रः तयोः भृगुजशशिनोःएकराशिगतयोःयत्रतत्रावस्थितयोःतावेवसितकुजावस्तेसप्तमेस्थानेभवतः । तदाजातो नरःअभार्योभवति । विसुतोवावाशब्दोऽत्रचार्थं नविकल्पने । अभार्योभवत्यपुत्रश्च । परिणततनूइति । नाचस्त्रीचनृस्त्रियौ नरस्त्रीग्रहयोरेकराशिगयोरस्तेसप्तमेतावेवासितकुजौभवतः। तौशुभदृष्टौसौम्यग्रहेणकेनचिद्दृश्येतेतदापरिणततनूप्रमदापतीभवतः परिणतेतनूययोः । एतदुक्तंभवति । तस्यवृद्धत्वेवृद्धाभार्योपतिष्ठतइति ॥ ५ ॥

वंशच्छेत्ताखमदसुखगैश्चंद्रदैत्येज्यपापैःशिल्पीत्र्यंशेशशिसुत-  
युतेकेंद्रसंस्थार्किदृष्टे ॥ दास्यांजातोदितिसुतगुरौरैःफगे  
सौरभागेनीचोर्केन्द्रोर्मदनगतयोर्दृष्टयोःसूर्यजेन ॥ ६ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्मन्दाक्रांतयाह ॥ वंशच्छेत्तेति । चंद्रःशशीदैत्येज्यः  
शुक्रः पापाः क्रूरग्रहाः आदित्यभौमसौराः । एतैःखमदसुखगैःखसंज्ञं दशमं  
मदस्थानंसप्तमं सुखसंज्ञंचतुर्थम् । एतेषुस्थानेषुचंद्रदैत्येज्यपापैः  
गतैः समवस्थितैः जातोवंशच्छेत्ताभवति । एतदुक्तंभवति । यस्य  
जन्मनिचंद्रमादशमः शुक्रःसप्तमः पापाश्चतुर्थस्थाः सवंशच्छेत्ता ।  
तत्कृतोवंशउच्छिद्यते कुलविच्छित्तिर्भवति दुर्योधनप्रायः ।  
शिल्पीत्र्यंशइति । शशिसुतेनबुधेनयुक्तोयः त्र्यंशोद्रेष्काणःसयस्यराशेः  
संबंधीतस्मिन्सराशिःलग्नकेंद्रस्थेनार्किणासौरेणदृष्टेजातः शिल्पीभवति ।  
चित्रकर्मादिकर्मणाजीवतीत्यर्थः।अत्रकेचिद्बुधयुक्तराशेः शनैश्चरदृष्टिर्वर्णयन्ति ।  
यथाराशौदृष्टेद्रेष्काणोपिदृष्टःस्यात् । यद्येषपक्ष आचार्याभिप्रेतःस्यात्तदाबु-  
धेकेंद्रस्थेनसौरेणदृष्टेशिल्पीभवत्येतदेवाचार्योर्वक्ष्यत् । त्र्यंशग्रहणंनकरिष्यत् ।  
कृतवांश्चातोवसीयतेनैतदाचार्यस्याभिप्रेतमिति । तेनत्र्यंशग्रहणंकृतम्।तस्माद्रे-  
ष्काणराशेर्दृष्टिविचारः नकेवलंयावद्विलभांशः । स्वनाथेनेत्यत्रैवोदाहार्यम् ।  
दास्यांजातइत्यादि । दितिसुतगुरौशुक्रेरिःफगेलग्राद्वादशस्थेनकेवलंयावत्सौ-  
रभागेशनैश्चरनवांशकव्यवस्थितेदास्यांजातः दासीपुत्रोजातइतिवक्तव्यम् ।  
नीचोर्केन्द्रोरिति । अर्केन्द्रोः रविशशिनोः द्वयोरपिलग्नान्मदनगतयोः  
सप्तमस्थानस्थयोः सूर्यजेनसौरेणदृष्टयोरवलोकितयोः जातोनीचोभवति ।  
स्वकुलानुचिताधमकर्मकृदित्यर्थः ॥ ६ ॥

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्वाध्यरुक्चंद्रेकर्कट-  
वृश्चिकांशकगतेपापैर्युतेगुह्यरुक् ॥ श्वित्रीरिःफधनस्थयोरशु-  
भयोश्चंद्रोदयेस्तेरवौ चंद्रेखेवनिजेस्तगेचविकलो यद्यर्कजो  
वेशिगः ॥ ७ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगाञ्छादूलविक्रीडितेनाह ॥ पापालोकितयोरिति ।  
सितः शुक्रः अवनिजोंगारकः । एतयोरस्तयोः लग्नात्सप्तमगतयोरपि ।  
पापालोकितयोः पापग्रहदृष्टयोजातस्यवाध्यरुग्भवति सचप्रसिद्धः । य-  
त्रतत्रराशौचंद्रेशशिनि कर्कटवृश्चिकांशकयोरन्यतमस्थेतत्रचान्येनपापेन  
युतेजातोगुह्यरुग्भवति । गुह्यरुक्परुषव्याधिः । श्वित्रीत्यादि । अशुभयोः  
सौरारयोः रिःफधनस्थयोः द्वादशाद्वितीयगतयोः चंद्रेलग्रेउदयस्थे-  
रवावादित्येऽस्तेसप्तमस्थेजातः श्वित्रीश्चेतकुष्ठयुक्तोभवति । चंद्रेखेदशमस्थे  
ऽवनिजेभौमेऽस्तगेसप्तमस्थे अस्मिन्योगेयद्यर्कजः सौरोवेशिस्थानस्थोभवति  
तदाजातोविकलोंगहीनोभवति ॥ ७ ॥

अंतः शशिन्यशुभयोर्मृगपतंगेश्वासक्षयप्लीहकविद्रधिगुल्म-  
भाजः ॥ शोषीपरस्परगृहांशगयोरवींद्रोःक्षेत्रेथवायुगपदेक-  
गयोःकृशोवा ॥ ८ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ अंतरिति । यत्रतत्रस्थेशशिनि  
चंद्रेशुभयोः सौरभौमयोरंतर्मध्येस्थितेपतंगेसूर्येचमृगगते मकरस्थेजाताः  
श्वासक्षयप्लीहकविद्रधिगुल्मभाजोभवन्ति । श्वासः प्रसिद्धः क्षयः श-  
रीरक्षयः प्लीहः प्रसिद्धः वामकुक्षिसंस्थोमांसखंडः विद्रधिगुल्ममौरोगौ  
प्रसिद्धौ एषामन्यतमेनरोगेणार्दिताभवन्तीत्यर्थः । केचिदत्रैकवचनंपठन्ति ।  
श्वासक्षयप्लीहकविद्रधिगुल्मभाक्स्यादिति । शोषीति । रवींद्रोश्चंद्रार्कयोः  
परस्परमन्योन्यगृहांशगयोः आदित्यः कर्कटेसिंहेचंद्रोथवायत्रतत्रराशौ  
सिहांशकेचंद्रः कर्कटांशेसूर्यः तदाजातः शोषीभवति । अत्रकेचित्पर-  
स्परगृहांशगयोरवींद्रोरिति । सिंहेसिहांशकेस्थितेचन्द्रेकर्कटेकर्कटांशस्थेसूर्ये  
चजातः शोषीक्षयीभवतीतिवर्णयन्ति । तच्चायुक्तम् । यस्माद्भगवा-  
न्गार्गिः । परस्परगृहेयातौयदिवापितदंशगौ । भवेतामर्कशीतांशूतदाशोषी  
प्रजायते १ क्षेत्रेथवेति । युगपत्तुल्यकालंतयोरेवपरस्परक्षेत्रेयदाद्वावपिभवतः  
सिंहेयदोभावपिअर्कचंद्रौस्थितौकर्कटेवाभवतः तदाजातः शोषीभवति कृशो  
वा । कृशोदुर्बलः ॥ ८ ॥



चंद्रेश्विमध्यझपकर्किमृगाजभागेकुष्ठीसमंदरुधिरेतदवेक्षिते  
वा ॥ यातैस्त्रिकोणमलिकर्किवृषैर्मृगेचकुष्ठीचपापसहितैरव-  
लोकितैर्वा ॥ ९ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ चंद्रइति । अश्विमध्ये  
धन्विपंचमनवांशकेचंद्रेस्थिते तत्रचसमंदरुधिरे मंदेनसौरैरुधिरेणांगारकेण  
युक्ते । यथासंभवमन्यतमेन तदवेक्षितेवाताभ्यामन्यतमेनदृष्टेजातः कुष्ठी  
भवति । अथवायत्रतत्रराशौ झपकर्किमृगाजभागे । झपोमीनः । कर्कीकु-  
लीरः । मृगोमकरः । अजोमेषः । एषामन्यतमेनवांशकस्थेचंद्रेतत्रमंदरुधि-  
रयोरन्यतमेनयुतेदृष्टेवाजातः कुष्ठीभवति । अत्रचंद्रोयदाशुभग्रहदृष्टोभवति  
तदाकंडूविकारीभवति नकुष्ठी । यस्माद्यवनेश्वरः । मीनांशकेमेषमृगांशके  
वाचंद्रस्थितोत्रैवहिपापदृष्टः । किलासकुष्ठादिविनष्टदेहमिष्टेक्षितःकंडूवि-  
कारिणंच ॥ यातैस्त्रिकोणमिति । अलिकर्किवृषैः वृश्चिककुलीरवृषभैः ।  
मृगेचमकरैरेतैश्चत्रिकोणयातैः प्रातैः तथाविधोलभोभवति । यस्यैषामन्य-  
तमेपंचमेवास्थानेभवति सचपापानामन्यतमेनयुक्तोदृष्टोवाभवति । तदाजातः  
कुष्ठीभवति ॥ ९ ॥

निधनारिधनव्ययस्थितारविचंद्रारयमायथातथा ॥

बलवद्ब्रह्मदोषकारणैर्मनुजानांजनयंत्यनेत्रताम् ॥ १० ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ निधनेति । रविरादित्यः । चंद्रः  
शशी । आरःअंगारकः । यमःसौरः एतेरविचंद्रारयमाः । यथातथायेनतेनप्रका-  
रेणनिधनारिधनव्ययस्थिताः अष्टमषष्टद्वितीयद्वादशगास्तदाजातानांमनुजा-  
नांमनुष्याणामनेत्रतामाद्यंजनयंत्युत्पादयंति । यथातथेतिक्रमनिवारणार्थः ।  
तांचानेत्रतांबलवद्ब्रह्मदोषकारणैः तेषांचतुर्णांग्रहाणांमध्याद्योबलवांस्तस्ययो  
वातपित्तश्लेष्मणांमध्यादोषउक्तः तेनदोषकारणेनतत्प्रकोपेनतस्याक्षिविना-  
शोभवति ॥ १० ॥

नवमायतृतीयधीयुतानचसौम्यैरशुभानिरीक्षिताः ॥

नियमाच्छ्रवणोपघातदारदवैकृत्यकराश्चसप्तमे ॥ ११ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वैतालीयेनाह ॥ नवेति । अशुभाः पापाः । नवमा-  
यतृतीयधीयुताः नवमेएकादशेतृतीयेधीस्थानेपंचमे एतेषुयथासंभवयुताः  
समवस्थिताः । तेचसौम्यैः शुभग्रहैरनिरीक्षितानदृष्टाः । तदाबलवद्ब्रह्मदोष-

कारणेनैवपुरुषस्यनियमान्निश्चयान्द्रवणोपघातदाः । श्रोत्रयोःकर्णयोः उप-  
घातदावाधिर्यकराः । अत्राशुभग्रहणेनार्कचंद्रारसौराः प्रागुक्ताएवज्ञेयाः ।  
रदवैकृत्यकराश्चसप्तमेइति । तएवार्कचंद्रारसौराः लग्नात्सप्तमेस्थानेस्थिताः  
सौम्यैरदृष्टारदानांदंतानांवैकृत्यकराःस्युः ॥ ११ ॥

उदयत्युडुपेसुरास्यगेसपिशाचोऽशुभयोस्त्रिकोणयोः ॥

सोपप्लवमंडलेरवाबुदयस्थेनयनापवर्जितः ॥ १२ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वैतालीयेनाह ॥ उदयतीति । उडुपेचंद्रेउदयति  
लग्नगतेतस्मिन्श्चासुरास्यगेराहुग्रस्ते । तस्माच्चलग्नादशुभयोः सौरभौमयोः  
त्रिकोणयोः नवमपंचमस्थयोःजातः सपिशाचोभवति । पिशाचा-  
धिष्ठितोभवतीत्यर्थः । एवंप्रवावादित्येमंडलेसोपप्लवेअसुरास्यगेअर्केराहुग्रस्ते  
तस्मिन्श्चोदयस्थेलग्नगेलग्नदशुभयोः सौरभौमयोः त्रिकोणगतयोः जातो  
नयनापवर्जितोभवति । अंधइत्यर्थः ॥ १२ ॥

संस्पृष्टःपवनेनमंदगयुतेद्यूनेविलग्नैगुरौसोन्मादोवनिजेस्थिते-  
ऽस्तभवनेजीवेविलग्नश्रिते ॥ तद्वत्सूर्यसुतोदयेऽवनिमुतेध-  
र्मात्मजद्यूनगेजातोवाससहस्ररश्मितनयेक्षीणेव्ययेशीतगौ ॥ १३ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ संस्पृष्टइति । यस्यजन्म-  
निमंदगः सौरौद्यूनेसप्तमेयुतः स्थितोभवति । विलग्नैचगुरुः बृहस्पतिः ।  
सपवनेनवायुनासंस्पृष्टोभवति । वातरोगीभवतीत्यर्थः । अवनिःभूतस्याः  
जातोऽवनिजः तस्मिन्नस्तभवनेसप्तमेस्थानेस्थितेविलग्नश्रितेप्राग्लग्नगेचजीवेगु-  
रौजातः सोन्मादोभवतिविचित्तइति । तद्वदिति । सूर्यसुतः सौरःतस्मि-  
न्बुदयेलग्नैस्थितेअवनिमुतेभौमे धर्मात्मजद्यूनगे नवमपंचमसप्तमस्थानानाम-  
न्यतमस्थानस्थेजातस्तद्वत्सोन्मादएवभवति । केचित्तद्वच्चाहुः । यमोदयइति  
पठंति । अथवाक्षीणेशीतगौचंद्रेसहस्ररश्मितनयेनशनैश्चरेणसंयुक्ते व्ययंद्वाद-  
शस्थानंयातेप्राप्ते वाग्रहणात्सोन्मादएवभवति ॥ १३ ॥

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैर्नीचाधिपांशकगतैररिभा-  
गैर्वा ॥ एभ्योल्पमध्यबहुभिःक्रमशःप्रसूताज्ञेयाःस्युरभ्यु-  
पगमक्रयगर्भदासाः ॥ १४ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ राश्यंशपेति । यस्मिन्नवांशकेचंद्रो



वर्त्ततेसराश्यंशकः तस्यपःपतिः राश्यंशपः । उष्णकरःसूर्यः । शीतकर-  
 श्रंद्रः । अमरेज्योजीवः । एतैः राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यैः आत्मी-  
 यादुच्चात्सप्तमराश्यधिपोनीचाधिपस्तदीयेनीचाधिपतिनवांशकेव्यवस्थितैः अ-  
 रिभागैः । शत्रुनवांशगतैर्वाजातादासाभवंति । अभ्योऽल्पमध्यबहुभिरिति ।  
 अभ्योग्रहेभ्यः एकोल्पः । द्वौमध्यमौ । यत्रचत्वारोवावहवः अभ्यः प्रसूताः क्रम-  
 शोदासाभवंति । यस्यैकोनीचाधिपांशकेशत्रुनवांशकेवागतोभवति । सोभ्यु-  
 पगमेनात्मनाजीवितार्थीदासत्वमुपपद्यते । यस्यद्वौसोऽन्येनक्रीतोविक्रीतः येन  
 क्रीतस्तस्यदासोभवति । यस्यत्रयश्चत्वारोवासगर्भदासोदासस्यपुत्रोदास्यावापु-  
 त्रो लोकेगृहदासइतिप्रसिद्धः ॥ १४ ॥

विकृतदशनःपापैर्दृष्टेवृषाजहयोदयेखलतिरशुभक्षेत्रेलग्रेहये  
 वृषभेपिवा ॥ नवमसुतगेपापैर्दृष्टेरवावदृढेक्षणोदिनकरसुतेन-  
 कव्याधिःकुजेविकलःपुमान् ॥ १५ ॥

अथान्येषामनिष्टयोगानांज्ञानार्थहरिण्याह ॥ विकृतेति । वृषःप्रसिद्धः  
 अजोमेषः हयोधन्वी एषामुदयेऽन्यतमेलग्रेपापैर्दृष्टेऽवलोकितेविकृतदश-  
 नोविरूपदंतोभवति । अशुभक्षेत्राणि पापग्रहराशयः मेषसिंहवृश्चिकम-  
 करकुंभाः।एषामन्यतमेलग्रेहयेधन्विनिवावृषभेपिवालग्रेपापदृष्टेजातः खलतिः  
 खलवाटोभवति।रवावादित्येनवमसुतगेलग्रेप्रात्रवमपंचमयोरन्यतमस्थानस्थेपाप-  
 ग्रहदृष्टेजातः अदृढेक्षणोभवत्यसारनयनः । एवंदिनकरसुतेसौरैलग्रेप्रात्रव-  
 मपंचमस्थेपापैः दृष्टेनैकव्याधिः बहुरोगोभवति । एवमेवकुजेभौमेल-  
 ग्रेप्रात्रवमपंचमस्थेपापदृष्टेपुमान्पुरुषोजातोविकलौगंहीनोभवति ॥ १५ ॥

व्ययसुतधनधर्मगैरसौम्यैर्भवनसमाननिबंधनंविकल्प्यम् ॥

भुजगनिगडपाशभृदृकाणैर्बलवदसौम्यनिरीक्षितैश्चतद्वत् ॥ १६ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्पुष्पिताग्रयाह ॥ व्ययसुतेति । असौम्यैः पापैः व्य-  
 यसुतधनधर्मगैः । द्वादशपंचमद्वितीयनवमस्थानानांयथासंभवमन्यतमस्था-  
 नस्थैः जातस्यनिबंधनंभवति सबध्यतइत्यर्थः । तच्चनिबंधनंभवनसमानं  
 राशिसदृशं सप्राणीयेनप्रकारेणसराशिःबध्यतेतेनप्रकारेणेत्यर्थः । तद्यथा ।  
 मेषवृषधनुर्धराणामन्यतमेलग्रेतस्यरज्ज्वादिनाबंधनंभवति । मिथुनकन्यातुला  
 कुंभानामन्यतमेलग्रेनिगडैः बध्यते । कर्कटमकरमीनानामन्यतमेलग्रेबंधनंवि-  
 नादुर्गंस्थितोरक्ष्यते । वृश्चिकलग्रेभूगृहेबध्यते । भुजगनिगडपाशभृदिति ।  
 यस्मिन्द्रेष्काणेपुरुषोजातः सचेद्भुजगपाशभृद्भवति । सर्पद्रेष्काणोनिगडपाश-

भृद्देष्काणः । सचप्रथमपंचमनवमानामित्यनयागणनयायस्यराशेः संबंधी भवति । सचेद्वाशिः बलवता असौम्येनपापग्रहेणान्यतमेनदृश्यतेतथाजात-  
स्यतद्भवनसमानंनिबंधनंतद्वत्तेनैवप्रकारेणविकल्प्यम् । भुजगदेष्काणः कर्कटद्वि-  
तीयः कर्कटतृतीयः वृश्चिकाद्यः वृश्चिकद्वितीयः मीनांत्यश्च । निगडदे-  
ष्काणोमकराद्यः । भुजगनिगडपाशभृदितिकैश्चिद्व्याख्यातम् । तत्रपाशभृदने-  
नदेष्काणोनपठितः । तस्माद्भुजगपाशभृन्निगडपाशभृदितिव्याख्येयम् । भुजग-  
पाशभृन्निगडपाशभृद्भुजंगादिभागैर्बलवदसौम्यनिरीक्षितैश्चतद्वत् । इतिस्पष्टो  
भवेदित्यर्थः अस्मिन्श्लोकेपठितइति ॥ १६ ॥

परुषवचनोऽपस्मारार्तःक्षयीचनिशापतौसरवितनयेवक्रालोकं  
गतेपरिवेषणे ॥ रवियमकुजैःसौम्यादृष्टैर्नभस्थलमाश्रितैर्भूत-  
कमनुजःपूर्वोद्दिष्टैर्वराधममध्यमाः ॥ १७ ॥

इतिवृहज्जातके अनिष्टाऽध्यायःसमाप्तः ॥ २३ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्हरिण्याह ॥ परुषवचननइति । निशापतौचंद्रेसरवि-  
तनये सौरसाहिते वक्रालोकगतेभौमेनदृष्टेपरिवेषणेतत्कालंपरिवेषयुक्तेजातः  
पुरुषः परुषवचनः सदाऽप्रियाभिधायी । अपस्मारार्तः क्षयीचभवति ।  
अत्रचंद्रमसस्त्रयः प्रकाराव्याख्याताः । त्रयश्चदोषाः । यस्यैकप्रकारश्चंद्रमा  
भवति तस्यैकोदोषोभवति । यस्यप्रकारद्वयं तेनचंद्रेसौरेणयुक्ते परुषव-  
चनः सदैवाप्रियाभिधायीभवति । सरवितनयेभौमदृष्टेअपस्मारार्तोऽप-  
स्मारः । मृत्युः । सरवितनयेभौमदृष्टेतत्कालंपरिवेषणेक्षयीभवति । रवि-  
यमकुजैरिति । रविरादित्यः यमः सौरः कुजोंगारकः एतैःनभस्थलमाश्रितैः  
दशमस्थानस्थैः सौम्यादृष्टैः शुभग्रहाणामध्यात्रकेनचिदृष्टैरवलोकितैः  
जातोमनुजोमनुष्योभूतकोभवति तैः पूर्वोद्दिष्टैर्ग्रहैः रवियमकुजैः वराध-  
ममध्यमोभूतकोभवति । तेषांग्रहाणामेवंविधेनैकेनभूतकोपिवरः श्रेष्ठो  
भवति । अजुगुप्सितांभूतिकरोति । द्वाभ्यामध्यमोभवति मध्यमांभूतिक-  
रोति । त्रिभिरधमोजुगुप्सितांभूतिकरोति ॥ १७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांवृहज्जातकविवृतौअनिष्टाध्यायस्त्रयोविंशतिः ॥ २३ ॥

यद्यत्फलंनरभवेक्षमंगनानांतत्तद्वदेत्पतिषुवासकलंविधेयम् ॥  
तासांतुभर्तृमरणंनिधनेवपुस्तुलग्नैर्दुग्ं सुभगतास्तमयेपतिश्च ॥ ११ ॥



अथातःस्त्रीजातकाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवपुरुषजन्मोक्तफलातिदेशं तदधिकंचवसंततिलकेनाह ॥ यद्यत्फलमिति । नरभवेपुंजन्मनियद्यत्फलमंगनानांस्त्रीणामक्षममसंभाव्यंतत्पतिपुतद्र्दृष्टुवदेद्व्यात् । पुंजन्मोक्तफलंयद्वृत्ताताम्रद्विगित्यादि । तत्रयत्स्त्रीणांक्षमयोग्यं तत्तासामेववक्तव्यं यच्चाक्षमंनसंभवतिराज्यादितत्पतिपुतज्जातककालेदृष्ट्वावक्तव्यम् । यच्चसंभवति सुनफादियोगानांफलंतदखिलंसकलमुभयोरेववक्तव्यम् । तानिचत्रिविधानिफलानि । कानिचित्स्त्रीणांवक्तव्यानि कानिचित्पतिषु कानिचिद्वयोरपि । वृत्ताताम्रद्विगित्याकारप्रदर्शनानिस्त्रीणामेववक्तव्यानि । राजयोगादिफलानितत्पतिषु । तत्पतीनांसुनफादियोगफलानिसुखदुःखप्रदर्शकानिउभयोरपि । अथवासकलंसमग्रंस्त्रीजातकफलंतत्पतिषुविधेयंवक्तव्यम् । तासामित्यादितासांस्त्रीणांनिधनेऽष्टमेस्थानेभर्तृमरणंयथावक्तव्यंतथोपरिष्ठाद्वक्ष्यति । वपुस्तुशरीरंलभेंदुगंलभचंद्रयोर्गतं तच्चापितासांयथावक्तव्यं तथावक्ष्यति । तासांसुभगतासौभाग्यं यादृग्भाविपतिर्वातादृगस्तमयेसप्तमस्थानाद्वक्तव्यम् । तदपिवक्ष्यति ॥ १ ॥

युग्मेषुलग्नशशिनोःप्रकृतिस्थितास्त्रीसच्छीलभूषणयुताशु-  
भदृष्टयोश्च ॥ ओजस्थयोश्चमनुजाकृतिशीलयुक्तापापाच  
पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना ॥ २ ॥

यदुक्तंवपुस्तुलभेंदुगंतत्प्रदर्शनंवसंततिलकेनाह ॥ युग्मेत्यादि । लग्नशशिनोरुदयचंद्रयोरपियुग्मेषुसमराशिषुस्थितयोः स्त्रीयोषित्प्रकृतिस्थितास्त्रीस्वभावाभवति । प्रकृतौस्वभावेतिष्ठति । तयोरेवलभेंद्रोः शुभदृष्टयोः सौम्यग्रहावलोकितयोः सच्छीलभूषणयुताभवति । सच्छीलंशोभनचारित्रंतदेवभूषणमलंकरणंतनयुता । अथवाशोभनेनशीलेनभूषणैश्चयुता । ओजस्थयोरिति । तयोरेवलभेंद्रोरोजस्थयोर्विषमराशिगतयोः मनुजाकृतिशीलयुक्तापुरुषाकारापुरुषशीलाचभवति । तयोः लभेंद्रोः पापयुतवीक्षितयोः पापसंयुतयोः अवलोकितयोर्वा पापापापशीला गुणोनासर्वगुणरहिताचभवति । अर्थादैवैकस्मिन्समराशिगेअन्यस्मिन्विषमराशिगेपुंस्त्रियोर्मध्यस्वरूपाकाराभवति । एवमेकस्मिन्शुभग्रहयुते । अन्यस्मिन्पापयुतेसच्छीलाभवतिअसच्छीलाच मिश्रेत्यर्थः । एवमेकस्मिन्शुभग्रहदृष्टेअन्यस्मिन्पापदृष्टेपि । एवमुभयोरपिसौम्यासौम्ययुतदृष्टयोश्च । अनयादशाशेषकल्पनाकार्या ॥ २ ॥

कन्यैवदुष्टाव्रजतीहदास्यंसाध्वीसमायाकुचरित्रयुक्ता ॥

भूम्यात्मजक्षैक्रमशोऽशकेषुवक्रार्किजीवेंदुजभार्गवानाम् ॥ ३ ॥

अथभौमक्षेत्रलग्नेचंद्रगेवाभौमादित्रिंशंशकजातायाः स्वरूपमिद्वचन्याह ॥  
 कन्यैवेति । भूम्यात्मजक्षेत्रभौमक्षेत्रेष्वृश्चिकयोरन्यतमेलग्रतेचंद्रगतेवात-  
 त्रच वक्रार्किजीवेदुजभार्गवानां कुजयमजीवज्ञसितानामंशकेषुत्रिंशद्भाग-  
 पुक्रमेणफलनिर्देशोक्तव्यः । तद्यथा । भौमलग्नेभौमत्रिंशंशकेलग्नेचंद्रगते  
 वाजाताकन्यैवदुष्टाभवत्यनूढापि । सापुरुषसंप्रयोगेचत्रजतिगच्छतीत्यर्थः । सौ-  
 रत्रिंशंशकजाताकन्यैवदास्यंदासभावंत्रजतिजनयति । इहास्मिन्भौमक्षेत्रजी-  
 वत्रिंशंशकेसाध्वीसच्छीलाभवति । बुधत्रिंशंशकेजातासमायामायायुक्ता  
 भवति । शुक्रत्रिंशंशकेजाताकुचरित्रयुक्ताभवति । दुर्वृत्ताइति । एवंत्रिंशं-  
 शकफलंसर्वदागुणतयापरीक्षितव्यम् ॥ ३ ॥

दुष्टापुनर्भूःसगुणाकलाज्ञाख्यातागुणैश्चासुरपूजितक्षेत्रे ॥

स्यात्कापटीक्लीवसमासतीचबौधेगुणाढ्याप्रविकीर्णकामा ॥ ४ ॥

अथबुधशुक्रक्षेत्रयोरन्यतमेलग्रतेचंद्रगेवाभौमादित्रिंशंशकजातायाःस्वरू-  
 पमिद्वचन्याह ॥ दुष्टेति । अंशकेषुवक्रार्किजीवेदुजभार्गवानामितिसर्वत्रानु-  
 वर्तते । असुरपूजितः शुक्रस्तस्यक्षेत्रेषुतुल्योरन्यतमेलग्रतेचंद्रगेवा भौ-  
 मत्रिंशंशकेजातादुष्टादुष्टशीलाभवति । शनित्रिंशंशकेजातापुनर्भूःपाणिग्रह-  
 णादनंतरमन्यस्यभार्याभवति । जीवत्रिंशंशकेजातासगुणागुणवतीभवति ।  
 बुधत्रिंशंशकेजाताकलाज्ञाभवति । गीतवाद्यनृत्यचित्रादिषुकुशला । शुक्र-  
 त्रिंशंशकेजातागुणैः शीलादिभिः ख्याताभवति । स्यात्कापटीत्यादि । बौधे  
 मिथुनकन्ययोरन्यतमेलग्रतेचंद्रगेवाभौमत्रिंशंशकेजाताकापटीकपटासक्ताभ-  
 वति । सौरत्रिंशंशकेजाताक्लीवसमा नपुंसकतुल्याभवति । गुरुःबृहस्पति-  
 त्रिंशंशकजातासाध्वीभवति । बुधत्रिंशंशकजातागुणाढ्यागुणबहुलाभवति।शु-  
 क्रत्रिंशंशकजाताप्रविकीर्णकामाविक्षिप्तमन्मथासर्वपुरुषगामिनीभवतीति ॥४॥

स्वच्छंदापतिधातिनीबहुगुणाशिल्पिन्यसाध्वीदुभेत्राचारा

कुलटार्कभेनृपवधूपुंचेष्टितागम्यगा॥जैवेनैकगुणालपरत्यतिगु-  
 णाविज्ञानयुक्तासतीदासिनीचरतार्किभेपतिरतादुष्टाप्रजास्वांशकैः५

अथचंद्रार्कजीवसौरक्षेत्राणामन्यतमेलग्रतेचंद्रगेवाभौमादित्रिंशंशकजाता-  
 याः स्वरूपंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ स्वच्छंदेति । इंदुभेकर्कटेलग्रेतद्रतेवाचं-  
 द्वेभौमत्रिंशंशकजातास्वच्छंदास्वैरिणीयथेष्टव्यवहारिणीभवति । सौरत्रिंशं-  
 शकजातापतिधातिनीभवति । जीवत्रिंशंशकजाताबहुगुणाभवति । बुध-  
 त्रिंशंशकजाताशिल्पिनीशिल्पकर्मनिरताभवति । शुक्रत्रिंशंशकजाताअसा-



ध्वीदुःशीलाभवति । त्राचारेति । अर्कभेसिंहेलभेतद्रतेवाचंद्रेभौमत्रिंशांशके  
जातात्राचारापुरुषाचाराभवति । नुरिवाचारोयस्याः । केचिद्वाचाटाइतिपठं-  
ति । बहुभाषिणी । सौरत्रिंशांशकेजाताकुलटा असाध्वीभवति । जीव-  
त्रिंशांशकेजातानृपवधूः राजभार्याभवति । बुधत्रिंशांशकेजातापुंचेष्टितापुरुष-  
स्वभावाभवति । शुक्रत्रिंशांशकेजाताअगम्यगाऽगम्यपुरुषगामिनीभवति ।  
जीवक्षेत्रेधन्विमीनयोरन्यतमेलभगतेतद्रतेवाचंद्रेभौमत्रिंशांशकेजातानैकगुणा  
बहुगुणाभवति । सौरत्रिंशांशकजाताअल्परतिशीघ्रवेगाभवाते । बृहस्प-  
तित्रिंशांशकजाता अतिगुणाबहुगुणवतीभवति । बुधत्रिंशांशकेजाताविज्ञान-  
युक्ता आश्चर्ययुक्ताभवति । शुक्रत्रिंशांशकेजाताअसती असाध्वीभवति । दासी-  
ति । आर्किभेसौरक्षेत्रेमकरकुंभयोरन्यतमेलभगेचंद्रगेवाभौमत्रिंशांशकजाता  
दासीभवति । सौरत्रिंशांशकजातानीचरतानीचपुरुषसक्ताभवति । जीव-  
त्रिंशांशकजातापतिरताभर्तृभक्ताभवति । बुधत्रिंशांशकेजातादुष्टाभवति ।  
शुक्रत्रिंशांशकेजाताऽप्रजावंध्याभवति ॥ ५ ॥

शशिलग्रसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ॥

बलाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिंतयेत् ॥ ६ ॥

एतदंशकैरितितदर्थमनुष्टुभाह॥शशीति । राशिराशिमधिकृत्ययदेतत्रिंशांशके  
उक्तंफलंतच्छशिलग्रसमायुक्तैश्चंद्रलग्नयुक्तैस्त्रिंशांशकैः यस्मिन्राशौयद्ग्रहः ।  
त्रिंशांशकेचंद्रमाभवतितद्रत्फलंवाच्यम् । यद्दालग्रंभवति तस्ययस्त्रिंशांशः  
तद्रशाद्रा । कथमुच्यते बलाबलविकल्पेनेत्यादि । चंद्रलग्नयोः योब-  
लवान्तस्यत्रराशौयत्रत्रिंशांशकेभवतिव्यवस्थितः तस्ययदुक्तंफलंतदेवंवि-  
चिंतयेत् । एतदुक्तंभवति । अन्यस्मिन्राशावन्यस्मिन्त्रिंशांशकेचंद्रमाभ-  
वति । अन्यस्मिन्राशौअन्यस्मिन्त्रिंशांशकेलग्नंतदातयोर्योबलवान् स  
यस्मिन्त्रिंशांशकेभवति तस्यैवफलंवदेत् । योबलरहितस्तस्यफलंन  
भवतीति ॥ ६ ॥

दृक्संस्थावसितसितौपरस्परांशे शौक्रेवायदिघटराशिसंभवौ-  
शः ॥ स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलप्रदीप्तसंशान्तिनयतिनराकृ-  
तिस्थिताभिः ॥ ७ ॥

अथयस्मिन्योगेजाता स्त्रीभिः पुरुषाकारसंस्थाभिः सहमदनंशम-  
यति तद्योगद्वयज्ञानं प्रहर्षिण्याह ॥ दृक्संस्थाविति । असितः सौरः  
सितः शुक्रः एतावसितसितौ परस्परांशे अन्योन्यांशगतौ । सौरः शु-

क्रांशगतः । शुक्रः सौरांशगतस्तौचपरस्परंदृक्संस्थौ अन्योन्यं पश्यतः ए-  
कोयोगः । अथवाशौकेराशौवृषतुल्योरन्यतमेलमगते तत्कालं यद्विधटराशि-  
संभवोऽंशः कुंभनवांशकोदयो भवति तदा द्वितीयो योगः । अस्मिन्योगद्व-  
ये जाता स्त्री अन्याभिरपराभिः स्त्रीभिः योषिद्भिः नराकृतिस्थिताभिः पुरुष-  
संस्थानाभिः पुरुषाकारयुताभिः । मदनविषानलं प्रदीप्तं कामविषाग्निं प्रज्वलि-  
तं शांतिं नयति शमयति । एतदुक्तं भवति । अन्यास्त्रीस्वजघने पुरुषरूपेण चर्ममयं  
लिङ्गं बद्धा पुं वत् तस्यारतिमभिजनयति । यतो तिका मार्त्तत्वात् । पुरुषयो-  
गं गंतुं न शक्नोति ॥ ७ ॥

शून्येकापुरुषो बलेस्त भवने सौम्यग्रहा वीक्षिते क्लीबोस्ते बुधमं-  
दयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः ॥ उत्सृष्टारविणा कुजेन वि-  
धवा वाल्येऽस्त राशिस्थिते कन्यैवाशु भर्त्ता वीक्षिते कर्तनये द्यूने ज-  
रा गच्छति ॥ ८ ॥

अथास्तमये पतिश्चेति यदुक्तं तद्विज्ञानं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ शून्येति । ल-  
भाच्चंद्राद्या यः सप्तमो राशिः स यद्विशून्यः सर्वग्रहवियुक्तो भवति । अब-  
लो बलहीनश्च तस्मिन् न स्त भवने शून्ये अबले च बलरहिते । तथा सौम्यैः शुभग्रहै-  
रनिरीक्षितेन केन चिच्छुभ्रग्रहेण दृश्यमानेन केनचित्सौम्यग्रहेण युते जातायाः भ-  
र्त्ता कापुरुषः कुत्सितपुरुषो भवति । अथवा लभाच्चंद्राद्या यः सप्तमो राशिस्त-  
त्र बुधमंदयोर्ज्ञसौरयोरन्यतमे स्थिते जातायाः भर्त्ता क्लीबः पुरुषाकारहीनो  
भवति । यस्याश्चरगृहं चरराशिः सप्तमे भवति तस्याः नित्यं सर्वकालं  
भर्त्ता प्रवासान्वितः प्रवासशीलो भवति । अर्थादेवं स्थिरे सप्तमे नित्यं गृहे स्थि-  
तो भवति । द्विस्वभावे किंचित्प्रवासे किंचिद्ब्रह्मे स्थितो भवति । उत्सृष्टारविणा  
कुजेन विधवेति । तरणौ रवावस्तस्थिते सप्तमगे जातापतिनोत्सृष्टा भर्त्ता त्यक्ता  
भवति । एवं कुजे सप्तमगते तस्मिन्श्चाशुभैः पापैः वीक्षिते वाल्ये विधवारं डा  
विगतभर्त्ता का भवति । अर्कतनये सौरे द्यूने सप्तमगे तस्मिन्श्चाशुभैः पापैर्वीक्षिते दृष्टे  
कन्यैव जरा मुपगच्छति । कुमार्यैव वृद्धा भवति वृद्धत्वं प्राप्नोतीति । विवाहं न क-  
रोतीत्यर्थः । अत्र चंद्रलग्नयोर्बलवशादैवैतद्वक्तव्यम् ॥ ८ ॥

आग्नेयैर्विधवास्त राशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भू भवेत् क्रूरे हीनबलेस्त-  
गे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता ॥ अन्योन्यांशगयोः सिता-  
वनिजयोरन्यप्रसक्तांगना द्यूने वा यदि शीतरश्मि सहितौ भर्तु-  
स्तदानुज्ञया ॥ ९ ॥



ध्वीदुःशीलाभवति । चाचारोति । अर्कभेसिहेलभेतद्रतेवाचंदेभौमत्रिंशांशके  
जातान्नाचारापुरुषाचाराभवति । नुरिवाचारोयस्याः । केचिद्वाचाटाइतिपठं-  
ति । बहुभाषिणी । सौरत्रिंशांशकेजाताकुलटा असाध्वीभवति । जीव-  
त्रिंशांशकेजातानृपवधूः राजभार्याभवति । बुधत्रिंशांशकेजातापुंचेष्टितापुरुष-  
स्वभावाभवति । शुक्रत्रिंशांशकेजाताअगम्यगाऽगम्यपुरुषगामिनीभवति ।  
जीवक्षेत्रेधन्विमीनयोरन्यतमेलमगतेतद्रतेवाचंदेभौमत्रिंशांशकेजातानैकगुणा  
बहुगुणाभवति । सौरत्रिंशांशकजाताअस्परतिशीघ्रवेगाभवति । बृहस्प-  
तित्रिंशांशकजाता अतिगुणाबहुगुणवतीभवति । बुधत्रिंशांशकेजाताविज्ञान-  
युक्ता आश्चर्ययुक्ताभवति । शुक्रत्रिंशांशकेजाताअसती असाध्वीभवति । दासी-  
ति । आर्किभेसौरक्षेत्रेमकरकुंभयोरन्यतमेलमगेचंद्रगेवाभौमत्रिंशांशकजाता  
दासीभवति । सौरत्रिंशांशकजातानीचरतानीचपुरुषसक्ताभवति । जीव-  
त्रिंशांशकजातापतिरताभर्तृभक्ताभवति । बुधत्रिंशांशकेजातादुष्टाभवति ।  
शुक्रत्रिंशांशकेजाताऽप्रजावंध्याभवति ॥ ५ ॥

**शशिलग्रसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ॥**

**बलाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिंतयेत् ॥ ६ ॥**

एतदंशकैरितितदर्थमनुष्टुभाह॥शशीति । राशिराशिमधिकृत्ययदेतत्रिंशांशके  
उक्तंफलंतच्छिलग्रसमायुक्तैश्चंद्रलग्नयुक्तैस्त्रिंशांशकैः यस्मिन्राशौयद्ग्रहः ।  
त्रिंशांशकेचंद्रमाभवतितद्रत्फलंवाच्यम् । यद्बालग्रंभवति तस्ययास्त्रिंशांशः  
तद्वशाद्वा । कथमुच्यते बलाबलविकल्पेनेत्यादि । चंद्रलग्नयोः योब-  
लवान्त्सयत्रराशौयत्रत्रिंशांशकेभवतिव्यवस्थितः तस्ययदुक्तंफलंतदेवंवि-  
चितयेत् । एतदुक्तंभवति । अन्यस्मिन्राशावन्यस्मिन्त्रिंशांशकेचंद्रमाभ-  
वति । अन्यस्मिन्राशौअन्यस्मिन्त्रिंशांशकेलग्नं तदातयोर्योबलवान् स  
यस्मिन्त्रिंशांशकेभवति तस्यैवफलंवदेत् । योबलरहितस्तस्यफलं  
भवतीति ॥ ६ ॥

**दृक्संस्थावसितसितौ परस्परं शोशौ केवायदिघटराशिसंभवौ-  
शः ॥ स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलप्रदीप्तं संशांतिं नयति नराकृ-  
तिस्थिताभिः ॥ ७ ॥**

अथयस्मिन्योगेजाता स्त्रीभिः पुरुषाकारसंस्थाभिः सहमदनंशम-  
यति तद्योगद्वयज्ञानं प्रहर्षिण्याह ॥ दृक्संस्थाविति । असितः सौरः  
सितः शुक्रः एतावसितसितौ परस्परं शो अन्योन्यांशगतौ । सौरः शु-

क्रांशगतः । शुक्रः सौरांशगतस्तौचपरस्परंद्वक्संस्थौ अन्योन्यंपश्यतः ए-  
कोयोगः । अथवाशौक्रेराशौवृषतुल्योरन्यतमेलमगतेतत्कालंयदिघटराशि-  
संभवोऽंशः कुंभनवांशकोदयोभवति तदाद्वितीयोयोगः । अस्मिन्योगद्व-  
येजातास्त्रीअन्याभिरपराभिः स्त्रीभिः योषिद्भिः नराकृतिस्थिताभिः पुरुष-  
संस्थानाभिः पुरुषाकारयुताभिः । मदनविषानलंप्रदीप्तकामविषाग्निप्रज्वलि-  
तंशांतिनयति शमयति । एतदुक्तंभवति । अन्यास्त्रीस्वजघनेपुरुषरूपेणचर्ममयं  
लिङ्गं बद्धापुंवत् तस्यारतिमभिजनयति । यतोतिकामार्तत्वात् । पुरुषयो-  
गंगंतुंनशक्नोति ॥ ७ ॥

शून्येकापुरुषोवलेस्तभवनेसौम्यग्रहावीक्षितेक्लीवोस्तेबुधमं-  
दयोश्चरगृहेनित्यंप्रवासान्वितः ॥ उत्सृष्टारविणाकुजेनवि-  
धवावाल्येऽस्तराशिस्थितेकन्यैवाशुभवीक्षितेर्कतनयेद्यूनेज-  
रांगच्छति ॥ ८ ॥

अथास्तमयेपतिश्चेतियदुक्तं तद्विज्ञानंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ शून्येति । ल-  
भाच्चंद्राद्वा यः सप्तमोराशिः सयदिशून्यः सर्वग्रहवियुक्तोभवति । अव-  
लोवलहीनश्चतस्मिन्नस्तभवनेशून्ये अवलेचवलरहिते । तथासौम्यैः शुभग्रहै-  
रनिरीक्षितेनकेनचिच्छुभग्रहेणदृश्यमानेनकेनचित्सौम्यग्रहेणयुतेजातायाः भ-  
र्ताकापुरुषः कुत्सितपुरुषोभवति । अथवालभाच्चंद्राद्वा यः सप्तमोराशिस्त-  
त्रबुधमंदयोर्ज्ञसौरयोरन्यतमेस्थितेजातायाः भर्ताक्लीवः पुरुषाकारहीनो  
भवति । यस्याश्चरगृहंचरराशिः सप्तमेभवति तस्याः नित्यंसर्वकालं  
भर्ताप्रवासान्वितः प्रवासशीलोभवति । अर्थादेवंस्थिरेसप्तमेनित्यंगृहेस्थि-  
तोभवति । द्विस्वभावेकिंचित्प्रवासेकिंचिद्ग्रहेस्थितोभवति । उत्सृष्टारविणा  
कुजेनविधवेति । तरणौरवावस्तस्थितेसप्तमेजातापतिनोत्सृष्टाभर्तात्यक्ता  
भवति । एवंकुजेसप्तमगतेतस्मिंश्चाशुभैः पापैः वीक्षितेवाल्येविधवारंडा  
विगतभर्तृकाभवति । अर्कतनयेसौरैद्यूनेसप्तमगेतस्मिंश्चाशुभैः पापैर्वीक्षिते दृष्टे  
कन्यैवजरामुपगच्छति । कुमार्येववृद्धाभवति वृद्धत्वंप्राप्नोतीति । विवाहंनक-  
रोतीत्यर्थः । अत्रचंद्रलग्नयोर्वलवशादेवैतद्वक्तव्यम् ॥ ८ ॥

आग्नेयैर्विधवास्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूमेवेत्क्रूरेहीनवलेस्त-  
गेस्वपतिनासौम्येक्षितेप्रोज्झिता ॥ अन्योन्यांशगतयोः सिता-  
वनिजयोरन्यप्रसक्तांगनाद्यूनेवायदिशीतरश्मिसहितौभर्तु-  
स्तदानुज्ञया ॥ ९ ॥



ननुचंद्रात्सप्तमस्थानादप्येतत्फलंकथमवगम्यते । उच्यते । सप्तमेस्थानेचंद्रमसः फलदर्शनाभावात् पुनरपिजाताकीदृशीभविष्यतीति तद्विज्ञानंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ आग्नेयैरिति । एकैकस्मिन्पापग्रहेसप्तमेफलमुक्तम् । यदिवहवः आग्नेयाः क्रूराः सप्तमस्थाभवन्ति । तदाप्रतिग्रहोक्तंफलं त्यक्त्वा तैराग्नेयैरस्तराशिसहितैः विधवैवभवति । मिश्रैः क्रूरैः सौम्यैश्चसप्तमस्थैः पुनर्भूभवेत् । स्वपाणिग्राहिणं त्यक्त्वा अन्यस्य भार्या भवतीत्यर्थः । द्विसंस्कृता । तथाच ग्रंथांतरे पुनर्भूलक्षणमुक्तम् । स्वैरिणीस्वपतिं हित्वासवर्णकामतः श्रेयेत् । अक्षतंचप्रजाद्वारंपुनर्भूसंस्कृतापुनः । क्रूरइति । क्रूरआदित्यांगारकशनैश्चराणामन्यतमेऽस्तगेलग्रात्सप्तमस्थेतस्मिंश्चहीनबले सर्वबलरहितेतथाभूते सौम्येक्षितेशुभग्रहाणां बुधगुरुसितानामन्यतमेन दृष्टेजातास्वपतिना आत्मीयेनैव भर्त्रा प्रोज्झिता त्यक्ता भवति । अन्योन्यांशगयोरिति । सितः शुक्रः अवनिजोंगारकः एतयोः सितावनिजयोः अन्योन्यांशगयोः परस्परनवांशकस्थितयोः । यत्रतत्रराशौसितनवांशकेभौमोभौमनवांशकेशुक्रः । तदासांगनास्त्रीअन्यप्रसक्तापरपुरुषरता भवति । अथवाद्यूनेलग्रात्सप्तमेस्थानेतावेवयद्यंगारकशुक्रौ शतिरश्मिसहितौ चंद्रसहितौ भवतस्तथाप्यन्यपुरुषासक्ता भवति । किंतु भर्तुरनुज्ञयापत्युराज्ञयेति नतुस्वातंत्र्येणेति ॥ ९ ॥

सौरारक्षेऽलग्नगेसेंदुशुक्रेमात्रासाद्धबंधकीपापदृष्टे ॥ कौजेस्तांशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणीवल्लभा सद्द्रहांशे ॥ १० ॥

अथ येन योगेन जातामात्रासहबंधकी भवति येन चरुगर्दितयोनि येन च सुभगातद्योगत्रयं मालिन्याह ॥ सौरारक्षे इति । सौरः शनैश्चरः । तद्वक्षेमकरकुंभौ आरोभौमस्तद्वक्षे मेषवृश्चिकौ एषामन्यतमेलमगते तस्मिंश्चसेंदुशुक्रे इंदुनाचंद्रेण शुक्रेण च संयुक्ते तथाभूते पापदृष्टे पापग्रहावलोकिते जाताबंधकी परपुरुषगामिनी भवति न केवलं यावन्मात्रासाद्धं जनन्यासहबंधकी जाता तन्मातापि बंधकी परपुरुषगामिनी भवति । अस्तांशे लग्रात्सप्तमेस्थाने यो राशिस्तत्कालं कौजोभौमनवांशको भवति तस्मिंश्च कौजेऽस्तांशे सौरिणारविजेन दृष्टेजाता व्याधियोनिः स रोगभगा भवति । यदुक्तं सुभगतास्तमयेतदर्थमाह । चारुश्रोणीवल्लभा सद्द्रहांश इति । यदा लग्रात्सप्तमेस्थाने सद्द्रहस्यशुभग्रहस्य नवांशको दयो भवति तदा चारुश्रोणीशोभनभगावल्लभापत्युः प्रिया च भवति ॥ १० ॥

वृद्धोमूर्खः सूर्यजक्षेऽशकेवास्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेये ॥  
शौक्रेकांतोतीवसौभाग्ययुक्तो विद्वान्भर्तानैपुणज्ञश्चबौधे ॥ ११ ॥

अथयस्याः सप्तमंस्थानंशून्यंभवतितस्याः शनैश्चरांगारकशुक्रक्षेत्रेतदं-  
 शेवासप्तमेयादशीभवतितद्विज्ञानंमालिन्याह ॥ वृद्धइति । यस्याजन्मनिलग्रा-  
 त्सप्तमेस्थानेसूर्यजस्यसौरस्यक्षेमकरकुंभयोरन्यतमसंबंधीनवांशकोवासप्तमेभव-  
 ति तस्याः वृद्धः मूर्खश्चभर्ताभवति । यस्याः आवनेयस्यांगारकस्यक्षेम-  
 षवृश्चिकयोरन्यतमस्तदंशकोवासप्तमेभवति तस्याः स्त्रीलोलः स्त्रीपुस्पृ-  
 हयालुः क्रोधनः क्रोधशीलश्चभर्ताभवति । एवंशौकैराशौवृषतुलयोरन्यतमे  
 तदंशकेवासप्तमस्थेकांतोतीवदर्शनीयोऽतीवसौभाग्ययुक्तोवल्लभश्चभर्ताभवति ।  
 वौधेमिथुनकन्ययोरन्यतमेतदंशकेवासप्तमस्थेजातायाः भर्ताविद्वान्पंडितः  
 नेपुणज्ञश्चसर्वत्रसूक्ष्मदृष्टिर्भवति ॥ ११ ॥

मदनवशगतोमृदुश्चचांद्रेत्रिदशगुरौगुणवान्जितेंद्रियश्च ॥

अतिमृदुरतिकर्मकृच्चसौर्यैभवतिगृहेस्तमयस्थितेंशकेवा ॥ १२ ॥

अथचंद्रराशौसप्तमेतत्रवांशकेजीवराशौवादित्यराशौचतत्रवांशकेवातद्विज्ञा-  
 नंपुष्पिताग्रयाह ॥ मदनेति । यस्याः जातायाः सप्तमेस्थानेचांद्रोराशिः  
 कर्कटस्तदंशकोवाभवति तस्याः भर्तामदनवशगतः कामातुरोमृदुश्चाक-  
 ठिनश्चभवति । त्रिदशगुरोः जीवस्यराशौधन्विमनियोरन्यतमेसप्तमस्थेतदंश-  
 केवाजातायाः भर्तागुणवान् । शौर्यादिभिर्गुणैर्युक्तोजितेंद्रियोदांतश्चभवति ।  
 सौर्यैराशौसिंहेतदंशकेवासप्तमस्थेजातायाः भर्ताऽतिमृदुरतिवाकठिनः अति-  
 कर्मकृदतीवव्यापारकृद्भवति । व्यापारकरणशीलः । केचिदतिकर्मकृदतिकामा-  
 तुरोकामासक्तोभवति । एवमस्तमयस्थितेसप्तमस्थानस्थेगृहेराशावंशकेवा  
 फलमभिहितंयत्रान्यसंबंधीराशिः सप्तमेभवति । अन्यसंबंधीनवांशश्चतत्र  
 राश्यंशपयोः योबलवांस्तदीयंफलंवाच्यमिति ॥ १२ ॥

ईर्ष्यान्वितासुखपराशशिशुक्रलग्नेज्ञेद्रोः कलासुनिपुणासुखि-  
 तागुणाढ्या ॥ शुक्रज्ञयोस्तुरुचिरासुभगाकलाज्ञात्रिष्वप्यनेक-  
 वसुसौख्यगुणाशुभेषु ॥ १३ ॥

अथचंद्रशुक्रबुधानांद्वौत्रयोवालभगतायस्याभवंतितस्यास्वरूपंवसंततिलके-  
 नाह ॥ ईर्ष्यंति । यस्याः जन्मलग्नेशशिशुक्रौचंद्रसितौसमेतौभवतः । साई-  
 र्ष्यान्वितामात्सर्ययुक्तासुखपरासुखासक्ताचभवति । ज्ञेद्रोः बुधचंद्रयोः  
 लग्नगतयोः कलासुनिपुणातज्ज्ञा सुखितासंजातसुखाभवति । गुणाढ्यागुण-  
 बहुलाच । शुक्रज्ञयोः सितबुधयोर्लग्नगतयोरुचिरादर्शनीयासुकांतासुभगाभर्तृ-  
 वल्लभाकलाज्ञाचभवति । त्रिष्वपीति । यस्यास्त्रयोपिचंद्रबुधशुक्रलग्नगताभवं-



ति साऽनेकवसुसौख्यगुणाअनेकैर्वसुभिः धनैः सौख्यैरनेकैर्वहुभिश्चगुणैर्युक्ता भवति । अपिशब्दात्रिपुशुभेषुबुधगुरुसितेषुलग्नतेषुजाता अनेकवसुसौख्य-गुणाभवति ॥ १३ ॥

ऋरेष्टमेविधवतानिधनेश्वरोऽश्वस्यस्थितोवयसितस्यसमेप्र-  
दिष्टा ॥ सत्स्वर्थगेषुमरणंस्वयमेवतस्याःकन्यालिगोहरिषु  
चाल्पसुतत्वमिदौ ॥ १४ ॥

अत्रपूर्वतासांभर्तुमरणमितियदुक्तंतद्विज्ञानंवसंततिलकेनाह ॥ ऋरेष्टमइति । यस्याः ऋरग्रहोष्टमेस्थानेभवतितस्याविधवताभवति । कस्मिन्कालइत्याह । निधनेश्वरोयस्येति । निधनेऽश्वरोष्टमस्थानाधिपतिर्यस्यग्रहस्यनवांशकेभवति । तस्ययद्वयस्तस्मिन्वयसिविवाहात्परतस्तस्याः वैधव्यंवक्तव्यम् । एकंद्वौ-नवविंशतिरित्यादिग्रहवयः । एवंकेचिद्वदन्ति । वयंपुनः दशांतर्दशाकालंवयः-शब्देनब्रूमः । यत्रनिधनेश्वरश्चंद्रभौमयोरन्यतमंशेभवति तत्रचंद्रभौमयोर्वयः-प्रमाणंवर्षत्रितयम् । तत्रप्रायः कुमारीणांविवाहासंभवस्तस्मादष्टमस्थानाधि-पतिर्यस्यांशकेव्यवस्थितस्तस्यांतर्दशाधिपतिस्तस्याविवाहात्परंविधवताप्रदि-ष्टोक्ता । सत्स्विति । यस्याजन्मनिऋरग्रहोष्टमगोभवति । सद्ग्रहः शुभग्रहः । कश्चिदर्थगोद्वितीयस्थानगतोभवति तस्याः भर्तुः परस्तात् स्वस्यैवमर-णंभवति । यस्याजन्मनिकन्यायामलिनिवृश्चिकेगविवृषेहरौसिंहेवाइंदुः स्थि-तोभवति तस्याअल्पसुतत्वंस्वल्पपुत्रत्वंवक्तव्यम् । कन्यालिगोहरीणामन्यत-मश्चंद्रराशिर्यस्यास्तस्याः अल्पाः पुत्राभवन्तीति ॥ १४ ॥

सौरैर्मध्यबलेनरहितैःशीतांशुशुक्रेंदुजैःशेषैर्वीर्यसमन्वितैः  
पुरुषिणीयद्योजराशुद्रमः ॥ जीवारास्फुजिदैर्दवेषुबलिषुप्रा-  
ग्लग्रराशौसमेविख्याताभुविनैकशास्त्रनिपुणास्त्रीब्रह्मवादि-  
न्यपि ॥ १५ ॥

अथयस्मिन्योगेजातापुरुषिणीभवतियस्मिंश्चब्रह्मवादिनीभवति । तद्योगद्व-यंशार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ सौरैइति । सौरैशनैश्चरैर्मध्यबलेनातिबलवतिनचा-तिबलहीने । तथाशीतांशुशुक्रेंदुजैः शशिसितबुधैः बलेनवीर्येणरहितैः विव-र्जितैः । शेषैरादित्यभौमजीवैर्वीर्यसमन्वितैःसबलैर्यत्रतत्रावस्थितैर्यद्योजरा-शिःविषमराशिरुद्रमः उद्रमेउदयेलभेभवति । विषमराशिः लभेजाताभवती-त्यर्थः । तदाजातामेषमिथुनसिंहतुलाधनिकुंभानामन्यतमेसापुरुषिणीभवति ।

बहुपुरुषेत्यर्थः । जीवारास्फुजिदैंदेवेष्विति । जीवोबृहस्पतिः । आरोभौमः ।  
 आस्फुजिच्छुक्रः । ऐंदवोबुधः । एतेषुयत्रतत्रावस्थितेषुबलिपुवीर्यवत्सुतथाप्राग्ल-  
 मेयदिसमराशिर्भवतितदाजातास्त्री भुविभूमौविख्यातासर्वत्रप्रथिता । अनेक-  
 शास्त्रकुशला अनेकेषुबहुपुशास्त्रेषुकुशलातज्ज्ञाब्रह्मवादिन्यपिमोक्षशास्त्रेषुकुश-  
 लाभवति ॥ १५ ॥

पापेस्तेनवमगतग्रहस्यतुल्यांप्रव्रज्यांयुवतिरूपैत्यसंशयेन ॥

उद्वाहेवरणविधौप्रदानकालेचिंतायामपिसकलंविधेयमेतत् ॥ १६ ॥

इतिबृहज्जातकेस्त्रीजातकाऽध्यायश्चतुर्विंशतिः ॥ २४ ॥

अथयद्योगजाताप्रव्रज्यामाश्रयतितद्विज्ञानंप्रहर्षिण्याह ॥ पापेइति ।  
 पूर्वसप्तमस्थस्यग्रहस्यपृथक्पृथक्फलमुक्तम् । तत्रलमात्पापे क्रूरग्रहेऽस्ते  
 सप्तमस्थेयद्यन्यः कश्चिद्ब्रह्मोलमात्रवमगतोभवति तदासास्त्रीप्रागुक्तंफ-  
 लंनप्राप्नोति । नवमगतस्यग्रहस्यतुल्यांतत्कथितांप्रव्रज्यांयुवतिः स्त्रीअसंशये-  
 ननिःसंशयेनोपैति प्राप्नोति । एवंस्त्रीजातकंव्याख्यातम् । उद्वाहेइति । अत्र  
 येयोगाव्याख्यातास्तेचेदुद्वाहेविवाहकालेभवंति तदायोगोक्तफलंवाच्यम् ।  
 तथातस्यावरणविधौकन्यामार्गणकालेप्रदानकालेकन्यादानकालेचचिंतायांप्रश्न-  
 कालेप्येवंसकलंसर्वविधेयंवक्तव्यम् । स्त्रीजातकेषुयेषुभाशुभयोगाउक्तास्तेऽत्रा-  
 पिशुभाऽशुभावक्तव्याः । नसकलजातकोक्ताः । तेचयथाप्रदर्शितकालेनैवज्ञेयाः ।  
 येषांचवक्ष्यमाणविवाहपटलोक्तयोगैर्बाधोभविष्यति तेऽत्रनवक्तव्याः । युक्त्यै-  
 तद्विवाहपटलमुक्तमिति ॥ १६ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौस्त्रीजातकाध्यायश्चतुर्विंशः ॥ २४ ॥

अथनैर्याणिकाऽध्यायप्रारंभः ।

मृत्युर्मृत्युगृहेक्षणेनबलिभिस्तद्वातुकोपोद्भवस्तत्संयुक्तभगात्र-  
 जोबहुभवोवीर्यान्वितैर्भूरिभिः ॥ अग्न्यंवायुधजोज्वरामय-  
 कृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमेसूर्याद्यैर्निधनेचरादिषु परस्वाध्वप्रदे-  
 शेष्विति ॥ १ ॥

अथातो नैर्याणिकाऽध्यायो व्याख्यायते । तत्रादावेवाष्टमे स्थाने ग्रहदृष्टे विद्युक्ते  
 यते वायथाघ्नियते तद्विज्ञानं शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ मृत्युरिति । बलिभिर्ग्रहै-



मृत्युगृहेक्षणेनमृत्युर्भवति । यस्यजन्मलग्नान्मृत्युगृहमष्टमंस्थानंशून्यंयोग्रहोबल-  
वान्पश्यतितस्यग्रहस्ययोधातुरुक्तस्तद्भातुकौपोद्भवस्तेनधातुनाप्रकुपितेनसमि-  
यते । तद्यथाऽर्कस्यपित्तं चंद्रस्यवातकफौ। भौमस्यापित्तं । बुधस्यत्रयोपिवातपि-  
त्तश्लेष्माणः । बृहस्पतेः कफः । शुक्रस्यवातकफौ । सौरस्यवातइति । तत्संयु-  
क्तभगात्रजइति । तदित्यनेनलग्नादष्टमस्थानस्यपरामर्शः । तेनाष्टमेनयुक्तंयद्भ-  
गात्रं तत्संयुक्तभगात्रं तज्जातस्तत्संभूतः । लग्नादष्टमोराशिः यस्मिन्नंगे  
कालाख्यपुरुषस्यवर्ततेतस्मिन्नंगेदृष्टग्रहोक्तदोषकोपान्म्रियते । भूरिभिर्बहुभिः  
वीर्यान्वितैःसबलैः । बहुभवोमृत्युः । यदाबहवोपिवीर्यान्वितास्तच्छून्यमष्ट-  
मस्थानंपश्यंतितदायावंतः पश्यन्ति तावतांग्रहाणामुक्तदोषप्रकोपेन तेचब-  
हवोदोषायस्मिन्कालपुरुषांगेलग्नादष्टमराशिर्वर्ततेतस्मिन्नंगेप्रकुप्यनिधनंकुर्वन्ती-  
ति । अग्न्यंवायुधजइति । सूर्यादिभिरष्टमेस्थानेस्थितैरग्न्यादिभिर्मृत्युर्भवति ।  
तद्यथा । यस्यलग्नादष्टमेस्थानेऽर्कोभवति तस्याग्निहेतुकोमृत्युर्भवति । एवंचं-  
द्रेष्टमेनुहेतुकः । भौमेआयुधहेतुकः । बुधेज्वरहेतुकः । जीवेआमयकृतः । अ-  
विज्ञातव्याधिहेतुकः । शुक्रेद्वेहेतुकः । सौरेक्षुद्वेहेतुकइति । एतैर्ग्रहैर्बलिभिर्यथोक्त-  
एवमृत्युः । शुभेनकर्मणाभवति । बलहीनैरशुभेनमध्यबलैर्मध्यमेनेति। विज्ञात-  
मरणप्रकारस्यमरणदेशज्ञानार्थमाह । निधनेचरादिष्विति । यस्यनिधनेऽष्टमे  
स्थानेचरराशिर्भवति सपरदेशेम्रियते।यस्यास्थिरः सस्वदेशे । यस्यद्विस्वभावः  
सोऽध्वप्रदेशे पथिम्रियतइति ॥ १ ॥

शैलाग्राभिहतस्यसूर्यकुजयोर्मृत्युः खबंधुस्थयोः कूपेमंदश-  
शांकभूमितनयैर्बध्वस्तकर्मस्थितैः॥ कन्यायांस्वजनाद्धिमो-  
ष्णकरयोः पापग्रहदृष्टयोः स्यातांयद्युभयोदयेर्कशशिनौतो-  
येतदामजितः ॥ २ ॥

अथशैलाग्राभिघातेषुयैयोगैर्म्रियतेतान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ शैलाग्रा-  
भिहतस्येति । सूर्यकुजयोः रविभौमयोः । युगपत्तुल्यकालंखबंधुस्थयोर्दशम-  
योश्चतुर्थयोर्वाजातस्यशैलाग्राभिहतस्यशिलाप्रहारेणहतस्यमृत्युर्भवति । कूपइ-  
ति । मंदशशांकभूमितनयैः सौरेन्दुभौमैर्यथासंख्यंबध्वस्तकर्मस्थितैश्चतुर्थस-  
प्तमदशमस्थैः । तद्यथा । सौरेचतुर्थगेचंद्रेसप्तमगेभौमेदशमगेजातः कूपेपति-  
तोम्रियते । कन्यायामिति । हिमोष्णकरयोश्चंद्रार्कयोः । कन्यायांस्थितयोश्च  
पापग्रहदृष्टयोर्जातः स्वजनेन म्रियते स्वजनेनव्यापाद्यते । उभयोदयेद्विस्व-  
भावराशाबुदयेलग्नगतेतत्रचार्कशशिनौरविचंद्रौयदास्यातांभवेतांतदातोयेजले  
मजितोमग्नोम्रियते ॥ २ ॥

मंदेकर्कटगेजलोदरकृतोमृत्युमृगांकेमृगेशस्त्राग्निप्रभवःश-  
शिन्यशुभयोर्मध्येकुजक्षेस्थिते ॥ कन्यायांरुधिरोत्थशोपज-  
नितस्तद्वत्स्थितेशीतगौसौरक्षेयदितद्रदेवहिमगौरज्ज्वग्निपा-  
तैःकृतः ॥ ३ ॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ मंदेइति । मंदेशनैश्चरेक-  
कर्कटगेकुलीरस्थेमृगांकेचंद्रेमृगेमकरस्थितेजातस्यजलोदरकृतोजलोदरेणमृत्यु-  
र्भवति । शस्त्राग्निप्रभवइति । शशिनिचंद्रेकुजक्षेमेषवृश्चिकयोरन्यतमस्थेतत्र  
चाशुभयोर्द्वयोः पापयोर्मध्यस्थेजातस्य शस्त्राग्निप्रभवः शस्त्रेणाग्निनावाप्रभ-  
वति तत्कृतोमृत्युः । कन्यायामिति । शीतगौचंद्रेकन्यायांतद्वत्स्थितेपापद्व-  
यमध्यगतेजातस्यरुधिरोत्थशोपजनितोमृत्युर्मरणंभवति । दुष्टेनरक्तेनशोषे-  
णवाउत्थितोजनित उत्पन्नः । सौरक्षेइति । हिमगौचंद्रेसौरक्षेमकरकुंभयोर-  
न्यतमस्थेतद्वत्तस्मिंश्चपापद्वयमध्यगतेयदिचेज्जातस्तदारज्ज्वग्निपातैः रज्ज्वाऽ-  
ग्निनापाताद्वाघ्नियतइति ॥ ३ ॥

बंधाद्धीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयोर्द्वेष्काणैश्चस-  
पाशसर्पनिगडैश्छिद्रस्थितैर्बंधतः ॥ कन्यायामशुभान्वितेस्त-  
मयगेचंद्रेसितेमेषगेसूर्येलग्नगतेचविद्विमरणंस्त्रीहेतुकंमंदिरे ॥४॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ बंधाद्धीनवमस्थयोरिति ।  
अशुभयोर्द्वयोःपापयोर्द्धीनवमस्थयोः पंचमनवमस्थानस्थयोश्चसौम्यग्रहैरदृष्ट-  
योरनवलोकितयोजातः बंधाद्धनेनम्रियते । द्वेष्काणैरिति । येनलभेनपुमा-  
न् जातस्तस्मादृष्टमेस्थानेयोराशिस्तत्कालंवर्तते तत्रयदिसपाशसर्पोर्द्वेष्काणो  
भवतिसनिगडोवा तदाजातः बंधनेन म्रियते । तत्रभुजगपाशभृद्वेष्काणः  
कर्कटद्वितीयः कर्कटतृतीयः वृश्चिकप्रथमः वृश्चिकद्वितीयः मीनांत्यश्च ।  
निगडद्वेष्काणः मकराद्यः । कन्यायामिति । मीनलग्नजातः कन्यायाम-  
स्तगेसप्तमस्थेचंद्रेतस्मिंश्चाशुभान्वितेकेनचित्पापेनसहिते सितेशुकेमेषगे  
सूर्यैरवौलग्नगतेजातस्यमरणंमंदिरेगृहेस्त्रीहेतुकंस्त्रीनिमित्तंविद्विजानीहि ॥ ४ ॥

शूलोद्भिन्नतनुःसुखेवनिमुतेमूर्येपिवाखेयमेसप्रक्षीणहिमांशु-  
भिश्चयुगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः॥बंधुस्थेचरवौवियत्यवनिजे  
क्षीणेंदुसंवीक्षितेकाष्ठेनाभिहतःप्रयातिमरणंमूर्यात्मजेनेक्षिते५॥



अथान्यानपिमृत्युयोगान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ शूलोद्भिन्नतनुरिति । सुखे चतुर्थे स्थानेऽवनि सुते भौमे स्थिते । सूर्योऽपि वा इति । रवौ चतुर्थे स्थे । खेदशमे स्थाने यदियमः सौरो भवति तदा जातः शूलोद्भिन्नतनुर्भियते शूलोद्भिन्नातनुर्यस्य शूलप्रोतस्य तस्य मरणं भवति । सप्रक्षीणेति । पापैः रविभौमसौरैः सप्रक्षीणहिमांशुभिरतिक्षीणचंद्रसंयुक्तैश्च युगपत्तुल्यकालं त्रिकोणाद्यगैः पंचमनवमलग्नस्थैः । एतदुक्तं भवति । सक्षीणचंद्राणां पापानामेतत्स्थानत्रयमुक्त्वाऽन्यत्रावस्थितिर्न भवति । तदा चकाराच्छूलोद्भिन्नतनुर्भियते । बंधुस्थे चेति । रवौ सूर्ये बंधुस्थे लग्नमात्रतुर्थे गेवियति दशमेऽवनि सुते भौमे स्थिते तस्मिन् प्रक्षीणे दुनाक्षीणचंद्रेण संवीक्षिते तदा जातश्चकाराच्छूलोद्भिन्नतनुर्भियते । अस्मिन्नेव योगे चतुर्थे गेवौ दशमस्थे भौमे तस्मिन् मूर्त्यात्मजेन शनैश्च रेणेक्षिते दृष्टे जातः काष्ठेनाभिहतः काष्ठघातेन ताडितो मरणं प्रयाति प्राप्नोतीत्यर्थः ॥ ५ ॥

रंध्रास्पदांगहिबुकैर्लगुडाहतांगः प्रक्षीणचंद्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तैः ॥ तैरेव कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थैर्धूमाग्निबंधनशरीरानिकुट्टनांतः ॥ ६ ॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ रंध्रास्पदेति । रंध्रमष्टमं स्थानम् आस्पदं दशमम् अंगं लग्नं हिबुकस्थानं चतुर्थम् । एतैरंध्रास्पदांगहिबुकैर्यथासंख्यं प्रक्षीणचंद्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तैः । एतदुक्तं भवति । अतिक्षीणचंद्रोष्टमे रुधिरो भौमः दशमे आर्किः सौरौ गेलग्रे दिनेशोरविश्चतुर्थे एवं विधे योगे जातो लगुडाहतांगोलगुडताडितावयवो भियते । केचित्पठंतिलगुडाहतांतइति । लगुडाहतस्यांतो भवति । तैरेवेति । तैरेव ग्रहैः प्रक्षीणचंद्ररुधिरार्किदिनेशैः । यथासंख्यं कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थैः दशमनवमलग्नपंचमस्थैः । क्षीणचंद्रमादशमे भौमोनवमे सारोलग्रे अर्कः पंचमे यदि भवति तदा जातस्य धूमेनाग्निना बंधनेन शरीरानिकुट्टनेन काष्ठादिना प्रहरणेन वा तस्य मृत्युर्भवति ॥ ६ ॥

बंध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमंदैर्निर्याणमायुधशिखिक्षितिपालकोपैः ॥ सौरेंदुभूमितनयैः स्वसुखारूपदस्थैर्ज्ञेयैः क्षतकृमिकृतश्च शरीरघातः ॥ ७ ॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान्वसंततिलकेनाह । बंध्वस्तकर्मसहितैरिति । कुजो गारकः सूर्यो रविः मंदः सौरः एतैर्यथासंख्यं बंध्वस्तकर्मसहितैः चतुर्थसतमदशमस्थैः । चतुर्थे भौमः सतमे सूर्यः दशमे सौरः यस्य जन्मनि भवंति तस्यायुधेन खड्गादिना शिखिनाग्निना क्षितिपालकोपेन नृपक्रोधेन वा एषामन्यतमेन निर्याणं मृत्यु-

भवति । सौरेंदुभूमितनयैः शनिशशिभौमैः यथासंख्यं स्वसुखास्पदस्थैर्द्वितीय-  
चतुर्थदशमस्थैः । द्वितीयेसौरः चतुर्थेचंद्रः दशमेभौमः यस्यजन्मनिभवति  
तस्यक्षतकृमिकृतः क्षतेछिद्रेकृमयः कीटाउत्पद्यन्ते तत्कृतश्चशरीरपातोभवति  
क्षतकृमिभिः पतितैर्मृत्युर्भवति ॥ ७ ॥

खस्थेकैवनिजेरसातलगतेयानप्रपाताद्बोधयंत्रोत्पीडनजःकु-  
जेस्तमयगेसौरेंद्रिनाभ्युद्गमे ॥ विष्मध्येरुधिरार्किशीतकिर-  
णैर्जूकाजसौरक्षगैर्यातैर्वागलितेंदुसूर्यरुधिरैर्व्योमास्तबंध्वा-  
ह्यान् ॥ ८ ॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान् शार्दूलविक्रीडितेनाह ॥ खस्थइति । अकैरवौखस्थे  
दशमस्थानगतेकुजेरसातलगतेचतुर्थस्थेजातस्ययानप्रपातात्वाहनात्पतितस्यव-  
धोमृत्युर्भवति । यंत्रोत्पीडनजइति । कुजेंगारकेऽस्तमयगेसप्तमस्थेसौरेंद्रिना-  
भ्युद्गमेसौरश्चंद्रश्चेतसौरेंद्रिनाः । शनिचंद्रविभिरभ्युद्गमेलग्नैस्थितैः जातस्य  
यंत्रोत्पीडनजोवधः । यंत्रपीडितोऽग्नियते । केचित्क्षीणेंद्रिनाभ्युद्गमेइतिपठन्ति । क्षी-  
णेंदुःक्षीणचंद्रमा इनआदित्यः आर्किःसौरः एतैःलग्नैस्थितैःजातस्य  
यंत्रोत्पीडनजोवधः । विष्मध्यइति । रुधिरोंगारकः आर्किःसौरः शीतकि-  
रणचंद्रः एतैःयथासंख्यम् । जूकाजसौरक्षगैः जूकस्तुलः । अजोभेषः । सौरक्षेमकरकुं-  
भौ ! तेनतुलेकुजोभौमः भेषेसौरः मकरकुंभयोरन्यतमेचंद्रः एवयस्यजन्मनिभवति  
सविष्मध्यैऽग्नेध्यमध्येऽग्नियते । यातैर्वेति । गलितेंदुः क्षीणचंद्रः सूर्यआदित्यः  
रुधिरोंगारकः एतैर्यथासंख्यम् । व्योमास्तबंध्वाह्यान्यातैः प्रातैः । व्योम्नि  
दशमेक्षीणचंद्रः । अस्तमयेसप्तमेसूर्यः । बंध्वाह्येबंधुसंज्ञकेचतुर्थेभौमः ।  
बंध्वित्याह्वासंज्ञायस्य । एवयस्यजन्मनिभवतिस वाग्रहणात् विष्म-  
ध्येऽग्नियते ॥ ८ ॥

वीर्यान्वितवक्रवीक्षितेक्षीणेंदौनिधनस्थितेऽर्कजे ॥ गुह्यो-  
द्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात्कृमिशस्त्रदाहजः ॥ ९ ॥

अथान्यानप्यनिष्टयोगान्वैतालीयेनाह ॥ वीर्यान्वितेति । क्षीणेंदौक्षीण-  
चंद्रेवीर्यान्वितेनसबलेनवक्रेणभौमेनदृष्टेवीक्षितेर्कजेसौरैनिधनस्थितेऽष्टमस्थान-  
गतेजातस्यगुह्योद्भवरोगपीडयागुह्येयउद्भूतउत्पन्नरोगोगदस्तत्पीडयाऽशोभगंद-  
रात्याकृमिशस्त्रदाहजः । कृमिजः शस्त्रजः दाहजः । अशोभगंदरादिरो-  
गदोषात् कृमिपातेनशस्त्रकर्मणावादाहेनवाक्रियमाणेनतस्यमृत्युर्भवति ॥ ९ ॥



अस्तेरवौसरुधिरेनिधनेर्कपुत्रेक्षीणेरसातलगतेहिमगौखगां-  
तः॥लग्न्यात्मजाष्टमतपःस्विनभौममंदचंद्रैस्तुशैलशिखराशनि-  
कुब्जपातैः ॥ १० ॥

अथान्यानपिमृत्युयोगान्वसंततिलकेनाह ॥ अस्तेरवाविति । अस्तेसप्तमे  
रवावादित्ये सरुधिरेभौमेनसंयुक्तेस्थितेऽर्कपुत्रेसौरेनिधनेऽष्टमेक्षीणेहिमगौचंद्र-  
सातलगतेचतुर्थस्थानस्थेजातः खगांतोभवति । खगः पक्षीतत्कृतोमृ-  
त्युर्भवति । तस्यमृतस्याग्निसंस्कारोभवतीत्यर्थः । लग्न्यात्मजाष्टमेति । इनः  
सूर्यः भौमः कुजः मंदः सौरः चंद्रः शशांकः एतैर्यथासंख्यम् । लग्न्यात्म-  
जाष्टमतपःसुस्थितैः लग्नपंचमाष्टमनवमस्थैः । तेनलग्नैर्कः पंचमेभौमः  
अष्टमेसौरः नवमेचंद्रोयस्यजन्मनिभवति तस्यशैलशिखरात् पर्वत-  
मस्तकात् पतितस्याशनिपातेनचोल्कयावज्जपातेनकुब्जपातेनभित्तिपातेन  
वामृत्युर्भवति ॥ १० ॥

द्वाविंशःकथितस्तुकारणंद्रेष्काणोनिधनस्यसूरिभिः ॥

तस्याधिपतिर्भवोपिवानिर्याणंस्वगुणैःप्रयच्छति ॥ ११ ॥

अथयस्यजन्मन्येतेषांयोगानां मध्यादन्यतमोयोगोनभवति । नचाष्टमेस्था-  
नेकश्चिद्ब्रह्मोभवति । नचाष्टमंस्थानंकश्चिद्ब्रह्मः पश्यति तन्मृत्युकारणंवैताली-  
येनाह ॥ द्वाविंशइति । येनद्रेष्काणेनपुमान्जातस्तस्माद्योद्वाविंशोद्रेष्काणो  
भवति । ससूरिभिः पंडितैः निधनस्यमृत्योः कारणंनिमित्तंकथितः । क-  
थमित्याह । तस्याधिपतिरित्यादि । तस्यद्वाविंशस्यद्रेष्काणस्ययोधिपतिर्ग्रह-  
स्तस्याग्न्यंवायुधजइत्यादिस्वगुणैर्योहेतुः पठितस्तेननिर्याणंमरणंप्रय-  
च्छतिददाति । अथवायस्मिन्राशौसद्वाविंशोद्रेष्काणोभवति तस्यराशेर्यः  
स्वामीतत्संभवोभवति सस्वगुणैरात्मीयहेतुभिः निर्याणंमरणंप्रयच्छति  
ददाति । सचद्वाविंशोद्रेष्काणोलग्न्यादष्टमराशौभवतिसकथंज्ञायते । उच्यते ।  
यदिलग्नस्यप्रथमोद्रेष्काणस्तदाष्टमस्यापिप्रथमोऽथलग्नस्यद्वितीयस्तदाऽष्टमस्या-  
पिद्वितीयोऽथलग्नस्यतृतीयस्तदाऽष्टमस्यापितृतीयः नकेवलंयावत्सर्वराशी-  
नामेषैवव्यवस्था । अनेनक्रमेणप्रकारेणयोऽष्टमराशेः द्रेष्काणः सएवद्वाविंशोद्रे-  
ष्काणइति । तत्रैतज्जातम् । यस्योक्तयोगानामन्यतमोयोगोनभवति । नचा-  
ष्टमंस्थानंग्रहयुतवीक्षितंतस्यद्वाविंशोद्रेष्काणाधिपाष्टमराश्यधिपयोर्योबलवांस्त-  
दुक्तदोषेणमृत्युरिति ॥ ११ ॥

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौयोगेक्षणादिभिरतः परिक-  
ल्प्यमेतत् ॥ मोहस्तुमृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः स्वेशेक्षि-  
तेद्विगुणितस्त्रिगुणःशुभैश्च ॥ १२ ॥

अथयादृग्भूमौप्रियतेतद्विज्ञानंवसंततिलकेनाह ॥ होरानवांशेति। पुरुषस्यज-  
न्मसमयेहोरायांलभेयोनवांशकोभवति तस्ययोधिपतिः ग्रहस्तेनयोजुक्तो  
राशिः सराशिर्यत्रस्थितइत्यर्थः । तस्यराशेर्यायोग्याभूमिस्तस्यांभूमौसमि-  
यते । तद्यथा । सचेद्राशिद्वयेभवति तदाअधिकसंचारभूमौ । सचेद्राशिः  
मेषोभवति तदाजाविकसंज्ञभूमौ । वृषभश्चेत्तदावृषभप्रचारभूमौ । मिथुनश्चे-  
त्तदागृहे । कर्कटश्चेत्तदाकूपे । सिंहश्चेत्तदाऽरण्ये । कन्याचेत्तदाकूपे । तुलाचे-  
त्तदापणगृहे । वृश्चिकश्चेत्तदाश्वश्रे । धन्वीचेत्तदाऽश्वप्रचारभूमौ । मकर-  
श्चेत्तदानूपे । कुंभश्चेत्तदागृहे । मीनश्चेत्तदानूपइति । येषांतुपुनर्मृ-  
त्युयोगेजलादौमरणमुक्तंतेषांतत्रैव । नकेवलंदर्शितराशिवशेनभूप्रदेशो  
वक्तव्यः । अपितु योगेक्षणादिभिरिति । सलग्ननवांशकाधिपति-  
र्यस्मिन्राशौव्यवस्थितः तत्रयद्यनेनग्रहेणतस्ययोगोभवति । तदातस्यच  
याभूमिः ईक्षणादिर्योवातस्यपश्यति । आदिग्रहणाद्यस्यनवांशकेस्थित-  
स्तस्यापियाभूमिरुक्तातस्यांसमिप्रियतइति । अत्रचबहुभूमिसंभवेग्रहबलाद्व-  
क्तव्या । ननुचग्रहस्यकाभूमिः । उच्यते । ग्रहस्यात्मीयराशेर्याभूमिः सैवे-  
ति । ननुयस्यराशिद्वयंतस्यकाभूमिरित्युच्यते । तत्रत्रिकोणराशेः संवं-  
धिनीभूमिः । तद्यथा । आदित्यस्यसिंहभूमिः अरण्यम् । चंद्रमसः कर्क-  
टभूमिरनूपम् । भौमस्यमेषभूमिरजाविकसंचारप्रदेशः । बुधस्यकन्याभूमिरनूपम् ।  
जीवस्यधनुर्भूमिरश्वप्रचारः । शुक्रस्यतुलाभूमिः विपणिः । शनैश्चरस्यकुंभभू-  
मिः गृहमिति । केचिदत्रदेवालायेअग्निविहारकोशशयनक्षित्युत्कराः  
स्युरित्यादिकंस्थानमिच्छंति । एतच्चशोभनम् । यतः एतेपुस्थानेषुप्रियमा-  
णादृश्यंतइति । एवमेतस्मादन्यत् परिकल्प्यंचित्यम् । मोहस्त्विति । याव-  
त्तोलग्रस्यनवांशकाअनुदिताः शेषास्तेषामंशानांसपीडितानांयावत्कालोभ-  
वति तत्तुल्यः तत्समोमृत्युसमयेमरणकालेकालोभवति । एतदुक्तंभव-  
ति । यावत्कालोलगादवशिष्टः पुरुषस्यजन्मविषयेभवति तावत्काल-  
मिति । सचेल्लग्रराशिः यदिस्वशेनस्वपतिनेक्षितोदृष्टस्तदासएवकालोद्वि-  
गुणोवक्तव्यः।अर्थादेवस्वामिनासौम्यग्रहेणचदृष्टस्तदाषड्गुणकालोवक्तव्यः ॥ १२ ॥

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशौषैर्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गै-



विडंबः ॥ इतिशवपरिणामश्चितनीयोयथोक्तः पृथुविरचित-  
शास्त्राद्गत्यनूकादिचित्यम् ॥ १३ ॥

अथमृतस्यशरीरपरिणामज्ञानंमालिन्याह ॥ दहनेति । निधनभवनेष्टमे  
स्थानेयोद्रेष्काणोव्यवस्थितः तद्वशाच्छवपरिणामश्चितनीयः । सचगण-  
नयाद्वाविंशोद्रेष्काणोभवति । सचयदिदहनद्रेष्काणोऽग्निद्रेष्काणो-  
भवति तदाभस्मत्वेनपरिणमत्यग्निनादह्यते । पापद्रेष्काणोऽग्निद्रे-  
ष्काणः । अथजलद्रेष्काणोभवति तदासंक्लिद्यते जलमध्येक्षिप्यते ।  
सौम्यग्रहद्रेष्काणोजलद्रेष्काणः । अथमिश्रद्रेष्काणोभवति तदा शुष्यति । नद-  
ह्यतेनचापिजलमध्येक्षिप्यते । सौम्यग्रहद्रेष्काणः पापयुक्तोभवति । पापग्रह-  
द्रेष्काणोवासौम्ययुक्तस्तदामिश्रद्रेष्काणः । तथानिधनभवनसंस्थैरष्टमराश्याश्रि-  
तैः व्यालवर्गैः सर्पद्रेष्काणैः विडंबितोभवति तदाश्वसृगालका-  
कादिभिर्भुज्यते । भक्ष्यतइत्यर्थः । अत्रव्यालद्रेष्काणाः कर्कटाद्यः कर्क-  
टद्वितीयः वृश्चिकाद्यः वृश्चिकद्वितीयः मीनांत्यश्च । उक्तंच । शशिगृ-  
हपूर्वापरगोकीटस्यचमीनपश्चिमोपगतः । निधनेयस्यभवंतिद्रेष्काणास्तस्य  
चमृतस्य । भुंजंतिवायसाद्याः प्राणिसमूहानचास्तिसंदेहः । पापग्रहद्रे-  
ष्काणोयस्याष्टमराशिसंस्थितोभवति । दहनंप्राप्नोतिनरोमृतमात्रोनिश्चया-  
त्प्रवदेत् । एवंसौम्यद्रेष्काणोजलमध्येक्षिप्यते नरोत्रमृतः । सौम्यद्रेष्काणः  
पापैः पापद्रेष्काणोपिसौम्ययुक्तः । यस्याष्टमभवनगतः शोषंप्राप्नोति सोऽ-  
पिमृतइति । एवंप्रकारः शवानांमृतानांपरिणामोविपत्तिश्चितनीयोविचार्यः  
पृथुविरचितशास्त्राद्विस्तीर्णाच्छास्त्राद्गत्यर्थकादिमरणादिचित्यम् । मृतस्यकाग-  
तिर्भविष्यति कस्माच्चलोकादयमागतः आदिग्रहणात्तत्रकीदृगासीदिति ।  
अनूकशब्देनेहातीतजन्मोच्यते ॥ १३ ॥

गुरुुरुडुपतिशुक्रौसूर्यभौमोयमज्ञौविबुधपितृतिरश्चोनारकी-  
यांश्चकुर्युः ॥ दिनकरशशिवीर्याधिष्ठिताऽयंशनाथात्प्रवरसम-  
निकृष्टास्तुंगद्वासादनूके ॥ १४ ॥

अथयोयंजातो जंतुः सकस्माल्लोकादागतइतियदुक्तंतद्विज्ञानंमालिन्याह ॥  
गुरुरिति । गुरुर्जीवः । उडुपतिशुक्रौ चंद्रसितौ । सूर्यभौमौ रविकु-  
जौ । यमज्ञौसौरबुधौ । एतेविबुधपितृतिरश्चोनारकीयांश्चजातान् कु-  
र्युः । विबुधलोकोदेवलोकः । पितृलोकः प्रसिद्धः । तिरश्चस्तिर्यग्लोकः । नरकः  
नरकलोकः प्रसिद्धः । एभ्यः आगतान् वदेत् । कथमितितदर्थमाह । दिनकर-

शशिवीर्याधिष्ठितात्र्यंशनाथादिति । दिनकरः सूर्यः शशीचंद्रः अनयोः दिन-  
करशशिनोः मध्याद्योबलीवीर्यवान् तेनाधिष्ठितोयुक्तोयस्यंशोद्रेष्काणः  
तस्ययोनाथः स्वामीतस्ययोलोकस्तस्मादागतइतिवक्तव्यम् । तत्रसयदिद्रेष्का-  
णोगुरोः जीवस्यसंबंधीभवति तदा विबुधलोकादागतइतिवक्तव्यम् । अथचंद्र-  
शुक्रयोरन्यतमसंबंधीभवति तदापितृलोकादागतइतिवक्तव्यम् । अथमूर्यभौ-  
मयोरन्यतमसंबंधीभवति तदा तिर्यग्लोकादागतइतिवक्तव्यम् । अथशनैश्चर-  
बुधयोरन्यतमसंबंधीभवति तदानरकलोकादागतइतिवक्तव्यम् । यस्माल्लोका-  
दागतस्तत्रापिश्रेष्ठमध्यमहीनत्वज्ञानमाह । प्रवरेत्यादि । यस्यग्रहस्यप्रदर्शित-  
लोकात्तस्यजन्मज्ञानमाह । ग्रहस्तुंगस्थः स्वोच्चराशिगतोभवति । तदातत्र  
प्रवरः प्रधानमासीदिति विज्ञेयम् । अथोच्चराशिच्युतोनीचमप्राप्य तदा  
तत्रासौमध्यममासीदिति विज्ञेयम् । नीचस्थः निकृष्टः हीनः एतदनूकेप्रा-  
ग्जन्मनिज्ञेयम् ॥ १४ ॥

गतिरपिरिपुरंध्रत्र्यंशपोऽस्तस्थितोवागुरुरथरिपुकेंद्रच्छिद्रगः  
त्वोच्चसंस्थः ॥ उदयति भवनेत्येसौम्यभागेचमोक्षोभवतियदि  
बलेनप्रोज्झितास्तत्रशेषाः ॥ १५ ॥

इतिवृहज्जातकेनैर्याणिकाऽध्यायः पंचविंशतिः समाप्तः ॥ २५ ॥

अथमृतस्यकागतिर्भविष्यति तद्विज्ञानंमालिन्याह । गतिरिति ॥ यस्य  
जन्मनिलग्रात्षष्ठसप्तमाष्टमस्थानानि शून्यानि भवन्ति तस्यतत्कालंरिपुस्थाने  
षष्ठेयोद्रेष्काणोयश्चरंध्रस्थानेऽष्टमेत्र्यंशोद्रेष्काणोवर्ततेतयोर्यावधिपतीतयोर्मध्ये  
योबलवांस्तस्ययोलोकोभिहितः सएवगतिः । एवं रिपुरंध्रत्र्यंशपइति । तत्रते-  
नमृतेनगंतव्यमिति । अस्तस्थितोवा । अथलग्रात्षष्ठसप्तमाष्टमस्थानानामन्य-  
तमेस्थानेकश्चिद्ब्रह्मोभवति तदातस्यदर्शितलोकेतेनगंतव्यम् । अथलग्रात्षष्ठस-  
प्तमाष्टमस्थानानां द्विस्थानेत्रीणिवासग्रहाणि भवन्ति । अथैकस्मिन्नपि द्वाद्योग्रहा  
भवन्ति तदातेषांग्रहाणांयोबलवांस्तस्ययः प्रदर्शितोलोकस्तेनगंतव्यमिति ।  
नन्वस्तस्थितोवेत्येकंस्थानमुक्ततत्रसप्तमग्रहणंकृतं तत्षष्ठाष्टमस्थोपिस्वांगतिं  
नयतीति किं व्याख्यातम् । उच्यते । अस्तस्थितोवेति वाशब्दश्चशब्दार्थेज्ञेयः ।  
नकेवलमस्तस्थितश्चकाराद्रिपुरंध्रगश्चेति केचिदस्तस्थितश्चेतिपठन्ति । तथा  
चस्वल्पजातकेउक्तम् । सुरपितृतिर्यङ्नारकान्गुरुडुपासितावमृगवीज्ञयमौ ।  
रिपुरंध्रत्र्यंशकपानयन्तिचास्तारिनिधनस्थाः । गुरुरथेति । अथशब्दः पादपू-  
रणार्थे । यस्यजन्मनिगुरुर्वृहस्पतिर्लगाद्रिपुस्थानेषष्ठेभवति । केंद्रेषुवा छिद्रेषु



मेवा सचस्वोच्चस्थः कर्कटेभवति तदैकोयोगः । अथवांत्येभवनेमीनराशाबु-  
दयतिविलग्नगतेतत्रचगुरुवज्यंशेषाग्रहा अन्येग्रहाबलेनवर्धेग प्रोज्झितावर्जिता  
भवंति तदाद्वितीयोयोगः । अस्मिन्योगद्वयेजातस्यमोक्षोभविष्यतीतिव  
क्तव्यम् । उदयतिभवनेंत्येसौम्यभागेचमोक्ष इंत्यत्रचकारोवाशब्दस्यार्थः । यथा  
पुरुषस्यजन्मकालप्रहवंशाद्गतिरुक्तातथामरणकाललघवशादापिगतिर्वक्तव्या ।  
यस्मात्स्वल्पजातकेउक्तम् । षष्ठाष्टमकंडकगोगुरुश्चेद्भवतिमीनलघेवा । शेषैःखगै-  
र्जन्मनिमरणेवामोक्षगतिमाहुरिति ॥ १५ ॥

इतिश्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौनैर्याणिकाऽध्यायःपंचविंशतिःसमाप्तः २५॥

### अथनष्टजातकाध्यायप्रारंभः ॥

आधानजन्मापरिवोधकालेसंपृच्छतो जन्मवदेद्विरुद्धात् ॥

पूर्वापरार्धेभवनस्यविंशद्भानाबुद्गदक्षिणगोप्रसूतिम् ॥ १ ॥

अथनष्टजातकाध्यायोव्याख्यायते । तत्रादावेवप्रसूतिकालज्ञानमिद्वज्जयाह ॥  
आधानेति । यस्याधानकालोज्ञायतेतस्याधानकालात् पूर्वमेवजन्मव्याख्यातं  
तत्कालमिदुसहितइत्यादिनाजन्मकालश्चव्याख्यातएव । एवमाधानजन्म-  
कालयोरपरिवोधेअज्ञानेसतिसंपृच्छतःप्रष्टुः विलग्नप्रभलग्नजन्मवदेदूयात् ।  
येनलघेनप्रष्टापृच्छति तस्ययदिपूर्वाद्धप्रथमहोराभवति तदाप्रष्टुः भा-  
नावादित्येउदयगतेउत्तरायणस्थेजन्मवक्तव्यम् । मकरादिराशिषड्स्थेजातइ-  
त्यर्थः । अथलग्नस्यापरार्धेद्वितीयाहोराभवति तदाभानौदक्षिणगतेदक्षिणाय-  
नस्थेजन्मवक्तव्यम् । कर्कटादिराशिषड्स्थेजातइत्यर्थः । तथाच आधान-  
जन्मनीयस्याविज्ञातेतस्यदेहिनः जन्मसंपृच्छतस्तस्यप्रभलग्नमादिनिर्दिशेत् ॥ १ ॥

लग्नत्रिकोणेषुगुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्यवर्षाणिवयोनुमानात् ॥

ग्रीष्मोर्कलग्नेकथितास्तुशेषैरन्यायनर्तावृत्तुरर्कचारात् ॥ २ ॥

अथवर्षर्तुज्ञानमुपजातिकयाह ॥ लग्नत्रिकोणेष्विति । त्रिभागैर्द्रेष्काणै-  
र्लग्नत्रिकोणेषुप्रथमपंचमनवमस्थानेषुगुरुर्जीवोज्ञेयः । तद्यथा । प्रभलग्नस्य  
यदिप्रथमद्रेष्काणोभवति तदायएवलग्नराशिस्तत्रस्थेगुरौ जन्मवक्तव्यम् ।  
अथलग्नस्यद्वितीयोद्रेष्काणस्तदालग्नद्यःपंचमोराशिस्तत्रस्थेगुरौजन्मवक्तव्यम् ।  
अथलग्नस्यतृतीयोद्रेष्काणस्तदालग्नद्योनवमोराशिस्तत्रस्थेगुरौजन्मवक्तव्यम् ।  
एवंकेषांचिन्मतम् । अथान्येषांमतं यथा । प्रभलग्नस्ययदाप्रथमोद्रेष्काणो-  
दयोभवति तदालग्नराशितोयावत्संख्येराशौबृहस्पतिस्तिष्ठति तावत्सं-

ख्यानिप्रष्टुर्वर्षाणिवक्तव्यानि । अथलमेद्वितीयोद्रेष्काणस्तदालभात्पंचम-  
राशितोयावत्संख्येराशौबृहस्पतिर्भवति तावत्संख्यानिप्रष्टुर्वर्षाणिवक्तव्यानि ।  
यदालग्नस्यतृतीयोद्रेष्काणोभवति तदालभान्नवमराशितोयावत्संख्येराशौबृ-  
हस्पतिर्भवति तावत्संख्यानिप्रष्टुर्वर्षाणिवक्तव्यानि । एतद्व्याख्यानंनशो-  
भनं पूर्वव्याख्यानमेवश्रेयः । यस्माद्यवनेश्वरः । द्रेष्काणलग्नक्रमतस्तु  
राशौगुरुर्विलभादित्रिकोणगोऽभूत् । समुद्रतेतद्भवनक्रमेणस्वाच्चारभाद्वदगति  
प्रगण्यात् । यद्यप्यत्रसामान्येनोक्तंबृहस्पतेरवस्थानम् । तथाचद्वादशभाग-  
क्रमेणप्रतिराशौसंचार्यः । तद्यथा । यदिप्रभलग्नस्यप्रथमद्वादशभागोदयोभवति  
तदालग्नस्थेजीवेजातः द्वितीयद्वादशभागश्चेत्तदालभाद्वितीयेगुरौजातः।एवं  
तृतीयादिद्वादशभागोदयेतृतीयादिपुस्थानेषु ऊह्यम् । विकल्प्यवर्षाणिवयोनु-  
मानोदेवंबृहस्पतेरवस्थानंज्ञात्वातस्यएववयोनुमानात्तस्याकृतिंशरीरमवेक्ष्यव-  
र्षाणिविकल्प्यवयःप्रमाणंबुद्धाद्वादशसु द्वादशसुवर्षेषुविकल्पनाकार्या।किमस्मि-  
न्नेवभगणपरिवर्तेज्ञातराशेः बृहस्पतेरवस्थानमभूदुतद्वितीयउततृतीयादिषु ।  
एवंतस्याकृतिमवेक्ष्यवयोनुमानंवक्तव्यम् । यत्रद्वादशसुवर्षेषुभ्रांतिर्भवति  
तत्रपुरुषलक्षणोक्तेनदशाविभागेनद्वादशवार्षिकींदशाक्षेत्रेषुपरिकल्प्ययत्तक्षेत्रां-  
गसंस्पर्शाद्वर्षज्ञानं।तथाचपुरुषलक्षणेपठ्यते ॥पादौसगुल्फौप्रथमंप्रदिष्टंजंघेद्विती-  
यंतुसजानुवक्त्रे । मेढोरुमुष्काश्चतस्तत्तृतीयंनार्भिकटिंचेतिचतुर्थमाहुः॥उदरंक-  
थयंतिपंचमंहृदयंषष्ठमथस्तनान्वितम्।अथसप्तममंशजन्तुणीकथयंत्यष्टममोष्ठकं-  
धरे । नवमंनयनेचसन्तुणीसललाटंदशमंशिरस्तथा । अशुभेष्वशुभंदशाफलं  
चरणाद्येषुशुभेषुशोभनमिति । किंत्वत्रविंशत्यधिकंवर्षशतंस्यजन्मनोऽतीतम् ।  
तस्यनष्टजातकवर्षज्ञानोपायएवनास्ति । एवंवर्षेषुज्ञातेपुऋतुज्ञानमाह । ग्रीष्मो-  
र्कलग्नइति । येनलग्नेनप्रष्टापृच्छति । तत्रचेदर्कःसूर्यः स्थितस्तद्रेष्काणोवालमे  
तदाग्रीष्मेजातइतिवक्तव्यम् । कथितास्तुशेषैरिति । शेषैरन्यैश्चद्वाददिभिर्ग्र-  
हैर्लग्नस्थैः ऋतुः पूर्वमेवकथितउक्तः द्रेष्काणैःशिशिरादयइत्यादिनाग्रंथेनोक्तः ।  
तत्रयदाशनैश्चरोलग्नेभवति तद्रेष्काणोवा तदाशिशिरेजातइतिवक्तव्यम् ।  
एवंशुकेलग्नगतेवा तद्रेष्काणोतदावसंतेजातः । एवंभौमेग्रीष्मे । एवमेवरवा-  
वपि । चंद्रेलग्नगतेतद्रेष्काणोवावर्षासु । बुधेशरदि जीवेहेमंतइति । यदाबह-  
वोलग्नगताः भवंतितदातेषांमध्येयोबलवान्तदुक्ततौजातइतिवक्तव्यम् ।  
अथनकश्चिद्यदिलग्नगतोभवति तदायस्यसंबंधीद्रेष्काणोदयोभवति तदा  
तदुक्ततौजातइत्येवंवक्तव्यम्।अन्यायनर्तावृत्तुरर्कचारादिति । अन्यस्मिन्नयनेव-  
न्यस्मिन्नृतावर्कचारादितुः अन्यस्मिन्नयनेतदयनासंभवश्चेद्वृत्तुरन्योभवति  
तद्वृत्तुरर्कचारावशनवक्तव्यम् । एतदुक्तंभवति । सौरेणमानेनऋतुर्वक्तव्यः । नतु



चांद्रेण । यथाशिशिरेज्ञातेमकरकुंभयोरन्यतमेराशौसूर्यस्यावस्थानंज्ञेयम् । एवंशेषराशिष्वप्युह्यम् । अनेनलौकिकश्चांद्रमासोनिराकृतोभवतीति ॥ २ ॥

चंद्रज्ञजीवाःपरिवर्तनीयाः शुक्रारमंदैरयनेविलोमे ॥

द्रेष्काणभागेप्रथमेतुपूर्वमासोनुपाताच्चतिथिर्विकल्प्यः ॥ ३ ॥

अथायनेविलोमेग्रहपरिज्ञानादृतुपरिज्ञानंमासपरिज्ञानंचंद्रवज्रयाह ॥ चंद्रज्ञेति । अयनेविलोमेसति । चंद्रज्ञजीवाः शुक्रारमंदैः परिवर्तनीयाः शशिवुधगुरवः सितभौमशनैश्चरैः अयनव्यत्ययेप्राप्तेसतिपरिवर्तनीयाः व्यत्ययेनव्यवस्थाप्याः । एतदुक्तंभवति । यद्युत्तरायणेप्रावृट्कालेज्ञातेतदावसंतेजातइतिवक्तव्यम् । चंद्रशुक्रेणात्रपरिवर्तितः । अथोत्तरायणेशरदिप्राप्तायांग्रीष्मेजातः । दक्षिणायनेग्रीष्मेज्ञातेशरदिजातः । अथबुधो रविभौमयोरपवर्तितौ रविभौमौबुधेनचउत्तरायणेहेमंतेज्ञातेशिशिरेजातः । दक्षिणायनेशिशिरेप्राप्तेहेमंतेजात इतिवक्तव्यम् । अत्रजीवमंदौपरस्परमपवर्तितौ । एवमृतौज्ञातेमासज्ञानमाह ॥ द्रेष्काणभागइति । प्रथममेयोद्रेष्काणोवर्ततेतस्यचद्रेष्काणस्ययदिप्रथमभागोवर्ततेतदाज्ञाततौप्रथमेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथलघ्नेद्रेष्काणस्यद्वितीयोभागोवर्तते तदाज्ञाततौद्वितीयमासिजातः । अत्रापिअर्कावस्थानतएवमासज्ञानम् । अथएवंमासंज्ञात्वातिथिज्ञानार्थमाह । अनुपाताच्चतिथिर्विकल्प्यः । अनुपाताच्चैराशिकात्तिथिर्विकल्प्योविकल्पनीयः । लग्नस्यषडल्लिप्ताशतानिद्रेष्काणः । द्रेष्काणेनऋतुज्ञानंतदर्धलिप्ताशतत्रयम् । लिप्ताशतत्रयेणमासज्ञानम् । अत्रानुपातात्तिथिलिप्तादशकेनैकैकोज्ञेयः । एपतिथिरादित्यभागः । एवमादित्यस्यराशयोभागाज्ञेयाः । मासाराशयस्तिथयोभागाः । यस्मिंश्चतिथौज्ञातवर्षेयथाप्रदर्शितादित्योभवतितस्मिन्तिथौतस्यजन्मइतिवक्तव्यम् ॥ ३ ॥

अत्रापिहोरापटवोद्विजेन्द्राः सूर्याशतुल्यांतिथिमुद्दिशंति ॥

रात्रिद्युसंज्ञेषुविलोमजन्मभागैश्चवेलाःक्रमशोविकल्प्याः ॥ ४ ॥

अथचंद्रमानतिथिज्ञानोपायमिदं वज्रयाह ॥ अत्रापीति । अत्रास्मिंस्तिथिज्ञानेद्विजेन्द्रामुनयोहोराशास्त्रज्ञाः सूर्याशतुल्यामंशस्थानेस्फुटार्कभागसमांतिथिमुद्दिशंतिकथयंति । प्रथमकालेतात्कालिकेनादित्येनयावंतोभागाभुक्तास्तावंतः शुक्लप्रतिपत्प्रभृतिज्ञातमासस्यतिथयोव्यतीताः । अत्रचांद्रमानेमकरमासेजातेमाघमासोज्ञेयः । एवमन्येष्वपिमासकल्पनाकार्या । तथाचमणित्यः । पृच्छाकालेरविणायावंतोशाःस्फुटेनसंभुक्ताः राशेस्तास्तिथयःस्युः शुक्लादावर्कमासस्य । एवंदिनेज्ञातेकिमयंरात्रौजातोदिवावेति । तदर्थमाह । रात्रि-

द्युसंज्ञोष्विति । रात्रिद्युसंज्ञाःपूर्वव्याख्याताः गोजाश्रिकर्कमिथुनाइत्यादि-  
ना । तत्रप्रश्नकालेयदिरात्रिसंज्ञोलभोभवति तदातस्यविलोमतादिवाजन्मव-  
क्तव्यम् । अथद्युसंज्ञोलभोभवतितदारात्रौजन्मवक्तव्यम् । एवंदिनरात्रिविभागे

मेषादिराशी-  
नांचषकाः  
मे२००मी.  
वृ.२४०कुं.  
मि.२८०म.  
क.३२०ध.  
सि.३६०वृ.  
क.४००तु.

ज्ञातेवेलाज्ञानमाह । भागैश्चवेलाःक्रमशोविकल्प्याः । यस्मि-  
न्दिनेपुरुषस्यजन्मज्ञानंतस्मिन्दिने आदित्योविज्ञातः । ततस्त-  
स्यपुरुषस्ययदिदिवाजन्मतदातस्मादादित्यादिनप्रमाणंकार्य-  
म् । अथरात्रौजन्मतदारात्रिप्रमाणम् । तत्रप्रश्नलग्नस्यतस्मि-  
न्कालयावंतश्चषकाभुक्तास्तैरनुपातःकार्यः । यदिपुरुषस्यदिवा  
जन्मतदादिनप्रमाणेन । यदारात्रौतदारात्रिप्रमाणेन । तात्का-  
ललग्नभुक्तचषकाणांगणनांकृत्वातस्यैवलग्नस्यस्वदेशराश्र्युदय

प्रमाणेनभागमपहृत्यावातांवेलां तावताकालेनगतेनदिनस्य-  
रात्रेर्वाजन्मवक्तव्यम् । एवंलग्नभागैः क्रमशःपरिपाठ्यावेला समयः विकल्प्या  
विकल्पनीया ॥ ४ ॥

केचिच्छशांकाध्युषितान्नवांशाच्छुक्लान्तसंज्ञंकथयन्तिमासम्॥

लग्नत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं संप्रोच्यते गालभनादिभिर्वा ॥ ५ ॥

अर्थातरेणमासज्ञानाभिद्वयञ्चयाह ॥ केचिदिति । केचिदाचार्याः । शशां-  
काध्युषिताच्चंद्रयुक्तान्नवांशाच्छुक्लान्तसंज्ञंमासंकथयन्ति । प्रश्नकालेयस्मिन्नवांश-  
केनवर्गमेशेचंद्रमाभवति तमपिनवांशकंत्रिधापरिकल्प्य तस्मिन्नवांशकेनवर्गमेशे  
चंद्रमाव्यवस्थितइति चंद्रनवांशकगतेनक्षत्रमन्वेप्यम् । तन्नक्षत्रशुक्लान्तसंज्ञकेम-  
सितस्यजन्मवक्तव्यम् । अत्रयस्यनक्षत्रस्यशुक्लान्तसंज्ञोमासोनास्ति तस्यवृहस्प-  
तिचारोक्तविधिनाशुक्लान्तसंज्ञोमासः परिकल्प्यः । तत्रोक्तम् । नक्षत्रेणसहोदय-  
मस्तंवायेनयातिसुरमन्त्री । तत्संज्ञं वक्तव्यं वर्षमासक्रमेणैव । वर्षाणिकार्तिकादी-  
न्याग्नेयाद्द्वयानियोज्यानि । क्रमशस्त्रिभंतुपंचममुपात्यमंत्यंचयद्वर्षमिति ।  
तत्रचंद्रमायदिवृषनवांशकेतन्नवांशकसप्तकस्यार्वाग्भवति तदाकार्तिकेमासि-  
जातइतिवक्तव्यम् । अथवृषनवांशकेतन्नवांशसप्तकस्योर्ध्वंभवति । मिथुननवांश  
केतन्नवांशकषट्कस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदामार्गशीर्षेमासिजातइतिवक्त-  
व्यम् । अथमिथुननवांशकेतन्नवांशकषट्कस्योर्ध्वं कर्कटनवांशकेतन्नवांशकपंचक-  
स्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदामार्गशीर्षेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथकर्कटतत्तन्न-  
वांशकपंचकस्योर्ध्वं सिंहनवांशकेतन्नवांशकचतुष्टयस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदा  
माघेमासिजन्मइतिवक्तव्यम् । अथसिंहनवांशकेतन्नवांशकचतुष्टयस्योर्ध्वं  
कन्यानवांशकेतन्नवांशकसप्तकस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदाफाल्गुनेमासि



जातइतिवक्तव्यम् । अथकन्यानवांशकसप्तकस्योर्ध्वतुलनवांशकेतन्नवांशक-  
 पङ्क्त्यार्याग्यदाचंद्रमाभवति तदाचैत्रेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथतु-  
 लानवांशकेतन्नवांशकपङ्क्त्योर्ध्ववृश्चिकनवांशकेतन्नवांशकपंचकस्यार्वाग्यदाचं-  
 द्रमाभवतितदावैशाखेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथवृश्चिकेतन्नवांशकपंचक-  
 स्योर्ध्वधनिनवांशकेतन्नवांशकचतुष्टयस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदाज्येष्ठेमा-  
 सिजातइत्यवगंतव्यम् । अथधनिनवांशकेतन्नवांशकचतुष्टयस्योर्ध्वमकरनवांश-  
 कत्रयस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदाआषाढेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथम-  
 करनवांशकेतन्नवांशकत्रयस्योर्ध्व कुंभनवांशकेतन्नवांशकद्वयस्यार्वाग्यदाचंद्रमा  
 भवतितदाश्रावणेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथकुंभनवांशकेतन्नवांशकद्वयस्यो-  
 र्ध्वमीननवांशेतन्नवांशपंचकस्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति तदाभाद्रपदेमासिजात  
 इतिवक्तव्यम् । अथमीननवांशकेतन्नवांशकपंचकस्योर्ध्वमेघनवांशेतन्नवांशाष्टक-  
 स्यार्वाग्यदाचंद्रमाभवति । तदाऽश्वयुजिमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथमेघनवांश-  
 केतन्नवांशाष्टकस्योर्ध्वयदिचंद्रमाभवतितदाकार्तिकेमासिजातइत्यवगंतव्यम् ।  
 यस्मिन्कृत्तिकारोहिणीचसकार्तिकः । मृगशिरार्द्राचमार्गशीर्षः । पुनर्वसुपुष्यश्च  
 पौषः । आश्लेषामघाचमाघः । पूर्वाफाल्गुन्युत्तराफाल्गुनीहस्तश्चफाल्गुनः ।  
 चित्रास्वातीचचैत्रः । विशाखानुराधाचवैशाखः । ज्येष्ठामूलेज्येष्ठः । पूर्वाषा-  
 ढोत्तराषाढश्चाषाढः । श्रवणधनिष्ठाचश्रावणः । शतभिषकपूर्वाभाद्रपदोत्तरा-  
 भाद्रपदाश्चभाद्रपदः । रेवत्यश्विनीभरण्याश्चाश्वयुजः । यस्मादुक्तम् । त्रिभंतुपं-  
 चममुपांत्यमंत्यंचयद्वर्षमिति । एवंशुक्लांतस्यमासस्यनिश्चयः । शुक्लांतग्रहणे-  
 नैतत्प्रतिपादयति । यत्तथा । शुक्लपक्षांतियेननक्षत्रेणयुक्तस्तदुपलक्षितो  
 मासोवक्तव्यः । यथा । कार्तिकशुक्लपक्षांतिकृत्तिकारोहिणीभ्यामन्यतमेनयच्चंद्र-  
 माभवति तेनकार्तिकोमासउच्यते । एवमन्येषामपियुज्यते । तदैतद्भवते ।  
 एतदुक्तंभवति । नशुक्लांतोमासइत्यतोमासःकृष्णांतएव । तथाचयवने-  
 श्वरः । मासेतुशुक्लप्रतिपत्प्रवृत्तेपूर्वेशशीमध्यवलौदशाहे । तथाच । यद्रा-  
 शिसंज्ञेशीतांशुः प्रश्नकालेनवांशके । स्थितस्तद्राशिगःपूर्णोयस्मिन्भवति  
 चंद्रमाः । जन्ममासः सनिर्दिष्टः पुरुषस्यतुपृच्छतः । कृष्णपक्षांतिकोमासो  
 ज्ञेयोत्रतुविपश्चिता । लग्नत्रिकोणेत्यादि । लग्नस्यप्रभलग्नस्यत्रिकोणयोश्चन  
 वमपंचमयोर्मध्याद्यस्तत्कालमुत्तमेनप्रधानवीर्येणवलेनयुक्तस्तद्ग्राशिः प्रोच्य-  
 ते कथ्यते । तस्मिन्राशौगतेचंद्रमसिजातइतिवक्तव्यम् । तथाचयवनेश्वरः ।  
 होरादिवीर्याधिकलग्नभाजिस्थानंत्रिकोणेशशिनोवधार्यम् । अंगालभनादिभि-  
 र्वा । कालांगानीत्यनेनप्रदर्शितोयः कालपुरुषस्यांगविभागस्तदालभ-  
 याद्वानेनविधिनास्पष्टःस्पृशतः यदेवकालपुरुषस्यांगंस्पृशतितत्स्थेचंद्रमसिजा-  
 तइतिवक्तव्यम् । आदिग्रहणात्प्राण्युक्तसत्त्वदर्शनश्रवणंगृह्यते ॥ ५ ॥

यावान्गतःशीतकरोविलग्राच्चंद्राद्वदेत्तावतिजन्मराशिः ॥

मीनोदयेमीनयुगंप्रदिष्टंभक्ष्याहृताकाररुतैश्चचिंत्यम् ॥ ६ ॥

अथप्रकारांतरेणजन्मेशराशिज्ञानमिद्वञ्चयाह ॥ यावानिति । विलग्रात्पृ-  
च्छालग्राच्छीतकरश्चंद्रोयावान्गतोयावतिराशौव्यवस्थितस्तस्माद्यस्तावतिरा-  
शिः । तत्रस्थेचंद्रमसिजातइतिवक्तव्यम् । मीनोदयेयदिमीनलग्नगतोभवति ।  
तदामीनयुगमेवप्रदिष्टमुक्तं । मीनस्थचंद्रमाइतिवक्तव्यम् । ननुदर्शितविधिनारा-  
शिरनेकप्रकारोयत्रप्राप्तोभिन्नरूपस्तत्रकोवक्तव्यइत्याशंक्याह । भक्ष्याहृताकाररु-  
तैरिति । यस्यराशेःसंबन्धिभक्ष्यद्रव्यंतस्मिन्कालेकृत्रिममानीयते तदाका-  
रश्चकश्चिदृश्यते । यथामार्जारादिदर्शनेसिंहोमहिषादिदर्शनेवृषइत्यादि । अथ-  
वाराशयुक्तरूपंपुरुषस्यदृष्ट्याथवारुतेनयस्यराशिसदृशप्राणिनोरुतंशब्दः क्रि-  
यतेतत्रस्थेचंद्रमसिजातइतिवक्तव्यम् ॥ ६ ॥

होरानवांशप्रतिमंविलग्नंलग्नाद्रविर्यावतिचट्टकाणे ॥

तस्माद्वदेत्तावतिवाविलग्नंप्रष्टुःप्रसूतावितिशास्त्रमाह ॥ ७ ॥

एवंजन्मराशौज्ञातेलग्नज्ञानमिद्वञ्चयाह ॥ होरेति । होरायांप्रभलभ्रेयस्यरा-  
शेर्नवांशकस्तत्कालंवर्ततेतत्प्रतिमंतमेवांशकराशितस्यजन्मलग्नंवक्तव्यम् । अथ-  
वालग्नाल्लभ्रेद्रेष्काणादारभ्यरविः सूर्योयावति यावत्संख्येद्रेष्काणेव्यवस्थि-  
तस्तस्माल्लग्नदारभ्यतावतिराशौलग्नगततस्यजन्मवक्तव्यम् । अत्रचद्वादशभ्यो-  
धिकेद्रेष्काणेद्वादशकमपास्यसंख्यानिर्देशः । चतुर्विंशतेरधिकेचतुर्विंशतिमपास्य  
शेषंवदेत् । एवंशास्त्रमाह शास्त्रंकथयति । नस्वमनीषिकयोक्तमिति । शास्त्रग्र-  
हणेनैतत्प्रतिपाद्यते । उक्तंच । पृच्छालग्ननवांशस्ययोराराशिः संज्ञयासमः । त-  
स्मिंलग्नगतेराशौवक्तव्यंजन्मपृच्छतः । यावत्संख्योगतोलग्नद्रेष्काणो  
दिनकृतततः । तावत्संख्येलग्नराशौप्रष्टुर्जन्मविनिर्दिशेत् ॥ ७ ॥

जन्मादिशेऽल्लग्नगेवीर्यगेवाद्यायांगुलग्नोर्कहतेवशिष्टम् ॥

आसीनसुप्तोत्थिततिष्ठताभंजायासुखाज्ञोदयगंप्रदिष्टम् ॥ ८ ॥

अथप्रकारांतरेणलग्नानयनमिद्वञ्चयाह । जन्मादिशेदिति । लग्नगेग्रहेज-  
न्मादिशेत् । प्रभलभ्रेयोग्रहोव्यवस्थितस्तंतात्कालिकंकृत्वालितापिंडीकार्यम् ।  
अथबह्वोलग्नगताभवन्ति तदातेषांयोबलवान् तंतात्कालिकंकृत्वालितापि-  
ंडीकार्यम् । ततःसलिलसमीकृतायामवनौद्वादशांगुलेनशंकुनातात्कालिकानि  
छायांगुलानिगृहीत्वा तैरंगुलैरेकैकग्रहंयद्दर्शितकालेलितापिंडीकृतंगुणयेत् ।



अथवासर्वग्रहेभ्योयोबलवानग्रहस्तंतात्कालिकंकृत्वा लितापिंडंकृत्वाछायांगु-  
लाहतंचार्कशुद्धंकारयेत् द्वादशभिर्विभजेत्तत्रयावत्संख्यमवशिष्टंतावत्सं-  
ख्योभेषादेरारभ्ययोराशिर्भवति । तस्मिन्राशौलग्नगतेतस्यजन्मवक्तव्यम् ।  
अथप्रकारांतरेणाह । आसीनेत्यादि । आसीनउपविष्टोयदाप्रष्टा  
पृच्छति । तदालभाद्यज्ञायास्थानंसप्तमराशिस्तस्मिँल्लग्नगतेतस्यजन्मव-  
क्तव्यम् । अथसुप्तः । सुप्तोत्रशयनपतितोविहितः । लब्धनिद्रस्यप्रश्ना-  
भावात् । तत्रपतितोयदापृच्छति । तदालभाद्यत्सुखस्थानंचतुर्थराशिस्तस्मिँ-  
ल्लग्नगतेतस्यजन्मवक्तव्यम् । अथोत्थितःपृच्छति । तदातस्माल्लभाद्य-  
दाज्ञास्थानंदशमोराशिस्तस्मिन्लग्नगतेतस्यजन्मवक्तव्यम् । अथशयनादासना  
चोत्थितः उत्तिष्ठतः पृच्छति । तदोदयलग्नराशौतस्मिन्नेवजन्मवक्तव्यम् ।  
उक्तंच । उत्तिष्ठतोविलभात्पृष्टः सुप्तस्यबंधुलभाच्च । उपविष्टस्यास्तमयेव-  
जतोमेषूरणस्थानादिति ॥ ८ ॥

गोसिंहौजितुमाष्टमौक्रियतुलेकन्यामृगौचक्रमात्संवर्ग्यादश-  
काष्टसप्तविषयैःशेषाःस्वसंख्यागुणाः ॥ जीवारास्फुजिदै-  
दवाः प्रथमवच्छेषाग्रहाः सौम्यवद्वाशीनानिनितोविधिर्ग्रहयुतैः  
कार्याचतद्वर्गणा ॥ ९ ॥

अथप्रकारांतरेणसर्वमेवनष्टजातकंवक्ति । ततः प्रश्नकालेतात्कालिकंल-  
भंकृत्वालितापिंडीकार्यम् । ततस्तस्यलितापिंडीकृतस्यगुणकारविज्ञानार्थंशा-  
र्दूलविक्रीडितेनाह ॥ गोसिंहाविति । गोसिंहादयोराशयोयथाक्रमंदशादि-  
भिर्गुणकारैः संवर्ग्यागुणनीयाः । तद्यथा । गोसिंहौवृषसिंहौदशभि १०  
गुणयेत् । वृषलग्नलितापिंडीकृतंदशभिर्गुणयेत् । एवंसिंहंदशभिरेव । जि-  
तुमाष्टमौमिथुनवृश्चिकौलग्नगतावष्टभि ८ गुणयेत् । क्रियतुलेमेषतुलेएतौ  
सप्तभि ७ गुणयेत् । कन्यामृगौकन्यामकरौएतौलग्नगतौविषयैः पंचभि ५ गुण-  
येत् । एवमेतेयथाक्रमंसंवर्ग्यागुणनीयाः । शेषाअनुक्ताराशयः स्वसंख्यागुणा  
आत्मीयसंख्ययागुणनीयाः । तत्रगणनयाकर्कटंचतुर्भिर्गुणयेत् । एवंधन्वीन-  
वभिः ९ कुंभमेकादशभिः ११ एवंमीनोद्वादशभिः १२ एवंप्रतावल्लभंस्व-

|   |    |    |   |    |   |    |    |   |   |     |    |
|---|----|----|---|----|---|----|----|---|---|-----|----|
| म | वृ | मि | क | सि | क | तु | वृ | ध | म | कुं | मी |
| ७ | १० | ८  | ४ | १० | ५ | ७  | ८  | ९ | ५ | ११  | १२ |

गुणकारेणावश्यमेवगुणयेत् ।  
दशकाष्टसप्तविषयैः । तत-

स्तत्रयदिग्रहोभवति तदाग्रहगुणकारेणावश्यमेवगुणयेत् । तत्रग्रहगुणकारवि-  
धिः । जीवारास्फुजिदैदवाः । प्रथमवद्दशकाष्टसप्तविषयैरिति । जीवेगुरौलग्नग-

तेतमेवलग्रंस्वगुणकारैराहतं दशभिर्गुणयेत् । आरेभौमेलग्रगते अष्टभिः आस्कु-  
जिच्छुक्रः तस्मिँल्लग्रगते सप्तभिः ऐंदवेनुधेपंचभिः शेषारविशशिसौरास्तेचसौ-  

|    |     |     |     |     |     |    |     |     |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|-----|
| र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
| ५  | ५   | ८   | ५   | १०  | ७   | ५  | ०   | ०   |

 म्यवत्। बुधवत्। पंचभिर्गुणनीया इत्यर्थः ।  
 एवं तात्कालिकं लग्नमवश्यं राशिगुणका-  
 रेण गुणयेत् । ततः सग्रहोक्तगुणकारैरपितत्रचयदाग्रहो भवति । तदाग्रहगुणकारेण  
 गुणयेत् । यदाग्रहवो ग्रहा भवन्ति तदा सवर्षांगुणकारैर्गुणयेत् । एवं च तद्गुणितमे-  
 कांतिस्थापयेत् ॥ ९ ॥

सप्ताहतं त्रिघनभाजितशेषमृक्षंदत्त्वाथवानवविशोधनवाथ-  
 वास्मात् ॥ एवं कलत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्यः प्रष्टुर्वदेदुदयरा-  
 शिवशेनतेषाम् ॥ १० ॥

अथ नक्षत्रानयनं वसंततिलकेनाह ॥ सप्ताहतमिति । सप्ताहतं सप्तभिर्गुणयेत् । दत्त्वा-  
 थवेति । ततस्तत्र नवदेयाः । शोध्यावानकिंचिद्वा । कथमित्युच्यते । यदि सचररा-  
 शिर्लग्नगतो भवति तदानवदेयाः । स्थिरेन देयानां पि शोध्याः । द्विस्वभावे विलग्ननेन व-  
 शोध्याः । एवं केचिद्व्याचक्षते । वयंपुनर्त्रूमः । यदि प्रभलग्रे प्रथमोद्रेष्काणो भवति ।  
 तदानवदेयाः । द्वितीयेन देयानां पि शोध्याः । तृतीयेन वशोध्याः । एवं कृत्वा  
 तस्य राशेश्चिधनेन सप्तविंशत्या भागमपहृत्या वासंत्याज्यम् । तत्र यावत्संख्योको व-  
 शेषो भवति । तावत्संख्यमश्विन्यादितोयन्नक्षत्रं तन्नक्षत्रं तस्य प्रष्टुर्वक्तव्यम् । केचिद्व-  
 दन्ति । यथास्थितस्य राशेः सप्तविंशत्या भागमपहृत्या वशेषां कनकदानेन वि-  
 शोधनेन वा यथास्थितेनां केन संवाद उत्पद्यते । तथानक्षत्रं वक्तव्यम् । एवमित्यादिक-  
 लत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्य इति । भार्याभर्तृपुत्ररिपु पुनष्टजातकं यदा पृच्छति तदा  
 तद्भेभ्यस्तद्वावेभ्यः । एवं प्रष्टुः पृच्छकस्य वदेद्भूयात् । तमेवोदयराशिपरिकल्पये-  
 दित्यर्थः । एतदुक्तं भवति । यदि पुरुषः स्वपत्न्या नक्षत्रं पृच्छति । तदा तात्कालिके लग्ने  
 राशिपट्टं देयम् । अथ भ्रातुः पृच्छति । तदाराशिद्वयं देयमथ पुत्रस्य पृच्छति तदाराशि-  
 चतुष्कं देयमथ शत्रोः पृच्छति तदाराशिपंचकं देयम् । एवं कृत्वा यद्भवति तदेवोदयरा-  
 शिप्रकल्प्य तद्गुणकारेण गुणयेत् । तत्स्य ग्रहगुणकारेण च ततस्तत्र प्राग्वन्नवकदानवि-  
 शोधने कृत्वा सप्तविंशत्या भागमपहृत्या वशेषां कसमं यस्य प्रष्टा पृच्छति तस्य नक्षत्र-  
 वक्तव्यम् । एतदप्युपलक्षणार्थमेव त्रिराशिसहितात्तात्कालिकाल्लग्नान्नित्रस्य व-  
 क्तव्यमेतन्नक्षत्रानयनमप्युपलक्षणमेवं सकलमपि नष्टजातकं वक्तव्यम् ॥ १० ॥

वर्षर्तुमासतिथयोद्युनिशंखुडूनिवेलोदयेर्क्षनवभागविकल्पनाः  
 स्युः ॥ भूयोदशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्तावर्षादयो नवक-  
 दानविशोधनाभ्याम् ॥ ११ ॥



अथवर्षाद्यानयनंवसंततिलकेनाह ॥ वर्षर्तुमासेति । वर्षादीनिसर्वाणि स्वविकल्पेनभागेहृतेयथापाठक्रमेणानयितव्यानि । तद्यथा । तात्कालिकं लग्नंलितापिंडीकृतंराशिगुणकारहतं ग्रहसंयुक्तंचेद्ब्रह्मगुणकाराहतमपियदेकांते स्थापितंतत्पुनरपिदशादिगुणकार्यम् । एतदुक्तंभवति । सराशिःस्थानचतुष्टयेधार्यः । एकत्रदशगुणोऽन्यत्रद्वितीयेऽष्टगुणोन्यत्रतृतीयेसप्तगुणःचतुर्थेपंचगुणः कार्यः । यतउक्तम् । भूयोदशादिगुणिताभूयः पुनरपिदशकाष्टसप्तविषयैर्गुणनीयाः । ततस्तस्मिन्राशिचतुष्टयेप्राग्वन्नवकदानविशोधनेकृत्वास्वविकल्पैर्भागमपहृत्यावाप्तंवर्षादयोज्ञेयाः ॥ ११ ॥

विज्ञेयादशकेष्वब्दाऋतुमासास्तथैवच ॥

अष्टकेष्वपिमासाद्धास्तिथयश्चतथास्मृताः ॥ १२ ॥

अथनज्ञायते कस्माद्राशेःकस्यानयनंकार्यंतदनुष्टुप्त्रयेणाह ॥ विज्ञेयादशकेष्वब्दाइति । अत्रबहुवचनंबहुधोपयोगित्वात्कृतम् । यदुक्तम् । स्वविकल्पभक्ताद्वर्षादयस्तद्व्याख्यायते । एतेचत्वारोराशयः स्थापितास्तैषानवकदानविशोधनंकृत्वाकर्मयोग्याः सर्वेभवंति । ततोदशगुणस्यपृथक्स्थस्यपरमायुषाविंशत्यधिकेनवर्षशतेनभागमपहृत्ययोकोवाशिष्यतेतदंकसमंतस्यवर्षसंख्यानंवर्तते । तस्यैवषड्भिर्भागमपहृत्यऋतुसंख्ययातत्रयोकोवाशिष्यते । तदंकसमेशिशिरादारभ्यतौजातइतिवक्तव्यम् । तस्यैवतुमाससंख्ययाद्वाभ्यांभागमपहृत्ययद्येकोवाशिष्यते तदाज्ञाततौप्रथमेमासिजातइतिवक्तव्यम् । अथशून्यमवशिष्यते । तदाद्वितीयेमासिजातः । एवंकृत्वादशगुणःकर्मयोग्योराशिरपास्यः । यस्यविंशत्यधिकाद्वर्षशतादप्यधिकंजन्मनोतीतम् तस्यनष्टजातकज्ञानोपायएवनास्ति । अष्टकेष्वित्यादि । योसावष्टहतोराशिस्तस्यपृथक्स्थस्यकर्मयोग्यस्यपक्षसंख्ययाद्वाभ्यांभागमपहृत्ययद्येकोवाशिष्यते तदाशुक्लपक्षेजातइतिवक्तव्यम् । नकिंचिदवशिष्यते तदाकृष्णपक्षेतस्यैवतिथिसंख्ययापंचदशभिर्भागमपहृत्य योकोवाशिष्यते तदंकसमानेतिथौजातइतिवक्तव्यम् । एवंकृत्वाष्टगुणःकर्मयोग्योराशिरपास्यः ॥ १२ ॥

दिवारात्रिप्रसूतिंचनक्षत्रानयनंतथा ॥

सप्तकेष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ १३ ॥

दिवेत्यादि।योसौसप्तहतोराशिस्तत्रप्राग्वदेवनवकदानविशोधनेकृत्वातत्कर्मयोग्यंराशिंस्थापयेत् । तस्यदिवारात्रिसंख्ययाद्वाभ्यांभागमपहृत्ययद्येकोवाशिष्यतेतदादिवसेजातोऽथनकिंचिदवशिष्यते तदारात्रौजातइतिवक्तव्यम् ।

योसौसप्तहोराशिस्तस्यनक्षत्रसंख्यया सप्तविंशत्याभागमपहत्ययोंकोवशि-  
ष्यतेतदंकसंख्येनक्षत्रेऽश्विन्यादितआरभ्यजातनक्षत्रमिति वक्तव्यम् । अस्यक-  
र्मणः पुनरभिधानंनक्षत्रानयनस्यबाहुल्योपयोगित्वात् ॥ १३ ॥

वेलामथविलग्रंचहोरांशकमेवच ॥

पंचकेषुविजानीयान्नष्टजातकसिद्धये ॥ १४ ॥

वेलेत्यादि । यस्मिन्दिनेपुरुषस्यजन्मज्ञानंताद्दिनप्रमाणंघटिकादिकंकर्तव्यम् ।  
रात्रौचेत्तदारात्रिप्रमाणम् । ततः पंचगुणस्यराशेस्तेनदिनप्रमाणेनरा-  
त्रिप्रमाणेनभागमपहत्ययोंकोवशिष्यते तस्मिन्कालेदिनगतेरात्रिगतेवातस्य  
जन्मवक्तव्यम् । अथविलग्रमित्यादि । अथशब्दः पादपूर-  
णार्थम् । कालेज्ञातेराश्यादिलग्रंकर्तव्यम् । ततस्तस्यहोराद्विष्काणनवांशद्वा-  
दशांशत्रिंशांशभागाः कर्तव्याः तात्कालिकाग्रहाश्चकर्तव्याः । ततोयथा-  
भिहितेनविधिनादशांतर्दशाष्टकवर्गादेरभिहितस्यफलस्यनिर्देशः कार्यः । एवं  
नष्टजातकंसाधयेत् ॥ १४ ॥

संस्कारनाममात्राद्विगुणाच्छायांगुलैःसमायुक्ता ॥

शेषंत्रिनवकभक्तान्नक्षत्रंतद्धनिष्ठादि ॥ १५ ॥

अथप्रकारांतरेणनक्षत्रानयनमार्ययाह ॥ संस्कारनामेति । संस्कारेणनाम  
संस्कारनामतस्यमात्राः संस्कारेणागतस्यनाम्नोमात्राः संस्कारनाममात्राः ।  
संस्कारग्रहणेनैतत्प्रतिपादितंभवति । संस्कारेणयत्पुरुषस्यनामकृतंतस्यमात्रा  
ग्राह्याः । नान्यस्यकस्यचित्कुनामादेः । मात्राश्चेहगृह्यन्ते हल्लार्द्धमात्रिकः ।  
अचमात्रिकः । इत्यनयास्थित्या ताःसंस्कारनाममात्राः संगृह्याद्विगुणी  
कार्याः । ततस्तात्कालिकानिशंकुच्छायांगुलानिगृहीत्वाताद्विगुणमात्रास्तैरंगुलैः  
संयुक्ताः कार्याः । एवंकृतेयद्भवतितस्यत्रिनवकेनसप्तविंशत्याभागमपहत्ययः  
शेषोभवतितदंकसमंतस्य धनिष्ठादितआरभ्यनक्षत्रंवक्तव्यम् ॥ १५ ॥

द्वित्रिचतुर्दशदशतिथिसप्तत्रिगुणानवाष्टचेंद्राद्याः ॥

पंचदशघ्रास्तादिङ्मुखान्विताभधनिष्ठादि ॥ १६ ॥

अथनक्षत्रानयनंप्रकारांतरेणार्ययाह ॥ द्वित्रिचतुर्दशेति । पूर्वाभिमुखोयदा  
प्रष्टापृच्छति तदाद्वयोरंकाः स्थाप्याः । अथाग्नेयाभिमुखस्तदात्रयाणाम् ।  
अथदक्षिणाभिमुखस्तदाचतुर्दशानाम् । अथनैऋत्यभिमुखस्तदादशानाम् ।  
अथपश्चिमाभिमुखस्तदातिथिसंख्यानांपंचदशानाम् । अथवायव्याभिमुखस्त-



दासप्तत्रिगुणाएकविंशतिः । उत्तराभिमुखस्तदानवानाम् । ऐशान्यभिमुखस्त-  
दाष्टानाम् । तद्यथा । एवंदिगभिमुखप्रवृत्तशेनांकंगृहीत्वाततः पंचदशगुणः  
कार्यः । ततस्तस्मिन्प्रदेशेयावतः पुरुषास्तदभिमुखाः स्थितास्तत्संख्या-  
न्वितोयुक्तःकार्यः । एवंकृतेयद्भवतितस्यसप्तविंशत्याभागमपहत्ययोकोवशिष्यते  
तदंकसमंतस्यधनिष्ठाधारभ्यनक्षत्रंवक्तव्यम् ॥ १६ ॥

इतिनष्टजातकमिदंवहुप्रकारंमयाविनिर्दिष्टम् ॥

ग्राह्यमतःसच्छिष्यैःपरीक्ष्ययत्नाद्यथाभवति ॥ १७ ॥

इतिनष्टजातकाध्यायः समाप्तः ॥ २६ ॥

अथनष्टजातकोपसंहारमार्ययाह ॥ इतिनष्टजातकमिति । इतिशब्दः  
उपसंहारे । मया वराहमिहिराचार्येणनष्टजातकंबहुप्रकारंबहुभेदंविनिर्दिष्टम्  
उक्तमिदम् । अतोस्माद्धेतोः सच्छिष्यैः शोभनसच्छात्रैः ग्राह्यम् । यत्नात्परी-  
क्ष्यविचार्ययथायेनप्रकारेणसंभवति सत्यरूपंतथाग्राह्यामिति । येनप्रकारे-  
णसंभवतितथाग्रहीतव्यमित्यर्थः । बहुभिरागमैर्मयाविचार्यपराशरवसिष्ठयवन-  
सत्यमणित्यादीनांमतानि आलोक्यकृतम् । तदेवभूयोनिर्मलगुणनिपुणबुद्ध्या  
विचार्य सम्यक्तयाकार्यं येनस्पष्टसिद्धोसौसंपद्यते ॥ १७ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौनष्टजातकाध्यायः षड्विंशतिःसमाप्तः २६

अथद्वेष्काणाध्यायप्रारंभः ॥

कट्यांसितवस्त्रवेष्टितःकृष्णःशक्तइवाभिरक्षितुम् ॥

रौद्रःपरशुंसमुद्यतंधत्तेरक्तविलोचनःपुमान् ॥ १ ॥

अथद्वेष्काणाध्यायोव्याख्यायते । तदादौमेषाद्यद्वेष्काणस्यस्वरूपज्ञानंवै-  
तालीयेनाह ॥ कट्यामिति । कट्यांजवनेसितंश्वेतंवस्त्रमंबरंवेष्टितंयेन ।  
कृष्णः असितवर्णः । शक्तइवअभिरक्षितुमाभिमुख्येन रक्षांकर्तुंशक्तः सम-  
र्थइव । रौद्रोभीषणः यः परशुंकुठारंसमुद्यतं धत्तेधारयति । रक्तविलोचनो  
लोहिताक्षः । सचपुमान्पुरुषःएषपुरुषद्वेष्काणः सायुधोभौमासक्तश्च ॥ १ ॥

रक्तांवराभूषणभक्ष्यचिंताकुंभाकृतिर्वाजिमुखीतृषार्त्ता ॥

एकेनपादेनचमेषमध्येद्वेष्काणरूपंयवनोपदिष्टम् ॥ २ ॥

अथमेषद्वितीयद्रेष्काणस्यस्वरूपमिदं वज्रयाह ॥ रक्तांवरेति । रक्तांवरालो-  
हितवस्त्रा । भूषणमलंकरणं । भक्ष्यं भोज्यं । तत्रचित्तं यस्याः । कुंभाकृतिः  
घटोदरी । वाजिमुखी अश्वदक्त्रा । तृषार्त्तापिपासार्त्ता । एकेनपादेनचरणेनो-  
पलक्षिता । इदं द्रेष्काणरूपं मेषमध्ये मेषद्वितीयं । यवनोपदिष्टं यवनाचार्यैः  
कथितम् । एषचतुष्पदद्रेष्काणः स्त्रीद्रेष्काणोऽर्कसक्तश्च । यस्मादाचार्यैश्चतुष्पा-  
न्मुखाच्चतुष्पदद्रेष्काण इति व्याख्यातस्तथाखगमुखोद्रेष्काणश्च ॥ २ ॥

क्रूरः कलाज्ञः कपिलः क्रियार्थी भग्नव्रतो भ्युद्यतदंडहस्तः ॥

रक्तानिवस्त्राणि विभर्ति चंडो मेषे तृतीयः कथितस्त्रिभागः ॥ ३ ॥

अथमेषतृतीयद्रेष्काणस्यस्वरूपमिदं वज्रयाह ॥ क्रूर इति । क्रूरो विषमस्वभा-  
वः । कलाज्ञः कलावित् । कपिलः पिंगलः । क्रियार्थी कर्मस्वभिलाषुकः । भग्न-  
व्रतः स्वालितनियमः । आभिमुख्येनोद्यतोदंडः हस्तेपाणौ यस्य । रक्तानि  
लोहितानिवस्त्राण्यंवराणि विभर्ति धारयति । चंडः क्रोधशीलः । अयं मेषतृती-  
यस्त्रिभागोद्रेष्काणः कथितउक्तः । एषनरद्रेष्काणः सायुधोजीवसक्तश्च ॥ ३ ॥

कुंचितलूनकचाघटदेहादग्धपटातृपिताशनचित्ता ॥

आभरणान्यभिवांछति नारीरूपमिदं वृषभे प्रथमस्य ॥ ४ ॥

अथवृषप्रथमद्रेष्काणजातस्यस्वरूपं दोधकेनाह ॥ कुंचितेति । कुंचिताः कुटिलाः  
लूनाः कचाः केशायस्याः कुटिलच्छिन्नकेशा । घटदेहा कुंभसदृशोदरी ।  
दग्धपटा दग्धवस्त्रा । तृपितापिपासार्त्ता । अशनेभोजने चित्तं यस्याः ।  
आभरणानि भूषणानि अभिवांछति । साचनारी स्त्री । इदं वृषभप्रथमस्य द्रेष्काण-  
स्यस्वरूपम् । एषः स्त्रीद्रेष्काणः सामिकः शुक्रसक्तश्च ॥ ४ ॥

क्षेत्रधान्यगृहधेनुकलाज्ञोलांगलेसशकटकुशलश्च ॥

स्कंधमुद्रहतिगोपतितुल्यं क्षुत्परोजवदनो मलवासाः ॥ ५ ॥

अथवृषद्वितीयद्रेष्काणस्यस्वरूपं स्वागतयाह ॥ क्षेत्रधान्येति । क्षेत्रं केदारः ।  
धान्यानि शालयः । गृहं वेश्म । धेनुः गौः । कलाः गीतवाद्यनृत्यलेखचित्रकर्मादि ।  
एतासां ज्ञः पंडितः । लांगलेहलेसशकटेशकटसहिते कुशलः शिक्षितः । गोपति-  
तुल्यं वृषभसदृशं स्कंधं कुदमुद्रहति धारयति । क्षुत्परः क्षुधयार्तः । अजव-  
दनः छागवक्त्रः । मलवासामलिनांबरः । एषनरद्रेष्काणः । चतुष्पादद्रे-  
ष्काणो बुधसक्तश्च ॥ ५ ॥



द्विपसमकायः पांडुरदंष्ट्रः शरभसमांघ्रिः पिंगलमूर्तिः ॥

अविमृगलोभव्याकुलचित्तोवृषभवनस्य प्रांतगतोयम् ॥ ६ ॥

अथ वृषतृतीयद्वेष्काणस्य स्वरूपं दोषकेनाह ॥ द्विपसमकाय इति । द्विपसमकायो महाशरीरो हस्ति तुल्यदेहः । नपुनः हस्तिशरीरः । पांडुरदंष्ट्रः श्वेतदंतः । शरभसमांघ्रिः बृहत्पादो नपुनः शरभसदृशपादः । पिंगलमूर्तिः कपिलदेहः । अविः प्रसिद्धः । मृग आरण्यपशुः । अविमृगलोभार्थं व्याकुलं चित्तं यस्य । अयं वृषभवनस्य वृषराशेः प्रांतगतस्तृतीयद्वेष्काणः । चतुष्पादः सौरसक्तश्च ॥ ६ ॥

सूच्याश्रयंसमभिवांछतिकर्मनारीरूपान्विताभरणकार्यकृता-  
दराच ॥ हीनप्रजोच्छ्रितभुजर्तुमतीत्रिभागमाद्यंतृतीयभवन-  
स्य वदंतितज्ज्ञाः ॥ ७ ॥

अथ मिथुनस्य प्रथमद्वेष्काणस्य स्वरूपज्ञानं वसंतातिलकेनाह ॥ सूच्याश्रयमिति । नारीस्त्री सूच्याश्रयं कर्मसीवनक्रियांसम्यगभिवांछति इति । रूपान्वितासुरूपा । आभरणकार्यं भूषणकर्मणि कृत आदरो अभिलाषः श्रद्धायया । हीनप्रजा अपत्यरहिता । उच्छ्रितभुजोर्ध्वबाहुकी । ऋतुमती सार्तवाकामार्त्तावा । तृतीयभवनस्य मिथुनस्याद्यं प्रथमं त्रिभागं द्वेष्काणं तज्ज्ञाः पंडिताः प्रवदंतिकथयंति । एषस्त्रीद्वेष्काणो बुधसक्तश्च ॥ ७ ॥

उद्यानसंस्थः कवचीधनुष्माञ्छूरोस्त्रधारी गरुडाननश्च ॥

क्रीडात्मजालंकरणार्थं चिंतां करोति मध्ये मिथुनस्य राशेः ॥ ८ ॥

अथ मिथुनद्वितीयद्वेष्काणस्य स्वरूपमुपजातिकयाह ॥ उद्यानसंस्थ इति । उद्यानसंस्थ उपवनेतिष्ठति । कवची सन्नाहप्रावृतशरीरः । धनुष्मान्चापहस्तः । शूरो रणाप्रियः । शरास्त्रधारी वापाठः । शराः कांडानितान्येवास्त्राणि तद्धारणे शीलं यस्येति । गरुडाननः पक्षिसदृशवक्त्रः । क्रीडनं क्रीडा । आत्मजापुत्राः । अलंकरणमाभरणम् । अर्थो वित्तम् । एषां संबंधिनीं चिंतां करोति । अयं मिथुनस्य राशेर्मध्ये द्वितीयद्वेष्काण इत्यर्थः । एष नरद्वेष्काणः सायुधः खगद्वेष्काणः शुक्रसक्तश्च ॥ ८ ॥

भूषितो वरुणवद्धुरत्नो वद्धतूणकवचः सधनुष्कः ॥

नृत्तवादितकलासुखविद्वान्काव्यकृन्मिथुनराश्यवसाने ॥ ९ ॥

अथमिथुनस्यतृतीयद्रेष्काणस्वरूपंस्वागतयाह ॥ भूषितइति । भूषितोऽलं-  
कृतः । वरुणवत्समुद्रवत् बहुरत्नः प्रभूतमणिः । तृणशराधानं क-  
वचंसन्नाहः एतौबद्धौग्रंथितौयेन । सधनुष्कः चापयुक्तः । नृत्तेवादि-  
तेवाद्यविषयेकलासुचनिःशेषासुविद्वांस्तज्ज्ञः । काव्यकृत्पंडितः । कवेः क-  
र्मकाव्यंतत्करोति । एषः मिथुनस्यराशेरवसानेतृतीयद्रेष्काणइत्यर्थः । एषः  
नरद्रेष्काणः सायुधः सौरसक्तश्च ॥ ९ ॥

पत्रमूलफलभृद्विपकायःकाननेमलयगःशरभांग्रिः ॥

क्रोडतुल्यवदनोहयकंठःकर्कटेप्रथमरूपमुशंति ॥ १० ॥

अथकर्कटपूर्वस्यस्वरूपंस्वागतयाह ॥ पत्रेति । पत्राणिमूलानिफलानिचबि-  
भर्ति धारयति । द्विपकायो हस्तिषट्शशरीरः । काननेवनेमलयगः म-  
लयश्चंदनवृक्षः तत्रोपगतः स्थितः । शरभांग्रिः शरभषट्शपादः ।  
क्रोडः सूकरस्तत्तुल्यवदनः तत्षट्शवक्त्रः । हयकंठोऽश्वग्रीवः । कर्कटेकर्कटरा-  
शौप्रथमद्रेष्काणस्यस्वरूपमुशंतिकथयंति । एषद्रेष्काणश्चतुष्पाच्चंद्रसक्तश्च ॥ १० ॥

पद्मार्चितामूर्द्धनिभोगियुक्तास्त्रीकर्कशारण्यगताविरौति ॥

शाखांपलाशस्यसमाश्रिताचमध्येस्थिताकर्कटकस्यराशेः ॥ ११ ॥

अथकर्कटद्वितीयद्रेष्काणस्यस्वरूपमिद्वज्रयाह पद्मार्चितेति । स्त्रीयो-  
षिन्मूर्धनिशिरसिपद्मैः कमलैरर्चितापूजिता । भोगियुक्ताससर्पा । कर्क-  
शाकठिनयौवनोपेता । अरण्यगता एकांतस्थिता । विरौति आक्रोशति ।  
पलाशवृक्षस्यशाखालतांसमाश्रितातत्रासक्तास्थिताकर्कटस्यराशेर्मध्येस्थिता-  
द्वितीयद्रेष्काणेसमवस्थिता । एषस्त्रीद्रेष्काणोव्यालद्रेष्काणोभौमसक्तश्च ॥ ११ ॥

भार्याभरणार्थमर्णवंनौस्थोगच्छतिसर्पवेष्टितः ॥

हैमैश्चयुतोविभूषणैश्चिपिटार्योत्यग्रतश्चकर्कटे ॥ १२ ॥

अथकर्कटस्यतृतीयद्रेष्काणस्यस्वरूपंवैतालीयेनाह ॥ भार्येति । भार्याजा-  
यातस्याआभरणार्थमलंकरणनिमित्तमर्णवंसमुद्रं । नौस्थोनावमारूढः । स-  
र्पवेष्टितांगोगच्छतियाति । हैमैः सुवर्णनिर्मितैः विभूषणैरलंकरणैर्युतः ।  
चिपिटार्यः चिपिटमुखः । कर्कटेत्यगतः तृतीयद्रेष्काणइत्यर्थः । एषनरद्रे-  
ष्काणोव्यालद्रेष्काणोजीवसक्तश्च ॥ १२ ॥

शाल्मलेरुपरिगृध्रजंबुकौश्वानरश्चमलिनावरान्वितः ॥

रौतिमातृपितृविप्रयोजितःसिंहरूपमिदमाद्यमुच्यते ॥ १३ ॥



अथसिंहपूर्वस्यद्रेष्काणस्यस्वरूपज्ञानंरथोद्धतयाह ॥ शाल्मलेरिति । शाल्म-  
लिवृक्षस्योपर्यग्रेगृध्रः पक्षी । जंभुकः सृगालः । एतौस्थितौ । तथा श्वासार-  
मेयः । नरोमनुष्यः । सचमलिनैः मलोपेतैरंबरैर्वस्त्रैरन्वितोयुक्तः । मा-  
तृपितृविप्रयोजितोजननीजनकविरहतोरौत्याक्रोशति । इदमाद्यंप्रथमंरूपंसि-  
हस्योच्यतेकथ्यते । सिंहप्रथमद्रेष्काणइत्यर्थः । एषनरद्रेष्काणश्चतुष्पदद्रेष्काणः  
खगद्रेष्काणोर्कसक्तश्च ॥ १३ ॥

हयाकृतिःपांडुरमाल्यशेखरोविभर्तिकृष्णाजिनकंबलंनरः ॥

दुरासदःसिंहइवात्तकार्मुकोनताग्रनासोमृगराजमध्यमः ॥ १४ ॥

अथसिंहद्वितीयस्यस्वरूपंवंशस्थेनाह ॥ हयाकृतिरिति । हयाकृतिः अ-  
श्वाकारः । पांडुरमीवच्छुक्लयुक्तं माल्यंपुष्पनिचयं शेखरोशिरसियस्य कृष्णा-  
जिनंकृष्णमृगचर्म कंबलमौर्णिकंबिभर्तिधारयति । केचित्कृष्णाजिनचीवर-  
मितिपठन्ति । चीवरंजीर्णवासः । नरोमनुष्यो दुरासदः दुर्ज्ञेयः दुःसाध्यः ।  
सिंहइवआत्तकार्मुकः गृहीतचापः । नताग्रनासः नताग्रानासायस्य मृग-  
राजस्यसिंहस्यमध्यभोद्वितीयोद्रेष्काणः हयाकृतिः । पुरुषएवायंनरचतुष्पद-  
द्रेष्काणः । सायुधोजीवसक्तश्च ॥ १४ ॥

ऋक्षाननोवानरतुल्यचेष्टोविभर्तिदंडफलमामिषंच ॥

कूर्चमिनुष्यःकुटिलैश्चकेशैर्मृगेश्वरस्यांत्यगतस्त्रिभागः ॥ १५ ॥

अथसिंहतृतीयस्यस्वरूपमुपजातिकयाह ॥ ऋक्षाननइति । ऋक्षःप्राणी ऋ-  
क्षाननः ऋक्षसदृशवक्त्रः । वानरतुल्यचेष्टः वानरेणकपिनातुल्यासदृशचे-  
ष्टास्वभावोयस्य । दंडमायुधं । फलमाम्रादि । आमिषंमांसंचविभर्तिधारयति ।  
कूर्चोदीर्घश्मश्रुः मनुष्यः पुरुषःकुटिलैःकेशैर्मूर्द्धजैर्युक्तः । मृगेश्वरस्यसिंहस्यांत्यग-  
स्त्रिभागः । एषनरद्रेष्काणः । चतुष्पदद्रेष्काणःसायुधोभौमसक्तश्च ॥ १५ ॥

पुष्पप्रपूर्णेनवटेनकन्यामलप्रदिग्धांबरसंवृतांगी ॥

वस्त्रार्थसंयोगमभीष्टमानागुरोःकुलंवाञ्छतिकन्यकाद्यः ॥ १६ ॥

अथकन्यापूर्वस्यस्वरूपमुपजातिकयाह ॥ पुष्पप्रपूर्णेनेति । कन्याकुमारी ।  
पुष्पप्रपूर्णेनकुसुमपरिपूरितेनकुंभेनउपलक्षितामलप्रदिग्धैरतिमलोपेतैःअंबरैर्व-  
स्त्रैःसंवृतांगीसंवृतावयवा वस्त्रार्थंवरानि । अर्थोधनम् । एषांसंयोगमभीष्ट-  
मानावाञ्छमानागुरोःकुलंव्रजतिगच्छति । कन्यकाद्यः प्रथमद्रेष्काणः ।  
एषस्त्रीद्रेष्काणो बुधसक्तश्च ॥ १६ ॥

पुरुषः प्रगृहीतलेखनिः श्यामो वस्त्राशिराव्ययायकृत् ॥

विपुलंचविभर्तिकामुर्करोमव्याप्ततनुश्चमध्यमः ॥ १७ ॥

अथ कन्याद्वितीयस्य स्वरूपं वैतालीयेनाह ॥ पुरुष इति । पुरुषो नरः प्रगृहीतलेखनिः येनाक्षराणि लिख्यंते स लेखनिः । श्यामो श्यामवर्णः । वस्त्राशिराः कर्पटसंयमितमूर्द्धा । केचिद्बद्धशिरा इति पठन्ति । संयमितशिराः । व्ययं व्ययकृत् । आयं प्रवेशं च करोति गणयति । विपुलं विस्तीर्णं कामुर्कं धनुर्विभर्ति धारयति । रोमव्याप्ततनुः रोमशरीरः । एष मध्यमो द्वितीयद्रेष्काणः । एष नरद्रेष्काणः सायुधः सौरसक्तश्च ॥ १७ ॥

गौरीसुधौताग्रदुकूलगुप्तासमुच्छ्रिताकुंभकटच्छुहस्ता ॥

देवालयं स्त्रीप्रयता प्रवृत्ता वदन्ति कन्यात्यगतस्त्रिभागः ॥ १८ ॥

अथ कन्या तृतीयस्य ज्ञानमुपजातिकयाह ॥ गौरी गौरवर्णा । सुधौतान्यग्राणि यस्मिन् दुकूले पटविशेषे तेन गुप्ताच्छादिता । केचित्तु दुकूलहस्ता इति पठन्ति । समुच्छ्रिता अत्युच्चाकुंभो घटः । कटच्छुर्दर्वी प्रसिद्धा गृहोपयोगिकं लोहभाण्डं तत्करे हस्ते यस्याः । देवालयं सुरगृहम् । स्त्रीयुवातिः । प्रयता समाहिता प्रवृत्ता गंतुमुद्यता वदन्ति कथयन्ति मुनयः । कन्यात्यगतस्त्रिभागः तृतीयद्रेष्काणः । एष स्त्रीद्रेष्काणः । शुक्रसक्तश्च ॥ १८ ॥

वीथ्यंतरापणगतः पुरुषस्तुलावानुन्मानमानकुशलः प्रतिमान-  
हस्तः ॥ भाण्डं विचिंतयति तस्य च मूल्यमेतद्रूपं वदन्ति यवनाः

प्रथमं तुलायाः ॥ १९ ॥

अथ तुलाद्यस्वरूपं वसंततिलकेनाह ॥ वीथ्यंतरेति । वीथ्यंतरे मार्गमध्ये यदापणप्रसारकः समवस्थितस्तत्र गतः पुरुषो नरस्तुलावान् तुलाहस्तः विद्यमानतुलः । उन्माने ऊर्ध्वमाने तुलादिके माने मानशब्देन कुडवादौ च तस्मिन्कुशलः तज्ज्ञः । प्रतिमानं येन द्रव्याणि सुवर्णरत्नादीनि परिच्छिद्यंते तच्च हस्ते यस्याः । भाण्डं कयद्रव्यं विचिंतयति ध्यायति तस्य भाण्डस्यैतन्मूल्यमिति तस्य च भाण्डस्य च मूल्यं विचिंतयति । एतद्यवनास्तुलायाः प्रथमद्रेष्काणस्य रूपं वदन्ति कथयन्ति । एष नरद्रेष्काणः शुक्रसक्तश्च ॥ १९ ॥

कलशं परिगृह्य विनिष्पतितुंसमभीप्सति गृध्रमुखः पुरुषः ॥

क्षुधितस्तृषितश्च कलत्रसुतान् मनसैति तुलाधरमध्यगतः ॥ २० ॥



अथतुलाद्वितीयस्यस्वरूपत्रोटकेनाह ॥ कलशमिति । गृध्रः पक्षी गृध्रमुखो गृध्राननः । कलशं कुम्भं गृहीत्वा विनिष्पतितुं निर्विशेषं पतितुमभीप्सति वाञ्छति । यतः क्षुधितो बुभुक्षितः तृषितः पिपासितोतः कलत्रं भार्या सुतान् पुत्रान् मनसा चित्तेनैति गच्छति । अभीप्सति अभिलषति स्मरतीत्यर्थः । इत्येवं प्रकारः तुलाधरमध्यगतः तुलाद्वितीयद्रेष्काणः । एष न रद्रेष्काणः खगद्रेष्काणः शनैश्चरसक्तश्च ॥ २० ॥

विभीषयं स्तिष्ठति रत्नचित्रितो वने मृगान्काञ्चनतूणवर्मभृत् ॥

फलामिषं वानररूपभृन्नरस्तुलावसानेयवनैरुदाहृतः ॥ २१ ॥

अथतुलातृतीयस्यस्वरूपवंशस्थेनाह ॥ विभीषयान्नि । रत्नचित्रितो माणिभिर्विभूषितः । वनेऽरण्ये मृगान्हरिणान्विभीषयन् भीषां कुर्वन्तिष्ठति । कीदृशः काञ्चनसौवर्णं तूणं शराधानं वर्मसन्नाहं ते च विभक्तिं धारयति । फलान्यामिषं च मांसं विभक्तिं नरो मनुष्यो वानररूपभृत् वानरस्य कपेरिव रूपं विभक्तिं धारयति । फलान्याम्रादीनि । केचिद्धनुर्द्धरः किन्नररूपभृन्नर इति पठन्ति । धनुर्द्धरः चापहस्तः । किन्नरो देवयोनि रश्च मुखः पुरुषः । तुलावसाने तुलायास्तृतीयद्रेष्काणे यवनैः पुराणयवनैरुदाहृतः कथितः । नरो मनुष्यो वानराकारोऽयं चतुष्पदद्रेष्काणो बुधसक्तश्च ॥ २१ ॥

वस्त्रैर्विहीनाभरणैश्च नारी महासमुद्रात्समुपैति कूलम् ॥

स्थानच्युता सर्पनिबद्धपादामनोरमा वृश्चिकराशिपूर्वः ॥ २२ ॥

अथवृश्चिकप्रथमस्यस्वरूपमुपजातिकयाह ॥ वस्त्रैरिति । स्त्री वस्त्रैरिवैस्तथाभरणैरलंकरणैश्च विहीना वर्जिता । महासमुद्रान् महासागरात् कूलं समुपेत्यागच्छति । स्थानच्युता स्वस्थानात् भ्रष्टा । सर्पनिबद्धपादा भुजगनियमितचरणा । मनोरमा चित्तानन्दविधायिनी चित्ताह्लादकरी । वृश्चिकराशेः । पूर्वः प्रथमद्रेष्काणः । एष स्त्रीद्रेष्काणो व्यालद्रेष्काणो भौमसक्तश्च ॥ २२ ॥

स्थानमुखान्यभिवाञ्छति नारी भर्तृकृते भुजगावृतदेहा ॥

कच्छपकुम्भसमानशरीरावृश्चिकमध्यमरूपमुशन्ति ॥ २३ ॥

अथवृश्चिकद्वितीयस्यस्वरूपदोधकेनाह ॥ स्थानेति । नारी स्त्री स्थानसुखान्यभिवाञ्छति । भर्तृकृते पतिनिमित्तं । भुजगावृतदेहा सर्पव्याप्तशरीरा । कच्छपः कूर्मः । कुम्भो घटः । तत्समानशरीरात् तुल्यदेहा । वृश्चिके मध्यमरूपं द्वितीयद्रेष्काणमुशन्ति कथयन्ति । एष स्त्रीद्रेष्काणो व्यालद्रेष्काणः जीवसक्तश्च ॥ २३ ॥

पृथुलचिपिटकूर्मनुल्यवक्रः श्वमृगवराहसृगालभीषकारी ॥

अवतिचमलयाकरप्रदेशंमृगपतिरन्त्यगतस्यवृश्चिकस्य ॥२४॥

अथवृश्चिकतृतीयस्वरूपज्ञानं पुष्पिताग्रयाह ॥ पृथुलचिपिटमिति । पृथुलं विस्तीर्णचिपिटं चर्पटं कूर्मनुल्यं कच्छपसदृशं वक्रं मुखं यस्य । आसारमेयः । मृगो हरिणः । सृगालः क्रोष्टा । वराहः सूकरः । एषां भीषकारी भयकारी । मलयस्य चंदनस्याकरस्य प्रदेशमुत्पत्तिस्थानमवतिरक्षति । सचमृगपतिः सिंहः । अन्त्यगतो वृश्चिकस्य तृतीयद्रेष्काणः । एष कूर्माननः सिंहद्रेष्काणः । चतुष्पदद्रेष्काणः चंद्रसक्तश्च ॥ २४ ॥

मनुष्यवक्रोऽश्वसमानकायो धनुर्विगृह्यायतमाश्रमस्थः ॥

ऋतूपयोज्यानि तपस्विनश्चररक्षआद्योधनुषस्त्रिभागः ॥ २५ ॥

अथ धन्वि पूर्वस्य स्वरूपज्ञानमिदं वक्ष्याह ॥ मनुष्यवक्र इति । मनुष्यवक्रो नरवदनः । अश्वसमानकायः तुरगसदृशदेहः । आयतं दीर्घं धनुश्चापं गृहीत्वा आश्रमस्थः तत्राश्रमे तिष्ठति । ऋतूपयोज्यानि यज्ञोपकरणादीनियज्ञभांडानि स्त्रुक्स्त्रुवादीनि तपस्विनः तापसान् ररक्षरक्षितवान् । आद्यः । प्रथमोधनुषस्त्रिभागो धन्विद्रेष्काणः । केचिच्चररक्षपूर्व इति पठन्ति । धनुषः पूर्वस्त्रिभागः प्रथमद्रेष्काणः । एषोऽश्वसमानकायः नरद्रेष्काणः । चतुष्पात्सागुधद्रेष्काणः जीवसक्तश्च ॥ २५ ॥

मनोरमाचंपकहेमवर्णा भद्रासने तिष्ठति मध्यरूपा ॥

समुद्ररत्नानि विघट्टयंती मध्यत्रिभागो धनुषः प्रदिष्टः ॥ २६ ॥

अथ धन्वि द्वितीयस्य स्वरूपज्ञानमुपजातिकयाह ॥ मनोरमेति । मनोरमा चित्ताह्लादकारिणी । चंपकं पुष्पविशेषः हेमसुवर्णं तत्सदृशवर्णं तत्समकांतिः । भद्रासने आसनविशेषे तिष्ठति तत्र उपविष्टा । मध्यमरूपा नचातिशोभना नाप्यत्यशोभना । समुद्ररत्नानि सागरमणीन् । विघट्टयंती स्त्रीतिष्ठति । धनुषो मध्यत्रिभागो द्वितीयद्रेष्काणो मुनिभिः प्रदिष्ट उक्तः । एष स्त्रीद्रेष्काणो भौमसक्तश्च ॥ २६ ॥

कूर्चीनरो हाटकचंपकाभो वरासने दंडधरो निषण्णः ॥

कौशेयकान्युद्रहतोजिनं च तृतीयरूपं नवमस्य राज्ञे ॥ २७ ॥

अथ धन्वि तृतीयस्य स्वरूपमुपजातिकयाह ॥ कूर्चीनर इति । नरो मनुष्यः कू-



चीर्दीर्घश्मश्रुः हाटकंसुवर्णं चंपकः पुष्पविशेषः । तदाभोतत्सदृशकांतिः । तत्समानद्युतिः । वरासनेप्रधानासनेनिषण्णः उपाविष्टः । दंडधरोदंड-हस्तः । कौशेयकानिपट्टविशेषाणि उद्धहतेधारयति । अजिनमृगचर्म नवमस्यराशेर्धनुषः तृतीयद्रेष्काणस्यस्वरूपं एषनरद्रेष्काणः सायुधः अर्कसक्तश्च ॥ २७ ॥

रोमचितोमकरोपमदंष्ट्रः सूकरकायसमानशरीरः ॥

योक्त्रकजालकबंधनधारीरौद्रमुखोमकरप्रथमस्तु ॥ २८ ॥

अथमकरप्रथमस्यस्वरूपंदोधकेनाह ॥ रोमेति । रोमचितोरोमशः मकरोपमदंष्ट्रः मकरतुल्यदंष्ट्रः । मकरोजलचरप्राणी । सूकरस्यवराहस्य कायोदेहः तत्समानशरीरः तत्तुल्यतनुः । योक्त्रकं येन वलीवर्दायोज्यते । जालकः प्रसिद्धः येन पक्षिणो बध्यते । बंधनं निगडादि । एतानि धारयति । तच्छीलः । रौद्रमुखो वक्रिताननः । मकरप्रथमः प्रथमद्रेष्काणः । एष पुरुषद्रेष्काणः । बंधनधारित्वात्सनिगडः । सूकरसमानशरीरः नमूकरः तस्मान्नचतुष्पात् । शनैश्चरसक्तश्च ॥ २८ ॥

कलास्वभिज्ञाब्जदलायताक्षीश्यामाविचित्राणिचमार्गमाणा ॥

विभूषणालंकृतलोहकर्णयोषाप्रदिष्टामकरस्यमध्ये ॥ २९ ॥

अथमकरद्वितीयस्यस्वरूपमुपजातिकयाह ॥ कलास्वभिज्ञाब्जदलायताक्षीति । कलास्वभिज्ञा आभिमुख्येन जानाति । अब्जदलायताक्षी । अब्जदलं पद्मपत्रंतद्वदायते दीर्घे अक्षिणीयस्याः सा दीर्घेनेत्राचश्यामाश्यामवर्णा विचित्राणि नाना प्रकाराणि वस्तूनि च मार्गमाणा अभीप्समाना विभूषणैरलंकरणैरलंकृता । लोहकर्णालोहयुक्तश्रोत्रा । लोहाभरणकर्णयोर्यस्याः सा । योषा स्त्री मकरस्य मध्ये द्वितीये द्रेष्काणे प्रदिष्टा उक्ता । एषः स्त्रीद्रेष्काणः । शुक्रसक्तश्च ॥ २९ ॥

किन्नरोपमतनुः सकंबलस्तूणचापकवचैः समन्वितः ॥

कुंभमुद्धहतिरत्नचित्रितंस्कंधगंमकरराशिपश्चिमः ॥ ३० ॥

अथमकरतृतीयस्यस्वरूपं रथोद्धतयाह ॥ किन्नरोपमेति । किन्नरोपमतनुः किन्नरादेव योनयः अश्वमुखाः पुरुषास्तत्सदृशीतनुः । सकंबलः कंबलेन सहितः । तूणशराधारंचापंधनुः कवचं सन्नाहः एतैस्तूणचापकवचैः शराधारधनुः सन्नाहैः । समन्वितो युक्तः । कुंभं घटं रत्नविचि-

त्रितंमणिविरचितंस्कंधगमंसासक्तमुद्रहति धारयति । मकरराशेः पश्चिमस्तृती-  
यद्रेष्काणः । एषपुरुषद्रेष्काणः सायुधः बुधसक्तश्च ॥ ३० ॥

स्नेहमद्यजलभोजनागमव्याकुलीकृतमनाःसकंबलः ॥

कोशकारवसनोजिनान्वितोगृध्रतुल्यवदनोघटादिगः ॥ ३१ ॥

अथकुंभप्रथमद्रेष्काणस्यस्वरूपंदोधकेनाह ॥ स्नेहमद्यजलभोजनेति ।  
स्नेहस्तैलादि । मद्यंपानविशेषः । जलमुदकं । भोजनमशनम् । एतेषांयआ-  
गमः तेनव्याकुलितंमनः चित्तंयस्य । सकंबलः कंबलसहितः । कोषकारव-  
सनः पट्टवासाः । अजिनान्वितः कृष्णमृगचर्मयुक्तः । गृध्रःपक्षी तत्तुल्य-  
वदनः तत्समवक्रः । घटादिगः कुंभप्रथमद्रेष्काणः । एषनरद्रेष्काणः खगश्च  
सौरसक्तश्च ॥ ३१ ॥

दग्धेशकटेशशाल्मलेलोहान्याहरतेंगनावने ॥

मलिनेनपटेनसंवृताभांडैर्मूर्ध्निगतैश्चमध्यमः ॥ ३२ ॥

अथकुंभद्वितीयस्वरूपंवैतालीयेनाह ॥ दग्धेशकटेइति । शकटेगंव्यांद-  
ग्धे अभिनाभस्मीकृते । शशाल्मलेशाल्मलवृक्षैः सहिते । अंगनास्त्रीलोहा-  
न्याहरतेगृह्णाति । वनेअरण्येमलिनेनपटेनसमलेनवाससासंवृताप्रावृताभां-  
डैः भांडप्रकारैः मूर्ध्निगतैः मस्तकारोपितैः उपलक्षिता । के-  
चिद्भांडैरारोपितैः परिपूर्णइतिपठंति । मध्यमोद्वितीयद्रेष्काणः । एषस्त्रीद्रे-  
ष्काणः साभिकोबुधसक्तश्च ॥ ३२ ॥

श्यामःसरोमश्रवणःकिरीटीत्वक्पत्रनिर्यासफलैर्विभर्ति ॥ ॥

भांडानिलोहव्यतिमिश्रितानिसंचारयंत्यंतगतोघटस्य ॥ ३३ ॥

अथकुंभतृतीयस्यस्वरूपज्ञानमिद्वचन्याह ॥ श्यामइति । श्यामःश्याम-  
वर्णः । सरोमश्रवणः लोमशकर्णः । किरीटीमौलियुक्तः । त्वक्चर्मपत्रपर्णं । निर्यासो  
वृक्षनिर्यासः यथागुग्गुलुः स्नेहः । फलंचसुप्रसिद्धमेवाम्नादि । एतैःसहभां-  
डानिलोहव्यतिमिश्रितानि लोहसंयुक्तानिविभर्तिधारयति । तानिचसं-  
चारयति स्थानात् स्थानांतरंनयति । घटस्यकुंभस्यांतगतः । तृती-  
यद्रेष्काणः । एषनरद्रेष्काणःशुकसक्तश्च ॥ ३३ ॥

सुगभांडमुक्तामणिशंखमिश्रैर्व्याक्षिप्तहस्तःसविभूषणश्च ॥

भार्याविभूषार्थमपांनिधाननावाप्लवत्यादिगतोझषस्य ॥ ३४ ॥



अथमीनाद्यस्यस्वरूपमिदमवज्रयाह ॥ सुगुभांडेति । सुगुभांडानि य-  
ज्ञोपकरणभांडानि । मुक्तामौक्तिकं । मणयःप्रसिद्धाः । शंखःप्रसिद्धएव । एतै-  
र्मिश्रैरेकीकृतैः । व्याक्षिप्तोहस्तोयस्य आकुलकरः । सविभूषणःसाभरणः । भा-  
र्याजाया तद्विभूषार्थमलंकरणार्थमपांनिधानंसमुद्रंनावाल्लवाति । नौस्थोग-  
च्छति । केचिन्महार्णवंचनावाल्लवतीतिपठन्ति । झषस्यमीनस्यादिगतःप्रथम-  
द्रेष्काणः । एषनरद्रेष्काणोजीवसक्तश्च ॥ ३४ ॥

अत्युच्छ्रितध्वजपताकमुपैतिपोतंकूलंप्रयातिजलधेःपरिवा-  
रयुक्ता ॥ वर्णेनचंपकमुखाप्रमदात्रिभागोमीनस्यचैषकथि-  
तोमुनिभिर्द्वितीयः ॥ ३५ ॥

अथमीनद्वितीयस्यस्वरूपज्ञानंवसंततिलकेनाह ॥ अत्युच्छ्रितेति । अत्यु-  
च्छ्रिता अतीवोच्चध्वजाः पताकायस्मिन्पोतेतमुपैति आरोहति । जल-  
धेःसमुद्रस्यकूलंतटंप्रयाति । प्रमदास्त्रीकीदृशी परिवारयुक्तासखीजनेनावृता ।  
चंपकंपुष्पविशेषः पंचककांतिः । मुखवर्णेनचंपककांतिमुष्णातीत्यर्थः ।  
एषमीनस्यद्वितीयत्रिभागोमुनिभिर्गदितउक्तः। एषस्त्रीद्रेष्काणश्चंद्रसक्तश्च ॥ ३५ ॥

श्वभ्रांतिकेसर्पनिवेष्टितांगोवस्त्रैर्विहीनःपुरुषस्त्वटव्याम् ॥

चौरानलव्याकुलितांतरात्माविक्रोशतेत्योपगतोझषस्य ॥ ३६ ॥

इतिबृहज्जातकेद्रेष्काणस्वरूपाऽध्यायःसमाप्तः ॥ २७ ॥

अथमीनस्यतृतीयद्रेष्काणस्वरूपज्ञानमिदमवज्रयाह ॥ श्वभ्रांतिकेति । श्वभ्रां-  
तिके गर्तसमीपे । सर्पनिवेष्टितांगोभुजगावृतावयवः । वस्त्रैरंबरैर्विहीनोर-  
हितः पुरुषोनरः । अटव्यामरण्येचौरैस्तस्करैः अनलेनाग्निनाव्याकुलितः  
क्षुभितोंतरात्मायस्य । विक्रोशतेरोदिति । झषस्यमीनस्यांत्योपगतः तृ-  
तीयद्रेष्काणः एषव्यालद्रेष्काणोभौमसक्तश्च । द्रेष्काणस्वरूपस्यप्रयोजनंप्रदेशेषु  
व्याख्यातम् । तथाचयात्रायांवक्ष्यति । द्रेष्काणाकारचेषांगुणसदृशफलंयो-  
जयेद्द्विहेतोर्द्रेष्काणेसौम्यरूपेकुसुमफलयुतेरत्नभांडान्वितेच । सौम्यैर्दृष्टेजयः  
स्यात्प्रहरणसदृशेषापदृष्टेचभंगःसंमोहोवाथबंधःसभुजगनिगडेपापयुक्तेपिपा-  
सुरिति । अन्यच्चास्यप्रयोजनं चौररूपस्थानादिज्ञानम् । उक्तंचषट्  
पंचाशिकायां पृथुयशसा । अंशकाज्ज्ञायतेद्व्यंद्रेष्काणैस्तस्कराःस्मृताः ।  
राशिभ्यःकालदिग्देशावयोज्ञातिश्चलमपात् ॥ एवंवृत्तानि ॥ ३६ ॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकेद्रेष्काणाध्यायः ॥ २७ ॥

अथातउपसंहाराध्यायोव्याख्यायते ॥ राशिप्रभेदोग्रहयोनि-  
भेदोवियोनिजन्माथनिषेककालः ॥ जन्माथसद्योमरणंतथायु-  
र्दशाविपाकोष्टकवर्गसंज्ञः ॥ १ ॥

अथातउपसंहाराध्यायोव्याख्यायते । अथाध्यायसंग्रहमुपजातिकयाह ॥  
राशिप्रभेदइति । राशिप्रभेदः प्रथमोऽध्यायः । ग्रहयोनिभेदोद्वितीयः २ वियो-  
निजन्मातृतीयः ३ अथशब्दानंतये । निषेककालश्चतुर्थः ४ जन्मविधिः पं-  
चमः ५ अथसद्योमरणमरिष्टाऽध्यायः षष्ठः ६ आयुर्विभागःसप्तमः ७  
दशाविभागोष्टमः ८ अष्टकवर्गसंज्ञोनवमः ९ ॥ १ ॥

कर्माजीवोराजयोगाःखयोगाश्चांद्रायोगाद्विग्रहाद्याश्चयोगाः ॥  
प्रब्रज्याथोराशिशीलानिदृष्टिर्भावस्तस्मादाश्रयोथप्रकीर्णः ॥२॥

अथशेषाध्यायसंग्रहंशालिन्याह ॥ कर्माजीवइति । कर्माजीवोदशमः १०  
राजयोगाऽध्यायएकादशः ११ खयोगाः नाभसयोगाध्यायोद्वादशः १२  
चांद्रयोगाः सुनफाद्याश्चंद्रयोगाध्यायस्त्रयोदशः १३ द्विग्रहत्रिग्रहयोगाध्याय-  
श्चतुर्दशः १४ प्रब्रज्यायोगाध्यायःपंचदशः १५ अथोनंतरंराशिशिला-  
ध्यायः षोडशः १६ दृष्टिफलाध्यायः सप्तदशः १७ तस्मात्परोभावा-  
ध्यायोष्टादशः १८ अथातःपरमाश्रयाध्यायएकोनविंशतितमः १९ प्रकीर्णा-  
ध्यायोविंशतिः २० ॥ २ ॥

नेष्टायोगाजातकंकामिनीनानिर्याणस्यान्नष्टजन्मदृकाणः ॥  
अध्यायानांविंशतिःपंचयुक्ताजन्मन्येतद्यात्रिकंचाभिधास्ये॥३॥

अथशेषाध्यायसंग्रहंशालिन्याह ॥ नेष्टायोगाइति । अनिष्टयोगाऽध्याय  
एकविंशतिः २१ कामिनीनांस्त्रीणांजातकाध्यायोद्वाविंशतिः २२ निर्याणमर-  
णज्ञानाध्यायस्त्रयोविंशतिः २३ नष्टजातकाऽध्यायश्चतुर्विंशतिः २४ द्रेष्काण-  
स्वरूपाध्यायः पंचविंशतिः २५ एवंपंचयुक्ताध्यायानांविंशतिः । जन्मनिजा-  
तकेउक्ताकथितोक्ताएतज्जातके ॥ ३ ॥

१ एतेन षोडशाध्याये कैश्चित् त्रयोऽध्यायाः प्रकरणभेदेनकल्पिताः सैव सरणिः  
टीकाकृद्भिरादृतोतिगम्यते ।



प्रश्नास्तिथिर्भेदिवसः क्षणश्चन्द्रोविलम्बत्वथलग्नभेदः ॥

शुद्धिग्रहाणामथचापवादोविमिश्रकारण्यंतनुवेपनंच ॥ ४ ॥

एवमिदानीं यात्रिकेयात्रायां निबद्धमध्यायसंग्रहमभिधास्येकथयिष्ये तच्चो-  
जातिकयाह ॥ प्रश्नास्तिथिरिति । प्रश्नाः प्रश्नप्रभेदाध्यायः । तिथिस्ति-  
थिवलाध्यायः । भनक्षत्राभिधानम् । दिवसोदिवसाभिधानं वारफललक्षणम्  
क्षणोऽमुहूर्तनिर्देशः । चंद्रश्चंद्रबलाध्यायः । लग्नंचलग्नविनिश्चयः । अथा-  
नंतरं लग्नभेदोहोराद्रेष्काणनवांशकद्वादशभागत्रिंशद्भागानां लक्षणं सफ-  
ग्रहाणां शुद्धिः सफला समस्तग्रहाणां कुंडलिकाफलम् । अथानंतरम् ।  
पवादाध्यायः । विमिश्रकारण्यं मिश्रकाध्यायः । तनुवेपनंदेहस्पंदनम् ॥ ४

अतः परंगुह्यकपूजनं स्यात्स्वप्नंततः स्नानविधिः प्रदिष्टः ॥

यज्ञो ग्रहाणामथ निर्गमश्चक्रमाच्च दिष्टः शकुनोपदेशः ॥ ५ ॥

शेषाध्यायस्य कीर्तनमुपजातिकयाह ॥ अतः परमिति । अतोऽस्मात्परंगुह्य-  
कपूजनं स्याद्भवेत् । स्वप्नं स्वप्नाध्यायः । ततो नंतरं स्नानविधिः प्रदिष्टः  
उक्तः । ग्रहाणां यज्ञो ग्रहयज्ञः । अथानंतरं निर्गमः प्रास्तानिकं । क्रमात्परि-  
यात्यादिष्ट उक्तः । शकुनोपदेशः शकुनरुतज्ञानम् । एष यात्रायां संग्रहः ॥ ५ ॥

विवाहकालः करणं ग्रहाणां प्रोक्तं पृथक् तद्विपुलाथशाखा ॥

स्कंधैस्त्रिभिर्ज्योतिषसंग्रहो यमयाकृतो दैवविदां हिताय ॥ ६ ॥

अथ शेषवस्तुसंग्रहमुपजातिकयाह ॥ विवाहकाल इति । विवाहकालो विवाह-  
पटलम् । ग्रहाणां करणं पंचसिद्धांतिकायां प्रोक्तं कथितं । पृथग्विभज्य तद्विपुला-  
तस्य करणस्य शुभाशुभज्ञानाय विपुला विस्तीर्णा शाखा कथिता । त्रिभिः स्कंधै-  
रैतैर्गणितहोरासंहिताख्यैरयं ज्योतिःशास्त्रसंग्रहो मया वराहमिहोराचार्येण दै-  
विदां सां वत्सरिकाणां हितार्थं कृतो विरचितः । विस्तीर्णशास्त्राण्यालोच्य सं-  
यतो मया कृतः ॥ ६ ॥

पृथुविरचितमन्यैः शास्त्रमेतत्समस्तंतदनुलग्नमयेदंतत्प्रदेशा-  
र्थमेव ॥ कृतमिह हि स मर्थधीविषाणामलत्वे मम यदि ह्यदुक्तं स-  
ज्जनैः क्षम्यतांतत् ॥ ७ ॥

एतन्मालिन्याह पृथुविरचितमन्यैरिति । एतत्समस्तं सकलशास्त्रमन्यैरा-  
चार्यैर्वनेश्वरादिभिः पृथुविस्तीर्णविरचितं कथितम् । तदनुत देवशोभनतरं

तत्प्रदेशार्थतदुपदिष्टार्थलघुस्वलपंकृतम् । तत्प्रदेशेऽपियर्थः सोऽस्मिन्स्तात्पर्या-  
 । हियस्मादर्थे । इहास्मिन्शास्त्रे कृतं धीविषाणामलत्वेऽद्विभृङ्गनिर्मलीकरणवि-  
 षसमर्थमुक्तमेतत् कृतं मया चेहसंग्रहे यदुक्तमशोभनमुक्तं कथितं तत्सज्जनैः  
 डितैर्ममक्षम्यतां क्षंतव्यमित्यर्थः ॥ ७ ॥

ग्रंथस्य याप्रचरतोस्य विनाशमेतिलेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमक्र-  
 मेण ॥ यद्वा मया कुकृतमल्पमिहा कृतं वा कार्यं तदत्र विदुषा प-  
 रिहृत्य रागम् ॥ ८ ॥

अथ कालविशेषेण कुकृताल्पकृतयोश्च पुनः करणे सतां प्रार्थनाय वसंततिलके-  
 नाह ॥ ग्रंथस्येति । अस्य ग्रंथस्य यत्प्रचरतो विचरमाणस्य यद्विनाशमेतियाति  
 लेख्याल्लेखकदोषात् तत्बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण बहुश्रुतानां पंडितानां  
 मुखाधिगम्यज्ञात्वाक्रमेण परिपाट्या विदुषा पंडितेन रागं मात्सर्यमप-  
 हृत्य विहाय कर्तव्यम् । ते च शास्त्रार्थापेक्षया संस्कारेण समर्थाः । यद्वा । मया कु-  
 कृतं कुत्सितं कृतम् । तथा लपमपरिपूर्णं तद्विचार्य विचारेण कर्तव्यमित्यर्थः ॥ ८ ॥

आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः कापित्थके सवितृलब्धवर-  
 प्रसादः ॥ आवंतिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्यग्धोरां वराह-  
 मिहिरोरुचिरांचकार ॥ ९ ॥

तत्रादित्यदासाख्यस्य पितुर्नाम कापित्थाख्ये ग्रामे वरदनामादित्यदासाच्च वि-  
 ज्ञानागमं स्वनिवासमुज्जयिनीचिनामहोराशास्त्रनाम च वसंततिलकेनाह ॥ आ-  
 दित्यदासेति । आदित्यदासाख्यो ब्राह्मणः तस्य तनयः पुत्रः तस्मादेव  
 पितुरादित्यदासादवाप्तबोधः ज्ञानं येन । कापित्थाख्ये ग्रामे यो सौभगवान् स वि-  
 षसूर्यस्तस्माल्लब्धः प्राप्तो वरः प्रसादो येन । आवंतिकः आवंतके देशे उज्जयिन्यां  
 तस्तव्यः । को सौ वराहमिहिरः अयं मुनिमतानि ऋषिप्रणीतानि शास्त्राण्यवलो-  
 क्य विचार्य सम्यग्यथावस्तुकृत्वा होरां जातकशास्त्रं रुचिरां शोभनां सुगमांचकार-  
 कृतवानिति ॥ ९ ॥

दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदम् ॥

शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १० ॥

इति बृहज्जातके उपसंहाराध्यायः ॥ २८ ॥



अथसतांप्रणामपूर्वकाणिशास्त्राणिप्रणामान्तानिकृत्वाततःशास्त्रावसानेपूर्वप्र-  
णेतृणानमस्कारमार्ययाह ॥ दिनकरेति । दिनकरोर्कस्तदादिकाःसर्वएवग्रहाः  
मुनयोवसिष्ठाद्याः गुरुरादित्यदासः तेषांचरणप्रणिपातेनपादनमस्कारकर-  
णेनकृतोयःप्रसादोनुकंपातेनानुनयेनमतिर्बुद्धिर्यस्यतेनदिनकरमुनिगुरुचरणप्र-  
णिपातकृतप्रसादमतिनामयेदंशास्त्रमुपसंगृहीतं स्वीकृतमस्ति । तस्मात्पूर्वप्र-  
णेतृभ्यःपूर्वशास्त्रकारेभ्योनमोस्तु नमस्करणेनयःकृतप्रसादः नमइतिभद्रम् १०॥

इति श्रीभट्टोत्पलविरचितायांबृहज्जातकविवृतौउपसंहाराध्यायःसमाप्तः ॥ २८ ॥

बराहमिहिराचार्यकृतेहोरामहोदधौ । अर्थिनामुत्पलश्चक्रेऽर्थात्तयेविवृति-  
प्लवम् ॥ १ ॥ चिंतामणिरितिख्याताटीकाशास्त्रज्ञवल्लभा । सप्तसार्द्धसहस्राणि ७५००  
मानमस्यामनुष्टुभाम् ॥ २ ॥ प्रीतिंदौष्ट्यंपरित्यज्यटीकांसम्यग्विचार्यच । उपयो-  
ग्यात्रशास्त्रेचेत्संग्राह्यानोपरोधतः ॥ ३ ॥ व्याख्येयंयन्मयात्यक्तंयच्चयुक्तिविवर्जित-  
म् । भ्रांत्याविलिखितंयच्चतत्सर्वस्फुटतानयेत् । चैत्रमासस्यपंचम्यांसितायांगुरुवा-  
सरे । वस्वष्ठाष्टमितेशाके ८८८ कृतेयंविवृतिर्मया ॥ ५ ॥ विधायटीकांशास्त्रेस्मि-  
न्यत्किंचित्पुण्यमर्जितम् । तेननिर्मत्सरीभूयात्सौजन्यालंकृतोजनः ॥ ६ ॥ दीर्घ-  
स्वरोष्ठ्यादिविधेयतांसाहाष्टादशेद्व्यंजनसप्तकेन । स्वार्थंचवेद्यांसमवस्थितेन  
भाष्योत्पलैचैवालखापितस्तु ॥ ७ ॥

॥ इतिभट्टोत्पलकृताबृहज्जातकविवृतिः समाप्ता ॥

इदं पुस्तकं प्रह्लादपुरवास्तव्यज्योतिर्विज्जोईतारामकाशिरामेण सम्यक्प-  
रिशोधितम् तदेतत् श्रीकृष्णदासात्मजखेमराजश्रेष्ठिना मुंबय्यां स्वकीये

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” मुद्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ॥

शके १८१७ संवत् १९५२.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“ श्रीवेङ्कटेश्वर ” छापाखाना-मुम्बई.













